(सचित्र) ज्योतिष शिक्षा

द्वितीय (गणित) खण्ड

(प्रथम भाग)

बी० एल० ठाकुर

(सचित्र) ज्योतिष शिक्षा

द्वितीय (गणित) खण्ड

(प्रथम भाग)

लेखक

बी० एल० ठाकुर ज्योतिषाचार्य

सिंहसदन

नरसिंहपुर (म० प्र०)

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली : पटना : वाराणसी

© मोतीलाल बनारसीदास
चौक, वाराणसी
बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली—७
अशोकराजपथ, पटना (बिहार)

प्रथम संस्करण
१९७०
मूल्य २५·००

श्री सुन्दरलाल जैन, मोतीलाल बनारसीदास, चौक, वाराणसी, द्वारा प्रकाशित, तथा भारती मुद्रण एवं प्रकाशन बड़ी पियरी, वाराणसी द्वारा मुद्रित ।

ॐ

उद्देश्य

फलित ज्योतिष में कुंडली का फल कहने के निमित्त प्रथम आवश्यक है कि शुद्ध कुंडली बनाई जाय। क्योंकि कुंडली यदि शुद्ध हुई तो उस पर से बताया हुआ फल ठीक उतरेगा। इस कारण जन्म का शुद्ध फल जानने के लिये शुद्धता पूर्वक जन्म-पत्रिका बनाना जानना चाहिए। इस निमित्त इस गणित खंड में गणित द्वारा शुद्धता पूर्वक पूरी जन्म-पत्रिका बनाना बताया गया है और प्रत्येक गणित करने की रीति बता कर उसका उदाहरण देकर उसमें पूरी गणित क्रिया भी दी गई है जिससे विद्यार्थी को समझने में सरलता हो और अभ्यास बढ़ जाय।

कुंडली बनाने के लिये पहिले शुद्ध इष्टकाल की आवश्यकता है। आज कल जन्म समय घड़ी देख कर लिख लिया जाता है। परन्तु वह समय शुद्ध नहीं है। अक्षांश के अनुसार प्रत्येक स्थान का सूर्योदय का काल होता है। इसी प्रकार प्रत्येक स्थान का पृथक् २ स्थानिक समय होता है। परन्तु घड़ी का समय प्रत्येक देश के स्टेन्डर्ड टाइम (निर्धारित मध्यम समय) के अनुसार होता है। जैसे सम्पूर्ण भारत वर्ष में स्टेन्डर्ड टाइम ८२°–३०′ के अक्षांश का प्रचलित है। उसी के अनुसार अपना घड़ी का समय है। जब कलकत्ते में दिन के ८ बजेंगे तो बम्बई में भी उसी समय ८ बजेंगे। अर्थात् सम्पूर्ण भारत वर्ष में उसी समय अपनी घड़ी के अनुसार ८ बजेगा। परन्तु वास्तव में प्रत्येक स्थानों के स्थानिक समय में अंतर होता है। इस कारण घड़ी के समय को स्थानिक समय में परिवर्तन करना पड़ता है। घड़ी का समय २४ घंटे का माना जाता है परन्तु सूर्य की प्रत्येक दिन की गति घटती-बढ़ती रहती है। इससे घड़ी के समय से परिवर्तित मध्यम स्थानिक समय में भी काल-समीकरण करना पड़ता है अर्थात् बलान्तर का संस्कार करना पड़ता है, तब शुद्ध स्थानिक समय बनता है। उस शुद्ध स्थानिक समय से जन्म का इष्ट काल घड़ी पल में बनाया जाता है। क्योंकि घड़ी का समय घंटा मिनट में आधी रात के उपरांत आरंभ होता है और घड़ी पल सूर्योदय से आरंभ होता है। इस कारण घड़ी से प्राप्त शुद्ध स्थानिक समय को घड़ी पल में परिवर्तन करने से शुद्ध इष्टकाल बनता है।

स्थानिक सूर्योदय जानने के लिये चर निकालना पड़ता है, जिसके लिये सूर्य स्पष्ट में अयनांश मिला कर सायनसूर्य बनाया जाता है और इसके भुजांश निकाल कर गणित

द्वारा चर बनाया जाता है। सायन सूर्य के भुजांश से सूर्य की उत्तर या दक्षिण क्रांति और चर से अपने स्थान का सूर्योदय सूर्यास्त दिनमान आदि प्रगट होता है। किसी स्थान के पलभा या अक्षांश पर से चर खंडा निकाल कर दिनमान-सारिणी भी बनाई जाती है। ये सब बातें और उनका पूरा गणित उदाहरण देकर यहाँ समझाया गया है।

कुण्डली बनाने के लिये सबसे महत्त्व की बात लग्न है। गणित द्वारा लग्न निकालने के लिये अपने स्थान के अक्षांश से पलभा बनाकर उस पलभा पर से चरखंड बनाकर लंका के उदय काल (लंकोदय) में उसका संस्कार कर स्वोदय (अपने स्थान में लग्नों का उदय काल) निकालना पड़ता है और सायन सूर्य के भोग्य-भुक्तांश पर से गणित द्वारा स्वोदय के सहारे लग्न स्पष्ट करना पड़ता है।

उपरान्त इष्टकाल पर से पंचांग में दिये ग्रहों के आधार पर ग्रह स्पष्ट करना पड़ता है। और लंकोदय के सहारे दशम भाव साधन कर, सम्पूर्ण भाव स्पष्ट कर उनकी संधियों को भी स्पष्ट करना पड़ता है। तब ग्रह स्पष्ट भाव स्पष्ट पर से भाव (चलित) कुण्डली बन जाती है। इस सम्बन्ध की सम्पूर्ण बातें और गणित क्रिया उदाहरण देकर इसमें समझाई गई हैं।

ग्रह स्पष्ट करने के लिये गुणन फल चक्र इसमें दिया है जिसके सहारे गोमूत्रिका क्रम गणित द्वारा सरलता से ग्रह स्पष्ट हो जाता है। और भी ग्रह स्पष्ट करने के लिये बड़े परिश्रम से घड़ी पल में लेगार्थिकनिक टेवल (लाग्रतिमक सारिणी) बनाकर इसमें दिया है जिसके सहारे भी शीघ्रता से ग्रह स्पष्ट हो जाता है। लग्न स्पष्ट और दशम स्पष्ट करने के लिये सारिणियाँ भी बना दी हैं और भी इनके बनाने की गणित क्रिया उदाहरण सहित यहाँ दी है। पूरा गणित इस उद्देश्य से दिया है कि इसके सहारे बिना गुरु के कोई भी चलित कुंडली बना सके।

इसके अतिरिक्त विंशोपका बल निकालना, दृष्टि साधन करना और दृष्टि साधन करने को सारिणी, भिन्न-भिन्न प्रकार के होरा द्रेष्काण आदि वर्ग साधन करना और उनकी कुंडलियाँ बनाना, दशवर्ग पर से पारिजातक आदि संज्ञा जानना, अष्टकवर्ग साधन कर उनके भिन्न २ चक्र और कुण्डलियाँ बनाना, ग्रह और भाव के भिन्न २ बल साधन करना, इष्ट-कष्ट बल, उच्च बल, चेष्टाबल, उच्चरश्मि चेष्टा रश्मि साधन, इष्ट-कष्ट दृष्टि साधन, शुभ अशुभ पंक्ति और अनेक प्रकार के आवश्यक चक्र साधन करना इसमें दिया है। फिर भिन्न २ मत से आयुर्दाय साधन करने की रीतियाँ और उनके चक्र दिये हैं। मिश्रायु साधन करना, मिश्रायु की दशा अंतर्दशा साधन करना। विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी योगिनी दशा की महादशा, अंतर्दशा, उपदशा, आदि साधन करना बताया है। अर्थात् जन्म पत्रिका बनाने के लिये ऐसा कोई विषय नहीं रह जाता जिसकी

आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी पंचांग से ग्रह साधन करना, नाक्षत्र काल निकालना और नाक्षत्र काल से लग्न और भाव निकालना आदि भी बताया है। इसमें सम्पूर्ण आवश्यक विषयों का समावेश हैं।

यदि पंचांग न मिले तो अहर्गण निकाल कर विना पचांग के ग्रह स्पष्ट करने की अनेक रोतियाँ और सुगमता के लिये उनकी अनेक सारिणियाँ भी दी हैं।

इनके अतिरिक्त इसमें काम पड़ने वाली गणित क्रिया को सम्पूर्ण रोतियाँ अर्थात् गौमूत्रिका क्रम गणित दशमलव का जोड़ घटाना गुणा भाग इत्यादि अनेक प्रकार के गणित करने की रीतियाँ भो इसमें पृथक् दी हैं, जिनको देखकर कोई भी व्यक्ति स्वयं सब गणित करना सीख कर जन्म पत्रिका का पूरा गणित इस ग्रन्थ में बताई रीति उदाहरण और गणित क्रिया देखकर, कर सकता है।

गणित विषय ऐसा है कि जिसमें अंकों की भरमार है। कहीं भो अंक को उतारने आदि में कहीं भूल हुई तो सारा गणित व्यर्थ हो जाता है। छापे में भी भूल हो जाती है इससे प्रार्थना है कि इसमें दी हुई रीति उदाहरण और गणित क्रिया को देखकर गणित की जाँच कर सकते हैं कि गणित में कहाँ भूल हो गई है। भूल होना मानवीय स्वभाव है। इस कारण गणित में कहीं भूल हो गई हो तो कृपा कर उसे सुधार कर सुचना दंगे जिससे भूल सुधार दी जायगी।

गणित विषय कठिन होने से लोगों का मन इसमें नहीं लगता और कुछ सीखने का प्रयत्न करते हैं तो उलझन में पड़ जाते हैं। बहुधा ज्योतिषी लोग जन्म पत्रिका का गणित करने में घबड़ा जाते हैं इस कारण जन्म पत्रिका का गणित करने में सूक्ष्म बातों का ध्यान नहीं रखते और स्थूल रूप से गणित कर पत्रिका में लिख देते हैं और गणित के झंझट से बचने के लिये अनेक चक्र बनाना छोड़ देते हैं।

अधिकतर ज्योतिष के ग्रन्थ संस्कृत में हैं जिनको अच्छी प्रकार समझने के लिये योग्य गुरु को आवश्यकता है। ज्योतिष के ग्रन्थों में जो गणित दिया है उन सबके पूरे उदाहरण न देने से नवीन विद्यार्थी को गणित समझने में बड़ी कठिनाई प्रतीत होती है राष्ट्र भाषा हिन्दी में तो ऐसे ग्रन्थों का अभाव बहुत खटकता है। इस कारण इसकी पूर्ति के लिये एवम् नवीन विद्यार्थियों को समझाने के उद्देश्य से ही बहुत सरल भाषा में, राष्ट्र भाषा हिन्दी में यह ग्रन्थ लिखा गया है। इसमें सुगम रोति से उदाहरण दे २ कर पूरी जन्म-पत्रिका का गणित करना समझाया है। और जहाँ आवश्यक हुआ है गणित की सुगमता के लिये सारिणियाँ चक्र आदि भी दे दिये गये हैं। इसमें गणित क्रिया का उदाहरण देते समय पूरी गणित क्रिया भी दे दी गई है जिसके कारण यह

२३ भाव षड्बल	४६१
२४ उच्चरश्मि, चेष्टारश्मि, और इष्ट काल साधन	४७१
२५ ग्रह के सप्तवर्ग के अनुसार शुभ अशुभ साधन	५१५
२६ आयुर्दाय	६००
२७ आयुत्रिक [पिंडायु, निसर्गायु और जीवायु] साधन	६६१
२८ अष्टक वर्ग द्वारा आयु साधन	७०४
२९ मिश्रायु विचार	७४३
३० मिश्रायु दशा साधन	७६०
३१ दशा साधन	८१३
३२ अष्टोत्तरीदशा साधन	८४३
३३ योगिनी दशा साधन	८७१

ॐ

श्रीगणेशाय नमः

ज्योतिष-शिक्षा

(द्वितीय गणित-खंड)

मंगलाचरण

विमल बुद्धि वर रूप जो, धरूं विनायक ध्यान ॥
वाचा शक्ती शारदा, होहु सहायक ध्यान ॥ १ ॥
सकल सृष्टि सिरजन करे, सब का पालन हार ॥
सौर जगत से विश्व बहु, जाके रोम अपार ॥ २ ॥
ध्याऊं उन्हीं महेश को, जो व्यापक विश्वेश ॥
करुणामय किरपा करहु, काटहु कलिमल क्लेश ॥ ३ ॥
बुद्धि तीव्र विशाल दो, शक्ति सुमति हो व्याप्त ॥
दो बर ऐसा प्रभू हो, पुस्तक शीघ्र समाप्त ॥ ४ ॥

अध्याय १

समय Time (टाइम)

ज्योतिष शास्त्र के विद्यार्थी को सबसे प्रथम समय के विषय में अच्छी प्रकार से समझ लेना चाहिए। क्योंकि इष्ट काल समय से ही बनता है। यदि इष्ट काल शुद्ध नहीं होगा तो कुंडली भी शुद्ध नहीं बनेगी।

समय कई प्रकार का होता है। जैसे :—

(१) स्टेन्डर्ड टाइम Standard time
(२) स्थानिक समय Local time
(३) प्रत्यक्ष समय Apparent time
(४) मध्यम समय Mean time
(५) ग्रीनविच समय Greenwich time आदि।

स्टेन्डर्ड समय Standard time

रेलवे पोस्ट आफिस आदि में जो आजकल समय प्रचलित है इसी समय के

अनुसार अपनी घड़ियां मिली रहती हैं। यहीं स्टेन्डर्ड समय है। सम्पूर्ण भारत वर्ष के लिये एक सा समय इससे प्रगट होता है।

सूर्य के अनुसार प्रत्येक स्थान का समय इससे पृथक्-पृथक् होता है, क्योंकि स्थानान्तर के अनुसार सूर्य के उदय अस्त में अंतर पड़ता है। इस प्रकार प्रत्येक स्थान का पृथक्-पृथक् समय भिन्न-भिन्न स्थानों में यदि कारबार में चालू रहे तो उसके-उसके समझने में बड़ी गड़बड़ी हो सकती है। इस कारण प्रत्येक देशों का पृथक्-पृथक् स्टेन्डर्ड टाइम नियुक्त कर दिया गया है। जैसे पूरे भारतवर्ष के लिये एक ही समय होगा। वरमा का पृथक् स्टेन्डर्ड टाइम है। इस प्रकार प्रत्येक देश का पृथक्-पृथक् स्टेन्डर्ड टाइम रहता है।

स्टेन्डर्ड टाइम से प्रत्येक स्थान का स्थानिक समय Local time निकाला जा सकता है।

प्रत्येक स्थान के पूर्व या पश्चिम दूरी के अनुसार समय में अन्तर पड़ता है। जव ग्रीनविच (इङ्गलेंड) में दोपहर के १२ वजते हैं तो अदन में शाम के ३ बज के ४ मिनट और बम्वई में संध्या के ५ बजकर ५१ मिनट, कलकत्ते में संध्या के ५–३३, सिंगापुर में संध्या के ६–५५, माल्टा में रात के १२–५८ वजते हैं।

इसी प्रकार भारतवर्ष में भी एक स्थान के मध्याह्न काल (दोपहर) से दूसरे स्थान के मध्याह्न काल में पूर्व पश्चिम दूरी के अनुसार अन्तर पड़ जाता है। जव कलकत्ता में १२ बजता है तो बम्वई में १०–५७ ही बजता है। पूना में १०–५३ वजता है। इस प्रकार भिन्न-भिन्न स्थानों का भिन्न-भिन्न स्थानिक समय होता है। इससे बड़ी उलझन पैदा हो सकती है। इसी गड़बड़ी के मिटाने के लिये सम्पूर्ण भारत वर्ष भर का एक स्टेन्डर्ड (मध्यम) समय निर्धारित किया गया है।

यह समय ग्रीनविच के समय से घंटा-मिनट ५–३० आगे समझा जाता है अर्थात् जव ग्रीनविच की घड़ी में दोपहर के १२ बजते हैं तो भारतवर्ष में उस समय संध्या के ५–३० बजते हैं। यह समय रेखांश Longitude के अनुसार बदलता है। भारतवर्ष का स्टेन्डर्ड टाइम ८२॥ रेखांश (देशान्तर) का निर्धारित हुआ है। किसी विशेष स्थान का यह टाइम नहीं है। ८२॥ रेखांश में जितने स्थान पड़ते हैं उन सब का यह स्थानिक समझना चाहिए। इसी के अनुसार भारतवर्ष भर की घड़ियां मिलाई जाती हैं। जव ८२॥ रेखांश के देशों में १२ बजते हैं तो सम्पूर्ण भारतवर्ष की घड़ियों में उस समय १२ बजते हैं। इसके कारण व्यावहारिक रीति से कारबार करने में सुविधा हो गई है कि एक घड़ी में १२ बजेगा तो सारे भारतवर्ष में १२ बजेगा।

तारीख १–७–१९०५ ईस्वी से यह स्टेन्डर्ड टाइम की व्यवस्था यहां की गई है। इसके पहिले ऐसा नहीं होता था, प्रत्येक स्थानों में पृथक्-पृथक् समय प्रचलित था।

जिस प्रकार भारतवर्ष का स्टेन्डर्ड समय निर्धारित हुआ है उसी प्रकार प्रत्येक देश का पृथक्-पृथक् स्टेन्डर्ड टाइम निर्धारित कर दिया गया है और ग्रीनविच टाइम को मध्य मान कर उसके हिसाव से यह टाइम निर्धारित हुआ है। वरमा का स्टेन्डर्ड टाइम ६–३० है, अर्थात् भारतवर्ष के टाइम से एक घंटा बढ़ा हुआ है। दूसरी लड़ाई के समय वरमा में लड़ाई होने के कारण वरमा का स्टेन्डर्ड टाइम सारे भारतवर्ष में प्रचलित कर दिया गया था। अर्थात् पुराने स्टेन्डर्ड टाइम में एक घंटा और आगे बढ़ा दिया गया था जो तारीख एक सितम्बर १९४२ से १५ अक्टूबर १९४५ के २ बजे प्रातः तक प्रचलित रहा था।

प्रत्येक देश का पृथक्-पृथक् स्टेन्डर्ड टाइम आगे वताया है।

भिन्न २ देशों का स्टेन्डर्ड टाइम

ग्रीनविच में जब १२ बजे दोपहर होगा तब नीचे लिखे स्थानों में स्टेन्डर्ड समय इस प्रकार होगा। ± = + या – (ऋण)।

देश	स्टेन्डर्ड टाइम घं० मि० ± दिशा
१. भारत वर्ष	५–३० + पूर्व
२. वरमा	६–३० + ,,
३. न्यूजीलेंड	११–३० + ,,
४. विक्टोरिया, न्यू साउथ वेल्स, क्वीन्स लेंड, टासमानिया	१०–० + ,,
५. दक्षिण अस्ट्रेलिया	९–३० + ,,
६. जापान, कोरिया	९–० + ,,
७. पश्चिमी अस्ट्रेलिया, हांग कांग, फिलीपाइन द्वीप, ब्रिटिश उत्तरी बोरनियो लबुअन, मकाओ, पोर्तगीज टिमोर, चाइना कोस्ट, सेबेरिया ९७°-३०′ से ११२°-३०′ पूर्व तक	८–० + ,,
८. स्टेट सेटलमेन्ट	७–० + ,,
९. मारीशस, सेचेलीज	४–० + ,,
१०. इटालियन सोमालीलेंड	३–० + ,,
११. (पूर्व यूरोप) बलगेरिया, रोमानिया, टर्की, ग्रीस, दक्षिण आफ्रिका, इजिप्ट, पोर्तगीज-पूर्वी आफ्रिका, फिनलेंड, पेलिस्टाइन, सीरिया	२–० + ,,
१२. जर्मनी, लैकजेमबर्ग, अस्ट्रिया-हंगरी, डेनमार्क, स्वीडन, नार्वे, स्वीटजरलेंड, इटली, बोसोनिया सर्विया, माल्टा, पोर्तगीज पश्चिमी-आफ्रिका, पोलेन्ड, अलबानिया, जेकोस्लेविया	१–० + ,,
१३. अलजीरिया	
ग्रीनविच ग्रेट ब्रिटेन, आयर–लेंड, फ्रांस, बेल्जियम, स्पेन, पोर्तगाल, जिब्राल्टर, अलजीरिया, फरोई द्वीप	०–०००

देश	स्टेन्डर्डटाइम घं० मि० + दिशा
१. आइसलेंड मडेरिया पोर्तगीज गिनी सियेरा लियोने	१-०-पश्चिम
२. अजोर्स केपवेरडे द्वीप	२-०- ,,
३. ब्रेजिल का पूर्वी भाग	३-०- ,,
४. ब्रिटिश गिनी	३-४५- ,,
५. (अटलांटिक) कनाडा का मारीटाइम प्रांत लीवार्ड द्वीप ब्रेजिल का मध्य भाग	४-०- ,,
६. जमैका पश्चिमी लेबडोर क्यूबेव, ओनटेरियो से ८२° ३०′ पश्चिम तक न्यू ब्रुन्सविक अमेरिका का पूर्वी भाग पनामा पेरू, चाइल,ब्रेजिल का पश्चिमी भाग और अमेरिका	५-०-,,

देश	स्टेन्डर्ड टाइम घं० मि० + दिशा
७. कनाड़ा का मध्य भाग ८८° से १०३° तक	६-०- ,,
८. कनाड़ा और अमेरिका का पर्वतीय भाग	७-०- ,,
९. (पासफिक) ब्रिटिश कोलम्बिया, अमेरिका का पासफिक कीग, ओर का भा कालीफोर्निया वाशिंगटन	८-०-पश्चिम
१०. यूकोन, अलास्का	९-०—,,
११. सेन्डविच द्वीप	१०-३०—,,
१२. समाओ	११-३०—,,

ग्रीनविच से पूर्व में + (धन) अर्थात् ऊपर बताया समय जोड़ना और पश्चिम में – (ऋण) समय है अर्थात् वह समय ग्रीनविच समय में घटाना तो उन स्थानों का ग्रीनविच के अनुसार ठीक समय निकल आयगा। जैसे जापान का स्टेन्डर्ड टाइम ९ घंटा पूर्व है तो ग्रीनविच में जब मध्याह्न के १२ बजेंगे तब जापान देश में १२ + ९ घंटा = २१ घंटा अर्थात् ९ बजे रात होगी। देश पूर्व होने से १२ घंटा में ९ घंटा जोड़ना पड़ा। यह समय जापान देश भर की घड़ियों में मिलेगा। इसी प्रकार पेरू देश का स्टेन्डर्ड टाइम ५ घंटा पश्चिम है तो पश्चिम होने से यह समय ग्रीनविच के समय में घटाना पड़ेगा। जब ग्रीनविच में मध्याह्न के १२ बजेंगे तो पेरू देश में १२–५ = ७ बजे प्रातः काल होगा। इसके विषय में आगे और पढ़ने से समझ में आयगा।

घड़ियों का समय

ऊपर जो स्टेन्डर्ड टाइम बताया गया है उसमें भारतवर्ष का स्टेन्डर्ड टाइम पूर्व घं० मि० ५–३० दिया है अर्थात् ८२॥ अंश पूर्व रेखांश का यह समय है जो समस्त भारत-

वर्ष में प्रचलित है वही टाइम आजकल भारतवर्ष भर की घड़ियां बतलाती हैं। इससे प्रगट हुआ कि यहां की सब घड़ियां किसी स्थान विशेष का ही टाइम बताती हैं। अर्थात् ८२॥ अंश पूर्व रेखांश का ही टाइम इन घड़ियों से प्रगट होता है।

इस पर भी यदि एक घड़ी बंद हुई तो दूसरे की घड़ी से मिलान करने पर २–४ मिनट का अन्तर प्रत्येक घड़ियों में आ ही जाता है। रेलवे या पोस्टआफिस से बहुत कम घड़ियां मिली हुई होती हैं।

इस कारण यदि चालू घड़ियों से जन्म का समय लिख लिया जाता है तो उस घड़ी को रेलवे या पोस्ट आफिस की घड़ी से मिलान कर देख लेना चाहिए कि घड़ी कितनी आगे पीछे है। तब भी जो शुद्ध समय घड़ी से प्रगट होगा वह स्टेन्डर्ड टाइम का शुद्ध समय ही घंटा मिनट में प्रगट होगा। दूसरी लड़ाई के समय बरमा की लड़ाई के कारण बरमा का स्टेन्डर्ड टाइम यहां प्रचलित कर दिया गया था, अर्थात् यहां की घड़ियां एक घंटा आगे बढ़ा दी गई थीं। इस कारण इस प्रकार की घड़ियों के अनुसार जो समय मिलता है, उस समय के अनुसार ही यदि कुंडली बनाई जायगी तो अवश्य अशुद्ध होगी। इस कारण शुद्ध समय की अत्यंत आवश्यकता है।

आजकल जो घड़ियां बनी हैं वे किसी नियमित गति से ही चलती हैं। अर्थात् वह घड़ी एक दिन में जिस गति से चलेगी सदा उसी गति से वह घड़ी चलती रहेगी। अर्थात् १२ घंटा में जिस प्रकार घंटा का कांटा एक बार पूरा घूमकर फिर १२ बजे पर आयगा और उसके लिये जितना समय एक बार पूरे घंटा के कांटा को इस प्रकार घूमने में लगेगा, सदा उतना ही समय प्रतिदिन उस घड़ी में उसी प्रकार (घंटा का कांटा एक बार पूरा घूम जाने में) लगेगा। ऐसा नहीं होता कि कभी १२ घंटा लगा हो कभी ११॥ घंटे में एक बार कांटा पूरा घूम गया हो। इससे प्रगट होता है कि घड़ी की गति (चाल) एक सी बनी रहती है।

अब सूर्य की ओर विचार करो जिसका समय बताने के लिये ये घड़ियां बनी हैं। सूर्य की प्रतिदिन की गति एक सी नहीं रहती कभी दिन भर में ५७ कला गति होती है, कभी वह गति प्रतिदिन क्रमशः बढ़ते-बढ़ते ६१ कला तक हो जाती है और फिर घटने लगती है। इस प्रकार सूर्य की गति घटती बढ़ती रहती है। परन्तु ये घड़ियां ऐसी नहीं बनी हैं जिससे सूर्य की गति के अनुसार कभी घड़ी की गति धीमी या तेज हो जाय। इस कारण वास्तविक सूर्य के अनुसार जो समय होता है और घड़ियों

चित्र संख्या १ अ
किरण वक्रीभवन
जल में डाला पदार्थ
इस प्रकार उठा हुआ दिखता है ।

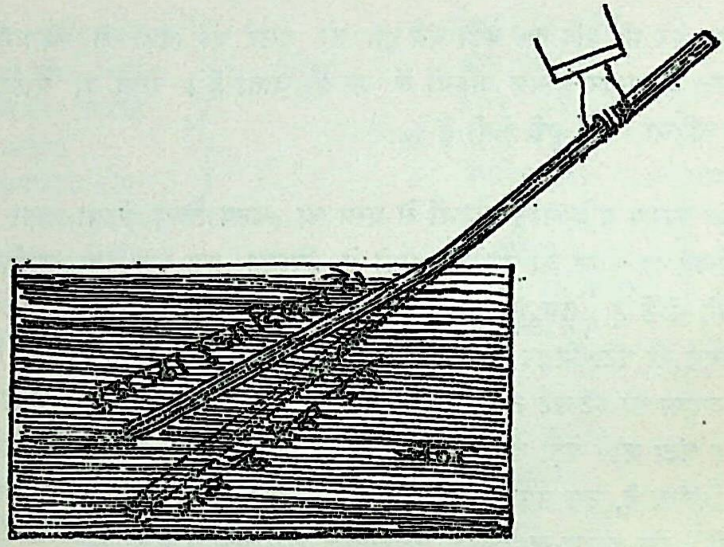

चित्र संख्या १ ब
किरण वक्रीभवन
सूर्य उदय होने के प्रथम
इस प्रकार दिख जाता है ।

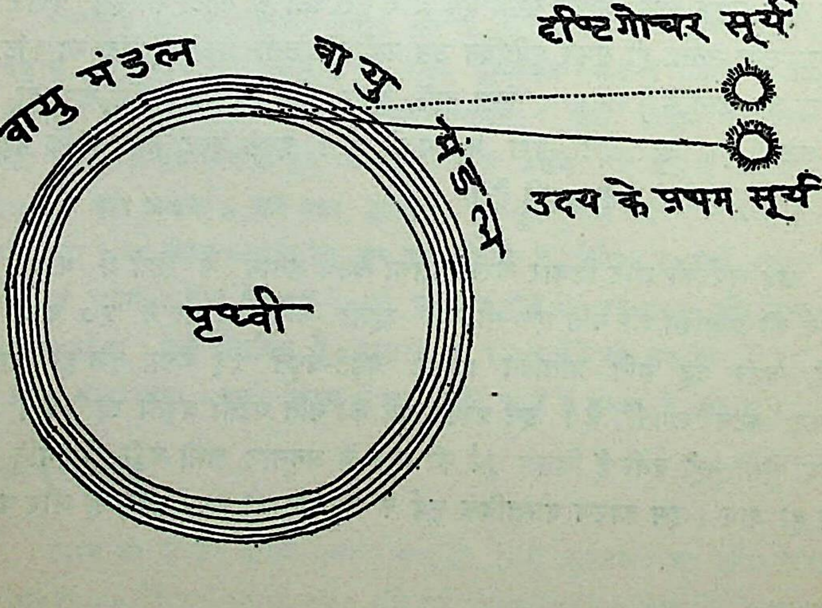

के अनुसार जो समय होता है उस समय में कितना अंतर पड़ सकता है यह समझ में आ गया होगा।

सूर्य की घटती-बढ़ती का मध्यम मान (औसत) निकालने पर एक दिन-रात में औसत समय २४ घंटे का निकलता है। इसी प्रमाण से औसत २४ घंटा बताने वाली ये घड़ियां बनाई गई हैं। इन घड़ियों से जो समय जाना जाता है वह मध्यम मान ही है। अर्थात् घड़ियां मध्यम समय Mean time बतलाती हैं इसका ध्यान रहे।

इस कारण जन्म समय जो घंटा में दिया रहता है उसके शुद्ध करने की आवश्यकता पड़ती है। समय शुद्धि के लिये समय को अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए। समय शुद्ध करना आगे समझाया गया है।

सूर्य का काल Suntime

दिन का प्रमाण=सूर्योदय से अस्त तक दिन का जो समय होता है उस दिन के मान (नाप) को दिनमान कहते हैं।

जब सूर्य किसी स्थान के क्षितिज पर दिखता है तो उसे सूर्योदय कहते हैं। परन्तु जब सूर्य की पहिली किरण क्षितिज पर दिखती है और जब वह सूर्य क्षितिज के ऊपर आ जाता है उसमें ५-६ मिनट का समय लग जाता है।

जब सूर्य क्षितिज के ऊपर दिखाई देता हैं तो वह वास्तव में उस समय क्षितिज के नीचे ही रहता है। वायु मंडल के प्रभाव से सूर्य ऊपर आने के पहिले ही दिखने लगता है। इस बात को समझने के लिए एक बर्तन में खूब पानी भर दो और बर्तन की गहराई अनुमान कर लो कि कितनी होगी। अब उस पानी भरे बर्तन में एक रुपया या डंडा डाल दो तो देखोगे कि वह रुपया या डंडा कुछ ऊपर उठा हुआ दिखेगा। अर्थात् जो गहराई बर्तन की है उससे कम गहराई पर वह रुपया या डंडा दिखेगा। देखो चित्र संख्या १ अ, ब। इसी विज्ञान के सिद्धान्त के अनुसार सूर्य भी क्षितिज के ऊपर आने के प्रथम ही दिखने लगता है और वास्तविक रूप से सूर्य के डूब जाने के कुछ देर तक क्षितिज पर सूर्य दिखाई देता है। इस सिद्धांत को विज्ञान में किरण वक्रीभवन Refraction कहते हैं।

इस प्रकार सूर्य के प्रथम दर्शन के उपरान्त वास्तविक रूप से क्षितिज के ऊपर आने तक लगभग २ मिनट का समय लग जाता है। परन्तु हम इस सूर्योदय की इतनी सूक्ष्मता पर विचार न कर जब सूर्य प्रथम समय क्षितिज पर दिखने लगता है उसे ही सूर्योदय का प्रत्यक्ष काल कहेंगे। इस समय को सूर्य का प्रत्यक्ष (स्पष्ट) समय A. T. (Apparent time of sunrise) मानेंगे।

जब सूर्य अपने स्थान के मध्याह्न रेखा पर आता है तब उस समय को प्रत्यक्ष

मध्याह्न काल A. N. (Apparent noon) कहेंगे। उस मध्याह्न रेखा पर जितने स्थान उत्तर से दक्षिण तक पड़ते हैं उन सब स्थानों पर एक साथ हीं उसी समय मध्याह्न (दोपहर) noon होगा। परन्तु अपनी घड़ियों से जो मध्याह्न काल प्रगट होगा वह केवल ८२।।° पूर्व रेखांश का ही मध्याह्न काल प्रगट होगा। क्योंकि भारतवर्ष का स्टेण्डर्ड टाइम ८२।।° रेखांश का स्थिर कर लिया गया है।

धूप घड़ी के अनुसार जो वहां का समय होगा वही समय वास्तविक रूप से उस स्थान का ठीक समय कहलाता है। धूप घड़ी के समय को स्थानिक समय Local time कहते हैं।

स्थानिक समय भी २ प्रकार का होता है।

(१) प्रत्यक्ष (स्पष्ट) स्थानिक समय Apparent local time.
(२) मध्यम स्थानिक समय Local mean time.
मध्यम और स्पष्ट काल में क्या अंतर है आगे समझाया जायगा।

जो समय ग्रीनविच की घड़ी से सम्बन्ध रखता है वह ग्रीनविच का समय Greenwich time कहलाता है। इस प्रकार ग्रीनविच का भी मध्यम और स्पष्ट काल एवम् मध्यम और स्पष्ट मध्याह्न होता है जिसका कभी-कभी उपयोग होता है। इसलिये यहां समझा देते हैं।

संकेत शब्द जिनका कभी-कभी उपयोग होता है।

A. T.=Apparent time=स्पष्ट समय (काल)=स्प० स०
M. T.=Mean time=मध्यम समय (काल)=म० स०
A. N.=Apparent noon=प्रत्यक्ष मध्याह्न काल = स्प० म०
M. N. = Mean noon = मध्यम मध्याह्न काल = मध्य० म०
G. M. T. = Greenwich Mean time = ग्रीनविच मध्यमकाल (समय) = ग्री० म० का०
G. M. N. = Greenwich mean noon = ग्रीनविच मध्यम मध्याह्न = ग्री० म० मध्य०

जब सूर्य किसी स्थान के सबसे ऊंचे स्थान पर प्रतिदिन आता है तब उस दिन का वह स्थानिक मध्याह्न काल Local meantime होता है और वह मध्याह्न काल (दोपहर) स्थानिक समय (L. T.) के अनुसार ही होता है। परन्तु घड़ियों में जो दोपहर का समय प्रगट होता है वह वहां के ठीक दोपहर का समय नहीं होता। इस कारण यह जानने की आवश्यकता है कि वहां का स्थानिक मध्यम काल L.M. T. क्या होगा। इन सबको आगे बताया है।

प्रत्यक्ष (स्पष्ट) समय और मध्यम समय

सूर्य की गति क्रांति वृत्ति में एकसी नहीं रहती। इस कारण जनता के उपयोग के लिए सूर्य का समय सुभीते का नहीं है। क्योंकि सूर्य का समय प्रत्येक स्थान का पृथक्-पृथक् होता है। इस कठिनाई को दूर करने को ज्योतिदियों ने एक नकली सूर्य आकाश में घूमता हुआ मान लिया है। इस सूर्य को मध्यम सूर्य कहते हैं जो भूमध्य रेखा (निरक्ष देश) पर एक सी गति से घूमते हुए मान लिया गया है और इस मध्यम सूर्य Mean Sun के समय का मिलान सच्चे सूर्य के समय से उस समय होता है जब कि सच्चा सूर्य मेष सम्पात Vernal equinox में होता है और उस समय दिन रात बराबर होता है।

जो समय अपने असली सूर्य से प्रगट होता है उसे स्पष्ट समय या प्रत्यक्ष समय Apparent time कहते हैं। परन्तु मध्यम सूर्य के चलने के कारण जो समय प्रगट होता है वह मध्यम समय कहलाता है। अपनी घड़ियां इसी मध्यम समय को बताती हैं। अर्थात् घड़ी के समय को मध्यम समय कहेंगे। मध्यम समय और स्पष्ट समय के अंतर को वेलान्तर Equation of time कहते हैं। यह अन्तर १६ मिनट से अधिक अंतर नहीं पड़ता।

मध्यम सूर्य का ६ बजे ठीक उगना, १२ बजे दोपहर होना और ६ बजे संध्या को अस्त होना मानते हैं, परन्तु वास्तविक सूर्य के उदय अस्त के समय में प्रतिदिन अंतर पड़ता है। यही अंतर स्पष्ट और मध्यम समय का वेलान्तर है। वेला=समय। दोनों के बीच समय का जो अंतर है वही वेलान्तर है। दोनों समय के मिलान को काल समीकरण कहते हैं। यह विषय आगे दिया है।

ग्रीनविच टाइम Greenwich mean time=G.M.T.

पृथ्वी के देशान्तरों का नाप यूरोपीय पद्धति के अनुसार ग्रीनविच से आरंभ होता है। अर्थात् प्रधान मध्याह्न रेखा ग्रीनविच को मानकर वहां से अंशों का पूर्वी और पश्चिमी नाप देशान्तर का आरम्भ हुआ है। प्राचीन समय में यह नाप उज्जैन से आरम्भ होता था और अब भी भारतवर्ष की प्राचीन पद्धति की ज्योतिष में उज्जैन को ही प्रधान मध्याह्न रेखा मानकर वहां से पूर्व पश्चिम अन्तर देशान्तर का नापा जाता है।

यह पहिले ही बता चुके हैं कि जब ग्रीनविच में १२ बजे दोपहर होता है तब स्टेन्डर्ड टाइम के अनुसार भारतवर्ष में ५-३० बजे संध्या का समय होता है। जब ग्रीन विच का समय दिया हो तो उससे भारत के किसी भी स्थान का समय बना सकते हैं या भारत के स्थानिक समय से ग्रीनविच का समय जान सकते हैं।

अंग्रेज़ी पंचांग या ऐफेमरी में दैनिक ग्रह स्पष्ट वहां की वेधशाला के अनुसार

दिये रहते हैं और वह समय ग्रीनविच के समय के अनुसार होता है। इस कारण उसका उपयोग करते समय उसके समय को अपने यहां के लोकल टाइम बनाने की आवश्यकता होती है।

स्थानिक समय = लोकल टाइम (Local mean time = L.M.T.)

इसका परिवर्तन देशान्तर के प्रमाण से किया जाता हैं। कहीं का देशान्तर यदि प्रगट हो तो उससे स्थानिक समय निकालना नीचे देते हैं।

देशान्तर को घंटा मिनट में परिवर्तन कर स्थानिक समय निकालना।

प्रत्येक गोल वृत्त में ३६० अंश होते हैं। इसी प्रकार पृथ्वी गोल होने से पृथ्वी की परिधि ३६०° में बटी हुई है। पृथ्वी अपनी धुरी पर २४ घंटे में एक वार घूम लेती हैं। अर्थात् २४ घंटे में ३६०° पूरे भुक्त होते हैं तो १ घंटा में $= \frac{३६०}{२४} =$ १५ अंश हुआ। ३६०° में २४ घंटा लगते हैं तो १ अंश में $= \frac{२४}{३६०}$ घंटा $= \frac{२४ \times ६०}{३६०}$ मिनट = ४ मिनट। इससे प्रगट हुआ कि पृथ्वी १ घंटा में १५ अंश घूमती हैं या १ अंश में ४ मिनट लगते हैं।

१५° देशान्तर	= एक घंटा	१ घंटा = १५°	देशान्तर
१° ,,	= ४ मिनट	४ मिनट = १°	,,
१५′ ,,	= १ मिनट	१ मिनट = १५′ कला	,,
१′ ,,	= ४ सेकन्ड	४ सेकन्ड = १′ कला	,,
१५″ ,,	= १ सेकन्ड	१ सेकन्ड = १५″ विकला	,,
१″ ,,	$= \frac{१}{१५}$ सेकन्ड		

इस प्रकार से देशान्तर अंशों के घंटा या घंटा का देशान्तर के अंश बना लो।

यदि देशान्तर अंशों की घड़ी पल बनाना हो तो इस प्रकार से बना लो।

६ अंश देशान्तर	= १ घड़ी	१ घड़ी = ६°	देशान्तर
१ ,, ,,	= १० पल	१ पल = ६′	,,
१ कला ,,	= १० विपल	१ विपल = ६″	,,
६ ,, ,,	= १ पल		
१ विकला ,,	$= \frac{१}{६}$ विपल		

इस हिसाब से कोई देश ग्रीनविच से जितने रेखांश दूरी पर हो उसके घंटा मिनट बना लो। यदि वह देश ग्रीन विच के पूर्व में हो तो ग्रीनविच के समय में जोड़:

दो। यदि पश्चिम में हो तो घटा दो तो वहां का समय निकल आयगा। इस प्रकार से इष्ट देश के समय का अंतर प्रगट हो जायगा। इसी अंतर के प्रमाण से देशान्तर संस्कार होता है, इसे ही देशान्तर संस्कार कहते हैं।

जैसे किसी स्थान का देशान्तर ग्रीनविच से १० अंश पूर्व है तो $१^\circ = ४$ मिनट के हिसाब से $१०^\circ \times ४ = ४०$ मिनट का अंतर वहां (ग्रीनविच से) पड़ेगा। वह देश पूर्व होने से उतना समय ग्रीनविच से अधिक वढ़ा हुआ रहेगा। जैसे ग्रीनविच में जव १२ बजे दोपहर होगी तो १०° पूर्व के देश में ४० मिनट अधिक होगा अर्थात् १२ वजकर ४० मिनट दोपहर के होंगे।

यदि वह देश ग्रीन विच से १०° पश्चिम को हो तो ४० मिनट का अन्तर ग्रीनविच के समय में घटाना होगा। अर्थात् जब ग्रीनविच में १२ बजेगा तो १०° पश्चिम के देश में ४० मिनट कम होगा अर्थात्, ११-२० बजा होगा। यही वहां का स्थानिक समय हुआ

$$\text{L. M. T. (स्थानिक समय)} = \text{G. M. T. (ग्रीनविच समय)} \pm \frac{\text{देशान्तर}}{१५}$$

(देशान्तर पूर्व पश्चिम)
+ −

अब और उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं :—

(१) जवलपुर पूर्व देशान्तर ८०° पर है

$$= \frac{८०}{१५} = \begin{matrix}\text{घं० मि०} \\ +५\text{-}२०\end{matrix} \quad \begin{matrix}\text{पूर्व होने से} \\ +\end{matrix}$$

जब ग्रीन विच में १२ बजेगा तो जवलपुर में दोपहर के उपरान्त की ५-२० संध्या होगी।

(२) नरसिंहपुर पूर्व $७९^\circ - ११'$

$$= \frac{७९-११}{१५} = \begin{matrix}\text{घं० मि० से०} \\ +५-१६-४४\end{matrix}$$

$$१२ \text{ घंटा} + \begin{matrix}\text{घं० मि० से०} \\ ५-१६-४४\end{matrix} = ५-१६-४४ \text{ संध्या}$$

(३) सिंगापुर पूर्व १०३°

$$= \frac{१०३}{१५} = + \begin{matrix}\text{घं. मि.} \\ ६-५२\end{matrix} \quad \begin{matrix}\text{दोपहर} \\ १२\end{matrix} + \begin{matrix}\text{घं. मि.} \\ ६-५२\end{matrix} = \begin{matrix}\text{घं. मि.} \\ ६-५२ \text{ संध्या}\end{matrix}$$

(४) कलकत्ता पूर्व $८८^\circ - ३०'$

$$= \frac{८८-३०}{१५} = + \begin{matrix}\text{घं. मि.} \\ ५-५४\end{matrix} १२ + \begin{matrix}\text{घं. मि.} \\ ५-५४\end{matrix} = \begin{matrix}\text{दोपहर के बाद} \\ ५-५४ \text{ बजा होगा}\end{matrix} \text{।}$$

(५) नेटाल (अफ्रीका) = ३५° - १३′ पश्चिम

$$= \frac{३५\text{-}१३}{१५} = + \overset{\text{घं. मि. से.}}{२\text{–}२०\text{–}५२} \text{ ऋण } \overset{\text{घंटा}}{१२} - \overset{\text{घं. मि. से.}}{(२\text{–}२०\text{–}५२)}$$

घं. मि. से.

(६) जिब्राल्टर = ५° - २५′ पश्चिम = ९ - ३९ - ८ प्रातः के

$$= \frac{५ - २५}{१५} = - \overset{\text{घं. मि. से.}}{० - २१ - ४०} \text{ ऋण} = \overset{\text{घंटा}}{१२} - \overset{\text{घं. मि. से.}}{(० - २१ - ४०)}$$

$$= \overset{\text{घं. मि. से.}}{११ - ३८ - २०} \text{ दोपहर के पहिले ।}$$

(७) बनारस = ८३° - ०′ पूर्व ।

$$\frac{८३\text{-}०}{१५} = + \overset{\text{घं. मि.}}{५ - ३२} = \overset{\text{घंटा}}{१२} + \overset{\text{घंटा मि.}}{(५\text{–}३२)} = \overset{\text{घंटा मि.}}{५ - ३२} \text{ संध्या}$$

(दोपहर के बाद)

(८) उज्जैन = ७५° - ४३′ पूर्व

$$\frac{७५° - ४३′}{१५} = + \overset{\text{घं. मि. से.}}{५ - २ - ५२} = \overset{\text{घंटा}}{१२} + \overset{\text{घंटा मि. से.}}{(५ - २\text{–}५२)}$$

$$= \text{संध्या के } \overset{\text{घंटा मि. से.}}{५ - २ - ५२} \text{ बजे}$$

यदि घंटा मिनट में देशान्तर दिया हो तो उसमें १५ का गुणा कर अंश बना लो। जैसे :—

$$\text{बनारस का देशान्तर (होराश्च)} = \overset{\text{घं. मि.}}{५ - ३२} \text{ है तो ।}$$

$$\overset{\text{घंटा मि.}}{(५\text{–}३२)} \times १५ = ८३° - ० = \text{बनारस का देशान्तर हुआ ।}$$

उज्जैन का देशान्तर जानना।

प्रायः ग्रीन विच से देशान्तर दिया रहता है, परन्तु कभी उज्जैन से देशान्तर जानने की आवश्यकता पड़ जाती है तो ग्रीन और उज्जैन के बीच का देशान्तरों का अन्तर निकालो, वह अन्तर पूर्व के देश में जोड़ने से और पश्चिम के देश में घटाने से उज्जैन से देशान्तर निकल आयगा।

जैसे कलकत्ता ग्रीनविच से ८८° – ०′ पूर्व है और उज्जैन ७५° – ४३′ पूर्व है। दोनों का अन्तर ८८°– ३०′

$$\frac{- ७५ - ४३}{१२ - ४७} = १२° - ४७′$$

मि. से. मि. से.
= ५१ – ८ अन्तर हुआ। उज्जैन से कलकत्ता ५१–८ पूर्व में होने से कलकत्ता का
घंटा मि. से.
टाइम आगे है। जब उज्जैन में १२ बजे मध्याह्न होगा तो कलकत्ता में १२ + ५१ – ८ = १२ बजकर ५१ मिनट ८ सेकेन्ड बजेगा। इस कारण उज्जैन से कलकत्ता का देशान्तर
घं. मि. से.
+ ० – ५१ – ८ उज्जैन से पूर्व में कलकत्ता होने से + हुआ।

बम्बई ७२° – ५४′ पूर्व में है। इससे और उज्जैन के समय में अन्तर जानना है। बम्बई ७२° – ५४′ पूर्व और उज्जैन ७५° – ४३′ पूर्व है। दोनों का अन्तर

७५° – ४३′
— ७२ – ५४
२ – ४९ = २° – ४९′ = ११ – १६ हुआ (मि. से.)। उज्जैन से बम्बई का देशान्तर कम है तो बम्बई पश्चिम में है जानना। पश्चिम में देशान्तर घटाया जाता है। अर्थात्
मि. से.
उज्जैन से बम्बई का टाइम ११–१६ कम होगा। जब बम्बई में १२ बजेगा तो उज्जैन
मि. से. घंटा मि. से.
में १२ बज के ११ – १६ होगा। या उज्जैन में १२ बजेगा तो बम्बई में ११–४८–४४ बजेगा। इस कारण उज्जैन से बम्बई का देशान्तर – २° – ४९′ हुआ।

इस प्रकार पश्चिम देशान्तर में घटाकर और पूर्व देशान्तर में जोड़कर समय जाना जा सकता है। जहां उज्जैन को मध्य रेखा मानकर देशान्तर उज्जैन से दिया हो तो इसी प्रकार उज्जैन के समय से ग्रीनविच का समय बनाया जा सकता है या ग्रीनविच से दिये देशान्तर से उज्जैन का देशान्तर जाना जा सकता है।

यदि काशी से देशान्तर दिया है तो इसी प्रकार काशी से भी अंतर निकाल लो।

घं० मि०
काशी का देशान्तर ८३° – ०′ (५ – ३२ पूर्व) है यदि काशी से देशान्तर निकालना है तो इष्ट स्थल के देशान्तर से काशी के देशान्तर का अंतर निकाल लो। जैसे जबलपुर ग्रीनविच से घं०मि० ५ – २० पूर्व देशान्तर है तो जबलपुर का देशान्तर
घं० मि०
काशी से जानने के लिये काशी और जबलपुर का अंतर निकाला काशी ५ – ३२
जबलपुर ५ – २०
० – १२

=१२ मिनट का अंतर निकला। काशी का समय जबलपुर से अधिक है तो जबलपुर के समय से काशी का समय १२ मिनट अधिक होगा। काशी से जबलपुर का समय कम है तो १२ मिनट कम होगा। अब काशी में १२ बजे दोपहर होगी तो जबलपुर में घं० मि० ११ – ४८ बजेगा। यदि कोई देश काशी से पूर्व हो तो इष्ट देश का अन्तर काशी के समय में जोड़ना पड़ेगा। अर्थात् काशी से पूर्व देशों में जोड़ना और पश्चिम में घटाना पड़ता है।

सिद्धांत यह है कि पूर्व के देशों में शीघ्र सूर्योदय होता है, इसके उपरांत पश्चिम के देशों में सूर्योदय होता है। पूर्व के देशों में जब दोपहर होगी उसके उपरान्त पश्चिम के देशों में सूर्योदय होगा। पूर्व के देशों में पहिले सूर्यास्त होगा, इसके उपरान्त पश्चिम के देशों में सूर्यास्त होगा इस बात का ध्यान देशान्तर करते समय रखना चाहिए। इसी कारण पूर्व के देशों में + (धन) पश्चिम के देशों के लिये – (ऋण) संस्कार करना होता है।

ऊपर बताई विधि से ग्रीनविच के समय को स्थानिक समय में या स्थानिक समय को ग्रीनविच के समय में परिवर्तन कर सकते हैं।

समय-परिवर्तन

आजकल घड़ियां जो समय बतलाती हैं वह स्टेन्डर्ड टाइम का समय है यह पहिले बता चुके हैं। बहुधा लोग जन्म समय घड़ी देखकर लिख लेते हैं। इस कारण उस समय की शुद्धि की आवश्यकता होती है।

स्टेन्डर्ड टाइम से स्थानिक मध्यमकाल बनाना

स्थानिक मध्यम काल = स्टेन्डर्ड टाइम ± स्टेन्डर्ड और स्थानिक
L. M. T. देशान्तर काल का अन्तर

स्थानिक देशान्तर स्टेन्डर्ड से अधिक हो तो + (धन)
" " अल्प " – (ऋण)

घं० मि०
ग्रीनविच से यहां का स्टेन्डर्ड देशान्तर ८२° – ३०′ = ५ – ३० पूर्व है

(१) मान लो इस स्टेन्डर्ड टाइम से जबलपुर का स्थानिक समय निकालना है तो :—

घं० मि०
जबलपुर का देशान्तर ८०° – ०′ = ५ – २० है

	घं० मि०	स्टेन्डर्ड देशान्तर से
स्टेन्डर्ड देशान्तर ८२° − ३०′	= ५ − ३०	जवलपुर का अंतर
जवलपुर ,, ८० − ०	= ५ − २०	निकाला तो १० मिनट
अंतर = − २ − ३०	= ० − १०	का अंतर निकला

जबलपुर का देशान्तर, स्टेन्डर्ड देशान्तर से कम है तो प्रगट हुआ कि जवलपुर स्टेन्डर्ड देशान्तर से पश्चिम में है। स्टेन्डर्ड देशान्तर से यह अंतर घटा देने से जवलपुर का मध्यम स्थानिक समय प्रगट हो जायगा। यहां स्टेन्डर्ड टाइम से जवलपुर का स्थानिक मध्यम समय १० मिनट कम निकला। जव घड़ी में (स्टेन्डर्ड टाइम) १२ वजेगा तो जवलपुर का स्थानिक समय घं० मि० से० ११–५०–० बजे समझना चाहिए।

(२) काशी का देशान्तर ग्रीनविच से ८३° – ०′ पूर्व है = ५ – ३२ घं० मि० है यहां स्टे० टा० का अंतर निकालना है।

काशी का देशान्तर समय	= ५–३२ घं० मि०	यहां काशी का देशान्तर
स्टेन्डर्ड ,,	= ५–३०	अधिक है तो + होगा।
अन्तर	= + ०–२	

जव स्टे० टा० (घड़ी में) १२ वजेगा तो काशी में २ मिनट अधिक होगा अर्थात् १२ वजकर २ मिनट होगा।

इसी प्रकार इष्ट स्थान का देशान्तर और स्टेन्डर्ड देशान्तर का अन्तर निकालकर, इष्ट स्थान यदि स्टेन्डर्ड देशान्तर के पूर्व हो तो +, पश्चिम हो तो – (ऋण) करके घड़ी के टाइम को स्थानिक मध्यम समय बना लेना चाहिए। स्टेन्डर्ड देशान्तर से इष्ट स्थान का देशान्तर अधिक हो तो उसे पूर्व में, कम हो तो पश्चिम में है ऐसा समझ लेना चाहिए।

स्टेन्डर्ड टाइम के सम्बन्ध में ध्यान रहे कि दिनांक १–७–१९०५ ई० से स्टेन्डर्ड टाइम यहां चालू है। इस कारण इसके पहिले का जन्म हो तो यह संस्कार करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

पहिले बता चुके हैं कि घड़ी का समय मध्यम समय है और इससे जो स्थानिक समय निकाला गया है वह भी मध्यम स्थानिक समय ही होगा। इस प्रकार निकाला गया स्थानिक मध्यम समय भी शुद्ध नहीं है। क्योंकि यह समय भी घड़ी के अनुसार निकला है। सूर्य की गति एक सी नहीं रहती परन्तु घड़ियों की गति एक सी रहती है। इस कारण इस मध्यम स्थानिक समय को सूर्य के अनुसार करना पड़ता है। इसमें वेलान्तर संस्कार करने से स्थानिक शुद्ध समय निकलता है। अर्थात् घड़ी के समय को स्थानिक समय में परिवर्तन करने के उपरान्त फिर उसमें वेलान्तर संस्कार करना पड़ता है तब शुद्ध स्थानिक समय निकलता है। उपरान्त इस शुद्ध समय को लेकर इष्ट काल निकाल कर कुंडली बनानी चाहिए तब ही शुद्ध कुंडली बनेगी।

—:०:—

अध्याय २

काल समीकरण Equation of time

सूर्य की गति एक सी नहीं रहती कभी गति अधिक होती है कभी कम होती है। इस कारण सूर्य की गति किस महीने में कितनी कम या अधिक होती है यह जानकर मध्यम समय से उस समय की घटी-बढ़ी का विचार कर एक सारिणी बना ली गई है, जिसे वेलान्तर सारिणी या काल-समीकरण कहते हैं।

स्थानिक मध्यम समय में जो घड़ी के समय पर से बनता है, वेलान्तर सारिणी के अनुसार संस्कार करने से उस स्थान का इष्ट समय (सूर्य के अनुसार) निकल आता है।

वेलान्तर सारिणी से किसी महीने की तारीख का मध्यम मध्याह्न और स्पष्ट मध्याह्न के समय का अन्तर जाना जा सकता है। सारिणी के अनुसार धन ऋण करने से स्पष्ट स्थानिक समय निकल आता है। वेलान्तर सारिणी में जहां – (ऋण) दिया है वहां अपने समय में सारिणी का समय घटाना और जहां + दिया है वहां जोड़ना पड़ता है।

जैसे १४ अक्टूबर को किसी का जन्म हुआ है तो अक्टूबर की १४ तारीख को सारिणी में + १४ दिया है तो उपर्युक्त समय में इसे जोड़ना पड़ेगा।

काशी की घड़ी में (स्टेन्डर्ड टाइम) यदि १२ बजे दोपहर है तो मध्यम स्थानिक समय घंटा–मि० १२–२ हुआ जैसे पहले निकाल चुके हैं। अब इस मध्यम समय में + १४ मिनट जोड़ा तो घंटा–मि० १२–१६ हुआ। यही वहां का स्थानिक स्पष्ट समय हुआ। इसी शुद्ध समय पर से कुण्डली बनानी चाहिए। केवल स्टेन्डर्ड टाइम से बनी कुण्डली अशुद्ध होगी।

इस पर भी यह ध्यान रहे कि यदि यह समय दूसरी लड़ाई के समय का एक घंटा बढ़ा हुआ है तो उसमें से एक घंटा घटा देना पड़ेगा, तब उपर्युक्त शुद्ध समय घं०–मि० ११–१६ होता है।

धूप घड़ी के अनुसार जो समय विदित होता है वही वहां का स्पष्ट स्थानिक समय जानना। काल समीकरण सारिणी आगे दी है।

वेलान्तरसारिणी (काल समीकरण सारिणी) = मिनट में

तारीख	जनवरी १	फरवरी २	मार्च ३	अप्रैल ४	मई ५	जून ६	जुलाई ७	अगस्त ८	सितम्बर ९	अक्टूबर १०	नुवम्बर ११	दिसम्बर १२
१	−३	−१४	−१३	−४	+३	+२	−३	−६	+०	+१०	+१६	+११
२	−३	−१४	−१२	−४	+३	+२	−४	−६	+०	+१०	+१६	+११
३	−४	−१४	−१२	−४	+३	+२	−४	−६	+१	+११	+१६	+१०
४	−५	−१४	−१२	−३	+३	+२	−४	−६	+१	+११	+१६	+१०
५	−५	−१४	−१२	−३	+३	+२	−४	−६	+१	+११	+१६	+१०
६	−६	−१४	−१२	−३	+३	+२	−४	−६	+१	+१२	+१६	+१०
७	−६	−१४	−१२	−२	+३	+१	−५	−६	+१	+१२	+१६	+९
८	−७	−१४	−११	−२	+४	+१	−५	−६	+२	+१२	+१६	+९
९	−७	−१४	−११	−२	+४	+१	−५	−५	+३	+१३	+१६	+८
१०	−७	−१४	−११	−२	+४	+१	−५	−५	+३	+१३	+१६	+७
११	−८	−१४	−१०	−१	+४	+१	−५	−५	+३	+१३	+१६	+७
१२	−८	−१४	−१०	−१	+४	+१	−५	−५	+३	+१३	+१६	+७
१३	−९	−१४	−१०	−१	+४	+०	−५	−५	+४	+१४	+१६	+६
१४	−९	−१४	−१०	+०	+४	+०	−६	−५	+४	+१४	+१५	+६
१५	−९	−१४	−९	+०	+४	+०	−६	−४	+५	+१४	+१५	+५
१६	−१०	−१४	−९	+०	+४	+०	−६	−४	+५	+१४	+१५	+५
१७	−१०	−१४	−९	+०	+४	+०	−६	−४	+५	+१४	+१५	+४
१८	−१०	−१४	−८	+०	+४	−१	−६	−४	+६	+१५	+१५	+४
१९	−११	−१४	−८	+१	+४	−१	−६	−४	+६	+१५	+१५	+३
२०	−११	−१४	−८	+१	+४	−१	−६	−३	+७	+१५	+१४	+३
२१	−११	−१४	−८	+१	+४	−१	−६	−३	+७	+१५	+१४	+२
२२	−१२	−१४	−७	+१	+४	−२	−६	−३	+७	+१५	+१४	+२
२३	−१२	−१४	−७	+२	+३	−२	−६	−३	+७	+१६	+१४	+१
२४	−१२	−१४	−७	+२	+३	−२	−६	−२	+८	+१६	+१३	+१
२५	−१२	−१३	−७	+२	+३	−२	−६	−२	+८	+१६	+१३	−०
२६	−१३	−१३	−६	+२	+३	−२	−६	−२	+८	+१६	+१३	−०
२७	−१३	−१३	−६	+२	+३	−३	−६	−२	+९	+१६	+१३	−१
२८	−१३	−१३	−५	+२	+३	−३	−६	−१	+९	+१६	+१२	−१
२९	−१३	−१२	−५	+३	+३	−३	−६	−१	+९	+१६	+११	−२
३०	−१३	−×	−५	+३	+३	−३	−६	−१	+१०	+१६	+११	−२
३१	−१४	−×	−४	×	+३	×	−६	−०	×	+१६	×	−३

ऊपर जो समय दिया है वह मिनट में है।

स्थानिक स्पष्ट समय से ग्रीनविच का समय बनाना।

जब स्पष्ट स्थानिक समय (धूप घड़ी का समय) विदित हो और ग्रीनविच ऐफेमरी से ग्रह स्पष्ट आदि करने के लिए यदि ग्रीनविच का समय जानना हो तो उसकी रीति आगे दी है। अंग्रेजी पंचांग का उपयोग करते समय या काल समीकरण गणित के लिए ग्रीनविच टाइम बनाने की कभी आवश्यकता पड़ जाती है। इस कारण इसको भी जान लेना चाहिए।

पहले स्थानिक स्पष्ट समय (A. T.) में काल समीकरण के लिए वेलान्तर सारिणी के अनुसार संस्कार करो तो स्थानिक स्पष्ट समय का स्थानिक मध्यम समय बन जायगा। परन्तु वेलान्तर में धन ऋण की क्रिया इसमें विरुद्ध करनी पड़ती है। अर्थात् जहां – (ऋण) हो वह धन करना (जोड़ना) जहां + का चिन्ह हो वहां घटाना। तब उस मध्यम स्थानिक समय पर से ग्रीनविच का मध्यम समय G. M. T. (Greenwich mean time) बन जायगा।

जैसे १४ अक्टूबर को काशी में स्थानिक स्पष्ट समय जन्म का घं०मि० १२–१६ है तो इसका मध्यम स्थानिक समय बनाने के लिए काल समीकरण सारिणी देखो। उसमें १४ अक्टूबर को + १४ दिया है। इसलिए इसके विरुद्ध क्रिया अर्थात् जोड़ने के स्थान में घटाना होगा। घं० मि० १२–१६ में से यह १४ मिनट घटा दिया तो घं० मि० १२–२ शेष रह गया। यही वहां का मध्यम स्थानिक समय हुआ, जो पहिले स्टेन्डर्ड समय पर से देशान्तर संस्कार करने से निकला था।

काशी का देशान्तर ८३°–०' पूर्व है = घं० मि० ५–३२। देशान्तर पूर्व हो तो जोड़ा जाता है, पश्चिम हो तो घटाया जाता है। जब काशी में घं० मि० ५–३२ संध्या का समय था तो उस समय ग्रीनविच में १२ बजे मध्याह्न काल था। काशी का समय घं०मि०५–३२ ग्रीनविच से अधिक है।

काशी का स्थानिक मध्यम समय ऊपर घं० मि० १२–२ निकला था। अब देखना है कि जब काशी में घं० मि० १२–२ था तो ग्रीनविच में क्या बजा होगा? दोनों देशों का अंतर घटाने से ग्रीनविच का समय निकल आयगा। काशी से ग्रीन विच पश्चिम में है, इससे काशी के समय में से वह अन्तर घटाना पड़ेगा।

	घं० मि०	
काशी का समय	१२–२	अन्तर घटाने से ६–३० आया तो उस समय ग्रीन
,, देशान्तर अंतर घटाया	५–३२	घं० मि०
शेष	६–३०	विच में ६–३० प्रातः का बजा होगा।

इसमें स्टेन्डर्ड टाइम का कोई झगड़ा नहीं रहा। क्योंकि जब स्थानिक मध्यम समय प्रगट हो गया तो फिर उससे ग्रीनविच का समय जानने के लिए स्टेन्डर्ड टाइम जानने की आवश्यकता नहीं रही।

जब यह कहा जाय कि काशी का स्थानिक मध्यम समय घं० मि० १२-२ है तो स्टेन्डर्ड टाइम क्या होगा ? (घड़ी में क्या बजा होगा) तो काशी का देशान्तर ८३° और स्टेन्डर्ड देशान्तर ८२°-३०' दोनों में ३०" का अन्तर है = २ मिनट का अंतर पड़ा। काशी का देशान्तर अधिक है यहां विरुद्ध क्रिया की, अर्थात् अधिक देशान्तर में + होता है तो यहां - (ऋण) करना पड़ेगा। यहां काशी का देशान्तर अधिक है तो ऋण करना पड़ेगा। घं० मि० १२-२ में से दो मिनट घटाया तो १२ घंटा बचे। यही यहां का स्टेन्डर्ड टाइम अर्थात् घड़ी का समय हुआ।

गणित द्वारा काल समीकरण के लिये सायन सूर्य की आवश्यकता पड़ती है। इससे सूर्य स्पष्ट कर उससे सायन सूर्य बनाना आगे बताया है।

सूर्य स्पष्ट करना

इष्ट काल का सूर्य बनाने की आवश्यकता आगे बहुत पड़ेगी। इस कारण इसकी रीति जान लेनी चाहिए। स्पष्ट सूर्य से सायन सूर्य बनाया जाता है। सायन सूर्य का बहुत उपयोग होता है।

बहुधा प्रत्येक पंचांग में प्रति-दिन का स्पष्ट सूर्य दिया रहता है, उस पर से अपने इष्ट काल का सूर्य बनाया जाता है। सूर्य स्पष्ट के साथ-साथ सूर्य की गति भी दी रहती है, उस पर से गणित कर, इष्ट समय तक की सूर्य की गति निकाल कर, पहिले दिये हुए सूर्य की गति में जोड़ने से इष्ट काल का सूर्य बन जाता है।

मान लो १ फरवरी १९४४ ई० दिन मंगलवार को ११ बजे किसी का जन्म है, तो जन्म समय का सूर्य स्पष्ट निकालना है।

उस दिन का पंचांग देखा। प्रातः रवि स्पष्ट रा० ९°-१७ - ५८' - २" गति ६१' - ०" दिया है। गति सदा कला विकला में दी रहती है। दिन रात ६० घड़ी में ६१'-०" सूर्य की गति है ऐसा समझना।

जन्म समय ११ बजे दिया है। यह नया टाइम है। पुराना टाइम १० बजे का
घं० मि०
समझो, क्योंकि बढ़ा हुआ १ घंटा दिया। उस दिन सूर्योदय ६-३० पर था इस पर से इष्ट काल बनाया।

जन्म	घंटा १०-०	जन्म के १० घंटा में से ६-३० सूर्योदय के निकाल दिये तो घं० मि०
सूर्योदय -	६-३०	शेष ४-३० जन्म का घंटा हुआ। इसके घड़ी पल बनाये तो
शेष	४-३०	घ० प० ११-१५ यह इष्ट काल हुआ। (स्थूल इष्ट काल)
=	घड़ी पल ११-१५	उदाहरणार्थ इसे ही लिया।

घं० प०

अब ११-१५ इष्टकाल की सूर्य की गति निकालना है।

घं० प०

६० घड़ी में ६१'-०" गति तो ११-१५ में कितनी होगी ?

घ० प०

(६१'-०") × (११-१५) / ६० घड़ी = ६८६' - १५" / ६० = ११'-२६" गति हुई। चालन +

११'-१५"
× ६१
११ | १५
६६ | ६०
६७१ | ६१५ + ६०
+ १५ | = १५
६८६
= ६८६'-१५"

६०) ६८६-१५ (११'
६०
८६
६०
२६ × ६०
१५६० + १५
६०) १५७५ (२६"
१२०
३७५
३६०
१५

पंचांग में दिये हुए सूर्य के आगे का इष्ट है, इससे गति जोड़नी पड़ेगी

रा
प्रातः रवि ६-१७°-५८'-२"
चालन + ०- ०-११-२६
= ६-१८- ६-२८
स्पष्ट रवि

ग० ०

इस प्रकार इष्ट कालीन स्पष्ट रवि ६-१८-६'-२८" हुआ

पंचांग में दिये हुए समय के ग्रह में और भी इष्ट काल तक की गति जोड़नी घटानी पड़ती है उसे चालन कहते हैं। यहां चालन ११-१५ घड़ी है जिसकी गति निकालनी थी। यदि पंचांग में दिये हुए ग्रह के आगे का निकालना है तो चालन + होता है, क्योंकि जो गणित से आगे गति आयगी वह जोड़नी पड़ती है। यदि उसके पहिले का निकालना है तो चालन ऋण होगा, क्योंकि पंचांग में दिये हुए ग्रह से पहिले की गति घटा कर उसके पहिले का स्पष्ट ग्रह बनाना पड़ता है।

दूसरा उदाहरण

घ० प०

मान लो दिनांक २ अगस्त सन् १९४४ को इष्ट काल ३५-४० का सूर्य स्पष्ट करना

रा

है। पंचांग में प्रातः रवि स्पष्ट ३-१५-२७'-३२" दिया है। गति ५७'-१६" दी है। शाके १८६५ है।

घं० प०

६० घड़ी में ५७′-१६″ गति तो ३५-४० में कितनी ?

(चालन धन होगा)

$$\frac{(३५-४०)\times(५७'-१६'')}{६०}=\frac{२०४२'-३०''-४०'''}{६०}=३४'-२''$$ गति हुई +

```
         ५७-१६
       × ३५-४०
  ---------------------
       ।२२८०।६४०
  ---------------------
  २८५        ८०।
  १७१        ४८ ।
  ---------------------
  १९९५    ।२८४०।  ६४० ÷ ६०
  + ४७    ।+ १०।   = ४०
  ----    ।----
  २०४२    ।२८५०।
          ।= ३०।
= २०४२-३०-४० + ६०
६० ) २०४२-३०-४० ( ३४
     १८०
     ---
     २४२
     २४० = ३४′-२″
     ---
       २
```

यहां दोनों अंकों का गुणा गोमूत्रिका क्रम से किया है। दोनों संख्याओं को एक दूसरे के नीचे रख कर ४० का १६ से गुणा किया। फिर ४० का ५७ से गुणा किया। इसके आगे दाहिनी ओर का एक घर छोड़ कर ३५ और १६ से गुणा करने में जो आया उसे रखा। फिर उसके आगे बाईं ओर ३५ और ५७ से गुणा करने से जो आया उसे रखा। उपरांत सब संख्याओं का जोड़ नीचे रख दिया और सब अंकों को ६० से अधिक होने पर ६० से शोधन किया। जैसे ६४० में ६० का भाग दिया शेष ४० बचा, वह उसी घर में रखा लब्धि १० आई वह बाईं ओर के कोठे के योग में जोड़ दिया तो २८५० हुआ। ३० में भी ६० का भाग दिया तो शेष ३० रहा, उसी कोठे में रखा और लब्धि ४७ आई उसे बाईं ओर के कोठे के योग में जोड़ दिया। इस प्रकार सबका योग किया तो २०४२′-३०″-४०‴ यह दोनों का गुणनफल हुआ। इसमें फिर ६० का भाग दिया तो ३४ कला लब्धि में आई। शेष २ बचा उस में ६० का गुणा कर ३० जोड़ा और ६० का भाग दिया तो वही २ विकला आई। इस प्रकार गति ३४′-२″ प्राप्त हुई।

गोमूत्रिका क्रम से गुणा करने की रीति और उदाहरण आगे मिलेगा। इसे अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए। इसका अधिक काम पड़ेगा।

रा

प्रातः रवि स्पष्ट ३-१५°-२७′-३२″ था

चालन + ३४–२

योग ३ – १६ – १ – ३४ इस में अयनांश जोड़ दो तो इष्ट

= इष्ट कालीन सूर्य स्पष्ट काल का सायन सूर्य बन जायगा।

अयनांश बनाना—

रीति = $\frac{\text{शाके} - ४४४}{६०}$

इष्ट शाका १८६५
– ४४४
६०) १४२१ (२३ अंश
१२०
२२१
१८०
४१ कला

= २३ – ४१° अयनांश
रा

निरयन सूर्य ३–१६°–१′–३४″
+ अयनांश २३–४१–०
योग = ४–९–४२–३४ = सायन सूर्य

सायन सूर्य को सायनार्क भी कहते हैं ।

तीसरा उदाहरण :—

मान लो दिनांक ३० अप्रेल १९४२ ई. शाके १८६४ इष्ट काल ४०–१० घड़ी का (घ. प.) सूर्य स्पष्ट निकालना है । पंचांग में मिश्रमान ४६–५१ का सूर्य ०–१६–४८′–८″ (रा ०) गति ५८′–११″ दिया है ।

अपना इष्टकाल पंचांग में दिये हुए मिश्रकाल से कम है। अर्थात् उससे पहिले का है तो चालन ऋण होगा । चालन की जो गति निकलेगी वह घटानी पड़ेगी ।

	घड़ी पल
मिश्रकाल	४६–५१
इष्टकाल	४०–१०
अंतर	६–४१

घ. पल
अब ६ – ४१ की गति निकालनी है
६० घड़ी में ५८′–११″ तो ६–४१ घड़ी में कितनी होगी ?

$$\frac{(५८'–११'')\times(६–४१)}{६०} = \frac{३८८–५१–३१}{६०}$$

= ६′–२८″ ऋण

५८–११
× ६–४१

	५८ २३२	११ ४४
३४८	६६	
३४८ +४०	२४४४ +७	४५१ ÷ ६० = ३१
३८८	२४५१ = ५१	

= ३८८–५१–३१ गुणन फल

६०)३८८–५१–३१(६'
३६०
२८"

= ६'–२८"

रा ०
मिश्रकालीन सूर्य ०–१६–४८'–८"
चालन ऋण – ६–२८
शेष = ०–१६–४१–४०
= इष्ट कालीन सूर्य स्पष्ट

अयनांश शाके १८६४
– ४४४
शेष १४२० ÷ ६०

६०) १४२० (२३
१२०
२२० अंश
१८०
४० = अयनांश २३°-४०
कला

रा ०
इष्टकालीन सूर्य ०–१६–४१'–४०"
+ अयनांश २३–४०
योग १–१०–२१–४०
सायन सूर्य

उपर्युक्त उदाहरण में

रा ०
इष्टकालीन निरयन सूर्य = ०–१६–४१'–४०" हुआ
" सायन " = १–१०–२१–४० हुआ

गणित द्वारा काल समीकरण

पहिले जो काल समीकरण की सारिणी दी है यदि कोई गणित द्वारा वेलान्तर निकालना चाहे तो उसकी रीति यहां दे देते हैं।

गणित द्वारा ठीक मिनट और सेकन्ड स्थानिक देशान्तर के :अनुसार समय निकलता है, परन्तु उपर्युक्त सारिणी द्वारा देशान्तर में कुछ अन्तर पड़ने से बहुत ही कम अन्तर पड़ता है। इस कारण ठीक २ वेलान्तर गणित द्वारा निकाल सकते हैं। जो गणित की खटपट से बचना चाहते हैं वे उपर्युक्त सारिणी द्वारा काम चला सकते हैं।

काल समीकरण E. T. (Equation of time)

यह किसी स्थान के मध्यम M. T. (Mean time) और प्रत्यक्ष समय A. T. (Apparent time) अंतर है।

यदि प्र० स०, मध्यम स० से अल्प है तो म० स० से प्र० स० घटाना
" " अधिक है " प्र० स० " म० स० "

जो अन्तर निकलें वही काल समीकरण है।

म० स० से प्र० स० कम है तो काल समीकरण +

M. T. A. T. अधिक है " E. T. – (ऋण)

किसी स्थान का काल समीकरण जानने को प्रथम उस स्थान के देशान्तर का घंटा मिनट बना लो। फिर इष्ट दिनांक के ६ बजे प्रात: या सायंकाल का मध्यम समय लो। स्मरण रहे मध्यम समय यहां प्रात: काल ६ बजे का ही लिया जाता है।

स्थानिक समय ६ बजे प्रात: काल को ग्रीन विच टाइम G.M. T. बना लो।

$$G.\ M.\ T. = L.\ M.\ T. \pm \frac{\text{Longitude}}{15}$$

ग्रीन० म० स० = स्था० म० स० ± देशान्तर के घंटे [+ देशान्तर पश्चिम में
[— ,, पूर्व ,,

अब ग्री० म० स० (G. M. T.) का सायन सूर्य बना लो। अंग्रेजी दैनिक ग्रह स्पष्ट वाले पंचांग (ऐफेमरी) में ग्रीनविच मध्यम मध्यान्ह (G. M. N.) का सायन सूर्य दिया रहता है।

(ग्री० म० स०)—(ग्री० म० मध्याह्न) = दोनों का अन्तर निकालो तो यह अन्तर
(G. M. T.) (G. M. N.) चालन कहलायगा।

ग्री० म० मध्याह्न से ग्री० म० स० पहिले हो तो चालन – (ऋण)

G. M. N. G. M.T. उपरांत का हो ,, ,, +

यदि ऐफेमरी में सायन सूर्य की गति न दी हो तो उस दिन के सायन सूर्य और उसके प्रथम (अगले) दिन का सायन सूर्य का अन्तर करो। जो अन्तर निकलेगा वही सूर्य की गति २४ घंटे की निकलेगी।

फिर गणित से इष्ट समय के सूर्य की गति निकाल लो। २४ घंटे में इतनी गति तो चालन के समय में (ग्री० म० स० और ग्री० म० मध्याह्न का अन्तर) में कितनी गति होगी। जो उत्तर आवे ग्री० म० मध्याह्न G. M. N. काल के सायन सूर्य में, यदि चालन ऋण हो तो घटाना चालन धन हो तो जोड़ना। इस प्रकार करने से ग्री० म० स० G.M.T. का सायन सूर्य बन जायगा।

फिर ग्री० म० स० G. M. T. का सायन सूर्य किस राशि के कितने अंश में है देखो। केवल अंश नोट करो कला विकला अभी छोड़ दो। फिर भाव सारिणी Table of houses में (यह ऐफेमरी के साथ कभी दिया रहता है या अलग भी मिलता है) दशम भाव के नीचे उस राशि का उतना अंश कहीं पर दिया होगा, खोजो। उसके बांये बाजू उसका नक्षत्र काल दिया हो वह लिख लो और उसके १ अंश आगे

का नाक्षत्र काल Side real time लिख लो। इन दोनों नाक्षत्र कालों का अन्तर निकालो।

फिर गणित से निकालो १° (६० कला) में इतना अंतर तो शेष कला विकला में कितना अन्तर होगा त्रैराशिक से निकालो। जितना उत्तर आवे अल्प अंश के (पहिले वाले) नाक्षत्र काल में, अर्थात् जितना अन्तर निकाला गया था, इन दोनों नाक्षत्र काल में से जो अल्प नाक्षत्र काल हो, उसमें जोड़ दो वह ग्री० म० स० G. M. T. का सायन सूर्य का दशम काल का नाक्षत्र काल होगा। इसी को ध्रुव Right Assession भी कहते हैं। सुविधा के लिये इसे सूर्य का समय (काल) Sun time कहेंगे, क्योंकि यह सायन सूर्य से बनाया गया है।

अब इष्ट दिनांक का ग्री०म० मध्याह्न का नाक्षत्र काल लो जो ऐफेमरी में दिया रहता है। उसके सहारे से ग्री० म० स० G. M. T. का नाक्षत्र काल बना लो।

ग्री० म० मध्याह्न और ग्री० म० काल का जितने घंटे मिनट का अन्तर हो, उतने घंटे का प्रति घंटे १० सेकन्ड के हिसाब से नाक्षत्र काल निकाल कर ग्री० म० मध्याह्न के पहिले का ग्री० म० का G. M. T. हो तो नाक्षत्र काल में घटाना और उपरांत का हो तो जोड़ना तब ग्री० म० का० का नाक्षत्र काल बन जायगा।

इस प्रकार ग्री० म० काल का सूर्य काल और नाक्षत्रकाल अपने को मिल गया। अब इन दोनों का अन्तर निकालो जो अन्तर निकलेगा वही वेलान्तर E. T. होगा।

नाक्षत्र काल से सूर्य काल छोटा है तो वह वेलान्तर ऋण होगा, यदि बड़ा है तो धन होगा। इस प्रकार वेलान्तर का धन ऋण मिनट का समय निकल आयगा।

यह वेलान्तर ग्री० म० काल G. M. T. का हुआ। इसे सूर्योदय के प्रत्यक्ष (स्पष्ट) समय में ऊपर बताये नियम के अनुसार ± (धन या ऋण) करने से सूर्योदय का मध्यम समय Mean time निकल आयगा।

यहां स्पष्ट समय से मध्यम समय निकालना बताया है। यदि मध्यम समय से स्पष्ट समय निकालना है तो ऊपर बताये नियम के विरुद्ध करो। अर्थात् + (जोड़ने) के स्थान में वेलान्तर के लिये घटाना और − (घटाने) की जगह जोड़ना चाहिए।

आगे यही सब बातें उदाहरणदेकर समझाते हैं।

(१) उदाहरण

दिनांक १८ मार्च सन् १९२१ ई० का वेलान्तर निकालना है। स्थान नरसिंहपुर

नरसिंहपुर का देशान्तर ७९–११ पूर्व $= \frac{७९–११}{१५} =$ घंटा० मि० से० ५–१६–४४

घं० मि० से०

स्थानिक प्रात: ६ – ० – ०

देशान्तर पूर्व – ५–१६–४४ घटाया
शेष ०–४३–१६
यह ग्री० म० का G.M.T. हुआ

घं० मि० से०

ग्री० म० मध्याह्न १२–०–०
ग्री० म० काल ०–४३–१६
अन्तर= ११–१६–४४
यह दोनों का अन्तर हुआ।

दिनांक १८ मार्च का ग्री० म० मध्यान्ह का सायन सूर्य = मीन २७°–११′–२७″
" १७ " " " " " " " " २६–२१–४७
दोनों का अंतर निकालने से = गति = ०–५६–४०

दिनांक १७ मार्च की सायन सूर्य की २४ घंटे की गति ५६′–४०″ निकली ग्री० म० काल का गणित करना है। इससे पहिले दिन की सूर्य की गति ली क्योंकि ग्री० म० का० मध्याह्न के पहिले का है।

घं० मि० से०

अब त्रैराशिक से अन्तर ११–१६–४४ की गति निकाली।

घं० मि० से०

२४ घंटा में ५६′–४०″ गति तो ११–१६–४४ में कितनी ?

घं० मि० से०

$$\frac{(११–१६–४४) \times ५६'–४०'' \ (३५८०'')}{२४ \text{ घंटा}} = \frac{४०३७८–२५–२०}{२४} = १६८२''$$

$$= २८'–२''$$

घं० मि० से०

११–१६–४४
× ३५८०″

३९३८०	२१४८०	१४३२०
	३५८०	१४३२०

३९३८०	५७२८०	१५७५२० ÷ ६०
+ ९९८	+ २९२५	= २०

४०३७८५९९०५
= ४०३७८–२५–२० ÷ २४ = १६८२″

चालन ऋण

यह गति हुई
इसको ग्री० म० मध्याह्न में जोड़ना घटाना पड़ेगा। इससे इसे चालन कहते हैं।
दोपहर के पहिले का समय है इससे ऋण

२४)४०३७८(१६८२″
 २४ गति
 १६३
 १४४
 १९७
 १९२
  ५८
  ४८
  १०

दिनांक १८ का
ग्री०म० मध्याह्न का सायन सूर्य
२७°–११′–२७′ मीन
गति (चालन ऋण) २८–२
शेष = २६–५३–२५ मीन
∴ ग्री० म० काल का सायन सूर्य
मीन २६°–५३′–२५″
अब भाव चक्र देखो

अपना सूर्य २६° के आगे का और २६ एवम् २७ अंश के भीतर का है। इस कारण २६° मीन और २७° मीन दोनों का नाक्षत्र काल चक्र से खोजना है कि उनके आगे ऐफेमरी के भावचक्र table of houses में क्या नाक्षत्र काल दिया है।

घं० मि० से०
भाव चक्र के दशम भाव में = २७° मीन = २३–४९–० नाक्षत्रकाल
= २६° ,, = २३–४५–१९ ,, ,,
१° में अंतर = ०–३–४१ = २२१ सेकन्ड

सायन सूर्य मीन २६°–५३–२५″ है और अपने को मीन के २६° का नाक्षत्र घं० मि० से० २३–४५–१९ विदित है। शेष सायन सूर्य की कलादि ५३′–२५″ का नाक्षत्रकाल और जानना है। १०° (६०′) में २२१ से० नाक्षत्रकाल है (जो ऊपर आया है) तो ५३′–२५″ में कितना होगा ?

$$\frac{(५३–२५) \times (२२१ \text{ से०})}{६०'} = \frac{११८०५}{६०} = १९६–४५ \text{ से०}$$

= मिनट–से०

$$३–१६\frac{३}{४}$$

५३′—२५″
×२२१
 ६६३ | ११०५
 ११०५ | ४४२
 ११७१३ | ५५२५ ÷ ६०
 + ९२ | = ५
 ११८०५

६०)५५२५(९२ कला
 ५४०
 १२५
 १२०
 ५ विकला

६०)१९६ से० (३ मिनट
 १८०
 १६ से०

६०)११८०५—५(१९६ से०
 ६०
 ५८०
 ५४०
 ४०५
 ३६०
 ४५

$= १९६\frac{४५}{६०} = १९६\frac{३}{४}$

= ११८०५—५ ÷ ६०

= १९९ $\frac{३}{४}$ से०

= मिनट–से०

३—१६।।। ∴

	घं मि० से०
सायन सूर्य मीन के २६° में ना० काल	= २३-४५-१९
„ „ ५३'—२५" „	+ ३-१६।।।
„ २६°-५३'-२५" का „	= २३-४८-३५।।।

∴ २३–४८–३५।।। यह ना० काल = सूर्य काल Sun time या ध्रुव Right assession हुआ ।

घं० मि० से०

दिनांक १८ मार्च ग्री० म० मध्याह्न का ना० काल = २३-४२-१ (ऐफमिरी के अनुसार) ग्री० म० मध्याह्न और ग्री० म० काल का अन्तर ११-१६-४४ हैं जो आरम्भ में निकाल चुके हैं। प्रति घंटा १० सेकन्ड के हिसाब से इस अन्तर का ना० काल और निकालकर १८ मार्च के मध्याह्न के नक्षत्र में से इसे घटाना होगा ।

(घं० मि० से० — above second value: घं० मि० से०)

		मि० से०
११ घंटा = ११ × १० = ११० सेकन्ड	=	१–५०
१६ मिनट = १६ × $\frac{१}{६}$ = २$\frac{१}{३}$ „	=	+ २$\frac{१}{३}$
	योग	१–५३$\frac{१}{३}$

	घं० मि० से०
१८ मार्च ग्री० म० मध्याह्न का ना० काल	२३–४२–१
अन्तर का नाक्षत्र काल	= ०–१–५३$\frac{१}{३}$ घटाया
शेष	२३–४०–७$\frac{२}{३}$ = ग्री० म० का ना० काल

ऊपर जो म० मध्याह्न और म० काल का अन्तर दिया है उस अंतर का ना० काल निकालने के लिए १ घंटा में १० सेकन्ड या ६ मिनट में १ सेकन्ड या १ मिनट में $\frac{१}{६}$ सेकन्ड के हिसाब से उतने अंतर के समय का ना० का जो निकले उसे लेना केवल घंटा मिनट ११–१६ का यहां ना० काल निकाला है ४४ सेकन्ड छोड़ दिया, क्योंकि उसका ना० काल बहुत सूक्ष्म निकलेगा ।

घं० मि० से०

जो १८ मार्च के मध्याह्न ना० काल ऐफेमरी में २३–४२–१ मिला है। अब

मि० से०

अन्तर का ना० काल १–५३ $\frac{१}{३}$ को इसमें जोड़ने या घटाने को पहिले नियम वता चुके हैं कि ग्री० म० काल यह मध्याह्न पहिले का हो तो घटाना और उपरांत का हो तो जोड़ना। पहिले वता चुके हैं कि ग्री० म० मध्याह्न (घं० मि० से०) १२–०–० है और ग्री० म० काल प्रातः काल का (घं० मि० से०) ०–४३–१६ है। इस कारण मध्याह्न का समय होने से इस अंतर के ना० काल (मि० से०) १—५३ $\frac{१}{३}$ को घटाया है। इस प्रकार घटाने से ना० काल २३–४०–७ $\frac{२}{३}$ जो आया है वह ग्री० म० काल का ना० काल हुआ।

		घं० मि० से०	
ग्री० म० काल का सूर्य काल		२३–४८–३५	= सायन सूर्य का ना० काल
,,	ना० काल	२३–४०–७ $\frac{२}{३}$	
अंतर +		७–२७ $\frac{१}{३}$	= वेलांतर

यह सूर्य काल ना० काल से बड़ा है इसलिए + हुआ। यह वेलांतर १८ मार्च का हुआ। सारिणी में ८ मिनट दिया है।

मि० से०

यहां वेलान्तर + ७ – २७ निकला

	घं० मि० से
स्पष्ट समय A.T. =	६– ०– ० प्रातः ६ बजे
+ वेलान्तर E. T. =	०–७–२७
= मध्यम समय M.T. =	६–७–२७

यदि मध्यम समय M. T. विदित है तो स्पष्ट समय A.T. जानने के लिये इसके विरुद्ध क्रिया करना पड़ेगी। अर्थात् जोड़ने की जगह घटाना होगा।

	घं० मि० से
जैसे मध्यम समय M. T.	६–७–२७
वेलान्तर E.T.	०–७–२७
= स्पष्ट समय A.T. =	६–०–० शेष।

इस उदाहरण में स्पष्ट समय से मध्यम समय बनाने का वेलान्तर + ७·२७ निकला है। परन्तु यदि मध्यम समय दिया है उससे स्पष्ट समय बनाना है तो इसके विरुद्ध होगा। अर्थात् + के स्थान में – (ऋण) – ७ – २७ होगा। अर्थात् मध्यम समय से यह वेलान्तर घटाना होगा। इसी कारण सारिणी में – ८ दिया है।

गणित में अधिक खटपट करना पड़ती है, इस कारण सुविधा के लिये वेलान्तर सारिणी पहिले ही दे दी गई है उससे काम निकाल लो। ये सारिणी कैसे बनी है उसका गणित जानने वालों की जानकारी के लिये यहां इसका पूरा गणित दे दिया है।

(२) दूसरा उदाहरण

२० नवम्बर १९२१ ई० जबलपुर का वेलान्तर जानना है। देशान्तर पूर्व ८०° = घं० मि० है।
५–२०

घं० मि० से०
स्पष्ट प्रात: समय ६ – ० – ०
देशान्तर – ५–२०–० पूर्व होने से
शेष = ग्री०म०काल = ०–४०–० = घटाया

ग्री०म० मध्याह्न घं० मि० से०
१२–०–०
ग्री० म० काल – ०–४०–० घटाया
शेष – ग्री० म० काल = ११–२०–० = M.T.

यह समय मध्याह्न के प्रथम होने के कारण चालन ऋण होगा।

सायन सूर्य दिनांक २१ = २८°–३८′–४६″ वृश्चिक, } ऐफेमरी के अनुसार
" २० = २७–३८–२० } मध्याह्न का
∴ अंतर = गति = १–०–३६
घं०मि०से०

सायन सूर्य ग्री० म० काल ०–४०–० A.M (दोपहर के पहिले का) निकालना है। दिनांक २० को वृश्चिक का सूर्य २७°–३८′–२०″ ऊपर दिया है। अब गति के हिसाब से इसका चालन और करना है।

२४ घंटा में सूर्य की गति १°–०′–३६ है = ३६३६″ तो घं०मि०से उपर्युक्त ग्री० म० काल में कितनी होगी ?

११–२०–०
घं० मि० से०

$$\frac{(११–२०–०) \times ३६३६''}{२४} = \frac{४१२०८ = १७१७''}{२४} = २८'–३७''$$ गति चालन ऋण

घं० मि० से०	६०)७२७२०(१२१२	२४)४१२०८(१७१७
११–२०–०	६०	२४ विकला
× ३६३६	१२७	१७२
३९९९६–७२७२०	१२०	१६८ ६०)१७१७(२८′
+१२१२ =०	७२	४० १२०
४१२०८	६०	२४ ५१७
=४१२०८–० ÷ २४	१२०	१६८ ४८०
	१२०	१६८ ३७″
	०	०

ग्री. म. मध्याह्न का सायन सूर्य = २७°–३८′–२०″ वृश्चिक

गति का चालन ऋण ० –२८ –३७

शेष ग्री. म. काल का सा० सूर्य २७ – ९ –४३

		घं. मि. से.	
सा. सूर्य वृश्चिक का २८° = इसका दशम का नाम काल	=	१५–४२–५७	भाव चक्र के
२७° = ,, ,,	=	१५–३८–४९	अनुसार
= शेष अन्तर	=	०– ४ – ८	

घंटा मि. से.

२७° का १५–३८–४९ ना० काल मिला है सा० सूर्य की कला ९′–४३″ का और चाहिए।

मि. से.

१° = ६०′ में अंतर ४–८ (२४८ सेकन्ड) है तो ९′–४३″ में कितना ?

$$\frac{(९'–४३'') \times २४८ \text{ से.}}{६०} = \frac{२४०९–४४}{६०} = \text{से. } ४०–९ = ४० \text{ सेकन्ड ना० काल}$$

९–४३	६०) १०६६४ (१७७	६०)२४०९–४४(४०	
× २४८	६०	२४० सेकन्ड	
२२३२ | ७४४	४६६	९	
९९२	४२०		
२२३२ | १०६६४ ÷ ६०	४६४		
+१७७ | = ४४	४२०		
२४०९	४४		

		घंटा मि. से.
= २४०९–४४ ÷ ६०	सा. सूर्य २७° वृश्चिक का नाम० का	= १५–३८–४९
	,, ९′–४३″ ,, ,,	+ ० – ० –४०
= ४० सेकन्ड ना० का०	∴ सा. सूर्य वृश्चिक के–,, ,,	= १५–३९–२९

२७–९–४३

दिनांक २० नवम्बर के ग्री. म. मध्याह्न का ना० काल

घं० मि. से.

= १५ – ५५ – ५० ऐफेमरी में दिया है।

घं. मि.

ग्री. म. काल का अंतर ११–२० पहिले निकाल चुके हैं।

यही सूर्य काल = Suntime = Right Assession हुआ

यह अंतर मध्याह्न काल से कम होने के कारण अंतर काल का ना. काल उपर्युक्त ना० का० से घटाना होगा। जो उत्तर बटाने से आयगा वह ग्री. म. काल का ना० काल होगा।

मि. से.

अंतर ११ घं. = ११ × १० से. = ११० से. = १ –५०

२० मि. = २० × $\frac{१}{६}$ = ३ से. + ० – ३

घंटा मि. =

∴ अंतर ११–२० का नाक्षत्रकाल १ –५३

घंटा मि. से.

ग्री. म. काल का ना० काल १५–५३–५७

" सूर्यकाल १५–३९–२९

∴ अंतर ०–१४–२८ = वेलान्तर

घं. मि. से.

उपरोक्त ना. का १५–५५–५०

– अंतर का १–५३

शेष = १५–५३–५७

यह ग्री. म. काल का ना० काल हुआ

यह सूर्य काल ना० काल से छोटा है इस कारण वेलान्तर ऋण हुआ ∴ वेलान्तर

मि. से.

E.T. = – १४–२८ (सारिणी में १४ दिया है) सूर्योदय स्पष्ट समय A. T.

घंटा मि. से.

६ – ०–०

वेलान्तर E.T.– १४–२८

५–४५–३२ = यह जबलपुर के सूर्योदय का मध्यम समय हुआ।

जब यहां पर प्रत्यक्ष (स्पष्ट) समय ६ बजे प्रातः है। अर्थात् मध्यम और स्पष्ट समय में १४–२८ का अंतर है।

यदि मध्यम समय से स्पष्ट समय जानना है तो १४–२८ मध्यम समय में जोड़ना पड़ेगा। अर्थात् वेलान्तर ऋण के स्थान में धन करना होगा। इस कारण पहिले उदाहरण में + ८ आया था उसे – ८ समझना। और दूसरे उदाहरण में – १४ वेलान्तर आया है उसे + १४ समझना।

यह गणित केवल दोनों समय (स्पष्ट और मध्यम समय) का अंतर बताने के लिए है। यहीं अंतर वेलान्तर होता है। यह गणित सूर्योदय जानने के लिए नहीं है।

यहां केवल उदाहरण के लिए सूर्य उदय काल का लिया है। सूर्य का उदय काल चर सारिणी से निकाला जाता है।

जितना सूर्य का उदय चर सारिणी से मिले वह मध्यम सूर्योदय होता है। उसमें वेलान्तर की विरुद्ध क्रिया करने से अर्थात् + के स्थान में – (ऋण) करने से सूर्योदय का प्रत्यक्ष समय होता है।

उपर्युक्त वेलान्तर के गणित के लिए ऐफेमरी का उपयोग किया है। जो कुछ अंग्रेजी जानते हों उन्हें जानकारी के लिए एक ऐफेमरी ले लेनी चाहिए। अब उज्जैन वेध-शाला से भी ऐफेमरी प्रकाशित होने लगी है।

उज्जैन की ऐफेमरी में दैनिक स्पष्ट ग्रह नाक्षत्र काल आदि भारत वर्ष के स्टेन्डर्ड टाइम के अनुसार ही दिये हैं। वह भारत के किसी भी भाग के लिए उपयोगी होगा। उज्जैन का समय स्टेन्डर्ड टाइम में दिया रहने के कारण स्टेन्डर्ड देशान्तर ८२॥ अंश

घं. मि.
या ५ – ३० पर से सब गणित करना होगा। स्टेन्डर्ड टाइम और स्थानिक देशान्तर समय का अंतर निकाल कर गणित करना।

(३) तीसरा उदाहरण—उज्जैन की ऐफेमरी पर से गणित

वनारस ३१ अक्टूबर १९४४ ई० देशान्तर ८३°–०′

घं० मि०।
= ५–३२

अब यहां स्टे० और स्थानिक समय का ही भेद रहा। ग्रीनबिच से कोई सम्बन्ध न रहा। स्टेन्डर्ड देशान्तर ८२°–३०′

= घं. मि० पूर्व है।

५–३०

	घं० मि०
स्थानिक देशान्तर	५–३२ पूर्व
स्टेन्डर्ड „	– ५–३०
अन्तर	०–२

	घं० मि० से०
प्रातः मध्यम	६ – ० – ०
देशान्तर अन्तर	० – ० – २

स्टे० का समय = ५–५९–५८ प्रातः

	घं० मि० से०
स्टेन्डर्ड का मध्याह्न	१२ – ० – ०
स्टेन्डर्ड समय	५–५९–५८
दोनों का अन्तर =	६– ० –२

३१ अक्टूबर का सायन सूर्य वृश्चिक का ७°–४३′–११″

३० „ „ „ „ ६ –४३–११

अन्तर = २४ घण्टे की गति = १ – ०–०

घं० मि० से०

२४ घण्टे में १° अन्तर तो ६–०–२ में कितना ?

$$\frac{१ \times (६–०–२)}{२४} = \frac{६०२}{२४} = ०°–१५'$$ चालन ऋण । दोपहर से पहिले

का होने के कारण चालन ऋण हुआ ।

३१ अक्टूबर को सा० सूर्य ७°–४३′–११″ वृश्चिक
गति (चालन ऋण) –०–१५– ० घटाया
शेष ७–२८–११ = यह स्टेन्डर्ड काल का
सूर्य काल हुआ ।

उपरोक्त सूर्य के अंश के अनुसार भाव चक्र Table of Houses देखा। अपना सूर्य ७° और ८° के बीच है, इससे इन दोनों अंश का नाक्षत्रकाल दशम भाव के आगे जो चक्र में दिया है वह देखा । तो भाव चक्र में :—

घं० मि०
८°–३८′ के आगे ना० काल १४–२५ दिया है
७ –२१ ,, ,, ,, १४–२० ,,
अन्तर १–१७ = ७७ कला = ०–५

अपना सूर्य
७°–२८′–११″ था
७°–२१′ सूर्य का
नाक्षत्र काल
घं० मि०
१४–२० दिया है

शेष ७′–११″ का ना० काल और चाहिए ।

७७ कला में ५ मिनट अन्तर तो सूर्य के शेष ७′—११″ में कितना ?

$$\frac{(७'—११'') \times ५}{७७} = \frac{३५—५५}{७७} = \begin{matrix}\text{मि० से०}\\ ०—२७\end{matrix}$$

७—११
×५
७७)३५—५५(० मिनट
×६०
२१००+५५
७७)२१५५(२७ सेकन्ड
१५४
६१५
५३९
७६

घं० मि० से०
७°—२१′, सूर्य का ना० काल १४-२०-०
०—७′—११″ ,, ,, + ०—२७
∴ ७°–२८′–११″ ,, ,, = १४-२०-२७
= सूर्य काल

घं. मि. से.

३१ अक्टूबर १९४४ ई० का ना० काल मध्याह्न का १७-३७-५२ दिया है।

घं. मि. से.

अंतर ६-०-२ का ना० काल निकालना है।

६ घंटा = ६ × १० = ६० सेकन्ड = १ मिनट। अपना समय मध्याह्न के पहिले का है। इस कारण यह १ मिनट उपर्युक्त ना० काल से घटाना होगा।

	घं० मि० से०
३१ का ना० काल	१४-३७-५२
अन्तर का ,,	-०-१-०
स्टे० काल का ,, =	१४-३६-५२

	घं० मि० से०
स्टे० काल का ना० काल	१४-३६-५२
— सूर्य काल का ,,	१४-२०-२७
दोनों का अन्तर =	-१६-२५
	वेलान्तर ऋण

यहाँ सूर्य काल छोटा है इससे यह अन्तर ऋण हुआ।

सारिणी में १६ मिनट दिया है। यहाँ स्पष्ट समय से मध्यम समय बनाने का गणित है इससे ऋण है। परन्तु मध्यम समय से स्पष्ट समय बनाने में + करना होगा। इसी कारण सारिणी में + दिया है। गणित से केवल आधा मिनट का अन्तर आता है। इस कारण वेलान्तर सारिणी के उपयोग से कोई विशेष अंतर भी नहीं पड़ता और सुगम भी है।

—: ० :—

अध्याय ३

सायन सूर्य के भुज बनाना, चर बनाना, क्रांति निकालना, सूर्योदय और अस्त काल जानना एवम् दिनमान सारिणी बनाना।

गणित द्वारा सूर्य के उदय और अस्त का सूक्ष्म समय निकालना आगे बताया है, क्योंकि जन्म समय घंटा मिनट में लिखा रहता है उस पर से इष्ट काल बनाने के लिए सूर्योदय का ठीक समय जानना चाहिए।

जिस दिन का सूर्योदय या अस्तकाल जानना हो उस दिन का मध्यम सूर्योदय का समय अर्थात् ६ बजे प्रात: काल का निरयन स्पष्ट सूर्य निकालो। प्राय: प्रत्येक पंचांग में प्रात: काल का सूर्य दिया रहता है। परन्तु किसी किसी पंचांग में मिश्र काल का सूर्य दिया रहता है। जहां मिश्र काल का सूर्य दिया हो उसे गणित द्वारा प्रात: काल का सूर्य बना लो। सूर्य की दैनिक गति पंचांग में सूर्य स्पष्ट के साथ २ दी रहती है। इष्ट काल और मिश्र काल का अन्तर निकाल कर उस अन्तर की गति का चालन

निकालो और मिश्रकाल से पहिले का होने के कारण वह अन्तर का चालन घटा दो तो ६ बजे प्रात: काल का स्पष्ट सूर्य निकल आयेगा।

सूर्य स्पष्ट करना पहिले समझा चुके हैं और भी ग्रह स्पष्ट विषय में दिया है उदाहरण देखने से समझ में आ जायगा।

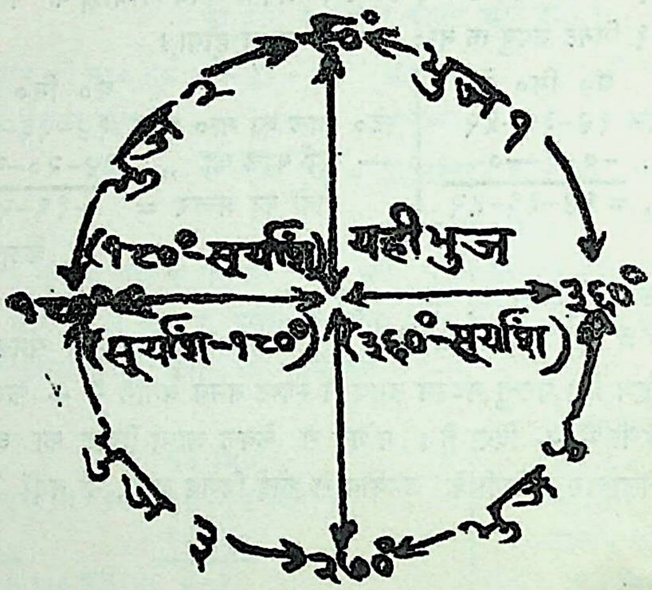

भुज दर्शक चित्र संख्या २

इस निरयन सूर्य में अयनांश मिला देने से सायन सूर्य बन जाता है। अयनांश निकाल कर सायन सूर्य बनाना पहिले बता चुके हैं और आगे भी बताया गया है।

इस सायन सूर्य का भुज बनाना पड़ता है। भुज बनाने की रीति नीचे दी है।

सूर्य का भुज बनाना

भुज = सबसे समीप सम्पात विन्दु से सूर्य के अंतर को भुज कहते हैं।

भुज ३ राशि = ९०° से कभी अधिक नहीं होता। देखो भुज दर्शक चित्र संख्या २

सायन सूर्य के अंश बना लो

(१) सा० सूर्य का अंश ० से ९०° तक = (जो अंश है वही भुज होगा) = भुज
(२) ,, ,, ९० से १८०° ,, = (१८०°—सायन सूर्यांश) = भुज
(३) ,, ,, १८० से २७०° ,, = (सा० सूर्यांश—१८०°) = भुज
(४) ,, ,, २७० से ३६०° ,, = (३६०—सा० सूर्यांश) = भुज

या (१) सायन सूर्य ० से ३ राशि तक = यही भुज होगा = भुज
(२) „ ३ राशि से ऊपर ६ राशितक = (६ राशि–सा०सूर्य) = भुज
(३) „ ६ राशि „ „ ९ राशि „ = (सा०सूर्य–६ राशि) = „
(४) „ ९ राशि „ „ १२ राशि „ = (१२राशि–सा०सूर्य) = „

उदाहरण

(१) मान लो सायन सूर्य २रा—१०°—१२′—२५″ है।

यह ३ राशि या ९०° से कम है तो पहिले नियम के अनुसार भुज बनाना होगा अर्थात् यही भुज होगा इसके अंश बनालो तो उसे भुजांश कहेंगे।

सा० सूर्य २रा—१०°—१२′—२५″
×३०
६० + १० = ७०°—१२′—२५″ भुजांश

यहां सायन सूर्य के भुजांश बनाए तो भुजांश ७०°–१२′–२५″ हुए।

(२) मानलो सायन सूर्य ३रा—५°—६′—१२″ है। यह ३ राशि से अधिक है और ६ राशि के भीतर है तो दूसरे नियम के अनुसार भुजांश बनाना होगा अर्थात् ६ राशि में से इसे घटाना होगा। यदि सबके अंश बने हैं तो ६ राशि के अंश १८०° में से इसे घटाना होगा।

राशि–अंश–क०, वि
६—०—०—०
सा०सू०३—५—६—१२ घटाया
शेष २–२४–५३—४८ = भुज

२रा–२४°–५३′—४८″
×३०
६० + २४ = ८४°-५३′-४८″ हुआ
∴ भुजांश ८४-५३′-४८″ हुआ

सायन सूर्य ३रा–५°–६′–१२″ के अंश बनाये
×३०
९० + ५=९५°–६′–१२″
= सायन सूर्यांश = ९५°–६′–१२″
इसे १८०° में से घटाने से भुजांश होगा।
१८०°–०′–०″
— ९५—६—१२ घटाया
८४—५३–४८ = भुजांश

दोनों रीति से एक ही उत्तर आता है।

(३) मानलो सायन सूर्य ८रा-४°-२०′-३″ है। यह ६ राशि से अधिक है और ९ राशि के भीतर है। इस कारण तीसरे नियम के अनुसार गणित करेंगे अर्थात् सायन सूर्य से ६ राशि घटाना होगा।

रा
सायन सूर्य ८–४°–२०′–३″
६–०—०–०
शेष २–४–२०–३ = भुज

रा
२–४°–२०′–३″
× ३०
६० + ४ = ६४°–२०′–३″
इसका भुजांश ६४°–२०′–३″ हुआ

रा
सायन सूर्य ८–४°–२०′–३″
× ३०
२४० + ४ = २४४°–२०′–३″
सायन सूर्यांश = २४४°–२०′–३″
१८०–०–० घटाये
शेष ६४–२०–३ = भुजांश

रा
(४) मान लो सायन सूर्य ११–२°–४′–६″ है यह ६ राशि से अधिक है और १२ राशि के भीतर ही है तो चौथे नियम के अनुसार गणित करना होगा अर्थात् १२ राशि से सायन सूर्य घटाना होगा।

रा० अं० क० वि०
१२–० – ० – ०
सा० सूर्य ११–२ – ४ – ६
शेष ०–२७–५५–५४ = भुज
इसके अंश बनाये।
= २७°–५५–५४ भुजांश हुआ।

रा
सा० सूर्य ११–२°–४′–६″
× ३०
३३० + २ = ३३२°–४′–६″
३६०°–०′–०″
३३२–४–६ सा० सूर्य के अंश
शेष २७–५५–५४ = भुजांश

इस प्रकार दोनों रीति से एक ही उत्तर आता है। भुजांश बनाने का काम आगे बहुत पड़ेगा। इसलिये इस के चारों नियमों को अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए।

चरखंड बनाना

चर खंड Ascessionald ifferences

सूर्योदय और अस्त जानने के लिये चर निकालना पड़ता है और चर निकालने के लिये सायन सूर्य का भुजांश निकालना पड़ता है। उस भुज का खंड निकाल कर चरखंड बनाना पड़ता है।

सूर्योदय = (१२ घंटा – दिनार्द्ध घंटा) } दिनार्द्ध घड़ी पल के घंटा मिनट
अस्त = (१२ घंटा + दिनार्द्ध घंटा) } बनाकर जोड़ना घटाना।

या दिनमान की घड़ी पल के घंटा मिनट बनाकर आधा कर लेना तो दिनार्द्ध घंटा होगा।

सूर्य का उदय अस्त जानने के लिये उस दिन का सायन सूर्य बनाकर उसके भुज बनाकर भुजांश बना लेना चाहिए। इससे चर बनाया जाता है।

भुजांश में ३०° का भाग दो तो जो लब्धि होगी उससे प्रगट होगा कि भुजांश कौन से खंड में है ।

(१) पहिला खंड = भुजांश यदि ३०° से कम हो = आदि खंड = आदि चर खंड
(२) दूसरा ,, = ,, ,, ३० से अधिक ६०° तक = मध्य खंड = मध्य ,,
(३) तीसरा ,, = ,, ,, ६० ,, ,, ९० तक = अंत्य खंड = अंत्य ,,

ऊपर जो सायन सूर्य का भुजांश बनाया है उसमें कौन सा खंड है यह जानने को ही उसमें ३० का भाग देते हैं। क्योंकि ३०° की एक राशि होती है और भुज में ३ राशि से (९० अंश से) अधिक नहीं होते। इस कारण भुजांश में अधिक से अधिक ३ खंड में हो सकते हैं।

३० का भाग देने से जितने वार भाग जावे उसे लब्धि कहते हैं। जो लब्धि प्राप्त हो (मिले) उसे गत खंड जानना। जो शेष बचता है उसे आगे का खंड समझो। इसका गणित करना पड़ता है कि ३०° में आदि, मध्य, या अन्त का इतना चरखंड है तो शेष में कितना होगा। जो उत्तर आयेगा उसे गत खंड में जोड़ना पड़ता है। जैसे ३० का भाग देने से लब्धि २ आया तो २ गत खंड समझना और शेष जो बचा वह तीसरे खंड का भाग हुआ।

जैसे भुजांश ७४°–३७′–०″ है यह ६० और ९०° के बीच में है तो तीसरा खंड (अन्त का खंड) हुआ। इसमें

३०)७४°–३७′(२ गत खंड ६० शेष १४–३७ तीसरे खंड का	३० का भाग दिया तो लब्धि २ आया इससे २ गत खण्ड हुआ। तीसरे खण्ड का शेष १४°–३७′ बचा।

प्रत्येक के चरखण्ड का आदि मध्य अन्त्य चर खण्ड का चक्र आगे दिया है और उसमें प्रत्येक अक्षांश के अनुसार चरखण्ड ३ प्रकार के दिये हैं, उससे देखना पड़ता है कि तीनों खण्ड कौन कौन हैं।

मान लो २३ अक्षांश पर अपना स्थान है, उसका गणित करना है तो चक्र देखा (जो आगे दिया है)

पहिला चरखंड ५०·९० = ५१ है दूसरा ,, ४०·७२ = ४१ है तीसरा ,, १६·९६ = १७ है आगे दी हुई चर खंड सारिणी के अनुसार	अब अपना गत खंड २ निकला था तो यहां दूसरा अर्थात् ४१ चरखंड हुआ और तीसरा १७ चर खंड हुआ।

अब ३० का भाग देने पर उपरोक्त प्राप्त लब्धि २ गत खंड था और तीसरे खंड का शेष १४°–३७′ बचा था, उससे गणित कर देखना है कि इसमें कितना चरखंड पड़ता है। तीसरा चरखंड का यह शेष है। तीसरा चरखंड १७ पल है।

३०° में १७ पल चरखंड होता है तो १४°–३७′ में कितना होगा ?

$$\frac{(१४^{\circ}–३७') \times १७ \text{ पल}}{३०^{\circ}} = \frac{२४८'२९}{३०} = ८ \text{ पल (तीसरे खंड का भाग)}$$

१४–३७	६०)६२९(१०
×१७	६०
९८ | २५९	२९
१४ | ३७	शेष
२३८ | ६२९÷६०	३०)२४८–२९(८
+१० | =२९	२४० पल
२४८	८
=२४८–२९÷३०	

पहिले बता चुके हैं कि गत खंड २ था इस कारण उपरोक्त दूसरा चरखंड ४१ लिया। इसमें तीसरे चरखंड का ८ जोड़ा तो ४१+८=४९ हुआ। अब इसमें शेष गत खंड अर्थात् पहिला चरखंड भी जोड़ दो। पहिला चर खंड ५१ है। ४९+५१ =१०० पल हुआ। यही चर हुआ।

यहां सायन सूर्य के भुजांश के अनुसार जितने खण्ड निकले हैं उन सबको जोड़ने से जो प्राप्त होता है वह चर होता है। यहां अन्त का अर्थात् तीसरा चरखण्ड पूरा नहीं था शेष १४°–३७′ ही था। इस कारण इसके अनुपात से जितना चरखण्ड पड़ा उतना ही जोड़ा गया।

आदि मध्य और अन्त चरखण्डों को जोड़ने से जो आता है उसे ही चर कहते हैं। उपरोक्त उदाहरण में गत खण्ड २ निकला था। इससे पहिला और दूसरा दोनों चरखण्डों का जोड़ गत खण्ड २ हुआ। पहिला चरखण्ड ५१+दूसरा ४१ था दोनों को मिलकर ९२ हुआ। यही गत खण्ड २ हुआ। अब इसमें तीसरे खण्ड का गणित से निकला (अनुपातिक भाग) ८ है। ९२+८=१०० हुआ। यही चर हुआ। गणित करने में अनुपात से अर्थात् अपने प्रमाण से जो भाग निकलता है उसे आनुपातिक भाग कहते हैं जैसे ऊपर निकाला है कि ३०° में १७ पल तो इसी अनुपात से १४°–३७′ का ८ पल निकला। यही अनुपातिक भाग हुआ।

आगे चरखण्ड सारिणी दी है उसमें आदि मध्य और अन्त्य ३ प्रकार के चरखण्ड दिये हैं। प्रत्येक अक्षांश के पृथक्-पृथक् चरखण्ड दिये हैं उसके द्वारा इष्ट अक्षांश का चरखण्ड सारणी से देखकर इस प्रकार खण्ड बना लेते हैं।

(१) पहिला खण्ड=आदि खण्ड=पहिला चरखण्ड
(२) दूसरा खण्ड=(आदि+मध्य खण्ड)
(३) तीसरा खण्ड=(आदि+मध्य+अन्त्य खण्ड)

इन्हीं खण्डों द्वारा चरखण्ड बनाये जाते हैं और चरखण्ड से (ऊपर बताई रीति से) चर बनाया जाता है। यहां खण्ड तो केवल जोड़ने के लिये बताया है। चरखण्ड चक्र के अनुसार लेना पड़ता है जो आगे दिया है।

चर खंड सारिणी

क्रमांक	आदि चरखंड पल	मध्य चरखंड पल	अन्त्य चरखंड पल	क्रमांक	आदि चरखंड पल	मध्य चरखंड पल	अन्त्य चरखंड पल
	चरखंड				चरखंड		
१	२·१०	१·६८	०·७३	३१	७२·१०	५७·६८	२४·३३
२	४·४०	३·३६	१·४०	३२	७५·००	६०·००	२५·००
३	६·३०	५·०४	२·१०	३३	७७·९०	६२·३२	२५·९६
४	८·४०	६·७२	२·८०	३४	८०·९०	६४·७२	२६·९६
५	१०·५०	८·४०	३·५०	३५	८४·००	६७·२०	२८·०
६	१२·६०	१०·०८	४·२०	३६	८७·१०	६९·६८	२९·०३
७	१४·७०	११·७६	४·९०	३७	९०·४०	७२·३२	३०·१३
८	१६·९०	१३·५२	५·६३	३८	९३·७०	७४·९६	३१·२३
९	१९·००	१५·२०	६·३३	३९	९७·२०	७७·७६	३२·४
१०	२१·२०	१६·९६	७·०६	४०	१००·६०	८०·४८	३३·५३
११	२३·३०	१८·६४	७·७६	४१	१०४·३०	८३·४४	३४·७३
१२	२५·५०	२०·४०	८·५०	४२	१०८·००	८६·४०	३६·००
१३	२७·००	२१·७०	८·८०	४३	१११·९०	८९·५२	३७·३०
१४	२९·९०	२३·९२	९·९६	४४	११५·८०	९२·६४	३८·६०
१५	३२·१०	२५·६८	१०·७०	४५	१२०·०	९६·०	४०·०
१६	३४·४०	२७·५२	११·४६	४६	१२४·२०	९९·३६	४१·४०
१७	३६·६०	२९·२८	१२·२०	४७	१२८·७०	१०२·९६	४२·९०
१८	३९·००	३१·२०	१३·००	४८	१३३·३०	१०६·६४	४४·४३
१९	४१·३०	३३·०४	१३·७६	४९	१३८·००	११०·४०	४६·००
२०	४३·७०	३४·९६	१४·५६	५०	१४३·००	११४·४०	४७·६६
२१	४६·००	३६·८०	१५·३३	५१	१४८·२०	११८·५६	४९·४०
२२	४८·५०	३८·८०	१६·१६	५२	१५३.५०	१२२·८३	५१·१७
२३	५०·९०	४०·७२	१६·९६	५३	१५९·२०	१२७·३६	५३·०६
२४	५३·४०	४२·७२	१७·८०	५४	१६५·२०	१३२·१६	५५·०६
२५	५५·९०	४४·७२	१८·६३	५५	१७१·३०	१३७·०४	५७·१०
२६	५८·५०	४६·८०	१९·५०	५६	१७७·९०	१४२·३२	५९·३०
२७	६१·१०	४८·८८	२०·३६	५७	१८४·६०	१४७·८४	६१·६०
२८	६३·८०	५१·०४	२१·२६	५८	१९२·००	१५३·६०	६४·००
२९	६६·५०	५३·२०	२२·१६	५९	१९७·७०	१५९·७६	६६·५६
३०	६९·३०	५५·४४	२३·१०	६०	२०७·८०	१६६·२४	६९·२४

उपरोक्त जो चरखंड दिया है उसका अनुपात प्रायः इस प्रकार है ।

(१) पहिला चरखंड···१० गुना
(२) दूसरा ,, ··· ८ गुना
(३) तीसरा ,, ···$\frac{१०}{३}$ गुना

ऊपर पल दशमलव में दिया है जैसे २ दशमलव १०=२·१० अर्थात् लगभग ३ हुआ ।

चरखंड सारिणी अन्य प्रकार से

अक्षांश	चरखण्ड पहिला	दूसरा	तीसरा	अक्षांश	चरखंड पहिला	दूसरा	तीसरा	अक्षांश	चरखंड पहिला	दूसरा	तीसरा
	१	२	३		१	२	३		१	२	३
अं० क०	असु	असु	असु	अं० क०	असु	असु	असु	अं० क०	असु	असु	असु
६°–०'	७४	५९	२४	१७°–०'	२१४	१७३	७१	२८°–०'	३७३	३०४	१२५
६–१५	७७	६१	२५	१७–१५	२१८	१७६	७२	२८–१५	३७७	३०७	१२५
६–३०	८०	६४	२६	१७–३०	२२१	१७९	७३	२८–३०	३८१	३१०	१२८
६–४५	८३	६६	२७	१७–४५	२२५	१८१	७४	२८–४५	३८५	३१३	१३०
७–०	८७	६८	२९	१८–०	२२८	१८४	७५	२९–०	३८९	३१७	१३१
७–१५	८९	७१	३०	१८–१५	२३१	१८७	७६	२९–१५	३९३	३२०	१३२
७–३०	९२	७५	३०	१८–३०	२३४	१९०	७८	२९–३०	३९७	३२४	१३३
७–४५	९५	७७	३१	१८–४५	२३८	१९३	७९	२९–४५	४०१	३२७	१३५
८–०	९८	८०	३२	१९–०	२४१	१९६	८०	३०–०	४०६	३३०	१३६
८–१५	१०१	८३	३३	१९–१५	२४५	१९९	८२	३०–१५	४०९	३३४	१३८
८–३०	१०५	८४	३४	१९–३०	२४८	२०१	८३	३०–३०	४१३	३३८	१३९
८–४५	१०८	८६	३६	१९–४५	२५१	२०४	८३	३०–४५	४१७	३४१	१४१
९–०	१११	८९	३७	२०–०	२५५	२०७	८५	३१–०	४२१	३४५	१४३
९–१५	११४	९२	३७	२०–१५	२५८	२१०	८६	३१–१५	४२५	३४९	१४४
९–३०	११७	९५	३८	२०–३०	२६२	२१२	८७	३१–३०	४३०	३५२	१४५
९–४५	१२०	९८	४०	२०–४५	२६५	२१५	८८	३१–४५	४३४	३५६	१४७
१०–०	१२३	१००	४१	२१–०	२६९	२१८	८९	३२–०	४३८	३६०	१४८
१०–१५	१२६	१०२	४२	२१–१५	२७२	२२१	९१	३२–१५	४४२	३६३	१५०
१०–३०	१३०	१०४	४३	२१–३०	२७६	२२४	९२	३२–३०	४४७	३६६	१५२
१०–४५	१३३	१०७	४४	२१–४५	२८०	२२७	९३	३२–४५	४५१	३७१	१५३

११—०	१३६	११०	४५	२२—०	२८३	२३०	९४	३३—०	४५५	३७५	१५४
११—१५	१३९	११३	४६	२२—१५	२८७	२३४	९५	३३—१५	४६०	३७८	१५६
११—३०	१४२	११६	४७	२२—३०	२९०	२३७	९५	३३—३०	४६५	३८१	१५७
११—४५	१४५	११८	४८	२२—४५	२९४	२४०	९७	३३—४५	४६९	३८५	१५९
१२—०	१४९	१२०	४९	२३—०	२९७	२४२	९९	३४—०	४७३	३८९	१६१
१२—१५	१५२	१२२	५०	२३—१५	३००	२४५	१०१	३४—१५	४७७	३९४	१६३
१२—३०	१५५	१२६	५१	२३—३०	३०४	२४८	१०२	३४—३०	४८२	३९७	१६४
१२—४५	१५८	१२८	५२	२३—४५	३०८	२५१	१०३	३४—४५	४८६	४०१	१६६
१३—०	१६२	१३०	५३	२४—०	३१२	२५४	१०४	३५—०	४९१	४०५	१६८
१३—१५	१६५	१३३	५४	२४—१५	३१५	२५७	१०६	३५—१५	४९५	४०९	१७०
१३—३०	१६८	१३६	५५	२४—३०	३१९	२६०	१०७	३५—३०	५००	४१३	१७१
१३—४५	१७१	१३९	५६	२४—४५	३२२	२६४	१०८	३५—४५	५०५	४१७	१७३
१४—०	१७५	१४१	५७	२५—०	३२६	२६७	१०८	३६—०	५१०	४२१	१७४
१४—१५	१७८	१४४	५८	२५—१५	३३०	२७०	११०				
१४—३०	१८१	१४७	५९	२५—३०	३३४	२७३	१११	५३—०	६४०	८१४	३६१
१४—४५	१८४	१५०	६१	२५—४५	३३८	२७५	११३				
१५—०	१८८	१५२	६२	२६—०	३४२	२७८	११४				
१५—१५	१९१	१५५	६३	२६—१५	३४५	२८१	११६				
१५—३०	१९४	१५७	६५	२६—३०	३४९	२८५	११७				
१५—४५	१९७	१६०	६६	२६—४५	३५३	२८८	११९				
१६—०	२०१	१६२	६७	२७—०	३५७	२९१	१२०				
१६—१५	२०४	१६५	६८	२७—१५	३६१	२९५	१२१				
१६—३०	२०७	१६९	६८	२७—३०	३६५	२९८	१२२				
१६—४५	२१०	१७१	१७३	२७—४५	३६९	३०१	१२४				

टिप्पणी—भारतवर्ष में अक्षांश ६° से ३६° तक है। इस कारण इनका ही असु दिया है। इसमें जो अक्षांश दिये हैं उससे समीप का लेना। जैसे २३°–७०′ का चाहिए तो २३°–७५′ लेना। अर्थात् इसमें जो दिया है उसके समीप का लेना चाहे कुछ कम या ज्यादा हो। १० विपल या ४ सेकण्ड का १ असु होता है जिसका कि इसमें चरखण्ड का प्रमाण दिया है।

चर निकालने का उदाहरण

८ जुलाई १९४३ ई० अक्षांश २३° उत्तर का दिनमान सूर्योदय आदि जानने के लिये चर निकालना। चरखण्ड सारिणी में २३° अक्षांश के आगे चरखण्ड इस प्रकार दिये हैं।

चरखण्ड २३° अक्षांश का	(१) आदि ५०·९० पल =५१ खण्ड पहला =५१	(२) मध्य ४०·७२ पल =४१ दूसरा (आदि + मध्य) ५१ + ४१ =९२	(३) अन्त्य १६·९६ पल =१७ तीसरा (आदि + मध्य + अन्त्य) ५१ + ४१ + १७ =१०९

उस दिन प्रातः रवि स्पष्ट रा० अं० २–२१–४२′–२२″ पंचांग में दिया है इसका सायन सूर्य बनाने के लिये इसमें अयनांश जोड़ना पड़ेगा। सन् १९४३ का शाके १८६५ है इस पर से अयनांश बनाया।

$$\frac{\text{शाका} - ४४४}{६०} = \text{अयनांश}$$

शाके १८६५
  − ४४४
६०) १४२१ (२३ अंश
  १२०
  २२१
  १८०
  ४१ कला
= २३°–४१′ अयनांश

ग्रह लाघवमत के अनुसार अयनांश
२३–४१′ आया

रा
प्रातः रवि स्पष्ट २–२१°–४२′–२२″
+ अयनांश ०–२३ –४१ –० जोड़ा
= सायन सूर्य = ३–१५–२३–२२
रा
इसके अंश बनाये ३–१५°–२३′–२२″
×३०
९० + १५ = १०५°–२३′–२२″
= सायन सूर्यांश = १०५°- २३′–२२″
सायन सूर्यांश = के भुज बनाये।

सूर्य के अंश ९० और १८०° के बीच में है। तो दूसरे नियम के

अनुसार १८०°–०′–०″
– १०५–२३–२२ सूर्यांश घटाया
शेष ७४–३६–३८ = सूर्य का भुजांश हुआ।

इसमें विकला को जो आधे से ज्यादा है इससे १′ माना तो ७४°–३७′ भुजांश हुआ। भुजांश ७४°–३७′ है यह ६० और ९०° के बीच है तो तीसरा खण्ड हुआ। इसमें ३० का भाग दिया तो

३०) ७४°–३७′ (२ गत खण्ड
६०
१४–३७ शेष तीसरे खण्ड का

लब्धि २ गत खण्ड हुए और तीसरे खण्ड का शेष १४°–३७′ आया।

गत खण्ड २ है इससे इसमें आदि और मध्य उपरोक्त चर खण्ड जोड़ा। आदि ५१ + मध्य ४१ = ९२ यह दूसरा खण्ड का सम्पूर्ण चर हुआ। अब देखना है तीसरे खण्ड के पूरे १७ चरखण्ड में से अनुपातिक चर कितना मिलता है। अपना तीसरे खण्ड का शेष १४°–३७′ था।

त्रैराशिक गणित से निकला ३०° में तीसरा चरखण्ड १७ है तो १४°–३७′ में कितना ?

$$\frac{(१४^\circ–३७')\times १७}{३०} = \frac{२४८ – २९}{३०} = ८\ \frac{८}{३०}\ \text{पल} = ८\ \text{पल चर}$$

उपरोक्त गत खंड के चर ९२ में तीसरे खंड का प्राप्त चर ८ जोड़ा तो ९२ + ८ = १०० पल चर आया = घड़ी – पल ऊपर गणित के लिये चर खंड लिया
१ – ४०
था और जोड़ने के लिये खंड लिया है इसका ध्यान रहे। यह ऊपर के उदाहरण से समझ में आजायेगा।

सूर्य का उदय अस्त आदि जानना

जब चर निकल गया तो उससे निम्न रीति से सूर्योदय आदि निकाल सकते हैं।

१५ घटो ± चर = दिनार्द्ध घटी = सायन सूर्य उत्तर गोल (मेष से कन्या तक) + धन
" दक्षिण " (तुला से मीन तक) ऋण

दिनार्द्ध × २ = दिनमान घटी पल

(६० घटी – दिनमान) = रात्रिमान

(१२ घंटा – दिनार्द्ध घंटा) = सूर्योदय घंटा
(१२ घंटा + दिनार्द्ध घंटा) = सूर्यास्त घंटा
} दिनार्द्ध घटी पल के घंटा मिनट बना कर जोड़ना या घटाना

उदाहरण

घ. प.
अपना चर १०० पल = १ – ४० आया इसे चरफल भी कहते हैं।

दिनार्द्ध = घटी चर घ. पल १५ + १ – ४० = १६–४० घ. प. दिनमान = दिनार्द्ध × २ = ३३ – २० १६ – ४० घ. प. रात्रिमान = ६० घटी (३३–२०) = २६–४०	रा ० = सायन सूर्य ३ – १५ (कर्क) है यह मेषादि (उत्तर गोल) है तो + किया मेषादि = मेष से कन्या तक तुलादि = तुला से मीन तक

घ. प. घ. मि.
दिनार्द्ध १६ – ४० = ६ – ४०

सूर्योदय = १२ घंटा – दिनार्द्ध घंटा घ. मि.
दोपहर ६ – ४० = ५ – २०

घ. मि.
सूर्यास्त = १२ घंटा + (६ – ४०) दिनार्द्ध घंटा = ६ – ४० संध्या

अब सूर्य की उत्तर या दक्षिण क्रांति के अनुसार चर को जोड़ या घटा कर उदय अस्त का समय निकालना आगे वताया है। इसमें चर पल के मिनट बना कर घंटा मिनट में उदय अस्त निकाला है।

सूर्य क्रांति दक्षिण में = दक्षिण गोल २३ सितम्बर से २१ मार्च तक सायन सूर्य तुला से मीन राशि तक	सूर्य क्रांति उत्तर में = उत्तरगोल २१ मार्च से २३ सितम्बर तक सायन सूर्य मेष से कन्या राशि तक
सूर्योदय = ६ घंटा + चर मिनट सूर्यास्त = ६ घंटा – चर मिनट	सूर्योदय = ६ घंटा – चर मिनट सूर्यास्त = ६ घंटा + चर मिनट

सूर्योदय = (१२ घंटा – सूर्यास्त)

दिनमान घंटा = १२ घंटा ± (चर फल मिनट में × २) = उत्तर क्रांति दक्षिण क्रांति
+ —

दिनमान घटी = ३० घटी ± (चर फल पल × २) = + —

दिनार्द्ध घंटा = ६ घंटा ± (चर फल मिनट) = + —

दिनमान घड़ी = दिनार्द्ध घंटा × ५

= सूर्यास्त घंटा = दिनमान घटी पल ÷ ५

उपरोक्त चर ८ जुलाई १९४३ ई० का निकाला था

उत्तर क्रांति है। चर १ घ.४० पल निकाला था इसके मिनट बनाये।

१ घड़ी = २४ मि. ४० पल = १६ मि. ४० मिनट	तो ४० मिनट हुए।

	घ. मि०	घंटा सूर्यास्त घ. मि.
सूर्योदय = ६ घंटा − चर ४० मिनट =	५ − २०	१२ − ६ − ४० = ५ − २०
सूर्यास्त = ६ घंटा + चर ४० मिनट =	६ − ४०	१२ − सूर्योदय = ६ − ४०
		५ − २०

घं. मि. घ. पल

दिनार्द्ध घंटा = ऊपर ६ − ४० दिया है = १६ − ४०

सूर्यास्त = १२ घंटा + दिनार्द्ध घंटा = घंटा − मि.

६ − ४० ६ − ४०

चर निकालने का दूसरा उदाहरण

रा.

मान लो सायन सूर्य ०−१०°−१५′−१८″ (सूर्य उत्तर गोल) है सायन सूर्य के भुजांश बनाना है। सूर्य १०° − १५′ − १८″ है यह ९०° के भीतर है इस कारण यही भुज हुआ।

इस भुज में ३० का भाग दिया तो लब्धि० आया तो गत खंड कुछ नहीं है शेष १०° − १५′ − १८″ यह पहिला खंड हुआ।

मान लो २२ अक्षांश का चर निकालना है। चरखंड सारिणी में देखा। २२ अक्षांश का पहिला चरखंड ४८·५० = ४९ पल है। आगे के और चरखंड की आवश्यकता नहीं है इसलिये उनको छोड़ दिया। अब देखना है त्रैराशिक से अनुपातिक चरखंड शेष १०°−१५′−१८″ का कितना निकलता है। शेष की १८ विकला ३० से कम है तो उसे छोड़ दिया केवल १०° − १५′ लिया।

३०° में ४९ पल चरखंड तो शेष १०° − १५′ में कितना होगा ?

पल विपल मि० से०

$$\frac{(१०° - १५') \times ४९}{३०} = \frac{५०२° - १५}{३०} = १६ - ४४ \text{ चर} = ६ - ४१$$

```
  १०−१५        ६०) ७३५ (१२ ३०) ५०२−१५ (१६ पल
   ×४९            ६०           ३०                मि. से
४९०  | १३५        १३५         २०२         १६ पल = ६−२४
     | ६०         १२०         १८०         ४४ वि. = −१७−३६
                   १५         २२×६०            ६−४१−३६
४९० | ७३५÷६०                  १३२०+१५          = ६−४१
+१२ | = १५              ३०) १३३५ (४४          मिनट से०
५०२                          १२० विपल           चर
= ५०२−१५                     १३५
                             १२०
                              १५
```

इसमें गत खंड कुछ नहीं है इससे इसमें कुछ भी जोड़ना नहीं पड़ा। पहिले खंड से भी चर निकला है। सूर्य क्रांति उत्तर है तो सूर्यास्त के लिये चर + होगा।

	घं. मि. से.	१२–०–०
सूर्यास्त = घंटा ६ + ६ – ४१ चर मिनट	= ६ – ६ – ४१	–६–६–४१
सूर्योदय = (१२ घंटा – ६ – ६ – ४१ अस्त)	= ५–५३–१९	५–५३–१९
		सूर्योदय

सूर्य की क्रांति निकालना आगे बताया है। किसी-किसी पंचांग में सूर्य की क्रांति दी रहती है और यह भी लिखा रहता है कि क्रांति उत्तर है या दक्षिण।

घ. प. वि. घंटा मि. से.

दिनार्द्ध = १५ घड़ी + १६–४४ चरपल = १५–१६–४४ = ६–६–४१ (अस्त घंटा).

(यहां चर + होने से जोड़ा)

घ. प. वि. घ. प. वि.

दिनमान = दिनार्द्ध १५–१६–४४ × २ = ३०–३३–२८

चर निकालने का तीसरा उदाहरण

रा

मान लो सायन सूर्य ५–४–६′–१०″ है सूर्य उत्तर गोल अक्षांश २१ है।

सायन सूर्य के अंश बनाये = १५४°–६′–१०″ इसका भुजांश बनाये। यह ९० और १८०° के बीच में है तो दूसरे नियम के अनुसार १८०° में से इसे घटा दो।

१८०°–०′–०″	अब देखना है कि भुजांश २५°–५३′–३०″
१५४–६–१० सूर्यांश	में कितने गत खंड हुए हैं ईसमें ३० का भाग दिया तो
= २५–५३–५० = भूजांश	लब्धि शून्य होने से गत खंड कुछ नहीं है। शेष

२५°–५३′–५०″ हुआ। ५०″ आधे से अधिक है इससे १′ मान कला में बढ़ा दिया तो शेष २५°–५४′ हुआ। यह पहिला चरखंड हुआ।

२१ अक्षांश में पहिला चरखंड ४६·०० = ४६ पल है।

३०° में ४६ पल तो शेष २५°–५४′ में कितना ?

प० वि०

मि० से०

$$\frac{(२५–५४) \times ४६}{३०} = \frac{११९१–२४}{३०} = ३९–४२ \text{ चर} = १५–५२$$

```
 २५–५४
   × ४६
 १५०  | ३२४
 १००  | २१६
 ११५० | २४८४ ÷ ६०
 + ४१ | = २४
 ११९१
 = ११९१–२४ ÷ ३०
```

```
६०)२४८४(४१
   २४० अंश
     ८४
     ६०
     २४
    कला

३०)११९१(३९
   ९०   पल
   २९१ शेष में ६० का गुणा करके
   २७० ३० का भाग देने के बदले
    २१ शेष को दुगना कर देना
   × २ चाहिए ।
    ४२ विपल
```

पल वि॰ घ॰ प॰ वि॰ घ॰ मि॰ से॰

दिनार्द्ध = १५ घटी + चर ३९–४२ = १५–३९–४२ = ६–१५–५२

सूर्योदय = १२ घंटा–दिनार्द्ध घंटा–मि॰से॰ ६-१५-५२ = घ॰ मि॰से॰५-४४-८

सूर्योदय = ६ घंटा–चर मिनट १५–५२ = ५–४४–८

उत्तर गोल होने से यहां चर ऋण हुआ ।

चौथा उदाहरण चर निकालने का

रा

मान लो सायन सूर्य ७–१०°–४′–६″ है । सूर्य दक्षिण गोल अक्षांश २४ है । सूर्य ६ और ९ राशि के बीच में है तो ६ राशि घटाने से सूर्य की भुज निकल आयगी ।

```
        रा
सा. सू. ७–१०°–४′–६″
       —६–० –० –०
शेष १–१० –४ –६ भुज
    रा
    १–१०°–४′–६″
  × ३०
  ३० + १० = ४०°–४′–६″
            भुजांश
३०)४०–४–६(१ गत खंड
   ३०
शेष १०–४–६
```

फिर भुज के भुजांश बनाये । भुजांश ४०°–४′–६″ हुए । इसका कौन खंड है जानने को ३० का भाग दिया १ बार भाग गया तो गत खण्ड १ हुआ शेष १०°–४′–६″ दूसरे खंड का भाग हुआ । २४ अक्षांश का पहिला चरखण्ड ५३·४० = ५४ और दूसरा खंड ४२·७२ = ४३ है। गत खंड १ का ५४ चरखंड हुआ । अब दूसरे खंड का कितना अनुपातिक चर निकलता है, देखते हैं ।

३०° में दूसरा चरखंड ४३ है तो शेष १०°–४′–६″ में कितना ?

यहाँ ६″ को छोड़ दिया । शेष केवल १०–४′ ही लिया ।

प० वि०

$\frac{(१०°\text{-}४') \times ४३}{३०} = \frac{३३२\text{-}५२}{३०} = १४\text{-}२५$

१०–४ ३०)४३२–५२(१४ पल
×४३ ३० पल
४३० | १७२ ÷ ६० १३२ = १४-२५-४४
+२ | = ५२ १२०
४३२ १२–५२
=४३२–५२÷३० ×२
२५–४४

पल वि०
गत खंड का चर ५४–०
दूसरे ,, का ,, १४–२५
शेष = चर ६८–२५

पल वि० घ० प० वि०
∴ चर ६८–२५ = १–८–२५
= मिनट से०
२७ – २२

दक्षिण गोल होने से चर + हुआ। घ० मि० से०

सूर्योदय = ६ घंटा + चर मिनट २७–२२ = ६–२७–२२

दिनमान सूर्योदय आदि जानने के लिये सूर्य क्रांति निकालना।

पहिले इष्ट दिन का सायन सूर्य वनालो फिर उस सायन सूर्य से सूर्य की क्रांति निकालो। कई पंचांगों में प्रतिदिन की सूर्य की क्रांति दी रहती हैं। यदि क्रांति, पंचांग में न दी हो तो स्थूल रूप से सूर्य की क्रांति नीचे बताई रीति से निकाल लेना।

स्थूल सूर्य क्रांति साधन

$\frac{\text{सायन रवि भुजांश}}{१५}$ = लब्धि = पहिला अंक (इस अंक तक सब अंक जोड़ो = अंक योग

शेष = शेषांक

लब्धि + १ = अग्रिम अंक = ऐष्य अंक (आगे का अंक)

$\frac{\text{अग्रिम अंक} \times \text{शेषांक}}{१५}$ + अंक योग = अंशादि स्थूल क्रांति उत्तर या दक्षिण।

क्रम	१	२	३	४	५	६
ध्रुव अंक	६	६	५	४	२	१

उदाहरण

मान लो सायन रवि २–१४°–७'–४८" है। इसके भुज बनाये। यह ३ राशि से कम है तो यही भुज हुआ। अब इस सूर्य भुज के भुजांश बनाये तो ७४°–७'–४८"

रा
सूर्य भुज २–१४°–७'–४८"
×३०
६० + १४ = ७४°–७'–४८"
भुजांश
१५) ७४–७–४८–४८ (४ लब्धि
६०
शेष १४–७–४८

हुए। इसमें १५ का भाग दिया = ४ बार भाग गया = लब्धि ४ हुई। शेष १४–७–४८ = शेषांश हुआ। यहां लब्धि ४ है तो क्रम ४ तक सब ध्रुवांकों को जोड़ो तो ६ + ६ + ५ + ४ = २१ इस प्रकार चारों अंकों का योग २१ हुआ। लब्धि ४ थी = ४ + १ = ५ अग्रिम अंक अर्थात् लब्धि के आगे का अंक हुआ। ५ का ध्रुवांक २ है = अग्रिम अंक २

$$\frac{\text{अग्रिम अंक २ × शेषांक १४°–७′–४८″}}{\text{१५}} + \text{२१ अंक योग}$$

$$= \frac{\text{२८–१५–३६}}{\text{१५}} + \text{२१} = (\text{१°–१५′–२″}) + \text{२१} = \text{२२°–१५′–२″ उत्तर क्रांति}$$

१५) २८–१५–३६ (१ अंश
     १५
     १३ × ६०
     ७८० + १५
१५) ७९५ (५३′
     ७५
      ४५
      ४५
       ०
१५) ३६ (२″
     ३०
      ६

यहां सायन सूर्य मिथुन का है = मेषादि है। मेषादि में उत्तर क्रांति होती है।
= सूर्य क्रांति २२°–१५′–२″ उत्तर

सूर्य क्रांति निकालने की उपरोक्त रीति का स्पष्टीकरण—

सायन सूर्य के भुजांश बनालो फिर केवल अंशों में १५ का भाग दो जो लब्धि मिले उसके क्रम (नंबर) तक चक्र में जितने अंक दिये हों सबको जोड़ डालो। जो योग होगा वह अंक योग हुआ और १५ का भाग देने से जो शेष अंक कला विकला आदि बचा वह शेषांश कहलाया। लब्धि में १ और मिलाया तो जो प्राप्त हुआ उस क्रम के नीचे जो अंक हो वह अग्रिम अंक हुआ। फिर त्रैराशिक गणित से निकालो १५ में अग्रिम अंक इतना हुआ तो शेषांश में कितना होगा ? शेषांश में अग्रिम अंक का गुणा कर १५ का भाग दो। भाग देने से जो अंश कला विकलादि आवें उसमें अंक योग जोड़ दो तो सायन सूर्य की क्रांति निकल आवेगी। सूर्य क्रांति उत्तर या दक्षिण जानना पहिले बता चुके हैं।

सायन सूर्य मेषादि (मेष से कन्या तक) हो तो उत्तर क्रांति और तुलादि (तुला से मीन तक) में दक्षिण क्रांति होती है। क्रांति साधन के लिये सदा सायन सूर्य लेना चाहिए।

गणित करने की अड़चन से बचने के लिए और ठीक-ठीक क्रांति जानने के लिये आगे एक क्रांति-सारिणी दी है उससे ठीक-ठीक क्रांति निकल आती है।

आगे दी हुई क्रांति-सारिणी में ऊपर सायन सूर्य की राशियां दी हैं। बाईं ओर आरंभ की खड़ी पंक्ति में उन राशियों के अंश दिये हैं। नीचे जो सायन सूर्य की राशियां दी हैं उनके अंश दाहिनी ओर छोर में खड़ी पंक्ति में नीचे से ऊपर को दिये हैं। जिस राशि अंश की सोध में सूर्य की क्रांति के अंश कलादि प्राप्त हों वही सूर्य की क्रांति जानना।

क्रांति सारिणी

सायन सूर्य अंश	०राशि ६राशि अं. क. वि.	१राशि ७राशि अं. क. वि.	२ राशि ८ राशि अं. क. वि.	सायन सूर्य अंश
०	० ० ०	११ २८ ४८	२० ९ ४८	३०
१	० २३ ५४	११ ४९ ४८	२० २२ १८	२९
२	० ४७ ५४	१२ १० ३६	२० ३४ ३०	२८
३	१ ११ ४२	१२ ३१ १२	२० ४६ १८	२७
४	१ ३५ ३०	१२ ५१ ४२	२० ५७ ४२	२६
५	१ ५९ १८	१३ ११ ४८	२१ ८ ४२	२५
६	२ २३ ६	१३ ३१ ४८	२१ १९ १८	२४
७	२ ४६ ४८	१३ ५१ ३०	२१ २९ ३६	२३
८	३ १० ३६	१४ १० ०	२१ ३९ २४	२२
९	३ ३४ १८	१४ ३० १८	२१ ४८ ५४	२१
१०	३ ५७ ४८	१४ ४९ २४	२१ ५८ ०	२०
११	४ २० २४	१५ ८ १२	२२ ६ ३६	१९
१२	४ ४४ ४८	१५ २६ ४२	२२ १४ ४८	१८
१३	५ ८ १२	१५ ४५ ०	२२ २२ ३०	१७
१४	५ ३१ ३०	१६ ३ ६	२२ २९ ४८	१६
१५	५ ५४ ४८	१६ २१ ०	२२ ३६ ३६	१५
१६	६ १८ ०	१६ ३८ ३०	२२ ४३ ०	१४
१७	६ ४० ५४	१६ ५५ ३६	२२ ४९ ०	१३
१८	७ ३ ५४	१७ १२ २४	२२ ५४ ४२	१२
१९	७ २६ ४२	१७ २९ ०	२२ ५९ ५४	११
२०	७ ४९ ३०	१७ ४५ १२	२३ ४ ४३	१०
२१	८ १२ ०	१८ १ १२	२३ ९ ०	९
२२	८ ३४ २४	१८ १६ ४८	२३ १२ ४८	८
२३	८ ५६ ४८	१८ ३२ ६	२३ १६ ६	७
२४	९ १८ ५४	१८ ४७ १२	२३ १९ ६	६
२५	९ ४१ ०	१९ १ ४८	२३ २१ ३६	५
२६	१० २ ५४	१९ १६ १२	२३ २३ ३६	४
२७	१० २४ ३६	१९ ३० ०	२३ २५ १२	३
२८	१० ४५ ५४	१९ ४३ ४२	२३ २६ २४	२
२९	११ ७ ४८	१९ ५६ ५४	२३ २७ ६	१
३०	११ २८ ४८	२० ९ ४८	२३ २७ १८	०
सायन सूर्य अंश	५ राशि ११ राशि	४ राशि १० राशि	३ राशि ९ राशि	सायन सूर्य अंश

क्रांति सारिणी देखने की रीति :—

ऊपर जो राशियां दी हैं उनके अंश बाईं ओर दिये हैं और जो नीचे राशियां दी हैं उनके अंश दाहिनी ओर नीचे से ऊपर को दिये हैं। उनके सीध में सूर्य की क्रांति दी है।

रा

जैसे २-१४°-७′-४८″ सायन सूर्य की क्रांति निकालना है तो २ राशि ऊपर दी है उसके नीचे और बाईं ओर दिये हुए १४° के सीध में क्रांति २२°-२९′-४८″ दिया है। यही उत्तर क्रांति हुई। क्योंकि सा० सूर्य मिथुन का है जो मेषादि है।

यदि सा० सूर्य ६°-२५′ है तो ६ राशि ऊपर दी है उसके बाईं ओर २५° के सीध में और ६ राशि के नीचे ९°-४१′-०″ क्रांति दी है। तुला के सूर्य हैं। तुलादि होने से दक्षिण क्रांति हुई।

रा

सा० सूर्य ३-२५° हैं तो ३ राशि नीचे दी है। इस के दाहिनी ओर २५° के सीध में ३ राशि के

ऊपर २१° – ८′ – ४२″ क्रांति दी है। कर्क का सूर्य है मेषादि है। उत्तर क्रांति हुई।

रा

सा० सूर्य ९–२५° है ९ राशि नीचे दी है। दाहिनी ओर के २५° लिये। २५° के सीध में और ९ राशि के ऊपर २१°–८′–४२″ दिया है। यही क्रांति हुई। सूर्य मकर के हैं तुलादि हैं तो दक्षिण क्रांति हुई।

इस प्रकार सायन सूर्य के केवल राशि ओर अंश के अनुसार अभी क्रांति मिली है। यदि सायन सूर्य की शेष कला विकला की भी क्रांति निकालना आवश्यक हो तो जिस अंश से क्रांति निकाली है उसके अंशादि क्रांति और उसके आगे के अंश की क्रांति लो फिर दोनों क्रांति का अन्तर निकालो। उपरान्त त्रैराशिक से निकालो कि ६० कला (एक अंश) में इतना अंतर क्रांति में पड़ता है तो इतने कला विकला में कितना अंतर पड़ेगा ? जो उत्तर आवे उसे आई हुई क्रांति में ± करना अर्थात् यदि आगे की क्रांति बड़ी हो तो जोड़ना, यदि छोटी हो तो घटाना। तब जो प्राप्त हो वही अंश कलादि सायन सूर्य की क्रांति होगी।

रा

जैसे पहिले उदाहरण में सा० सू० २–१४°–७′–४८″ लिया था। २ रा० १४ अंश की क्रांति २२°–२९′–४८″ निकाल चुके हैं अब ७′–४८″ की और चाहिए। इसमें विकला २८ आवे से ज्यादा है तो १′ माना। शेष ७′ को ८′ हो गई। ८ कला की क्रांति और चाहिए।

१४° की क्रांति २२–२९–४८
१५° „ „ २२–३६–३६

२२°–३६′–३६″
—२२ –२९ –४८
दोनों का अंतर ० – ६ –४८ +

आगे की क्रांति बड़ी होने से इसे जोड़ना पड़ेगा।

६०′ में ६′–४८″ अंतर है तो ८ में कितना ?

८×(६–४८) / ६० = ५४-२४ / ६० = ०′-५४″ क्रांति

+ प्राप्त १४° की क्रांति २२°–२९′–४८″
८′ „ + ० – ० –५४
रा = २२ –३० –४२

∴ सा० सू० २–१४°–८′ की क्रांति २२°–३०′–४२″ हुई

दूसरा उदाहरण

रा

सा० सू० ९–२०–१०'–१५'' है। ९ राशि नीचे दी है। दाहिनी ओर के २०

रा

अंश के सामने और ९ राशि के ऊपर देखा तो ९–२०° की क्रांति =२१°–५८'–०'' मिली। अब १०'–१५'' की और चाहिए। १५'' आधे से कम है तो छोड़ दिया। केवल १०' लिया। यदि पूरे १०'–१५'' का ही निकालना हो तो उसका भी निकाल सकते हो।

२०° = की क्रांति = २१°–५८'–०''
२१° = ,, ,, २१–४८–५४
दोनों का अंतर = ०–९ –६ ऋण
(आगे की क्रांति छोटी होने से ऋण)
६०'' में ९–१६ अंतर तो १०'–१५'' में कितना ?

(९–६) × (१०–१५) / ६० = ९३–१६–३० / ६० = १'–३३''

रा
९–२०° की क्रांति = २१°–५८'–०''
१०'–१५'' ,, = ०–१ –३३ घटाया
शेष = २० –५६ –२७

रा
∴ ९–२०°–१०'–१५'' की क्रांति = २०°–५६'–२७'' हुई।

९'–६''
× १०–१५
| १३५ | ९०
९० | ६० |
९० | १९५ | ९० ÷ ६०
+३ | +१ | = ३०
९३ | १९६
= १६
= ९३–१६–२० ÷ ६०
६०) ९३–१६–२० (१'
६०
३३''

वाईं ओर के अंशों में क्रांति क्रमशः बढ़ती है इस कारण इसमें जोड़ना परन्तु दाहिने ओर के अंशों में क्रांति क्रमशः घटती है इस कारण घटाना पड़ता है।

भुजांश पर से क्रांति साधन करने की स्थूल व सरल सारिणी

भुजांश	क्रांति अंश	क्रांति कला	भुजांश	क्रांति अं०	क्रांति क०	भुजांश	क्रांति अं०	क्रांति क०
०	०	०	३०	१२	०	६०	२१	०
१	०	२४	३१	१२	१२	६१	२१	८
२	०	४८	३२	१२	४०	६२	२१	१६
३	१	१२	३३	१३	०	६३	२१	२४
४	१	३६	३४	१३	२०	६४	२१	३२
५	२	०	३५	१३	४०	६५	२१	४०
६	२	२४	३६	१४	०	६६	२१	४८
७	२	२८	३७	१४	२०	६७	२१	५६
८	३	१२	३८	१४	४०	६८	२२	४
९	३	३६	३९	१५	०	६९	२२	१२
१०	४	०	४०	१५	२०	७०	२२	२०
११	४	२४	४१	१५	४०	७१	२२	२८
१२	४	४८	४२	१६	०	७२	२२	३६
१३	५	१२	४३	१६	२०	७३	२२	४४
१४	५	३६	४४	१६	४०	७४	२२	५२
१५	६	०	४५	१७	०	७५	२३	०
१६	६	२४	४६	१७	१६	७६	२३	४
१७	६	४८	४७	१७	३२	७७	२३	८
१८	७	१२	४८	१७	४८	७८	२३	१२
१९	७	३६	४९	१८	४	७९	२३	१६
२०	८	०	५०	१८	२०	८०	२३	२०
२१	८	२४	५१	१८	३६	८१	२३	२४
२२	८	४८	५२	१८	५२	८२	२३	२८
२३	९	१२	५३	१९	८	८३	२३	३२
२४	९	३६	५४	१९	२४	८४	२३	३६
२५	१०	०	५५	१९	४०	८५	२३	४०
२६	१०	२४	५६	१९	५६	८६	२३	४४
२७	१०	४८	५७	२०	१२	८७	२३	४८
२८	११	१२	५८	२०	२८	८८	२३	५२
२९	११	३६	५९	२०	४४	८९	२३	५६

यहाँ क्रांति अंश कला में दी है विकला छोड़ दिया है।

चक्र की बनावट

भुजांश ०°–३१° तक में = + २४′
" ३०–४५ " " = + २०′
" ४५–६० " " = + १६′
" ६०–७५ " " = + ८′
" ७५–८९ " " = + ४′

सायन भुजांश कोष्टक में शेष कलादि की भी क्रांति निकालने का गणित :—

सा० भुजांश
० से १४ तक = २४ ध्रुवांतर
१५ से २९ " = २४ "
३०—४४ " = २० "
४५—५९ " = १६ "
६०—७४ " = ८ "
७५—८९ " = ४ "

गणित

सा० भुजांश
० से १४ तक = शेय × २४ ÷ ६
= शेष × २/५
१५–२९ " = शेष × २४ ÷ ६०
= शेष × २/५
३०–३४ " = शेष × १/३
४५–५९ " = शेष × १६ ÷ ६०
= शेष × ४/१५
६०–७४ " = शेष × ८ ÷ ६०
= शेष × २/१५
७५–८९ " = शेष × ४ ÷ ६०
= शेष १/१५

ऊपर बताये भुजांश के सामने जो क्रांति दी है वह लेना। यदि भुजांश की शेष कला विकला का भी निकालना हो तो ऊपर बताई रीति से गणित फल जोड़ देना तब क्रांति प्राप्त होगी।

ऊपर रीति में बताया है ० से १४° तक सायन सूर्य के भुजांश हो तो भुजांश की शेष कलादि में २ का गुणा कर ५ का भाग देना और ७५° से ८९° तक में १ का गुणा कर १५ का भाग देना तो जो अनुपातिक फल प्राप्त होगा उसे पूर्व प्राप्त क्रांति में जोड़ देना तो पूरी क्रांति निकल आवेगी।: इसी प्रकार उपरोक्त गणित क्रिया दी है उसे समझ लेना।

उदाहरण ७४°–७′–४″ भुजांश की क्रांति निकालना है। ७४° की ऊपर दी है=२२°–५२′ शेष ७′–४८″ की और चाहिए। ७४० का गणित शेष × २/१५ दिया है अर्थात् शेष में २ का गुणा कर १५ का भाग देना।

शेष (७′–४८″)/१ × २/१५ = (१५–३६)/१५ = १′–२″   १५) १५–३६ (१′
                                         १५
७४° का = २२°–५२′   ०

७′–४८″ = +   १–२   १५) ३६ (२″
= क्रांति   २२–५३–२   ३०
= क्रांति २२°–५३′–२″ आई।   ६

यह कुछ स्थूल रीति है। इसमें बहुत थोड़ा अंतर पड़ता है क्योंकि ऊपर सारिणी में क्रांति की विकला छोड़ दी है। इस से विकला में थोड़ा अंतर पड़ जाता है। परन्तु विकला छोड़ देने से गणित में कोई अधिक अंतर नहीं पड़ता। यह रीति सरल है और इसकी गणित क्रिया भी सरल है।

आगे सूक्ष्मरीति से क्रांति निकालने की सारिणी दो है जिसमें अंशकला विकला में क्रांति दी है।

सायन सूर्य के भुजांश पर से क्रांति सारिणी (सूक्ष्म रीति)

भुजांश	क्रांति अं.	क.	वि.	भुजांश	क्रांति अं.	क.	वि.	भुजांश	क्रांति अं.	क.	वि,
१	०	२४	०	३१	१२	२	२४	६१	२०	४६	४८
२	०	४८	०	३२	१२	२२	४८	६२	२०	५७	३६
३	१	१२	०	३३	१२	४३	१२	६३	२१	८	२४
४	१	१६	०	३४	१३	३	३६	६४	२१	१९	१२
५	२	०	०	३५	१३	२४	०	६५	२१	३०	०
६	२	२४	०	३६	१३	४४	२४	६६	२१	४०	४८
७	२	४८	०	३७	१४	४	४८	६७	२१	५१	३६
८	३	१२	०	३८	१४	२५	१२	६८	२२	२	२४
९	३	३६	०	३९	१४	४५	३६	६९	२२	१३	१२
१०	४	०	०	४०	१५	६	०	७०	२२	२४	०
११	४	२४	०	४१	१५	२४	०	७१	२२	३१	१२
१२	४	४८	०	४२	१५	४२	०	७२	२२	३८	२४
१३	५	१२	०	४३	१६	०	०	७३	२२	४५	३६
१४	५	३६	०	४४	१६	१८	०	७४	२२	५२	४८
१५	६	०	०	४५	१६	३६	०	७५	२३	०	०
१६	६	२४	०	४६	१६	५४	०	७६	२३	७	१२
१७	६	४८	०	४७	१७	१२	०	७७	२३	१४	२४
१८	७	१२	०	४८	१७	३०	०	७८	२३	२१	३६
१९	७	३६	०	४९	१७	४८	०	७९	२३	२८	४८
२०	८	०	०	५०	१८	६	०	८०	२३	३६	०
२१	८	२२	१२	५१	१८	२१	०	८१	२३	३८	२४
२२	८	४४	२४	५२	१८	३६	०	८२	२३	४०	४८
२३	९	६	३६	५३	१८	५१	०	८३	२३	४३	१२
२४	९	२८	४८	५४	१९	६	०	८४	२३	४५	३६
२५	९	५१	०	५५	१९	२१	०	८५	२३	४८	०
२६	१०	१३	१२	५६	१९	३६	०	८६	२३	५०	२४
२७	१०	३५	२४	५७	१९	५१	०	८७	२३	५२	४८
२८	१०	५७	३६	५८	२०	६	०	८८	२३	५५	१२
२९	११	१९	४८	५९	२०	२१	०	८९	२३	५७	३६
३०	११	४२	०	६०	२०	३६	०	९०	२४	०	०

सारिणी देखने की रीति :—

सायन सूर्य के भुजांश बनालो इस भुजांश की क्रांति यहां खोजो।

रा

जैसे सा० सू० २–१४°–७′–४८″ है। इसके भुजांश ७४°-७′-४८″ हुए ७४° भुजांश = २२°–५२′–४८″ क्रांति हुई अब शेष ७′–४८″ की भी क्रांति जानना है तो इसके आगे के भुजांश की क्रांति से अंतर करो तो ध्रुवांतर निकलेगा।

१° (६०′) में इतना ध्रुवान्तर तो शेष कलादि में कितना ?

अंतर × शेष कलादि / ६० = शेष की क्रांति।

इसे पूर्व प्राप्त क्रांति में जोड़ दो तो स्पष्ट क्रांति होगी।

जैसे ७४° = २२°–५२′–४८″

७५ = २३–०–०

दोनों का अंतर २३–०–०

२२–५२–४८

अंतर शेष ०–७–१२

(७–१२ × ७–४८) / ६० = (५६′–९″) / ६०

= ०′–५६″ क्रांति शेष की।

पूर्व क्रांति २२°–५२′–४८″

शेष की ,, + ०–५६

२२–५३–४४

= २२°–५३′–४४″ क्रांति मेषादि होने से उत्तर क्रांति।

उपरोक्त सारिणी बनाने की रीति

अंक	अंतर अंश		सम्मिलित ध्रुव अं० क०		प्रथम ध्रुवांक अं० क० वि०
१ =	४०	÷१०	=४–०	÷१०	=० २४ ०
२ =	४०	÷१०	=४–०	÷१०	=० २४ ०
३ =	३७	÷१०	=३–४२	÷१०	=० २२ १२
४ =	३४	÷१०	=३–२४	÷१०	=० २० २४
५ =	३०	÷१०	=३–०	÷१०	=० १८ ०
६ =	२५	÷१०	=२–३०	÷१०	=० १५ ०
७ =	१८	÷१०	=१–४८	÷१०	=० १० ४८
८ =	१२	÷१०	=१–१२	÷१०	=० ७ १२
९ =	४	÷१०	=०–२४	÷१०	=० २ २४

ग्रह लाघव के अनुसार ९० भुजांश के ९ अंक दिये हैं। उनके आगे बताया है कि एक दूसरे से कितने अंतर पर हैं। इस प्रकार एक अंक के अंतर अंश में एक बार १० का भाग दो जो उत्तर आयगा फिर उसमें दुबारा १० का भाग दो। जो उत्तर आवे वह एक से १०° तक भुज का ध्रुवांक होगा।

(१) का ध्रुवांक ०°–२४′–० =१ से १० तक में जोड़ते जाना
(२) ,, ,, ० –२४ –० =११ से २० तक में ,, ,,
(३) ,, ,, ० –२२ –१२ =२१ से ३० ,, ,, ,,
(४) ,, ,, ० –२० –२४ =३१ से ४० ,, ,, ,,
(५) ,, ,, ० –१८ –० =४१ से ५० ,, ,, ,,
(६) ,, ,, ० –१५ –० =५१ से ६० ,, ,, ,,
(७) ,, ,, ० –१० –४८ =६१ से ७० ,, ,, ,,
(८) ,, ,, ० –७ –१२ =७१ से ८० ,, ,, ,,
(९) ,, ,, ० –२ –२४ =८१ से ९० ,, ,, ,,

इस प्रकार सारिणी वन जायगी।

आगे चर क्रांति सारिणी दी है जिसमें अक्षांश और क्रांति पर से मिनट सेकन्ड में चर निकल आता है।

चर क्रांति सारिणी (मिनट सेकन्ड में)

क्रांति अंश

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	मि०
	४	८	१३	१७	२१	२५	३०	३४	३८	४२	४६	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२	४७	से०
२	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	मि०
	८	१७	२५	३४	४२	५०	५८	८	१६	२४	३३	४२	५१	०	८	१७	२६	३६	४५	५५	४	१४	२४	३४	से०
३	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	
	१३	२५	३८	५०	३	१६	२८	४१	५४	७	२०	३३	४६	०	१६	२६	४०	५४	८	२२	३७	५१	६	२०	
४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७	
	१७	३४	५०	७	२४	४१	५८	१५	३२	५०	७	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	
५	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८	
	२१	४२	३	२४	४५	६	२८	४९	१०	३२	५४	१६	३८	०	२२	४४	७	३०	५४	१८	४२	६	३१	५६	
६	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	
	२५	५०	१६	४१	६	३२	५८	२३	४९	१४	४१	७	३४	०	२७	५४	२२	४९	१८	४६	१५	४४	१४	४४	
७	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	
	२९	५७	२८	५८	२८	५८	२७	५७	२७	५८	२८	५९	३०	१	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२१	५३	२६	
८	०	१	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	
	३४	८	४१	१५	४९	२३	५७	३२	६	४१	१६	५१	२६	२	३८	१४	५१	२८	६	४४	२२	१	४१	२१	
९	०	१	१	२	३	३	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	
	३८	१६	५४	३२	१०	४९	२७	६	४५	२४	३	४३	२३	३	४४	२४	६	४८	३०	१३	५६	४०	२५	१०	
१०	०	१	२	२	३	४	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	
	४२	२४	७	५०	३१	१४	५८	४१	२४	८	५१	३६	२०	५	५०	३६	२२	८	५५	४३	३२	२०	१०	०	
११	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९	
	४६	३३	२०	७	५४	४१	२८	१६	३	५१	४०	२८	१७	७	५६	४७	३८	२९	२१	१४	७	१	५६	५२	

१२	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१
	५१	४२	३३	२४	१६	७	५९	५१	४३	३६	२८	२१	१५	९	४	५८	५४	५०	४४	४५	४३	४२	४२	४३
१३	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
	५५	५०	४६	४२	३८	३४	३०	२७	२३	२०	१७	१५	१३	१२	११	११	१२	१४	१७	२०	२४	३०	३७	४६
१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२४	२५
	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	१२	१५	१९	२३	२९	३५	४१	४७	५७	८	१८	३०
१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२६	२७
	४	८	१३	१८	२२	२७	३२	३८	४४	५०	५६	४	११	१९	२८	३८	४७	५८	१०	२२	३६	५२	७	२४
१६	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	२९
	९	१८	२६	३६	४५	५४	४	१४	२५	३६	४७	५९	११	२४	३८	५२	७	२३	४०	५८	१६	३७	५८	२०
१७	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३१
	१३	२७	४०	५४	८	२२	३६	५१	६	२२	३८	५४	१२	२९	४८	७	२७	४८	११	३४	५७	३३	५०	१९
१८	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	३०	५०	१२	३५	५९	२३	४८	१४	४२	८	३७	१०	४२	२०
१९	१	२	४	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३५
	२३	४५	८	३१	५४	१८	४२	६	३०	५५	२१	४६	१४	४१	१०	३९	९	४१	१४	४८	२४	५९	३७	१६
२०	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३३	३५	३७
	२७	५५	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१३	४३	१४	४५	१८	५०	२३	५५	३०	८	४७	२७	८	४०	३३	१८
२१	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३२	३३	३५	३७	३९
	३२	४	३७	९	४२	१५	८	२२	५६	३२	७	४३	२०	५८	३६	१६	५६	३७	१९	२	५०	४१	३०	२२
२२	१	३	४	६	८	९	११	१३	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१
	३७	१४	५१	२८	६	४४	२३	१	४०	२०	१	४२	२४	८	५२	३७	२३	१०	५८	५०	४१	३५	३०	२७
२३	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४२	२४	६	४८	३१	१४	५७	४१	२५	१०	५६	४२	३०	१८	७	५८	४९	४२	३७	३३	३०	२७	३५	३५
२४	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
	४७	३४	२१	८	५६	४४	३२	२१	१०	०	५२	४३	३६	३०	२४	२०	१९	२०	२१	२३	२५	२९	३४	४७

२५.	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७
	५२	४४	३६	२८	२१	१४	८	२	५६	५२	४८	४५	४३	४२	४३	४४	४७	५१	५८	५	१५	२६	४०	५३
२६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०
	५७	५४	५२	४९	४७	४५	४३	४३	४३	४४	४६	४८	५२	५६	०	९	१८	२८	४०	५४	१०	२८	४८	१०
२७	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३८	४०	४२	४५	४७	४९	५२
	२	५	७	१०	१३	१७	२१	२६	३१	३७	४४	५२	१	१२	२३	३६	५०	७	२५	४५	७	३२	५८	२७
२८	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५४
	७	१५	२७	३१	४०	४९	५८	८	१९	३१	४४	५७	१२	२८	४६	४	२५	४९	१२	३६	२	३०	४	३८
२९	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५१	५४	५७
	१३	२६	४०	५३	७	२२	३६	५२	९	२६	४४	४	२४	४६	१०	३५	१	३०	०	३२	८	४६	२६	९
३०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२०	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५१	५३	५६	५९
	१८	३७	५६	१५	३५	५५	१६	३७	५९	२२	४६	१२	३८	५	३४	७	४०	१५	५२	३१	१३	५८	४६	३५
३१	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४२	४५	४७	५०	५३	५६	५९	६२
	२४	४८	१३	३८	३	२९	५६	२२	५०	२०	५०	२१	५४	२८	४	४१	२०	२	४६	३२	२०	१२	६	२
३२	२	५	७	१०	१०	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६४
	३०	०	३०	१	३२	४	३६	९	४३	१८	५४	३२	११	५२	३३	१७	३	५२	४२	३५	३१	३०	३३	३७
३३	२	५	७	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२६	२९	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	६७
	३६	१२	४८	२४	१	३९	१८	५७	३८	१८	०	४४	३०	१६	५	५६	४९	४४	४१	४१	४४	४९	५४	४
३४	२	५	८	१०	१३	१५	१९	२१	२४	२७	३०	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६३	६६	६९
	४२	२४	६	४९	३२	१२	०	४६	३१	१९	८	५८	५०	४४	३९	३६	३६	३८	४३	५१	१	१५	३३	५४
३५	२	५	८	११	१४	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६६	६५	६९	७२
	४८	३६	२५	१४	३	५३	४४	३६	२८	१२	१७	१२	१३	१३	१५	२०	२७	३६	४७	०	२२	४४	१०	४०
३६	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	६१	६४	६८	७१	७५
	५४	४९	४४	३९	३४	३१	२८	२६	२६	२७	२८	३२	३८	४४	५४	६	२०	३७	५७	२०	४६	१७	५१	३०
३७	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	४०	४३	४६	४९	५३	५६	६०	६३	६७	७१	७४	७८
	१	२	३	५	७	१०	१४	१९	२५	३२	४६	५२	४	१९	३६	५५	१७	४१	९	४०	१५	५४	३७	२५

चर क्रांति सारिणी देखने की रीति—

इस चर क्रांति सारिणी में केवल अपने स्थान का अक्षांश और सूर्य की क्रांति पर से मिनट सेकन्ड में चर विदित हो जाता है।

जैसे अक्षांश २३ का चर निकालना है। इष्ट दिन के सायन सूर्य पर से उस दिन की सूर्य की क्रांति निकाली। मान लो सा० सूर्य २–४°–१०′–०″ है। क्रांति सारिणी में देखा २ राशि के नीचे, बाईं ओर के ४° के सामने २०°–५७′–४२° क्रांति दी है = २०°–५८′ क्रांति हुई। चर क्रांति सारिणी देखा २३ अक्षांश के सामने और २०° के नीचे ३५–३३ (मि० से०) चर दिया है। आगे के २१° के नीचे ३७–३० (मि० से०) दिया है।

दोनों का अंतर २१° = ३७–३० (मि० से०) किया १ – ५७ (मि० से०) चरांतर मिनट हुए।

२० = ३५–३३

मि०से० १–५७ = ११७ सेकन्ड

१°(६०′) में १–५७ अंतर तो ५८′ शेष क्रांति में कितना ?

(= ११७ से०)

$\frac{११७ \times ५८}{६०} = \frac{६७८६}{६०} = ११३$ सेकन्ड

= मि० से०

मि० से० = १ – ५३

२०° का चर ३५–३३

+५८′,, १–५३

३७–२६ चर मिनट (सायन सूर्य मेषादि है)

∴ चर ३७–२६ मिनट ऋण सूर्योदय के लिये।

सूर्योदय = ६ घंटा – (चर मिनट) = घं० मि० से०

३७–२६ ५–२२–३४

```
   ११७
  ×५८
  ----
   ९३६
  ५८५
६० ) ६७८६ ( ११३ सेकन्ड
     ६०
     --
      ७८
      ६०
      --
      १८६
      १८०
      ---
        ६
```

```
  ६–०–०
– ०–३७–२६ चर घटाया
  ---------
  ५–२२–२४ सूर्योदय
```

दूसरा उदाहरण

मानलो अक्षांश २३°–५७′ और सायन सूर्य १० रा – २६° – १५′ – ४″ का चर निकालना है। अक्षांश की कला ५७′ आधे से अधिक है तो २४° मान लिया।

रा. १०–२६° सूर्य की क्रांति १२°–५१′–४२″ है। क्रांति की कला ५१′ आवे से ज्यादा है तो क्रांति १३° मान लिया। २४ अक्षांश के सामने १३ क्रांति के नीचे सारिणी में

मि० से०

चर २३–३६ मिला। यह कुछ स्थूल निकला।

यदि सूक्ष्म रूप से चर निकालना है तो गणित से निकाल लो जैसा ऊपर बता चुके हैं।

तीसरा उदाहरण

मान लो अक्षांश २०″–४०′ है और सायन सूर्य की क्रांति २०°–४१′ है। यहाँ क्रांति की कला आधे से अधिक है तो १° मान कर सब क्रांति २१° मान लो। यदि कला आधे से कम हो तो उस कला को छोड़ कर केवल अंश लेना।

	मि० से०	
२० अक्षांश में २१° क्रांति का चर	३२–८	३३–५०
२१ ,, ,, ,, ,, ,,	३३–५०	३२–८
दोनों चर का अंतर	=०–४२	०–४२

६०′ में ४२ सेकन्ड अंतर तो अक्षांश की शेष कला ४० में ?

$$\frac{४० \times ४२}{६०} = \frac{२ \times ४२}{३} = २ \times १४ = २८ \text{ सेकन्ड चर हुआ}$$

मि० से०

२० अक्षांश का चर ३२–८

४०′ ,, ,, + २८

=३२–३६ चर

मि० से०

यह २०°–१४′ अक्षांश का चर ३२–२६ हुआ

चर निकालने का अन्य प्रकार—

$$\frac{\text{रवि क्रांति} \times \text{अक्षांश}}{५} = \text{चर पल}$$

उदाहरण—

अक्षांश २०° – ४०′ क्रांति २०° – ४१′

पल वि०

$$\frac{(२०–४०) \times (२०–४१)}{५} = \frac{४१४–८}{५} = ८५–२९ \text{ चर}$$

प. वि. मि. से. मिनट से.

= चर ८५ –२९ = ३४ – ११ = ३४ – ११

२० – ४०

× २० – ४१

	२०	४१
	८०	१६०
४००	८००	
४००	१६२१	१६४१
+२७	+२७	=२१
४२७	१६४८	
	=२८	

इस रीति से कुछ अन्तर पड़ जाता है। ठीक २ स्पष्ट चर निकालने को चरखंड सारिणी के आधार पर इष्ट अक्षांश का चरखंड बनाकर चरखंड पर से चर बना लेना चाहिए जैसा पहले बना चुके हैं।

=४२७·२८
५) ४२७·२८ (८५
४० पल
२७
२५
२×६०+२८
५) १४८ (२९
१०
४८ वि०
४५

चर सारिणी का उपयोग—

चर निकल जाने पर इस पर से दिनमान सूर्योदय सूर्यास्त निकाल सकते हो।

यद्यपि पहिले भी बता चुके हैं परन्तु और समझने को इसकी रीति फिर भी देते हैं।

ग्रह मेषादि हो तो = उत्तर क्रांति
,, तुलादि ,, = दक्षिण ,,

दिनमान = ३० घड़ी ± (चर नि × २॥) ५२ = घड़ीपल उत्तर क्रांति +
= ३० घड़ी ± (चर × ५) = घड़ी पल दक्षिण ,, −
या १२ घंटा ± (चर मिनट × २) = घंटा मिनट

रात्रिमान = (६० घड़ी − दिनमान घड़ी)

सूर्योदय और सूर्यास्त निकालना।

उत्तर क्रांति में = सूर्योदय = (६ घंटा − चर मिनट) | सूर्यास्त = ६ घंटा + चर मि.
दक्षिण ,, = ,, = (६ घंटा − चर मिनट) | ,, = ६ घंटा − चर मि.

सूर्यास्त घंटा = (दिनमान घड़ीपल ÷ ५)

सूर्योदय घंटा = (रात्रिमान घटीपल ÷ ५)

सूर्यास्त घंटा = (१२ घंटा − सूर्योदय घंटा)

दिनमान घड़ीपल = (सूर्यास्त घंटा मि० × ५)

रात्रिमान ,, = (सूर्योदय घंटा मि० × ५)

उदाहरण—

अक्षांश २२° और सूर्य क्रांति मान लो दक्षिण क्रांति ६° -- ०′ है। २२ अक्षांश के सीध में ६ क्रांति के नीचे—९ मि० ४४ से० चर मिला।

दिनमान = ३० घड़ी − (चर × ५) = ३ घंटा − (४८ − ४०) = क्रांति दक्षिण
९ − ४४ होने से ऋण

३० – ० – ० = २९ – ११ – २० दिनमान

०–४८ – ४०

२९–११ – २०

सूर्योदय = ६ घंटा + चर ९ – ४४ दक्षिण क्रांति होने से +

= ६ – ९ – ४४ घंटा ।

घं. मि. से.

सूर्योदय = ६ – ९ – ४४

× ५

रात्रिमान = ३० – ४८ – ४०

६० – ० – ०

रात्रिमान–३०–४८–४० घटाया

= २९–११–२०

घंटा

१२ – ० – ०

सूर्योदय ६ – ९ – ४४ घटाया

सूर्यास्त=५ – १०–१६

घं. मि. से.

सूर्यास्त = दिनमान ÷ ५ = ५ – ५० – १६

२९ – ११ – २० घंटी

दिनमान

५) २९ – ११ – २० (५ घं.

२५

४ × ६०

२४० + ११

५) २५१ (५ मि.

२५

१ × ६० + २०

५) ८० (१६ से॰

५

३०

३०

×

चर और दिनमान सारिणी बनाने की रीति

विद्यार्थी को चाहिए कि अपने स्थान की एक चर पल सारिणी बनाकर रख वह दिनमान सारिणी भी बन जायगी ।

यह चर सारिणी इष्ट अक्षांश पर से बनाने की रीति यहाँ देते हैं । पलभा और और चरखंड बनाना आगे समझाया गया है । यहाँ समझ में न आवे तो आगे और भी दिया है समझ लेना । जहाँ की सारिणी बनानी है वहाँ के अक्षांश से या पलभा से तीनों चरखंड निकालो । चरखंड अंगुल, प्रत्यंगुल और तत्प्रति अंगुल में होंगे, परन्तु उनको पल विपल मान लो नरसिंह पुर का अक्षांश २२°–५७′ है ।

अ॰ प्र॰ तत्प्र॰

अक्षांश २२°–५७′ का पलभा ५ – ४ – ४३ है । (पलभा विषय आगे देखो

अ॰ प्र॰

जहाँ नरसिंह पुर की पलभा निकाली गई है) । इस पलभा को ५ – ५ मान लो क्योंकि ४३ तत्प्रति अंगुल आधे से अधिक है इसे १ मान लिया ।

अ० प्र० पल मि०

अब ५-५ को ५ - ५ मान लिया और इसके चरखंड बनाये।

(१) चरखंड = पलभा × १०	(२) चरखंड = पलभा × ८	(३) चरखंड = पलभा × १०/३
,, = (प.वि.) × १० (५-५)	,, = (प. वि.) × ८ (५ - ५)	,, = (प. वि.) × १०/३ (५ - ५)
,, = प. वि. ५०-५०	,, = प. वि. ४०-४०	,, = ५०-५० / ३ पल
(१) चरखंड (५०-५०) ÷ ३० प० वि० अनु	(२) चरखंड(४०-४०) ÷ ३० प. वि.	,, = १६-५६-४०
(१) = चर ध्रुव १-४१-४०	(२) = चरध्रुव १-२१-२०	(३)चरखंड(१६-५६-४०) ÷ ३० पल
		(३०) = चरध्रुव ०-३३-५३-२१

चर पल बनाना

सायन सूर्य के भुजांश में इस प्रकार उपरोक्त चर ध्रुवांक जोड़ना।

१° से ३०° तक = (१) चर ध्रुव को १° के नीचे कोष्ठक में रखकर आगे वही ध्रुव ३०° तक सारिणी में जोड़ते जाना।

३१ से ६०° तक = ३०° के आगे जो जोड़ हो उसके आगे + (२) ध्रुव को ६०° तक जोड़ते जाना।

६०° से ९०° तक = ६०° के आगे जो योग हो उसके आगे + (३) ध्रुव को ९०° तक जोड़ते जाना।

मेषादि = (मेष से कन्या तक) राशियों के भीतर = चरपल + होगा।

तुलादि = (तुला से मीन तक) ,, ,, ,, = ,, - होगा।

सारिणी बनाने के लिये १ से ९०° तक भरने को ९० कोठा बनाओ जैसा आगे बनाकर बताया है। उनके नीचे चरपल लिखते जाओ। अर्थात् ऊपर बताये जो ३ प्रकार के चर ध्रुव निकाले हैं उनके जोड़ने से (ऊपर बताई रीति से) जो चरपल बने लिख दो।

दिनमान बनाना

	घड़ी		घड़ी प० वि० अ०	
१° से ३०° तक	= ३०±[(१)	ध्रुव × २]	= ३०±(३-२३-२०)	मेषादि में + (जोड़ते जाना
३१ से ६०°	,, = ३०±[(२)	ध्रुव × २]	= ३०±(२-४२-४०)	तुलादि में -
६१ से ९०	,, = ३०±[(३)	ध्रुव × २]	= ३०±(१-७-४६-४०	(घटाने जाना

रात्रि मान = (६० - दिनमान)

टिप्पणी—

जो दिनमान मेषादि में १ से ३०° तक होगा वही रात्रिमान तुलादि के उन्हीं अंशों में होगा
,, ,, ३१ से ६० ,, ,, ,, ,, ,,
,, ,, ६१ से ९० ,, ,, ,, ,, ,,

जो रात्रिमान मेषादि में १ से ३०° तक होगा वही दिनमान तुलादि के उन्हीं अंशों में होगा
,, ,, ३१ से ६०° ,, ,, ,, ,, ,,
,, ,, ६१ से ९०° ,, ,, ,, ,, ,,

सारिणी बनाकर देखना शुद्ध बनी है या नहीं इस की परीक्षा के लिये नीचे लिखी बातों पर ध्यान दो।

१ से ३०° तक भरने के उपरान्त ३०° के नीचे ३० घड़ी±(१ ध्रुव × ३०)=३०घड़ी± (१ चरखंड × २) पल

३१ से ६० ,, ,, ,, ६० ,, ३० के नीचे जो आया है±(२ ध्रुव × ३०) या (२ चरखंड × २)

६१ से ९० ,, ,, ,, ९० ,, ,, ६० ,, ,, ,, ±(३ ध्रुव × ३०) या (३ चरखंड × २)

जैसे :—

पल घ०प० वि०

१ से ३०° में = ३०° के नीचे ३० घड़ी ±(१ चरखंड ५०-५० × २) = ३०±(१-४१-४०)

घ० प० वि०
= मेषादि में + = ३१–४१–४०
तुलादि में – = २८–१८–२०

घ० प०

३१ से ६०° में = ६० के नीचे जो आया +[चरखंड २] = ३३–३
घ० प० वि०[प०] मेषादि में
+ (२ चरखंड × २) = (३१-४१-४०)[(४०-४०) × २]
[= १–२१–२०]

–(,, ,,) = (२८-१८-२०)–(चरखंड २ × २) = २६-५७-०
(= १-२१-२०) तुलादि में

घ० प० वि०

६० से ९० में = ९० के नीचे = ६० के नीचे का + (३ चरखंड × २) = ३३–३–०+
[३ चरखंड × २] = ३३–३६–५३–२०
+ [= (१६–५६–४०) × २] मेषादि में
[= ३३–५३–२०]

पल
= ६० के नीचे का + (३ चरखंड × २)=२६–५७–०–३३–५३–२०

घ० प० वि०
= २६–२३–६–२० तुलादि में

सारिणी बनाने में केवल घड़ी पल विपल दिनमान में लिया गया है शेष को छोड़ दिया है। परन्तु चर में पल विपल अनुपल तक सारिणी में लिया है।

इस प्रकार अंतिम ९०° के नीचे जो अंक आया है वह तीनों चरखंड के जोड़ को दुगना किया फिर ३० घड़ी और जोड़ दिया जाय तो सबका योग जो होगा वही आना चाहिए। जैसे तीनों चरखंड

प० वि०
५०–५०
४०–४०
१६–५६–४०

घ० प० वि०
(१–४८–२६–४०) × २ = ३–३६–५३–२० होता है
घड़ी प० वि०

	घ० प० वि०	घ० प० वि०	
मेषादि में = ३० घड़ी±	(३–३६–५३–२०)	= ३३–३६–५३–२०	आना
तुलादि में = ,,	,,	= २६–२३–६–४०	चाहिए

पल वि०
दिनमान = ३०±(चरपल × २)=९०° में चरपल=१०८–२६–४०

घ० प० वि० घ० प० वि०
= (१–४८–२६–४०) × २ = ३–३६–५३–२०

घ० प०
९०° पर = ३०±(३–३६–५३–२०) यह वही आया जो ऊपर निकाल चुके हैं।

इस प्रकार द्विगुणित कर चर को ३० घड़ी में मेषादि में जोड़ने से और तुलादि में घटाने से दिनमान होता है।

चर और दिनमान सारिणी देखने की रीति

सायन सूर्य का भुजांश बनाकर देखो सायन सूर्य मेषादि या तुलादि है। फिर भुजांश के नीचे जैसा सारिणी में मेषादि तुलादि हो उसके अनुसार ± चर होगा और सारिणी के अनुसार दिनमान होगा। चर ± करने और भुजांश बनाने के विषय में प्रथम समझा चुके हैं।

यदि भुजांश के अतिरिक्त भुजांश की कला विकला का भी आनुपातिक चर या

दिनमान निकालना हो तो दोनों चरों का अंतर करना (वह आगे का चर या दिनमान बड़ा हो तो +, कम हो तो — ऋण होगा)

(अंतर × भुज कलादि) ÷ ६० = आनुपातिक चर पल आदि ।

प्राप्त चर या दिनमान ± आनुपातिक चर पल या दिनमान घटो

रा

= सानुपात चर या दिनमान ।

मान लो सा० सूर्य ४–२०°–३४′–३८″ है

इसके भुजांश बनाये

१८०–०–०

१४०–३४–२८ सर० सूर्यांश

शेष = ३९–२५–३२ = भुजांश

भुजांश ३९° = पल० वि० चर

६३–२–०

„ ४० = ६४–२३–२० „

दोनों का अन्तर = १–२१–२०

भुजांश ३९°–२५′–३२″ हुए

पल० वि०

३९° का सारिणी में चर पल ३३ – २

मिला २५°–३२″ शेष का और चाहिए ।

६४–२३–२०

–६३– २–०

= १–२१–२०

= १–२१

६०′ में १–२१ अंतर

तो २५′–३२″ में कितना ?

पल० वि०

$$\frac{(१–२१)\times(२५–३२)}{६०} = \frac{३४–२८}{६०} = ०–३४–२८$$

प० वि०

३९° = ६३–२

२५′–३२″ = + ०–३४–२८

३९–२५–३२ = ६३–३६–२८

पल० वि० घ० प० वि०

∴ चर ६३–३६–२८ = १–३–३६

२५–३२

× १–२१

२५	३२
५०	६४

२५ | –३२ |

२५ | ५५७ | ६७२ ÷ ६०

+ ९ | + ११ | = १२

३४ | ५६८

= २८

पल

= ३४–२८ ÷ ६०

= ०–३४–२८

ऊपर के गणित को और सरल करने के लिये इस प्रकार करो। ६०′ में

प० वि०

१–२१ = ८१ विपल अंतर तो २५′–३२″ में कितना ?

यहाँ २५′–३२″ में ३२″ ये ३० से अधिक है इसलिये १′ मानकर २५′ को २६′ मान कर गणित करो ।

$\frac{८१ \times २६}{६०} = \frac{२१०५}{६०}$ = ३५ विपल आनुपातिक चर

	पल०	वि०
३६° में =	६२ –	२ चर
२६′ में =	० –	३५
=	६२–	३७ चर हुआ ।

```
   ८१
 × २६
 ----
  ४८६
 १६२
 ----
 २१०६
६०)२१०६(३५ विपल
   १८०
   ---
   ३०६
   ३००
   ---
     ६
```

इस प्रकार से इसमें बहुत ही कम अंतर पड़ता है ।

चर सारिणी का और भी उपयोग—पंचांग परिवर्तन

किसी भी पंचांग में दिये हुए तिथि नक्षत्र करण आदि का मान अपने स्थान के अनुसार करने के लिये अर्थात् पंचांग परिवर्तन के लिये स्थानिक अक्षांश के चर की आवश्यकता होती है। इस लिये इस सारिणी से चर जान सकते हो और उस चर से तिथि आदि का मान अपने स्थान का बना सकते हो। इसके साथ २ देशान्तर संस्कार भी करना पड़ता है ।

पंचांग परिवर्तन और फल संस्कार

जहां का पंचांग है उस स्थान के देशान्तर से और अपने स्थान के देशान्तर से अंतर निकाल कर यह अंतर घंटा मिनट में या घड़ी पल में बना लो। पंचांग के स्थान से अपना देश पूर्व में हो तो + (जोड़ना), पश्चिम में हो तो—(घटाना)। इस प्रकार देशान्तर अन्तर ± होगा।

इसके उपरान्त उस दिन का सायन सूर्य या क्रांति से या भुजांश से जिस प्रकार सुविधा हो चर निकालो। मेषादि में चर + तुलादि में – होता है। उससे दिनमान बना लो जैसा पहिले बता चुके हैं।

स्थानिक दिनमान और पंचांग के दिन मान का अंतर निकाल कर २ का भाग दो तो चरान्तर आयेगा। यह चरान्तर इस प्रकार ± होगा।

चरान्तर =	पंचांग के	स्थान से	इष्ट स्थान का	अक्षांश	अधिक	और	उत्तर क्रांति	+
±	„	„	„	„	अल्प	„	दक्षिण „	+
	„	„	„	„	„	„	उत्तर „	—
	„	„	„	„	अधिक	„	दक्षिण „	—

चरान्तर और देशान्तर संस्कार मिल कर ± फल संस्कार कहलाता है। पंचांग में दिये तिथि नक्षत्र मिश्रमान आदि के मान में यह संस्कार करने से इष्ट स्थान का मान निकल आता है। फल संस्कार = इष्ट फल।

जैसे सम्वत २००० वैशाख शुक्ल पूर्णिमा का काशी के पंचांग से स्थानिक मान निकालना है।

काशी देशान्तर ८३°–०′–
नरसिंहपुर ,, ७९ –११
अंतर ३ –४९

३° = ३ × १० = ३० पल
४९′ = ४९ × १० = ४९० विपल

पल० वि०
= ८ – १०

पल० वि०
∴ अंतर ३°–४९′ = ३८ – १० ऋण

नरसिंहपुर काशी से पश्चिम में होने से ऋण देशान्तर हुआ।

नरसिंह पुर की दिनमान सारिणी से नरसिंहपुर का दिनमान निकाला

सा० सूर्य १–४°–५१′–५९″ है। दिनमान सारिणी में इसका दिनमान घ० प० वि० ३२–५४–५२ निकला। यह नरसिंहपुर का दिनमान हुआ।

घ० प०
काशी दिनमान ३३–१४
नरसिंहपुर ,, ३२–५४–५२
अंतर = ० –१९–८

प० वि०
अतर १९–८ ÷ २ = ९–३४

प० वि०
= ९–३४ चरांतर ऋण

सायन सूर्य मेषादि होने से उत्तर क्रांति है। स्थानिक अक्षांश कम है इससे चरान्तर ऋण हुआ। काशी का अक्षांश २५°–१५′ और नरसिंहपुर का २२°–५७′ है।

प० वि०
देशान्तर = – ३८–१०
चरान्तर = – ९–३४

संस्कार फल = –४७–४४ ऋण

काशी में	पूर्णिमा	विशाखा नक्षत्र	बरियान योग	मिश्रमान
	५४–५०	४७–१३	१३–११–०	४७–५४
फल संस्कार	–०–४७–४४	– ४७–४४	– ४७–४४	४७–४४
∴ नरसिंहपुर का मान	= ५३–२२–१६	४६–२५–१६	१२–२३–१६	४७–७–१६

स्थानिक दिनमान सारिणी बनाने की रीति

यह सारिणी लग्नसारिणी सरीखी बनाई गई है। अयनांश के अंश बदलने तक यह सारिणी काम देगी। लगभग ७२ वर्ष में अयनांश का एक अंश बदलता है, तब तक यह सारिणी काम देगी।

इष्ट वर्ष का अयनांश निकाल कर उसके अंश को १२ राशि में घटाने से जो राशि अंश बचे उस राशि अंश के नीचे ३०–०–० रखना।
घ० प० वि०

उपरान्त निम्नलिखित विधि से ध्रुव × २ जोड़ते या घटाते जाना। जैसे शाके

रा १२–०°–०′ २३–४१ शेष ११–६–१९ रा = ११–७°	१८६५ का अयनांश २३°–४१′ है। इसे १२ राशि से घटाया तो ११–७° बचे। तो मीन के ७° के नीचे ३०–० लिख दिया। इसके उपरान्त ध्रुव जोड़ते जाना।

ध्रुवांक बनाना—

स्थानिक पलभा या अक्षांश पर से तीनों चरखंड बनालो। प्रत्येक चरखंड को ३०° में विभक्त करो (३० का भाग दो) तो उस चरखंड का प्रथम ध्रुव बन जायगा। उस ध्रुव को दुगना करो तो द्विगुणित चर हो जायगा जो जोड़ने के लिये ध्रुवांक बन जायगा। इस रीति से तीनों चरखंड का ध्रुवांक बना लो। इसमें राशियां लंकोदय के क्रम के अनुसार लेना। जैसा :—

लंकोदय राशियाँ	चरखंड	चर ध्रुव	ध्रुव × २=ध्रुवांक	
	प० वि०	पल वि० अ०	प० वि० अ०	
मेष कन्या तुला मीन (१)	५०–५०–० ÷ ३०	=१–४१–४०	३-२३-२०	(१)
वृष सिंह वृश्चिक कुंभ (२)	४०–४०–० ÷ ३०	=१–२१–२०	२-४२-४०	(२)
मिथुन कर्क धन मकर (३)	१६-५६-४० ÷ ३०	=०–३३–५३-२०	१-७-४६-४०	(३)

ऊपर के चरखंड स्थानिक अक्षांश के अनुसार लिये हैं। नरसिंहपुर का पलभा ५–५ है और इसी का चरखंड ऊपर दिया है। ये पलभा और चरखंड पहिले दे चुके हैं।

अब सारिणी में ये ध्रुवांक इस प्रकार जोड़ना।

मीन के ७° = ३० घड़ी और कन्या के ७° में भी पूरे ३० घड़ी लिखना जैसा ऊपर आरंभ में लिखने का प्रकार बताया है कि ३० घड़ी कहाँ लिखना। उपरान्त इस प्रकार ध्रुवांक जोड़ना घटाना।

मीन ८° से मेष ७° तक + (चर (१) × २) = (१) ध्रुवांक

मेष ८° „ वृष „ + (चर (२) × २) = (२) ध्रुवांक

वृष „ „ मिथुन „ „ + (चर (३) × २) = (३) ध्रुवांक

मिथुन „ „ कर्क „ „ — (चर (३) × २) = (३) ध्रुवांक

कर्क „ „ सिंह „ „ — (चर (२) × २) = (२) ध्रुवांक

सिंह „ „ कन्या „ „ — (चर (१) × २) = (१) ध्रुवांक

कन्या „ „ तुला „ „ — (चर (१) × २) = (१) ध्रुवांक

तुला „ „ वृश्चिक „ — (चर (३) × २) = (२) ध्रुवांक

वृश्चिक „ धन „ „ — (चर (३) × २) = (३) ध्रुवांक

धन „ „ मकर „ „ + (चर (३) × २) = (३) ध्रुवांक

मकर „ „ कुंभ „ „ + (चर (२) × २) = (२) ध्रुवांक

कुंभ „ „ मीन „ „ + (चर (१) × २) = (१) ध्रुवांक

पल वि० अ०

अर्थात् मीन के ७° के आगे (०) ध्रुवांक ३–२३–२० क्रमानुसार आगे ग्रंत के ३९° तक जोड़ के भरते जाना। और मेष के० से ७° वही ध्रुवांक जोड़ते जाना। मेष ७° के आगे अर्थात् मेष के ८° से और वृष के ७° तक (२) ध्रुवांक जोड़ते जाना। वृष के ८° से (३) ध्रुवांक जोड़ते जाना। मिथुन के ७° तक उसे जोड़ना। आगे मिथुन के ८° से (३) ध्रुवांक घटाते जाना। कर्क के ८° से दूसरा और सिंह के ८° से पहिला ध्रुवांक घटाते जाना। कन्या के ८° से पहिला, तुला के ८° से दूसरा और वृश्चिक के ८° से तीसरा ध्रुवांक घटाना आरंभ करना। उपरान्त धन के ८° से तीसरा, मकर के ८° से दूसरा और कुंभ के ८° से पहिला ध्रुवांक जोड़ना आरंभ करना। जहाँ आपने ३० घड़ी रखा था यदि जोड़ते घटाते २ ठीक आ गया तो सारिणी ठीक बनो है समझना। जोड़ते घटाने के उपरांत सारिणी में केवल घटी पल विपल लिखना अनुपल यदि आवे तो उसे छोड़ देना।

घ० प० वि० अनु०

जैसे मीन ७° में ३० घड़ी रखा + (१) ध्रुवांक ०–३–२३–२० जोड़ने से

घ० प० वि० अ०

३०–३–२३–२० आया। सारिणी में केवल ३०–३–२३ लिखा। इस ३०–३–२३–२०

में फिर वही (१) ध्रुवांक जोड़ा तो ३०–६–४६–४० हुआ परन्तु सारिणी में ३०–६–४६ ही रखा। जोड़ने घटाने में तो पूरा ध्रुवांक जोड़ना घटाना परन्तु सारिणी में स्थान अभाव से केवल घड़ी पल विपल ही लिखा गया है ऐसा जानना।

इस सारिणी बनाने में लंकोदय की राशियों से स्वोदय बनाने में जिस प्रकार चरखंड जोड़ घटा कर स्वोदय बनाते हैं उसके विरुद्ध इसमें करना पड़ता है। अर्थात् मेष वृष मिथुन में पहिले चरखंड घटाते हैं परन्तु यहाँ जोड़ना पड़ता है। कर्क सिंह कन्या में वहां जोड़ा जाता है परन्तु यहाँ घटाते हैं। इसी प्रकार तुला, वृश्चिक धन में वहाँ जोड़ते हैं तो इस सारिणी में घटाना पड़ता है। मकर कुंभ मीन में वहां घटाते हैं तो इस सारिणी में जोड़ना पड़ता है।

कारण यह है कि (१) सायन मेष (वसंत सम्पात) २१ मार्च के समीप होता है तब दिन रात बराबर होता है। (२) उसके उपरांत दिन बढ़ना आरंभ होता है। सायन कर्क (ग्रीष्म क्रांति) २१ जून के समीप सबसे बड़ा दिन होता है फिर दिन घटना आरंभ होता है। (४) सायन मकर (शरद् क्रांति) २२ दिसम्बर को सब से छोटा दिन होता है। उपरान्त फिर दिन बढ़ने लगता है। दिन बढ़ते २ फिर सायन मेष को दिन रात बराबर हो जाता है।

इसी के अनुसार यहाँ उन्हीं चरखंड के (चर × २) = ध्रुवांक को जोड़ घटाकर दिनमान बना लेते हैं। सबसे बड़ा दिन किस अक्षांश में कितना होता है प्रारंभिक ज्ञानखंड में बता चुके हैं।

दिनमान सारिणी देखने की रीति और उपयोग

इस सारिणी में सायन सूर्य या भुज बनाने की आवश्यकता नहीं है। केवल उस दिन पंचांग में देख लो सूर्य किस राशि के कितने अंश पर है। उसी सूर्य पर से सारिणी देखो।

रा

मान लो उस दिन सूर्य १–२८°–५६′–३१″ है। यहाँ केवल राशि अंश लिया। वृष के २८° पर सूर्य है। सारिणी में वृष के २८° के सामने घ० प० वि० ३३-२६-४३ मिला। यही उस दिन का स्थानिक दिन मान हुआ।

इससे सूर्योदय जानने को दिनार्द्ध बनाया। घ० प० वि० ३३–२६–४३

घ० प० वि०	घं० मि० से०	
÷२ = १६–४३–२१	= ६–४१–२०	१२ घंटा—दिनार्द्ध घंटा

घं० मि० से०

६–४१–२० = ५–१८–४० सूर्योदय।

या (६० घड़ी – दिनमान = रात्रिमान। रात्रिमात्र ÷ ५ = सूर्योदय

घड़ी घटी घंटा)

६०– ०– ०

३३–२६–४३ दिनमान

२६–३३–१७ रात्रिमान

घ० प० वि०

रात्रिमान २६–३३–१७ ÷ ५

घं० मि० से०

= ५–१८–३९ $\frac{२}{५}$

घं० मि० से०

= सूर्योदय ५–१८–४०

५)२६–३३–१७(५ घंटा
२५
१ × ६६ + ३३
५)९३(१८ मि०
५
४३
४०
३ × ६० + १७
५)१९७(३९ से०
१५
४७
४५
२

दिनमान से मिश्रमान और चर जानना

दिनमान घटी = ३० घटी ± (चर पल ५२) उत्तर क्रांति दक्षिण में
+ —

∴ (दिनमान–३० घटी) ÷ २ = चर पल = मेषादि में (उत्तर क्रांति)

(३० घटी–रात्रिमान) ÷ २ = चर पल = तुलादि में (दक्षिण क्रांति)

यहाँ दिनमान	रात्रिमान
३३–२६–४३ है	२६–३३–१७ है
– ३०	३०–० –०
	– २६–३३–१७
शेष ३–२६–४३ ÷ २	शेष ३–२६–४३ ÷ २
= १–४३–२१॥ चर +	= १–४३–२१॥ चर –

उत्तर क्रांति में

मिश्रमान = दिनार्द्ध + ३०

दिनार्द्ध १६–४३–२१
+३०

= मिश्रमान = ४६–४३–२१

दिनमान = (मिश्रमान–३०) × २

मिश्रमान ४६–४३–२१
– ३०

शेष = १६–४३–२१
×२

दिनमान = ३३–२६–४२

दक्षिण क्रांति में

मिश्रमान = ४५ घटी ± चर पल

मेषादि तुलादि में
\+ —

= ४५ घटी + १४३–२१ चर मेषादि
\+

= ४६- ४३–२१ मिश्रमान

दिनमान = मिश्रमान × २–)—६०

मिश्रमान ४६–४३–२१
×२

९३–२६–४२
—६०

दिनमान = ३३–२६–४२

रात्रिमान = (मिश्रमान – दिनमान) × २

मिश्रमान ४६–४३–२१
दिनमान— ३३–२६–४३

शेष १३–१६–३८
×२

रात्रिमान = २६–३३–१६

पंचांग में दिये हुए मिश्रमान को फल संस्कार कर स्थानिक मिश्रमान बनाना पहिले बता चुके हैं। पंचांग में जो मिश्रमान कालीन ग्रह दिये रहते हैं उस पर से ग्रह स्पष्ट करना पड़ता है। इस कारण मिश्रमान को स्थानिक बना लेने की आवश्यकता पड़ती है।

—: ० :—

अध्याय ४

राशियों का उदय काल

भचक्र (राशिचक्र) में १२ राशियाँ है। पृथ्वी जिस मार्ग में घूमती है वह अंग कृत होने से इसी के अनुसार राशि-राशि चक्र की भी गोलाई है। पृथ्वी के झुकाव का कोण के कारण पृथक्-पृथक् अक्षांश में इन राशियों का उदय काल का प्रमाण बदलते रहता है। यह उदय काल उस स्थान के अक्षांश के चरखंडा (Ascensional differences), के अनुसार बदलते रहता है। अर्थात् राशियों का उदय काल का प्रमाण भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न होता है। जैसे कि भिन्न-भिन्न स्थानों का सूर्योदय और अस्त में अंतर पड़ता है उसी प्रकार प्रत्येक स्थान पर इन राशियों का उदय काल जानना आवश्यक है।

राशियों का उदय काल = किसी राशि का क्षितिज पर जब उदय होना आरंभः होता है और उस राशि का पूर्ण उदय होकर जब दूसरी राशि का उदय आरंभ होने वाला होता है उस पूर्ण समय को अर्थात् किसी राशि के पूर्ण उदय होने में जितना समय लगता है उसे राशियों का उदय काल कहते हैं। सब राशियों का उदय काल एक समान नहीं होता, भिन्न-भिन्न होता है जैसा कि आगे बताया जायेगा।

भूमध्य रेखा निरक्ष देश कहलाता है अर्थात् वहाँ पर अक्षांश शून्य ० होता है (अक्षांश कुछ नहीं होता) इसी प्रकार भूमध्य रेखा पर चरखंड भी शून्य होता है और क्रमशः अक्षांशों के अनुसार उसका काल बढ़ता है। जो स्थान एक ही अक्षांश पर हों तो उन स्थानों में किसी विशेष राशि का उदय प्रमाण या चरखंड वही रहेगा।

भूमध्य रेखा में जहाँ का चरखंड शून्य है यदि वहाँ का उदयकाल प्रत्येक राशियों का विदित हो जावे तो किसी भी अक्षांश पर उन राशियों का उदय प्रमाण जाना जा सकता है। और उसके लिये चरखंड भी जानने की आवश्यकता है।

भूमध्य रेखा में राशियों का उदय काल सायन मेष से और जहाँ शून्य अंश है गिना जाता है। इन राशियों का उदय काल भूमध्य रेखा का असु में दिया रहता है। भारतवर्षीय नाक्षत्र काल की इकाई को असु कहते हैं जो अंग्रेजी नाक्षत्र काल के ४ सेकन्ड के बराबर होता है। १ असु या प्राण यह १० विपल या ४ सेकन्ड का होता है। ६ असु का एक पल होता है। सुविधा के लिये उदयकाल पल में दिया रहता है।

लंकोदय—

भूमध्य रेखा पर जो राशियों का उदय काल है वहाँ का चरखंड शून्य होने के

कारण उदय काल में परिवर्तन नहीं होता। यहाँ पर जो राशियों का उदय काल है उसे लंकोदय कहते हैं।

आजकल को लंका (सीलोन) तो ७ अक्षांश उत्तर पर है। यह प्राचीन लंका नहीं है। यह पहिले भूमध्यरेखा पर समुद्र में थी ऐसा कहा जाता हैं। लंका का अक्षांश शून्य था। इसी कारण भूमध्य रेखा पर जो राशियों का उदयकाल होता है उसे लंकोदय कहते हैं। प्राचीन लंका समुद्र के गर्भ में चली गई होगी ऐसा अनुमान होता है। परन्तु उसका मान अभी तक ज्योतिष शास्त्र में चला जाता है, जिसमें लंका को निरक्ष देश (अक्षांश शून्य) कहा है।

राशियों का उदय प्रमाण (लंकोदय का)

चित्र संख्या ३

लंकोदय राशियों का उदयकाल

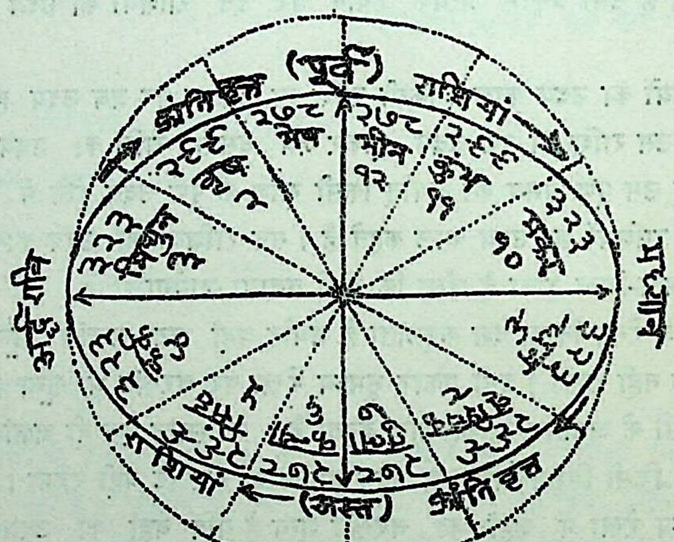

राशियाँ				असु में	पलों में	घड़ी पल में	प्राचीन लंकोदय पल	वेध उपलब्ध लंकोदय पल
१ मेष	६ कन्या	७ तुला	१२ मीन	१६७४	२७९	४–३९	२७८	२७९
२ वृष	५ सिंह	८ वृश्चिक	११ कुंभ	१७९५	२९९·१६	४–५९·१६	२९९	२९९
३ मिथुन	४ कर्क	९ धन-	१० मकर	१९३१	३२१·८३	५–२१·८३	३२३	३२२
—	+	+	—	५४००	९००	१५–०	९००	९००

भूमध्य रेखा पर प्रत्येक राशियों का ऊपर बताया है। इसमें मेष, कन्या, तुला और मीन का उदय १६७४ असु या २७९ पल या ४–३९ घ० प० है। यह वेध उपलब्ध लंकोदय है अर्थात् वेध से इतना उदय पल का प्रमाण विदित हुआ है। प्राचीन काल में इन राशियों का लंकोदय २७८ पल ही माना गया है। बहुधा प्राचीन लंकोदय का ही उपयोग कई ज्योतिषी करते हैं।

इसी प्रकार वृष, सिंह, वृश्चिक और कुंभ का एक ही है और शेष मिथुन, कर्क, धन और मकर का लंकोदय एक ही है।

इसको इस प्रकार समझना कि पूर्व क्षितिज पर मेष राशि के उदय होने से दूसरी राशि के उदय होने तक १६७४ असु या २७९ पल लगते हैं। इसके उपरान्त वृषराशि का उदय होता है। वह वृषराशि १७९५ असु या २९९ पल पूर्व क्षितिज पर रहती है। इसके उपरान्त मिथुन राशि का उदय होना आरंभ होता है। मिथुन राशि के पूर्ण उदय होने में १९३१ असु या ३२१–८३' अर्थात् ३२२ पल लगते हैं। इसी प्रकार शेष राशियों का उदय काल का प्रमाण समझना। यही उदय प्रमाण लंकोदय कहलाता है।

प्राचीन लंकोदय और वेध उपलब्ध लंकोदय में बहुत ही थोड़ा अंतर है। यदि सूक्ष्म गणित करना है तो नवीन प्राप्त (वेधोपलब्ध) लंकोदय का उपयोग करना। साधारण प्रकार से प्राचीन लंकोदय का ही उपयोग होता है।

भूमध्यरेखा पर इन राशियों का उदयकाल अर्थात् उदय प्रमाण एक सा क्यों नहीं है इसका कारण समझ लेना चाहिए। मेष से बड़ा वृष का, उससे बड़ा उदयकाल मिथुन का है। मिथुन के समान कर्क का है। उपरान्त कर्क से उदयकाल घटना आरंभ होता है। अर्थात् सिंह का कुछ कम और कन्या का और भी कम जाता है। इस प्रकार घट बढ़ होने का कारण चित्र संख्या ३ देखने से समझ में आ जावेगा।

पृथ्वी का सूर्य की परिक्रमा करने का मार्ग अंडाकार है। इसी को क्रांतिवृत्त-सूर्य के घूमने का मार्ग कहते हैं। इसी मार्ग से राशियों का उदय अस्त होता है अर्थात् इसी मार्ग से राशिचक्र घूमते दिखता है। राशियों का क्रम और जिस क्रम से उदय होता है चित्र संख्या ३ में बताया है। और तीर से राशियों के घूमने की दिशा बताई है।

इस मार्ग के देखने से समझ पड़ेगा कि यद्यपि प्रत्येक राशियाँ ३०–३०° दूरी पर हैं परन्तु अंडाकार मार्ग होने से राशियों के उदय होने में एक सा समय नहीं लगता। मेष मीन कन्या और तुला का एक सा उदयकाल क्यों है चित्र ३ में दिखता है। मेष से वृष जाने में अंडाका का अधिक भाग आ जाता है। वृष से मिथुन के जाने में सब से बड़ा भाग मार्ग में पड़ता है। इसी प्रकार प्रत्येक तीन-तीन राशियों का जुट है। अर्थात्

जितनी लम्बाई मिथुन की है उतनी कर्क, धन और मकर की है। कर्क से छोटी लम्बाई सिंह की है। सिंह से छोटा मार्ग कन्या का है। सिंह वृश्चिक कुंभ और वृष के मार्ग की लम्बाई एक सरीखी है। इसी गोलाई के कारण राशियों का उदय काल घटता बढ़ता है।

राशिचक्र स्थिर है परन्तु पृथ्वी की गति के कारण पृथ्वी स्थिर और राशिचक्र चलायमान दिखता है। राशियाँ पूर्व से उदय होकर पश्चिम को जाती दिखती हैं।

उदय काल में अन्तर और स्वोदय

उपरोक्त जो लंकोदय बताया है ज्यों ही वहाँ से अक्षांश बढ़ता है त्यों राशियों के उदय काल में अंतर पड़ता है।

प्रत्येक स्थान पर राशियों का उदय प्रमाण भिन्न-भिन्न होता है। प्रत्येक स्थान पर उस स्थान का जो उदयकाल होता है उसे स्वोदय कहते हैं। स्व + अपना, (अपना उदय) = स्थानिक उदयकाल।

लंकोदय से स्वोदय बनाया जाता है। अर्थात् इष्ट स्थान पर इन राशियों का उदयकाल, लंकोदय पर से गणित द्वारा निकाला जाता है।

प्रत्येक स्थान के स्थानिक उदयकाल (स्वोदय) बनाने के लिये पलभा या अक्षांश विदित होना चाहिए।

यदि किसी स्थान का पलभा विदित हो तो पलभा से उस स्थान का अक्षांश भी प्रगट हो सकता है। किसी स्थान का स्वोदय बनाने के लिये पलभा की आवश्यकता पड़ती है। यदि किसी स्थान का स्वोदय विदित हो गया तो स्वोदय से ठीक-ठीक लग्न (लग्न स्पष्ट) जाना जा सकता है।

पलभा अंगुल और व्यांगुल में होता है। ६ व्यांगुल का एक अंगुल होता है। व्यांगुल को प्रत्यंगुल या प्रति-अंगुल भी कहते हैं। ६० तत्प्रति अंगुल का एक प्रति अंगुल होता है।

पलभा

पलभा क्या है और कैसे निकालना ?

जिस दिन सायन सूर्य की राशि अंश कला विकला से शून्य हो अर्थात् जब सूर्य ठीक सम्पात बिन्दु पर हो (यह समय २१ मार्च को होता है जब दिन रात बराबर होता है) उस दिन मध्याह्न (दोपहर) समय में १२ अंगुल की एक शंकु (सलाई या लकड़ी) सम भूमि में किसी खुले स्थान में गाड़ दो। ठीक मध्याह्न समय में उस शंकु की जितनी छाया पड़े उसे अंगुल व्यांगुल में नाप लो। यही नाप उस स्थान की पलभा होगी।

अर्थात् सम्पात बिन्दु के मध्याह्न काल में १२ अंगुल की शंकु की छाया का जो नाप हो उसे पलभा कहते हैं। नापते समय नाप में समानता हो और अंगुल, प्रति अंगुल, तत्प्रति अंगुल तक ठीक-ठीक नाप लेकर लिख लेना चाहिए। एक लकड़ी में नाप का चिह्न नापने के लिये बनाकर रख लेना चाहिए। जो शंकु गड़ाई जावे सम भूमि में बिलकुल सीधी गड़ाई जावे जिससे उसके दोनों ओर ९०-९० अंश के कोण रहें।

यदि स्वस्थान के अतिरिक्त किसी दूर के स्थान की पलभा निकालने की आवश्यकता पड़ जावे तो उस निमित्त उसी स्थान पर जाना और इष्ट समय अर्थात् २१ मार्च तक समय की प्रतीक्षा करना, बहुत ही असुविधा जनक है। इस कारण अक्षांश पर से पलभा निकालने की रीति भी जान लेनी चाहिए जिसके सहारे किसी भी देश की पलभा निकाली जा सकती है।

किसी स्थान के अक्षांश जानने की आवश्यकता हो तो प्रारम्भिक ज्ञान खण्ड में बताई रीति से ध्रुवतारा की ऊँचाई नाप कर अपने स्थान का अक्षांश जान सकते हो या किसी स्कूल के या सरकारी नकशों को देखो जिसमें इष्ट स्थान दिया हो। प्रायः सब नकशों में अक्षांश और देशान्तर दिया रहता है उसको देखकर इष्ट स्थान के अक्षांश की खोज कर लो। अनेक स्थानों के अक्षांश और देशान्तर अंत में परिशिष्ट में दिये हैं उसमें से अक्षांश देख लो।

कितने अक्षांश पर कितनी पलभा होती है इसके जानने का चक्र आगे दिया है। चक्र में अक्षांश के केवल अंश की पलभा दी है। यदि इष्ट देश के अक्षांश में अंश के अतिरिक्त कला विकला भी हो तो नीचे बताई रीति के अनुसार गणित कर अपने अक्षांश की ठीक-ठीक पलभा जान सकते हो।

१. कोष्टक = चक्र का कोण

२. अल्प कोष्टक = छोटे अंक का कोष्टक जिसके अंक आगे के कोष्टक से कम हो
अर्थात् पिछला कोष्टक

३. ऐष्य ,, = अल्प कोष्टक के आगे का कोष्टक जिसका अंक पिछले कोष्टक से
बड़ा होता है अर्थात् आगे का कोष्टक का अंक।

इष्ट पलभा = (ऐष्य कोष्ट—अल्प कोष्टक) = कोष्टक अंतर (व्यांगुल में)

(अंतर × अक्षांश की शेष कलादि) ÷ ६० = आनुपातिक पलभा (व्यांगुल में)

अक्षांश के अंश से प्राप्त पलभा = ऐष्य कोष्टक अंक

प्राप्त पलभा + कलादि की अनुपातिक पलभा = इष्टपलभा अर्थात् अंश की पलभा तो चक्र में दी है केवल कला विकला की पलभा गणित से निकाल कर अंश के पलभा में जोड़ देने से इष्ट अक्षांश की पूरी पलभा निकल आवेगी।

जिस अक्षांश की पलभा दी है उसे अल्प कोष्टक की पलभा कहेंगे और उसके आगे के अक्षांश के कोष्टक को ऐष्य कोष्टक की पलभा कहेंगे। ऐष्य (आगे के अंक) से अल्प (प्राप्त अंक) को घटा देने से जो कुछ शेष बचे वह दोनों का अंतर हुआ।

अब गणित से निकालो कि १ अंश (६० कला) में इतना अंतर पलभा में पड़ता है तो इष्ट अक्षांश की शेष कला विकला में कितना अंतर पड़ेगा? जो उत्तर आवे उसे आनुपातिक पलभा (व्यांगुल में) समझो। उसे अल्प कोष्टक की पलभा में जोड़ दो तो पूरे अंश कलादि अक्षांश की पलभा निकल आयेगी।

२५°–२६′–३८″ अक्षांश की पलभा जाननी है।

अं–व्या–तत्प्र०

चक्र में देखा २५° की पलभा ५–३५–४२ है (अल्प कोष्टक)

२६° „ „ ५–५१–७ है (ऐष्य कोष्टक)

दोनों का अंतर

५–५१–७
—५–३५–४२
शेष ०–१५–२५

२५° की पलभा तो ज्ञात हुई अब शेष २६′–३८″ अक्षांश की पलभा और जाननी है। गणित किया ६०′ (१ अंश) में पलभा अंतर ० – १५ – २५ (अं० व्या० तत्प्र०) है तो शेष अक्षांश की २५′–३८″ में कितना होगा?

$$\frac{(१५–२५)\times(२६–३८)}{६०} = \frac{४१०–३५–२०}{६०} = \text{व्या० तत्प्र०}\; ६ – ५० = \text{आनुपातिक पलभा}$$

२६–३८
×१५–२५

	१३०	१९०
	५२	७६
१३०	१९०	
२६	३८	
३६०	१२२०	९५०÷६०
+२०	+१५	=५०
४१०	१२३५	
	=३५	

=४१०–३५–५०÷६०
व्या० तत्
=६ – ५०

६०)४१०–३५–५०(६ व्यांगुल
३६०
५०
तत्प्रति अंगुल

अं० व्या० तत्
२५° की पलभा = ५–३५–४२
+२६′–३८″ की = ६–५०
५–४२–३२

= अक्षांश २५°–२६′–३८″ की पलभा ५–४२–३२ हुई (अं. व्या० तत्)

गोमूमित्रका क्रम से गुणा करने की रीति

इसकी रीति अन्यत्र बताई है परन्तु सुगमता के लिये यहाँ भी समझा देते हैं।

जिन २ संख्याओं का गुणन फल निकालना है उनको एक के नीचे एक अंक ऊपर लिखे अनुसार रख कर दाहिनी छोर से गुणा करना आरम्भ करो। पहिले ३८ में २५ का गुणा करना है तो पहिले ३८ में ५ का गुणा किया तो १९० आया फिर २ का गुणा ३८ में किया तो ७६ आया। यह २ गुणक दहाई स्थान का है। इससे इकाई स्थान को छोड़कर दहाई स्थान पर अर्थात् ९ के नीचे ६ और सैंकड़ा स्थान पर १ के नीचे ७ लिखा। इस प्रकार गुणन फल ७६ को रखा। सबका जोड़ ९५० हुआ।

अब २६ × २५ का गुणा इसी प्रकार किया। २६ में पहिले ५ का गुणा किया १३० हुआ। फिर २६ में २ का गुणा किया ५२ हुआ। इकाई छोड़ कर दहाई स्थान पर ३ के नीचे २ और सैंकड़ा के स्थान पर १ के नीचे ५ रखा। इस प्रकार २५ का गुणा दोनों अंकों में हो चुका। अब १५ का गुणा करना शेष रहा। जैसा २५ का गुणा किया था उसी प्रकार १५ का गुणा करो।

३८ में १५ का गुणा किया जो कुछ गुणनफल आया उसे एक कोठा छोड़ कर बाईं ओर लिखना आरम्भ किया। ३८ में पहिले ५ का गुणा किया १९० हुआ। इसे दूसरे कोठे के नीचे रखा। उसके नीचे इकाई का स्थान छोड़ कर ३८ × १ का गुणन-फल ३८ लिखा। इस प्रकार ३८ से १५ का गुणनफल हो चुका। अब २६ और १५ का गुणा शेष रहा। उसके आगे उन दोनों का गुणन फल बाईं ओर पूर्वोक्त गुणाकर लिख दिया। अर्थात् २६ × ५ = १३० लिखा फिर २६ × १ = २६ एक दाहिना अंक छोड़ कर रख दिया। उपरांत सबको दाहिनी ओर से क्रमानुसार बाईं ओर जोड़ते जाना। जैसे पहिले कोठे का जोड़ ९५० हुआ, दूसरे का १२२०, तीसरे का ३९० हुआ। अब इन प्रत्येक अंकों को ६० से अधिक होने के कारण ६० से शोधन करो अर्थात् प्रत्येक में ६० का भाग देते जाओ। जो शेष बचे उसके नीचे रख दो और जो लब्धि आवे, बांई ओर के कोठे के अंक में जोड़ कर उसमें फिर ६० का भाग दो जो शेष आवे उसके नीचे रखो और जो लब्धि आवे उसे बाईं ओर के कोठे के योग में जोड़ दो। जैसा ऊपर दाहिनी ओर ९५० है। इसमें ६० का भाग दिया शेष २५ आया वह नीचे रख दिया। लब्धि १५ आई उसे बाईं ओर कोठे के योग अंक १२२० में जोड़ दिया। सब का जोड़ १२३५ हुआ। इसमें ६० का भाग दिया तो ३५ शेष रहा। लब्धि २० आई। लब्धि २० को बायें कोठे के योग अंक ३९० में जोड़ा तो ४१० हुआ। इस प्रकार (२६–२८) × (१५–२५) का गुणन फल ४१०–३५–५० हुआ।

इसी प्रकार आगे भी कई स्थान पर गोमूत्रिका क्रम से गुणा किया है और उदाहरण देखोगे तो अच्छी प्रकार समझ में आ जावेगा।

गुणनफल चक्र के सहारे इसके गुणा करने की सरल रीति आगे मिलेगी।

पलभा निकालने का दूसरा उदाहरण

नरसिंह पुर का अक्षांश २२° – ५७′ है यहाँ का पलभा निकालना है।

अक्षांश २२° = ४ – ५० – ५२ पलभा (अल्प)
२३° = ५ – ५ – ३८ ,, (ऐष्य)

अंतर ५ – ५ – ३८ ऐष्य
– ४ – ५० – ५२ अल्प
अंतर = ० – १४ – ४६

अंतर शेष कला अक्षांश की व्या. तत्

$$\frac{(१४ - ४६) \times ५७}{६०} = \frac{१४ - ४६ \times ५७}{६०} = \frac{८४१ - ४२}{६०} = १४ - १$$

अनुपातिक पलभा

```
   १४ – ४६          ६० ) २६२२ ( ४३         ६० ) ८४१ – ४२ ( १४
     × ५७                २४०    लब्धि          ६०        व्यांगुल
  ------------          -------              -------
   ९८ | ३२२              २२२                 २४१
   ७० | २३०              १८०                 २४०
  ------------          -------              -------
  ७९८ | २६२२ ÷ ६०         ४२                   १ तत्प्रति०
 + ४३ | = ४२              शेष
 -----
  ८४१
```

अं. व्या.

= ८४१ – ४२ ÷ ६०

२२° = ४ – ५० – ५२
+ ५७′ = ० – १४ – १
५ – ४ – ५३
= ५ – ५

∴ २२° – ५७′ अक्षांश का पलभा = ५ – ५ हुआ

पलभा चक्र (सारिणी)

अक्षांश	पलभा			अक्षांश	पलभा			अक्षांश	पलभा			अक्षांश	पलभा		
	अं.	व्या.	तत्		अं.	व्या.	तत्		अं.	व्या.	तत्		अं.	व्या.	तत्
१	०	१२	३४	१५	३	१२	५४	२९	६	३९	४	४३	११	११	२४
२	०	२५	९	१६	३	२६	२४	३०	६	५५	४१	४४	११	३५	२४
३	०	३७	४४	१७	३	४०	५	३१	७	१२	३६	४५	१२	०	०
४	०	५०	२१	१८	३	५३	५६	३२	७	२९	५३	४६	१२	२५	३७
५	१	३	०	१९	४	७	५५	३३	७	४७	३१	४७	१२	५२	५
६	१	१५	४०	२०	४	२०	०	३४	८	५	३८	४८	१३	१९	३४
७	१	२८	२३	२१	४	२६	२२	३५	८	२४	७	४९	१३	४८	१८
८	१	४१	१०	२२	४	५०	५२	३६	८	४३	५	५०	१४	१८	३
९	१	५४	०	२३	५	५	८३	३७	९	२	२५	५१	१४	४९	८
१०	२	६	५४	२४	५	२०	३१	३८	९	२०	३०	५२	१५	२१	३२
११	२	१९	५५	२५	५	३५	४२	३९	९	४३	१	५३	१५	५५	३०
१२	२	३३	०	२६	५	५१	७	४०	१०	४	९	५४	१६	३१	६
१३	२	४६	१२	२७	६	६	०	४१	१०	२५	५०	५५	१७	८	३४
१४	२	५९	२८	२८	६	२२	४८	४२	१०	६०	१८				

अक्षांश से पलभा निकालना

एक त्रिज्या = ३४३८। इस प्रकार इष्ट अक्षांश को ज्या Sine निकाले। ज्या लाग्रतमिक सारिणी के सहारे निकाली जाती है। फिर जो अक्षांश की ज्या होगी वह अक्षज्या होगी।

$$\text{कोटिज्या} = \text{लम्बज्या} = \sqrt{\text{त्रिज्या}^2 - \text{अक्षज्या}^2}$$

$$(१)\ \sqrt{\frac{\text{अक्षज्या} \times १२}{\text{त्रिज्या}^2 - \text{अक्षज्या}^2}} = \text{या}\ \frac{\text{अक्षज्या} \times १२}{\text{कोटिज्या}}$$

कोटिज्या = लम्बज्या = Natural cosine.

त्रिज्या = Radian

ज्या = Sine

अक्ष = अक्षांश

(२) दूसरी नई रीति—

अक्षांश की स्पर्शज्या Tangent × १२ = अंगुलात्मक पलभा

उदाहरण आगे दिया है।

किसी कोण की स्पर्शज्या निकालने की एक सारिणी होती है। यह त्रिकोणमिति का विषय है। इसी प्रकार अक्षज्या निकालने की सारिणी होती है। यहाँ अनावश्यक समझ कर नहीं दिया। क्योंकि यह विषय बहुत बड़ा है। यहाँ ऊपर की सारिणी से ही काम चल जायगा।

लाग्रतमिक की सारिणियों की पुस्तक अंग्रेजी पुस्तक विक्रेताओं के यहां मिल जाती है। इच्छा होने पर मोल ले लेना।

दोनों प्रकार से पलभा निकालने का उदाहरण

(१) २२° – ५७′ अक्षांश की ज्या Sine निकालनी है।

सारिणी से २२° – ३०′ = १३१५ ज्या
२६ – १५ = १५२० ,,
अंतर ३ – ४५ २०५′

२६° – १५′	१५२० ज्या
–२२ – ३०	–१३१५
३ – ४५ अंतर	२०५

= २२५′

इष्ट अक्षांश २२°–५७′
प्राप्त ,, २२–३०
अंतर ०–२७′

२२५′ में २०५ ज्या होती है तो २७′ की ज्या क्या होगी?

$$\frac{२०५ \times २७}{२२५} = \frac{५५३५}{२२५} = २४'$$

२२°–६०′ की ज्या = १३१५
शेष २७′ ,, ,, = २४
∴ २२-५७ ,, ,, = १३३९
= अक्ष ज्या
= अक्षांश की ज्या

१ त्रिज्या = ३४३८′ सदा होती है।

अक्ष ज्या

$$\frac{१३३९ \times १२}{\sqrt{त्रिज्या^२ - अक्षज्या}} = \frac{१६०६८}{\sqrt{३४३८^२ - १३३९^२}}$$

$$= \frac{१६०६८}{\sqrt{(३४३८ + १३३९) \times (३४३८ - १३३९)}} = \frac{१६०६८}{\sqrt{४७७७ \times २०९९}}$$

अ.प्रति०

$$= \frac{१६०६८}{\sqrt{९९५७०५५६}} = \frac{१६०६८}{३१५५} = ५–५ \text{ पलभा}$$

(२) दूसरी रीति का उदाहरण

२२°–५७′ की स्पर्श ज्या = '४२३४ सारिणी से प्राप्त

अ० व्या०

'४२३४ × १२ = ५'०८०८ = ५ – ५ पलभा

स्पर्शज्या = natural Tangent

ज्या, स्पर्शज्या आदि की सारिणी लेगार्थमिक टेबल नामी पुस्तक में दी है। यहाँ आवश्यक न होने से नहीं दी। इस विषय का ज्ञान त्रिकोणमिति के अध्ययन करने से होगा।

(३) पहिली रीति में दिया अन्य उदाहरण

(अक्षांश की ज्या × १२) ÷ अक्षांश कोटिज्या cosine

स्वाभाविक ज्या २२°–५७′ की = ३८९९

,, कोटिज्या ,, ,, = ९२०९

अ० प्रति०

$$\frac{३८९९ \times १२}{९२०९} = \frac{४६७८८}{९२०९} = ५ - ५ \text{ पलभा}$$

पलभा से अक्षांश निकालना

किसी स्थान की पलभा प्रगट हो तो उस स्थान का अक्षांश इस प्रकार निकालना।

$$\text{अक्षांश} = \underset{\text{अंशादि}}{(\text{पलभा} \times ५)} - \left(\frac{\text{पलभा}^२}{१०} \text{ अंशादि}\right)$$

इष्ट स्थान की पलभा में ५ का गुणा करो तो अंश होंगे इसमें से उसी पलभा का वर्ग निकाल कर उस का दशमांश निकालो जो अंशादि आवें उसे ५ से गुणा किये हुए पलभा में से घटा दो तो अक्षांश अंश कलादि प्राप्त होगा।

उदाहरण—

किसी स्थान का पलभा ५ है अक्षांश निकालना है।

$$(\text{पलभा } ५ \times ५) - \frac{५ \text{ पलभा}^२}{१०} = (५ \times ५) - \frac{(५ \times ५)}{१०} = २५ - \frac{२५}{१०}$$

$$= = २५ - २।। २२। \text{ अंश} = २२°\text{–}३०′ \text{ अक्षांश हुआ।}$$

जिस संख्या का वर्ग निकालना है उसके दाहिने कोने में सिर पर २ का अंक लिख देते हैं। जैसे ५ का वर्ग निकालना है तो $५^२$ लिखेंगे। इस का अर्थ यह है कि उसी संख्या का गुणा उसी संख्या से करना है जैसे $५^२ = ५ \times ५ = २५$ हुआ। वर्ग निकालने की रीति परिशिष्ट में दी है।

दूसरा उदाहरण

आ. व्या.

पलभा ५–४५ है अक्षांश निकालना है।

पलभा

$$[(\text{५–४५}) \times \text{५}] - \frac{(\text{५–४५})^{\text{२}}}{\text{१०}} = (\text{२८}^{\circ}\text{–४५}') - \frac{(\text{५–४५}) \times (\text{५–४५})}{\text{१०}}$$

$$= (\text{२८}^{\circ}\text{–४५}') - \frac{\text{३३–३–४५}}{\text{१०}} = (\text{२८}^{\circ}\text{-४५}') - (\text{३}^{\circ}\text{-१८}'\text{-२२}) = \text{२५}^{\circ}\text{-२६}'\text{-३८}''$$

५–४५
× ५
२५ | २२५ ÷ ६
+ ३ | = ४५
२८
= २८°–४५′

५–४५
५–४५
२२५ | २२५
| १८०
२५ | २२५ |
२५ | ४५० | २०२५ ÷ ६०
+ ८ | + ३३ | = ४५
३३ | ४८३ |
= ३
= ३३°–३′–४५″

अक्षांश
१०) ३३–३–४५ (३ अंश
३०
३ × ६०
१८० + ३
१०) १८३ (१८ कला
१०
८३
८०
३ × ६०
१८० + ४५
१०) २२५ (२२ विकला
२०
२५
२०

पलभा से स्वोदय बनाना

लग्न साधन करने के लिये स्वोदय बनाने की आवश्यकता पड़ती है। यह स्वोदय पलभा से बनाया जाता है। इसके बनाने की रीति यह है—

पलभा से पहिले चरखंड बनाया जाता है। प्रत्येक अक्षांश के अनुसार कहाँ कितना चरखंड होता है पहिले बता चुके हैं। यहाँ पलभा के अनुसार गणित द्वारा चरखंड बनाना बतलाते हैं।

चरखंड ३ होते हैं। प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरखंड। इनको बनाने के लिये पलभा में पृथक्-पृथक् तीन स्थान पर १०, ८ और $\frac{\text{१०}}{\text{३}}$ का गुणा करने से तीनों चरखंड बनते हैं।

(१) प्रथम चरखंड	(२) द्वितीय चरखंड	(३) तृतीय चरखंड
पलभा × १०	पलभा × ८	पलभा × $\frac{\text{१०}}{\text{३}}$

उदाहरण—किसी स्थान का पलभा ५ है तो चरखंड इस प्रकार होंगे।

(१) पलभा ५ × १० = ५० पल प्रथम चरखंड

(२) „ ५ × ८ = ४० पल द्वितीय चरखंड

(३) „ ५ × $\frac{१०}{३}$ = $\frac{५०}{३}$ पल = १६–४० तृतीय चरखण्ड

= १६ पल

दूसरा उदाहरण—जबलपुर की पलभा ५–८ है तो स्वोदय बनाने के लिये चरखण्ड निकालना है।

पलभा

चरखंड १ = (५–८) × १० = ५१–२० = ५१

„ २ = (५–८) × ८ = ४१–४ = ४१

„ ३ = (५–८) × $\frac{१०}{३}$ = $\frac{५१–२०}{३}$ = १७–६– = १७

यहाँ स्थूल रूप से ५१–२० को ५.१ मान लिया है।

प. वि.

यदि सुक्ष्म गणित को आवश्यकता है तो ५१–२० ही लेना।

तीसरा उदाहरण—काशी का पलभा ५–४५ है।

(१) चरखंड = (५–४५) × १० = ५७–३० = ५७

(२) „ = (५–४५) × ८ = ४६–० = ४६

(३) „ = (५–४५) × $\frac{१०}{३}$ = १९–१० = १९

चौथा उदाहरण—नरसिंह पुर की पलभा ५–५ है।

(१) = (५–५) × १० = ५०–५० = पहिला चरखंड = ५०–५० या ५१ पल

(२) = (५–५) × ८ = ४०–४० = दूसरा „ = ४०–४० या ४१ पल

(३) = (५–५) × $\frac{१०}{३}$ = $\frac{५०–५०}{३}$ = १६–५६ = तीसरा = १६–५६ या १७ पल

चरखंड से स्वोदय बनाने के लिए लंकोदय में चरखंड का संस्कार करना पड़ता है।

चरखंड से स्वोदय बनाना

लंकोदय पर से स्वोदय बनता है। लंकोदय में तीन-तीन राशियों का क्रमानुसार गुट रहता है। लंकोदय की पहिली ३ राशियों में क्रमानुसार पहिला, दूसरा और तीसरा चरखंड पृथक् २ घटाना पड़ता है। उपरान्त की ३ राशियां कर्क सिंह कन्या में पहिला, दूसरा और तीसरा चरखंड क्रमानुसार जोड़ना पड़ता है। इस प्रकार मेष से कन्या राशि तक का स्वोदय बन जाता है। शेष राशियों का उल्टे क्रम से वही स्वोदय

रहता है। जैसे जो कन्या का स्वोदय है वहां तुला का होगा। इसी प्रकार सिंह वृश्चिक का कर्क धन का, मिथुन मकर का, वृष कुंभ का और मीन मेष का एक ही स्वोदय होगा जैसे नीचे दिया है।

राशियाँ	लंकोदय पल	±चरखंड	राशियाँ	स्वोदय
१ मेष	२७८	– पहिला चरखंड	= १२ मीन	= ,,
२ वृष	२९९	– दूसरा ,,	= ११ कुंभ	= ,,
३ मिथुन	३२३	– तीसरा ,,	= १० मकर	= ,,
४ कर्क	३२३	+ तीसरा ,,	= ९ धन	= ,,
५ सिंह	२९९	+ दूसरा ,,	= ८ वृश्चिक	= ,,
६ कन्या	२७८	+ पहिला ,,	= ७ तुला	= ,,

उदाहरण—काशी में राशियों का उदय काल जानने के लिए काशी का स्वोदय बनाते हैं। काशी का पलभा ५ – ४५ है। चर खंड (१) ५७, (२) ४६, (३) १९ है जो ऊपर के उदाहरण में निकाल चुके हैं।

राशियाँ	लंकोदय	±चरखंड	काशी का स्वोदय	
मेष मीन	२७८	– ५७ (१) चरखंड	= २२१ पल	इसी स्वदेशीय
वृष कुंभ	२९९	– ४६ (२) ,,	= २५३ पल	उदय काल को
मिथुन मकर	३२३	– १९ (३) ,,	= ३०४ पल	स्वोदय कहते
कर्क धन	३२३	+ १९ (३) ,,	= ३४२ पल	हैं। अर्थात्
सिंह वृश्चिक	२९९	+ ४६ (२) ,,	= ३४५ पल	स्व स्थान का
कन्या तुला	२७८	+ ५७ (१) ,,	= ३३५ पल	शुद्ध उदय काल।

दूसरा उदाहरण—नरसिंहपुर २२° – ५७′, पलभा ५ – ५ है स्वोदय जानना है।

राशियाँ	लंकोदय	± चरखंड	नरसिंहपुर का स्वोदय	स्थूल स्वोदय
मेष मीन	२७८	– (५० – ५०) (१)	= २२७ – १०	= २२७ पल
वृष कुम्भ	२९९	– (४० – ४०) (२)	= २५८ – २०	= २५८ पल
मिथुन मकर	३२३	– (१६ – ५६) (३)	= ३०६ – ४	= ३०६ पल
कर्क धन	३२३	+ (१६ – ५६) (३)	= ३३९ – ५६	= ३४० पल
सिंह वृश्चिक	२९९	+ (४० – ४०) (२)	= ३३९ – ४०	= ३४० पल
कन्या तुला	२७८	+ (५० – ५०) (१)	= ३२८ – ५०	= ३२९ पल

इस दूसरे उदाहरण में चरखंड के दोनों अंक दिये हैं। परन्तु बहुधा ज्योतिषी लोग प्राय: एक ही अंक लेते हैं। अर्थात् ५० – ५० पहिला चरखंड है तो ५१ पहिला चरखंड मान लेंगे। इसी प्रकार दूसरा ४० – ४० चरखंड को ४१ और तीसरे १६–५६ चरखंड को १७ मान लेंगे। आधे से अधिक चरखंड के व्यांगुल को एक अंगुल मान लेते हैं और अल्प को छोड़ देते हैं। यहाँ उत्तर में :जो पल आया है उसके आधे से कम विपल को छोड़कर, आधे से अधिक विपल को एक मान कर बढ़ा देते हैं। परन्तु ध्यान रहे इस प्रकार घटाने बढ़ाने से सब राशियों के उदयकाल का यदि योग किया जाय तो (६० घड़ी × ६०) = ३६०० पल होना चाहिए। ६ राशियों के उदय काल का योग १८०० पल आना चाहिए। इससे कम या अधिक न हो जोड़ कर देख लेना चाहिए।

अब अक्षांश के चरखंड चक्र के अनुसार स्वोदय साधन करते हैं।

नरसिंहपुर का अक्षांश २२° – ५७′ है इसे २३° मानकर चरखंड देखा।

२३° के सामने पहिला	दूसरा	तीसरा	चरखंड दशमलव
५०·९०	४०·७२	१६·९६	में दिया है।

राशियाँ	वेधोपलब्ध लंकोदय	± चरखंड	स्वोदय	स्वोदय पल
मेष मीन	२७९	– ५०·९० (१)	= २२८·१	= २२८
वृष कुम्भ	२९९	– ४०·७२ (२)	= २५८·२८	= २५८
मिथुन मकर	३२२	– १६·९६ (३)	= ३०५·४	= ३०५
कर्क धन	३२२	+ १६·९६ (३)	= ३३८·९६	= ३३९
सिंह वृश्चिक	२९९	+ ४०·७२ (२)	= ३३९·७२	= ३४०
कन्या मीन	२७९	+ ५०·९० (१)	= ३२९·९०	= ३३०
				योग १८००

इसमें वेधोपलब्ध लंकोदय का उपयोग किया है।

यदि अक्षांश के अंश और कला के अनुसार पूरा स्वोदय बनाता है तो इस प्रकार बनाया जावेगा।

नरसिंहपुर के अक्षांश २२° – ५७′ का स्पष्ट स्वोदय वेधोपलब्ध लंकोदय के अनुसार निकालना है। सारिणी देखी।

	पहिला	दूसरा	तीसरा है।
२३° का चरखंड	५०·९०	४०·७२	१६·९६
२२° ,, ,,	४८·५०	३८·८०	१६·१६
१° में अंतर=शेष	२·४०	१·९२	०·८०

```
  २·४०
 × ५७
 १६८०
१२००
६०) १३६·८० ( २·२८
    १२०
    १६८
    १२०
     ४८०
     ४८०
       ०
```

तो ५७′ में कितना? $\frac{(२·४०) \times ५७}{६०}$ $\frac{(१·९२) \times ५७}{६०}$ $\frac{(०·८०) \times ५७}{६०}$

$= \frac{१३६·८}{६०}$ $\frac{१०९·४४}{६०}$ $\frac{४५·६}{६०}$

$= २·२८$ $= १·८२४$ $= ·७६$

	पहिला	दूसरा	तीसरा
२२° का =	४८·५०	३८·८०	१६·१६
५७° का +	२·२८	१·८२४	·७६
∴ २०°–५७′ का =	५०·७८	४०·६२४	१६·९२
चरखंड	पहिला	दूसरा	तीसरा

```
  १·९२
  × ५७
  १३४४
  ९६०
६०) १०९·४४ ( १·८२४
    ६०
    ४९४
    ४८०
     १४४
     १२०
      २४०
      २४०
        ०
```

```
   ०·८
   × ५७
६०) ४५·६ ( ·७६
    ४२०
     ३६०
     ३६०
       ०
```

राशियाँ	लंकोदय ±	चरखंड		स्वोदय	
मेष मीन	२७९ —	(५०·७८)	(१)	= २२८·२२	= २२८ पल
वृष कुंभ	२९९ —	(४०·६२४)	(२)	= २५८·३७६	= २५८ ,,
मिथुन मकर	३२३ —	(१६·९२)	(३)	= ३०६·०८	= ३०६ ,,
कर्क धन	३२३ +	(१६·९२)	(३)	= ३३९·९२	= ३४० ,,
सिंह वृश्चिक	२९९ +	(४०·६२४)	(२)	= ३३९·६२४	= ३३९ ,,
कन्या तुला	२७९ +	(५०·७८)	(१)	= ३२९·७८	= ३२९ ,,
				योग	१८००

इस प्रकार से दोनों रीतियों से गणित कर के देख लिया। केवल १–२ पल का अंतर पड़ता है। इस कारण २२°–५७′ अक्षांश को २३° मान कर चरखंड निकालने से सुगम है।

दोनों प्रकार के लंकोदय से स्वोदय निकालने में भी विशेष कोई अन्तर नहीं पड़ता। यदि १–२ पल का अन्तर आया तो इस में कोई हानि नहीं है। परन्तु जहाँ सूक्ष्म रूप से ही गणित करना है तो चरखंड भी सूक्ष्म रूप से निकाल कर उसी के अनुसार स्वोदय बनाना।

—: ० :—

अध्याय ५

इष्ट काल साधन

शुद्ध लग्न निकालने के लिये शुद्ध इष्ट काल की आवश्यकता है। इष्ट काल शुद्ध होगा तो शुद्ध कुंडली बनेगी।

पहिले बता चुके हैं कि आजकल जो घड़ी का टाइम देखकर जन्म समय लिख लिया जाता है यदि उसी समय के अनुसार लग्न साधन की जावे तो अशुद्ध हो जायगी।

यदि अपना समय स्टेन्डर्ड टाइम में है तो उसे स्व स्थान का समय बनाने के लिये देशान्तर संस्कार और बेलान्तर संस्कार करना पड़ता है जिसके विषय में पहिले समझा चुके हैं। इसके उपरान्त समय शुद्ध होने पर लग्न साधन करना चाहिए। धूप घड़ी का जो समय है वही शुद्ध स्थानिक समय कहलाता है।

इष्ट काल के विषय में प्रारंभिक ज्ञान खंड में समझा चुके हैं। परन्तु महत्त्व का विषय होने से इसे फिर समझाते हैं।

सूर्योदय के उपरान्त जन्म समय तक या किसी प्रश्न के पूछने के समय तक जितने घड़ी पल आदि व्यतीत हो चुके हैं उस समय को इष्टकाल कहते हैं। अर्थात् इष्ट समय का काल घड़ी पल विपल के अनुसार जो व्यतीत हो चुका है वही इष्टकाल है।

घड़ियों का समय घंटा मिनट में मध्य रात्रि से गिना जाता है परन्तु इष्टकाल सूर्योदय के उपरान्त घड़ी पल में गिना जाता है। जैसे सूर्योदय होने पर यदि घंटा में ६ बजा होगा तो उस समय इष्ट काल घड़ी पल शून्य होगा। इसके उपरान्त एक दो आदि घड़ियों की गिन्ती इष्टकाल तक होगी। इस कारण घंटा मिनट में समय लिखा हो तो उसमें से सूर्योदय का समय घटा देना चाहिए। दोपहर के उपरान्त मध्यरात्रि

तक जितने घंटा समय और हुआ हो उसे भी उसी घंटा मिनट में जोड़ देना चाहिए। यदि आधी रात के उपरान्त भी इष्टकाल हो तो उस समय को भी उसी में जोड़ देना चाहिए। फिर जितने घंटा मिनट का सब समय हुआ हो उसके घड़ी पल बनालो तो इष्टकाल वन जायगा। घड़ी के समय को रेलवे टाइम के अनुसार अर्थात् १२ बजे के वाद १३,१४ बजे आदि बनालो तो और अच्छा है।

इष्टकाल यदि मध्याह्न (१२ वजे) का है तो दिनमान को आधा करने से इष्टकाल प्राप्त होगा।

यदि सूर्यास्त का जन्म है तो दिनमान ही (जो पंचांग में दिया रहता है) इष्टकाल होगा।

यदि ठीक अर्द्ध रात्रि का जन्म है तो रात्रिमान को आधा कर उसमें दिनमान जोड़ दो तो इष्टकाल निकल आयेगा।

इसी प्रकार विना सूर्योदय या अस्त का समय जाने इष्टकाल को दिनमान या रात्रिमान पर से निकाल सकते हो।

घ० प०
जैसे दिनमान २९–२८ = ६०–(२९–२८) = ३०–३२ रात्रिमान

घ० प०
दिनमान ÷ २ = १४–४४ दिनार्द्ध (मध्याह्न)
रात्रिमान ÷ २ = १५–१६ = रात्रि अर्द्ध
मान लो १०॥ बजे दिन का जन्म है। (१२–१०॥) = १॥ घंटा मध्याह्न के

घ० प०
प्रथम जन्म हैं। १॥ घंटा = ३–४५

घ० प०	घ० प०
दिनार्द्ध १४–४४	३ – ४५ यह दिनार्द्ध से घटा दो तो इष्ट प्राप्त होगा। यहां
–३ ४५	दिनार्द्ध में घटाने से १०–५९ प्राप्त हुआ।
शेष १०–५९	
इष्ट काल	

मान लो २॥ बजे मध्याह्न के बाद का जन्म है तो दिनार्द्ध में २॥ घंटा के घड़ी पल बना के जोड़ दो क्योंकि यह समय मध्याह्न के पश्चात् का है। २॥ घंटा के

दिनार्द्ध १४–२४	घ० प० घ० प०
+ ६–१५	६–१५ हुऐ इसे जोड़ा तो इष्ट २०–५९ हुआ
इष्ट = २०–५९	

दिनमान २९–२८	यदि अर्द्ध रात्रि को १२ बजे जन्म हुआ है तो दिन में रात्रि
रात्रि अर्द्ध + १५–१६	घ० प०
इष्ट = ४४–४४	अर्द्ध जोड़ा तो इष्ट ४४–४४ हुआ

अर्द्ध रात्रि = ४४–४४	या दिनार्द्ध १४–४४	यदि २ बजे रात का जन्म है तो २ घंटा के ५ घड़ी, अर्द्ध रात्रि के इष्ट में जोड़ा या दिनार्द्ध + ३० में ५ घड़ी जोड़ा तो जन्म का इष्ट हुआ
+ ५	+ ३०	
इष्ट = ४९–४४	४४–४४	
	+ ५	
	इष्ट ४९–४४	

दिनार्द्ध + ३० = मिश्रमान होता है यही अर्द्ध रात्रि का इष्ट है।

दिनमान से सूर्योदय जानने को रात्रिमान घटीपल में ५ का भाग दो तो सूर्योदय का घंटा मिनट प्राप्त होगा। दिनमान घड़ी में ५ का भाग दो तो सूर्यास्त घंटा प्राप्त होगा

	घ० प०		घ० मि० से०	
दिनमान	२९–२८	÷ ५ =	५–५३–३६	१२ घंटे में से सूर्यास्त घटा देने से सूर्योदय होगा।
रात्रिमान	३०–३२	÷ ५ =	६–६–२४	
		योग	१२–०–०	

मान लो उपरोक्त दिनमान और अस्त है। जन्म ५–५३–३६ (घ० मि० से०) संध्या को है तो सूर्यास्त के १ घंटा = २॥ घड़ी उपरान्त जन्म हुआ।

दिनमान २९–२८	इसे दिनमान में जोड़ा तो ३१–५८ इष्ट हुआ।
+ २–३०	
इष्ट = ३१–५८	

इष्ट निकालने का दूसरा प्रकार

इष्ट = (जन्म समय घंटा मिनट–सूर्योदय घंटा) × २॥ = इष्ट काल घड़ी पल

जन्म समय घंटा मिनट रेलवे टाइम के अनुसार १२ से १३–१४ आदि २४ बजे तक लिख लो। और आधीरात के उपरांत जन्म हो तो जन्म तक बारा के बाद रात्रि के जितने घंटा हुए हों २४ में जोड़ दो तो घंटा के अनुसार जन्म का समय निकलेगा। जैसे किसी का जन्म २ बजे रात का है। अर्द्ध रात्रि तक २४ घंटा इसके उपरान्त २ बजे रात का जन्म है तो २४ + २ घंटा = २६ घंटा पर जन्म समझो। अब इस में से सूर्योदय का घंटा घटा दो तो सूर्योदय से जन्म तक कितने घंटे का समय हुआ निकल आयगा। मान लो उस दिन ६ बजे सूर्योदय हुआ था तो (घंटा २६–६) = २० घंटा समय हुआ। इसके घड़ी पल बनाने को २॥ से गुणा किया तो २० × २॥ = ५० घड़ी इष्ट काल हुआ।

या सूर्योदय के कुछ पहिले का जन्म है अर्थात् सूर्योदय के समीप का जन्म है तो जितने घंटा शेष रात हो उसे २४ घंटा में से घटा दो तो इष्ट घंटा जन्म का निकलेगा।

जैसे २ बजे रात का जन्म है। ६ बजे सूर्योदय होगा (६–२) = शेष ४ घंटा (घं. घंटा) रात और

बची। दिन रात के २४ घंटा होते हैं। (२४ घंटा – ४ घंटा) = २० घंटा=२० × २॥ = ५० घड़ी इष्ट काल हुआ।

मान लो १० बजे रात का जन्म है तो रेलवे टाइम के अनुसार १२ + १२=२२ बजे रात का जन्म हुआ। सूर्योदय का समय यदि ६ घंटा है तो इसमें से ६ घटा दिये (२२–६)=१६ घंटा बचे। १६ घंटा × २॥ = ४० घड़ी इष्ट काल हुआ।

यदि ११ बजे दिन का जन्म है तो (११ – सूर्योदय ६ घंटा) = ५ घंटा

घ० प०

= ५ × २॥ = १२–३० इष्ट हुआ।

ऊपर के उदाहरण में सूर्योदय का समय ६ बजे लिया है। परन्तु उस दिन का ठीक सूर्योदय का समय चर सारिणी से निकाल कर जो स्थानिक सूर्योदय का स्पष्ट समय हो उस सूर्योदय के समय को इष्ट घंटा से घटा कर जो शेष घंटा बचे उसके घड़ी पल बनाकर इष्टकाल बना लेना चाहिए। इसी कारण सूर्योदय का समय शुद्धता पूर्वक निकालने की रीति पहिले बता चुके हैं। जब जन्म समय घंटा मिनट में स्टेन्डर्ड टाइम के अनुसार हो तो उसमें देशान्तर संस्कार और वेलान्तर संस्कार कर फिर इष्ट काल बनाना चाहिए।

स्टेन्डर्ड टाइम प्रचलित होने के पहिले का जन्म हो अर्थात् १–७–१९०५ ई० के पहिले का जन्म हो तो स्टेन्डर्ड टाइम का संस्कार नहीं होगा।

जैसे १८ मार्च सन् १८९० ई० में नरसिंहपुर में १२॥ बजे दिन का जन्म है। इसका इष्ट काल बनाना है।

घ० मि० से०

नरसिंहपुर का देशान्तर ७९°–११′ (५–१६–४४) पूर्व अक्षांश २२°–५७′ उत्तर है। इस दिन का सूर्योदय निकाल कर इष्ट काल बनाना है।

रा

पंचांग में देखा प्रातः रवि स्पष्ट ११–५°–२४′–५९″ है। इसको सायन सूर्य बनाने को अयनांश निकाला। सम्वत् १९४६ शाके १८११ का जन्म है।

शाका १८११	रा
–४४४	प्रातः निरयन सूर्य ११–५°–२४′–५९″
६०)१३६७(२२ अंश	+ अयनांश २२ –४७
१२०	सायन सूर्य = ११–२८–११–५९
१६७	इसकी क्रांति निकालने को क्रांति
१२०	सारिणी देखा
४७ कला	
= अयनांश २२°–४७′	

रा

सायनसूर्य ११–२८° = ०°४७′–५४″ क्रांति तुलादि सूर्य है तो

दक्षिण क्रांति हुई।

= इसे १° मान लिया

अक्षांश २२°–५७′ को २३° मान लिया। अब क्रांति चर सारिणी देखो

मि० से०

२३ अक्षांश के सामने १° क्रांति का चर १–४२ है

सूर्योदय = ६ घंटा + चर मिनट (दक्षिण क्रांति होने से +)

१–४२

= ६–१–४२ घंटा

जन्म घंटा–मि०

१२–३०

– सूर्योदय – ६– १–४२

६–२८–१८

१८ मार्च का वेलान्तर } –८

=६–२०–१८ घंटा

घंटा० मि० से०

६–२०–१८

× २॥

१५–५०–४५

इष्ट घटी

घ० प० वि०

= इष्ट १५–५०–४५

दूसरा उदाहरण—

घंटा मि.

सम्वत् १९९९ शाके १८६४ जन्म १० – ५४ बजे रात दिनांक, १ अक्तूबर १९४२ ई० स्थान नरसिंहपुर अक्षांश २२° – ५७′ उत्तर देशान्तर ७९° – ११′ स्टेन्डर्ड

रा

देशान्तर ८२° – ३०′ सूर्य ५ – १४° – २८′ – ६

पूर्व

स्टेन्डर्ड देशान्तर ८२° – ३०′ पूर्व

नरसिंहपुर का,, ७९ – ११ पूर्व

अन्तर = ३ – १९

मि. से.

= १३ – १६ ऋण

पूर्व

अपने स्थान का देशान्तर स्टेन्डर्ड देशान्तर से कम है इससे ऋण।

मि. से.

∴ देशान्तर संस्कार १३ – १६ ऋण

शाका १८६४
− ४४४
६०) १४२० (२३°
१२०
२२०
१८०
४०

= अयनांश २३ − ४०

रा
रवि ५ − १४° − २८′ − ९″
+ अयनांश २३ − ४०
सायन सूर्य = ६ − ८ − ८ − ९

रा
सायन सूर्य ६ − ८° की क्रांति सारिणी में देखा

रा
सायन सूर्य ६ − ८° = क्रांति ३° − १०′ − ३६″
,, ६ − ९ = ,, ३ − ३४ − १८
अन्तर ३° − ३४′ − १८″
− ३ − १० − ३६
० − २३ − ४२

६०′ में २३′ − ४२″ अंतर तो सा. सूर्य की ८′ में कितना ? २३ − ४२ × २

$$\frac{२३ - ४२ \times \overset{२}{\cancel{८}}}{\underset{१५}{\cancel{६०}}} = \frac{४७ - २२}{१५} = ३' - ९'' +$$

१५) ४७ − २४ (३′
४५
२ × ६०
१२० + २४
१५) १४४ (९″
१३५
९

रा
६ − ८° की क्रांति ३° − १०′ − ३६″
८′ ,, ,, + ३ ९
३ − १३ − ४५ = दक्षिण क्रांति

रा (सूर्य तुलादि होने से)

$\therefore$ ६ – ८° – ८′ की क्रांति = ३ – १३° – ४५ दक्षिण

मि. से.

२३° अक्षांश में ३° क्रांति का चर = ५ – ६

४° ,, ,, = ६ – ४८

अन्तर १ – ४२ +

६ – ४८

अन्तर ५ – ६

१ – ४२

६०′ में १ – ४२ अन्तर तो शेष क्रांति १३′ – ४५″ = १४′ में कितना

$$\frac{(१ - ४२) \times \overset{७}{\cancel{१४}}}{\underset{३०}{\cancel{६०}}} = \frac{११ - ५४}{३०} = २३ \text{ सेकन्ड}$$

१ – ४२
× ७
३०) ११ – ५४ (०
× २
२३ – ४८
मि. से.
= ० – २३

मि. से.
३° क्रांति का चर ५ – ६
१४′ ,, + २३
५ – २९

$\therefore$ ३° – १४ क्रांति का चर ५ – २९

मि.

सूर्योदय = ६ घंटा + ५ – २९ चर दक्षिण क्रांति होने से +

घं. मि. से.
= ६ – ५ – २९

	घंटा मि.	
जन्म समय	१० – ५४	रात
	+ १२	
जन्म समय नया=	२२ – ४५	
१ घं. बढ़ा समय था इससे घटाया	– १ – ०	
पुराना समय=	२१ – ५४	
वेलान्तर – १ अक्तूबर का	+ १०	
	२२ – ४	
देशान्तर संस्कार–	१३ – १६	
	२१ – ५० – ५४	
– सूर्योदय –	६ – ५ – २९	
= जन्म घंटा =	१५ – ४५ – १५	

	घंटा
जन्म	१५ – ४५ – १५
	× २॥
जन्म घड़ी	३९ – २३ – ७॥
	घड़ी प. वि.
= इष्ट काल	३९ – २३ – ७॥

घड़ी घन्टा परिवर्तन

घड़ी पल के घंटा मिनट बनाने और घंटा मिनट के घड़ी पल बनानें का बहुत काम पड़ता है। घड़ी पल में २ का गुणा कर ५ का भाग देने से घंटा मिनट बन जाता है और घंटा मिनट में ५ गुणा कर २ का भाग देने से घड़ी पल बन जाता है। परन्तु सुगमता के लिये और समय की बचत के लिए इस प्रकार का एक चक्र बनाकर रख लेना चाहिए जिसे उपयोग करना चाहिए।

घंटा से घड़ी बनाना

घंटा मिनट सेकन्ड	दिन घड़ी पल	घड़ी पल वि०	पल वि० अनु०	घंटा मिनट सेकन्ड	दिन घड़ी पल	घड़ी पल वि०	पल वि० अनु०
१	०	२	३०	३१	१	१७	३०
२	०	५	०	३२	१	२०	०
३	०	७	३०	३३	१	२२	३०
४	०	१०	०	३४	१	२५	०
५	०	१२	३०	३५	१	२७	३०
६	०	१५	०	३६	१	३०	०
७	०	१७	३०	३७	१	३२	३०
८	०	२०	०	३८	१	३५	०
९	०	२२	३०	३९	१	३७	३०
१०	०	२५	०	४०	१	४०	०
११	०	२७	३०	४१	१	४२	३०
१२	०	३०	०	४२	१	४५	०

घड़ी के घंटा बनाना

घड़ी पल विपल	घंटा मिनट सेकन्ड	मिनट सेकन्ड	घड़ी पल विपल	घंटा मिनट सेकण्ड	मिनट सेकन्ड
१	०	२४	३१	१२	२४
२	०	४८	३२	१२	४८
३	१	१२	३३	१३	१२
४	१	३६	३४	१३	३६
५	२	०	३५	१४	०
६	२	२४	३६	१४	२४
७	२	४८	३७	१४	४८
८	३	१२	३८	१५	१२
९	३	३६	३९	१५	३६
१०	४	०	४०	१६	०
११	४	२४	४१	१६	२४
१२	४	४८	४२	१६	४८

१३	०	३२	३०	४३	१	४७	३०
१४	०	३५	०	४४	१	५०	०
१५	०	३७	३०	४५	१	५२	३०
१६	०	४०	०	४६	१	५५	०
१७	०	४२	३०	४७	१	५७	३०
१८	०	४५	०	४८	२	०	०
१९	०	४७	३०	४९	२	२	३०
२०	०	५०	०	५०	२	५	०
२१	०	५२	३०	५१	२	७	३०
२२	०	५५	०	५२	२	१०	०
२३	०	५७	३०	५३	२	१२	३०
२४	१	०	०	५४	२	१५	०
२५	१	२	३०	५५	२	१७	३०
२६	१	५	०	५६	२	२०	०
२७	१	७	३०	५७	२	२२	३०
२८	१	१०	०	५८	२	२५	०
२९	१	१२	३०	५९	२	२७	३०
३०	१	१५	०	६०	२	२०	०

१३	५	१२	४३	१७	१२
१४	५	३६	४४	१७	३६
१५	६	०	४५	१८	०
१६	६	२४	४६	१८	२४
१७	६	४८	४७	१८	४८
१८	७	१२	४८	१९	१२
१९	७	३६	४९	१९	३६
२०	८	०	५०	२०	०
२१	८	२४	५१	२०	२४
२२	८	४८	५२	२०	४८
२३	९	१२	५३	२१	१२
२४	९	३६	५४	२१	३६
२५	१०	०	५५	२२	०
२६	१०	२४	५६	२२	२४
२७	१०	४८	५७	२२	४८
२८	११	१२	५८	२३	१२
२९	११	३६	५९	२३	३६
३०	१२	०	६०	२४	०

जैसे

	दिन घड़ी पल वि० – अनु०
११ घंटा =	० – २७ – ३०
२६ मिनट =	१ – ५ – ०
४७ सेकन्ड =	१ – ५७ – ३०
	= ० – २८ – ३६ – ५७ – ३०

	घंटा मिनट सेकन्ड
२४ घड़ी =	९ – ३६ – ०
५१ पल =	२० – २४
२३ विपल =	९ – १२
	= ९ – ५६ – ३३ – १२

अध्याय ६

ग्रहसाधन

पंक्ति = पंचांगस्थ ग्रह

चालन = इष्ट काल और पंक्ति के भीतर के समय का गति के अनुसार साधन किया हुआ ग्रह।

चालन ± होता है। पंक्ति के आगे का साधन करना है तो धन, और पहिले का साधन करना है तो चालन ऋण होता है परन्तु वक्री ग्रह में इसके विरुद्ध होता है।

पंचांग में प्रत्येक पक्ष में दो बार मिश्रकाल या प्रातःकाल का (जब इष्ट शून्य होता है) ग्रह स्पष्ट दिया रहता है और उसके नीचे उस ग्रह की गति भी दी रहती है। किसी-किसी पंचांग में दैनिक स्पष्ट भी दिया रहता है।

पंचांग में दिये हुए ग्रह पर से इष्टकाल का ग्रह स्पष्ट करने को ग्रह साधन कहते हैं। पंचांग में दिये हुए ग्रह के प्रस्तार (ग्रह स्पष्ट) को पंक्ति कहते हैं। पंचांग में दिये हुए ग्रह स्पष्ट का समय और इष्टकाल (जिस समय का ग्रह साधन करना है) के बीच के समय का जो अंतर है, उतने अंतर का ग्रह स्पष्ट करने को चालन कहते हैं। यह चालन + या — होता है। पंचांग की पंक्ति के पहिले का इष्ट काल हो तो चालन – (ऋण) और पंक्ति के उपरान्त का इष्टकाल हो तो चालन + होता है। क्योंकि यदि पहिले का इष्ट है तो पंक्ति के ग्रह स्पष्ट में से घटाने से और पंक्ति के बाद का इष्टकाल है तो आगे जोड़ने से इष्टकाल का ग्रह बन जायगा। परन्तु वक्री ग्रह में इसके विरुद्ध क्रिया करनी पड़ती है।

ग्रह की गति पंचांग में ६० घड़ी की दी रहती है अर्थात् ६० घड़ी (२४ घंटा) में कितना वह ग्रह चलता है वही उसकी गति कला विकला में दी रहती है। इस प्रकार पंचांग में दी हुई गति से, इष्ट और पंक्ति के बीच के समय के अंतर की गति निकालनी होती है। और चालन धन ऋण जैसा हो पंक्तिस्थ ग्रह में जोड़ या घटाकर इष्ट काल का ग्रह स्पष्ट बना लेते हैं।

जो ग्रह वक्री होता है उसका चालन उल्टा करना पड़ता है। अर्थात् + के स्थान में ऋण और ऋण के स्थान में धन करना पड़ता है। राहु और केतु सदा वक्री रहते हैं इस कारण वक्री ग्रह के अनुसार इन का भी चालन होगा अर्थात् पंक्तिस्थ ग्रह के आगे अपना इष्ट है तो घटाना और पंक्ति के पहिले इष्ट है तो चालन जोड़ना पड़ेगा।

ग्रह की गति कला विकला में ६० घड़ी की दी रहती है उस पर से त्रैराशिक

से चालन के समय की गति निकालनी पड़ती है। जैसे ६० घड़ी में इतने कला विकला गति है तो इष्ट काल में कितनी होगी ? जो उत्तर आवेगा वह चालन ± होगा। उसे पंक्तिस्थ ग्रह स्पष्ट में ± करने से इष्ट काल का ग्रह स्पष्ट हो जायगा।

गति साधन करने के लिये जो त्रैराशिक करना पड़ेगा उसके लिये कुछ गुरु स्मरण रहे तो गणित में सरलता होगी।

गुरु—

(१) ६० घड़ी में जितनी कला गति १ घड़ी में उतनी ही विकला होगी।
(२) ,, ,, ,, विकला ,, ,, ,, ,, प्रति विकला ,,
(३) ,, ,, कला विकला ,, ,, ,, ,, विकला प्रति विकला ,,
(४) ६० पल (१ घड़ी) में जितनी विकला १ पल में उतनी ही प्रति विकला।
(५) ,, ,, ,, ,, प्रति विकला और प्रतिविकल ,, ,, ,, प्रति विकला और तत्प्रति विकला

चालन बनाने का उदाहरण।

मान लो दिनांक १–१०–१९४२ ई० नरसिंहपुर में आश्विन कृष्ण सप्तमी सम्वत् १९९९ शाका १८६४ गुरुवार इष्ट (घं० प० वि०) ३९–२२–१२ पर जन्म है।

जबलपुर का विक्रम विजय पंचांग देखा जिसमें इष्ट काल के समीप का पंक्तिस्थ ग्रह स्पष्ट इस प्रकार है।

पंक्ति = आश्विन कृष्ण ८ शुक्रवार मिश्रमान (घ० प०) ४५–५९

ग्रह	रा अं० क० वि	गति	
सूर्य	५–१५–२७–१६	५९′–१०″	
चंद्र	२–२०–१४–४५	२१ –१७	
मंगल	५–१६–२५– २	३९ – ६	
बुध	५–२४–२३–४८	१२ –४७	
गुरु	३– १–१०–१६	७ –४२	
शुक्र	५– ७–३३–३२	७४ –२४	
शनि	१–२०–२०–५५	० –३२	वक्री
राहु	४–१२–५८– ६	३ –११	
केतु	१०–१२–५८– ६	३ –११	

गुरुवार = ५ वार ⎫ इतवार से
शुक्रवार = ६ वार ⎭ गिना

	वार घटी पल विपल
पंक्ति का =	६–४५–५९– ०
इष्ट का =	५–३९–२२–१२
अंतर =	१– ६–३६–४८

चालन ऋण

पंक्ति का दिन शुक्रवार है। रविवार, आदि वार से गिना तो छटा वार हुआ इसकारण वार में ६ और मिश्रमान (घ० प०) ४५–५९ होने से घड़ी पल

में ४५–५९ पंक्ति में लिखा। अपना इष्टवार गुरुवार है। इतवार से गिना तो पांचवाँ हुआ इस कारण इष्ट का वार ५ रखा और इष्ट घड़ी ३९–२२–१२ होने से इष्ट घड़ी पल में ३९–२२–१२ लिखा और दोनों का अंतर निकालने पर जो आया उसे चालन कहेंगे।

पंक्ति आगे है इष्ट पीछे है। इष्ट के आगे पंक्ति होने से चालन ऋण हुआ। अर्थात् पंक्ति में से चालन की गति घटानी पड़ेगी तब ग्रह स्पष्ट होगा।

दूसरा उदाहरण चालन निकालने का—

पंक्तिस्थ ग्रह आश्विन कृष्ण ८ शुक्रवार मिश्रकाल ४५–५९ है
मान लो अपना इष्ट ,, ,, २ शनिवार इष्ट ५५–४० है

पंक्ति	वार०	घटी	प०	वि०
	६	४५	५९	०
इष्ट	७	५५	४०	०
अंतर	५	५०	१९	०
	चालन ऋण			

शुक्रवार होने से वार ६ और मिश्रकाल ४५–५९ होने से घटी पल ४५–५९ हुआ। इष्ट वार शनिवार सातवाँ है। इससे वार के नीचे ७ रखा और इष्ट ५५–४० घटी पल लिखा। यहाँ पंक्ति अधिक है अर्थात् पंक्ति के पहिले अपना इष्ट काल है। इष्ट काल द्वितीया का है, पंक्ति अष्टमी की है। इष्ट से पंक्ति अधिक होने से अंतर चालन ऋण हुआ। यहाँ ६ वार में ७ वार घटाने से नहीं घटता तो ऊपर के ३ वार में (७ वार होते हैं इससे) ७ वार और जोड़ा तो १३ वार हुए। १३ में से ७ घटाया तो ५ वार बचे। इस प्रकार घटाने से चालन ऋण ५ – ५० – १९ (वार० घ० प०) हुआ।

जहाँ चालन ऋण होता है वहाँ पंक्ति से इष्ट घटाना और जहाँ चालन धन होता है वहाँ इष्ट में से पंक्ति घटानी पड़ती है। घटाने के पहिले ही विदित हो जाता है कि चालन धन है या ऋण। पंक्ति के पहिले समय का ग्रह स्पष्ट करना है तो चालन ऋण होगा। परन्तु राहु केतु और वक्री ग्रह में इसके विरुद्ध होता है।

तीसरा उदाहरण—

इष्ट आश्विन कृष्ण १० रविवार इष्ट काल ३०–४८
पंक्ति ,, ,, ८ शुक्रवार मिश्रमान ४५–५९ है

इष्ट	वार०	घ०	प०
	१	३०	४८
—पंक्ति	६	४५	५९
शेष	१	४४	४९
	चालन धन		

यहाँ इष्ट वार इतवार है। इतवार पहिला वार होने से वार के नीचे १ और इष्ट ३०–४८ होने से वार के नीचे १ घड़ी पल ३०–४८ लिखा। पंक्ति का वार शुक्रवार है ६ वार और मिश्रकाल ४५–५९ लिखा। फिर इष्ट से पंक्ति घटायी। यहाँ १ से ६

वार नहीं घटा तो ४ और जोड़ कर घटाया शेष १ वार रहा। इस प्रकार जो अंतर
वार घ० प०
१–४४–४६ आया वह चालन धन हुआ क्योंकि इष्टकाल दशमी का है और पंक्ति अष्टमी की है। पंक्ति के आगे इष्ट काल है तो चालन जोड़ना पड़ेगा।

इस प्रकार चालन निकालने के पहिले यह देखना चाहिए कि इष्ट काल अधिक (आगे) है या पंक्ति; उसके अनुसार चालन ± का विचार कर दोनों का अन्तर निकालना।

पंचांग में इष्ट के समीप (आगे या पीछे) जो पंक्ति हो उसे उपयोग करना जिससे अधिक गणित न करना पड़े।

ग्रीनविच से जो ऐफेमरी प्रकाशित होती है वह बहुत शुद्ध रहती है उसमें सायन ग्रह स्पष्ट मध्याह्न कालीन ग्रीनविच का दिया रहता है। उसका उपयोग करने से ग्रह साधन शुद्ध निकलता है और अधिक खटपट भी नहीं करनी पड़ती। उसका उपयोग करने के लिये अपने स्थानिक समय को ग्रीनविच के समय में परिवर्तन कर लेना चाहिए, जिसकी विधि पहिले बता चुके हैं। सुविधा के लिये यहाँ भी बतला देते हैं।

अपने समय को ग्रीनविच के समय में परिवर्तन करना।

अपना स्थानिक समय यदि धूप घड़ी के अनुसार हो तो स्थानिक समय को पहिले मध्यम स्थानिक समय बना लेना चाहिए। उसके लिये स्थानिक समय में विरुद्ध वेलान्तर संस्कार करे अर्थात् जहाँ वेलान्तर + बताया है वहाँ – और – के स्थान में + करे।

जैसे दिनांक १–१०–१९४२ ई० का अपना स्पष्ट इष्ट काल मान लो
घं० प० वि० घं० मि० से०
३९–२२–१२ है। इसके घंटा मिनट बना लिये तो १५–४४–५३ हुआ। १ अक्टूबर का वेलान्तर + १० मिनट है तो यहाँ १० ऋण करेंगे। १० मि० घटाया तो
घं० मि० से० घं० मि० से० घं० मि० से०
१५–३४–५३ रहा। इसमें उस दिन का सूर्योदय ६– ५ – ५१ जोड़ा तो २१–४०–४०
घं० मि० से०
जन्म समय हुआ। अर्थात् १२ बजे दोपहर के उपरांत ९ – ४०–४० रात का जन्म हुआ। यह स्थानिक समय हुआ। इसका ग्रीनविच का समय बनाना है। नरसिंहपुर का

घ० मि० से०

देशान्तर ७९°–११′ है अर्थात् ५–१६–४४ पूर्व। जब ग्रीनविच में दोपहर होता है

घ० मि० से०

तो नरसिंहपुर में संध्या के ५–१६–४४ बजते हैं। जब नरसिंहपुर में ९–४०–४४ बजा था तो ग्रीनविच में क्या बजा होगा निकालना है। यहाँ स्थानिक समय से देशान्तर घंटे घटाना होगा क्योंकि यहाँ से ग्रीनविच पश्चिम में है।

घं० मि० से०	
स्थानिक मध्यम समय ९–४०–४४	
—देशान्तर—५–१६–४४ घटाया	
∴ अन्तर ४–२४– ०	

अर्थात् जन्म के स्थानिक मध्यम

घ० मि० से०

समय ९–४०–४४ पर ग्रीनविच में दो

घ० मि०

पहर के उपरान्त ४–२४–० बजा होगा।

ग्रीनविच में तारीख १–१०–१९४२ को दोपहर के जो ग्रह स्पष्ट दिया है उसमें

घ० मि

४–२४ को गति निकाल कर दोपहर के उपरांत का होने के कारण जोड़ देने से इष्ट काल का अपने स्थान का ग्रह स्पष्ट हो जायगा।

परन्तु ऐफेंमरी से साधन किये हुए ग्रह सायन होते हैं। उसमें से अयनांश घटा देने से निरयन स्पष्ट ग्रह बन जायेंगे।

इस उदाहरण में इष्ट काल घड़ी पल में था इस कारण इतनी खटपट करनी पड़ी। यदि प्रगट है कि जन्म १०–५४ बजे रात का है। इस पर से ग्रीनविच का समय बनाना है। यह नया टाइम १ घंटा बढ़ा हुआ है तो जन्म का पुराना समय ९–५४ बजे

घ० मि०

रात हुआ। यह स्टेन्डर्डटाइम में है जहाँ का अक्षांश ८२°–३०′ है = ५–३० संध्या यहाँ पर होती है उस समय ग्रीनविच में दोपहर होता है। इष्ट काल इसके आगे है।

इष्ट	—९–५४
स्टे० टा०	—५–३०
अंतर	४–२४

यह ग्रीनविच का समय दोपहर के बाद का

घ० मि०

४–२४ बजे हुआ।

आज कल उज्जैन से भी ऐफेमरी निकलने लगी है जिसमें स्टेन्डर्ड टाइम के अनुसार प्रत्येक दिन के दोपहर के स्पष्ट ग्रह दिये रहते हैं। इस कारण उज्जैन की ऐफेमरी से ग्रह स्पष्ट करना सरल है।

आज कल प्रचलित पंचांगों में जो ग्रह स्पष्ट दिये रहते हैं। वे निरयन ग्रह रहते हैं। उन प्रत्येक में अयनांश जोड़ देने से सायन ग्रह स्पष्ट बन जाता है।

ग्रह स्पष्ट करना—

अब उपरोक्त प्रत्येक ग्रह का स्पष्ट करेंगे। चालक पहिले निकाल चुके हैं। चालक

दिन घन्टा पल विपल

१ – ६ – ३६ – ४८ ऋण है।

सूर्य गति ५९′ – १०″

दि. घ. पल वि.

चालन १ – ६ – ३६ – ४८ है।

१ दिन (६० घड़ी) में गति ५९′-१०″-०‴

१ घड़ी ,, ,,= ०–५९–१०

∴ ६ घड़ी ,, ,,= ५–५५– ०

१ पल ,, ,,= ०– ०–५९-१०

∴ ३६ ,, , ,,= ०–३५–३०- ०

१ विपल ,, ,,= ०– ०– ०-५९-१०

∴ ४८ ,, ,, ,,= ०– ०–४७-२०

१ दिन की गति ५९′-१०″-०‴-०

६ घड़ी ,, = ५–५५ –० –०

३६ पल ,, = ०–३५ –३०–०

४८ विपल ,, = ०– ० –४७–२०

योग =६५–४१ – ७–२०

दि. घ. प. वि.

∴ १ – ६ – ३६ – ४८ चालन की गति ६५′ – ४१″

= १°–५′–४१″ हुई।

गति की कला विकला केवल लिया शेष छोड़ दिया।

चालन में ४८ विपल है। आधे से ज्यादा है इस कारण यदि ३६ पल को ३७ पल मानकर गणित करो तो भी कोई विशेष अंतर नही पड़ता

१ पल में = ०′–०″–५९‴–१० गति

∴ ३७,, = ० –३६–२९ –१०

यहां केवल प्रति विकला में ही अंतर पड़ा है। इस कारण

प. वि.

३६ – ४८ को ३७ पल मान लेने

१ दिन की गति – ५९′–१०″–०‴–०

६ घड़ी ,, ,, = ५ –५५ –० –०

३७ पल ,, = ० –३६ –२९–१०

योग = ६५ –४१ –२९–१०

= ६५′ – ४१″ = १° – ५′ – ४१″

गति हुई

दि. घ. पल

में कोई अन्तर नहीं पड़ता। इस कारण अपना चालक १ – ६ – ३७ मान लेंगे।

अब इसी को गोमूत्रिका क्रम गणित से करेंगे ।

१ – ६ – ३७
× ५९ – १०

	१०	६०	३७०
५९	३५४	३३३ १८५	
५९ + ६	३६४ + ३७	२२४३ + ६	३७० ÷ ६० = १०
६५	४०१ = ४१	२२४९ = २९	

= ६५′ – ४१″ – २९‴ – १०

= ६५′ – ४१″ गति

= १° – ५′ – ४१″ चालन ऋण

यहां गोमूत्रिका क्रम से भी गणित करने पर वही उत्तर आता है विद्यार्थी को जिस प्रकार सुलभ जँचे गणित करना चाहिए ।

	रा			
पंक्तिस्थ ग्रह सूर्य	५ –	१५° –	२७′ –	१६″
चालन ऋण	–	१ –	५ –	४१घं.
शेष =	५ –	१४ –	२१ –	३५

∴ इष्ट कालीन सूर्य स्पष्ट

रा

= ५ – १४° – २१′ – ३५″

मंगल साधन

दि. घ. प.

गति ३९′ – ६″ चालन १ – ६ – ३७ ऋण

दि. घ. प.

१ दिन में ३९′ – ६″ गति तो १ – ६ – ३७ में कितनी होगी ?

(३९ – ६) × (१ – ६ – ३७) इस कारण गोमूत्रिका क्रम से दोनों का गुणा किया ।

१ – ६ – ३७
× ३९ – ६

	६	३६	२२२
३९	२३४	३३३ १११	
३९ + ४	२४० + २४	१४७९ + ३	२२२ ÷ ६० = ४२
४३	२६४ = २४	१४८२ = ४२	

= ४३′ – २४″ – ४२ – ४२

= ४३′ – २४″ चालन ऋण

	रा			
पंक्तिस्थ मंगल	५ –	१६° –	२५′ –	२″
चालन ऋण	–		४३ –	२४
शेष	५ –	१५ –	४१ –	३८

∴ स्पष्ट मंगल

रा

= ५ – १५° – ४१° – ३८″

बुध साधन

दि० घ० प०

बुध गति १२′–४७″ चालन १ – ६–३७ ऋण

१–६–३७

× १२–४७

	४७	२८२	२५९ १४८
१२	७२	७४ ३७	
१२ + २	११९ + १२	७२६ + २८	१७३९ ÷ ६० = ५९
१४	१३१ = ११	७५४ = ३४	

= १४′–११″ चालन ऋण

रा

पंक्तिस्थ बुध ५–२४°–२३′–४८″

चालन ऋण १४–११

शेष ५–२४–९–३७

∴ बुध स्पष्ट

रा

५–२४°–९′–३७″

गुरु साधन

गति ७′–४२″ चालन दि० घ० प०

१–६–३७ ऋण

१–६–३७

× ७–४२

	४२	२५२	७४ १४८
७	४२	२५९	
७ + १	८४ + ८	५११ + २५	१५५४ ÷ ६० = ५४
८	९२ = ३२	५३६ = ५६	

= ८′–३२″–५६‴

= ८′–३३″ गति चालन ऋण

रा

पंक्तिस्थ गुरु ३–१°–१०′–१६″

चालन ऋण ८–३३

शेष ३–१–१–४३

∴ स्पष्ट गुरु

रा

३–५°–१′–४३″

:शुक्र साधन

गति ७४′–२४″ चालन १–६–३७ ऋण

= १°–१४′–२४

१–६–३७
× १–१४–२४

		२४	१४४	१४८ ७४
	१४	८४	१४८ ३७	
१	१४	२४		
	२८ +२	१३२ +११	६६२ +१४	८८८ ÷ ६० = ४८
१	३०	१४३ = २३	६७६ + १६	

= १°–३०′–२३ ऋण

रा
पंक्तिस्थ शुक्र ५–७°–३३′–३२″
– चालन ऋण १–३०–२३
शेष ५–६–३–९

∴ शुक्र स्पष्ट
रा
५–६°–३′–९″

शनि साधन

गति ०′–३२″ वक्री चालन १–६–३७

शनि यहां वक्री है तो चालन + होगा

१–६–३७
× ०–३२

	३२	९६	७४ १११	
०	०	०		
०	३२ +१	९६ +१९	११८४ ÷ ६० = ४४	
०	३३	११५ = ५५		

= ०′–३३″–५५‴

= ०′–३४″ चालन धन

रा
पंक्तिस्थ शनि १–२०°–२०′–५५″
+ चालन धन ०–३४
योग १–२०–२१–२९

∴ स्पष्ट शनि
रा
१–२०°–२१′–२९″

राहु साधन

दिन घटी पल

राहु गति ३′ – ११″ चालन १ – ६ – ३७ चालन + होगा क्योंकि राहु सदा वक्री रहता है।

१–६–३७
×३–११

	११	६६	३७
३	१८	१११	३७
३	२९ +३ = ३२	१७७ +६ = १८३ = ३	४२७ = ४०

= ३′ – ३२″ चालन +

	रा
पंक्तिस्थ राहु	४–१२°–५८′–६″
चालन +	३ –३२
योग	४–१३ – १ –३८

∴ स्पष्ट राहु

रा
४ – १३° – ३८″

रा
राहु में ६ जोड़ देने से केतु हो जाता है

रा
स्पष्ट राहु ४ – १३° – १′ – ३८″
+६

∴ स्पष्ट केतु = १०– १३ – १ – ३८

चंद्र स्पष्ट करना

उस दिन जो चंद्र नक्षत्र है उसका भयात, भभोग (सर्वर्क्ष) और भोग्य पहिले निकाल लेना चाहिए।

भयात = गतर्क्ष = भुक्त नक्षत्र = नक्षत्र के जितने घड़ी पल भुक्त - हुए हों अर्थात् गत हो गये हों।

भोग्य = भोग्यर्क्ष = नक्षत्र की शेष घड़ी जो भुक्त होने को बची हों।

सर्वर्क्ष = भभोग = सम्पूर्ण नक्षत्र का भोग = पूर्ण भोग काल।

भयात = (६० घड़ी – गत नक्षत्र की घड़ी पल) + इष्ट = यदि दूसरे दिन जन्म है। यदि उसी दिन जन्म है तो = (इष्ट – गत नक्षत्र की घड़ी पल)।

भभोग = (६० घड़ी – गत नक्षत्र की घड़ी पल) + वर्तमान नक्षत्र की घड़ी पल।

वर्तमान नक्षत्र = जन्म के समय जो नक्षत्र हो।

गत नक्षत्र = वर्तमान नक्षत्र के पहिले का नक्षत्र।

जैसे इष्ट दिनांक १-१०-१९४२ ई० गुरुवार को पंचांग में मृग नक्षत्र ३८-८
घटी पल विपल
दिया है। अपना जन्म समय (इष्ट) ३९ - २२ - १२ है जो उसके उपरान्त का है। इससे प्रगट हुआ कि मृग नक्षत्र का अंत हो चुकने के उपरान्त आगे के नक्षत्र आद्रा में जन्म हुआ है। पंचांग में देखा दूसरे दिन शुक्रवार को ४४-४१ तक आर्द्रा नक्षत्र है।

यदि मृगशिर नक्षत्र के भीतर जन्म होता तो मृगशिर नक्षत्र कब से आरंभ हुआ है यह देखने की आवश्यकता पड़ जाती और मृगशिर के पहिले का (गत) नक्षत्र रोहिणी नक्षत्र का कब अंत हुआ देखना पड़ता। परन्तु यहाँ जन्म मृगशिर के अंत होने के उपरान्त आर्द्रा नक्षत्र में हुआ है इस कारण आर्द्रा नक्षत्र कब से आरंभ हुआ और उसका कब अंत हुआ, देखना पड़ेगा तब आद्रा नक्षत्र का पूर्ण भोग काल (भभोग) ज्ञात होगा।

मृगशिर ३८ - ८ घड़ी तक गुरुवार को था उस उपरान्त आर्द्रा लगा। दिनरात की ६० घड़ी होती हैं तो (६० घड़ी - मृग० ३८ - ८) = २१ - ५२ घड़ी। अर्थात् गुरुवार को ३ - ८ घड़ी के उपरान्त शेष २१ - ५२ घड़ी आर्द्रा नक्षत्र रहा। अब देखना है शुक्रवार को आर्द्रा कितना था। पंचांग में शुक्रवार ४४ - ४१ घड़ी तक आर्द्रा दिया है। सब मिल कर ६६ - ३३ घड़ी आर्द्रा का पूर्ण भोगकाल हुआ। इसी पूर्ण भोग काल को भभोग या सर्वर्क्ष भी कहते हैं।

गुरुवार को आर्द्रा	२१-२५
शुक्रवार ,, ,,	४४-४१
∴ आर्द्रा का भभोग =	६६-३३

इष्ट काल तक वर्तमान नक्षत्र कितना गत हुआ उसे भयात या गतर्क्ष कहते हैं। गुरुवार को मृगशिर ३८ - ८ घड़ी तक था। जन्म दिन गुरुवार है। उसी दिन इष्ट ३९ - २२ - १२ घड़ी पर जन्म हुआ है तो मृगशिर का अंत हो जाने पर और आर्द्रा नक्षत्र के आरंभ हो जाने के १ - १४ - १२ घड़ी के उपरान्त जन्म हुआ।

इष्ट	३९ - २२ - १२
मृग० का अंत	३८ - ८ - ० तक
शेष आर्द्रा	१ - १४ - १२=भयात

इस कारण जन्म समय आर्द्रा १ - १४ - १२ गत हुआ है। कहेंगे। इसी को भयात या गतर्क्ष कहेंगे।

(६० - गत नक्षत्र) + इष्ट = भयात

(६० - गत नक्षत्र मृगशिर) + इष्ट ३९ - २२ - १२

३८-८ घ. पल वि.

= (२१ - ५२) + इष्ट ३९-२२-१२=६१-१४-१२=१-१४-१२ भयात आर्द्रा का।

दोनों प्रकार से एक ही उत्तर आता है। ६० घड़ी से अधिक आने से ६० घटा दिया। इससे शेष १ – १४ – १२ जो बचा वही भयात हुआ। परन्तु उसी दिन का जन्म हो तो इष्ट में से गत नक्षत्र की घड़ी पल घटा देने से भयात स्पष्ट हो जाता है।

भभ्क = (भभोग – भयात)

(आर्द्रा भभोग ६६ – ३३) – (भयात १ – १४ – १२) = ६५ – १८ – ४८
आर्द्रा का भोग्य

चंद्र साधन के लिए षष्टि प्रमाण भुक्ति निकालना—

चंद्र स्पष्ट करने के लिए पहिले षष्टि प्रमाण भुक्ति (वर्तमान नक्षत्र की) निकालनी होती है। भभोग की घड़ियाँ कभी ६० से कम कभी अधिक होती हैं तो ६० घड़ी को अनुपातिक घड़ियां भयात की कितनी होती है इसे निकालना पड़ता है। इसी को षष्टि प्रमाण भुक्ति कहते हैं।

अर्थात् पूर्ण भभोग में ६० घड़ी तो भयात में कितनी अनुपातिक घड़ी होगी। या सम्पूर्ण भभोग को ६० घड़ी के बराबर माना जाय तो भयात को कितनी घड़ी के बराबर मानना पड़ेगा। यहाँ भाग देने की सुविधा के लिए भभोग और भयात को एक जात बना लेना चाहिए। चाहे सबके पल बना लो या विपल बना लो।

$$\frac{\text{भयात} \times ६०}{\text{भभोग}} = \text{षष्टि प्रमाण}$$

अपना भभोग
घटी पल
६६ – ३३ है
× ६०
३९६०
+ ३३
३९९३ पल
भभोग

भयात
१ – १४ – १२ है
× ६०
६० + १४
७४ – १२
पल वि.
भयात

७४ – १२
× ६०
४४४० – ७२० ÷ ६०
+ १२ = ०
४४५२
= ४४५२
पल

३९९३) ४४५२ (१ घड़ी
३९९३
४५९ × ६०
३९९३) २७५४० (६ पल
२३९५८
३५८२ × ६०
३९९३) २१४९२० (५३ विपल
१९९६५
१५२७०
११९७९
३२९१

$$\frac{\text{भयात}\ (१-१४-१२)\times ६०}{\text{भभोग}\ ६६-३३} = \frac{\text{पल विपल}\ (७४-१२)\times ६०}{३९९३\ \text{पल}}$$

$$= \frac{४४५२}{३९९२} = \begin{matrix}\text{घ. प. वि.}\\ १-६-५३\end{matrix}$$

षष्टि प्रमाण भुक्ति

चंद्र साधन

भयात की षष्टि प्रमाण भुक्ति निकल आने पर चंद्र साधन करते हैं। एक नक्षत्र ६० घड़ी में $१३^{\circ}-२०'$ चलता है तो १ घड़ी में $०^{\circ}-१३'-२०''$ चलेगा।

$$\frac{\overset{१}{१३}-२०''}{\underset{३}{६०}} = \frac{४०'}{३}\quad \frac{\overset{२}{४०}}{\underset{२}{३\times ६०}}\ \text{अंश} = \frac{२}{९}\ \text{अंश हुआ।}$$

अब त्रैराशिक से निकालो। नक्षत्र की १ घड़ी में चंद्र $\frac{२}{९}$ अंश चलता है तो सम्पूर्ण नक्षत्रों की षष्टि प्रमाण भुक्ति की घड़ियों में कितना चलेगा। जो उत्तर आवे वह चंद्र का अंश कलादि स्पष्ट होगा।

सम्पूर्ण नक्षत्रों की षष्टि प्रमाण भुक्ति

प्रत्येक नक्षत्र की भुक्ति $१३^{\circ}-२०'$ की है और एक नक्षत्र की औसत भुक्ति ६० घड़ी है। परन्तु नक्षत्र की पूर्ण भुक्ति (भोग) कभी इस ६० घड़ी से अधिक हो जाती है, कभी इस से अल्प होती है। इसी से ६० घड़ी के प्रमाण के अनुसार उस नक्षत्र की षष्टि प्रमाण भुक्ति निकालनी पड़ती है। जो कुछ इस प्रकार आवे वह केवल उस नक्षत्र की षष्टि प्रमाण भुक्ति हुई। अब शेष गत नक्षत्रों की भी षष्टि प्रमाण भुक्ति उस में जोड़ दो तो सम्पूर्ण नक्षत्रों की षष्टि प्रमाण भुक्ति निकल आयगी।

इस कारण गत नक्षत्रों की संख्या में ६० का गुणा करने से गत नक्षत्रों की षष्टि प्रमाण भुक्ति निकल आयगी। फिर उसमें वर्तमान नक्षत्र की षष्टि प्रमाण भुक्ति जोड़कर उसमें $\frac{२}{९}$ का गुणा कर दो तो चंद्र स्पष्ट हो जायगा।

$$\text{चंद्र साधन} = \frac{[\ (\text{गत नक्षत्र सख्या}) + \text{षष्टि प्रमाण भुक्ति}\ ]\times २}{९} = \text{चंद्र स्पष्ट अंशादि}$$

अपना वर्तमान नक्षत्र आर्द्रा है। उसकी षष्टि प्रमाण भुक्ति १-६-५३ घड़ी पहिले निकाल चुके हैं।। इसमें गत नक्षत्रों की षष्टि प्रमाण भुक्ति और जोड़नी है।

अश्विनी से मृगशिर तक ५ गत नक्षत्र हुए इसमें ६० का गुणा किया ५ × ६० = ३०० घड़ी हुई इसमें १-६-५३ घड़ी जोड़ा।

गत नक्षत्र

$$\frac{[(५ \times ६०) \times (१-६-५३)] \times २}{९} = \frac{(३०० + १-६-५३) \times २}{९}$$

$$= \frac{(३०१-६-५३) \times २}{९} = \frac{६०२-१३-४६}{९} = ६६^\circ-५४'-५१''$$

रा

$= २-६^\circ-५४'-५१''$ चंद्र स्पष्ट

```
९ ) ६०२-१३-४६ ( ६६ अंश
    ५४
    ६२
    ५४
    ८ × ६०
    ४८० + १३
  ९ ) ४९३ ( ५४ कला
      ४५
      ४३
      ३६
      ७ × ६०
      ४२० + ४६
  ९ ) ४६६ ( ५१
      ४५   विकला
      १६
```

```
३० ) ६६ अंश ( २ राशि
     ६०
     ६ अंश
```

चंद्र स्पष्ट करने की यह सबसे सरल रीति है।

चंद्र साधन दूसरे प्रकार से

वर्तमान जन्म नक्षत्र का सर्वर्क्ष (भभोग) और गतर्क्ष (भयात) निकालो और दोनों को एक वर्ण बनालो।

१ नक्षत्र $१३^\circ-२०'$ का होता है तो वर्तमान नक्षत्र के गतर्क्ष काल में चंद्र के कितने अंश गत होंगे यह त्रैराशिक से निकालना चाहिए। इसलिये $१३^\circ-२०' = १३\frac{१}{३} = \frac{४०}{३}^\circ$ में गतर्क्ष का गुणा कर सर्वर्क्ष का भाग दो तो गतर्क्ष काल का चंद्र निकल आयगा। इसके लिये गतर्क्ष में ४० का गुणा कर सर्वर्क्ष को तिगुना कर भाग देना पड़ेगा।

$$\frac{\text{गतर्क्ष}}{\text{सर्वर्क्ष}} \times \frac{४०}{३}^\circ = \frac{\text{गतर्क्ष} \times ४०}{\text{सर्वर्क्ष} \times ३} = \text{वर्तमान नक्षत्र का चंद्र के अंशादि।}$$

इस में गत नक्षत्रों की संख्या का चंद्र निकाल कर जोड़ दो तो चंद्र स्पष्ट हो जायगा।

गत नक्षत्रों का चंद्र निकालने के लिये गत नक्षत्र संख्या में ६० का गुणा कर घड़ियाँ बना लो। १ घड़ी में चंद्र के $\frac{२}{९}$ अंश होते हैं तो उक्त घड़ियों में कितने अंश होंगे त्रैराशिक से निकालो। इस के लिये गत नक्षत्र की घड़ियों में २ का गुणा कर ९ का भाग दो गत नक्षत्र का चंद्र निकल आयगा।

इस का एक चक्र भी आगे दिया है जिससे गत नक्षत्र का चंद्र जान सकते हो।

$$\frac{(\text{गत नक्षत्र संख्या} \times ६०) \times २}{९} = \text{गत नक्षत्र का चंद्र।}$$

गत नक्षत्र का चंद्र + वर्तमान नक्षत्र का चंद्र = चंद्र स्पष्ट

उदाहरण—

भयात	भभोग	
घ० प० वि०	घ० पल	$\frac{(७४-१२) \times ४०}{३९९३ \times ३}$ + $\frac{(५ \times ६०) \times २}{९}$ = चंद्र स्पष्ट
१-१४-१२	६६-३३	भयात / भभोग
पल	= ३९९३ पल	
= ७४-१२		

भयात
७४-१२
× ४०
२९६०-४८० ÷ ६०
+ ८ = ०
२९६८
= २९६८

भभोग
३९९३
× ३
११९७९

= $\frac{२९६८}{११९७९}$ + $\frac{६००}{९}$
= (०°-१४′-५१″) + ६६°-४०′
= ६६°-५४′-५१″
रा
= २-६°-५४′-५१″ चंद्र स्पष्ट

११९७९) २९६८ (० अंश
× ६०
११९७९) १७८०८० (१४ कला
११९७९
५८२९०
४७९१६
१०३७४
× ६०
११९७९) ६२२४४०(५१
५९८९५ विकला
२३४९०
११९७९
११५११
= ०°-१४′-५१″

९) ६०० (६६
५४ अंश
६०
५४
६ × ६०
९) ३६० (४०
३६ पल
०
= ३६°-४०′

आगे दिये हुए चक्र में देखो।
रा
मृगशिर पूरा २-६°-४०′ है
रा
चक्र से मृग० २-६°-४०′-०″
+ वर्तमान नक्षत्र ०-१४-५१
(उपरोक्त)
योग = २-६-५४-५१
चंद्र स्पष्ट

नक्षत्र के अनुसार चंद्र के कक्षादि सूचक चक्र

क्रम	नक्षत्र	प्रथम चरण			द्वितीय चरण			तृतीय चरण			चतुर्थ चरण		
		रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.
१	अश्विनी	०	३	२०	०	६	४०	०	१०	०	०	१३	२०
२	भरणी	०	१६	४०	०	२०	०	०	२३	२०	०	२६	४०
३	कृतिका	१	०	०	१	३	२०	१	६	४०	१	१०	०
४	रोहिणी	१	१३	२०	१	१६	४०	१	२०	०	१	२३	२०
५	मृगशिर	१	२६	४०	२	०	०	२	३	२०	२	६	४०
६	आर्द्रा	२	१०	०	२	१३	२०	२	१६	४०	२	२०	०
७	पुनर्वसु	२	२३	२०	२	२६	४०	३	०	०	३	३	२०
८	पुष्य	३	६	४०	३	१०	०	३	१३	२०	३	१६	४०
९	आश्लेषा	३	२०	०	३	२३	२०	३	२६	४०	४	०	०
१०	मघा	४	३	२०	४	६	४०	४	१०	०	४	१३	२०
११	पूर्वा फाल०	४	१६	४०	४	२०	०	४	२३	२०	४	२६	४०
१२	उत्तरा०	५	०	०	५	३	२०	५	६	४०	५	१०	०
१३	हस्त	५	१३	२०	५	१६	४०	५	२०	०	५	२३	२०
१४	चित्रा	५	२६	४०	६	०	०	६	३	२०	६	६	४०
१५	स्वाती	६	१०	०	६	१३	२०	६	१६	४०	६	२०	०
१६	विशाखा	६	२३	२०	६	२६	४०	७	०	०	७	३	२०
१७	अनुराधा	७	६	४०	७	१०	०	७	१३	२०	७	१६	४०
१८	ज्येष्ठा	७	२०	०	७	२३	२०	७	२६	४०	८	०	०
१९	मूल	८	३	२०	८	६	४०	८	१०	०	८	१३	२०
२०	पूर्वाषाढ़ा	८	१६	४०	८	२०	०	८	२३	२०	८	२६	४०
२१	उत्तराषाढ़ा	९	०	०	९	३	२०	९	६	४०	९	१०	०
२२	श्रवण	९	१३	२०	९	१६	४०	९	२०	०	९	२३	२०
२३	धनिष्ठा	९	२६	४०	१०	०	०	१०	३	२०	१०	६	४०
२४	शतभिषा	१०	१०	०	१०	१३	२०	१०	१६	४०	१०	२०	०
२५	पूर्वभाद्र०	१०	२३	२०	१०	२६	४०	११	०	०	११	३	२०
२६	उत्तरभाद्र०	११	६	४०	११	१०	०	११	१३	२०	११	१६	४०
२७	रेवती	११	२०	०	११	२३	२०	११	२६	४०	१२	०	०

रा   रा

जैसे गत नक्षत्र पुष्य है = चंद्र राशि ३–१९°–४०′ हुई। श्रवण = ९–२३°–२०′ इत्यादि। यहां चरण तक के चन्द्र के राशि अंशादि दिए हैं जिससे किसी नक्षत्र के किस चरण तक चंद्र की राशि अंश आदि कितने होते हैं प्रगट हो जावे।

(गत नक्षत्र संख्या × ६० × २) ÷ ९ = चंद्र की राशि अंश आदि निकल आती है, वही यहां निकाल कर चक्र में बताया है।

इससे किसी भी चंद्र आदि ग्रह के स्पष्ट पर से नक्षत्र के चरण भी जाने जा

रा

सकते हैं। जैसे चंद्र २–६°–५४′–५१″ है तो आर्द्रा के पहिले चरण का जन्म हुआ।

चन्द्र की गति साधन

१ नक्षत्र = १३°–२०′ = ८००′ का होता है। पूर्ण भभोग की षष्टि प्रमाण भुक्ति में चन्द्र की गति निकालनी है। अर्थात् पूर्ण भभोग में ८००′ चन्द्र की गति होती है तो ६० घड़ी में कितनी होगी ? जो उत्तर आवे वही चन्द्र की गति होगी।

भाग देने की सुविधा के लिये ६० घड़ी और भभोग को एक जाति वना लेना चाहिए। ६० घड़ी = ६० × ६० = ३६०० पल

$$\frac{\text{३६०० पल} \times \text{८००}'}{\text{भभोग पल}} = \frac{\text{२८८००००}}{\text{भभोग पल}} = \text{चन्द्र गति कला विकला में।}$$

इस कारण २८८०००० में भभोग के पल वनाकर भाग दो तो चन्द्र की गति निकल आती है।

अपना भभोग ६६—३६ घड़ी = ३९९३ पल है।

$$\text{चन्द्रगति } \frac{\text{२८८००००}}{\text{३९९३}} = \text{७२१}'\text{–१५}''$$

३९९३) २८८०००० (७२१	
२७९५१ कला	१०४७ × ६०
८४९०	३९९३) ६२८२० (१५
७९८६	३९९३ विकला
५०४०	२२८९०
३९९३	१९९६५
१०४७	२९२५

$$\text{यदि भभोग विपल में हो} = \frac{\text{२८८०००००} \times \text{६०}}{\text{भभोग विपल}} = \frac{\text{१७२८००००००}}{\text{भभोग विपल}}$$

= गति कलादि।

ग्रह साधन की दूसरी रीति (चरण के विचार से)

जन्म समय ग्रह किस नक्षत्र में है और नक्षत्र किस राशि में आता है विचार करो। जन्म समय के पहिले वह ग्रह नक्षत्र के किस चरण में था उसका समय देखकर लिख लो। फिर देखो उस नक्षत्र का चरण कब बदला। फिर जितने समय तक वह ग्रह उस नक्षत्र में रहा हो सम्पूर्ण समय निकालो। उस समय को उस चरण का भभोग कहेंगे। वह चरण आरम्भ होने के उपरान्त इष्ट काल तक जो समय है वह समय उस चरण का भुक्त काल (भयात) हुआ।

१ चरण $३^\circ-२०' = \frac{१०}{३}^\circ$ का होता है। त्रैराशिक से निकालो कि १ चरण का पूर्ण भोग इतने घड़ियों में होता है तो उस चरण को भुक्त घटियों में कितने अंश भुक्त हुआ होगा ?

$$\frac{\text{चरण भुक्त काल (भयात)}}{\text{उस चरण का सम्पूर्ण भोग (भभोग)}} \times \frac{१०}{३}^\circ = \text{नक्षत्र के चरण का भुक्तांश।}$$

अब देखो उस राशि में इस नक्षत्र के कितने चरण प्रथम भुक्त हो चुके हैं। प्रति चरण $\frac{१०}{३}^\circ$ के हिसाब से उतने चरण का भुक्तांश निकाल कर या पहिले दिये हुए चक्र से देख कर ऊपर निकाले हुए वर्तमान चरण के भुक्तांश में जोड़ दो तो उस राशि का पूर्ण भुक्त अंश कलादि निकल आवेगा। उसके पहिले जितनी राशि गत हुई हो वह ग्रह स्पष्ट की राशि होगी। और इस प्रकार गणित से निकाले हुए अंशादि उस ग्रह के स्पष्ट अंशादि होंगे।

उदाहरण—

दिनांक १–१०–१९४२ ई० गुरु वार का सूर्य स्पष्ट करना है। इष्ट काल ३९–२२–१२ घटी है। अब पंचांग देखा कि सूर्य किस राशि के कौन चरण में है।

बुधवार दिनांक ३०–९–४२ ई० हस्त के दूसरे चरण में ३५–३९ घड़ी पर आया = ६०–(३५–३९) = शेष २४–१ घड़ी दूसरे चरण का शनिवार ३–१०–१९४२ को तीसरे चरण में ५८–५२ पर आया। अब देखेंगे कि रवि को दूसरे चरण में कितना समय हुआ।

			घ० प०
बुधवार	दिनांक ३०– ९–४२	को हस्त के दूसरे चरण में रहा	= २४–१
गुरुवार	,, १–१०–४२	,, ,, ,, ,,	= ६०–०
शुक्रवार	,, २–१०–४२	,, ,, ,, ,,	= ६०–०
शनिवार	,, ३–१०–४२	,, ,, ,, ,,	= ५८–५२

∴ रवि के दूसरे चरण में रहने का समय = योग २०२–५३

(भभोग)

जन्म समय तक हस्त के दूसरे चरण में सूर्य इस प्रकार है :—

	घ० प०
बुधवार ३०–९–४२ को	२४–१
गुरुवार १–१०–४२ „ जन्म समय	३९–२२–१२
∴ दूसरे चरण का भयात =	६३–२३–१२

भभोग	भयात
घ० प०	
२०२–५३	६३–२३–१२
× ६०	× ६०
१२१२०	३७८०
+ ५३	+ २३
१२१७३	३८०३–१२
भभोग पल	भयात पल

अब त्रैराशिक से निकाला

सूर्य के दूसरे चरण का भभोग १२१७३ पल में सूर्य $\frac{१०}{३}^\circ$ भोगता है तो ३८०३–१२ पल में कितना होगा ?

$$\frac{(३८०३–१२) \times १०}{१२१७३ \times ३} = \frac{३८०३२}{३६५१९} = १^\circ–२'–२९''$$

३६५१९) ३८०३२ (१°
३६५१९
१५१३ × ६०
३६५१९) ९०७८० (२'
७३०३८
१७७४२
× ६०
३६५१९) १०६४५२० (२९″
७३०३८
३३४१४०
३२८६७१
५३६९

∴ सूर्य हस्त के दूसरे चरण में १°–२′–२९″ पार कर चुका। यह सूर्य के दूसरे चरण का भुक्त काल हुआ।

हस्त कन्या राशि में आता है। कन्या राशि में इस प्रकार नक्षत्र होते हैं :—

उत्तरा फाल्गुनी	= अंत के	३ चरण
हस्त	= पूरे	४ चरण
चित्रा	= आरंभ के	२ चरण
		९ चरण

अब देखना है हस्त के दूसरे चरण तक कन्या राशि में कितने चरण होते हैं।

उत्तरा फाल्गुनी के अंत के	३ चरण
हस्त का आरंभ का	+ १ चरण
	४ चरण

१ चरण में $\frac{१०}{३}^\circ$ भुक्त होता है तो ४ चरण में $\frac{१० \times ४}{३} = \frac{४०}{३}^\circ = १३^\circ–२०'$

कन्या राशि के हस्त के पहिले चरण तक भुक्त = १३°–२०′

,, ,, दूसरे ,, ,, ,, = १– २–२९

∴ कन्या राशि के भुक्त अंश हुए = १४–२२–२९

सूर्य कन्या राशि के १४°–२२′–२९ पर है गत राशि (कन्या राशि के पहिले

रा

तक राशि) ५ है इस प्रकार सूर्य स्पष्ट ५–१४°–२२–२९″ हुआ।

या पिछले दिये हुए चक्र में देखा

रा

हस्त के पहिले चरण तक राशि अंश = ५–१३°–२०′

उपरोक्त हस्त के दूसरे चरण के भयात में = ०– १– २–२९

सूर्य स्पष्ट = ५–१४–२२–२९

इस रीति से और भी ग्रह स्पष्ट कर लेना।

ग्रह साधन में पंचांग के उपयोग का विचार

ग्रह साधन करने के लिये विशेष बात ध्यान देने योग्य यह है कि जिस पंचांग द्वारा ग्रह साधन किया जाता है उस का विचार करो कि वह पंचांग किस स्थान से प्रकाशित हुआ है और उस में जो ग्रह स्पष्ट दिया है वह किस स्थान के देशान्तर पर गणित कर बनाया गया है। अपने स्थान से और उस स्थान से जहां का ग्रह स्पष्ट दिया गया है, देशान्तर में क्या अंतर है; विना इन बातों के विचार किये (यदि उस स्थान में अधिक अंतर हुआ तो) ग्रह स्पष्ट में कुछ अंतर अवश्य पड़ेगा।

इस कारण अपने इष्ट समय को उस स्थान के समय में परिवर्तन करलो जहां का पंचांग उपयोग कर रहे हो।

जैसे जबलपुर का पंचांग उपयोग किया तो जबलपुर का देशान्तर ८०° पूर्व है। नरसिंहपुर में जन्म होने से नरसिंहपुर का जन्म ग्रह साधन करना है।

मि० से०

नरसिंहपुर का देशान्तर ७९–११ पूर्व है दोनों का अंतर = ४९′ = ३–१२ = ८ पल का हुआ। नरसिंहपुर के समय को जबलपुर के समय में परिवर्तन करने के लिये, यहां से जबलपुर पूर्व में होने से अंतर + करना पड़ेगा। पश्चिम में — (ऋण) करना पड़ता।

घ० प० वि०

इस से अपने इष्ट में ८ पल देशान्तर जोड़ दो। इष्ट २९–२२–१२ घड़ी + ८ पल = २९–३०–१२ यह जबलपुर

का टाइम हो गया। यदि मिश्रमान दिया हो तो फल घटी संस्कार करो स्थानिक मिश्रमान बना लो।

अपना इष्ट ३६–३०–१२ मान कर ग्रह साधन करें तो ग्रहस्पष्ट ठीक होगा। यह क्रिया केवल ग्रहसाधन करने के लिये ही उपयोग में लाना। जैसे ग्रीनविच का ऐफेमरी का उपयोग करते हैं तो स्थानिक समय को ग्रीनविच का समय बना लेते हैं, जिस का बनाना पहिले बता चुके हैं। परन्तु कई पंचांग स्टेन्डर्ड टाइम पर ग्रह स्पष्ट कर पंचांग में देते हैं उन में अपने स्टेन्डर्ड टाइम पर से ही ग्रह साधन किया जा सकता है। देशान्तर संस्कार करने की आवश्यकता नहीं होती। जैसे उज्जैन से प्रकाशित ऐफेमरी में स्टेन्डर्ड टाइम का ग्रह दिया है। उस मे केवल अपने इष्ट स्टेन्डर्ड टाइम पर से ही ग्रह साधन कर सकते हैं।

लग्न साधन, भाव साधन के लिये केवल स्थानिक समय ही उपयोग होता है।

ग्रीनविच के ऐफेमरी से ग्रह स्पष्ट

मान लो ग्रीनविच के ऐफेमरी का उपयोग करना है तो अपने समय को ग्रीनविच के समय में बना लो।

यद्यपि समय परिवर्तन की रीति पहिले दे चुके हैं परन्तु यहाँ एक और उदाहरण देकर समझाते हैं।

जन्म जबलपुर में ४ बज के ८ मिनट संध्या का है। यह समय स्टेन्डर्ड टाइम

घ० मि०

का है जिसका देशान्तर ८२°–३०° पूर्व है=५–३० हुए। यह समय ग्रीनविच के आगे है। अर्थात् जब जबलपुर में ४–८ बजा था तो ग्रीनविच में १२ भी दोहपर के नहीं बजे थे। स्टेन्डर्ड देशान्तर समय ५–३० संध्या से अपना समय ४–८ संध्या घटाया तो शेष

घ० मि०

१–२२ रहे। जब ग्रीनविच में मध्याह्न के १२ बजते तो जबलपुर के स्टेन्डर्ड टाइम

घ० मि०

में ५–३० संध्या के बजते परन्तु अपना समय १–२२ पहिले का है। इस कारण इसे १२ में से घटाया तो शेष १०–३८ रहे। इस से प्रगट हुआ अपने जन्म समय दोपहर के पहिले ग्रीनवीच में १०–३८ ही बजा था।

घ० मि०

मध्याह्न से १–२२ का अंतर होने के कारण इस अंतर का ग्रहों की गति निकाल कर ग्रीनविच के ग्रहों में घटा देने से इष्ट काल का ग्रह अपने स्थान का बन जायगा। ऐफेमरी में प्रति दिन के १२ बजे के ग्रह स्पष्ट दिये रहते हैं।

१८ मार्च १९२१ को ऐफेमरी में ग्रीनविच के ग्रहों की स्थिति इस प्रकार दी है—

सूर्य	२७°–११′–२७	मीन = गति	५९′–३७″
चन्द्र	१५ – २ –२४	मिथुन = ,,	१४°–२६′–४″
मंगल	२५ – १ – ०	मेष = ,,	४५′–०″
बुध	३ –४५	मीन मार्गी =	१५′–०″
गुरु	१२–१५	कन्या वक्री =	७′–०″
शुक्र	६–४४	मेष =	२८′–०″
शनि	२०–५७	कन्या वक्री =	४′–०″
राहु	२८– ७	तुला वक्री =	३′–११″

इसमें गति नहीं दी थी तो उस दिन के ग्रह को दूसरे दिन के ग्रह स्पष्ट से घटा दिया जो अंतर मिला वही गति हुई। यही यहाँ निकाल कर दी है।

दिनांक	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध
१९	२८°–२१′– ४″	२९°–२८′–२८″	२५°–४६′	३°–५७′
१८	२७ –११ –२७	१५ – २ –२४	२५ – १	३ –४२
गति	०–५७–३४	१४ –२६ –४	० –४५	० –१५

दिनांक	वक्री गुरु	वक्री शनि	
१८	३°–५७′	२० –५७	राहु की सदा एक सी
१९	३ –४२	२० –५३	३′–११″ गति रहती है।
गति	० –४५	० – ४	

घं० मि०

अब गणित से निकालो २४ घं० में सूर्य की गति ५९′–३७″ है तो १–२२ में कितनी होगी ? सब से सरल विधि लेगार्थमिक टेबल के (जो ग्रंत में दिया रहता है।) सहारे बहुत शीघ्र उत्तर मिल जाता है। परन्तु उस का यहां उपयोग न कर गणित से ही निकालेंगे।

२४ घन्टा में जितनी कला विकला गति होती है। तो १घन्टे में उसकी २½ गुनी विकला प्रतिविकला गति होती है। १ घंटा में जितने विकला प्रतिविकला गति होगी १मिनट में उतनी ही प्रतिविकला तत्प्रतिविकला गति होती है।

सूर्य २४ घंटा = ५९′ ३७″ गति

१ घंटा = ,, × २ = ११८″–७४‴

½ = २९ –३०

× २½ = १८–३०

१४७-१२२-३०

= १४८″-२‴-३०

१ घंटा में = २′–२८″–२‴

१ घंटा में = २′–२८″–२‴

∴ १ मिनट में = २–२८–२

∴ २२ मिनट में = ५४–१६–४४

१ घंटा में = २'–२८''–२
२२ मिनट में = ५४ –१६
१–२२ की = ३ –२२ –१६

सूर्य मीन २७°–२१'–२७''
चालन ऋण ३–२२
शेष = २७ –१८ –५ मीन
रा

∴ सायन सूर्य स्पष्ट = ११–२७°–१८'–५''

चंद्र = २४ घंटा = १४°–२६'–४'' गति
२॥ × { × २ = २८'–५२''–८ ; × ½ = ७–१३–२ }
१ घंटा में = ३६–५–१०

१ घंटा में = ३६'–५''–१०
∴ १ मि०में = ०–३६–५–१०
∴ २२ मि०में = ०–७९२–११०–२२०
= ७९४''–३–४०
= १३'–१४''–३

१ घंटा में = ३६'–५''–१०
२२ मि० में = १२–१४–३
४९–१९–१३
चालन ऋण
रा

चंद्र मिथुन १५°–२'–२४''
चालन ऋण ०–४८–१९ घटाया
= १४–१३–५ मिथुन

∴ सायन चंद्र स्पष्ट २–१४°–१३'–५''

मंगल = २४ घंटा = ४५'–०'' गति
∴ १ घंटा × २½ = ९०''–०'''
२२–३०
११२–३०
१ घंटा में = १'–५२''–३०

१ घंटा में = १'–५२''–३०'''
१ मिनट में = १''–५२–३०
२२ मि० में = ४१–१५–०

१ घंटा में = १'–५२''–३०
२२ मि० में = ०–४१–१५
२–३३–४५
चालन ऋण रा

मंगल मेष २५°–१'–०''
चालन ऋण २–३३ घटाया
२४–५८–२७ मेष

∴ सायन मंगल = ०–२४°–५८'–२७''

बुध = २४ घंटा = ०°–१५'–०''
१ घंटा × २½ = ०–३७''–३०'''
१ मिनट = ०''–३७'''–३०
२२ मिनट = १३''–४५
बुध मीन ३°–४२'–०''

१ घंटा = ३७''–३०'''
२२ मिनट = १३–४५
चालन – ५१–१५
ऋण

. चालन ऋण ५१ घटाया

३–४१–९ मीन

रा
∴ सायन वुध स्पष्ट ११–३°–४१′–९″

गुरु वक्री २४ घंटा = ७′–०″ गति	१ घंटा में – ०′–१७″–३०‴
१ घंटा × २३/२ = १७″–३०‴	२२ मिनट ० – ६ – २४
१ मिनट = ०–१७″′–३०	चालन + ० – २३–५५
२२ मिनट = ०–३७४–६६०	वक्री होने से
= ३८५‴–०	गुरु कन्या १२°–१५′–०″
= ६″–२५‴	चालन + २३ जोड़ा
	१२–१५–२३ कन्या

रा
∴ सायन गुरु ५–१२°–१५′–२३

शुक्र २४ घंटा = २८′–०″ गति	१ घंटा = १′–१०″
१ घंटा = × २३/२ ०′–५६″	२२ मि० = ०–२५–४०
+ १४	· चालन ऋण = १–३५–४०
१ घंटा = १–१०	शुक्र मेष ६°–४०′–०″
१ मिनट = ०–१′–१०″	चालन – ०–१–३५ घटाया
२२ मिनट ०–२२′–२२०″	६–३८–२५ मेष
= ०–२५–४०	

रा
∴ सायन शुक्र ०–६′–३८°–२५″

शनि वक्री २४ घंटा = ४′–०″ गति	१ घंटा = ०′–१०″
∴ १ घंटा = × २३/२ = ०′–१०″	२२ मिनट = ३–४०
१ मिनट = ०–०–१०	चालन + ०–१३–४०
२२ मिनट = ०–३–४०	वक्री होने से

शनि कन्या = २०°–५७′–०″

चालन + ०–०–१३ जोड़ा

२०–५७–१३ कन्या

रा
∴ सायन शनि ५–२०°–५७′–१३″

राहु २४ घंटा = ३′–११″ गति
१ घंटा = × २½ = ६″–२२‴
१–३५″
७=५७″
१ घंटा में = ८″–०
१ मिनट = ०–८
∴ २२ मि० = २–५६

१ घंटा में = ०′–८″–०
२२ मिनट = ०–२–५६
चालन + ०–१०–५६
वक्री होने से
राहु तुला – २८°–५७′–०″
चालन + ०–०–१०–५६ जोड़ा
= २८–५७–१०–५६
= २८–५७–११ तुला

∴ सायन राहु ६रा–२८°–५७′–११″

राहु + ६ राशि = केतु

राहु–६रा–२८°–५७′–११″
+६
केतु = ०–२८–५७–११

∴ सायन केतु ०रा–२८°–५७′–११″

उपरोक्त सायन ग्रह आये हैं इन में अयनांश घटा दो तो निरयन ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं।

उपरोक्त ग्रहों को अब निरयन बनाने के लिये अयनांश साधन करते हैं।

१८ मार्च १९२१ ईस्वी फालगुन शुक्ल ९ शुक्रवार सम्वत् १९७७ शाके १८४२ है।

यह लाघव पद्धति से अयनांश निकालते हैं

शाका १८४२
–४४४
६०) १३९८ (२३°
१२०
१९८
१८०
१८′

वर्प आरंभ का अयनांश २३°–१८′ हुआ। इष्ट काल तक का अयनांश निकालना है।

चैत्र शुक्ल १ से वर्ष आरंभ हुआ।

फा० शुदी १ तक = ११ मास। ९ तिथि तक ८ दिन। सब ११ मास ८ दिन हुए।

१२ मास में = ६०″ गति
१ मास में = ५″
१ दिन में = १०‴ ,,

११ मास में = ११ × ५″ = ५५″
८ दिन में = १०″ × ८ = ०–८०‴
= १–२०
∴ ११ मास ८ दिन में = ५६″–२०‴
चालन

वर्ष आरंभ का अयनांश = २३°–१८′–०″
चलित + = ०–०–५६
∴ तत्कालिक अयनांश = २३–१८–५६

सायन सूर्य रा ११–२७°–१७′–५″	चंद्र रा २–१४°–१३′–५″	मंगल रा ०–२४°–५८′–२७″
– अयनांश २३–१८–५६	–२३–१८–५६	–२३–१८–५६
∴ निरयन ग्रह = ११–३–५८–९	= १–२०–५४–९	= ०–१–३९–३१

बुध	गुरु	शुक्र
रा ११–३°–४१′–९″	५–१२°–१५′–२३″	०–६–३८–२५
२३–१८–५६	२३–१८–५६	–२३–१८–५६
= १०–१०–२२–१३	= ४–१८–५६–२७	= ११–१३–१९–२९
शनि	**राहु**	**केतु**
रा ५–२०°–५७′–१३″	६–२८°–५७′–११″	रा ०–२८°–५७′–११″
– २३–१८–५६	– २३–१८–५६	– २३–१८–५६
४–२७–३८–१७	६–५–३८–१५	= ०–५–३८–१५

इस प्रकार सायन ग्रह में से अयनांश घटाने से जो बचा वह निरयन ग्रह स्पष्ट हुआ। कई प्रकार के अयनांश निकालना आगे बताया गया है।

—: ० :—

अध्याय ७

ग्रह साधन के लिये सहायक सारिणियाँ

ग्रह स्पष्ट करने में जो पहिले गणित बताया है वह कुछ क्लिष्ट है। इस कारण ग्रह साधन की सुगमता के लिये आगे सारिणियाँ दी हैं। उनका उपयोग अच्छी प्रकार समझ लेना पड़ेगा क्योंकि उनका आगे बहुत काम पड़ेगा।

ग्रह साधन के लिये पहिले गुणनफल चक्र (देखिये चक्र अ, ब) दिया है जिसके सहारे गौमूत्रिका क्रम रीति से गुणा कर सरलता से ग्रहों की गति निकल आती है। आगे लाग्रतमिक रीति से घड़ी पल में ग्रहों की गति निकालने की सारिणी दी है। वह भी सुगम है। इनके उपयोग की रीति एक बार समझ में आने से फिर कोई अड़चन नहीं होगी।

गुणनफल चक्र की बनावट

ज्योतिष में बहुधा ६० अंकों के भीतर के अंकों का परस्पर ग्रह साधन आदि में या गोमूत्रिका क्रम से गणित करने में उपयोग होता है। उस के लिये यहाँ सुविधा के लिये चक्र बना दिया है। दोनों अंकों के गुणा करने में ६० से अधिक जो अंक आते हैं उन्हें ६० से शोधन कर इस चक्रमें रखा है। जैसे ५९ × ५९=५३१ का गुणा किया तो ३४८१ हुआ। इस में ६० का भाग दिया तो ५८–१ हुआ। यहाँ वही चक्र में रखा है। गुणा परस्पर एक जाति के अंकों में होगा। जैसे ५९ कला का ५९ कला में गुणा किया तो ३४८१ आये इस के अंश बनाये तो ५८–१ अंश आये। इसी प्रकार जिस जाति का गुणा किया है चक्र का अंक उस से ऊँची जाति का आयगा। जैसे यहाँ कला से गुणा किया तो ५८–१ आया। यहाँ १ तो कला आई और बांई ओर का अंक अंश समझना। यदि विकला से गुणा किया तो उत्तर ५८′–१″ समझना। इसी प्रकार गुणनफल के सब अंक ६० से भाग देकर चक्र में रखे हैं। कोई अंक ६० से अधिक नहीं है।

```
     २९५
६०) ३४८१ (५८
    ३००
    ४८१
    ४८०
      १
```

गुणनफल चक्र के देखने की रीति और उपयोग

चक्र अ में बाईं ओर और नीचे ३० के भीतर गुणा करने के अंक दिये हैं यदि दोनों संख्या जिनका गुणा करना है ३० या ३० के भीतर है तो बांई ओर का चक्र उपयोग करो जैसे २८ × २७ देखना है तो बांई ओर के २८ के सीध में नीचे दिये २७ के अंक के ऊपर दोनों के सीध में १२–३६ दिया है यही उत्तर आया।

यदि दोनों संख्या जिन का गुणा करना है ३० से अधिक है तो दाहिनी ओर ऊपर के अंकों से उत्तर मिलेगा। जैसे ५७ × ५६ = ५३—१२ दिया है।

उत्तर खोजते समय ध्यान में रखो कि दोनों गुणा करने वाली संख्याओं में जो बड़ी हो उसे दाहिने या बायें खड़े कोठों में खोजो। अल्प अंक को ऊपर या नीचे खोजो। जैसे २८ × २७ में २८ बड़ा अंक है। बायें खड़े कोठे में २८ खोजा और अल्प अंक २७ को नीचे के कोठे में खोजा फिर दोनों के सीध में उत्तर मिलेगा। यदि बड़ा अंक नीचे या ऊपर खोजोगे तो उत्तर नहीं मिलेगा। जैसे नीचे के २८ अंक के ऊपर देखोगे तो २७ की सीध ही नहीं मिलेगी। क्योंकि बांई ओर की २७ की सीध नीचे के २७ में ही अंत हो गई है।

इसी प्रकार ५७ × ५६ में ५७ को यदि ऊपर वाले कोठे में देखा जाय तो दाहिनी ओर के ५६ की सीध नहीं मिलेगी। दाहिनी ओर ५७ और ऊपर ५६ के सधी

में खोजोगे तो उत्तर ५३–१२ मिल जायगा। इस प्रकार गुणनफल खोजते समय उन दोनों में जो बड़ा अंक हो उसे पहिले खड़े कोठे में जो दाहिने या बाँयें दिये हैं खोजो और अल्प संख्या को ऊपर या नीचे के आड़े कोठे में से खोजो।

जिन संख्याओं का गुणनफल निकालना है उन में एक संख्या ३० से कम और दूसरी ३० से अधिक हो तो गुणनफल चक्र ब से उत्तर मिलेगा। इस में बड़े अंक खड़े कोठे में और छोटे अंक आड़े कोठे में दिये हैं। जैसे

५५ × ११ = खड़े कोठे में ५५ के सामने और ११ के नीचे उत्तर १०–५ दिया है।

ग्रह साधन के लिये उपयोग इस प्रकार होता है। मान लो चालन
दिन घड़ी पल विपल
४ – २१–२५–४० है अर्थात् इतने समय की गति निकालनी है। किसी ग्रह की गति मान लो ७′–३९″ है।

गति ७′–३९″ है इससे पहिले ७ कला का फिर ३९″ का गुणनफल चक्र से उत्तर खोजेंगे। अर्थात् पहिले ४ दिन की फिर २१ घड़ी की फिर २५ पल की, उपरान्त ४० विपल की गति निकाल कर जोड़ देगें तो उत्तर आ जायगा।

		°	′	″	‴	
४ दिन	४ × ७′ =	०	२८			
	४ × ३९″ =	०	२	३६		
२१ घड़ी	२१ × ५७′ =	०	२	२७		
	२१ × ३९″ =	०	०	१३	३९	
२५ पल	२५ × ७′ =	०	०	२	५५	
	२५ × ३९″ =	०	०	०	१६	१५
४० विपल	४० × ७′ =	०	०	०	४	२०
	४० × ३९″ =	०	०	०	०	२६ ०
	योग =	०	३३	१९	५५	२१ ०

इसमें उत्तर के लिये केवल ३३′–१९″ लेंगे शेष छोड़ देंगे। यह उक्त चालन की गति आई।

गुणा करते समय ध्यान देने योग्य बात यह है कि यहाँ दिन कला से बड़ा है तो उत्तर बड़ी जात अर्थात् अंश कला में आयगा। और विकला का गुणनफल कला विकला में आयगा।

घड़ी में कला का गुणनफल कला और विकला में और विकला का प्रति विकला में आता है।

यहाँ से गुणनफल में जाति घटती जायगी। पल का गुणा कला में करने से उत्तर विकला-प्रतिविकला में आया। इसी प्रकार आगे गुणनफल दिया है जैसे ऊपर बताया है।

गुणा करने में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि समान जाति के गुणनफल में जो २ अंकों में उत्तर आता है उसमें बाईं ओर का ऊँची जाति का अंक आवेगा। दाहिनो ओर का उसी जाति का अंक होगा। यदि गुणनफल में समान जाति नहीं हुई तो उत्तर हीन जाति में आवेगा।

		°	′	″	‴	iv
दिन × कला	=	अं	कला			
दिन × विकलो	=	०	कला	विकला		
घड़ी × कला	=	०	कला	विकला		
घड़ी × विकला	=	०	०	विकला प्रति विकला		
पल × कला	=	०	०	विकला प्रति विकला		
पल × विकला	=	०	०	०	प्रति विकला	तत्प्रति विकला
विपल × कला	=	०	०	०	प्रति विकला	तत्प्रति विकला
विपल × विकला	=	०	०	०	०	तत्प्रति विकला आदि

उपरोक्त चालन अब गोमूत्रिका क्रम से गुणा कर निकालते हैं जिसमें गुणनफल चक्र का उपयोग किया है।

दिन घड़ी पल विपल चालन

४–२१–२५–४०

× ७–३९ गति

					२६	०	
				१६	१५		
			१३	३९			
		२	३६				
				४	४०		
			२	५५			
		२	२७				
	०	२८					
	०	३२	७८	११४	८१	०	÷ ६०
		+१	+१	+१	=२१		
		३३	७९	११५			
			=१९	=५५			
=	०°–	३३′–	१९″–	५५‴–	२१		

यहाँ ३९ × ४०=२६–० आया ० उसी कोठे में रखा २६ बांई ओर के कोठे में रखा। फिर ३९ × २५=१६–१५, गुणनफल एक एक कोठा बाईं ओर हटता है तो २६ के नीचे १५ रखा और १६ बाईं ओर रखा। ३९ × २१=१३–३९ इस में १६ के नीचे ३९ रखा और १३ बायें कोठे में रखा। ३९ × ४=२–३६ इस ३६ को १३ के नीचे

रखा २ को वायें कोठा में रखा। अब ३६ का गुणा पूरा हो गया तो एक लकीर सब के नीचे खींच कर नीचे ७ का गुणा,करना आरम्भ किया। ४० × ७=४–४०, दाहिने छोर का १ कोठा छोड़ कर दूसरे कोठा में ४० और तीसरे कोठा में बाईं ओर ४ रखा। ७ × २५=२–५५ आया। ५५ को ४ के नीचे रखा और २ को बांई ओर के कोठा में रखा। ७ × २१ = २–२७ इस २७ को २ के नीचे रखा और २ को बाईं ओर के कोठे में रखा। ७ × ४ = ०–२८ इस २८ को २ के नीचे ओर ० को बाईं ओर के कोठे में रखा। अंत में नीचे लकीर खींच कर सब का योग लिख देना। योग करते समय ६० से अधिक अंक आवे तो ६० का भाग देकर शेष वहाँ रखे, लब्धि बांई ओर के कोठे के योग में जोड़ देवे।

इस प्रकार गुणा करने से जो अंक आता है दाहिनी ओर के एक एक कोठा छोड़ते हुए बाईं ओर रखते जाते हैं। जब नया अंक का गुणा आरम्भ करना होता है तो सब के नीचे लकीर खींच कर नीचे उस का गुणनफल दाहिनी ओर का एक एक कोठा छोड़ कर रखते जाते हैं। जैसे ३६ के गुणा से दाहिनी ओर पहिले ० आया था। अब ७ का गुणा करना आरम्भ किया तो पहिला गुणनफल ऊपर का पहिला कोठा छोड़ कर अर्थात् ० वाला कोठा छोड़ कर बाईं ओर के दूसरे कोठा में उत्तर रखेंगे। यदि इस के उपरान्त तीसरे अंक का भी गुणा करना होता है तो दाहिने ओर के कोठे २ कोठे छोड़ कर तीसरे कोठे में गुणनफल रखना आरम्भ करते हैं।

आगे गुणनफल के लिये स्थान-स्थान पर इस का उपयोग किया है। परन्तु ध्यान रहे जिसका विभाग ६० में होता है उस का ही गुणनफल इससे निकलता है अन्य का नहीं। जैसे अंश से कला विकला आदि और घड़ी पल विपल आदि में इन में ६०–६० का विभाग होता है। यदि जिसमें ३० का विभाग हो (जैसे ३०° की १ राशि होती है) इसके लिये जो उत्तर आवे उसको दुगना करके रखना। जैसे ३० अंश × २० अंश का गुणा किया तो ३० × २० का उत्तर चक्र में १०–० दिया है। परन्तु इसका दूना १० × २ = २० राशि उत्तर आयगा। क्योंकि ३० × २० = ६०० अंश हुए इसकी २० राशि हुई। इसके अतिरिक्त और दूसरे के गुणा करने में यह उपयोगी न होगा। केवल अंश कलादि में या घड़ी पल आदि में जब गुणा करना हो तब इस चक्र का उपयोग करो।

गुणनफल चक्र के सहारे गोमूत्रिका क्रम गणित से ग्रह के चालन की गति निकालने के और उदाहरण—

(१) गति ५६′–४०″
घ० प०
× इष्ट ४५–५०

		३३	२०	
	४६	१०		
......	......	......	......	
	३०	०		
४४	१५			
४५	३४	४३	२०	

= ४५′–३४″

या ५६′ × ४५ घड़ी =	४४′-	१५″	‴	
४०″ × ४५ घड़ी =		३०-	०	
	......	......	......	
५६′ × ५० पल =		४६	१०	
४०″ × ० पल =			३३	२०
योग	=४५	३४-	४३-	२०

= ४५′–३४″

(२) जब गति ६० से अधिक हो तो उसके अंश बनाकर गुणा करना।

गति ६०′–१०″ = १°–३०′–१०″ या गति ६०°–१०″ = ३०′–१०″

× इष्ट १५–३० × ६०–०

गति के २ टुकड़े = ६०–०

कर पृथक २ गुणा किया

				५	०
		१५	०		
	०	३०			
......	......	......	......	......	
		२	३०		
	७	३०			
०	१५				
०	२३	१७	३५	०	

= ०°–२३′–१७″

६०′ × १५ घड़ी =	१५′ –	०″	‴	
३०′ × १५ घड़ी =	७ –	३०		
१०″ × १५ घड़ी =		२–	३०	
६०′ × ३० पल =		३०	–०	
३०′ × ३० पल =		१५	–०	
१०″ × ३० पल =			५	
योग	२३	–१७	–३५	

= २३′–१७″

(३) गति १०८′–८″
= गति = १°–४८–८
× इष्ट ५०–४०

			५	२०
		३२	०	
	०	४०		
		६	४०	
	४०	०		
०	५०			
१	३१	१८	४५	२०

= १°–३१′–१८″

या गति १०८′–८″ = ६०–०
+ ४८–८
१०८–८

६०′ × ५० घड़ी =	५०–	०″	‴	
४८′ × ५० घड़ी =	४०–	०		
८″ × ५० घड़ी =		६–	४०	
६०′ × ४० पल =		४०	–०	
४८′ × ४० पल =		३२	–०	
८″ × ४० पल =			५–	२०
योग =	९१	–१८	–४५	–२०

९१′–१८″ = १°–३१′–१८″

(४) चन्द्र गति ७३३′–६″
= गति १२°–१३′–६″
× इष्ट ३० –२५ –२८

				२	४८
			६	४	
		५	३६		
			२	३०	
		५	२५		
	५	०			
		३	०		
	६	३०			
६	०				
६	११	४४	९	३६	४८

= ६°–११′–४४″

या १२° × ३० घड़ी =	६°	०″	०‴	‴		
१३′ × ३० घड़ी =		६	३०			
६″ × ३० घड़ी =			३	०		
१२° × २५ पल =		५	०			
१३′ × २५ पल =			५	२५		
६″ × २५ पल =				२	३०	
१२° × २८ वि० =			५	३६		
१३′ × २८ वि० =				६	४	
६″ × २८ वि० =					२	४८
योग =	६	११	४४	९	३६	४८

= ६°–११′–४४″

लाघ्रतमिक कोष्टक से ग्रह गति साधन की रीति

यहाँ इष्ट काल की घड़ी पल के अनुसार ग्रह की गति निकालने की रीति दी है। कई पंचांगों में ग्रहों की दैनिक गति दी रहती है उन से इष्ट काल की गति निकालने के लिये, इष्ट घड़ी पल की जो गति प्राप्त हो उसे पंचांग में दिये हुए मार्गी ग्रह में जोड़ने से और वक्री ग्रह में घटाने से इष्ट काल का ग्रह स्पष्ट हो जायगा।

यहाँ सारिणी में दिये अंक लाग्रतमिक की रीति से निकाल कर रखे गये हैं। घटी पल में इस की कोई सारिणी प्राप्त नहीं थी इस कारण बड़े परिश्रम से बनाई गई है।

सारिणी देखने की रीति

इष्ट काल की घड़ी पल लो। सारिणी में सब से ऊपर की आड़ी पंक्ति में ० से ५९ तक घड़ी दी है और खड़े कोष्टक में बाजू से छोर में पल के अंक दिये हैं। यदि ऊपर की पंक्ति पल मानो तो बाजू के खड़े कोष्टक में दिये हुए ० से ५९ तक अंक को विपल मानो। इन के सीध में जो सारिणी अंक दिया हो उसे इष्टकाल का सारिणी अंक मानो

उपरान्त गति का सारिणी अंक खोजो। गति कला विकला में दी हो तो ऊपर की आड़ी पंक्ति के ० से ५९ तक के अंक को कला मानो और खड़ी पंक्ति के अंक को जो छोर में दिये हैं विकला मानो। इन के सामने जो अंक प्राप्त होगा वह गति का सारिणी अंक कहलायगा।

उपरान्त प्राप्त इष्ट के सारिणी अंक और गति के प्राप्त सारिणी अंक को जोड़ दो तो वह योगांक हुआ।

फिर सारिणी में खोजो वह योगांक कहाँ दिया है उसके समीप का अंक खोजना। परन्तु ध्यान रहे उस योगांक के बराबर सारिणी में अंक न मिले तो उस से कुछ बड़ा जो सारिणी अंक दिया हो वह लेना। क्यों कि सारिणी में आगे के अंक अल्प होते जाते हैं इस कारण उस के बराबर का अंक न मिले तो कुछ बड़ा अंक लेना बताया है। यह योगांक का प्राप्त सारिणी अंक हुआ। इस के ऊपर जो अंक हो उसे कला उस के सीध में बाजू से जो खड़े कोठे में अंक दिया हो उसे विकला मानो। यही इष्टकाल की गति कला विकला प्राप्त हुई। यदि पंचांग में गति अंश कला में दी हो तो उत्तर अंश कला में आवेगा इस का ध्यान रहे।

यदि अंश कला में गति प्राप्त हुई है और उस की विकला की भी गति और निकालनी हो तो इस प्रकार निकालना:—

योगांक को प्राप्त सारिणी अंक से घटाना। क्यों कि योगांक से वह सारिणी अंक अधिक है और उस अधिक अंक की गति कला विकला में निकालनी है। इसे योगांक अंतर कहेंगे। फिर सारिणी में योगांक का प्राप्त अंक लो। यह प्राप्त सारिणी अंक हुआ। इस प्राप्त सारिणी अंक के आगे कोष्टक का सारिणी अंक लो यह अग्रिम कोष्टक अंक हुआ। प्राप्तसारिणी अंक से अग्रिम कोष्टक का सारिणी अंक घटाना जो शेष बचे वह सारिणी अंतर हुआ। यह अंतर १ कला = ६० विकला का निकला।

अब गणित से निकालो कि इतना सारिणी अंतर ६०″ में पड़ता है तो योगांक अंतर में कितने विकला होंगे ? = (योगांक अंतर × ६०) ÷ सारिणी अंतर । यहाँ गणित करने के लिये केवल ४ अंक लो अंत के ३ अंक छोड़ दो । उत्तर विकला में आयगा । उपरोक्त प्राप्त अंश कला और यह विकला गति स्पष्ट हुई ।

उदाहरण

मान लो इष्ट घड़ी पल और ग्रह गति ५′–१०″ है ।

१२–२० सारिणी अंक

इष्ट १२ घड़ी के नीचे और २० पल के सामने=०·६८७०७०८ है

गति ५ कला „ „ „ १० „ „ „ =१·०६४६४०८

इनको जोड़ा=योगांक=१·७५२०११६

सारिणी में योगांक के समीप का अंक खोजा तो इस प्रकार मिला ।

१′–३″–१·७५६९६२० योगांक के समीप का इसके आगे का अंक १′–४″ = १·७"०१२२५=अग्रिम कोष्टक अंक

योगांक के समीप का अंक १·७५६९६२० सारिणी में दिया है वह लिया क्यों कि यह योगांक से कुछ बड़ा है और आगे का अंक छोटा है इस कारण उसे छोड़ दिया । यह प्राप्त सारिणी अंक हुआ । इस के उपर १ दिया है और बाजू से छोर में ३ दिया है । इस कारण उत्तर १′–३″ गति हुई । यदि ग्रह की गति ५°–१०′ होती तो उत्तर भी अंश कला में आता अर्थात् १°–३′ गति निकलती ।

मान लो अंश कला में गति दी है और विकला में भी गति निकालनी है तो प्राप्त १°–३′ का प्राप्त अंक =१·७५६९६२० योगांक के समीप का । अग्रिम १°–४′ का सारिणी अंक =१·७"०१२२५ अगिम कोष्ट अंक घटाया १′ का कोष्टक अंतर =शेष =०·००६८३९५

=०·००७

प्राप्तसारिणी अंक = १°–३′ का= १·७५६९६२०

योगांक घटाया = १·७५२०११६

योगांक अंतर= शेष = ०·००४९५०४

= ·००५

$$\frac{\text{·००५} \times \text{६०}}{\text{·००७}} = \frac{\text{·३००}}{\text{·००७}} = \frac{\text{३००}^{\circ}}{\text{७}} = \text{४३}''$$

पूर्व प्राप्त १°–३′ और ४३″= १°–३′–४३″ इष्ट काल की प्राप्त गति हुई ।

दूसरा उदाहरण

घ० प०

इष्ट २०–३० गति ३२′–४०″ है।

इष्ट २० घड़ी के नीचे ३० पल के सामने सारिणी अंक = ०४६६३९७४

गति ३२ कला „ „ ४० विपल „ „ = ०·२६४०४६४

योगांक के समीप का सारिणी अंक = ०·७३०८७६४ = योगांक = ०·७३०४४३८

है इस के ऊपर ११′ और बाजू से ९ दिया है। अपनी गति कला विकला में थी इस कारण यह ११′–९″ प्राप्त गति हुई।

मान लो गति अंश कला में था तो उत्तर ११°–९′ आया अब विकला भी निकालना है तो

११°–९′ प्राप्त सारिणी अंक =.७३०८७६४

११°–१०′ अग्रिम „ „ =·७३०२२२७ घटाया

कोष्टक अंतर ६०″ में =·०००६४३७

=·०००६

११°–९′ प्राप्त सारिणी अंक =.७३०८७६४

योगांक घटाया =·७३०४४३८

= योगांक अंतर =·०००४३२६

=·०००४

$\frac{\cdot 0004 \times 60}{\cdot 0006} = \frac{\cdot 0240}{\cdot 0006} = \frac{240\cdot}{6} =$ ४०″ इसमें जोड़ने से प्राप्त गति ११°–९′–४०″ हुई।

(३) तीसरा उदाहरण

घ० प०

इष्ट ५०–५० गति ५६′–३०″ है।

इष्ट ५०–५० = ०·०७१२९१३

गति ५६–४० = ०·०२४८२३६

योगांक = ०·०९६११४९

समीप का सारिणी अंक = ०·०९६१५६७ = ४८′–५″ गति

∴ इष्टकाल की प्राप्त गति ४८′–५″

(४) चौथा उदाहरण

इष्ट १–४० गति ५९′–५५″

घ० प०　　　घ० प०

इष्ट १–४० = १·५५६३०२५

+ गति ५९′–५५″ = ०·०००६०३६

योगांक　= १·५५६९०६१

इसके समीप का कुछ बड़ा अंक } १·५६०६६७३ = प्राप्त गति १′–३९″ हुई

(५) पाँचवाँ उदाहरण

घ०:प०

इष्ट १५–५, गति १′–४७″ है।

घ० प०

इष्ट १५–५ = ०·५९९६५३९

+ गति १′–४″ = १·५२६११८७

योगांक　= २·१२६५७२६

समीप का कुछ बड़ा = २·१४१३२९२ = ०′–२६″

∴ इष्ट काल की प्राप्त गति ०′–२६″ हुई।

यहाँ ६० कला तक की गति निकालना सारिणी में बताया है। परन्तु गति कभी-कभी साठ से अधिक भी होती है। जब गति ६०′ से अधिक हो तो उसके अंश बना लेने चाहिए। यदि इस प्रकार परिवर्तन करने में अंश कला के साथ विकला भी गति हो तो उस की रीति :—

गति की अंश कला का सारिणी अंक लेना और उसके अग्रिम सारिणी अंक का अंतर करना तो वह १′ या ६०″ का सारिणी अंक का अंतर निकला। ६० विकला में यह सारिणी अंतर है तो इष्ट विकला में कितना होगा ? सारिणी अंतर में इष्ट विकला का गुणा कर ६० का भाग दो जो उत्तर आवेगा उसे अंश कला के सारिणी अंक से घटा देना तो पूरी गति का सारिणी अंक निकल आयगा। फिर इस गति के प्राप्त सारिणी अंक में इष्ट का सारिणी अंक जोड़ो तो योगांक होगा। उस के समीप के सारिणी अंक के ऊपर जो अंश और बाजू से जो कला दी हो वह अंश कला गति निकली। यदि विकला में भी गति निकालनी है तो उपरोक्त रीति से निकाल लो। अर्थात योगान्तर में ६० का गुणा कर कोष्टक अंतर से भाग दो तो विकला गति भी प्राप्त हो जायगी।

उदाहरण

घ०–प०

चंद्रगति८४५'–३५" है =१४°–५'–३५ इष्ट १५–५१ है।

गति १४°–५=०·६२९४४५८
१४ –६=०·६२८९३२१
१' में अंतर =०·०००५१३७

६०" में इतना अंतर तो३५" में कितना होगा ?

$$\frac{\text{०·०००५१३७}\times\text{३५}}{\text{६०}} \quad (\text{३५}\to\text{७},\ \text{६०}\to\text{१२}) =$$

$$=\frac{\text{·००३५९५९}}{\text{१२}}=\text{·०००२९९६}$$

१४°–५' का =०·६२९४४५८
३५" का =०·०००२९९६ घटाया
शेष ०·६२९१४६२

१४°–५'–३५" का =०·६२९१४६२
+ इष्ट : १५–५१ का =०·५७८१२२०
योगांक =१·२०७२६८२

१४°–५' का सारिणी अंक दिया है परन्तु ३५" का भी चाहिए तो अग्रिम अंक से उस का अंतर निकाला

·०००५१३७
× ७

५२) ·००३५९५९ (·०००२९९६
२४
११९
१०८
११५
१०८
७९
७२
७

योगांक = १·२०७२६८२
समीप का = १·२०७९९७६ = ३°–४३' गति अब विकला भी निकालनी है।

समीप का = १·२०७९९७६ = ३°–४३'	३°–४३' = १·२०७९९७६
आगे का = १·२०६०५४५ = ३ –४४	+ योगांक = १·२०७२६८२
	योगान्तर = ०·०००७२९४

१' में अंतर = ०·००१९४३१ = कोष्ठक अंतर = ·०००७
= ००१९

$$\frac{\text{·०००७}\times\text{६०}}{\text{·००१९}}=\frac{\text{·०४२०}}{\text{·००१९}}=\frac{\text{४२०}}{\text{१९}}=\text{२२}''$$

= ३–४३'–२२" गति आई।

जब किसी ग्रह की गति ६० कला से अधिक हो तो चालन की गति इसी सारिणी से इस प्रकार निकल सकते हैं।

जब गति ६० से अधिक हो तो इसके प्रत्येक टुकड़े इस प्रकार करो जो ६०' से कम हो। उपरांत पहिला टुकड़ा और इष्ट से जो गति प्राप्त हो उसे दूसरे टुकड़े और इष्ट से प्राप्त गति में जोड़ देने से चालन की गति प्राप्त हो जाती है।

(१) उदाहरण

घ० प०
गति ६४′–५६″ इष्ट २८–२९
गति ५९′–५६″ एक तुकड़ा
+५–० दूसरा तुकड़ा
योग ६४–५६

=चालन की गति ३०′–४९″

(१) गति ५९′–१६″=०·०००४८२८
+इष्ट २८–२९ =०·३२३५६०४
योग=०·३२४०४३२
इससे कुछ अधिक=०·३२४०६९०=२८′–२७″
(२) गति ५′–०″=१·०७९१८१२
+इष्ट २८–२९=०·३२३५६०४
योग=१·४०२७४१६–
=१·४०४०१४२=२′-२२″

योग ३०–४९

घ० प०
(२) गति १०८′–२०″ इष्ट ३०–१०
गति ५८′–२०″ एक तुकड़ा
+५०–० दूसरा तुकड़ा
योग = १०८–२०

=५४′–२८ गति चालन

(१) गति ५८′–२०″=०·०१२२३४५
+इष्ट ३०–१० =०·२९८६२३९
योग=०·३१०८५८४
०·३११०३६७=२९′–२०″
(२) गति ५०′–०″=०·०७९१८१२
+इष्ट ३०–१०=०·२९८६२३९
योग=०·३७७८०५१
=०·३७७९०१२=२५–८

योग ५४–२८

घ० प०
(३) गति १००′–५०″ इष्ट ४२-४९
गति ५५–५० (१) तुकड़ा
+४५–० (२) तुकड़ा
योग=१००–५०

चालन की गति ७१°–५६″
=१°–११′–५६″

(१) गति ५५′–५०″=०·०३१२५७७
+इष्ट ४२–४९ =०·१४६५३८४
योग=०·१७७९६६१
=०·१७७९०४६=३९′–५०″
(२) गति ४५′–०″ =०·१२४९३८७
+इष्ट ४२–४९ =०·१४६५३८४
योग=०·२७१४७७१
=०·२७१६४६२=३२–६

योग=७१–५६

घ० प०

(४) चंद्र गति ८४५'–३क'' इष्ट १५–५१

गति के तुकड़े

(१) = ५९–३५
(२) = ५९–०
(३) = ५९–०
(४) = ५९–०
(५) = ५९–०
(६) = ५९–०
(७) = ५९–०
(८) = ५९–०
(९) = ५९–०
(१०) = ५९–०
(११) = ५९–०
(१२) = ५९–०
(१३) = ५९–०
(१४) = ५९–०
(१५) = १९–०

योग = ८४५–३५

(१) ५८'–३५'' गति = ०·००३०२६५
+ १५–५१ इष्ट = ०·५७८१२२०

योग = ०·५८११४८५
= ०·५८१३३०५ = १५'–४४''

(२) ५९'–०'' गति = ०·००७२९९२
+ १५–५१ इष्ट = ०·५७८१२२०

योग = ०·५८५४२१२
= ०·५८५५९०९ = १५'–३५''

इसी प्रकार क्रम २ के समान क्रम ३ से १४ तक
१२ तुकड़े हैं। १५'–३५'' × १२ = १८७'–०''

(१५) १९–० गति = ०·४९१३९७६
+ १५–५१ इष्ट = ०·५७८१२२०

योग = १·०७७५१९६
= १·७७७७३६० = ५–१''

(१) १५'–४४''
(२) + १५ –३५ = चालन की गति
(३) से (१४) } + १८७–० २२३'–२०'' = ३°–४३'–२०''
(१५) + ५–१

योग = २२३–२०

राहु की गति साधन करने की सारिणी

राहु केतु की सदा एक सी गति रहती है: इस कारण इस सारिणी द्वारा इष्ट काल की गति सरलता से निकाली जा सकती है।

राहु साधन सारिखी गति ३′–११″

दिन	°	′	″	दिन	°	′	″	दिन	°	′	″
घड़ी	′	″	‴	घड़ी	′	″	‴	घड़ी	′	″	‴
पल	″	‴	iv	पल	″	‴	iv	पल	″	‴	iv
विपल	‴	iv	v	विपल	‴	iv	v	विपल	‴	iv	v
१	०	३	११	२१	१	६	५१	४१	२	१०	३१
२	०	६	२२	२२	१	१०	२	४२	२	१३	४२
३	०	९	३३	२३	१	१३	१३	४३	२	१६	५३
४	०	१२	४४	२४	१	१६	२४	४४	२	२०	४
५	०	१५	५५	२५	१	१९	३५	४५	२	२३	१५
६	०	१६	९	२६	१	२२	४६	४६	२	२६	२६
७	०	२२	१७	२७	१	२५	५७	४७	२	२९	३७
८	०	२५	२८	२८	१	२९	८	४८	२	३२	४८
९	०	२८	३९	२९	१	३२	१९	४९	२	३५	५९
१०	०	३१	५०	३०	१	३५	३०	५०	२	३९	१०
११	०	३५	१	३१	१	३८	४१	५१	२	४२	२१
१२	०	३८	१२	३२	१	४१	५२	५२	२	४५	३२
१३	०	४१	२३	३३	१	४५	३	५३	२	४८	४३
१४	०	४४	३४	३४	१	४८	१४	५४	२	५१	५४
१५	०	४७	४५	३५	१	५१	२५	५५	२	५५	५
१६	०	५०	५६	३६	१	५४	३६	५६	२	५८	१६
१७	०	५४	७	३७	१	५७	४७	५७	३	१	२७
१८	०	५७	१८	३८	२	०	५८	५८	३	४	४८
१९	१	०	२९	३९	२	४	९	५९	३	७	४९
२०	१	३	४०	४०	२	७	२०	६०	३	११	०

दिन की गति = अंशादि में निकलेगी

घड़ी ,, ,, = कलादि ,, ,,

पल ,, ,, = विकलादि ,, ,,

विपल ,, ,, = प्रति विकलादि ,, ,,

उदाहरण—दिन घ० प० को गति निकालनी है :—

२–५९–५०

२ दिन = ०°–६′–२२″–०‴–०

५९ घड़ी = ३ – ७–४९

५० पल = २–३९–१०

योग = ०–९–३२–२८–१०

= ०°–९′–३२″ गति चालन

अध्याय ८

अयनांश साधन

सायन सूर्य बनाने के लिये अयनांश साधन करने की आवश्यकता पड़ती है। अयनांश साधन करने की सब से सरल युक्ति (ग्रहलाघव के अनुसार) पहिले बता चुके हैं। साधारण प्रकार से ज्योतिषी लोग उसे ही व्यवहार करते हैं। परन्तु भिन्न २ आचार्यों की पद्धति भिन्न २ हैं जिन को भी विद्यार्थी को जान लेना आवश्यक है। इस कारण इन को भी यहाँ बताया है।

(१) सन् ईस्वी से अयनांश निकालना

(सन ईस्वी–३९७) × ५०$\frac{१}{३}$″ = अयनांश विकला (इस के अंश बना लो) जैसे

(सन १९४३–३९७) × ५०$\frac{१}{३}$ = १५४६ × $\frac{१५१}{३}$

= $\frac{२३३४४६}{३}$ = ७७८१५″ = १२९६′–५५″ = २१°–३६′–५५″ अयनांश

```
  १५४६
 ×१५१
 -----
  १५४६
 ७७३०
१५४६
----------------
३ )२३३४४६( ७७८१५  विकला
   २१
   --
    २३
    २१
    --
     २४
     २४
     --
      ०४
       ३
      --
       १६
       १५
       --
        १
```

```
         विकला
६० ) ७७८१५ ( १२९६
     ६०          कला   कला
     ---
     १७८         ६० ) १२९६ ( २१
     १२०              १२०    अंश
     ---              ---
      ५८१              ९६
      ५४०              ६०
      ---              ---
       ४१५             ३६
       ३६०             कला
       ---
        ५५
      विकला
```

= अयनांश २१°–३६′–५५″

(२) ग्रह लाघव द्वारा अयनांश साधन

इस के हिसाव से अयनांश की वार्षिक गति ६० विकला आती है।

$$\frac{\text{शाका}-४४०}{६०} = \text{अयनांश} \quad (\text{धनात्मक})$$

जब इस प्रकार आया हुआ अयनांश २७° से अधिक हो तो ५४ में से घटा कर शेष लेना वह ऋणात्मक अयनांश होगा अर्थात् जब तक शून्य अन्तर नहीं होगा इसे (अयनांश के) जोड़ने की जगह घटाना पड़ेगा।

उदारहरण शाके १८६५

```
      -४४५
६० ) १४२१ ( २३°
     १२०
     ----
      २२१
      १८०
     ----
       ४१'
```

∴ अयनांश २३°–४१′ हुआ। यह वर्ष के आरंभ का अयनांश हुआ। यदि वर्ष के और किसी मास तक का अयनांश निकालना है तो तात्कालिक अयनांश निकाल कर जोड़ देना।

तात्कालिक अयनांश निकालना

$$(\text{उस मास की सूर्य राशि} \times ३) + \left(\frac{\text{उस मास की सूर्य राशि} \times ३}{२}\right) = \text{विकला}$$

जैसे कार्तिक का अयनांश निकालना है। कार्तिक में तुला का सूर्य होता है। तुला=७।

$$\left(\begin{matrix}\because\text{सूर्य राशि} \\ ७\times३\end{matrix}\right) + \left(\frac{७ \text{ सुर्य राशि} \times ३}{२}\right) = २१ + \frac{२१}{२} = २१ + १०\frac{१}{२} = ३१\frac{१''}{२}$$

विकला

= विकला–प्रति विकला

३१–३० तात्कालिक अयनांश हुआ। यहाँ ३० प्रति विकला छोड़ दिया।

वर्ष आरंभ का अयनांश = २३°–४१′–०″

× तात्कालिक अयनांश = ०– ० –३१

∴ स्पष्ट अयनांश = २३ –४१–३१

दूसरा उदाहरण (अन्य प्रकार से)

शाके १८११ फाल्गुन कृष्ण १३ का अयनांश साधन करना है।

शाके १८११
−४४४
६०)१३६७(२२°
१२०
१६७
१२०
४७′
= वर्ष आरम्भ का अयनांश
= २२°४७′ हुआ

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा से माघ शुक्ल १ तक = १० मास और माघ शुक्ल के १५ दिन।
फाल्गुन कृष्ण १३ तक और १३ दिन = (१५ + १३) = २८ दिन। सब मास-दिन।
१०–२८

अयनांश की गति :—

१२ मास में = ६०″ है
१ मास में = ५″
१ दिन में = १०‴ प्रति विकला
= $\frac{१}{६}$″ विकला

१० मास = १० × ५″ = ५०″
२८ दिन = २८ × $\frac{१}{६}$″ = ४–४०‴
मा० दि०
∴ १०–२८ का = ५४–४० = ५५″ चलित

वर्ष आरम्भ का २२°–४७′–०″
चलित ५५
= २२–४७–५५
तात्कालिक अयनांश
∴ तात्कालिक अयनांश
२२°–४७′–५५″

या इस प्रकार निकालो।
मा० दि०
३६५ दिन ६०″ तो (१०–२८) = ३२८ दिन में कितने होंगे।

$$\frac{३२८ \times ६०}{३६५} = \frac{३९३६}{७३} = ५३″–५५‴$$
(६० व ३६५ को ५ से काटकर: १२, ७३)
= ५४″

यहाँ दिन के हिसाब से ३६५ दिन का वर्ष लेने पर केवल १″ का अन्तर आया। कोई विशेष अंतर नहीं है।
परन्तु उपरोक्त रीति से तात्कालिक अयनांश निकालना सरल है।

(३) केतकर मत से अयनांश साधन

$$(\text{शाका}–१८००) = \text{अंतर} \left(\frac{\text{अंतर}}{७०} \text{ अंश} – \frac{\text{अंतर}}{५०} \text{ कला} \right) + \text{क्षेपक} = \text{अयनांश।}$$
२२°–८′–३३″

जैसे शाका १८६५

$$\text{अंतर} = \frac{१८०० \text{ घटाया}}{६५} \left| \left(\frac{६५°}{७०} \right) – \left(\frac{६५′}{५०} \right) + \left(\text{क्षेपक } २२°–८′–३३″ \right) \right.$$

७०)६५(० अंश =(०°–५५′–४२″)–(०°–१′–१८″)+२२°–८′–३३″)
×६० =(०°–५४′–२४″)+(२२°–८′–३३″)

७०)३९००(५५′ ५०)६५(१′ = २३°–१′–५७″ अयनांश

३५० ५०

४०० १५×६०

३५० ५०)९००(१८″

५०×६० ५०

७०)३०००(४२″ ४००

२८० ४००

२०० ०

१४० ०°–५५′–४२″

६० –०–१–१८ घटाया

० –५४–२४

+२२ – ८ –३३

अयनांश = २३ – २ –५७

इसमें शाका १८०० का अयनांश निकाल लिया गया है जिसे क्षेपक कहते हैं। उसके आगे जितने कलादि अयनांश होता है शाका १८०० के अयनांश अर्थात् क्षेपक में जोड़ दिया जाता है जिससे इष्ट वर्ष का अयनांश निकल आता है।

यदि शाके १८०० के पहिले का अयनांश निकालना हो तो गणित से १८०० शाका और इष्ट शाका के अंतर के अनुसार जो अयनांश आवे उसे १८०० शाका के अयनांश (क्षेपक) में से घटा देने से इष्ट वर्ष का अयनांश निकल आयेगा।

(क्षेपक (२२°–८′–२३″)) – (अंतर/७० अंश – अंतर/५० कला) ७०)२०(०° ५०)२०(०′
×६० ×६०

जैसे शाका १७८० का अयनांश निकालना है। ७०)१२००(१७′ ५०)१२००(२४″

१८०० (क्षेपक (२२–८–३३)) – (२० अंतर°/७० – २०′/५०) ७० १००

–१७८० =(२२–८–३३)–[(०°–१७′–८″)– ५०० २००

(०°–०′–२४″)] ४९० २००

अंतर = २० वर्ष =(२२–८–३३)–(०°–१६′–४४″) १०×६० ०

=११°–५१′–४९″ अयनांश ७०)६००(८″

५६०

४०

इसके हिसाब से अयनांश की वार्षिक गति ५०″–२०‴ के लगभग होती है।

इस चैत्र पक्षीय अयनांश की सारिणी भी है।

अयनांश सारिणी

वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००
कला	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	१६	२५	३३	४१	५०	५८	६६	७५	८३
विकला	५०	४०	३१	२१	११	१	५१	४२	२२	२०	४४	७	२९	५२	१४	३६	५९	२२	४३

शाका १८०० का अयनांश २२°–८′–३३″ है। इसके आगे जितने वर्ष हों उतने की कला विकला और जोड़ो तो इष्ट अयनांश प्राप्त होगा। यदि १८०० शाका के पहिले का जानना है तो उसे घटाकर अयनांश निकालना।

जैसे शाका १८६५ में ६५ अधिक है तो ६०=५०′–१४″=सारिणी से

५= ४ –११ ,,

+१८०० का=२२–८–३३

योग २३–२–५८ अयनांश

शाका १७८० में २० वर्ष कम है।

१८०० का=२२°–८′–३३″

–२० वर्ष का= १६–४४ घटाया

१७८०=शेष=२१–५१–४९

का अयनांश

(४) सिद्धांत सम्राट द्वारा साधित अयनांश

इसके हिसाब से अयनांश की वार्षिक गति ५१ विकला होती है।

$$\left(\frac{\text{शाका}-२७८}{७०}\right)=\text{अंशादि अयनांश}$$

=शाका

$$\frac{१८६५-२७८}{७०}=\frac{१५८७}{७०}=२२^\circ-४०'-१७''$$

अयनांश

∴ अयनांश २२°–४०′–१७″

जैसे १८६५ शाका

–२७८ घटाया

७०)१५८७(२२

१४० अंश

१८७

१४०

४७×६०

७०)२८२०(४०′

२८०

२०×६०

७०)१२००(१७″

७०

५००

४९०

१०

(५) मकरन्द द्वारा अयनांश साधन

(शाका−४२१) = अंतर (अंतर − $\frac{\text{अंतर}}{१०}$) ÷ ६० = अयनांश वर्ष आरम्भ का।

चलित अयनांश = $\frac{\text{तात्कालिक सुर्य अंशादि} \times ३}{२०}$ = विकला

(तात्कालिक अयनांश) = तत्कालिक सूर्य के अंश बना कर ३ का गुणा कर २० का भाग दो तो विकला गति होगी।

आरम्भ का अयनांश + चलित अयनांश = तात्कालिक अयनांश।

जैसे शाका १८६५
− ४२१ घटाया
अंतर = १४४४

$$\frac{(१४४४) - \left(\frac{१४४४}{१०}\right)}{६०} = \frac{१४४४ - (१४४ - २४)}{६०}$$

(ऊपर: अंतर अंतर)

$$= \frac{१२९९-३६}{६०} = २१^\circ - ३९' - ३६''$$ वर्ष आरम्भ का अयनांश

१०)१४४४(१४४
१०
४४
४०
४४
४०
४ × ६०
१०)२४०(२४
२०
४०
४०
०

१४४४−०
−१४४−२४ घटाया
६०)१२९९−३६(२१°
१२०
९९
६०
३९ × ६०
२३४०
+३६
६०)२३७६(३९′
१८०
५७६
५४०
३६

३६
× ६०
६०)२१६०(३६″
१८०
३६०
३६०
०

तात्कालिक अयनांश निकालना

दिनांक १७–७–१६४३ ई० आषाढ़ पूर्णिमा सम्वत् २००० शाके १८६० का निकालना है।

रा

उस दिन का प्रातः सूर्य ३–०°–१४′–२८″ है

इस के अंश बनाये ६०°–१४′–२८″

तात्कालिक सूर्य अंश

$$\frac{(६०°–१४′–२८″)\times ३}{२०} = \frac{२७०°–४३′–२४″}{२०}$$

= १३″–३२‴

= १४ चलित अयनांश

२०) २७०–४३–२४ (१३″
२०
७०
६०
१० × ६०
६०० + ४३
२०) ६४३ (३२‴
६०
४३
४०
३

वर्ष आरंभ का अयनांश = २१°–३६′–३६″

चलित ,, = ० –१२ –३२

= २१–३६–४६–३२

∴ तात्कालिक अयनांश = २१°–३६′–४६″

इस रीति के अनुसार अयन गति १ दिन में ६ प्रति विकला है। १ वर्ष में = (६ × ३६०) = ३२४०‴ प्रति विकला $= \frac{३२४०″}{६०}$ = ५४ विकला।

ऊपर जो रीति बताई है उसका स्पष्टीकरण नीचे दिया है।

(६०–६) = ५४ विकला $= \frac{६०–६}{६}$ कला $= \left(\frac{६०}{६०} - \frac{६}{६०}\right) = \left(१ - \frac{१}{१०}\right)$ कला। इसी सिद्धान्त पर अयनांश निकालना बताया है।

(इष्ट वर्ष–४२१) = गत वर्ष

$$\frac{(१-\frac{१}{१०})\times १० \text{ वर्ष}}{१ \text{ वर्ष}} = \left(\text{गतवर्ष} - \frac{\text{गतवर्ष}}{१०}\right) = \text{कला} = \text{कला} \div ६० = \text{अयनांश}$$

$$\frac{५४ \times \text{इष्टअंश सूर्य का}}{३६०} = \frac{\text{इष्ट अंश} \times ३}{२०} = \text{विकला।}$$

(६) सूर्य सिद्धांत द्वारा अयनांश साधन

पहले अहर्गण साधन करते हैं फिर अहर्गण से अयनांश बनाया जाता है।
१महायुग = (३० × २०) = ६००भगण अयनांश का

युग कुदिन = १५७७९१७८२८

$$\frac{\text{अहर्गण} \times \text{अयनांश भगण } ६००}{\text{युग कुदिन } १५७७९१७८२८} = \text{राश्यादि} \quad \frac{\text{इस का भुज} \times ३}{१०} = \text{इष्ट कालिक अयनांश}$$

$$\frac{\text{अहर्गण} \times ६००}{१०७७९१७८२८} = \text{लब्धि भगण} \quad \frac{\text{शेष} \times १२}{\text{युग कुदिन}} = \text{लब्धि राशि}$$

इसी प्रकार $\frac{\text{शेष} \times ३०}{\text{यु० कु० दिन}}$ = लब्धि अंश, $\frac{\text{शेष} \times ६०}{\text{यु०कु०दिन}}$ = लब्धि कला

$$\frac{\text{शेष} \times ६०}{\text{यु०कु०दिन}} = \text{लब्धि विकला ।}$$

इस प्रकार जो उत्तर भगण, राशि, अंश, कला, विकला आवे उस का भुज अंश बना लेना । इस में ३ का गुणा कर १० का भाग देना जो उत्तर आवे वह अयनांश होगा ।

इस रीति से अयनांश बनाने के लिये पहिले अहर्गण बनाना पड़ता है । अहर्गण पर से अयनांश निकाला जाता है; जिसके निकालने की रीति ऊपर बता चुके हैं । नीचे अहर्गण साधन करने की रीति दी है ।

यहाँ सूर्य सिद्धान्त के मत से अहर्गण साधन करना बतलाते हैं—वर्तमान शाका + ३१७९ = कलिगत वर्ष

(कलिगत वर्ष × १२) + गतमास (चैत्रादि) = अ

$$\text{अ} + \frac{\text{अ} + \frac{\text{अ}}{७०}}{३३} \times ३० + \text{गत तिथि} = \text{ब}$$

$$\text{ब} - \left(\frac{\text{ब} \times ११}{७०३}\right) = \text{शेष इष्ट युगादि (कलियुगादि) अहर्गण}$$

श्रावण शुक्ल १२ बुधवार सम्वत् १९७० शाका १८३५ का अहर्गण सूर्य सिद्धान्त की रीति से साधन करते हैं ।

$$\left(\begin{matrix}\text{शाका} & \text{कलियुगादि अहर्गण} \\ १८३५ + & ३१७९\end{matrix}\right) = \text{कलिगत वर्ष}$$

कलिगत वर्ष × १२ + गतमास (चैत्रादि) = अ

$$\text{अ} + \frac{\text{अ} + \frac{\text{अ}}{७०}}{३३} \times ३० + \text{गति...} = \text{ब}$$

$$\text{ब} - \left(\frac{\text{ब} \times ११}{७०३}\right) = \text{शेष इष्ट युगादि अहर्गण}$$

चैत्र शुक्ल से श्रावण शुक्ल तक गत मास=४ तिथि शुक्ल १२ है तो गत तिथि =११ हुई ।

शाका = १८३५
कलियु० अर्हगण + ३१७९
कलि गत वर्ष = ५०१४
× १२
६०१६८
गतमास + ४
६०१७२ = अ

७०)६०१७२(८५९
५६० लब्धि
४१७
३५०
६७२
६३०
४२ इसे छोड़ा

६०१७२
+ ८५९ लब्धि

३३)६१०३१(१८४९
३३ लब्धि
२८०
२६४
१६३
१३२
३११
२९७
१४ इसे छोड़ा

(अ) + ((अ) + (अ)/७०)/३३ × ३० + गततिथि

= ६०१७२ + (६०१७२ + ६०१७२/७०)/३३ × ३० + ११

= ६०१७२ + (६०१७२ + ८५९)/३३ × ३० + ११

= ६०१७२ + ६१०३१/३३ × ३० + ११

= (६०१७२ + १८४९) × ३० + ११

= (६२०६२ × ३०) + ११

= १८६०६३० + ११

= १८६०६४१ = ब

अहर्गण = ब

(ब) १८६०६४१ − (१८६०६४१ × ११)/७०३

,, = १८६०६४१ − २०४६७०५१/७०३

,, = १८६०६४१ − २९११४

,, = १८३१५२७ − १

,, = १८३१५२६ कलियुगादि अर्हगण

अहर्गण में ७ का भाग देने से इष्ट वार आना चाहिए। यहाँ ७ का भाग देने से शेष बचता है तो पाँचवा वार गुरुवार आया। जन्म बुधवार का है तो एक घटाने से इष्ट वार का इष्ट अहर्गण आ गया। सूर्य सिद्धान्त का अहर्गण इतवार से गिना जाता है। इष्ट अहर्गण १८३१५२६ में ७ का भाग दिया तो शेष ४ बचा। इतवार से चौथा वार जन्म वार बुधवार आ गया। इस अहर्गण से अयनांश साधन किया जाता है।

६०१७२
+१८४९
६२०२१
×३०
१८६०६३०
+११ गत तिथि
१८६०६४१ = ब

१८६०६४१ ब
×११

७०३)२०४६७०५१(२९११३
१४०६ शेष अधिक है तो १ माना = २९११४
६४०७
६३२७
८००
७०३
९७५
७०३
२७२१
२१०९
६१२

ब १८६०६४१
− २९११४
= १८३१५२७
− १
= १८३१५२६
कलियुगादि अहर्गण

७)१८३१५२६(२६१६४६
१४
४३
४२
११
७
४५
४२
३२
२८
४६
४२
४ शेष
= बुधवार

अयनांश साधन (सूर्य सिद्धान्त की रीति से)

पूर्व साधित कलियुगादि अहर्गण = १८३१५२६

अयनांश साधन की रीति

$$\frac{\text{अहर्गण} \times ६००}{१५७७९१७८२८} = \text{भगण} \quad \frac{\text{भगण शेष} \times १२}{\text{यु. कु. दिन}} = \text{लब्धि राशि आदि ।}$$

$$\frac{\text{राशि आदि का भुज} \times ३}{१०} = \text{इष्ट कालिक अयनांश}$$

अहर्गण

$$\frac{१८३१५२६ \times ६००}{१५७७९१७८२८} = \text{भगण राशि आदि भगण } \overset{\text{रा}}{८}–\overset{\text{अं}}{१०}°–४२'–५८''$$

इस का भुज बनाना पड़ेगा ।

अहर्गण १८३१५२६
×६००
१५७७९१७८२८) १०९८९१५६०० (० भगण
×१२
") १३१८६९८७२०० (८ राशि
१२६२३३४२६२४
५६३६४४५७६
×३०
") १६९०९३३७२८० (१० अंश
१५७७९१७८२८
११३०१५९०००
×६०
") ६७८०९५४०००० (४२ कला
६३११६७१३१२
४६९२८२६८८०
३१५५८३५६५६
१५३६९९१२२४
×६०
") ९२२१९४७३४४० (५८ विकला
७८८९५८९१४०
१३२६३५८२०४०
१२६२३३४२६२४
६४०२३९४१६

रा
८–१०°–४२'–५८''
–६
भुज = २–१०–४२–५८
×३
७–२–८–५४ ÷ १५
रा
= ०–२१°–१२'–५३'' अयनांश

∴ जन्म का तात्कालिक अयनांश = २१°–१२'–५३''

टिप्पणी—७–२°–८′–५४″ में १० का मुखाग्र भाग देने की सरल युक्ति

३० अंश की १ राशि होती है जिसमें १० का भाग देने से ३ आता है इस प्रकार ३० का गुणा और १० का भाग न देकर ७ × ३ किया इसमें आगे के अंश में १० का भाग देने से लब्धि शून्य आई वह जोड़ा शेष २ बचा। ७ × ३ + ० लब्धि = २१° हुआ। यदि अंश १० से अधिक होता तो १० का भाग देने पर जो लब्धि मिलती उसे जोड़ते। अंश में १० का भाग देने पर शेष २ बचा था इसमें ६ का गुणा किया क्योंकि उसमें ६० का गुणा कर १० का भाग देना था परन्तु ६० में १० का भाग ६ बार जाता है इस कारण केवल ६ का गुणा करने से काम चल जायगा, परन्तु इसमें ८ कला की लब्धि जोड़नी पड़ेगी। ८ में १० का भाग दिया तो लब्धि ० और शेष ८ रहा। अंश का शेष २ × ६ + ० = १२′ आया। अब शेष ८ कला में ६ का गुणा किया और ५४ विकला में १० का भाग देने से ५ लब्धि आई वह जोड़ दिया ८ × ६ + ५ लब्धि = ५३″ हुई। शेष विकला (१० का ५३ में भाग देने से) ३ रहो। अब इस की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार मुखाग्र १० का भाग दिया तो २१°–१२′–५३″ प्राप्त हुई।

रा
७–२°–८′–५४″ ÷ १०

रा लब्धि शेष
७/१० = × ३ + २°/१० की लब्धि = ७ × ३ + ० = २१ अंश
शेष अंश ० ७ ०

२ × ६ + ८′/१० की लब्धि = २ × ६ + ० = १२ कला
शेष कला ०
८ × ६ + ५४″/१० की लब्धि = ८ × ६ + ५ = ५३ विकला
५

—: ० :—

अध्याय ९

लग्न साधन

लग्न कुंडली बनाने के लिए लग्न साधन करने की आवश्यकता होती है। किसी स्थान का लग्न निकालने के यह आवश्यक है कि वहाँ का स्वोदय (उस स्थान में राशियों के उदय काल का प्रमाण) अपने को ज्ञात हो। स्वोदय पलभा से या अक्षांश द्वारा निकाला जाता है जिस की रीति पहले बता चुके हैं।

लग्न साधन के लिये तात्कालिक सूर्य (इष्ट काल के समय का सूर्य) साधन करना पड़ता है। तात्कालिक निरयन सूर्य में अयनांश जोड़ कर तात्कालिक सायन सूर्य बनालेना चाहिए।

तात्कालिक सायन सूर्य का भुक्त और भोग्यांश जानने की आवश्यकता है। एक राशि में ३० अंश होते हैं। राशि में जो अंश आदि दिया रहता है वह भुक्तांश कहलाता है और जो भोगने को शेष रहा है वह भोग्यांश है।

इस भुक्त या भोग्यांश पर से लग्न साधन किया जाता है। लग्न निकालने के पहिले सायन सूर्य का भोग्य और भुक्त पल और भोग्य भुक्त पल के अंश बनाना जानना चाहिए।

सायन सूर्य के भोग्यांश और भुक्तांश का ज्ञान तथा उन के भोग्य-भुक्त पल निकालना

लग्न साधन में सायन सूर्य ही उपयोग होता है। निरयन सूर्य हो तो सायन सूर्य बना लेना चाहिए। इसी सायन सूर्य का भोग्यांश या भुक्तांश लिया जाता है

सूर्य के जितने अंश भुक्त हो चुके हैं भुक्तांश कहलाते हैं और जो भोगने को शेष अंश रहते हैं वो भोग्यांश कहलाते हैं।

रा

जैसे सूर्य ५–१०°–१५′–२०″ है। इस का अर्थ यह है कि सिंह राशि गत हो कर कन्या राशि के १०°–१५′–२०″ अंशादि गत हो चुके हैं। इन्ही गतांश को भुक्तांश कहते हैं। यहाँ कन्या के भुक्तांश १०°–१५′–२०″ हैं ऐसा कहेंगे।

अब कन्या के भोग्यांश कितने शेष हैं एक राशि के पूर्ण अंश ३० में से भुक्तांश घटा दो तो भोग्यांश निकल आयगा।

जैसे कन्या के भुक्तांश १०°–१५′–२०″ को ३० में से घटाया तो शेष

३०°–०′–०″ =१० –१५–२० घटाया शेष १९–४४–४० =भोग्यांश कन्या	कन्या के भोग्यांश १९°–४४′–४०″ बचे। अर्थात् कन्या राशि के १९°–४४′–४०″ अंशादि भोगने को शेष रहे हैं। इसी कारण इन को भोग्यांश कहते हैं।

भोग्यांश = (३०°–भुक्तांश) = जिस राशि के भुक्तांश होंगे उसी राशि के भोग्यांश निकलेंगे। यदि कहा जाय कि मेष के १९°–२०′–२५″ भुक्त हुए हैं अर्थात् गत हुए हैं तो समझना चाहिए कि मेष के प्रथम मीन राशि हुई वह पूर्ण भुक्त होकर मेष राशि के इतने अंश भुक्त हुए हैं = ०^रा–१९°–२०′–५०″। इसी प्रकार ०^रा–४°–०′

–६″ का अर्थ यह है कि मीन राशि गत होकर मेष राशि के भुक्तांश ४°–०′–६″ है और और भोग्यांश ३०°– (४°–०′–६″) = २५°–५९′ ५४″ होंगे। यदि सूर्य

रा

११–२०–५०′–०″ है तो कहा जायगा कि कुंभ राशि गत होकर मीन राशि के २०°–५०′–०″ पर सूर्य है। सूर्य का भुक्तांश २०°–५०′–०″ मीन हुआ और भोग्यांश ३०°–(२०°–५०′–०″) = ९°–१०′–०″ मीन है।

अब इन भुक्त और भोग्यांश पर से राशियों के उदय काल का भुक्त पल या भोग्य पल निकालेंगे।

पहिले प्रत्येक राशि का स्वस्थान का उदय काल (स्वोदय) निकाल लो। उदाहरण के लिये नरसिंहपुर का स्वोदय, (जो पहिले निकाल चुके हैं) यहाँ लेवेंगे, क्योंकि नरसिंहपुर का लग्न साधन करना है।

नरसिंहपुर का स्वोदय

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
	मीन	कुंभ	मकर	धन	वृश्चिक	तुला
पल	२२८	२५८	३०६	३४०	३३९	३२९

इन राशियों का उदय काल पल में दिया रहता है। अनुपात से निकालना पड़ता है कि उतने पलों में से सूर्य के भुक्तांश में कितने पल व्यतीत हुए हैं और भोग्यांश में कितने पल व्यतीत होंगे। भोग्यांश से जो पल निकलता है उसे भोग्य काल = भोग्य पल कहते हैं और भुक्तांश से जो पल निकलता है उसे भुक्त काल = भुक्त पल कहते हैं।

भोग्य और भुक्त पल त्रैराशिक से निकाला जाता है। १ राशि में ३०° होते हैं। पूर्ण ३०° में उस राशि का पूरा उदय काल इतने पल है तो इतने भुक्तांश या भोग्यांश में कितने पल होंगे ?

$$\frac{\text{भुक्तांश} \times \text{स्वोदय पल}}{\text{३० अंश}} \quad \text{या} \quad \frac{\text{भोग्यांश} \times \text{स्वोदय पल}}{\text{३० अंश}}$$

सूर्य के भुक्तांश या भोग्यांश में जिस राशि के अंश हों उसी राशि के स्वोदय से गुणा कर ३० का भाग देने से सूर्य के भुक्त पल या भोग्य पल निकल आवेंगे अर्थात् भुक्तांशों से भुक्त पल और भोग्यांश से भोग्य पल निकलता है। भुक्त पल और भोग्य पल दोनों का योग स्वोदय के पूर्ण पल के बराबर होता है।

उदाहरण

रा

सायन सूर्य ५–१०°–१५′–२०″ है तो कन्या के भुक्तांश १०°–१५′–२०″ हुए। कन्या राशि का स्वोदय ३२९ पल है। पूरे ३०° में ३२९ पल कन्या राशि

का स्वोदय होता है तो भुक्तांश १०°–१५′–२०″ में कितने पल स्वोदय होंगे ? त्रैराशिक से निकालने को भुक्तांश १०°–१५′–२०″ में ३२९ का गुणा कर ३० का भाग देंगे तो कन्या राशि का भुक्त पल निकल आयगा।

भुक्तांश — स्वोदय कन्या

$$\frac{(१०°–१५′–२०″) \times ३२९}{३०}$$

$$= \frac{३३७४–४–४०}{३०}$$

∴ पल–विपल–अनु०
= ११२–२८ –९
सूर्य का भुक्तपल कन्या का या सूर्य का भुक्त काल

३०) ३३७४–४–४० (११२
३०
―――
३७
३०
―――
७४
६०
―――
१४–४–४०
×२
―――
२८–९–२०

पल — १०°–१५′–२०″
×३२९
―――
३२९० | १६४५ | ६५८०
| ३२९ |
―――
३२९० | ४९३५ | ६५८० ÷ ६०
+ ८४ | + १०९ | = ४०
―――
३३७४ | ५०४४ |
= ४

= ३३७४–४–४०

३० का भाग देने की सरल युक्ति

किसी संख्या में ६० का गुणा कर ३० का भाग देने से वही उत्तर आता है जो शेष को दुगुना कर देने से प्राप्त होता है। इस कारण ३० का भाग देने से जो कुछ भी बचता है केवल उसे दुगुना कर देने से ठीक उत्तर आ जाता है। जैसे ऊपर ३० का भाग देने से १४–४–४० बचा था (१४–४–४०) × २ = २८–९–२० उत्तर आया। यहाँ केवल २८ विपल और ९ अनुपल को लिया शेष छोड़ दिया।

जैसे, ३१५°–१०′–३७″ ÷ ३० = १० बार भाग गया शेष १५–१०–२७ × २ = ३०′–२१″–१४‴ हुआ। तो उत्तर १०°–३०′–२१″ आया १४ की आवश्यकता न होने से छोड़ दिया।

इसी प्रकार ३० का गुणा करने की सरल रीति

जिस अंक से गुणा करना है उस को आधा करके जो दो संख्या प्राप्त हो उसे लिख लो। दूसरी संख्या को आधा कर एक संख्या हटा कर वायें बाजू रख दो अंतिम संख्या का पूरा गुणन फल रख के जोड़ दो।

जैसे यहाँ ४ विकला का आधा २–० हुआ तो वाँई ओर कला के नीचे २ रख दिया और शून्य दाहिनी ओर रखा। आगे ५ कला है इस का आधा २–३० हुआ। २ को वाईं ओर रख कर ३० को २ कला के नीचे रखा फिर ३० × १० का गुणन फल ३०० आया उसे २ के नीचे रखा उपरांत सब को जोड़ दिया तो गुणन फल ३०२–३२–० आ गया। साधारण रीति से गुणा करने में अधिक खट पट होती।

१०°–५′–४″
×३०
२–०
२–३०
३००
३०२–३२–०

इस प्रकार ३० के गुणा और भाग की संक्षिप्त रीति को ध्यान में रख लेना चाहिए जिस का यहाँ काम पड़ता है।

सूर्य का भोग्य पल

रा

सायन सूर्य ५–१०°–१५′–२०″ का भुक्त पल निकाल चुके उसी प्रकार

पूर्णांश = ३०°–०′–०′
कन्या भुक्तांश = १०–१५–२०
,, भोग्यांश = १९–४४–४०

३२९ × (१९°–४४′–४०″) / ३०
= ६४९५–५५–२० / ३०
= पल वि॰ अनु॰
२१६–३१–५०
= सूर्य का भोग्य काल
= कन्या का भोग्य पल

कन्या के भोग्यांश १९°–४४′–४०″ का भोग्य पल निकालना है। कन्या का स्वोदय ३२९ है। पूर्ण ३०° में ३२९ पल स्वोदय होता है तो भोग्यांश १९°–४४′–४०″ में कितना होगा ?

१९°–४४′–४०″
×३२९

२९६१ | १३१६ | १३१६०
३२९ | १३१६
६२५१ | १४४७६ | १३१६० ÷ ६०
+२४४ | +२१९ | = २०
६४९५ | १४६९५ |
= ५५
= ६४९५–५५–२०

३०) ६४९५–५५–२० (२१६
६०
४९
३०
१९५
१८०
१५–५५–२०
×२
३१–५०–४०
= २१६–३१–५०–४०

	पल	वि॰	अनु॰	भोग्यपल
सूर्य का भुक्त पल	११२–	२८–	९	–२०
+ ,, भोग्यपल	२१६–	३१–	५०–	४०
कन्या का स्वोदय	=३२९–	०–	०–	०

सूर्य के भोग्य या भुक्त पल के भोग्यांश या भुक्तांश बनाना

उपरोक्त गणित के विरुद्ध क्रिया करने से भुक्त या भोग्य पल के भुक्तांश या भोग्यांश बन जायेंगे। जैसे उस राशि के पूर्ण स्वोदय के इतने पल में उस राशि के ३०° होते हैं तो इतने भुक्त या भोग्य पल में कितने अंश होंगे ?

$\frac{\text{भुक्त पल} \times ३०}{\text{स्वोदय पल}}$ या $\frac{\text{भोग्य पल} \times ३०}{\text{स्वोदय पल}}$

अर्थात् भुक्त या भोग्य पल में ३० का गुणा कर स्वोदय पल से भाग देने से सूर्य का भुक्त या भोग्यांश निकल आता है।

पल वि० अनु०

उदाहरण—कन्या का सूर्य है जिस के भुक्त पल ११२–२८–९ है इस के भुक्तांश निकालना है।

पल वि०

$\frac{(११२–२८–९) \times ३०}{३२९ \text{ पल}}$

$= \frac{३३७४–४–३०}{३२९}$

$= १०°–१५'–२०''$ कन्या

```
११२–२८–९
      ×३०
--------
      ४–३०
   १४–०
३३६०
----------
३२९ ) ३३७४–४–३० ( १०°
      ३२९
       ८४×६०
      ------
      ५०४०+४
३२९ ) ५०४४ ( १५'
       ३२९
       १७५४
       १६४५
      ------
        १०९×६०
        ------
        ६५४०
         +३०
३२९ ) ६५७० ( १९''
       ३२९
       ३२८०
       २९६१
        ३१९
```

भुक्त पल में ३० का गुणा कर जिस राशि का वह भुक्त पल है उसी राशि के स्वोदय से भाग देंगे। यहाँ कन्या राशि का भुक्त पल है तो कन्या राशि के स्वोदय ३२९ से भाग देवेंगे।

यहाँ ३० का गुणा सरल रीति से किया जो पहिले बता चुके हैं। ९ का आधा ४–३० हुआ। ३० वहीं रखा ४ को बायें ओर रखा। २८ का आधा १४–० हुआ तो ४ के नीचे ० और २८ बायें ओर रखा फिर ११२×३० का गुणन फल ३३६० आया उसे १४ के नीचे रख कर सब का योग कर दिया। इस में कन्या का उदय पल ३२९ का भाग दिया तो सूर्य का भुक्तांश १०°–१५'–२०'' आया।

शेष आधे से अधिक होने से १९″ को २० माना = १०°–१५′–२०″ कन्या का भुक्तांश

सूर्य के भोग्य पल से भोग्यांश बनाना

भोग्य पल २१६–३१–५० है। भोग्य पल में ३० का गुणा किया। सरल रीति से गुणा किया। ५० के आधे २५–० हुए। ० वहाँ रखा २५ बाईं ओर रखा। ३१ के आधे १५–३० है तो २५ के नीचे ३० रखा और १५ को बाईं ओर रखा। इस १५ के नीचे २१६ × ३० का गुणन फल ६४८० रखा। उपरांत सब को जोड़ दिया। फिर इस में कन्या के स्वोदय ३२९ का भाग दिया तो १९°–४४′–४०″ कन्या का भोग्यांश आया।

$$\frac{(२१६–३१–५०) \times ३०}{३२९ \text{ पल}}$$

$$= \frac{६४९५–५५–०}{३२९}$$

$$= १९°–४४′–४०″ \text{ भोग्यांश}$$

```
  २१६–३१–५०
        × ३०
  ----------
        २५–०
     १५–३०
   ६४८०

३२९ ) ६४९५–५५–० ( १९°
      ३२९
      ३२०५
      २९६१
      -----
       २४४ × ६०
      ---------
       १४६४० + ५५

३२९ ) १४६९५ ( ४४′
      १३१६
      ----
      १५३५
      १३१६
      ----
       २१९ × ६०

३२९ ) १३१४० ( ३९″
       ९८७
      ----
      ३२७०
      २९६१
      ----
       ३०९
```

शेष आधे से अधिक है तो ३९″ को ४०″ माना = कन्या का भोग्यांश १९°–४४′–४०″ आया।

भोग्यांश से लग्न साधन

सूर्य के भोग्यांश की राशि का पूर्ण उदय पल जान कर पहिले बताई हुई रीति से भोग्यांश से उस राशि का भोग्य पल बना लो। (भोग्यांश × राशि का स्वोदय) ÷ ३० = सूर्य की राशि का भोग्य पल। उपरांत इष्ट घड़ी पल के पल बना कर उस में से सूर्य की राशि का भोग्य पल घटा दो। जो शेष बचे उस में से सूर्य की राशि की प्रत्येक राशियों का स्वोदय क्रमानुसार जब तक घटता जावे, घटाते जाना। अर्थात् एक के बाद दूसरी राशि का स्वोदय क्रमानुसार इष्ट पल में से घटाते जाना। जिस राशि का स्वोदय न घटे उसे अशुद्ध राशि कहते हैं। जिस राशि का शोधन नहीं हो सकता यहाँ वही राशि अशुद्ध कहलाती है।

फिर गणित से निकालो कि उस अशुद्ध राशि का पूरा स्वोदय इतने पल ३०° में होता है तो शेष (इष्ट में से घटाने में जो पल बचता है) पल में कितने अंश होंगे ? अर्थात् शेष बचे उदय पल के अंश पहिले बताई हुई रीति के अनुसार बना लो। (शेषपल × ३०) ÷ अशुद्ध राशि का स्वोदय पल। = उस राशि का भोग्यांश अंश कलादि में।

पहिले जितनी राशियाँ घट गई हैं वह राशि इन अंशों के पहिले रखने से सायन लग्न की राशि अंश आदि निकल आती है और वही सायन लग्न होती है।

सायन लग्न में से अयनांश घटा देने से निरयन लग्न स्पष्ट हो जाता है।

१ **भोग्यांश से लग्न साधन करने का उदाहरण**

घ० प०

मान लो चैत्र कृष्ण १३ मंगलवार सम्वत् १९४६ शाके १८११ इष्ट १५–५१ वि०

–४२॥ का लग्न साधन करना है। स्थान नरसिंहपुर है

तात्कालिक सायन सूर्य बनाने के लिये पहिले सूर्य स्पष्ट करेंगे। उस दिन प्रातः रवि स्पष्ट ११–५°–२४′५९″ गति ५९–३९ है। इस पर से इष्टकालीन सूर्य साधन के लिये

घ० प० वि०

१५–४१–४२॥

×५९–३९

			२७	१८
		२३	९	+१९॥
	९			
		४५		
		४१	१८	
	५०	९	+२९,	३०
१४	४५			
१४	१०४	१२८	८३	६७॥
+१	+२	+१	+१	=७॥
१५	१०६	१२९	४४	
	=४६	=९		

= १५′–४६″–९ चालन+

रा

प्रात: रवि स्पष्ट ११–५°–२४′–५९″

\+ चालन १५–४६

∴ स्पष्ट सूर्य = ११–५–४०–४५

\+ अयनांश = २२–४७–५९

∴ सायन सुर्य = ११-२०–२८–४४

(मीन)

इष्ट में गति का गुणा गोमूत्रिका क्रम से किया। (यहाँ गुणा करने में गुणनफल चक्र का उपयोग किया है।) गुणा करने से चालन १५′–४६″+आया। इसे प्रातः रवि स्पष्ट में जोड़ा तो सूर्य स्पष्ट
रा
११–५°–४०′–४५″ हुआ।

अब इस का सायन सूर्य बनाने के लिये अयनांश निकालेंगे।

अयनांश साधन चैत्र शु० १ से फाल्गुन

शाके १८११ शु० १ तक = ११ मास

–४४४ चैत्र कृ० १३ तक

६०) १३६७ (२२° के (१५ + १२)=२७ दिन

१२० ११ मास × ५″=५५″

१६७ २७ दिन × १०‴=२२००‴

१२० = ४″–३०‴

४७′ ५५″ + ४″ = ५९″

वर्ष आरंभ का = २२°-४७′ चलित

\+ चलित ०–०–५९

तात्कालिक = २२–४७′–५९

अयनांश

पूर्णांश सायन सूर्य का भुक्तांश मीन २८°–२८′–४४″

३०–०′–०″ ,, भोग्यांश ,, १ –३१ –१६

२८–२८–४४ भुक्तांश मीन

शेष = १–३१–१६ = भोग्यांश मीन नरसिंहपुर मीन का स्वोदय २२८ पल ३०° में

मीन का पूर्ण उदय २२८ पल है तो भोग्यांश १°–३१′–१६″ में कितना ?

$\frac{(१°–३१′–१६″) \times २२८}{३०} = \frac{३३०–८–४८}{३०} =$ पल० वि० ११–०–१७–३६ मीन का भोग्य पल

= ११–०–१८ मीन भोग्य पल

१–३१–१६
×२२८

२२८	२२८ ६८४	१३६८ २२८
२२८ + ११८	७०६८ + ६०	३६४८ ÷ ६० = ४८
३४६	७१२८ = ४८	

= ३४६–४८–४८

३०)३४६–४८–४८(११
३०
४६
३०
१६–४८–४८
× २
३३–३७–३६
= ११–३३–३८
∴ मीन का भोग्य पल

घ० प० वि०
इष्ट १५–५१–४२॥
× ६०
९०० + ५१
= ९५१–४२॥
पल विपल
इष्ट काल

इष्ट पल-विपल
९५१–४२–३०
मीन भोग्य ११–३३–३८ घटाया
९४०– ८–५२
मेष स्वोदय = २२८
७१२– ८–५२
वृष ,, = २५८
४५४– ८–५२
मिथुन ,, = ३०६
१४८– ८–५२
कर्क ,, = ३४० अशुद्ध
कर्क अशुद्ध (पूरा नहीं घटता)
शेष इष्ट १४८-८-५२ कर्क का बचा है।

अब इष्ट काल में मीन का भोग्य पल घटाना है। इष्ट काल के पल बनाकर इसे घटाया। इसके घटाने पर भी इष्ट काल और शेष रहता है। मीन का भोग्य पल तो घट चुका अब देखना है कि आगे और कितनी राशियों का स्वोदय घटता है। घटाने में केवल नरसिंहपुर का स्वोदय उपयोग किया है। नरसिंहपुर का स्वोदय पहिले निकाल चुके हैं। घटाने में मेष वृष और मिथुन का स्वोदय तो घट चुका है परन्तु कर्क का नहीं घटता तो वह अशुद्ध राशि कहलाई। शेष कर्क के भोग्य पल १४८–८–५२ बचे। इसके अंश बनाने हैं।

कर्क के ३४० पल स्वोदय में ३०° भोगते हैं तो शेष १४८–८–५२ में कितने ?

$$\frac{(१४८–८–५२) \times ३०}{३४० \text{ पल}} = \frac{४४६१–२६–०}{३४०} = १३^\circ–४'–१८'' \text{ कर्क सायन लग्न}$$

रा

∴ सायन लग्न = ३–१३°–४′–१८″
– अयनांश – २२– ४७–५९ घटाया
∴ निरयन लग्न = २–२०– १६–१९
∴ लग्न स्पष्ट = २–२०– १६–१९ हुआ।

शेष इष्ट १४८–८–१२
× ३०
२६–०
४–०
४४४०
३४०)४४४४–२६–०(१३°
कर्क ३४०
१०४४
१०२०
२४ × ६०
१४४० + २६
३४०)१४६६(४′
१३६०
१०६ × ६०
३४०)६३६०(१८″
३४०
२९६०
२७२०
२४०

भुक्तांश से लग्न निकालना

तात्कालिक सायन सूर्य के भुक्तांश लेना अर्थात् राशि छोड़कर केवल अंशादि लेना। जिस राशि के सूर्य का वह भुक्तांश हो उसके उदय पल से गुणा कर ३० का भाग देना ठीक जैसा भोग्यांश में किया था उसी प्रकार गणित करने से सूर्य का भुक्त काल पल आयगा अंतर केवल यही है पहिले भोग्यांश लिया था यहाँ भुक्तांश लिया है।

फिर इष्ट घड़ी को ६० में से घटा कर पल बना लेना और इष्ट पल में से सूर्य का भुक्त काल घटा देना। जिस राशि का वह भुक्त काल घटाया है उसके विरुद्ध क्रम से (यदि इष्ट शेष रहा तो) राशियाँ घटाते जाना। जैसे सायन रवि मेष का है तो मेष के वाद विरुद्ध (उल्टे) क्रम से मीन आता है तो मीन का स्वोदय घटाना फिर कुंभ का, फिर मकर का इत्यादि उल्टे क्रम से एक के बाद दूसरी राशियाँ घटाते जाना। जिस राशि का उदय काल (स्वोदय) घटाने से न घटे उस राशि की अशुद्ध संज्ञा हुई।

फिर गणित से निकालो अशुद्ध राशि के इतने स्वोदय में ३०° होता है तो इष्ट के शेष बचे पल में कितना होगा ?

शेष इष्ट पल में ३० का गुणा कर अशुद्ध राशि के स्वोदय का भाग देंगे जिस प्रकार भोग्यांश साधन में किया था। जो उत्तर आवे वह अंश कलादि उस अशुद्ध राशि का भुक्तांश हुआ। इसे ३०° या १ राशि में घटा देने से जो शेष बचेगा वह उस राशि का

भुक्तांश आवेगा। अशुद्ध राशि के पहले जो राशि हो वह सायन लग्न की राशि होगी और उस के आगे ये भुक्तांश होंगे। सब मिल कर सायन लग्न होगा। या अशुद्ध राशि के अंक में से उपरोक्त भुक्तांश घटा दो तो सायन लग्न निकलेगा। इसमें से अयनांश घटा दो तो निरयन स्पष्ट लग्न हो जायगा।

भोग्य और भुक्त काल की एक सी क्रिया है केवल अंतर यही है कि भोग्य काल में सायन सूर्य का भोग्य काल लेकर गणित करने से जो भोग्य पल आता है उसे इष्ट काल के पल में से क्रमानुसार घटाया जाता है। परन्तु भुक्तांश में भुक्तांश से वही गणित कर सूर्य के भुक्त पल को विरुद्ध क्रम से, ६० घड़ी में से शोधित इष्ट काल के पल में से घटाते हैं। इस के उपरांत की क्रिया एक सी है। अंत में भुक्तांश क्रिया से जो अंश आते हैं उन को ३०° में घटाना होता है, परन्तु भोग्यांश में पहिले ही ३०° म घटा कर गणित आरंभ करते हैं।

(२) भुक्तांश द्वारा लग्न साधन करने का उदाहरण

रा

सायन सूर्य ११–२८°–२८′–४४″

भुक्तांश मीन २८°–२८′–४४″

घ० प० वि०

इष्ट १५–५१–४२॥

भुक्तांश मीन, मीन स्वोदय

$\frac{(२८°–२८′–४४″) \times २२८}{३०}$

$= \frac{६४९३–११–१२}{३०}$

पल

=२१६–२६–२२ मीन का भुक्त पल

घड़ी–पल–वि०

६०– ० –०

–इष्ट १५–५१–४२॥

शेष=४४–८–१७॥

×६० पल–वि०

२६४०+८=२६४८–१७॥

२८°–२८′–४४″

×२२८

१८२४	१८२४	९१२
४५६	४५६	९१२
६३८४	६३८४	१०३२÷६०
+१०९	+१६७	=१२
६४९३	६५५१ =११	

३०)६४९३–११–१२(२१६

६०   पल

४९

३०

१९३

१८०

१३–११–१२

+२

२६–२२–२४

=२१६–२६–२२

मीन भुक्त पल

इष्ट पल०–वि० अनु०
२६४८–१७–३०
मीन भुक्त –२१६–२६–२२ घटाया
२४३१–५१–८
कुम्भ स्वोदय–२५८
२१७३–५१–८
मकर –३०६
१८६७–५१–८
धन –३४०
१५२७–५१–८
वृश्चिक –३३९
११८८–५१–८
तुला –३२९
८५९–५१–८
कन्या –३२९
५३०–५१–८
सिंह –३३९
१९१–५१–८
कर्क –३४० अशुद्ध

कर्क नहीं घटा तो अशुद्ध हुआ

(शेष इष्ट पल) (१९१–५१–८) × ३० / ३४० स्वोदय अशुद्ध कर्क का = ५७५५–३४–० / ३४० = १६°–५५′–४१″ भुक्तांश कर्क

कर्क राशि ४है इस से कर्क भुक्तांश घटाया तो सायन लग्न हुई।

६० में से इष्ट घटा के उसके पल बनाये तो २६४८–१७॥ हुए। इसमें से मीन का भुक्त पल घटाया जो शेष बच रहा उस में उल्टे क्रम से अर्थात् मीन के बाद कुंभ मकर धन वृश्चिक, तुला, कन्या आदि घटाते जावेंगे जो नहीं घटेगा वह अशुद्ध हुआ। यहाँ घटाने में नरसिंहपुर का स्वोदय उपयोग किया है। घटाते २ अंत में कर्क नहीं घटा वह अशुद्ध हुआ। शेष इष्ट में ३० का गुणा कर अशुद्ध कर्क के स्वोदय से भाग दिया तो १६°–५५′–४१″ कर्क का भुक्तांश आया।

१९१–५१–८
× ३०
४– ०
२५–३०
५७३०

३४०) ५७५५–३४–० (१६°
३४०
२३५५
२०४०
३१५ × ६०
१८९००+३४
३४०) १८९–३४ (५५′
१७००
१९३४
१७००
२३४ × ६०
३४०) १४०४० (४१″
१३६०
४४०
३४०
१००

लग्न स्पष्ट हुई

अशुद्ध कर्क राशि—

४–०°–०′–०″

कर्क भुक्तांश ०–१६–५५–४१ घटाया

∴ सायन लग्न=३–१३–४ –१९

या ३०°–०–०

कर्क भुक्तांश १६–५५–४१

सायन लग्न = १३–४ –१९ कर्क

कर्क के पहिले ३ राशि होतीहै इससे ३ राशि पहिले रख दीं ता सायन लग्न ३–१३°–४′–१९″ हो गई

सायन लग्न से अयनांश घटाया तो निरयन

रा

सायन लग्न ३–१३°–४′–१९″

–अयनांश –२२ –४७–५९

∴ निरयन लग्न = २–२०–१६–२०

भोग्य रीति से या भुक्त रीति से किसी प्रकार लग्न निकालो एक ही उत्तर आता है। यदि दिन का इष्ट काल हो तो भुक्त रीति से लग्न निकालने में कितना अधिक घटाना पड़ता है, यह ऊपर के गणित से प्रगट होगा। इस से जब अर्द्ध रात्रि के उपरान्त का इष्ट काल हो तो भुक्त रीति से लग्न साधन करना सुलभ होता है। साधारण प्रकार भोग्यांश पर से हो लग्न साधन करना चाहिए।

भोग्य या भुक्तांश पर से लग्न साधन कब करना? नीचे बताया है।

---

(१) भोग्य रीति से—

जब दिन का इष्ट काल हो

(२) भुक्त रीति से

जब अर्द्ध रात्रि के पश्चात् अर्थात् १२ बजे रात के पश्चात् इष्ट काल हो तो इष्ट को ६० घड़ी में से घटा कर शेष रात्रि काल निकाल लो। शेष रात्रि को इष्ट काल मान कर भुक्त प्रकार से लग्न साधन करना। परन्तु सूर्य की राशि में ६ जोड़ने की आवश्यकता नहीं होती, क्यों कि गणित भुक्त प्रकार से करना है।

कई ज्योतिषी लोग नीचे लिखी रीति से भी लग्न साधन करते हैं।

भोग्य रीति से—

(१) जब रात्रि का इष्ट हो तो सुविधा के लिये इष्टकाल में से दिनमान घटा कर रात्रि गत इष्ट काल को इष्ट मान कर गणित करते हैं और ऐसा करते समय आरंभ में सायन सूर्य की राशि में ६ जोड़ देते हैं और भोग्य रीति से करते हैं।

टिप्पणी—इस रीति से गणित करने में यदि सूक्ष्म गणित किया जाय तो कला विकला में कुछ अंतर पड़ जाता है।

(२) अधिक रात्रि हो तो शेष रात्रि को ईष्ट काल मान कर सायन सूर्य में ६ जोड़ कर लग्न साधन करते हैं।

टिप्पणी—इस रीति से लग्न में कभी अंशों का अन्तर पड़ जाता है इस से अशुद्ध लग्नांश आने के कारण इस रीति का उपयोग नहीं करना।

इस कारण अन्त की इन दोनों रीतियों का त्याग कर देना।

भोग्य और भुक्त रीति से लग्न साधन करने का सिद्धान्त चित्र संख्या ४ देखने से प्रगट होगा। इस चित्र में राशि चक्र घूमता हुआ बताया गया है जिस में राशियों का नाम दिया हैं। उपरोक्त गणित से लग्न मिथुन राशि को आई है। यहां चित्र में लग्न में मिथुन

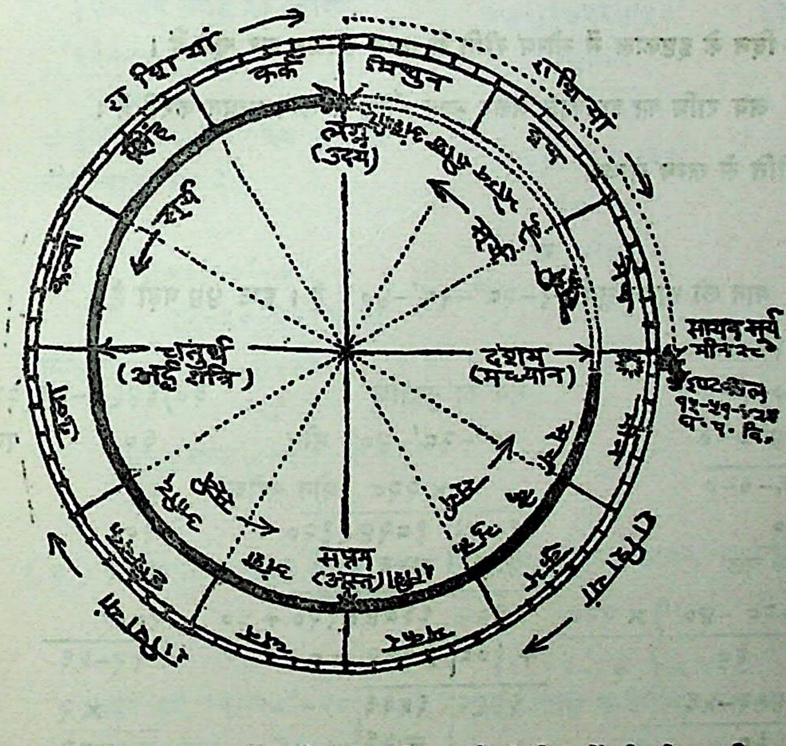

राशि बताई है। इष्ट काल में सूर्य मीन राशि का है तो चित्र में भी मीन राशि पर सूर्य बताया है। राशि चक्र किस ओर घूम रहा है और सूर्य किस ओर घूम रहा है तीर के चिन्ह से बताया है। जिन राशियों को सूर्य पार कर चुका है अर्थात् भुक्त राशियां

या सूर्य के भुक्त अंश मोटी लकीर से बतलाये गये हैं। सूर्य मीन राशि पर है इस से सूर्य धन, मकर, कुंभ आदि राशियों को पार करता हुआ मीन पर पहुँचा है। मीन के २८° पर सूर्य है अर्थात् मीन के २८° भुक्त हो चुके हैं। जितनी राशियां और अंश भोगने को शेष हैं दुहरी बिन्दुओं से बताये गये हैं। इस लिये सूर्य का भोग्य काल पलात्मक और उस के पश्चात् जो राशियाँ हैं उन का पलात्मक, उदय काल जिन में सूर्य भोगने को रह गया है इष्ट काल में से घटाने से लग्न विदित हो जायेगी यह भोग्य रीति से लग्न साधन हुआ।

सूर्य जिन राशियों में भोग चुका है उन का पलात्मक उदयकाल विरुद्ध क्रम से घटाने पर लग्न विदित होगी। मोटी लकीर के तीर के चिन्ह से विरुद्ध क्रम समझ में आ जायगा। दिन रात में ६० घड़ी होती हैं। इष्ट तक जो काल है उस में से भोग्य रीति से राशियाँ घटाई जाती हैं और (६०–इष्ट काल) शेष काल में भुक्त रीति से राशियों का उदय काल घटाया जाता है।

(३) दिन के इष्टकाल में भोग्य रीति से लग्न साधन कर चुके हैं।

अब रात्रि का इष्टकाल लेकर भुक्त रीति से लग्न साधन करते हैं।

भुक्त रीति से लग्न साधन

रा

मान लो सायन सूर्य ११–२८°–२८′–४०″ है। इष्ट ४४ घड़ी है।

घ०प०वि०		
६०–०–०	सूर्य का भुक्तांश	३०)६४९२–५६(२१६
–इष्ट ४४–०–०	२८°–२८′–४०″ मीन	६० पल
शेष १६–०–०	×२२८ मीन स्वोदय	४९
×६०	१८२४ | १८२४ | ९१२०	३०
९६० पल	४५६ | ४५६ |	१९२
(२८°–२८′–४०″)×२२८ / ३०	६३८४ | ६३८४ | ९१२० ÷ ६०	१८०
	+१०८ | +१५२ | =०	१२–५६
= ६४९२–५६ / ३०	६४९२ | ६५३६ = ५६ |	×२
		२५–५२
=२१६–२५–५२	=६४९२–५६–०	=२१६–२५–५२
भुक्त पल मीन		भुक्त पल मान

पल

इष्ट ६६०-०-०

मीन भुक्त-२१६-२५-५२ घटाया

७४३-३४-८

कुंभ -२५८

४८५-३४-८

मकर -३०६

१७६-३४-८

धन -३४०—अशुद्ध

शेष इष्ट

$$\frac{(१७६-३४-८)\times ३०^\circ}{३४० \text{ धन अशुद्ध का स्वोदय}}$$

$$= \frac{५३८७-४}{३४०}$$

= १५°-५०'-३६" धन भुक्तांश

अशुद्ध राशि धन है।

रा

६-०°-०'-०"

१५-५०-३६ घटाया

सायनलग्न = ८-१४-६-२१

रा

∴ सायन लग्न ८-१४°-६'-२१"

यहाँ भुक्त रीति से करना है इस कारण भुक्त पल घटाने के उपरांत शेष राशियों का स्वोदय विरुद्ध क्रम से घटाया तो अंत में धन नहीं घटा वह अशुद्ध राशि हुई।

३४०)५३८७-४(१५°

३४०

१९८७

१७००

२८७ × ६०

१७२२०

\+ ४

३४०)१७२२४(५०'

१७००

२२४ × ६०

३४०)१३४४०(३६"

१०२०

३२४०

३०६०

१८०

१७६-३४-८

× ३०

४-०

१७-०

५३७०

५३८७-४-०

(४) अब उपरोक्त लग्न भोग्य प्रकार से भोग्यांश द्वारा साधन करते हैं

रा

सायन सूर्य ११-२८°-२८'-४०"

भुक्तांश कन्या २८-२८-४०

भोग्यांश „ १-३१-२०

इष्ट ४४ घड़ी = २६४० पल

$$\frac{(१-३१-२०)\times २२८}{\frac{(\text{भोग्यांश कन्या})\text{स्वोदय कन्या}}{३०}}$$

$$= \frac{३४७-४}{३०} = ११-३४ \text{ भोग्य पल मीन}$$

१-३१-२०
×२२८

२२८ | २२८ | ४५६०
| ६८४ |

२२८ | ७०६८ | ४५६०
+११९ | +७६ | =०

३४७ | ७१४४
| =४

३०)३४७-४(११
३०   पल
४७
३०
१७-४
×२
३४-८

=१७-३४ भोग्यपल

शेष इष्ट १६०-२६
×३०
१३-०
४८००

३४०)४८१३-०(१४°
३४०
१४१३
१३६० =१४°-९'-२१"
५३ धन के

मेष	२२८
वृष	२५८
मिथुन	३०९
कर्क	३४०
सिंह	३३९
कन्या	३२९
योग	१८००

शेष ५३
×६०
३४०)३१८०(९'
३०६०
१२०×६०
३४०)७२००(२१"
६८०
४००
३४०
६०

पल
इष्ट २६४०-०
भोग्य मीन -११-३४
२६२८-२६
मेष से कन्या तक } -१८००-०
८२८-२६
तुला - ३२९
४९९-२६
वृश्चिक - ३३९
१६०-२६
धन - ३४० =अशुद्ध

शेष इष्ट
(१६०-२६)×३० / ३४० अशुद्ध धन = ४८१३ / ३४०

=१४°-९'-२१" धन के
=८-१४-९-२१ सायन लग्न
= इस रीति में अधिक घटाना पड़ा इसी से कहा है कि रात्रि का इष्ट काल हो तो भुक्त रीति से करना।

जब बहुत थोड़ा इष्ट हो तो उससे लग्न साधन की रीति नीचे बताई है—

(१) जब थोड़ा इष्टकाल हो और स्वोदय इष्ट से न घटे तो इष्ट के पल बना कर ३० का गुणा कर स्वोदय का भाग दो जो अंशादि आवें उसे तात्कालिक निरयन सूर्य स्पष्ट में जोड़ दो तो निरयन लग्न निकल आयगी।

(२) यदि भुक्तांश से किया है अर्थात् शेष रात्रि का इष्टकाल हो तो इन अंशादिकों को रवि स्पष्ट से घटा देना तो लग्न स्पष्ट हो जायगी।

(५) उदाहरण

घ. प.   रा.
मान लो इष्ट ०–१० है। सायन सूर्य ११–२८°–२८′–४०″ है। मीन भुक्तांश २८°–२८′–४०″ और भोग्यांश १°–३१′–२०″ है। मीन का उदय पल २२८ पल है।

दिन का इष्ट है थोड़ा इष्ट है तो नियम १ से करेंगे। २२८ पल में मीन ३०° भोगता है तो १० पल में कितने अंश भोगेंगे ?

$$\frac{१० \times ३०''}{२२८ \text{ पल}} = \frac{३००}{२२८} = १°–१८′–५६″$$

```
२२८ ) ३०० ( १°
      २२८
      ७२ × ६०
२२८ ) ४३२० ( १८′
      २२८
      २०४०
      १८२४
      २१६ × ६०
२२८ ) १२९६० ( ५६″
```

मीन भुक्तांश

इष्ट पल वि०
१०–०

भोग्यपल मीन ११–३४ देखो उदाहरण (४)

यहाँ इष्ट में से भोग्यपल नहीं घटता
इस कारण भोग्यपल का काम नहीं रहा

केवल इष्ट में ३० का गुणा कर मीन के स्वोदय २२८ से भाग दिया १°–१८′–५६″ आया इसे निरयन सूर्य स्पष्ट में जोड़ा तो निरयन लग्न स्पष्ट
रा
११–६°–५९′–४१″ हुई।

रा
तात्कालिक निरयन सूर्य ११–५°–४०′–४५″
+ मीन भुक्तांश + १–१८–५६
= निरयन लग्न = ११–६–५९–४१

इस उदाहरण में निरयन लग्न निकली है। सायन बनाना हो तो अयनांश जोड़ दो। सायन सूर्य में से अयनांश घटा देने से निरयन सूर्य स्पष्ट हो जाता है। उपरोक्त उदाहरण में

रा सायन सूर्य ११–२८°–२८′–४०″ – अयनांश २२–४७–५५ ∴ निरयन सूर्य=११–५–४०–४५	सायन सूर्य ११–२८–२८–४० है इस में से अयनांश घटाया तो रा शेष ११–५°–४०′–४५″ रहा यह

निरयन सूर्य हुआ।

(६) यदि इष्ट काल अल्प हो परन्तु सूर्य का उदय काल उस में से घट जावे तो साधारण प्रकार से भोग्यांश से लग्न निकालना।

रा
उदाहरण—मान लो सा० सूर्य ११–२८°–२८′–४०″ है। मीन भुक्तांश २८°–२८′–४०″

प० वि०

भोग्यांश १°–३१'–२०″ है। मीन का भोग्य पल ११–३४ और इष्ट ३० पल है।

पल

इष्ट ३०–०

मीन ११–३४

१८–३४

मेष २२८ अशुद्ध

(शेष इष्ट १८–३४) × ३०
―――――――――
२२८ मेष

= ५५३/२२८ = २°–२५'–३१″ मेष

रा

= ०–२°–२५'–३१″

सायन लग्न

शेष इष्ट १८–२६

× ३०

१३–०

५४०

२२८) ५५३ (२ अंश

४५६

९७ × ६०

२२८) ५८२० (२५'

४५६

१२६०

११४०

१२० × ६०

२२८) ७२०० (६१″

६८४

३६०

२२८

१३२

(७) रात्रि का इष्टकाल प्रातः काल के समीप का हो अर्थात शेष रात्रि अल्प हो और शेष इष्टकाल से सूर्य का भुक्त काल न घटे तो भुक्त रीति से इस प्रकार लग्न निकालना।

इष्ट पल × ३०
―――――――
स्वोदय पल

इष्ट काल के शेष में ३० का गुणा कर सूर्य के भुक्तांश की राशि का स्वोदय से भाग देना तो अंशादि आयगा उसे निरयन सूर्य स्पष्ट से घटा देने से लग्न स्पष्ट होगो। ऐसी स्थिति में भोग्य प्रकार से करने में जोड़ना और भुक्त प्रकार में निरयन सूर्य में घटाना पड़ता है तब निरयन लग्न स्पष्ट होती है।

घ. प. रा

मान लो इष्ट काल ५९–३० है सायन सूर्य मान लो ११–२८°–२८'–४०″ है। सूर्य मीन का भुक्तांश २८°–२८'–४०″ मीन का भुक्तपल २१६–२६ है (देखो

उदाहरण (३))

घ. प. वि. ६०-०-० इष्ट ५९-३०-० घटाया ०-३० पल (शेष रात्रि का इष्ट)	यहाँ शेष रात्रि के इष्ट में सूर्य मीन का भुक्त पल २१६-२६ नहीं घटता तो इस भुक्त पल का काम नहीं रहा। $\frac{\text{शेष इष्टपल} \times ३०}{\text{स्वोदय}} = \frac{३० \text{ पल} \times ३०}{२२८ \text{ मीन}} = \frac{९००}{२२८}$

रा = ३°-५६'-५०''

निरयन सूर्य स्पष्ट ११-५°-४०'-४५''

३-५६-५० घटाया

= निरयन लग्न = ११-१-४३-५५

रा

∴ निरयन लग्न स्पष्ट ११-१°-४३'-५५''

२२८) ९०० (३°
६८४
२१६ × ६०
२२८) १२९६० (५६'
११४०
१५६०
१३६८
१९२ × ६०
२२८) ११५२० (५०''
११४०
१२०

(८) अब इसी को भोग्यांश से करते हैं।

रा

सा० सू० ११-२८°-२८'-४०'' भोग्यांश मीन १°-३१'-२०'',

मीन भोग्य पल ११-३४ (देखो उदाहरण ४)

घ० प०
इष्ट ५९-३०
× ६० पल
३५४० + ३० = ३५७०

पल वि०
इष्ट पल ३५७०-०
- मीन ११-३४
३५५८-२६

मेष से कन्या } -१८००
६ राशि } १७५८-२६

तुला	३२९
वृश्चिक	३३९
धन	३४०
मकर	३०६
कुंभ	३५८
	१५७२

शेष इष्ट
१८६–२६
×३०
१३–०
५५८०
२२८) ५५९३ (२४°
४५६
१०३३
९१२
१२१×६०
२२८) ७२६० (३१′
६८४
४२०
२२८
१९२×६०
२२८) ११५२० (५०″
११४०
१२०

तुला से कुंभ } १५७२–०
५ राशि } १८६–२६
मीन २२८ अशुद्ध

शेष इष्ट
(१८६–२६)×३०
अशुद्ध मीन २२८
= ५५९३/२२८ = २४–३१–५० मीन

सायन लग्न
रा
= सायन लग्न ११–२४°–३१′–५०″
– अयनांश घटाया –२२–४७–५५
निरयन लग्न = ११–१–४३–५५

∴ निरयन रा
लग्न ११–१°–४३′–५५″

दोनों भोग्य और भुक्त रोति से एक ही उत्तर आता है। परन्तु ऐसी स्थिति में भुक्त रोति से लग्न साधन करना सरल है। यहाँ केवल समझाने के लिये दोनों रीतियाँ दो हैं।

अध्याय १०

लग्न से इष्टकाल निकालना

यदि लग्न विदित है परन्तु इष्ट काल खो गया है अर्थात् भूल गये हैं कि क्या इष्ट काल था तो लग्न से ही इष्ट काल जाना जा सकता है।

लग्न से इष्ट काल निकालने की रीति।

(१) $\frac{\text{सायन सूर्य भोग्यांश} \times \text{भोग्यांश राशि का स्वोदय}}{३०}$ = सूर्य भोग्य काल पल

(२) $\frac{\text{सा० सूर्य भुक्तांश} \times \text{भुक्तांश राशि का स्वोदय}}{३०}$ = सूर्य का भुक्त काल पल

(३) सायन सूर्य और सायन लग्न के बीच में जितनी राशियाँ हों उन प्रत्येक के स्वोदय का योग } = बीच के लग्नों का योग = लग्न योग पल

इष्टकाल = (सा० सूर्य का भोग्य काल पल) + (लग्न भुक्त काल पल) + (लग्न योग पल) ÷ ६०

(१) उदाहरण

रा

(१) सा० सूर्य ११–२८°–२८′–४०″
भोग्यांश मीन १–३१–२०

मीन स्वोदय = २२८ पल

$\frac{(\text{सूर्य भोग्यांश } १–३१–२०) \times \text{मीन स्वोदय पल } २२८}{३०}$ = वि० ११–३४ भोग्य पल मीन

रा

(देखो लग्न साधन का चौथा उदाहरण)

(२) सायन लग्न = ९–१७°–४१′–२२″
भुक्तांश मकर = १७–४१–२२

$\frac{(\text{लग्न भुक्तांश } १७–४१–२२) \times \text{मकर स्वोदय } ३०६}{३०}$

$= \frac{५४१२–५८–१२}{३०}$

= १८०–२६ भुक्त पल मकर

(३) लग्न के बीच की राशियों का उदय काल

	पल
मीन भोग्य	११–३४
मेष से कन्या ६ राशि	१८००–०
तुला	३२९–०
वृश्चिक	३३९–०
धन	३५०–०
मकर का भुक्त पल	१८०–२६
योग	३०००–०

पल
= ५० घड़ी इष्ट काल

```
   १७°–४१′–२२″
          × ३०६
२१४२ |  ३०६  | ६१२
३०६  | १२२४  | ६१२ ·
५२०२ | १२५४६ | ६७३२ ÷ ६०
+२१० | +११२  | = ११२
५४१२ | १२६५८
     | = ५८

३० ) ५४१२–५८–१२ ( १८०
     ३०
     २४१
     २४०
     १२–५८–१२
          × २
     २५–५६–२४
   = १८०–२५–५६
```

मकर का पल
= १८०–२६

यहाँ सायन सूर्य मीन का है तो मीन का भोग्य पल निकाल कर रखा और सायन लग्न मकर का होने से मकर का भुक्त पल निकाल कर रखा।

फिर देखा सायन सूर्य और सायन लग्न के बीच कितनी राशियाँ हैं उन सब राशियों का उदय काल जोड़ने से इष्ट निकल आया।

यहाँ सायन सूर्य मीन के भोग्य पल ११–३४ हैं। मीन के आगे मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, और धन

तक सब के उदय पल जोड़ा, क्योंकि लग्न मकर है धन तक जोड़ने के उपरान्त मकर के भुक्त पल भी जोड़ दिया। तो सब का योग जो कुछ आया वही इष्ट काल पल हुआ। इष्ट पल की घड़ी बनालो

(२) दूसरा उदाहरण

रा

(१) सा० सूर्य ११–२८°–२८′–४०″

मीन भोग्यांश १ –३१ –२०

मीन भोग्य पल ११–३४

रा

(२) सा० लग्न ०–२°–२५′–३१″

मेष भुक्तांश २ –२५ –३१

मेष भुक्त पल १८–२६

$$= \frac{२–२५–३१ \times २२८ \text{ मेष}}{३०}$$

$$= \frac{५५२–५७–४८}{३०}$$

= १८–२५–५५

= १८–२६ भुक्त पल मेष

मेष भुक्तांश २–२५–३१

मेष स्वोदय × २२८

४५६	११४०	२२८
	४५६	६८४
४५६	५७००	७०६८ ÷ ६०
+९६	+११७	= ४८
५५२	५८१७	
	= ५७	

= ५५२–५७–४८

३०)५५२–५७–४८(१८

३० पल

२५२

२४०

१२–५७–४८

× २

२५–५५–३६

= १८–२५–५५

= १८–२६ मेष भुक्त पल

प० वि०

(३) सा० सूर्य मीन का है मीन भोग्य पल ११–३४

मेष भुक्त पल १८–२६

= इष्ट ३०–०

यहाँ सायन सुर्य के उपरांत लग्न तक बीच में और कोई राशि नहीं है इसलिये केवल सूर्य भोग्य पल और लग्न भुक्त पल दोनों को जोड़ा = इष्ट पल।

(३) लग्न से इष्ट काल निकालने की दूसरी रीति।

जब सायन सूर्य और सायन लग्न एक ही हों या उनके बीच और राशियां नहीं और दोनों का उदय काल का प्रमाण एक ही हो तो सायन सूर्य और सायन लग्न का अंतर निकाल कर सायन सूर्य के उदय काल का गुणा कर ३० का भाग देने से इष्ट काल पल निकल आता है। फिर इष्ट पल में ६० का भाग देकर इष्ट घड़ी बनालो।

ऊपर के उदाहरण में सायन सूर्य मीन का है और सायन लग्न मेष है। दोनों का उदय काल एक हा है अंतर नहीं आया और बीच में कोई राशि नहीं है तो इस रीति से इष्ट निकालेंगे। जहाँ दोनों का उदय काल भिन्न हो तो इस रीति का उपयोग न करना, पहिले बताई रीति से इष्ट काल निकाल लेना।

	रा		
सायन लग्न	०– २°–२५′–३१″	मेष २२८	३–५६–५१
सायन सूर्य	११–२८ –२८ –४०	मीन २२८	× २२८
∴ अंतर	०– ३ –५६ –५१		

६८४	१३६८ / ११४०	२२८ / ११४०
६८४ / +२१६	१२७६८ / +१९३	११६२८ ÷ ६० / =४८
९००	१२९६१ / =१	

= ९००–१–४८

३०)९००–१–४८(३० पल

९०

०

(अंतर ३–५६–५१) × २२८ मीन स्वोदय / ३०

= ९००–१–४८ / ३०

= ३० पल इष्ट

(४) मान लो सायन सूर्य और सायन लग्न

को एक ही राशि है इसका इष्ट काल निकालना है।

	रा	
सायन लग्न	१–२९°–५५′–७″	वृष
,, सूर्य	१–१५ –३० –०	वृष
∴ अंतर=	०–१४–२५ –७	

१४–२५–७

× २५८

१०३२ / २५८	१२९० / ५१६	१८०६
३६१२ / +१०८	६४५० / +३०	१८०६ ÷ ६० / = ६
३७२०	६४८० / = ०	

अंतर १४८२५–७ × २५८ वृष स्वोदय / ३०

३७२०–०–६ / ३० = १२४ पल इष्ट

=घ० प० इष्ट

२–४

३०)३७२०–०–६(१२४ पल

३०

७२

६०

१२०

१२०

(५) मान लो सायन सूर्य और सायन लग्न के बीच कोई राशि नहीं है परन्तु इनका स्वोदय भिन्न है अर्थात् लग्न मिथुन है जिसका स्वोदय ३०६ और वृष का सूर्य है जिसका स्वोदय २५८ है तो प्रथम रीति से इष्ट काल निकालेंगे।

रा
(१) सायन सूर्य १–१५°–३०′–०″
भोग्यांश वृष १४°–३०′–०″

रा
(२) सायन लग्न २–२°–२८′–४९″
भुक्तांश मिथुन २°–२८′–४९″

(१) (सूर्य भोग्यांश) वृष स्वोदय

$$\frac{(१४° – ३०′) \times २५८}{३०}$$

३०)३७४१(१२४ पल
३०
७४
६०
१४१
१२०
२१
×२
४२
=१२४–४२

१४–३०
×२५८ वृष
१०३२ | ७७४०
२५८
३६१२ | ७७४० ÷ ६०
+१२९ | = ०
३७४१ |
=३७४१–०

$$\frac{३४७१ \text{ प० वि०}}{३०} = १२४–४२$$

सूर्य का भोग्य पल वृष

(२) (लग्न भुक्तांश) मिथुन

$$\frac{(२°–२८′–४९″) \times ३०६}{३०}$$

$$= \frac{७५८–५७–५४}{३०}$$

= २५–१७–५५

लग्न का=२५–१८ भुक्त पल वृष

२–२८–४९
×३०६
६१२ | २४४८ | २७५४
६१२ | १२२४
६१२ | ८५६८ | १४९९४
+१४६ | +२४९ | =५४
७५८ | ८८१७
=५७
=७५८–५७–५४

	पल वि०
सूर्य भोग्य काल वृष	१२४–४२
+ लग्न भुक्त ,, मिथुन	२५–१८
इष्ट =	१५०–०
इष्ट =	१५० पल
	घ० प०
=	२–३०

३०)७५८–५७–५४(२५
६०
१५८
१५०
८–५७–५४
× २
१७–५५–४८
= २५–१७–५५

लग्न का=२५–१८ भुक्त पल मिथुन

उपरोक्त सब उदाहरणों में उदय काल (स्वोदय) लिये गये हैं। वे नरसिंह पुर के हैं। जिस स्थान का लग्न साधन करना है वहाँ का स्वोदय पहिले बना लेना चाहिये। इसी प्रकार लग्न से इष्ट काल निकालने के लिये उसी स्थान का स्वोदय लेना चाहिये जहाँ की लग्न निकाली गई थी।

—:०:—

अध्याय ११

लग्न में संदेह हो तो उसका निर्णय

यदि अपना इष्टकाल अशुद्ध हो अर्थात् शंका हो कि यह इष्टकाल ठीक है या नहीं या अनुमान से इष्टकाल बनाया हो और उसपर से लग्न निकाली गई हो तो शंका हो जाती है कि लग्न शुद्ध है या नहीं, उसे कैसे शोधन करना ?

(१) पहिली रीति

$$\left(\frac{\text{जन्म घड़ी}}{२} + \text{जन्म काल का सूर्य नक्षत्र}\right) \div २७ = \text{शेष नक्षत्र}$$

शेष नक्षत्र अश्विनी से गिनो। अश्विनी को १ और ० शेष रहे तो रेवती जानना। यदि योग २७ से अधिक हो तो २७ का भाग देना, नहीं तो भाग देने की आवश्यकता नहीं है। शेष जो नक्षत्र हो उसी नक्षत्र की राशि के लग्न में जन्म समझो। इस नक्षत्र की जो राशि होगी वही लग्न होगी।

उदाहरण—इष्ट (घ. प.) $\frac{१५-५२}{२}$ + २६ उत्तर भाद्रपद (जन्म समय सूर्य उत्तर भाद्रपद में था)

= (७-५६) + २६ = (३३-५६) ÷ २७ = शेष ६-५६

यहाँ ६ नक्षत्र से आर्द्रा पूर्ण हो गया शेष से आगे का नक्षत्र पूर्ण नहीं हुआ इस कारण मिथुन लग्न में ही यह पुनर्वसु रहा। जन्म लग्न मिथुन है वह शुद्ध जान पड़ती है।

= शेष ६ = आर्द्रा = मिथुन लग्न होगी

मिथुन = { मृग ० अंत के २ चरण
आर्द्रा पूरे – ४ ,,
पुनर्वसु आरंभ के ३ ,,

९ चरण

(२) दूसरी रीति

(जन्म घटी × ६) + सौर मास की तिथि ÷ ३० = लब्धि राशियाँ। सूर्य जहाँ हो उस से क्रमानुसार लब्धि की संख्या तक राशियाँ गिनो तो जन्म लग्न होगी।

उदाहरण—जन्म घटी

(१५-५२) × ६ = ९५-१२ + ६ (सौर तिथि) = $\frac{१११-१२}{३०}$ = लब्धि ३

सूर्य मीन का था मीन के आगे ३ गिना (१ + ३) तो मिथुन आया इससे लग्न मिथुन हुई।

(३) तीसरी रीति

(१) जहाँ चंद्र हो उस राशि के स्वामी से पाँचवाँ या नवाँ घर बहुधा लग्न होती है।

(२) या वह राशि जिस में चंद्र हो कभी-कभी लग्न होती है।

(३) या चंद्र से पाँचवें या नवमें घर में लग्न होती है।

उदाहरण लग्न कुंडली

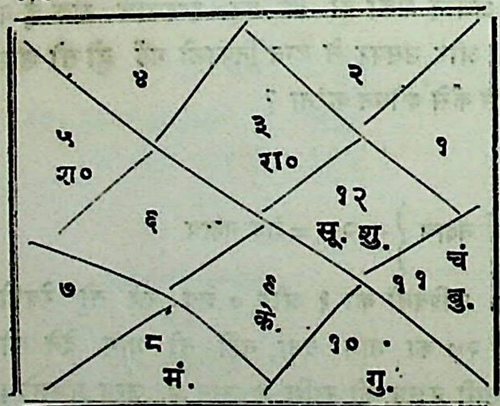

इस कुंडली में चंद्र से पाँचवाँ मिथुन लग्न है तो लग्न ठीक जँचती है।

उपरोक्त विधियों का उपयोग तभी करना जब लग्न में शंका हो। यदि शंका न हो तो इनका उपयोग नहीं करना।

लग्न शुद्ध करने की अन्य रीतियाँ

कई ज्योतिषी इष्ट काल को शुद्ध करने के लिये नीचे बताई हुई रीति भी उपयोग करते हैं।

(जन्म घटी × ४) ÷ ९ = शेष नक्षत्र, अश्विनी से या मघा से या मूल से उतनो संख्या (जो शेष बचे) गिनो तो जन्म नक्षत्र आ जायगा ।

जैसे किसी का जन्म का समय अनुमान से लिखा हो या ठीक विदित न हो तो उस दिन देखो कौन सा नक्षत्र है। इष्ट घड़ो को इस प्रकार रखो जिससे अपना नक्षत्र आ जावे। जिस घड़ी से गिनने पर जन्म नक्षत्र आयगा वह ठीक समझना।

जैसे किसी का जन्म दोपहर के लगभग हुआ। ११–१६ घड़ी इष्ट रहा होगा। उस दिन पुनर्बसु नक्षत्र था। १५ घड़ो में छटवाँ नक्षत्र आर्द्रा आता है। तो १५, घड़ी लिया तब पुनर्बसु आ जाता है। इष्ट १५, घड़ी रहा होगा।

१५। × ४ = ६१ ÷ ९ = शेष ७ पुनर्बसु नक्षत्र हुआ।
पाव घटी का = पहिला (१) नक्षत्र आगे का पड़ता है।
आधा „ „ = दूसरा आगे का नक्षत्र „ „
पौन „ „ = तीसरा „ „ „ „ „
१ घड़ी का = चौथा „ „ „ „ „

जन्म घड़ी में ४ का गुणा करने और ९ का भाग देने से इष्ट घड़ो में ४–४ शेष का अंतर पड़ता है। इस कारण १ शेष के लिये १५ पलका अंतर पड़ेगा। इसी अनुमान से समय और नक्षत्र मिलाना।

इष्ट घड़ी							शेष
१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	४
२	११	२०	२९	३८	४७	५६	८
३	१२	२१	३०	३९	४८	५७	३
४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	७
५	१४	२३	३२	४१	५०	५९	२
६	१५	२४	३३	४२	५१	....	६
७	१६	२५	३४	४३	५२	....	१
८	१७	२६	३५	४४	५३	....	५
९	१८	२७	३६	४५	५४	....	०

नक्षत्रों के गिनने का क्रम		
१ अश्वि०	१ मघा	१ मूल
२ भ०	२ पु०फा०	२ पू०षा०
३ कृति०	३ उ०फा०	३ उ०षा०
४ रोहि०	४ हस्त	४ श्रव०
५ मृग०	५ चित्रा	५ धनि०
६ आर्द्रा	६ स्वा०	६ शत०
७ पुनर्व०	७ विशा०	७ पू०भा०
८ पुष्य	८ अनु०	८ उ०भा०
९ आश्ले०	९ ज्ये०	९ रेवती

यहाँ इष्ट घड़ी के आगे कौन से क्रम का नक्षत्र आयगा चक्र में दिया है। चक्र में यदि उस इष्ट पर वह नक्षत्र न आवे तो १५ पल इष्ट में बढ़ाने से उसके आगे का एक नक्षत्र मिलेगा फिर भो न मिले तो ३० पल इष्ट में बढ़ाने से २ नक्षत्र आगे मिलेगा। यदि न मिले तो ४५ पल इष्ट में और बढ़ा देवे तो ३ नक्षत्र आगे मिलेगा। जहाँ अपना इष्ट नक्षत्र मिले उस इष्ट को ठीक समझना।

जैसे १५ इष्ट से देखा १५ के आगे ६ दिया है। नक्षत्र चक्र में ६ में आर्द्रा आता है अपने को पुनर्वसु नक्षत्र चाहिए। तो १५ पल और बढ़ा दिया तो १५। घड़ी इष्ट में एक नक्षत्र आगे पुनर्वसु नक्षत्र मिल गया। इससे १५। घड़ी को ही इष्ट मानना। अर्थात् यदि इष्ट शुद्ध है तो इस रीति का कोई उपयोग नहीं होगा। यह तो आनुमानिक इष्ट के शोधन के लिये है परन्तु केवल इस रीति से ही शोधन प्रामाणिक नहीं है और भी रीतियों का उपयोग करना जो आगे दी हैं।

लग्न को शुद्ध करने के लिये प्राणपद और गुलिक का उपयोग

प्राणपद

इस के साधन से यह विदित होता है कि गणित से निकाली हुई लग्न के अंश और प्राणपद के अंश यदि बराबर हुए तो इष्ट काल शुद्ध समझा जाता है।

यदि कुछ अंतर आवे तो इष्टकाल में कुछ संशोधन करना पड़ता है जिससे लग्न के अंश और प्राणपद के अंश बराबर हो जावें और दोनों के अंश में कोई अंतर न रहे। इसकारण लग्न के संशोधन के लिये प्राणपद के अंश भी जानना आवश्यक है।

प्राणपद साधन

मध्यम प्राणपद + सूर्य अंश = स्पष्ट प्राणपद अंश।

मध्यम प्राणपद बनाना और उस में सूर्य के अंश जोड़ने की रीति आगे बताई है।

प्राणपद बनाने की ३ रीतियाँ हैं

(१) पहिला प्रकार

प्राणपद के अंश १ पल में २ अंश होते हैं। ३ घड़ी में १२ राशि (एक भगण) पूर्ण भुक्त होती है, एक घड़ी में ४ राशि या १५ पल में एक राशि प्राणपद की सूर्योदय के उपरांत भुक्त होती हैं।

३६० अंश	=	१२ राशि	=	३ घड़ी			प्राणपद
१२० ,,	=	४ ,,	=	१ ,,			,,
६० ,,	=	२ ,,	=	३० पल			,,
३० ,,	=	१ ,,	=	१५ पल			,,
२ ,,	=	$\frac{१}{१५}$,,	=	१ पल			,,
१, ,,	=	$\frac{१}{३०}$,,	=	३० विपल			,,
२ कला	=	..	=	१ विपल			,,

इस कारण इष्ट घड़ी में ३ का भाग देने से १ भगण (१२ राशि) की भुक्ति निकल आयगी। शेष घड़ी पल के अनुपात से अंश बना लेना चाहिए जैसा यहाँ बनाया है।

(२) दूसरा प्रकार

इष्ट घड़ी के पल बनाओ। $\frac{\text{इष्ट पल}}{१५} = \text{लब्धि राशि}$, शेष × २ = अंश = मध्यम प्राणपद

मध्यम प्राणपद + सूर्य राशि अंश = स्पष्ट प्राणपद ।

(३) तीसरा प्रकार

$$\frac{(\text{इष्ट घड़ी} \times ४) + १५ \text{ पल}}{१२} = \left.\begin{array}{l}\text{शेष प्राणपद की राशि} \\ \text{शेष पल} \times २ = \text{अंश}\end{array}\right\} \text{मध्यम प्राणपद}$$

जब राशि १२ से अधिक आवे तब ही केवल राशि में १२ का भाग देना । मध्यम प्राणपद राशि अंश + सूर्य राशि अंश = स्पष्ट प्राणपद सूर्य की राशि

मध्यम प्राणपद में जो सूर्य की राशि जोड़ने को बताया है वह कौन सी सूर्य की राशि लेना इस का विचार:—

(१) सूर्य स्पष्ट चर राशि में हो तो = सूर्य स्पष्ट जोड़ना ।

„ „ स्थिर या द्विस्वभाव राशि में हो तो सूर्य से त्रिकोण में जो चर राशि हो उस में जोड़ना ।

राशियां =	चर	स्थिर	द्विस्वभाव
	१,४,७,१०	२–५–८–११	३–६–९–१२

उदाहरण—इष्ट २ घड़ी ४ पल है प्राणपद निकालना है ।

$$(१) \text{ रीति—} \left.\begin{array}{l}२ \text{ घड़ी} = ८ \text{ राशि} \\ ४ \text{ पल} = ८ \text{ अंश}\end{array}\right\} = \begin{array}{l}\text{रा० अंश मध्यम प्राणपद} \\ ८ - ८\end{array}$$

$$(२) \text{ रीति} = २ \text{ घ० } ४ \text{ पल} = १२४ \text{ पल} = \frac{१२४}{१५} = \frac{४}{१५} = \text{लब्धि } ८, \text{ शेष } ४ = ८ \text{ राशि } ४ \times २ = ८ \text{ अंश}$$

रा० अं०

= ८–८ मध्यम प्राणपद

$$(३) \text{ रीति} = \frac{\left(\begin{array}{c}\text{इष्ट घड़ी} \\ २ \times ४\end{array}\right) + \left(\frac{\text{इष्ट पल } ४}{१५}\right)}{१२} = \frac{\left(८ + \frac{४}{१५}\right)}{१२} = \begin{array}{cc}\text{राशि} & \text{अंश} \\ ८ - & (४ \times २)\end{array}$$

रा

= ८–८° मध्यम प्राणपद । यहाँ केवल राशि में १२ का भाग देना बताया है । जब राशि १२ से अधिक हो तब ही १२ का भाग देना । यहाँ राशि ८ है तो १२ के भाग देने की आवश्यकता नहीं रही । इष्ट पल में १५ का भाग देने से जो लब्धि आवे इष्ट घड़ी से प्राप्त राशि में जोड़ देना चाहिए । शेष पल को इस कारण दुगुना करना बताया है कि शेष में अंश बनाने को ३० से गुणा कर १५ का भाग देने से वही उत्तर आता है जो कि शेष को दुगना कर देने से प्राप्त होता है ।

इस मध्यम प्राणपद में सूर्य जोड़ना है इसका विचार करेंगे। मान लो सायन

रा
सूर्य १–११°–३०′–०″ है (देखो लग्न से इष्ट काल निकालने का चौथा उदाहरण)

रा	रा
सायन सूर्य १–१५°–३०′–०″	सायन लग्न १–२६°–[illegible]′–७″
–अयनांश–०–२२ –४७ –५५	– अयनांश ०–२२ –४७ –५५
निरयन सूर्य=०–२२ –४२ –५	निरयन लग्न= १– ७ – ७ –१२

रा
यहाँ पर निरयन सूर्य ०–१२° है अर्थात् मेष का सूर्य है। मेष चर राशि है। चर राशि होने से इसी सूर्य को मध्यम प्राणपद में जोड़ेंगे।

रा	
मध्यम प्राण पद ८–८°	यहाँ निरयन लग्न के ७° हैं और स्पष्ट प्राणपद में ० अंश है। दोनों में समानता नहीं है। ७° का अंतर पड़ जाता है। १ पल में २° प्राणपद बढ़ता
+ सूर्य ०–२२	
स्पष्ट प्राण पद=९–०	

है। जब अंतर ७° का है तो कितने पल इष्ट में बढ़ाना चाहिए ? = $\frac{७° \text{ अंतर}}{२}$ = ३॥ पल वृद्धि। अंतर अंश में २ का भाग देने से जो पल आयगा उस पल की वृद्धि (बढ़ती) होने से दोनों एक हो जायेंगे। अर्थात् इष्ट और प्राणपद के अंश बराबर हो जायँगे।

इस कारण ३॥ पल के प्राण पद के अंश बनाये। ३॥ पल × २=७° हुए। इसे

रा रा रा
स्पष्ट प्राणपद में जोड़ा। स्पष्ट प्राणपद ९–० था + ० – ७° = ९ – ७° स्पष्ट प्राणपद हुआ।

इष्ट २ घड़ी ४ पल था इसमें ३½ पल की वृद्धि करनी पड़ेगी। २ घ० ४ पल + ३॥ पल=२ घ० ७॥ प० यह परिवर्द्धित शुद्ध इष्ट काल हुआ। इस शुद्ध इष्ट काल २ घ० ७॥ प० पर से लग्न शोधन की जाये तो शुद्ध लग्न आयगी।

अब परिवर्द्धित शुद्ध इष्ट काल २ घ० ७॥ प० पर से लग्न साधन करते हैं।

रा	सूर्य भोग्यांश वृष
सा० सूर्य १–१५°–३०′–०″	$\frac{१४°–३०′ × २५८}{३०}$
सूर्य भोग्यांश १४–३०–० वृष	= $\frac{३७४१–०}{३०}$

वृष स्वोदय = २५८ पल

घ० प० पल० वि०

इष्ट २ – ७॥ = १२७–३०

= १२४–४२ वृष भोग्य पलः

इष्ट पल–वि०
१२७–३०
वृष भोग्य १२४–४२
शेष २–४८

मिथुन ३०६ अशुद्ध

३०)३७४१(१२४
३०
७४
६०
१४१
१२०
२१
×२
४२ पल

१४–३०–०
×२५८
१०३२ | ७७४०|०
२५८
३६१२| =०
+१२६|
३७४१|

शेष इष्ट

$$\frac{(२–४८) \times ३०}{३०६ \text{ मिथुन}} = \frac{८४–०}{३०६}$$

=०°–१६′–२८″
रा मिथुन

= भोग्य पल १२४–४२ वृष

३०६)८४–०(०
×६० अंश
३०६)५०४०(१६′
३०६
१९८०
१८३६
१४४×६०
३०६)८६४०(२८″
६१२
२५२०
२४४८
७२

=०°–१६′–२८″
मिथुन

२–३८
×३०
२४–०
६०
८४–०

∴ सायन लग्न २–०–१६–२८″
– अयनांश २२–४७–५५ घटाया
∴ निरयन लग्न=१–७–२८–३३

घ० प०
इष्ट २–७″ का प्राणपद निकालते हैं।

२ घड़ी=२×४=८ राशि

७॥ पल=७॥×२=१५ अंश
रा

=मध्यम प्राणपद ८–१५°
+ निरयन सूर्य ०–२२
स्पष्ट प्राण पद =९–७

यहाँ प्राणपद के भी ७° आ गये और लग्न के भी ७° आ गये इस कारण इष्ट घ० प० २–७॥ को शुद्ध समझना चाहिए। यदि मध्यम प्राणपद में सायन सूर्य जोड़ा जाता तो उससे बना स्पष्ट प्राणपद के अंश और सायन लग्न के अंश मिलने चाहिए।

(२) दूसरा उदाहरण

		ra
इष्ट काल	१५ घड़ी=१५ × ४=६० राशि ÷ १२	=०– ०–०′
घ० प० वि०	५१ पल=५१ × २=१०२ अंश ÷ ३०	=३–१२–०
१५–५१–४२॥	४२ विपल=४२ × २=८४ कला ÷ ६०	=०– १–२४
रा	½ विपल=½ × २=१ कला	=०– ०–१

निरयन सूर्य ११–५°–४०′–४५″ मध्यम प्राण पद=३–१३–२५

निरयन लग्न २–२०–१९–१६ (देखो लग्न साधन का पहिला उदाहरण)

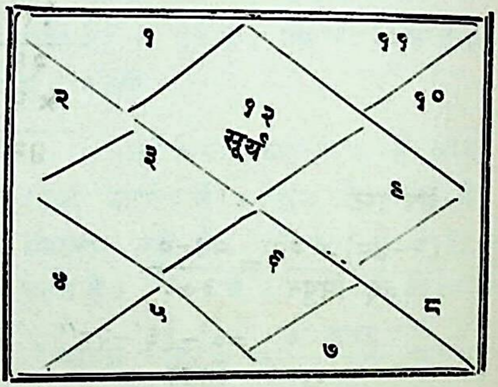

यहां सूर्य मीन राशि का है। मीन द्विस्वभाव राशि है। सूर्य चर नहीं है इससे देखना पड़ेगा कि सूर्य के त्रिकोण में कौन-कौन राशियाँ हैं। उनमें जो चर राशि होगी उसी राशि का सूर्य मानना पड़ेगा। और वर्तमान में जो सूर्य के अंश हैं उसी सूर्य के अंशादि समझे जायेंगे। इस प्रकार जो सूर्य की राशि अंश निकले मध्यम प्राणपद में उसे जोड़ कर स्पष्ट प्राणपद के अंश बनाने होंगे।

यहां सूर्य मीन का है वह द्विस्वभाव है इससे त्रिकोण में पंचम कर्क चर राशि और नवम में वृश्चिक स्थिर राशि है। इन दोनों में कर्क चर राशि है उसे ही लिया।

रा

इस कारण अपना सूर्य इसी कर्क राशि का समझना। निरयन सूर्य ११–५°–३०′–४५″ है अर्थात् सूर्य के ५° हैं तो कर्क राशि के सूर्य के ५° समझे जावेंगे। कर्क के ५° अर्थात् रा०

३–५ सूर्य हुआ।

रा

मध्यम प्राणपद ३–१३°–२५′

सूर्य . . . + ३– ५

∴ स्पष्ट प्राणपद = ६–१८–२५ हुई

निरयन लग्न = २–२०–१९ है

यहाँ स्पष्ट प्राणपद के १८° हैं और लग्न के २०° हैं इस कारण २ अंश का अंतर पड़ता है

यदि एकाध अंश का अंतर पड़ता हो और मध्यम प्राणपद में अंश के अतिरिक्त कला भी हो और सूर्य की भी कला हो, तो जोड़ने में कला का भी विचार करने से

कलाओं का योग मिलकर १ अंश हो जाता है और अंश की पूर्ति हो जाती है परन्तु यहां २° का अंतर है २°÷२= ० पल का अंतर इष्ट में कर देने से प्राणपद और लग्न के अंश बराबर हो जायंगे।

घ० प० वि०
प्राणपद के लिये—इष्ट १५–५१–४२॥
१ पल बढ़ाया + १
= परिवर्तित इष्ट = १५–५२–४२॥

रा–०।
१५ घड़ी=१५ × ४=६०=०–०–०
५२ पल=५२ × २=१०४°=३–१४–०
४२॥ वि०=४२॥ × २=८५′=०–१–२५
∴ मध्यम प्राणपद = ३–१५–२५

रा
मध्यम प्राणपद = ३–१५°–२५′
+सूर्य ३– ५
= स्पष्ट प्राणपद = ६–२०–२५

यहां पर लग्न के अनुसार प्राणपद २०°
घ०प०वि०
हैं तो इष्ट १५–५२–४२॥ समझना

प्राणपद जिस राशि के जिस अंश पर है वह प्राणपद का स्पष्ट कहलाया। ग्रह स्पष्ट के साथ प्राणपद स्पष्ट भी लिख देना चाहिए। प्राणपद जिस राशि में हो लग्न कुंडली में उसी राशि पर ग्रह के सदृश कई लोग लिख देते हैं। इस उदारण में प्राणपद
रा
६–२०°–२५″ है तो तुला राशि में प्राणपद होने से लग्न कुंडली में तुला राशि में प्राणपद लिखा जायगा।

गुलिक

जिस प्रकार प्राणपद से इष्ट शुद्ध किया जाता है उसी प्रकार गुलिक से भी लग्न को शुद्धता जाँची जाती है।

गुलिक और प्राणपद का उपयोग।

गुलिक या प्राणपद के स्थान से १, ३, ५, ७ ९, ११ वे स्थान में लग्न होती हैं और उसी लग्न में मनुष्य का जन्म समझना।
लग्न शुद्ध है या नहीं यह ३ प्रकार से देखो जाती है।

(१) प्राणपद, (२) गुलिक और (३) जन्म काल के चंद्र पर से लग्न की शुद्धता देखना। यदि दो प्रकार से न मिले तो गुलिक से देखना। अधिकतर प्राणपद से देखना। चंद्र से लग्न का मिलान करना पहिले इसी अध्याय की तीसरी रीति में दे चुके हैं। गुलिक साधन करना आगे बताया है।

गुलिक साधन (मांद्य)

गुलिक का दूसरा नाम मांद्य भी है। प्रत्येक दिन वारेश से गिनने पर इस प्रकार गुलिक होता है।।

	वार	रविवार	चंद्रवार	मंगल	बुध	गुरु०	शुक्र०	शनि०
गुलिक	दिन में	७	६	५	४	३	२	१
ध्रुवांक	रात्रि में	३	२	१	७	६	५	४

वारेश से क्रमानुसार गणना करने पर शनि जिस खंड का स्वामी होगा वही खंड उस दिन का गुलिक होगा।

वारेश = जो वार हो उसका स्वामी ग्रह।

रविवार से शनिवार तक गुलिक इस प्रकार होता है

(१) दिन में = $\frac{\text{उस दिन का दिनमान}}{८}$ = दिनमान का ८ भाग करने पर ८ खंड होंगे तो

(१) प्रथम खंड का स्वामी वारेश होगा अर्थात् जो वार होगा उसी का स्वामी वारेश होगा।

(२) अष्टम खंड बिना स्वामी के होगा।

यही ऊपर चक्र में समझाया गया है। जैसे इतवार को सप्तम खंड दिन में गुलिक होगा। इसी प्रकार सोमवार को छठा, मंगल को पाँचवाँ, बुध को चतुर्थ खंड इत्यादि प्रकार से दिन में गुलिक होता है।

(२) रात्रि में = $\frac{\text{रात्रिमान}}{८}$

प्रथम खंड का स्वामी, वारेश से पंचम होगा वहाँ से गणना करने पर शनि जिस खंड में पड़ेगा रात्रि को वही गुलिक होगा।

जैसे रविवार की रात्रि को तीसरा खंड गुलिक होगा, सोमवार को रात्रि में दूसरा खंड, मंगल को रात्रि में पहिला खंड इत्यादि चक्र के प्रमाण से गुलिक होगा।

इन खंडों के नाम इस प्रकार भी हैं

शनि खंड	गुरु खंड	भौम खंड	सूर्यखंड	बुधखंड
गुलिक या मांद्य	यम घंट	मृत्यु	काल	अर्द्ध प्रहर

इन सब बातों को समझाने के लिये नीचे चक्र दिया है। दिनमान या रात्रिमान का समान भाग करने से १ भाग का १ खंड होता है। किस खंड का कौन स्वामी होता है क्रमानुसार नीचे चक्र में बताया है।

दिन खंड

दिनमान ÷ ८ = ८ खंड

दिन खंड	रविवार	सोम०	मंगल०	बुध०	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
१	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि*
२	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि*	रवि
३	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि*	रवि	चंद्र
४	बुध	गुरु	शुक्र	शनि*	रवि	चंद्र	मंगल
५	गुरु	शुक्र	शनि*	रवि	चंद्र	मंगल	बुध
६	शुक्र	शनि*	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु
७	शनि*	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
८	×	×	×	×	×	×	×
वारेश १	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
रात्रि स्वामी वारेश से पंचम	गुरु	शुक्र	शनि*	रवि	चंद्र	मंगल	बुध

खंड स्वामी—दिन या रात्रि के ८–८ खंड होते हैं। दिन खंड और रात्रि खंड के पृथक २ चक्र दिये हैं जिनमें बताया है कि किस खंड का स्वामी कौन ग्रह होता है। जैसे दिन में प्रथम खंड का स्वामी रवि, दूसरे का स्वा० चंद्र, तीसरे का स्वामी मंगल इत्यादि चक्रानुसार होगा। इसी प्रकार और सब ग्रहों का दिन या रात्रि के चक्र के अनुसार खंड स्वामी समझना।

रात्रि खण्ड

रात्रिमान ÷ ८ = रात्रिखंड

रात्रि खंड	रवि वार	चंद्र वार	मंगल	बुध०	गुरु वार	शुक्रवार	शनिवार
१	गुरु	शुक्र	शनि*	रवि	चंद्र	मंगल	बुध
२	शुक्र	शनि*	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु
३	शनि*	रबि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
४	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि*
५	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि*	रवि
६	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि*	रवि	चंद्र
७	बुध	गुरु	शुक्र	शनि*	रवि	चंद्र	मंगल
८	×	×	×	×	×	+	×

*बार का स्वामी = दिन में पहिले खंड का स्वामी जो ग्रह होगा वही वारेश कहलायेगा चाहे दिन हो चाहे रात हो।

गुलिक = दिन या रात्रि चक्रमें जहाँ-जहाँ शनि दिया है वही गुलिक है जहां तारा का चिन्ह बना दिया गया है। जैसे दिन रविवार को सप्तम खंड में, सोमवार को छठे, मंगल को पांचवें, बुध को चौथे, गुरु को तीसरे, शुक्र को दूसरे और शनि को पहिले खंड में गुलिक दिन को रहता है :

इसी प्रकार रात्रि को रवि को तीसरे खंड में, सोमवार को दूसरे खंड में इत्यादि रात्रि खंड चक्र के अनुसार समझ लेना।

निस्वामी = अष्टम खंड का कोई स्वामी नहीं होता।

रात्रि को देखना है तो देखो उस दिन के वारेश से पांचवाँ ग्रह कौन होता है, वही रात्रि के पहिले खंड का स्वामी होगा जैसे ऊपर चक्र में बना दिया गया है।

जैसे दिन में रविवार को वारेश रवि है, रवि से पांचवां गुरु होता है तो गुरु रात्रि के प्रथम खंड का स्वामी हुआ। सोमवार को वारेश चंद्र से पांचवां शुक्र होता है तो उस दिन (सोमवार को) रात्रि में प्रथम खंड का स्वामी शुक्र होगा इत्यादि चक्र के अनुसार समझ लेना। रात्रि में दिन के पंचम खंड को पहिला खंड गिनते हुए देखो शनि किस खंड में पड़ता है, जहां-जहाँ शनि पड़े वहाँ-वहाँ गुलिक खंड समझना।

दिन या रात्रि में गुलिक का समय जानने के लिये उस दिन के दिनमान या रात्रि मान में ८ का भाग देने से जो घड़ी पल प्राप्त होगी वही १ खंड का प्रमाण घड़ी पल में समझना। उपरांत देखना चाहिए कि किस घड़ी पल तक गुलिक (शनि खंड) पड़ता है।

जैसे शनि खंड को गुलिक कहते हैं उसी प्रकार गुरु खंड को यमघंट, भौम खंड को मृत्यु, सूर्य खंड को काल और बुध खंड को अर्द्ध प्रहर कहते हैं। दिन या रात्रि में इन में से जो ग्रह जिस खंड में पड़ता है उस खंड का नाम उसी ग्रह के अनुसार पड़ जाता है जैसे किसी खंड में मंगल पड़ा हो तो चाहे रात हो या दिन उस खंड को मृत्यु खंड कहेंगे।

गुलिक इष्ट साधन

$$\frac{\text{दिनमान}}{८} \times \text{ध्रुवांक} = \text{सूर्योदय से गुलिक इष्ट}$$

$$\frac{\text{रात्रिमान}}{८} \times \text{ध्रुवांक} + \text{दिनमान} = \text{गुलिक इष्ट}$$

गुलिक ध्रुवांक	वार	रविवार	सोमवार	मंगल	बुध	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
	दिन का	७	६	५	४	३	३	१
	रात का	३	२	१	७	६	५	५

दिन में दिन का रात्रि में रात्रि का ध्रुवांक लेना ।

उदाहरण—दिनमान २९–५३–२५ जन्म दिन मंगलवार इष्ट १५–५१–४२॥ जन्म दिन का है । गुलिक साधन करना है ।

मंगलवार को दिन का ध्रुवांक ५ है । अर्थात् मंगलवार के वारेश मंगल से पाँचवें खंड का स्वामी गुलिक (शनि) है जैसा ऊपर चक्र में दिया है ।

दिनमान

$$\frac{२९–५३–२५}{८} \times \frac{\text{ध्रुवांक}}{५} = \frac{२९–५३–२५}{८} \times \frac{५}{१} = \frac{१४९–२७–५}{८}$$

घ० प० वि०

= १८–४०–५३ = गुलिक इष्टः

२९–५३–२५
× ५
१४५ | २६५ | १२५
१४५ | २६५ | १२५ ÷ ६०
+ ४ | + २ | = ५
१४९ | २६७
= २७
= १४९–२७–५
घ० प० वि०

∴ गुलिक इष्ट १८–७०–५३
अर्थात् पांचवें खंड में
इतने इष्ट तक गुलिक खंड रहेगा ।

८) १४९–२७–५ (१८
८ घड़ी
६९
६४
५ × ६०
३०० + २७
८) ३२७ (४०
३२ पल.
७ × ६०
४२० + ५
८) ४२५ (५३
४० वि०.
२५
२४
१

अब इसको इस प्रकार समझेंगे कि:—

घ० प० वि०

$$\text{दिनमान } \frac{२९–५३–२५}{८} = ३–४४–१० \text{ तक प्रथम खंड हुआ}$$

मंगलवार को पाँचवां खंड गुलिक का है इस प्रथम खंड में पांच का गुणा किया तो वही गुलिक इष्ट आ जाता है ।

(२) अब मंगलवार के रात्रि का गुलिक साधन करते हैं।

मंगलवार को रात्रि का ध्रुवांक १ है।

शेष $\dfrac{\text{२९–५३–२५ दिनमान}}{\text{३०– ६–३५=रात्रिमान}}$ | $\left(\dfrac{\text{रात्रिमान (३०–६–३५}}{\text{८}} \times \dfrac{\text{ध्रुवांक)}}{\text{१)}}\right) + \dfrac{\text{दिनमान}}{\text{२९–५३–२५}}$

८)३०–६–३५(३ घड़ी
२४
६ × ६०
३६० + ६
८)३६६(४५ पल
३२
४६
४०
६ × ६०
३६० + ३५
८)३९५(४९ वि०
३२
७५
७२
३

$= \dfrac{\text{३०–६–३५}}{\text{८}}$ + २९–५३–३५

= (३–४५–४९) + (२९–५३–२५)

= ३३–३९–१४ रात्रि का गुलिक इष्ट

अर्थात् सूर्योदय से इष्ट ३३–३९–१४ तक रात्रि को गुलिक खंड रहेगा।

गुलिक लग्न साधन

दिन का इष्ट १५–५१–४२॥ है इस कारण दिन का गुलिक इष्ट उपयोगी होगा। गणित से दिन का गुलिक इष्ट १८–४०–५३ (घ. प. वि०) निकाल चुके हैं। इसी गुलिक इष्ट को इष्ट काल मान कर गुलिक इष्ट कालीन (गुलिक इष्ट काल तक का) सूर्य स्पष्ट कर लेना चाहिए, क्यों कि तात्कालिक सूर्य पर से गुलिक लग्न साधन होती है।

गुलिक इष्ट काल १८–४०–५३ का सूर्य स्पष्ट करना है। उस दिन प्रातः रवि (रा)
११–५°–२४′–५९″ और गति ५९–३९ हैं (देखो लग्न साधन करने का पहिला उदाहरण)

घ० प० वि०

इष्ट १८–४०–५३

× ५९–३९

			३४	२७
		२६	०	
	११	४२		
		५२	७	
	३९	२०		
१७	४२			
१७	९२	१४०	४१	२७
+१	+२	=२०	=४१	=२७
१८	९४			
	=३४			

= १८′–३४″ चालन +

गुणनफल चक्र द्वारा गुणा किया है।

भोग्यांश स्वोदय

$$\frac{१–२८–३२ \times २२८}{३१} = \frac{३३६–२५–३६}{३०}$$

प० वि०

= ११–१२–५१ भोग्य पल मीन

= ११–१३

भोग्यांश १–२८–३२

× २२८

२२८	१८२४	४५६
	४५६	६८४
२२८	६३८४	७२९६ ÷ ६०
+ १०८	+ १२१	= ३६
३३६	६५०५	
	= २५	

= ३३६–२५–३६

रा

प्रातः रवि स्पष्ट–११–५°–२४′–५९″

चालन + १८–३४

= सूर्य स्पष्ट = ११–५ –४३ –३३

+ अयनांश = २२–४७–५५

= सायन सूर्य = ११–२८–३१–२८

रा

तात्कालिक सा० सू०=११–२८°–३१′–२८″

∴ भोग्यांश मीन = १°–२८′–३२″

मीन स्वोदय = २२८

गुलिक इष्ट

१८–४०–५३

× ६०

१०८० + ४० पल

पल

= ११२०–५३

पल वि०

गुलिक इष्ट–११२०–५३

भोग्य मीन –११–१३

११०९–४०

मेष— २२८

८८१–४०

वृष— २५८

६२३–४०

मिथुन— ३०६

३१७–४०

कर्क— ३४० अशुद्ध

$$\therefore \frac{\left(\begin{array}{c}\text{शेष इष्ट}\\ ३१७–४०\end{array}\right)}{३४०\text{कर्क}} \times \frac{३०}{} = \frac{९५३०–०}{३४०}$$

= २८°–१′–४५″ कर्क

३०) ३३६–२५–३६ (११
 ३० पल
 ३६
 ३०
 ६–२५–३६
 ×२
 १२–५१–१२
 = ११–१२–५१
 = ११–१३ भोग्य पल मीन

 रा
सायन गुलिक लग्न ३–२८°–१′–४५″
– अयनांश ०–२२–४७–५५
निरयन गुलिक लग्न ३–५–१३–५०
∴ निरयन गुलिक लग्न स्पष्ट
 रा
 = ३–५°–१३′–५०″

 रा
 = ३–२८°–१′–४५″
 सायन लग्न
 ३१७–४०
 ×३०
 २०–०
 ९५१०
३४०) ९५३०–० (२८
 ६८०
 २७३०
 २७२०
 १०×६०
३४०) ६०० (१′
 ३४०
 २६०×६०
३४०) १५६०० (४५″
 १३६०
 २०००
 १७००
 ३००
 = २८°–१′–४५″ कर्क

यहाँ गुलिक लग्न कर्क ५°–१३′–५०″ आई है। यह लग्न सिंह नवांश में है। नवांश आगे वर्ग साधन प्रकरण में बताया गया है।

राशि के नवें भाग का एक नवांश होता है १, ५, ९ राशि का मेष से, २, ६, १० का मकर से, ३, ७, ११ का तुला से और ४, ८, १२ राशियों का कर्क से पहिला नवांश गिना जाता है। उसके आगे क्रमानुसार राशियों का नवांश प्रत्येक ३′–२०″ का होता है। यहाँ कर्क के दूसरे नवांश में सिंह राशि आती है। इस प्रकार कर्क गुलिक लग्न में सिंह का नवांश हुआ। प्राणपद ६–२०–२५ है। तुला के २०°–२५′ में मेष का नवांश आता है इस से प्राणपद तुला के नवांश में हुआ।

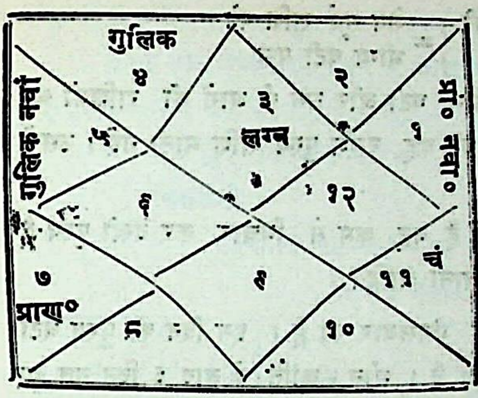

यहाँ गुलिक लग्न कर्क आई है। जन्म लग्न मिथुन है। गुलिक से जन्म लग्न बारहवीं है इस विचार से तो नहीं मिलता। क्योंकि पहिले बता चुके हैं कि गुलिक या प्राणपद स्थान से १, ३, ५, ७, ९, ११ वें भाव में या प्राणपद के नवांश से ५, ७, ९, वें भाव में लग्न होती है और उस लग्न में मनुष्यका जन्म होता है।

प्राणपद से देखा, प्राणपद से नवम, स्थान में लग्न है और चन्द्र के विचार से चंद्र से पांचवें लग्न है तो दोनों प्रकार से ठीक लग्न जंचती है।

जिस प्रकार दिन का गुलिक इष्ट से लग्न साधन किया है उसी प्रकार रात्रि के गुलिक इष्ट को इष्ट मान कर लग्न निकालने से रात्रि का गुलिक लग्न साधन होता है।

लग्न शोधन की अन्य रीति

लग्न में जब संदेह हो और दिन का जन्म हो तो एक और रीति है जिस से शंका निवारण हो सकती है।

विशेष समय की लग्न पुरुष है या स्त्री यह पुरुष घटी से पता चलता है। पुरुष घटी से प्राप्त लग्न को पुरुष और आगे की लग्न स्त्री मान कर इष्ट लग्न को देखो वह स्त्री या पुरुष आती है। पुरुष के जन्म में लग्न पुरुष आना चाहिए। स्त्री के जन्म में स्त्री लग्न होती है। इस से यह भी जान सकते हैं कुंडली पुरुष की है या स्त्री की है।

पुरुष घटी साधन

दिन	इतवार	सोम०	मंगल	बुध	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
पुरुष घटी	२ री	६ वीं	१० वीं	१४ वीं	१८ वीं	२२ वीं	२६ वीं

इन दिनों का जन्म हो तो सूर्योदय से इतनी घड़ी पुरुष लग्न मानी जाती है अर्थात् उस घड़ी पर जो लग्न आये उसे पुरुष लग्न मानना।

इस के लिये स्थानिक राशियों का स्वोदय लेना। और जन्म के दिन सूर्यमास की इष्ट तिथि और उस सूर्यमास के पूरे दिन लेना।

रीतिः—

(सूर्योदय पर जो सूर्य की राशि हो उसका स्वोदय) × (सूर्य मास की गत तिथि) ÷ (उस सूर्य मास के पूरे दिन) = सूर्य राशि की भुक्तिके घड़ी पल

(सूर्य राशि का स्वोदय घटी) — (सूर्य राशि की भुक्त घटी) = शेष सूर्य राशि की भोग्य घटी पल

जन्म दिन की पुरुष घटी में प्राप्त भोग्य घटी और उस के आगे की राशियों का स्वोदय घटाते जाना। जिसका स्वोदय नहीं घटे वह राशि पुरुष राशि मानी गई। उसके आगे की राशि स्त्री राशी होगी।

अब गणित से जो लग्न प्राप्त हुई है वह क्रम से विचार कर देखो पुरुष है या स्त्री। पुरुष के जन्म में वह पुरुष राशि आनी चाहिये।

उदाहरण—मान लो किसी का जन्म मंगलवार का है। इस दिन की पुरुष घटी निकालनी है। मान लो उस दिन मीन के सूर्य हैं। मीन संक्रांति के बाद ६ दिन गत हुए हैं तो सूर्य मास की तिथि ६ हुई। मीन संक्राति खतम होने तक दिन गिने तो मीन संक्रांति में ३० दिन निकले। तो वह सूर्य मास ३० दिन का हुआ।

स्वोदय नरसिंहपुर का		घ०-प०
मेष	मीन	३-४८
वृष	कुंभ	४-१८
मिथुन	मकर	५-६
कर्क	धन	५-४०
सिंह	वृश्चिक	५-३६
कन्या	तुला	५-२९

मीन स्वोदय ३-४८ (३-४८)×६ / ३० = २२-१८ / ३०

गत सू० ति० × ६

३०) २२-१८ (० = ०-४४-३६

पूर्ण तिथि × २ = ०-४५ घटी

४४-३६ मीन भुक्त

=भुक्त मीन ०-४४-३६ = ०-४५ घड़ी

मीन स्वोदय पूरा ३-४८

" भुक्त ०-४५

शेष भोग्य = ३-३

मंगलवार को घ० प०

षपुरु घटी — १०-०

मीन भोग्य — ३-३

६-५०

मेष — ३-४८

३-२

वृष — ४-१८ नहीं घटा तो

वृष पुरुष लग्न हुई

पुरुष-स्त्री

वृष-मिथुन

कर्क-सिंह

कन्या-तुला

इत्यादि। इस प्रकार इष्ट लग्न देखना क्या आई। मान लो किसी का जन्म लग्न कर्क आता है और वह पुरुष है यहाँ वृष पुरुष, मिथुन कन्या आई फिर कर्क लग्न पुरुष हुई तो समझना कि लग्न ठीक है।

जब शंका हो और दिन का जन्म हो तब ही इस रीति से विचार करना अन्यथा नहीं।

मांध इष्ट साधन

जन्म का वार	इतवार	सोमवार	मंगल	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
मांध ध्रुवांक	२६	२२	१८	१४	१०	६	२

मांद्यघटी = (दिनमान × ध्रुवांक) ÷ ३०

इससे लग्न स्पष्ट की रीति से मांद्य लग्न स्पष्ट करना।

उदाहरण—मान लो दिनमान २९–५३–२५ है। मंगल का जन्म है। मंगल का ध्रुवांक १८ है। दिनमान में १८ का गुणाकर ३० का भाग देने से मांद्यघटी निकलेगी।

दिनमान २९–५३–२५
× १८ मंगल

	७	३०
१५	५४	
५२२		
५३८	१	३०

३०) ५३८–१–३० (१७ घटी
३०
२३८ घ. प. वि.
२१० = १७–५६–३
२८–१–३० मांद्य घटी
× २ = मांद्य इष्ट
५६–३–०

मांद्य लग्न साधन

रा
मान लो जन्म का प्रातः रवि ११–५°–२४′–५९″
गति ५९′–३९″ है
मांद्य इष्टकाल का सूर्य स्पष्ट करना है।

मांद्य १७–५६–३
× ५९–३९

			१	५७
		३६	२४	
	११	३		
		२	५७	
	५५	४		
१६	४३			
१७	४९	४६	२२	५७

= १७′–४९″–४६
= १७′–५०″ चालन +

रा
सायन सूर्य ११–२८°–३०′–४४″
भोग्यांश मीन १–२९–१६
मीन स्वोदय २२८

भोग्यांश स्वोदय

$$\frac{१–२९–१६ \times २२८}{पल\ ३०} = \frac{३३९\text{-}१२\text{-}४८}{३०}$$

= ११–१८–२५ भोग्य मीन

१–२९–१६
× २२८

२२८	२०५२	१३६८
	४५६	२२८
२२८	६६१२	३६४८ ÷ ६०
+ १११	+ ६०	= ४८
३३९	६६७२	
	= १२	

३०) ३३९–१२–४८ (११ पल
३० पल वि.
३९ = ११–१८–२५–
३० भोग्य पल मीन ।
९–१२–४७
× २
१८–२५–३६
मांद्य इष्ट १७–५६–३
× ६०
१०२० + ५६
= १०७६–३ पल
इष्ट = १०७६–३
मीन भोग्य = ११–१८–२५
१०६४–४४–३५
– मेष –२२८
८३६
वृष – २५८
५७८
मिथुन – ३०६
२७२–४४–३५
कर्क – ३४० अशुद्ध
शेष इष्ट

$$\frac{२७२–४४–३५ \times ३०}{३४० \text{ कर्क}}$$

$$= \frac{८१८९–१७–३०}{३४०}$$

= २४°–५′–१०″ कर्क
सायन लग्न

रा
प्रातः सूर्य ११–५°–२४′–५९″
+ चालन १७–५०
∴ स्पष्ट सूर्य = ११–५–४२–४९
+ अयनांश २२–४७–५५
= सायन सूर्य ११–२८–३०–४४

३४०) ८१८२-१७-३० (२४°
६८०
१३८२
१३६०
२२ × ६०
१३२० + १७
३४०) १३३७ (३′
१०२०
३१७ × ६०
१९०२०
+ ३०
३४०) १९०५० (५६′
१७००
२०५०
२०४०
१०

२७२-४४-३५
× ३०
१७–३०
२२–०
८१६०
८१८२–१७–३०
= कर्क २४°-३′-५६″
रा
= ३-२४°-३′-५६″
सायन लग्न

सायन लग्न – ३–२४°–३′–५६″
– अयनांश – २२–४७–५५
३–१–१६–१
रा
∴ मांद्य लग्न स्पष्ट = ३–१°–१६′–१″

होरा लग्न साधन

(१) इष्ट घड़ी के पल बनालो

पलात्मक इष्ट घड़ी ÷ ५ = लब्धि अंशादि । इसके राशि आदि बनालो ।

जन्म लग्न विषम हो तो = जन्म का सूर्य + उपरोक्त लब्धि = होरा लग्न

,, ,, सम ,, ,, लग्न + ,, ,, = ,, ,,

घ० प० वि   प० वि०

उदाहरण—मान लो इष्ट १५–५१–४२॥ है

×६०

९००+५१

= ९५१–४२॥

$\frac{९५१–४२॥}{५} = १९०°–२०'–३०''$

रा

= ६–१०°–२०'–३०'' लब्धि

रा

लग्न २–१०°–११'–५३'' = लग्न विषम

सूर्य ११–५–४०–४५

+ लब्धि ६–१०–२०–३०

१७–१६–१–१५

= ५–१६–१–१५ होरा लग्न

५) ९५१–४२–३० (१९० अंश
५
४५
४५
१ × ६० + ४२
५) १०२ (२०'
१०
२ × ६०
१२० + ३०
५) १५० (३०
१५
०

(२) दूसरी रीति

इष्ट घटी × $\frac{२}{५}$ = लब्धि राशि अंशादि

जन्म लग्न विषम हो तो = सूर्य स्पष्ट + लब्धि = होरा लग्न

,, ,, सम ,, = जन्म लग्न + लब्धि = ,, ,,

उदाहरण   = लब्धि

रा–अं

६–१०–२०'–३०''

लग्न विषम है तो इसे सूर्य में जोड़ा

रा

सूर्य–११–५°–४०–४५''

+ लब्धि– ६–१०–२०–३०

= १७–१६– १–१५

= ५–१६– १–१५ होरा लग्न

घ० प० वि०
इष्ट १५–५१–४२॥
×२
५) ३१–४३–२५ (६ राशि
३०
१–४३–२५
×३०
१२–३०
२१–३०
३०
५) ५१–४२–३० (१० अंश
५
१×६०
६०+४२
५) १०२ (२०′
१०
२×६०
१२०+३०
५) १५० (३०″
१५

इस में ५ का भाग देने की विशेष रीति है। क्योंकि केवल ६० ही ६० का हिसाब होता तो साधारण प्रकार से भाग होता परन्तु यहाँ राशि के अंश बनाने को ३० का गुणा करना पड़ता है शेष पूरी संख्या घड़ी पल आदि में ३० का गुणा कर ५ का भाग देना चाहिए। इस के आगे ६० का हिसाब होने से साधारण प्रकार से गुणा भाग करना। इस दूसरी रीति में गणित क्रिया कुछ अड़चन की प्रतीत होती है। इस कारण पहिली ही रीति से होरा लग्न निकालना।

—:०:—

अध्याय १२

भाव साधन

ग्रहों की ठीक-ठीक स्थिति किस भाव में किस प्रकार है इसके स्पष्टीकरण के लिये भाव साधन की आवश्यकता होती है। जैसे लग्न साधन किया है उसी प्रकार भाव का भी साधन किया जाता है।

लग्न साधन करने के उपरांत दशम साधन करना पड़ता है। दशम भाव साधना

कर लेने से इतर शेष भाव सरलता से स्पष्ट हो जाते हैं। इस कारण दशम भाव साधन करना बड़ा महत्त्व का है।

बिना भाव स्पष्ट किये ग्रहों की ठीक स्थिति भाव में न जान सकने के कारण ग्रहों का प्रत्यक्ष फल प्रगट नहीं हो सकता। ग्रहों का किसी विशेष भाव में वह फल होगा या नहीं या कितना फल वह ग्रह देगा, बिना भाव स्पष्ट किये नहीं जाना जा सकता। इस कारण भाव स्पष्ट करना आवश्यक है।

दशम साधन

दशम भावसाधन को क्रिया को दशम साधन कहते हैं। दशम भाव साधन करना आगे बताया जायगा।

दशम साधन करने में सब क्रिया लग्नवत् (लग्न साधन सरीखी) करनी पड़ती है। लग्न साधन और दशम साधन की रीति में केवल इस प्रकार अंतर है —

(१) लग्न साधन में इष्ट काल पर से लग्न साधन करना पड़ता है परन्तु दशम साधन करने में नत काल बनाकर नत को ही इष्टकाल मान कर दशम साधन करते हैं।

(२) लग्न साधन करने में राशियों के स्थानिक उदयकाल (स्वोदय) के अनुसार इष्ट में से स्वोदय घटाना पड़ता है। परन्तु दशम साधन में स्वोदय का कोई उपयोग नहीं होता। स्वोदय के स्थान में लंकोदय का उपयोग होता है। इन्हीं लंकोदय के पल को नतकाल में से घटाकर दशम साधन करते हैं।

शेष क्रिया लग्न के समान है।

इस कारण दशम साधन करने के लिये पहिले नत साधन कर लेना चाहिए।

नत साधन

नत = मध्याह्न रेखा से इष्ट के अंतर को नत कहते हैं।
नत = meridian distance
मध्याह्न रेखा = दशमस्थान, सिर के ऊपर का स्थान, = दोपहर।
नत २ प्रकार का होता है।
(१) पूर्वनत = मध्याह्न के पहिले का नत।
(२) पश्चिम नत = मध्याह्न के पश्चात् का नत।

पूर्वनत = मध्याह्न रेखा के इसी पार अर्थात् अर्द्ध रात्रि से मध्याह्न तक का इष्ट हो तो पूर्व नत होता है।

पश्चिम नत = मध्याह्न के उस पार अर्द्ध रात्रि तक इष्ट हो तो पश्चिम नत होता है।

इन दोनों प्रकार के नतों को चित्र संख्या ५ में देखने से समझ में आ जायगा।

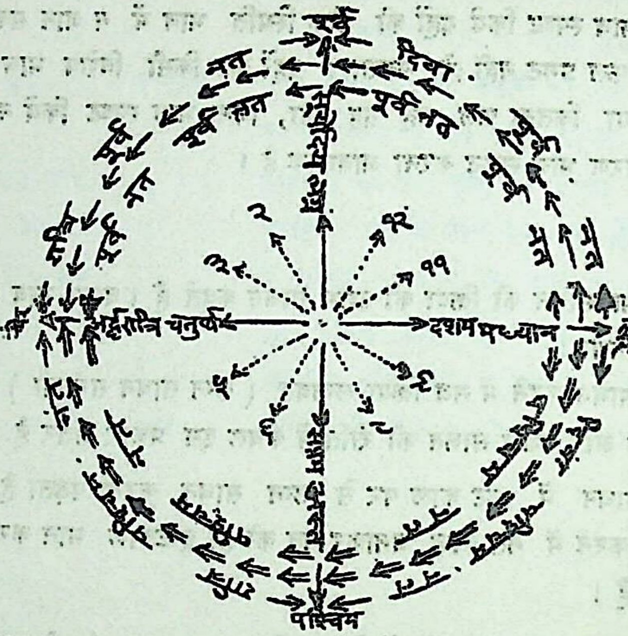

नत दर्शक
चित्र संख्या
५

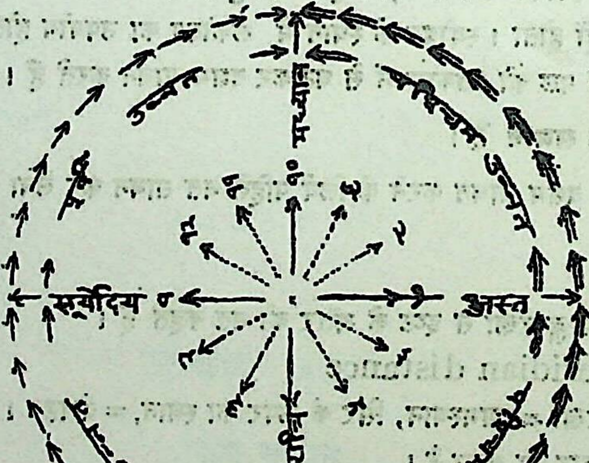

उन्नत दर्शक
चित्र संख्या
६

इस चित्र में इकहरे लकीर वाले तीर पूर्व नत दर्शक हैं और दुहरी लकीर वाले तीर पश्चिम नतदर्शक हैं। ये मध्यान्ह से आरम्भ होकर अर्द्ध रात्रि के स्थान में अंत होते हैं।

मध्याह्न से अर्द्ध रात्रि के समय में सदा ३० घड़ी का अंतर रहता है क्योंकि पूरा दिन मान ६० घड़ी का होता है।

उन्नत अर्द्ध रात्रि के स्थान से मध्याह्न तक गिना जाता है। देखो चित्र संख्या ६।

पूर्व उन्नत = अर्द्ध रात्रि से मध्याह्न तक इष्ट हो तो पूर्व उन्नत होता है।

पश्चिम ,, = मध्याह्न से अर्द्ध रात्रि तक इष्ट हो तो अर्द्ध रात्रि से अस्त स्थान पर से होते हुए जो अंतर मध्याह्न तक नापा जाता है उसे पश्चिम उन्नत कहते हैं।

चित्र संख्या ६ में इकहरे लकीर के तीर द्वारा पूर्व उन्नत की गति बताई है और दुहरी लकीर के तीर द्वारा पश्चिम उन्नत की गति बताई गई है।

स्पष्ट रूप से समझने के लिये मध्याह्न से अर्द्ध रात्रि स्थान तक एक रेखा खींच लो। ठीक सिर के ऊपर मध्याह्न होता है उसे दशम स्थान भी कहते हैं। अपने पैर के नीचे अर्द्ध रात्रि का स्थान होता है जिसे चतुर्थ स्थान कहते हैं। इस प्रकार रेखा खींचने से २ विभाग हो जाते हैं। वह विभाग जो लग्न (पूर्व) की ओर पड़ता है पूर्व नत है और जो विभाग अस्त (पश्चिम) की ओर पड़ता है वह पश्चिम नत है।

दिन और रात्रि के कारण प्रत्येक के २ विभाग हो जाते हैं।

(१) दिन में (१) दिवा पूर्व नत = सूर्योदय से मध्याह्न तक।

(२) दिवा पश्चिम नत = मध्याह्न से सूर्यास्त तक।

(२) रात्रि में (१) रात्रि पश्चिम नत = सूर्योदय के उपरांत अर्द्ध रात्रि तक।

(२) रात्रि पूर्व नत = अर्द्ध रात्रि के उपरांत सूर्योदय तक

देखो नत दर्शक चित्र संख्या ५

नत साधन

(१) दिवा पूर्व नत = दिन में मध्याह्न के पूर्व इष्ट काल हो
= (दिनार्द्ध – दिन गत घटी अर्थात् इष्ट)

(२) दिवा पश्चिम नत = दिन में मध्याह्न के पश्चात् इष्ट हो
= (दिनार्द्ध – दिन शेष घटी) या (इष्ट-दिनार्द्ध)

(३) रात्रि पश्चिम नत = रात्रि में मध्य रात्रि के पूर्व का इष्टकाल हो
= (दिनार्द्ध + रात्रि गत घटी) या (इष्ट-दिनार्द्ध)

(४) रात्रि-पूर्व नत = अर्द्ध रात्रि के पश्चात् का इष्ट हो
= (दिनार्द्ध + रात्रि शेष घटी) या (दिनार्द्ध + ६० घड़ी-इष्ट)

सूर्योदय से सूर्य अस्त तक के समय को दिनमान कहते हैं।

दिनमान को आधा करने से दिनार्द्ध होता है। दिनार्द्ध का समय (मध्याह्न) दशम स्थान पर सूर्य आने पर होता है। सूर्योदय से इष्टकाल तक जितना समय होता है उसे इष्ट कहते हैं।

दिन गत घटो = दिन में जो इष्ट हो।

दिन शेष घटो = दिनमान में इष्ट घटाने पर दिनमान का जो समय बचता है।

दिनमान को ६० घड़ो में से घटाने से रात्रिमान होता है। रात्रिमान का आधा रात्रि अर्द्ध होता है।

रात्रि का इष्ट काल हो तो = (इष्ट–दिनमान) = रात्रिगत घटो।

अर्द्ध रात्रि के बाद का इष्ट हो = (६० घड़ीं–इष्ट) = रात्रि शेष घटी।

दशम साधन करने के लिये मध्याह्न से इष्टकाल तक अंतर नाप के उपरोक्त प्रकार से निकाला जाता है। चाहे यह दूरी (अंतर) मध्याह्न से पूर्व की ओर हो चाहे पश्चिम की ओर हो, मध्याह्न से अर्द्ध रात्रि तक जहाँ कहीं भी इसके भीतर इष्टकाल हो उस इष्टकाल तक नापा जाता है।

उदाहरण

(१) पूर्व दिवा नत = दिन में मध्याह्न से पहिले और सूर्योदय के उपरांत जो इष्ट हो वह दिवा पूर्व नत कहलाता है। इसे निकालने के लिये सूर्योदय के उपरांत जितना इष्ट हुआ हो दिनार्द्ध (मध्याह्न काल) में से घटाओ तो मध्याह्न की दूरी इष्टकाल से निकल आयगी। इसी दूरी को पूर्व नत कहते हैं।

घ. प.

मान लो दिनमान ३२–० है। दिनार्द्ध १६–० हुआ। रात्रिमान=(६० घड़ी– दिनमान ३२–०) = २८ घड़ी। रात्रि अर्द्ध १४–० हुई।

यदि अपना इष्ट १० घड़ी है यह इष्ट मध्याह्न (दिनार्द्ध) के पहिले का है तो =(दिनार्द्ध १६–०) – (इष्ट १०–०) = ६ घड़ी शेष रहा। यह ६ घड़ी दिवा पूर्व नत है। इसका अर्थ यह हुआ कि मध्याह्न होने में ६ घड़ी शेष है।

(२) दिवा पश्चिम नत = दिन में मध्याह्न के उपरांत का सूर्यास्त तक का इष्टकाल हो तो दिवा पश्चिम नत होता है। यहाँ देखना चाहिए मध्याह्न से इष्टकाल कितनी दूर है इसके लिये इष्टकाल में से दिनार्द्ध घटा दो तो मध्याह्न की दूरी निकल आयगी।

जैसे इष्ट २० घड़ी है। उपरोक्त दिनार्द्ध १६ घड़ी है तो इष्ट से दिनार्द्ध घटाया (इष्ट – दिनार्द्ध) = ४ घड़ी = यह दिवा पश्चिम नत हुआ अर्थात् मध्याह्न से
२०–०–१६–०
पश्चिम को ४ घड़ी इष्ट आगे चला गया है।

इसको इस प्रकार भी निकाल सकते हैं। इष्टकाल २० घड़ी, दिनमान ३२ घड़ी है तो (दिनमान – इष्ट) = १२ घड़ी दिन की शेष घटी हुई। दिन की शेष घटी
३२–० २०–०
को दिनार्द्ध में से घटा देना (दिनार्द्ध – दिन शेष घटी) = ४ घड़ी। यही पश्चिम नत
१६–० १२–०
हुआ। जिस का अर्थ यह है कि मध्याह्न से इष्टकाल ४ घड़ी आगे दूरी पर चला गया है।

(३) रात्रि पश्चिम नत = सूर्यास्त होने के उपरान्त और अर्द्ध रात्रि के बीच का इष्टकाल हो तो दिनार्द्ध में रात्रि गत घटी जोड़ दो तो पश्चिम की ओर मध्याह्न से इष्टकाल की दूरी निकल आयगी।

जैसे रात्रि का इष्ट काल ४० घड़ी है दिनमान ३२ घड़ी है तो गत रात्रि घटी (इष्ट – दिनमान) घ, प.

४०–०–३२–० = ८–० = रात्रि गत घटी हुई। अर्थात् सूर्यास्त के उपरान्त ८ घड़ी और जाने पर इष्ट मिलता है।

(गत रात्रि घटी + दिनार्द्ध) = २४ घड़ी होता है। यहाँ २४ घड़ी पश्चिम
८–० + १६–०
नत हुआ। इससे प्रगट हुआ कि पश्चिम की ओर मध्याह्न से २४ घड़ी और इष्ट काल गया है अर्थात् मध्याह्न से इष्ट काल की दूरी २४ घड़ी है।

इसे इस प्रकार भी निकाल सकते हैं कि इष्ट में से दिनार्द्ध घटा दो तो रात्रि का पश्चिम नत निकल आयगा।

(इष्ट — दिनार्द्ध)

जैसे ४०–०–१६–० = २४ घटी हुई। यही रात्रि का पश्चिम नत हुआ।

वास्तव में दिवा पश्चिम नत और रात्रि पश्चिम नत निकालने की एक ही रीति है। चाहे दिन का इष्ट हो या रात का इष्ट हो वह पश्चिम नत ही कहलायगा। दोनों एक ही हैं यहाँ केवल समझाने के लिये दिन और रात्रि का भेद करके उदाहरण देकर समझाया है।

(४) रात्रि पूर्वनत = अर्द्ध रात्रि के उपरान्त सूर्योदय तक का इष्ट काल हो तो रात्रि पूर्व नत होता है। दिनार्द्ध में रात्रि की शेष घटी जोड़ दो तो मध्याह्न से पूर्व को ओर इष्ट काल की दूरी निकल आयगी।

जैसे इष्ट ५० घड़ी है। अब रात्रि की शेष घटी निकालनी है अर्थात् रात्रि कितने घटी और बची है यह जानने को ६० घड़ी में से इष्ट घटाने से रात्रि की शेष घड़ी निकल आती हैं (६० घड़ी – इष्ट ५० घड़ी) = १० घड़ी रात्रि शेष रही।

इसे दिनार्द्ध में जोड़ा (१६ दिनार्द्ध + १० रात्रि शेष घड़ा=२६ घटी) यह रात्रि का पूर्व नत हुआ। अर्थात् इष्ट से मध्याह्न २६ घड़ी की दूरी पर है।

अर्द्ध रात्रि के उपरान्त मध्याह्न तक कहीं भी इष्ट हो तो पूर्व नत ही कहलाता है। अपना इष्ट अर्द्ध रात्रि के उपरान्त है इससे पूर्व नत कहलाया।

या (दिनार्द्ध + ६० घड़ी)–इष्ट=पूर्व नत। दिनार्द्ध अल्प होने से $\frac{\text{इष्ट नहीं}}{\text{दिनार्द्ध–इष्ट}}$

घटता इससे ६० जोड़कर इष्टकाल घटाना पड़ता है। जैसे १६–० ५०–०=(१६ + ६०) –५० =(७६–५०)=२६ घटी पूर्व नत हुआ।

नत के मुख्य २ ही भेद हैं पूर्व नत और पश्चिम नत, जिनका काम पड़ता है और मुख्य २ ही रीति नत निकालने की है।

(१) पूर्व नत=(दिनार्द्ध–इष्ट) इष्ट न घटे तो दिनार्द्ध में ६० जोड़ कर घटाना

(२) पश्चिम नत=(इष्ट–दिनार्द्ध)

नत समझाने के लिये ही ऊपर ४ भेद करके समझायें हैं।

दशम साधन करने के लिये इसी नतकाल की आवश्यकता पड़ती है। पूर्वनत हो तो भुक्त प्रकार से, पश्चिम नत हो तो भोग्य प्रकार से नत को इष्ट मानकर लंकोदय पर से लग्नवत् क्रिया करने से दशम भाव स्पष्ट होता हैं।

उन्नत—

दशम भाव साधन करने के लिये कभी उन्नत को भी आवश्यकता पड़ जाती है। उन्नत क्या है इसे चित्र संख्या ६ देखकर अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए।

उन्नत=(३० घड़ी–नत)

३० घड़ी में से नत घटा देने से उन्नत होता है। मध्याह्न और अर्द्धरात्रि में सदा ३० घड़ी का अंतर रहता है जैसा नीचे बताये उदाहरण से प्रगट होगा।

दिन मान	रात्रि मान	दोनों का योग	मध्याह्न (दिनार्द्ध)	अर्द्ध रात्रि (रात्रि-अर्द्ध)	दोनों का योग	मध्याह्न इष्ट (दिनार्द्ध)	संध्या इष्ट दिन मान दिन का अंत	अर्द्ध रात्रि का इष्ट दिन मान + रात्रिअर्द्ध	मध्याह्न और रात्रि अर्द्ध के इष्ट में अंतर
३१	२९	६०	१५॥	१४॥	३०	१५॥	३१	३१ + १४॥=४५॥	३०
३२	२८	६०	१६	१४	३०	१६	३२	३२ + १४ =४६	३०
३३	२७	६०	१६॥	१३॥	३०	१६॥	३३	३३ + १३॥=४६॥	३०

मध्याह्न में दशम भाव का स्थान है वहीं दिनार्द्ध होता है और अर्द्धरात्रि में चतुर्थ भाव का स्थान है वहाँ रात्रि अर्द्ध होता है। ऊपर दिन मान के ३ उदाहरण देकर

बतलाये हैं। दिनमान ३१ घड़ी है तो रात्रि अर्द्ध का इष्ट ४५॥ होता है। इस अर्द्ध रात्रि के इष्ट में से दिनार्द्ध १५॥ घड़ी घटाया तो शेष ३० घडी ही रहती है। इस प्रकार मध्याह्न और अर्द्ध रात्रि के बीच सदा ३० घड़ी का अंतर रहता है।

मध्याह्न से इष्ट काल की दूरी को नत कहते हैं और अर्द्ध रात्रि से इष्ट की दूरी को उन्नत कहते हैं। जिस प्रकार नत मध्याह्न से अर्द्ध रात्रि तक नापा जाता हैं उसी

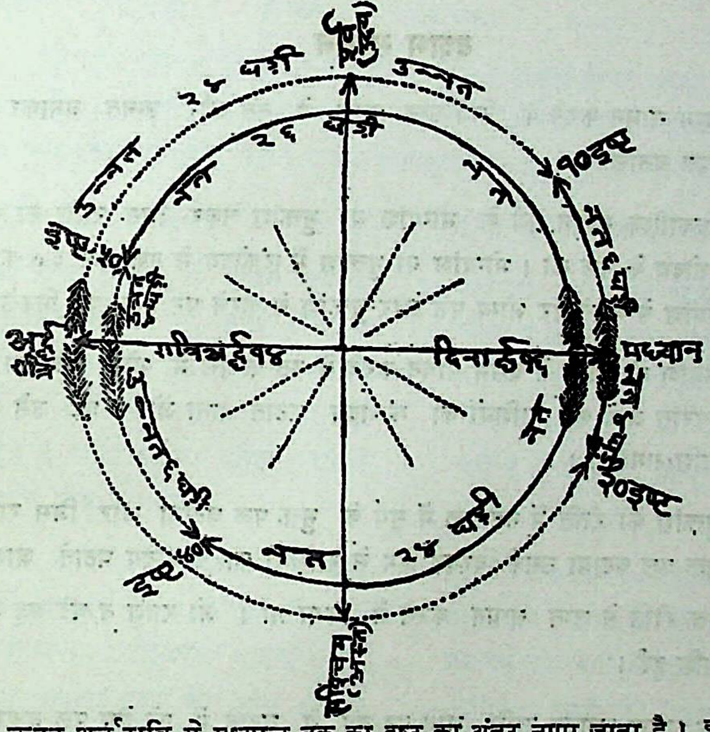

प्रकार उन्नत अर्द्ध रात्रि से मध्यांह्न तक का इष्ट का अंतर नापा जाता है। इसी कारण ३० घड़ी में से नत घड़ी पल घटा देने से उन्नत की घड़ी पल आ जाती है।

चित्र संख्या ७ में उपरोक्त चारों उदाहरण देकर नत और उन्नत बताया है। देखो चित्र संख्या ७। मध्यांह्न से जो लकीर वाला तीर इष्ट की ओर जाता है वह नत है और अर्द्ध रात्रि से जो बिन्दुवाला तीर मध्याह्न की ओर जाता है वह इष्ट का अन्तर उन्नत कहलाता है।

इष्ट	नत	उन्नत	नत उन्नत योग
१०	६ पूर्व	२४ पूर्व	३०
२०	४ पश्चिम	२६ पश्चिम	३०
४०	२४ ,,	६ ,,	३०
५०	२६ पूर्व	४ पूर्व	३०

इस प्रकार नत उन्नत को अच्छी प्रकार समझ लेने के उपरान्त दशम साधन करना चाहिए।

अध्याय १३

दशम साधन

दशम साधन करने के लिये इष्ट काल से नत और उन्नत बनाकर उनको घड़ियों के पल बनालो।

तात्कालिक सायन सूर्य के भोग्यांश या भुक्तांश लेकर जिस राशि का सूर्य हो उसी के लंकोदय के पल लो। भोग्यांश या भुक्तांश में लंकोदय से गुणा कर ३० का भाग दो तो भोग्यांश से करने पर भोग्य पल और भुक्तांश से करने पर भुक्त पल निकलेगा।

(१) भोग्यांश की रीति से दशम साधन करने में नत के पल में भोग्य पल घटा देना। उपरांत आगे की राशियों का लंकोदय घटाते जाना जो न घटे उसे अशुद्ध राशि समझना।

(२) भुक्तांश की रीति में नत पल में सूर्य के भुक्त पल घटाना और जिस राशि का भुक्त पल घटाया उसके विरुद्ध क्रम से राशियों का लंकोदय घटाते जाना जैसे भुक्त रीति से लग्न साधन करने में किया था। जो राशि न घटे वह अशुद्ध राशि हुई।

इस प्रकार अशुद्ध राशि आने पर नत से घटाने में जो शेष पल बचा उसमें ३० का गुणा कर अशुद्ध राशि के लंकोदय से भाग देने से अंश कला विकला में उत्तर आयगा।

(१) भोग्यांश रीति में यह उत्तर अशुद्ध राशि के अंश कलादि का होने से उसी अशुद्ध राशि के अंश कलादि दशम भाव के प्राप्त हुए।

(२) यदि भुक्तांश रीति से किया है तो अशुद्ध राशि का जो अंशादि हैं उनको अशुद्ध राशि के अंक से घटा दो तो सायन दशम भाव प्राप्त होगा।

सायन दशम भाव में से अयनांश घटा दो तो निरयन दशम भाव आयगा।

दशम भाव साधन में स्वोदय का कोई उपयोग नहीं होता। इसमें लंकोदय ही लिया जाता है :

लंकोदय

राशियाँ				लंकोदय पल	वेधोपलब्ध लंकोदय पल
१ मेष	६ कन्या	७ तुला	१२ मीन	२७८	२७९
२ वृष	५ सिंह	८ वृश्चिक	११ कुम्भ	२९९	२९९
३ मिथुन	४ कर्क	९ धन	१० मकर	३२३	३२२

पूर्व और पश्चिम २ प्रकार से नत भेद होने से किससे किस प्रकार दशम साधन करना चाहिए आगे बताया है। अर्थात् पूर्व नत हो तो किस प्रकार से और पश्चिम नत हो तो किस प्रकार से दशम साधन करना चाहिए उसकी शुद्ध रीति नीचे बताई है:—

(१) पूर्व नत हो तो

(१) साधारण प्रकार से सायन सूर्य के भुक्तांश निकाल कर भुक्त रीति से गणित करना। इसमें सायन सूर्य में ६ राशि जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। ६ राशि जोड़कर गणित करने से चतुर्थ भाव आयगा।

(२) (इष्ट – दिनार्द्ध) = दशम का इष्ट यदि दिनार्द्ध न घटे तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्द्ध घटाना। जो शेष रहे वह दशम का इष्ट होगा। इस रीति में नत उन्नत का कोई काम नहीं पड़ता।
इसमें सायन सूर्य के भोग्यांश लेकर भोग्य रीति से दशम के इष्ट पर से दशम साधन करना

(३) पूर्वनत से पूर्व उन्नत निकाल कर सायन सूर्य के भोग्यांश लेकर भोग्य रीति से करने में चतुर्थ भाव आता है। इस कारण सायन सूर्य में पहिले

(२) पश्चिम नत हो तो

(१) साधारण प्रकार से सायन सूर्य के भोग्यांश निकाल कर भोग्य रीति से गणित करना। इसमें भी सायन सूर्य में ६ राशि जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। ६ राशि जोड़ने से चतुर्थ भाव आ जाता है।

(२) (इष्ट – दिनार्द्ध) = दशम का इष्ट यदि इष्ट कम हो जिससे दिनार्द्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घटी और जोड़कर उसमें से दिनार्द्ध घटाना जो शेष रहे वह दशम का इष्ट होगा। इस रीति में नत या उन्नत का कोई काम नहीं पड़ता।
सायन सूर्य के भोग्यांश लेकर भोग्य रीति से दशम के इष्ट पर से ही दशम भाव साधन करना।

(३) पश्चिमनत पर से पश्चिम उन्नत निकालकर सायन सूर्य के भुक्तांश लेकर भुक्त रीति से करने में चतुर्थ भाव आता है। इसमें ६ राशि जोड़

ही ६ राशि जोड़कर उपरोक्त प्रकार से दशम साधन करना या चतुर्थ भाव आनेपर ६ राशि जोड़ कर दशम भाव बना लेना।

दो तो दशम भाव आ जाता है। या पहिले ही सा० सूर्य की राशि में ६ जोड़कर इस सूर्य के भुक्तांश लेकर भुक्त रीति से पश्चिम उन्नत पर से गणित करने में दशम भाव आता है।

(४) सायन सूर्य के भुक्त पल निकाल कर पूर्वनत से घटाना, शेष बचे तो उसके वाद की और राशियाँ विरुद्ध क्रम से घटाते जाना जैसे सावारण प्रकार से भुक्त रीति से करते हैं। जो न घटे तो उस अशुद्ध राशि के अंश बना लेना फिर ये अशुद्ध राशि के अंशादि और सा० सूर्य के भुक्त अंशादि और जितनी राशियाँ घट चुकी हैं उन सबका योग करो। पूर्व नत होने से इस योग फल को सा० सूर्य में घटा दो तो दशम स्पष्ट होगा। इसे ऋण संज्ञक विधि कहते हैं।

(४) सा० सूर्य के भोग्यांश के भोग्य पल लेकर पश्चिम नत से घटाना। शेष बचे तो आगे की राशियाँ क्रमानुसार घटाते जाना जैसे भोग्य रीति में करते हैं। जो न घटे तो अशुद्ध रीशि के अंश बनाकर उस अंशादि में सा० सूर्य के भोग्यांश और जितनी राशियाँ घट चुकी हैं सबका योग कर इस योग फल को सायन सूर्य में पश्चिम नत होने के कारण जोड़ देवे तो दशम भाव स्पष्ट हो जायगा। इसे धन संज्ञक विधि कहते हैं।

उपरोक्त प्रकार से आया हुआ सायन दशम भाव होगा। उस में से अयनांश घटा देने से शुद्ध निरयन दशम भाव निकल आयगा।

उपरोक्त बताये चारों प्रकार से गणित करने में एक ही उत्तर आयगा केवल १ विकला मात्र का अंतर किसी-किसी में पड़ेगा क्योंकि विकला के आगे का शेष गणित में छोड़ देते हैं इस कारण यह अंतर पड़ सकता है। यदि सूक्ष्म रूप से गणित किया जाय तो यह अंतर भी नहीं रह जाता।

इन रीतियों से भिन्न गणित करने से ठीक उत्तर नहीं आता। इन चारों प्रकार से दशम साधन करने के लिये ४ उदाहरण लेकर उन का नत साधन करते हैं।

उदाहरण

भाद्रपद शुक्ल ७ सम्वत् २००० शाका १८६४ दिनमान

३१–०

दिनार्द्ध	रात्रिमान	रात्रि अर्द्ध	इष्ट कालोन सा० सूर्य मान लो
१६–३०	२९–०	१४–३०	५–१८°–०′–०″ है

(१) नत साधन

उदाहरण	इष्टघड़ी	नत	रीतिं	नत घड़ी-पल	नत पल
			दिनादर्ध–इष्ट		
(१)	१२–३०	पूर्व	१६–३० १२–३०=	४–०	२४०
(२)	२२–३०	पश्चिम	इष्ट–दिनादर्ध =	६–०	३६०
			२२॥ १६॥		
(३)	३६–३०	"	इष्ट–दिनादर्ध =	२०–०	१२००
			३६॥ १६॥		
(४)	५०–३०	पूर्व	शेष रात्रि =	२६–०	१५६०
			६०–५०॥=९॥		
			+ दिनार्ध = $\frac{१६॥}{२६}$		

(२) दशम का इष्ट साधन

उदाहरण	इष्ट घड़ी	रीति	दशम की इष्ट घड़ी	दशम का इष्ट पल
		इष्ट–दिनादर्ध		
(१)	१२॥	(१२॥ + ६०)–१६॥	५६	३३६०
(२)	२२॥	(२२॥–१६॥)	६	३६०
(३)	३६॥	(३६॥–१६॥)	२०	१२००
(४)	५०॥	(५०॥–१६॥)	३४	२०४०

दशम साधन के २ प्रकार हैं एक तो नत या उन्नत से और दूसरे विना नत उन्नत के ही केवल दशम के इष्ट पर से, दशम साधन किया जाता है।

केवल इष्ट में से दिनादर्ध घटाने से जो मिले वही दशम का इष्ट होता है। पश्चिम नत और दशम का इष्ट एक ही निकलता है जैसा ऊपर के उदाहरण से प्रगट होगा। केवल पूर्व नत और दशम के इष्ट में अंतर पड़ता है परन्तु उत्तर में कोई अंतर नहीं पड़ता।

दशम के इष्ट से यदि दशम साधन किया जाय तो भोग्य रीति से करना पड़ता है जैसा कि पश्चिम नत में होता है। परन्तु पूर्व नत भुक्त रीति से होने के कारण (६०–पूर्व नत) = दशम का इष्ट हो जाता है। जिस प्रकार लग्न साधन करने में भुक्त रीति से करने में ६० में से इष्ट घटा कर लग्न साधन करते हैं वही क्रिया यहाँ पूर्व नत के सम्बन्ध में समझना। इन दोनों प्रकार की रीतियों से दशम साधन करने में कोई अंतर नहीं पड़ता जैसा कि आगे उदाहरण से स्पष्ट होगा।

लग्न साधन करने के लिये इष्ट कालीन सूर्य में अयनांश मिलाकर जो तात्कालिक सायन सूर्य लिया था इस में उसी सायन सूर्य से ही दशम साधन किया जाता है। दशम भाव को दशम लग्न भी कहते हैं।

यहाँ केवल सायन दशम ही साधन करेंगे क्योंकि सायन में से अयनांश घटा कर निरयन दशम बनाया जा सकता है।

सुविधा के लिये एक ही सायन सूर्य लिया है जिससे बार-बार भोग्यांश के भोग्य पल और भुक्तांश के भुक्त पल न निकालना पड़े। इस कारण सायन सूर्य के भोग्य पल और भुक्त पल पहिले निकाल कर रख लेते हैं जिस की रीति लग्न साधन में उदाहरण देकर समझा चुके हैं।

सायन सूर्य का भुक्तांश और भोग्यांश बनाना

रा

सायन सूर्य ५–१८°–०′–०″

भुक्तांश कन्या १८– ० –०

भोग्यांश कन्या १२– ० –०

कन्या भोग्यांश लंकोदय कन्या

$$\frac{१२^\circ–०' \times २७८}{३०}$$

पल वि०

$$= \frac{३३३६}{३०} = १११–१२$$

भोग्य पल

कन्या

१२–०–०

×२७८

३०) ३३३६–०–० (१११ पल

३०

३३

३०

३६

३०

६ × २ = १२ वि०

= भोग्यपल १११–१२

भुक्तांश कन्या कन्या लंकोदय

$$\frac{१८–० \times २७८}{३०}$$

पल वि०

$$= \frac{५००४–०}{३०''} = १६६–४८$$

भुक्त पल कन्या

१८–०–०

×२७८

३०) ५००४–०–० (१६६ पल

३०

२००

१८०

२०४

१८०

२४ × २ = ४८ वि०

= भुक्त पल १६६–४८

प. वि.

भोग्य पल १११–१२ कन्या

भुक्त पल १६६–४८ ,,

योग २७८–० = कन्या लंकोदय

अयनांश साधन

भाद्र शुक्ल ७ सम्वत् २००० शाके १८६५ का अयनांश साधन करना है।

शाके १८६५ −४४४ = १४२१; ६०) १४२१ (२३°, १२०, २२१, १८०, ४१′

चैत्र शु० १ से भाद्र शु० १ तक = ५ मास = ५ × ५″ = २५″

भाद्र० शु० ७ तक = ७ दिन = ७ × १०‴ = ७०‴ = १–१०

∴ चलित अयनांश = २६″

वर्ष आरम्भ का = २३°–४१′–०

चलित + ० –० –२६″

∴ तात्कालिक अयनांश = २३ –४१–२६

दशम साधन का उदाहरण

(१) उदाहरण—नियम (१) के अनुसार। इष्ट घड़ी १२॥ पूर्वनत २४० पल।

मान लो सा० सूर्य ५–१८°–०–० (रा) है जिसका भुक्त पल १६६–४८ है। पूर्वनत होने से भुक्त रीति से साधन करेंगे। भुक्त रीति होने से सूर्य के भुक्तपल पूर्वनत से घटाकर विरुद्ध क्रम से राशियाँ घटाने के उपरांत अशुद्ध राशि से शेष के अंश पल बनाकर अशुद्ध राशि से घटा कर सायन दशम लग्न निकालेंगे।

पल वि०

पूर्वनत २४०–०

कन्या भुक्त १६६–४८

७३–१२

लंकोदय सिंह – २९९ अशुद्ध

∴ सायन दशम ४–२२°–३९′–२०″ (रा)

– अयनांश २३–४१–२६

३–२८–५७–५४

∴ निरयन दशम भाव

रा

३–२८°–५७′–५४″

शेष

(७३-१२) × ३० / सिंह २९९ अशुद्ध = २१९६ / २९९ = ७°-२०′-४०″ सिंह

७३–१२ × ३० = २१९० + ६–० = २१९६–०

२९९) २१९६ (७°
२०९३
१०३ × ६०
२९९) ६१८० (२०′
५९८
२०० × ६०
२९९) १२००० (४०″
११९६
४०

सिंह

५–०–०–०

०–७–२०–४०

४–२२–३९–२०

सायन दशम भाव

(२) अब इसी उदाहरण की दशम के इष्ट पर से साधन करते हैं। नियम (२) के अनुसार भोग्य रीति से करेंगे ।

इष्ट १२॥ घडी है दिनार्द्ध १६॥ घड़ी है। दिनार्द्ध ० न घटने से इष्ट में ६० घड़ी जोड़ा तो ७२॥ हुए। इस में से दिनार्द्ध १६॥ घटाया तो ५६ घड़ी = ३३६० पल हुए। सायन सूर्य मान लो वही ५–१८–०–० है जिसका कन्या भोग्य पल १११–१२ है।

	पल वि०
दशम का इष्ट	३३६०–०
कन्या भोग्य	१११–१२
	३२४८–४८
तुला से मीन तक ६ राशि	१८००–०
	१४४८–४८
मेष से मिथुन तक ३ राशि	–९००–०
	५४८–४८
कर्क	३२३
	२२५–४८
सिंह	२९९– अशुद्ध
	रा

∴ सायन दशम = ४–२२°–३९′–२०″

शेष इष्ट

$\frac{२२५–४८ \times ३०}{२९९ \text{ सिंह}} = \frac{६७७४}{२९९}$

२२५–४८ = २२–३९–२० सिंह

× ३० सायन दशम

२४–० = ४–२२°–३९′–२०″

६७५०

२९९) ६७७४–० (२२°
५९८
७९४
५९८
१९६ × ६०
२९९) ११७६० (३९′
८९७
२७९०
२६९१
९९ × ६०
२९९) ५९४० (१९″
२९९ = २०″
२९५० शेष आधे
२६९१ से अधिक है
२५९

(३) इसी उदाहरण को नियम ३ के अनुसार अर्थात् सायन सूर्य में ६ राशि जोड़कर भोग्यांश से उन्नत पल निकाल कर साधन करेंगे। पूर्व नत ४ घड़ी (३० घड़ी –४ घड़ी पूर्वनत) = २६ घड़ी उन्नत

= १५६० उन्नत पल

इस रीति से दशम सावन करने के पहिले यदि सायन सूर्य में ६ राशि न जोड़ा जाय तो चतुर्थ भाव निकलता है। चतुर्थ भाव में ६ राशि जोड़ने से दशम भाव होता है

सायन सूर्य ५–१८–०–०
+राशि ६
११–१८–०–०
मीन भुक्तांश १८°–०′–०″
,, भोग्यांश १२–०–०
लंकोदय मीन २७८

भोग्यांश मीन

$\frac{१२ \times २७८}{३०} = \frac{३३३६}{३०} = १११–१२$

उन्नत पल १५६०–० भोग्य पल
भोग्य मीन १११–१२ मीन
१४४८–४८
मेष से मिथुन तक ३ राशि ९००–०
५४८–४८
कर्क – ३२३
२२५–४८
सिंह – २९९ अशुद्ध

शेष इष्ट—

$\frac{२२५–४८ \times ३०}{२९९ \text{ सिंह}} = \frac{६७७४}{२९९} =$ सिंह २२°–३९′–२०″

रा
= ४–२२°–३९′–२०″ सायन दशम
(देखो दूसरे उदाहरण का गणित)

(४) इसी उदाहरण को ४ नियम के अनुसार करते हैं।

पूर्वनत को भुक्तांश से घटाने के उपरांत भुक्तांश और पूर्वनत की घटी हुई राशियों के अंशादि का योग, पूर्वनत होने के कारण सायन सूर्य में घटाकर दशम निकालेंगे।

सायन सूर्य ५–१८–०–०
भुक्तांश कन्या १८°–०′–०′
कन्या भुक्त पल १६६–४८
पूर्वनत २४० पल
सिंह अशुद्ध २९९
(देखो पहला उदाहरण)

पूर्वनत २४० पल
कन्या भुक्त – १६६–४८
शेष ७३–१२
शेषपल

$\frac{(७३–१२) \times ३०}{२९९ \text{ सिंह}} = \frac{२१९६}{२९९} = ७°–२०′–४०″$

सिंह

सूर्य भुक्तांश १८–०–०
+ सिंह ७–२०–४०
योग = २५–२०–४०

∴ सायन दशम   सायन सूर्य ५–१८°–०′–०″

रा

४–२२°–३९′–२०″   – योग   २५ –१०–४० घटाया

∴ सायन दशम ४–२२–३९–२०

यदि सिंह और कन्या के बीच और राशियाँ घटी होती तो उन राशियों की संख्या भी योग के साथ यहाँ पूर्वनत होने से घटा देते परन्तु और कोई राशियाँ बीच में नहीं हैं।

(५) अब दूसरा उदाहरण लेकर चारों रीतियों से दशम साधन करेंगे।

पहिले नियम से = दिवा पश्चिमनत ३६० पल। भोग्यरीति से करेंगे। सायन सूर्य मानलो वही ५–१८°–०′–०″ है भोग्य पल १११–१२
(रा)

प० वि०
पश्चिमनत ३६०–०
कन्या भोग्य १११–१२
२४८–४८
तुला २७८ अशुद्ध

(शेष २४८–४८) × ३० / २७८ तुला = ७४६४ / २७८ = २६°–५०′–५६″ तुला

२४८–४८
× ३०
२४–०
७४४०
७४६४–०

२७८)७४६४(२६°
५५६
१९०४
१६६८
२३६ × ६०
२७८)१४१६०(५०′
१३९०
२६० × ६०
२७८)१५६००(५६″
१३९०
१७००
१६६८
३२

∴ सायन दशम
रा
६–२६°–५०′–५६″

(६) नियम २ से भी दशम का इष्ट ३६० पल आता है यह गणित ऊपर हो चुका है इससे अब दूसरे उदाहरण को नियम ३ से करेंगे। पश्चिम उन्नत निकाल कर भुक्त रीति से करेंगे। सा० सूर्य में ६ राशि जोड़कर गणित करने से दशम आयगा। यदि ६ राशि न जोड़ा जाय तो चतुर्थ भाव आता है जिसमें ६ राशि

जोड़ने से दशम भाव आ जाता है। यहाँ चतुर्थ भाव निकाल कर बाद में ६ राशि जोड़कर दशम बनायेंगे।

मान लो सा० सा वही ५–१८–०–० है, जिसका भुक्त पल कन्या १६६–४८ है उन्नत पल १४४० है।

	पल	शेष इष्ट
पश्चिम उन्नत	१४४०–०	$\frac{\text{२९–१२} \times \text{३०}}{\text{२७८ मेष}} = \frac{\text{८७६}}{\text{२७८}}$ = मेष ३°–९′–३″
कन्या भुक्त	१६६–४८	
	१२७३–१२	२९–१२ २७८)८७६(३°
–सिंह	२९९	×३० ८३४
	९७४–१२	९–० ४२×६०
–कर्क	–३२३	८७० २७८)२५२०(९′
	३२८–१२	८७६–० २५०२
–वृष	२९९	१८×६०
	२९–१२	२७८)१०८०(३″
मेष	२७८ अशुद्ध	८३४
		२४६

मेष अशुद्ध

रा०–०′–″

–१–३–९–३

शेष ०–२६–५०–५७ = सायन चतुर्थ

सायन चतुर्थ ०–२६°–५०′–५७″

+ राशि ६– ०– ०– ०

∴ सायन दशम भाव = ६–२६–५०–५७

(७) अब इसी दूसरे उदाहरण को नियम ४ के अनुसार करेंगे।

सायन सूर्य ५–१८–०–०, सुर्य भोग्यांश १२°–०′–०″ कन्या

कन्या भोग्य पल १११–१२ पश्चिम नत ३६० पल।

पश्चिम नत ३६०–०	शेष $\frac{\text{२४८–४८} \times \text{३०}}{\text{२७८ तुला}} = \frac{\text{७४६३४}}{\text{२७८}}$ = २६°–५०′–५६″ तुला
कन्या भोग्य १११–१२	(देखो पाँचवाँ उदाहरण)
२४८–४८	
तुला २७८ अशुद्ध	

= सायन सूर्य भोग्यांश	१२°–०′–०″	सायन सूर्य	५–१८°–०′–०″
तुला भोग्य	२६–५०–५६	+ योग	१–८–५०–५६
	१–८–५०–५६	सायन दशम =	६–२६–५०–५६

रा पश्चिम नत होने से जोड़ाः

= सायन दशम ६–२६″–५०′–५६″

(८) अब तीसरा उदाहरण दिवा पश्चिमनत का नियम १ के अनुसार भोग्य रीतिः से करते हैं। दिवा पश्चिम नत १२०० पल है मान लो इष्ट कालीन सा० सूर्य ५–१८–०० है जिसका भोग्य पल १११–१२ है।

शेष

पश्चिम नत १२००–० $\frac{(१८८–४८) \times ३०}{३२३ \text{ मकर}} = \frac{५६६४}{३२३}$ = १७°–३२′–८″ मकर

भोग्य कन्या १११–१२

तुला से धन ३ राशि } १०८८–४८, ९००

१८८–४८

मकर ३२३ अशुद्ध

१८८–४८ × ३० = २४–० ; ५६४० ; ५६६४–०

= सायन दशम मकर १७–३२–८ रा

∴ सायन दशम ९–१७°–३२′–८″

रा

९–१७°–३२–८″

३२३)५६६४(१७°
३२३
२४३४
२२६१
१७३ × ६०

३२३)१०३८०(३२′
९६९
६९०
६४६
४४ × ६०

३२३)२६४०(८″
२५८४
५६

(९) इसी तीसरे उदाहरण को नियम ३ के अनुसार उन्नत निकाल कर भुक्त रीतिः से करते हैं इसमें चतुर्थ भाव आता है ६ राशि जोड़कर दशम बना लेंगे। दिवा पश्चिम नत २० घड़ी = उन्नत (३०–२०) = १० घड़ी = ६०० पलः उन्नत। सायन सुर्य मान लो वही ५–१८–०–० है जिसका भुक्त कालः १६६–४८ है।

पश्चिम उन्नत ६००–०
कन्या भुक्त १६६–४८
४३३–१२
सिंह – २९९–०
१३४–१२
कर्क – ३२३ अशुद्ध

शेषइष्ट

$\frac{१३४–१२ \times ३०}{३२३ \text{ लंकोदय कर्क}} = \frac{४०२६}{३२३}$ = १२°–२७′–५१″ भुक्तांश कर्क

१३४-१२ ३२३) ४०२६ (१२° =कर्क भुक्तांश १२°-२७'-५१"
×३० ३२३ अशुद्ध कर्क राशि ४-०°-०'-०"
६-० ७९६ ०-१२-२७-५१ घटाया
४०२० ६४६ सायन चतुर्थ = ३-१७-३८-९
४०२६-० १५० × ६० सायन चतुर्थ भाव ३-१७-३२-९
३२३) ९००० (२७' + ६-०-०-०
६४६ सायन दशम = ९-१७-३२-९
२५४० ∴ सायन दशम
२२६१ ९-१७-३२-९
२७९
× ६०
३२३) १६७४० (५१"
१६१५
५९०
३२३
२६७

(१०) इसी उदाहरण को नियम ४ के अनुसार भोग्य रीति से करते हैं
पश्चिम नत १२०० पल है ।
पश्चिम नत १२००-०
कन्या भोग्य १११-१२ सा० सूर्य का भोग्यांश ०-१२°-०'-०"
तुला से धन ३ राशि } १०८८-४८ / ९०० ३ राशि पूरी घटी ३-०-०-०
मकर के भोग्यांश ०-१७-३२-८
१८८-४८ योग ३-२९-३२-८
मकर ३२३ अशुद्ध सायन सूर्य ५-१८-०-०
शेष + योग ३-२९-३२-८ पश्चिम नत होने से जोड़ा

$$\frac{(१८८-४८) \times ३०}{३२३} = \frac{५६६४}{३२३}$$ =सायन दशम=९-१७-३२-८

= १७°-३२'-८"
भोग्यांश मकर

(११) अब चौथे उदाहरण को लेते हैं। रात्रि पूर्व नत २६ घड़ी = १५६० पल। भुक्त रीति से दशम साधन करते हैं। मान लो इष्ट काल पर वही सा० सूर्य ५-१८-०-० है जिसका भुक्त पल १६६-४८ है ।

शेष

पूर्व नत १५६०-०
कन्या भुक्त १६६-४८
१३९३-१२
सिंह - २९९
१०९४-१२
कर्क ३२३
७७१-१२
मिथुन ३२३
४४८-१२
वृष २९९
१४९-१२
मेष २७८ अशुद्ध

$$\frac{१४९-१२ \times ३०}{२७८ \text{ मेष}} = \frac{४४७६}{२७८} = १६^\circ-६'-२'' \text{ मुक्तांश}$$

१४९-१२
×३०
६-०
४४७०
४४७६-०

अशुद्ध मेष
१-०-०-०
मुक्तांश ०-१६-६-२ घटाया
०-१३-५३-५८
सायन दशम

२७८) ४४७६ (१६° मेष
२७८
१६९६
१६६८
२८ × ६०
२७८) १६८० (६'
१६६८
१२ × ६०
२७८) ७२० (२''
५५६
१६४

रा
= सायन दशम ०-१३°-५३'-५८''

(१२) इसी उदाहरण को दशम के इष्ट पर से भोग्य रीति से करते हैं। दशम का इष्ट २०४० पल है सा० सूर्य मान लो वही ५-१८-०-० है जिसका भोग्य काल १११-१२ पल (कन्या) है

दशम का इष्ट २०४०-०
कन्या भोग्य १११-१२
१९२८-४८
तुला से मीन } १८०
६ राशि } १२८-४८
मेष २७८ अशुद्ध

१२८-४८
×३०
२४-०
३८४०
३८६४-०

२७८) १५९६० (५७'
१३९०
२०६०
१९४६
११४

शेष

$$\frac{१२८-४८ \times ३०}{२७८ \text{ मेष}} = \frac{३८६४}{२७८} = १३^\circ-५३'-५७''$$

२७८) ३८६४ (१३° मेष भोग्यांश
२७८
१०८४
८३४
२५० × ६०
२७८) १५००० (५३'
१३९०
११००
८३४
२६६ × ६०
१५९६०

रा
= ०-१३°-५३'-५७''
सायन दशम

(१३) इसी उदाहरण को पूर्व उन्नत से नियम ३ के अनुसार करते हैं। पूर्व नत २६ घड़ी = उन्नत (३०–२६) = घड़ी पूर्व उन्नत = २४० पल

पूर्व उन्नत   २४०–०   शेष

कन्या भोग्य   १११–१२ / १२८–४८ $\frac{१२८–४८ \times ३०}{२७८ \text{ तुला}} = \frac{३८६४}{२७८} = १३^\circ–५३'–५७''$

भोग्यांश तुला

तुला   २७८ अशुद्ध (गणित उदाहरण १२ में देखो) ∴ सायन चतुर्थ

रा   ६–१३–५३–५७

सायन चतुर्थ   ६–१३°–५३′–५७″

+६ राशि   ६–०–०–०   ∴ सायन दशम

सायन दशम   =०–१३–५३–५७   ०–१३°–५३′–५७″

(१४) इसी उदाहरण को नियम ४ के अनुसार करते हैं।

पल			शेष
पूर्व नत १५६०–०	सिंह	२९९	$\frac{१४९–१२ \times ३०}{२७८ \text{ मेष}} = \frac{४४७६}{२७८}$
कन्या भुक्त १६६–४८	कर्क	३२३	=१६′–६′–२″ भुक्तांश मेष
१३९३–१२	मिथुन	३२३	(देखो उदाहरण ११)
सिंह से वृष ४ राशि } १२४४	वृष	२९९	
१४९–१२	योग=१२४४		

मेष   २७८ अशुद्ध   रा

सूर्य भुक्तांश   १८°–०′–०″   सायन सूर्य ५–१८°–०′–०″

मेष भुक्त   १६–६–२   योग   ५–४–६–२ पूर्व नत होने से घटाया

१–४–६–२   सायन दशम = ०–१३–५३–५८

४ राशियां जो घटी } +४   रा

योग = ५–४–६–२   ∴ सायम दशम=०–१३°–५३′–५८″

जब नत थोड़ा हो भोग्य या भुक्त पल न घटे

सूर्य के भोग्यांश या भुक्तांश पर से दशम साधन करने में नत में से जब भोग्य या भुक्त पल न घटे तो लग्न साधन के नियम के अनुसार पलात्मक नत में ३० अंश का गुणा कर लंकोदय का भाग देकर अंशादि बना लेना। जो उत्तर आवे उसे निरयन सूर्य में यदि पश्चिम नत हो तो जोड़ना पूर्व नत हो तो घटा देना तब निरयन दशम भाव

निकलेगा। यदि सायन दशम में यह उत्तर नत के अनुसार जोड़ा या घटाया जावे तो सायन दशम भाव आयगा।

(१५) उदाहरण—मान लो इष्ट १६–०, दिनार्द्ध १६–३० = पूर्वनत (दिनार्द्ध–इष्ट)

घ० पल १६॥–१६

= ०–३० है। मान लो इष्ट कालीन सायन सूर्य वही ५–१८–०–० है जिस का भुक्त पल १६६–१८ और भोग्य पल १११–१२ है।

पल

पूर्वनत ३०–०

कन्या भुक्त १६६–४८ नहीं घटता

इस से इस का कोई उपयोग नहीं रहा।

कन्या लंकोदय – २७८ पल

रा

सायन सूर्य ५–१८°–०′–०″

– कन्या भुक्तांश ३–१४–१४ पूर्वनत होने से

∴ सायन दशम=५–१४–४५–४६ घटाया

रा

∴ सायन दशम = ५–१४°–४५′–४६″

यदि निरयन सूर्य में उपरोक्त अंश कला घटा देते तो निरयन दशम भाव आ जाता।

शेष इष्ट नत

$\frac{\text{३०–० × ३०}}{\text{२७८ कन्या}} = \frac{\text{९००}}{\text{२७८}}$

= ३°–१४′–१४″ भुक्तांश कन्या

```
         ३० × ३०
२७८ ) ९०० ( ३°
      ८३४
       ६६ × ६०
२७८ ) ३९६० ( १४′
      २७८
      ११८०
      १११२
        ६८ × ६०
२७८ ) ४०८० ( १४″
      २७८
      १३००
      १११२
       १८८
```

(१६) अब इसी उदाहरण को नियम ३ के अनुसार उन्नत निकाल कर भोग्यांश से करते हैं। पूर्वनत ३० पल। पूर्व उन्नत = ३०–०

२२९–३० घड़ी = १७७० उन्नत पल। ०–३०

पूर्व उन्नत १७७०–० शेष इष्ट २९–३०

कन्या भोग्य–१११–१२

१६५८–४८

$\frac{\text{१३६–४८ × ३०}}{\text{२७८ मीन}} = \frac{\text{४१०४}}{\text{२७८}} = \text{१४°–४५′–४५″ मीन}$

१६५८–४८
तुला से धन ३ राशि } –९००
७५८–४८
मकर –३२३
४३५–४८
कुम्भ –२९९
१३६–४८
मीन –२७८ अशुद्ध

∴ सायन दशम
रा
५–१४°–४५′–४५″

१३६–४८
× ३२
२४–०
४०८०
२७८)४१०४–०(१४°
२७८
१३२४
१११२
२१२ × ६०
२७८)१२७२०(
१११२
१६००
१३९०
२१०

रा
चतुर्थ भाव = ११–१४°–४५′–४५″
+ ६ रा० = ६– ०– ०– ०
= ५–१४–४५–४५
सायन दशम

२१० × ६०
२७८)१२६००(४५″
१११२
१४८०
१३९०
९०

(१७) पश्चिम नत थोड़ा हो जिसमें से भोग्यांश न घटे तब गणित । मान लो दिनार्द्ध के समीप का इष्ट काल १७ घड़ी है जो दिनार्द्ध के बाद का है। मान लो सा० सूर्य वही ५–१८–०–० है दिनार्द्ध १६॥ घड़ी है। सूर्य भोग्य पल १११–१२ (कन्या) है। पश्चिम नत = (इष्ट १७–दिनार्द्ध १६॥) = ०–३० पल हुआ ।

पल
पश्चिम नत ३०–० शेष इष्ट
कन्या भोग्यांश १११–१२ नहीं घटा इससे इसका कोई काम नहीं रहा

$\frac{३० \times ३०}{२७८ \text{ कन्या}} = \frac{९००}{२७८} = ३^\circ–१४'–१४''$ कन्या भोग्य

(देखो उदाहरण १५)

कन्या लंकोदय
२७८ रा
सायन सूर्य ५–१८°–०′–०″
+ कन्या भोग्य ३–१४–१४ पश्चिम नत होने से जोड़ा
सायन दशम = ५–२१–१४–१४

(१८) अब उसी उदाहरण को पश्चिम नत होने से उन्नत निकाल कर भुक्तांश से करेंगे। पश्चिम नत ३० पल

= ३०–०

पश्चिम उन्नत २९–३० घड़ी = १७७० पल।

०–३०

२९–३० उन्नत

पश्चिम उन्नत १७७०–०

कन्या भुक्त १६६–४८ / १६०३–४८ शेष ८१–१२ × ३० / २७८ मीन = २४३६ / २७८ = ८°-४५′-४५″ भुक्तांश मीन

सिंह २९९ / १३०४–४८

८१–१२ × ३० = ६–० ; २४३० ; २४३६

२७८)२४३६(८°
२२२४
२१२ × ६०
२७८)१२७२०(४५′
१११२
१६००
१३९०
२१० × ६०
२७८)१२६००(४५″
१११२
१४८०
१३९०
९०

कर्क ३२३ / ९८१–१२

मिथुन से मेष –९००

३ राशि ८१–१२

मीन २७८ अशुद्ध

अशुद्ध मीन राशि

१२–०°–०′–०″

भुक्तांश मीन ८ –४५–४५

सायन चतुर्थ= ११–२१–१४–१५

+ राशि ६

सायन दशम=५–२१–१४–१५

∴ सायन दशम भाव रा ५–२१°–१४′–१५″

दशम भाव साधन करने में नीचे लिखी बातों पर ध्यान रखना।

(१) पूर्व नत हो तो भुक्तांश लेकर भुक्त रीति से करने में सायन सूर्य में ६ राशि जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। सायन सूर्य में ६ राशि जोड़ कर इस प्रकार गणित करने में चतुर्थ भाव आता है।

(२) पूर्व उन्नत लेकर भोग्यांश से तीसरे नियम के अनुसार करने में चतुर्थ भाव आता है। सायन सूर्य में ६ राशि जोड़ कर गणित करने से दशम भाव आयगा।

(३) पूर्व नत को भोग्यांश से करने में अशुद्ध उत्तर आता है।

(४) पश्चिम नत में नियम ४ के अनुसार करते समय यदि सायन सूर्य के भुक्त पल लेकर भुक्त रीति से अर्थात् विरुद्ध क्रम से राशि घटाने के उपरांत अशुद्ध राशि का भुक्तांश और सायन सूर्य का भुक्तांश जोड़ कर सायन सूर्य में जोड़ने या घटाने से भी उत्तर ठीक नहीं आता। अर्थात् पश्चिम नत में इस रीति से भोग्यांश ही लेना। भुक्तांश नहीं लेना। भुक्तांश लेने से अशुद्ध उत्तर आता है। क्यों कि पूर्व नत से गणित करने में इस नियम के अनुसार भुक्तांश का उपयोग होता है और पश्चिम नत में भोग्यांश का, तब शुद्ध उत्तर आता है।

(५) यदि इष्ट घड़ी पल दिनाद्‌र्ध के ठीक बराबर हो तो तात्कालीन स्पष्ट रवि ही दशम लग्न होगी। अर्थात् दिवा नत ० हो तो स्पष्ट सूर्य ही दशम भाव होता है।

(६) यदि रात्रि का इष्ट घड़ी पल रात्रि अद्‌र्ध के ठीक बराबर हो तो तात्कालीन स्पष्ट सूर्य ही चतुर्थ लग्न (चतुर्थ भाव) होता है। अर्थात् उन्नत ० होने पर स्पष्ट सूर्य ही चतुर्थ भाव होता है।

घ० प०

जैसे किसी का जन्म इष्ट १४–२४ है उस दिन का दिनमान २८–४८ है तो दिनमान का आधा १४–२४ हुआ। इतना ही अपना इष्ट है तो तात्कालिक निरयन

रा रा

सूर्य स्पष्ट मान लो १०–१५°–१६′–५०″ है तो दशम भाव १०–१५°–१६′–५०″ (सूर्य तुल्य) हुआ।

मान लो रात्रि इष्ट १३–२४ है। दिनमान ३३–१२ है। रात्रिमान २६–४८ है। रात्रि अद्‌र्ध १३–२४ है। इष्ट रात्रि अद्‌र्ध के बराबर है और उस समय

रा रा

सूर्य स्पष्ट मान लो १–१३°–४१′–२०″ है तो चतुर्थ भाव इतना १–१३°–४१′–२०″ (सूर्य तुल्य) हुआ। यहाँ रात्रि इष्ट का अर्थ है रात्रि आरम्भ होने के बाद का इष्ट = दिनमान ३३–१२ + १३–२४ रात्रि इष्ट = ४६–३६ इष्ट।

—: ० :—

अध्याय १४

सर्व भाव साधन

लग्न और दशम भाव के साधन करने की कई रीतियाँ उदाहरण देकर समझा चुके हैं। अब शेष भाव साधन करना यहाँ बतलाते हैं।

सप्तम भाव = लग्न + ६ राशि } लग्न में ६ राशि जोड़ने से सप्तम
चतुर्थ भाव = दशम + ६ राशि } और दशम में ६ राशि जोड़ने से चतुर्थ

भाव बन जाता है। इस प्रकार केन्द्र के ४ भाव साधन हो जाते हैं। अब शेष कोण के इतर भाव और प्रत्येक भाव की संधियाँ बनाना शेष रहा।

(१) (चतुर्थ भाव–लग्न) ÷ ६ = प्रथम क्षेपक = प्रथम षष्ठांश

(२) (सप्तम भाव– चतुर्थ) ÷ ६ = द्वितीय क्षेपक=द्वितीय ,,

इन दोनों क्षेपकों का योग १ राशि होता है। क्षेपक सूक्ष्म प्रतिविकला तक निकालना जिस से जोड़ में अंतर न पड़े।

दो भावों के बीच में जो संधि (जोड़) होती है उसे संधि कहते हैं। संधि से आगे के भाव का आरंभ होता है। जैसे लग्न के बाद जो संधि है उस संधि के उपरांत दूसरा भाव आरंभ होगा। तब वह संधि दूसरे भाव की आरंभ संधि कहलायगी। वही संधि पहिले भाव की विरामसंधि हुई। क्योंकि पहिले भाव का अंत उस संधि से हो जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक संधियों के विषय में समझना। जिस भाव के आगे कोई संधि होती है वह उस भाव की विरामसंधि कहलाती है और जिस भाव के आगे संधि हो वह उस भाव की आरंभसंधि कहलाती है। इस प्रकार वही संधि एक के लिये विराम संधि है तो दूसरे के लिये आरंभ संधि हो जाती है।

भाव और संधि साधन की रीति

भाव या संधि	+ क्षेपक		भाव या संधि	+ ६ राशि		भाव या संधि
१ लग्न	+ प्रथम क्षे०	=	लग्न संधि	+ ६	=	सप्तम संधि
२ लग्न संधि	+ ,,	=	द्वितीय भाव	+ ६	=	अष्टम भाव
३ द्वितीय भाव	+ ,,	=	,, संधि	+ ६	=	,, संधि
४ ,, संधि	+ ,,	=	तृतीय भाव	+ ६	=	नवम भाव
५ तृतीय भाव	+ ,,	=	,, संधि	+ ६	=	,, संधि
६ ,, संधि	+ ,,	=	चतुर्थ भाव	+ ६	=	दशम भाव
१ चतुर्थ भाव	+ द्वितीय क्षे०	=	,, संधि	+ ६	=	,, संधि
२ ,, संधि	+ ,,	=	पंचम भाव	+ ६	=	एकादश भाव
३ पंचम भाव	+ ,,	=	,, संधि	+ ६	=	,, संधि
४ ,, संधि	+ ,,	=	षष्ठ भाव	+ ६	=	द्वादश भाव
५ षष्ठ भाव	+ ,,	=	,, संधि	+ ६	=	,, संधि
६ ,, संधि	+ ,,	=	सप्तम भाव	+ ६	=	लग्न

किस भाव में कौन सा क्षेपक जोड़ने से कौन भाव या संधि बनती है ऊपर बताया है। यहाँ जो संधि बनी है वह उस भाव की विराम संधि होगी। इन सब का उदाहरण आगे दिया है।

भाव साधन का उदाहरण

भाव साधन में नियरन भाव लेना। यदि सायन भाव हो तो प्रत्येक भाव में से अयनांश घटा कर निरयन भाव बना लेना चाहिए।

मान लो निरयन लग्न रा ११-०°-२८′-११″ और निरयन दशम भाव रा ८-२०°-५९′-५६″ है सब भाव और संधियां बनाने के लिये पहिले क्षेपक निकालेगें।

रा
लग्न ११-०°-२८′-११″
+६
सप्तम=५-० -२८ -११

पहिला क्षेपक

(चतुर्थ-लग्न) ÷ ६

रा
चतुर्थ = २-२°-५९′-५६″
—लग्न = ११-०-२८ -११ घटाया
शेष ३-२-३१-४५ ÷ ६

रा
= ०-१५°-२५′-१७″-३०‴

पहिला क्षेपक

६) ३-२-३१-४५ (० राशि
×३०
९०+२
६) ९२ (१५°
६
३२
३०
२×६०
१२०+३१
१५१

१×६०
६०+४५
६) १०५ (१७″
६
४५
४२
३×६०
१८०

रा
दशम ८-२°-५९′-५६″
+६
चतुर्थ =२-२-५९-५६

दूसरा क्षेपक

(सप्तम-चतुर्थ) ÷ ६

रा
सप्तम ५-०°-२८′-११″
—चतुर्थ २-२ -५९ -५६ घटाया
शेष २-२७-२८-१५ ÷ ६

रा
= ०-१४°-३४′-४२″-३०‴

दूसरा क्षेपक

रा
६) २-२७°-२८′-१५″ (० राशि
×३०
६०+२७
६) ८७ (१४°
६
२७
२४
३×६०
१८०+२८
२०८

४×६०
२४०+१५
६) २५५ (४२″
२४
१५
१२
३×६०
१८०

```
६ ) १५१ ( २५'     ६ ) १८० ( ३०'''     ६ ) २०८ ( ३४     ६ ) १८० ( ३०'''
    १२                 १८०                 १८                 १८०
    ---                ---                 ---                ---
    ३१                  ×                  २८                  ०
    ३०                                     २४
    ---                                    ---
     १                                      ४
```

१ (पहिला) क्षेपक ०–१५–२५–१७–३० } दोनों का योग ३०° या १ राशि
२ (दूसरा) ,, ०–१४–३४–४२–३० } होता है।

योग १– ०– ०– ०– ०

भाव साधन का उदाहरण

	भाव या संधि	+६ राशि	भाव या संधि	
१ लग्न	११–०–२८–११–०	+६ =	५–०–२८–११	सप्तम भाव
+१ क्षेपक	०–१५–२५–१७॥			
१ संधि =	११–१५–५३–२८॥	+६ =	५–१५–५३–२८॥	,, संधि
+१ क्षेपक	०–१५–२५–१७॥			
२ भाव =	०–१ –१८–४६	+६ =	६–१–१८–४६	अष्टम भाव
+१ क्षेपक	०–१५–२५–१७॥			
२ संधि =	०–१६–४४– ३॥	+६ =	६–१६–४४–३॥	,, संधि
+१ क्षेपक	०–१५–२५–१७॥			
३ भाव =	१–२ –९ –२१	+६ =	७–२ –९ –२१	नवम भाव
+१ क्षे०	०–१५–२५–१७॥			
३ संधि =	१–१७–३४–३८॥	+६ =	७–१७–३४–३८॥	,, संधि
+१ क्षे०	०–१५–२५–१७॥			
४ भाव =	२–२ –५९–५६	+६ =	८–२–५९–५६	दशम भाव
+२ क्षेपक	०–१४–३४–४२॥			
४ संधि =	२–१७–३४–३८॥	+६ =	८–१७–३४–३८॥	,, संधि
+२ क्षे०	०–१४–३४–४२॥			
५ भाव =	३–२ –९ –२१	+६ =	९–२ –९–२१	एकादश भाव
+२ क्षे०	०–१४–३४–४२॥			
५ संधि =	३–१६–४४– ३॥	+६ =	९–१६–४४–३॥	,, संधि

५ संधि ३–१६–४४–३॥	+६=९–१६–४४–३॥	एकादश संधि
+२ क्षे० ०–१४–३४–४२॥		
६ भाव= ४–१ –१८–४६	+६= १०–१–१८–४६	द्वादश भाव
+२ क्षे० ०–१४–३४–४२॥		
६ संधि= ४–१५–५३–२८॥	+६= १०–१५–५३–२८॥	,, संधि
+२क्षे ० ०–१४–३४–४२॥		
७ भाव= ५– ०–२८–११	+६= ११–०–२८–११	लग्न

यहाँ लग्न ११–०–२८–११ है इस में पहिला क्षेपक ०–१५–२५–१७॥ जोड़ा तो ११–१५–५३–२८॥ हो गया यह प्रथम भाव (लग्न) की संधि हुई फिर इस में १ क्षेपक जोड़ा तो दूसरा भाव ०–१–१८–४६ हुआ। इस में फिर १ क्षेपक जोड़ा तो दूसरे भाव की संधि हुई। इस में फिर १ क्षेपक जोड़ा तो तीसरा भाव हुआ। फिर तीसरे भाव में १ क्षेपक जोड़ा तो तीसरे की संधि हुई इस में फिर १ क्षेपक जोड़ा तो चतुर्थ भाव वही २–२–५९–५६ आ गया जो पहिले निकाला था।

इस के उपरांत दूसरा क्षेपक जोड़ना आरंभ होता है। ४ भाव में २ क्षेपक जोड़ा तो ४ भाव की संधि हुई फिर इस में २ क्षेपक जोड़ा तो पंचम भाव हुआ। इस में फिर २ क्षेपक जोड़ा तो ५ की संधि हुई। इस में फिर २ क्षेपक जोड़ा तो ६ भाव हुआ। इस में फिर २ क्षेपक जोड़ा तो ६ भाव की संधि हुई। इस में फिर २ क्षेपक जोड़ा तो वही सप्तम भाव ११–०–२८–११ आ गया।

उपरांत प्रत्येक भाव और संधियों में ६–६ राशि जोड़ दो तो आगे का सातवाँ भाव या संधि बन जायेगी। जैसे लग्न ११–०–२८–११ में ६ राशि जोड़ा तो उस से सातवाँ ५–०–२८–११ सप्तम भाव हुआ। लग्न संधि में ६ राशि जोड़ा तो सप्तम की संधि हुई। २ भाव में ६ राशि जोड़ा तो आठवाँ भाव हो गया इत्यादि ये सब बातें यहाँ चक्र देख कर समझ लेना।

(२) भाव और संधि साधन करने की अन्य रीति

	रा	रा
कोण (१)=(चतुर्थ–लग्न)=	३–२°–३१′–४५″	(१) चतुर्थ २-२°-५९′-५६″
		—लग्न ११-० -२८ -११
कोण (२)=(सप्तम–चतुर्थ)=	२–२७–२८–१५	= ३-२ -३१ -४५
कोण (३)=(दशम–सप्तम)=	३– २–३१–४५	(२) सप्तम ५-०-२८-११
कोण (४)=(लग्न-दशम)=	२–२७–२८–१५	चतुर्थ २-२-५९-५६
		=२-२७-२८-१५

रा

क्षेपक (१) = कोण $\frac{१}{३}$ = १–०°–५०′–३५′

,, (२) = (कोण२) ÷ ३ = ०–२९– ९ –२५

,, (३) = (कोण३) ÷ ३ = १–० –५० –३५

,, (४) = (कोण४) ÷ ३ = ०–२९–९ –२५

(३) दशम ८-२ -५९-५६

—सप्तम ५-० -२८-११

= ३-२ -३१-४५

(४) लग्न ११-०-२८-११

—दशम ८-२-५९-५६

= २-२७-२८-१५

रा

३) ३-२°–३१′–४५″ (१ रा०

३

३) ०२ (०°

×६०

१२० + ३१

३) १५१ (५०′

१५

१ × ६०

६० + ४५

३) १०५ (३५″

९

१५

१५

०

रा

३) २–२७°–२८′–१५″ (० रा०

×३०

६० + २७

३) ८७ (२९°

६

२७

२७

३) ०२८ (९′

२७

१ × ६०

६० + १५

३) ७५ (२५″

६

१५

१५

०

लग्न	=	११– ०–२८–११
+क्षे० (१)		१– ०–५०–३५
२ भाव	=	०– १–१८–४६
+क्षे० (१) =		१– ०–५०–३५
३ भाव	=	१– २– ९–२१
+क्षे० (१)		१– ०–५०–३५
४ भाव	=	२– २–५९–५६

७ भाव	=	५– ०–२८–११
+क्षे० (३)		१– ०–५०–३५
८ भाव	=	६– १–१८–४६
+क्षे० (३)		१– ०–५०–३५
९ भाव	=	७– २– ९–२१
+क्षे० (३)		१– ०–५०–३५
१० भाव	=	८– २–५९–५६

४ भाव	= २– २–५६–५६	१० भाव	८– २–५६–५६
+क्षे० (२)	०–२६– ६–२५	+क्षे० (४)	०–२६– ६–२५
५ भाव	= ३– २– ६–२१	११ भाव	= ६– २– ६–२१
+क्षे० (२)	०–२६– ६–२५	+क्षे० (४)	०–२६– ६–२५
६ भाव	= ४– १–१८–४६	१२ भाव	=१०– १–१८–४६
+क्षे० (२)	०–२६– ६–२५	+क्षे० (४)	०–२६– ६–२५
७ भाव	= ५– ०–२८–११	लग्न	=११– ०–२८–११

इस प्रकार इस रीति से केवल भाव बनते हैं इस कारण ३ का भाग देकर क्षेपक बनाया है। कोण (१) और (३) एक से हैं और इनका क्षेपक एक ही प्रकार का है। इसी प्रकार कोण (२) और (४) एक से हैं और उनका क्षेपक एक ही सा निकलता है। यहाँ क्षेपक पहिली रीति से निकाले हुए क्षेपक से दूना होता है क्योंकि पहिले में ६ का भाग दिया है और यहाँ ३ का भाग देकर क्षेपक निकालना है।

इसमें संधि निकालने के लिये २ पास २ के भाव को जोड़कर २ का भाग देते हैं तो संधि निकल आती है। जैसे :—

लग्न ११– ०–२८–११	दूसरा भाव०–१–१८–४६	तीसरा भाव १–२–६–२१
+ दूसरा भाव०–१–१८–४६	तीसरा १–२– ६–२१	चौथा ,, २–२–५६–५६
योग=२३–१–४६–५७ ÷ २	योग = १- ३–२८–७ ÷ २	योग = ३–५–६–१७ ÷ २
=११–१५–५३–२८॥	= ०–१६–४४–३॥	= १–७–३४–३८॥
लग्न को विराम संधि	दूसरे भाव को विराम संधि	तीसरे भाव को विराम संधि

इस प्रकार सब भाव की संधियाँ निकल आती हैं।

पहिली और दूसरी रीति से मिलान करने पर एक सा उत्तर आता है। दूसरी रीति में अधिक गणित करना पड़ता है। इस से पहिली रीति सुलभ है। इस कारण पहिली ही रीति से भाव साधन करना।

भाव और संधि निकालने का प्रयोजन

भाव और संधि निकालने से प्रकट होता है कि वह भाव किस राशि अंश से आरम्भ होता है। उसका मध्य (बीच) कहाँ है और उस भाव का अंत कहाँ पर (किस राशि अंश कला आदि पर) होता है? यह जानने का करण यह है कि भाव के आरंभ में ग्रह प्रबल होता है जब भाव मध्य में ग्रह आता है तो उसका प्रभाव अधिक

प्रबल हो जाता है। वहाँ से आगे बढ़ने पर जब ग्रह संधि की ओर जाता है तो धीरे-धीरे उसका प्रभाव क्षीण होने लगता है और भाव की संधि में पहुँचने पर उस ग्रह का प्रभाव शून्य हो जाता है। इस कारण पहिले समझ लेना चाहिए कि उस भाव का आरंभ, मध्य और अंत विन्दु कहाँ है।

रा

उपरोक्त उदाहरण में लग्न ११–०°–२७′–११″ है यह लग्न का मध्य है। लग्न के पहिले द्वादश भाव की विराम संधि १०–१५–५३–२८॥ है। यहाँ पर द्वादश भाव का अंत हो गया और यहीं से लग्न का आरम्भ हुआ है। यही लग्न का आरम्भ बिन्दु है। इसी को लग्न की आरम्भ संधि कहते हैं। लग्न के वाद की संधि ११–१५–५३–२८ है यही लग्न की विराम संधि और दूसरे भाव की आरम्भ सन्धि हुई। इस प्रकार प्रकट हुआ कि लग्न, आरम्भ संधि १०–१५–५३–२८ से आरंभ हुई। लग्न का मध्य ११–०–२८–११ में हुआ और अंत ११–१५–५३–२८ में हुआ।

रा

इसी प्रकार धन भाव (द्वितीय भाव) की आरम्भ संधि ११–१५°–५३′–२८ से द्वितीय भाव आरम्भ हुआ। ०–१–१८–४६ पर इसका मध्य हुआ और विराम संधि ०–१६–४४–३॥ पर इस भाव का अंत हो गया और वहीं से तीसरा भाव आरम्भ हुआ।

इसी प्रकार सम्पूर्ण भावों के विषय में विचार किया जाता है। इसी कारण संधि निकाली जाती है जिससे उस भाव का आरम्भ, मध्य और अंत प्रगट हो। संधि स्थान तो १ विन्दु है जहाँ से एक भाव का अंत होकर दूसरा भाव आरम्भ होता है। जिस भाव के आगे वह संधि है वह उस भाव की विराम संधि कहलाती है। वहां उस भाव का अंत होता है और वहाँ से आगे का दूसरा भाव आरम्भ होता हैं और उस भाव की वह आरम्भ सन्धि कहलाई। इस प्रकार वही संधि एक की विराम संधि होती है तो दूसरे की आरम्भ संधि कहलाती है। इस कारण ग्रह और भाव का ठीक-ठीक प्रभाव जानने के लिये इन संधियों का निकालना आवश्यक है।

भाव का पूर्व और उत्तर भाग

(१) भाव का पूर्व भाग = (भाव मध्य–भाव आरंभ सधि)

(२) ,, उत्तर ,, = (भाव विराम सन्धि—भाव मध्य)

(३) ,, पूर्णमाँन = (पूर्व भाग + उत्तर भाग)

उदाहरण

	पूर्व भाग		**उत्तर भाग**
(१) लग्न	रा		
भाव मध्य	११–०°–२८′–११″	विराम सन्धि	११–१५–५३–२८॥
—आरम्भ सन्धि	१०–१५–५३–२८॥	—भाव मध्य	११– ०–२८–११
	०–१४–३४–४२॥		०–१५–२५–१७॥

(२) धन भाव

भाव मध्य	०– १–१८–४६	विराम संधि	०–१६–४४– ३॥
आरंभ संधि	११–१५–५३–२८॥	—भाव मध्य	०– १–१८–४६
	०–१५–२५–१७॥		०–१५–२५–१७॥

(३) तृतीय भा		विराम संधि	१–१७–३४–३८॥
भाव मध्य	१–२–९–२१	— भाव मध्य	१–२–९–२१
आरंभ संधि	०–१६–४४–३॥		०–१५–२५–१७॥
	= ०–१५–२५–१७॥		

भाव का पूर्ण मान

(१) लग्न

पूर्व भाग = ०–१४–३४–४२॥

उत्तर भाग = ०–१५–२५–१७॥

योग १–०–०–०

(२) द्वितीय भाव

पूर्व भाग ०–१५–२५–१७॥

उत्तर ,, ०–१५–२५–१७॥

योग १–०–०–०

(३) तृतीय भाव

पूर्व भाग ०–१५–२५–१७॥

उत्तर भाग ०–१५–२५–१७॥

१–० – ० – ०

इसी प्रकार और भी सब भाव का पूर्व भाग, उत्तर भाग और सम्पूर्ण भाग निकाल सकते हैं जिससे प्रगट होता है कि भाव मध्य के पहिले वह भाग कितना है, बाद को कितना और सम्पूर्ण भाव कितना बड़ा है।

उपरोक्त ध्यान पूर्वक देखने से यही प्रकट होता है कि पहिली रीति से निकाले हुए जो दो क्षेपक हैं वही यहाँ निकलते हैं।

(१) लग्न और सप्तम भाव का पूर्ण भाव

पूर्व भाग = क्षेपक २ } दोनों का
उत्तर ,, = क्षेपक १ } योग

(२) द्वितीय और अष्टम भाव का

पूर्व भाग = क्षेपक १ }
उत्तर भाग = ,, १ }

(३) तृतीय और नवम भाव का

पूर्व भाग = क्षेपक १ }
उत्तर भाग = ,, १ } ,,

(४) चतुर्थ और दशम भाव का

पूर्व भाग = क्षेपक १ }
उत्तर भाग = क्षेपक २ } ,,

(५) पंचम और एकादश भाव का

पूर्व भाग = क्षेपक २ }
उत्तर भाग = क्षेपक २ } ,,

(६) षष्ठ और द्वादश भाव का

पूर्व भाग = क्षेपक २ }
उत्तर भाग = क्षेपक २ } ,,

भाव कुंडली

भाव और संधि के विचार से कुंडली में ग्रहों की ठीक-ठीक स्थिति बताने के लिये चलित भाव कुंडली बनाई जाती है। आरंभ संधि से ग्रह कम हो तो पूर्व भाव अर्थात् पिछले भाव का ही फल देता है। यदि ग्रह विराम संधि से अधिक हो तो आगे के भाव का फल देता है। इस कारण संधियों का विचार करते हुए ग्रह स्थापित किये जाते हैं। चलित भाव चक्र (कुंडली) बनाते समय जो ग्रह भाव की आरंभ संधि से कम हो तो पिछले भाव में चला जाता है और विराम संधि से अधिक ग्रह हो तो अगले भाव में रख दिया जाता है।

अब इसी को समझाने के लिये उदाहरण स्वरूप एक कुंडली बनाते है।

ग्रह स्पष्ट		गति
	रा	
रवि	३–२७°–२३′– ६″	५७′–३१″
चंद्र	८–२० –५५ –३५	७६३–१७
मंगल	१–१६ –२७ –५८	३७–५१
बुध	३–१३ – ० –३५	४२–१४
गुरु	८–१८ –४४ –५६	३–२६ वक्री
शुक्र	२–१७ –१४ –५६	६७–४४
शनि	१–२० –३० –१०	३– ७
राहु	११– २ –३८ –३१	३–११
केतु	५– २ –३८ –३१	३–११

जन्म दिनांक १३ अगस्त सन् १९१३ ई०। समय ८॥ बजे रात। स्थान नरसिंहपुर। श्रावण शुक्ल १२ सम्वत् १९७० शाके १८३५। इष्ट ३६-३४-३७॥ है।

कुंडली बनाने के लिये ग्रह स्पष्ट और भाव स्पष्ट की आवश्यकता होती है। इस कारण इष्ट काल के ग्रह स्पष्ट और भाव स्पष्ट निकाल कर यहाँ दिये हैं।

भाव स्पष्ट

भाव	स्पष्ट भाव	संधि	भाव	स्पष्ट भाव	संधि
	रा				
१ लग्न	११-०-°२८′-११″	११-१५-५३-२८॥	७ जाया	५-०-२८-११	५-१५-५३-२८॥
२ धन	०-१- १८ -४६	०-१६-४४- ३॥	८ मृत्यु	६-१-१८-४६	६-१६-४६- ३॥
३ सहज	१-२- ९ -२१	१-१७-३४-३८॥	९ धर्म	७-२- ९-२१	७-१७-३४-३८॥
४ सुहृद्	२-२- ५९ -५६	२-१७-३४-३८॥	१० कर्म	८-२-५९-५६	८-१७-३४-३८॥
५ सुत	३-२- ९ -२१	३-१६-४४-३॥	११ आय	९-२- ९-२१	९-१६-४४- ३॥
६ रिपु	४-१- १८ -४६	४-१५-५३-२८॥	१२ व्यय	१०-१-१८-४६	१०-१५-५३-२८॥

चलित कुण्डली = चलित भाव कुण्डली

चित्र संख्या ८ चलित भाव कुण्डली देखो। इस कुंडली में प्रत्येक भाव के आगे उसकी संधि भी बताई गई है। और जो ग्रह जहाँ पर होना चाहिए वहीं बताया है। चित्र के दाहिनी ओर साधारण कुंडली दी है उससे मिलान करो तब प्रगट होगा कि इनमें क्या अंतर है।

इन दोनों के मिलान करने से प्रगट होता है कि चलित कुंडली में ग्रहों के स्थान में बहुत अंतर पड़ गया है। राहु ११-२° है। लग्न की विराम संधि ११-१५° है तो यह राहु लग्न के भीतर ही रहा। मंगल १-१६° है यह वृष का होने से तीसरे भाव में पड़ा था परन्तु चलित में तीसरा भाव ०-१६° से १-१७° तक है तो मंगल तीसरे ही भाव में रहा। शनि १-२०° है वृष का होने से तीसरे भाव में पड़ा था परन्तु तीसरे भाव की विराम संधि १-१७° है इसके बाद चौथा भाव लग जाना है, इससे शनि चतुर्थ

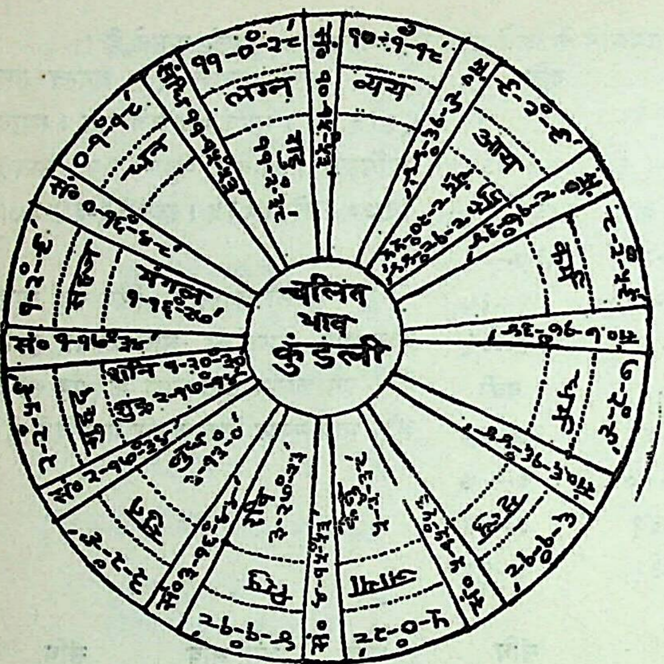

चित्र संख्या ८ चलित भाव कुण्डली

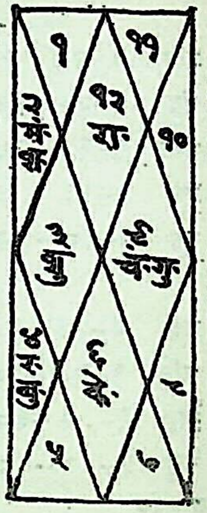

लग्न कुण्डली

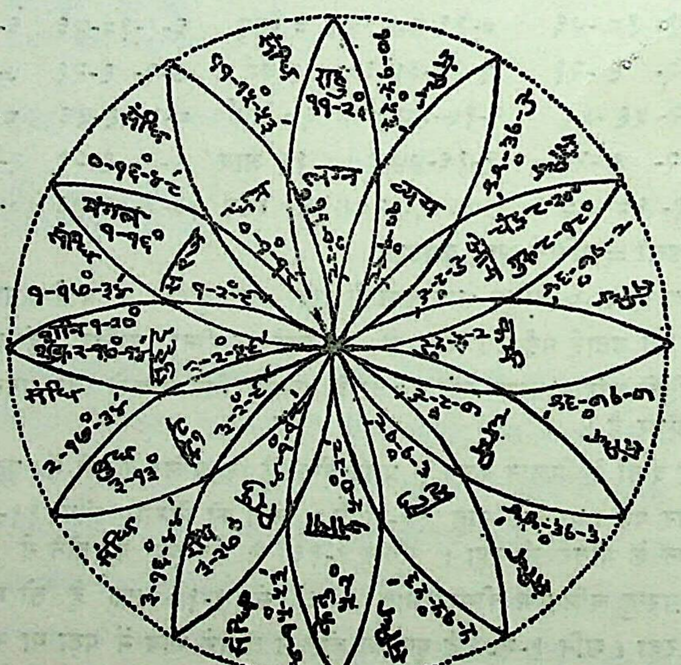

चित्र संख्या ९ चलित भाव कुण्डली के भिन्न-भिन्न आकार

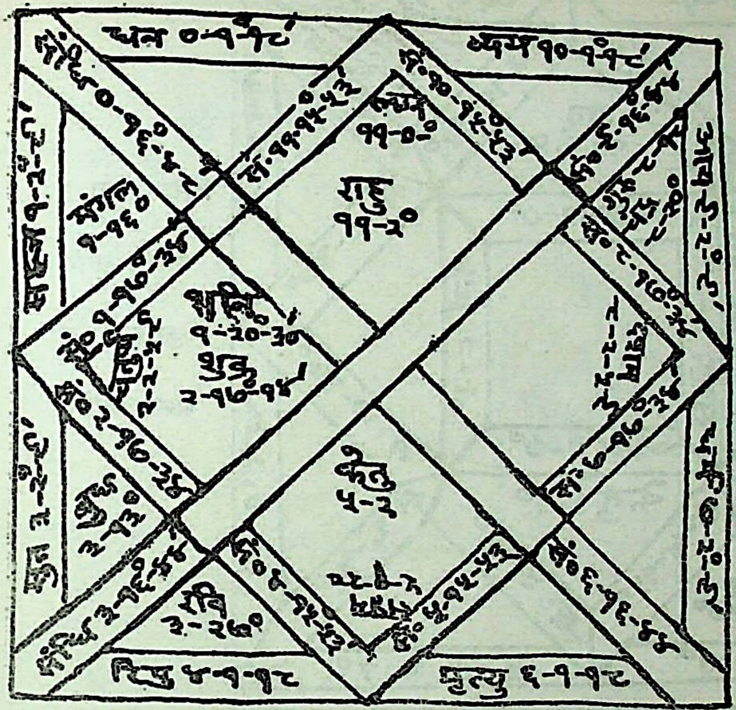

चित्र संख्या १०
अन्य प्रकार
की चलित भाव
कुण्डली

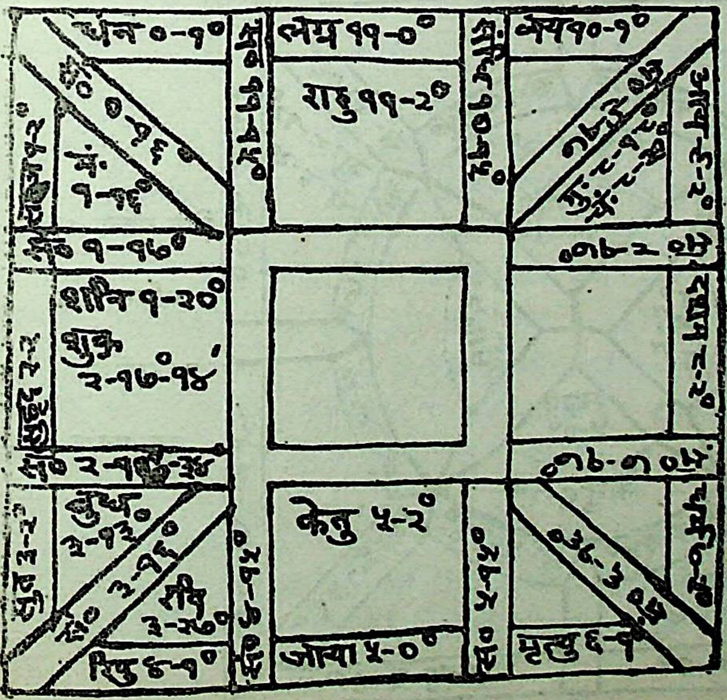

चित्र संख्या ११
अन्य प्रकार
की चलित भाव
कुण्डली

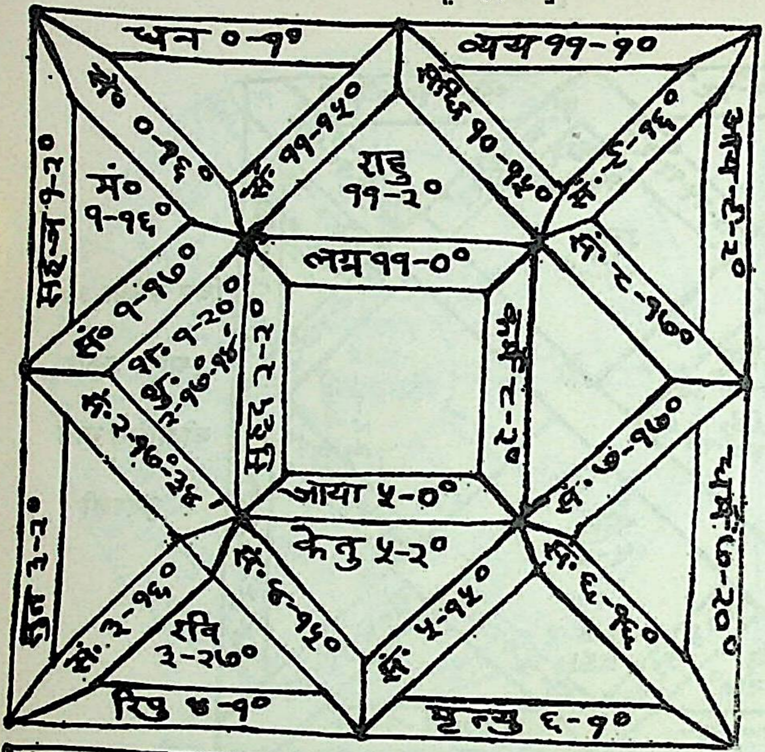

चित्र संख्या १२
चलित भाव
कुण्डली का
अन्य आकार

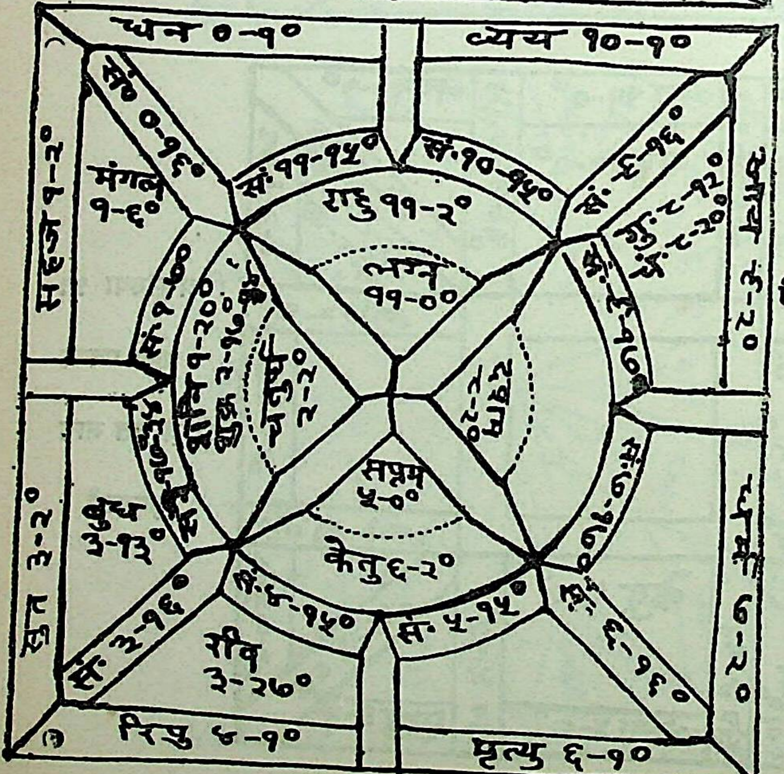

चित्र संख्या १३
चलित भाव
कुण्डली का
एक प्रकार

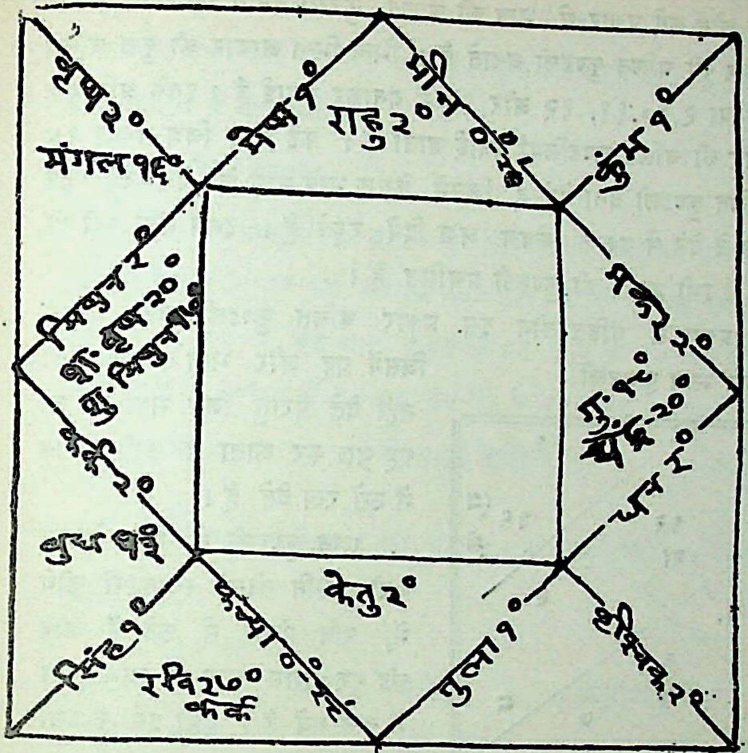

चित्र संख्या १४
चलित भाव
कुण्डली अन्य
प्रकार से।

भाव में चला गया। चतुर्थ भाव १-१७° से २-१७°-३४′ तक है। शुक्र इसके भीतर ही है अर्थात् २-१७°-१४′ है तो शुक्र चतुर्थ भाव में ही रहेगा। चतुर्थ की विराम संधि के समीप ही यह शुक्र है। रवि ३-२७° है कर्क का होने से पंचम में था परन्तु पंचम भाव २-१६″-३४′ से ३-१६° तक है। रवि विराम संधि से अधिक है तो रवि इसके आगे षष्ठ भाव में चला गया। षष्ठ भाव ३-१६° से ४-१५° तक है। बुध ३-१३° (कर्क) का होने से पंचम में था चलित में पंचम भाव ३-१६° तक होने से बुध पंचम भाव में ही रहा। केतु ५-२° है। जाया भाव ५-१९° तक है इससे केतु जाया भाव में ही रहा। गुरु ८-१८° (धन) का है और चंद्र ८-२०° (धन) का होने से दशम भाव में था परन्तु दशम भाव ८-१७° तक ही है। इससे ये दोनों ग्रह आगे लाभ भाव में चले गये क्योंकि लाभ भाव ९-१६° तक है।

इस प्रकार चलित कुंडली में और साधारण कुंडली में बहुत अंतर पड़ सकता है। यहाँ साधारण कुण्डली के ग्रह शनि, रवि, चंद्र और गुरु चलित में आगे के भाव में चले गये हैं। इस कारण चलित कुण्डली के अनुसार ही ग्रह और भाव का फल विचार किया जाता है।

ज्योतिषी लोग कई प्रकार से भाव की चलित कुंडली बनाते हैं। कोई गोल कोई चौकोर आकार की चलित कुण्डली बनाते हैं। भिन्न-भिन्न आकार की कुछ चलित कुण्डलियाँ चित्र संख्या ९,१०,११, १२ और १३ में बनाकर बताई हैं। इनके अतिरिक्त और भी कई प्रकार की चलित कुण्डलियाँ बनाई जाती हैं। कई लोग चित्र संख्या १४ के अनुसार ही चलित कुण्डलो बना देते हैं जिसमें केवल भाव मध्य के अंश दिये रहते हैं। भाव की राशि दे देने से ग्रह के केवल अंश दिये रहते हैं। इसमें संधि नहीं दी रहती। महाराष्ट्र में इसी प्रकार की कुण्डली प्रचलित है।

साधारण :प्रकार से पंडित लोग इस प्रकार चलित कुण्डली वना देते हैं जिसमें ग्रह और भाव के अंश तो नहीं देते परन्तु जिस भाव में जो ग्रह चल कर आता है उसी स्थान में उसे रख देते हैं।

चलित भाव कुण्डली

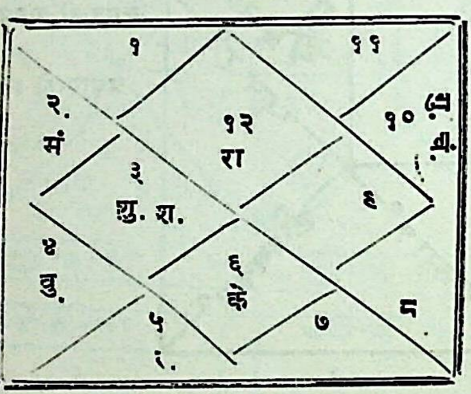

लग्न कुण्डली से इसे मिलान करो। शनि तीसरे स्थान से चौथे में, रवि पंचम से छठे में और चंद्र गुरु दशम स्थान से लाभ स्थान में चले गये हैं। यही इस कुण्डली में बताया है।

—: ० :—

अध्याय १५

लग्न सारिणी बनाना

लग्न सारिणी २ प्रकार की वनाई जाती है एक तो निरयन लग्न सारिणी दूसरी सायन लग्न सारिणी।

सायन लग्न सारिणी प्रायः प्रत्येक पंचाग में दी रहती है परन्तु वह सारिणी किसी विशेष स्थान के स्वोदय पर से बनाई जाती है। यहाँ उदाहरण स्वरूप नर-

सिंहपुर की दोनों प्रकार की लग्न सारिणी बनाना बताया गया है। सायन लग्न सारिणी में अयनांश बदल जाने पर उस सारिणी में कुछ अंतर आ जाता है परन्तु निरयन सारिणी सदा उपयोग में आ सकती है।

निरयन सारिणी बनाना

निरयन लग्नसारिणी बनाने के लिये जिस स्थान की लग्नसारिणी बनानी हो वहाँ की पलभा निकाल कर स्वोदय बना लेना चाहिए। वह स्वोदय किसी भी राशि का हो ३० अंशों में बट जाता है क्योंकि एक राशि के ३० अंश होते हैं। इस प्रकार किसी राशि के स्वोदय में ३० का भाग देने से जो उत्तर आता है उसे ध्रुव कहते हैं। इसी ध्रुव के आधार पर सारिणी बनाई जाती है।

उदाहरण—नरसिंहपुर का अक्षांश २२°–५७′ पलभा ५–५ है और स्वोदय इस प्रकार हैं—

राशि		स्वोदय पल–विपल		ध्रुवांक (तीसवां भाग) घड़ी पल वि. अनु.
१ मेष	१२ मीन	२२७–१०	=	०–७–३४– २०
२ वृष	११ कुंभ	२५८–२०	=	०–८–३६– ४०
३ मिथुन	१० मकर	३०६– ४	=	०–१०–१२– ८
४ कर्क	९ धन	३३९–५६	=	०–११–१९–५२
५ सिंह	८ वृश्चिक	३३९–४०	=	०–११–१९–२०
६ कन्या	७ तुला	३२८–५०	=	०–१०–५७–४०

अब एक सारिणी का चक्र बना कर, जैसे पंचांग में लग्न सारिणी बनी रहती है उसी प्रकार कोठे बना लो। अर्थात् ऊपर ३० कोठे बना कर ० से २९ अंश तक लिख दो और बाईं ओर खड़े कोठे में मेष से मीन तक १२ राशियां लिख दो। मेष के नीचे ०, वृष के नीचे १ इत्यादि लिख दो। मीन के नीचे ११ लिखो। मेष के नीचे ० लिखने का तात्पर्य यह है कि जहाँ मेष लिखा होगा वहाँ मेष राशि के अंश ऊपर चक्र में मिलेंगे। और ० राशि अर्थात् मीन राशि पूर्ण होकर ये अंश मेष के कहलायेंगे।

इस चक्र के अंत में २९° के उपरांत ध्रुवांक (प्रत्येक राशि का) लिख दो जिससे जोड़ने में भूल न हो जावे।

स्वोदय में विपल छोड़ कर केवल पल ही लेते हैं परन्तु यहाँ ध्रुवांक बनाने
पल वि०
के लिये सूक्ष्म स्वोदय ही लिया है जैसे मेष मीन का स्वोदय २२७-१० है। इस में ३० का भाग देकर प्रत्येक राशि के स्वोदय का ध्रुव बना लिया है जैसे मेष का
घ०प०वि०अनु
ध्रुवांक ०-७-३४-२० आया है।

घ. प. वि. अ.

अब मेष के ० अंश के नीचे ०-०-०-० लिखो और इस में आगे प्रत्येक राशि का ध्रुवांक जोड़ते जाओ और आगे के अंश के नीचे रखते जाओ। जैसे ० में ध्रुवांक ०-७-३४-२० जोड़ा तो यही आया इसे १° के नीचे रखा इस में फिर इसी ध्रुवांकको जोड़ा तो ०-१५-८-४० आया। इसे २ अंश के नीचे रखा फिर इसी में उसी ध्रुवांक के जोड़ने से जो आया वह ३ अंश के नीचे रखा। इस प्रकार मेष का ध्रुवांक २९ अंश तक जोड़ते जाना और आगे के अंशों के नीचे रखते जाना। अंत में ध्रुवांक जोड़ने से ३-३९-३५-४० आया इसे २९ अंश के नीचे रखा। फिर इसी में मेष का ध्रुवांक और जोड़ा तो ३-५५-४६-४० आया इस को वृष के ० अंश के नीचे रखा।

फिर इस के आगे वृष का ध्रुवांक जोड़ना आरम्भ किया और २९ अंश तक रखने के उपरांत मिथुन के ० अंश तक इसी ध्रुवांक को २९ अंश के अंक में जोड़ कर रख दिया। जैसे २९ अंश के नीचे ७-५६-३३-२० आया था इस में वृष का वांक जोड़ा तो ८-१५-४२-८ हुए इसे मिथुन के ० अंश के नीचे रखा। इस के आगे मिथुन का ध्रुवांक जोड़ना आरम्भ किया। इसी प्रकार २९ अंश तक जोड़ने के उपरांत आगे की राशि कर्क के ० अंश तक वही ध्रुवांक जोड़ा जायगा। इस रीति को ध्यान में रखते हुए आगे की राशियों का ध्रुवांक जोड़ कर पूरी सारिणी बनालो।

यह सारिणी ठीक बनी है या नहीं इस की जाँच करने को सब राशियों के स्वोदय की घड़ी पल विपल आदि बना कर लिख लो। मेष का पूरा स्वोदय घड़ी पल जितना होगा वही अंक वृष राशि के ० अंश के नीचे मिलेगा।

राशियों का उदय काल लग्न — राशि स्वोदय

सारिखी का उदय काल — राशियों का योग

राशि	पल–वि० = घ० प० वि०	राशियों का योग	घ० प० वि०
१ मेष	२२७–१० = ३–४७–१०	१ मेष + ०	३–४७–१०
२ वृष	२५८–२० = ४–१८–२०	२ मेष + वृष	८– ५–३०
३ मिथुन	३०६– ४ = ५– ६– ४	३ मेष से मिथुन तक	१३–११–३४
४ कर्क	३३९–५६ = ५–३९–५६	४ ,, कर्क ,,	१८–५१–३०
५ सिंह	३३९–४० = ५–३९–४०	५ ,, सिंह ,,	२४–३१–१०
६ कन्या	३२८–५० = ५–२८–५०	६ ,, कन्या ,,	३०–० –०
७ तुला	३२८–५० = ५–२८–५०	७ ,, तुला ,,	३५–२८–५०
८ वृश्चिक	३३९–४० = ५–३९–४०	८ ,, वृश्चिक ,,	४१– ८–३०
९ धन	३३९–५६ = ५–३९–५६	९ ,, धन ,,	४६–४८–२६
१० म..र	३०६– ४ = ५– ६– ४	१० ,, मकर ,,	५१–५४–३०
११ कुंभ	२५८–२० = ४–१८–२०	११ ,, कुंभ ,,	५६ १२ ५०
१२ मीन	२२७–१० = ३–४७–१०	१२ ,, मीन ,,	६० ० ०
			=० ० ०

जैसे मेष का उदय काल ३–४७–१० है यही वृष के ० अंश के नीचे मिलेगा। इस स्वोदय में आगे की राशियों का स्वोदय घड़ी पल जोड़ते जाय तो उन के आगे को राशियों के शून्य अंश के नीचे वह जोड़ मिलेगा। जैसे मेष से तुला तक स्वोदय घड़ी पल का जोड़ ३०–०–० घड़ी होता है वह तुला के ० अंश के नीचे मिलेगा और मीन तक का जोड़ ६० घड़ी मेष के ० अंश के नीचे ०–० दिया है। ऊपर प्रत्येक राशियों तक का स्वोदय का जोड़ दिया है उसी के अनुसार देख लो सारिणी में आता है या नहीं। यदि नहीं आया तो समझना कहीं जोड़ में भूल हो गई है जिसे शुद्ध कर लेना।

सारिणी में दिये हुए अंक घड़ी पल विपल प्रति विपल हैं और यह निरयन सारिणी है इस का ध्यान रहे। इस सारिणी में जो कुछ योग आया है पूरे चारों अंक दे दिये हैं जिस से विद्यार्थी को अटपटा न जंचे कि वह अंक कहाँ से आया। सारिणी में बहुधा २ या ३ ही अंक दिये रहते हैं चौथा अंक प्रायः छोड़ दिया जाता है।

इस सारिणी से लग्न देखने के लिये सूर्य में अयनांश जोड़ कर सायन सूर्य पर से लग्न देखना पड़ता है और जो लग्न आती है वह सायन लग्न आती है। उस में से अयनांश घटा देने से निरयन लग्न आ जाती है।

निरयन सारिणी देखने की रीति

इष्ट काल का सायन सूर्य बना लो और उसपर से सारिणी देखो। सायन सूर्य की जो राशि होगी वह बाईं ओर खड़े कोठे में खोजो और जो सायन सूर्य के अंश हों सारिणी में ऊपर देखो। ये अंश आड़े कोठे में सब के ऊपर ० से २९ अंश तक दिये हैं। इन दोनों के सीध में जो अंक मिलें वे सारिणी अंक घड़ी पल आदि में होंगे। उस में इष्ट घड़ी पल आदि जोड़ दो। यदि जोड़ने से ६० घड़ी से अधिक योग आवे तो उस में ६० घटा देना। जो शेष बचे उसे लेना। उपरांत उस अंक को सारिणी में खोजो जहाँ वह मिले बाईं ओर लग्न की राशि और ऊपर उस राशि का अंश मिलेगा। इस प्रकार लग्न की राशि अंश केवल मिलेगी।

यदि सूक्ष्म रूप से लग्न की कला विकला भी निकालना है तो सायन सूर्य की कला विकला में सायन सूर्य की राशि का ध्रुवांक का गुणा करो जो गुणनफल आयगा वह पल आयगा पहिले इष्ट जोड़ने से आये हुए घड़ी पल आदि में इतने और जोड़ देना जो योग फल घटी पल आदि हो उसे सारिणी में खोजना। जिस राशि के अंश के नीचे उस से अल्प संख्या मिले लिख लो उस को अल्प कोष्टक का अंक कहेंगे क्योंकि वह अंक अपने इष्ट मिश्रित अंक से अल्प है। उसके आगे का उससे अधिक घड़ी पल के कोष्टक को ऐष्य कोष्टक कहेंगे।

अल्प कोष्ठक और ऐष्य कोष्ठक के अंकों का अंतर निकालो यह अंतर १° में हुआ। उपरांत अल्प कोष्ठक में मिला हुआ अंक और इष्ट मिश्रित सारिणी अंक का अंतर निकालो। जो अंतर मिले वह इष्ट का अंतर कहलायगा। उपरांत त्रैराशिक से निकालो कि इतने घड़ी पल एक कोष्ठक के अंतर में १ अंश (६० कला) का अंतर होता है तो इष्ट मिश्रित सारणी अंक के अंतर घड़ी पल में कितनी कला का अंतर पड़ेगा। जो उत्तर आवे उसे पूर्व प्राप्त लग्न की राशि अंश में जोड़ दो तो लग्न स्पष्ट हो जायगा।

परन्तु सारिणी अल्प समय में उत्तर प्राप्त करने के लिये बनाई जाती है जिस से लग्न की राशि अंश शीघ्र मिल जाता है। यदि कला विकला भी निकालने को उपरोक्त गणित सूक्ष्म रूप से किया जाय तो उस में समय लगेगा उतने ही समय में गणित द्वारा लग्न स्पष्ट हो सकती है। इस कारण ऊपर बनाये गणित को मोटे रूप से करेंगे।

उदाहरण

रा तात्कालिक सूर्य स्पष्ट ११–५°–४०′–४५″ + अयनांश ०–२२–४७–५६ = सायन सूर्य ११–२८–२८–४४ सूर्य ११–२८° का मिल गया अब २८′–४४″ का और निकालना है।	सारिणी देखा रा ११–२८° = ५६–४४–५१–२० + इष्ट = १५–५१–४२–३० इष्ट युक्त = १५–३६–३३–५० सारिणी अंक यहाँ जोड़ने में ६० से अधिक घड़ी होने से निकाल दिया।

पल

मीन का ध्रुवांक ७–३४–२० है। विपल ३० से अधिक है इससे मोटे हिसाब से इसे ८ पल मान लिया

२८–४४

$$\frac{२८'–४४'' \times ८}{६०} = \frac{२३०–५२}{६०} = ३–५०$$ (पल वि०)

×८

६०) २३०–५२ (३ पल
१८०
५० विपल

इष्ट युक्त सारिणी अंक १५–३६–३३–५० २८′–४४″ का + ३–५० = १५–४० –२३–५० ३-१३° का सारिणी अंक–१५–३८–५२–१६ अंतर ०–१–३१–३४	सारिणी में इष्ट युक्त सारिणी अंक के समीप का रा १५–३८–५२–१६ = ३–१३° मिला इससे लग्न कर्क १३° निकली

अब लग्न की कला विकला भी निकालनी है तो इष्ट युक्त सारिणी अंक से ३–१३° के सारिणी अंक का अंतर निकाला १–३१–३४ (पल) अंतर निकला। अब इस अंतर की कला निकालनी है। कर्क का ध्रुवांक ११–१६–५२ है यही कोष्टक अंतर होता है। ११–१६–५२ का ११–१६ ही लिया और अंतर १–३१–३४ का १–३१ ही लिया।

११–१६ में ६०′ तो १–३१ में कितना होगा?

= ६७९ विपल = ९१ विपल

$$\frac{९१ \times ६०}{६७९} = \frac{५४६०}{६७९} = ८'–२''$$

६७९) ५४६० (८'
५४३२
२८ × ६०
६७९) १६८० (२''
१३५८
३२२

लग्न पूर्व प्राप्त ३–१३°
+ ८'–२''
= ३–१३–८–२ सायन लग्न

इस में से अयनांश घटा देने से निरयन लग्न हो जायगी।

यहाँ जो कला विकला आई है गणित मोटे रूप से किया है इस से १' के लगभग इस में अंतर पड़ सकता है। यदि सूक्ष्म रूप से गणित किया जाय तो अंतर नहीं रहेगा। सारिणी से लग्न की राशि अंश तो निश्चित रूप से निकल आती हैं।

राशि अंश के अतिरिक्त कला विकला प्राप्त करने का जो गणित वताया है उस का सारांश :—

(१) इष्ट कालीन सायन सूर्य के राशि अंश के नीचे सारिणी अंक=सारिणी अंक।

(२) सायन सूर्य की राशि का ध्रुवांक × सा० सूर्य की केवल कला विकला ÷ ६० = अनुपातिक पल।

(३) इष्ट युक्त सारिणी अंक + अनुपातिक पल = इष्ट युक्त पूर्ण सारिणी अंक (सारिणी अंक और इष्ट का योग ६० से अधिक होने पर ६० घटा देना)।

(४) इस के सामने सारिणी में जो मिले वह लग्न की राशि अंश हुई और इस के समीप का कुछ कम जो सारिणी अंक मिला = अल्प कोष्टक।

(५) इष्ट युक्त पूर्ण सारिणी अंक-अल्प कोष्टक = इष्ट अंतर।

(६) कोष्टक अंतर = (ऐष्य कोष्टक—अल्प कोष्टक) = ध्रुवांक।

(७) (इष्ट अंतर × ६०) ÷ कोष्टक अंतर या ध्रुवांक = अनुपातिक इष्ट कलादि। अंतर पल आदि ∴ का पिंड बना कर गुणा भाग करना।

(८) पूर्व प्राप्त लग्न की राशि अंश (जो इष्ट युक्त सारिणी अंक से प्राप्त हुआ था) + उपरोक्त कलादि = सायन लग्न।

(९) (सायन लग्न–अयनांश) = निरयन लग्न।

अब उपरोक्त रीति से सारिणी के सहारे सूक्ष्म रूप से लग्न साधन करते हैं।

रा
सा. सूर्य ११–२८°–२८'–४४" मीन
सूर्य ११–२८°=५९–४४–५१–२० सारिणी अंक
+इष्ट १५–५१–४२–३०
७५–३६–३३–५०

इष्ट युक्त सारिणी अंक } =१५–३६–३३–५०

+ अनुपातिक पल } +३–३७–१४

इष्ट युक्त पूर्ण = १५–४०–११–४
सारिणी अंक इस के समीप का
अल्प कोष्ट = १५–३८–५२–१६ मिला
इस की राशि अंक कर्क १३° सायन लग्न

शेष कला सूर्य की मीन ध्रुवांक
(२८–४४) × (७–३४–२०) / ६०
७–३४–२०
× २८–४४

			१५	४०
		२४	५६	
	५	८		
		९	२०	
	१५	५२		
३	१६			
३	३७	१४	३०	४०

= ३–३७–१४
अनुपातिक पल

इष्ट युक्त पूर्ण सारिणी अंक १५–४०–११–४
—अल्प कोष्टक १५–३८–५२–१६
=इष्ट अंतर = ०– १–१८–४८
= ४७२८अनुपल

अल्प कोष्टक ध्रुवांक = ०–११–१९–५२
= ४०७९२ अनुपल

इष्ट अंतर कोष्टक अंतर

$\frac{४७२८ \times ६०}{४०७९२ \text{ कोष्टक अंतर}}$ $\frac{२८३६८०}{४०७९२}$ = ७'–१२"

अल्प कोष्टक से प्राप्त सायन लग्न = कर्क १३°

४०७९२) २८३६८० (७'
२८५५४४
८१३६
× ६०
४०७९२) ४८८१६० (११"
४०७९२
८०३४०
४०७९२
३९५४८
शेष आवे से अधिक है तो ११" को १२" माना।

+ अनुपातिक इष्ट कला ७'–१२"
= कर्क १३°–७'–१२"
= सायन लग्न = ३–१३°–७'–१२"
—अयनांश ०–२२–४७–५९
शेष = २–२०–१९–१३
निरयन लग्न

रा
∴ निरयन लग्न = २–२०°–१९'–१३"

निरयन लग्न सारिणी नरसिंहपुर की अक्षांश २२°—५७' पलभा ५-५

अंश

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ध्रुव
मेष घं.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	०
० प.	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५३	०	८	१५	२३	३०	३८	४६	५३	१	८	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१६	२४	३२	३९	७
	०	३४	८	४३	१७	५१	२६	०	३४	९	४३	१७	५२	२६	०	३५	९	४३	१८	५२	२६	१	३५	९	४४	१८	५२	२७	१	३५	३५
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	२०
वृष	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	०
१	४७	५५	४	१३	२१	३०	३८	४७	५६	४	१३	२१	३०	३९	४७	५६	४	१३	२२	३०	३९	४८	५६	५	१३	२२	३१	३९	४८	५६	८
	१०	४६	२३	०	३६	१३	५०	२६	३	४०	१६	५३	३०	६	४३	२०	५६	३३	१०	४६	२३	०	३६	१३	५०	२६	३	४०	१६	५३	३६
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	४०
मिथुन	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	०
२	५	१५	२५	३६	४६	५६	६	१६	२७	३७	४७	५७	७	१८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	०	०	२०	३०	४०	५०	१	१०
	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	१२
	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	७	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	८
कर्क	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	०
३	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०	११
	३४	५३	१३	३३	५३	१३	३३	५३	१२	३२	५२	१२	३२	५२	१२	३२	५१	११	३१	५१	११	३१	५४	१०	३०	५०	१०	३०	५०	१०	१९
	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	५२
सिंह	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	०
४	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	११
	३०	४९	८	२८	४७	६	२६	४५	४	२४	४३	२	२२	४१	०	२०	३९	५८	१८	३७	५६	१६	३५	५४	१४	३३	५२	१२	३१	५०	१९
	०	२०	४०	९	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	२०
कन्या	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	०
५	३१	४२	५३	४	१५	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४८	१०
	१०	७	५	३	०	५८	५६	५३	५१	४५	४६	४४	४२	३९	३७	३५	३२	३०	२८	२५	२३	२१	१८	१६	१६	११	९	७	४	२	५७
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	४०

तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	०
६	०	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	२३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४४	५५	६	१७	१०
	०	५७	५५	५३	५०	४८	४६	४३	४१	३९	३६	३४	३२	२९	२७	२५	२२	२०	१८	१५	१३	११	८	६	४	१	५९	५७	५४	५२	५७
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	४०
वृश्चिक	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	०
७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	११
	५०	९	२८	४८	७	२६	४६	५	२४	४४	३	२२	४२	१	२०	४०	५९	१८	३८	५७	१६	३६	५५	१४	३४	५३	१२	३२	५१	१०	१९
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	२०
धन	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	३५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	०
८	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३६	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	११
	३०	४९	९	२९	४९	९	२९	४९	८	२८	४८	८	२८	४८	८	२८	४७	७	२७	४७	७	२७	४७	६	२६	४६	६	२६	४६	६	१९
	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	५२
मकर	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	०
९	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०	३०	४०	५०	१	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२२	३२	४३	५३	३	१३	२३	३४	४४	१०
	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	३	१५	२७	३९	५१	३	१५	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	५	१७	२९	४१	५३	५	१७	१२
	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	८
कुंभ	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	०
१०	५४	३	११	२०	२८	३७	४६	५४	३	१२	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	२०	२९	३८	४६	५५	३	१२	२१	२९	३८	४७	५५	६	८
	३०	६	४३	२०	५६	३३	१०	४६	२३	०	३६	१३	५०	२६	३	४०	१६	५३	३०	६	४३	२०	५६	३३	१०	४६	२३	०	३६	१३	३६
	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	४०
मीन	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०
११	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५८	५	१३	२०	२८	३६	४३	५१	५८	६	१३	२१	२९	३६	४४	५१	५९	६	१४	२२	२९	३७	४४	५२	७
	५०	२४	५८	३३	७	४१	१६	५०	२४	५९	३३	७	४२	१६	५०	२५	५९	३३	८	४२	१६	५१	२५	५९	३४	८	४२	१७	५१	२५	३४
	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

सायन लग्न सारिणी बनाना

प्राय: प्रत्येक पंचाग में यह सारिणी दी रहती है। पहिले बताई निरयन सारिणी और इस में बहुत थोड़ा अंतर है। जो अंक निरयन सारिणी में रखे गये हैं वे ही अंक इस में भी हैं। केवल अंतर यही है कि निरयन सारिणी में मेष के १ अंश के नीचे से ध्रुवांक जोड़ना आरंभ हुआ है और इस में अयनांश के अनुसार जो कोठा आता है उसी अंश के नीचे से ध्रुवांक जोड़ना आरंभ होता है।

यह सारिणी बनाने के लिये उसी प्रकार ३० कोठे बना कर ० से २९ अंश तक ऊपर लिख दो और अंत का ध्रुवांक अभी न लिखो। बाईं ओर खड़े कोठे में मेष ० से लेकर मीन ११ तक राशियां लिख दो।

स्थानिक पलभा से स्वोदय बना कर स्वोदय में ३० का भाग देकर प्रत्येक राशियों का ध्रुवांक बना लेना, जैसे निरयन सारिणी के बनाने के लिये किया था।

फिर वर्तमान सम्वत का अयनांश निकालो। जो अयनांश आवे उसे १२ राशि (१ भचक्र) में से घटा दो। जो राशि अंश शेष बचें उस राशि अंश के नीचे सारिणी में ० रखो। वहाँ से मेष का ध्रुवांक आगे जोड़ना आरम्भ करो और २९ अंश के आगे अंत में मेष का ध्रुवांक लिखदो। अर्थात् मीन के आगे मेष का ध्रुवांक, मेष के आगे वृष का, वृष के आगे मिथुन का ध्रुवांक, इसी प्रकार प्रत्येक राशियों का ध्रुवांक अंत में लिखदो।

रा–०–′–″
१२–०–०–०
 २३–४१–०
शेष ११–६–१९–०

जैसे शाका १८६५ का अयनांश २३°–४१′ है इसे १२ राशि में से घटाया तो ११–६°–१९′ शेष बचा। अर्थात् मीन के ६ अंश पूर्ण होकर सातवां अंश है तो सारिणी में मीन के ७ अंश के नीचे शून्य रखो और इस के आगे मेष का ध्रुवांक ०–७–३४–२० को मीन के ८° के नीचे रखो। आगे इसी ध्रुवांक को २९ अंश तक जोड़ते जाओ। इस के आगे मेष के ० से मेष के ६° तक यही मेष का ध्रुवांक जोड़ते जाना। मेष के ७° से वृष का ध्रुवांक जोड़ना आरंभ करो। अर्थात् प्रत्येक राशि ७° से उस राशि के आगे का ध्रुवांक जोड़ना आरंभ होता है और आगे की राशि के ६° तक वही ध्रुवांक जोड़ा जायगा। इस प्रकार पूरी सारिणी बना लो।

निरयन सारिणी में मेष के नीचे ० अंश के नीचे ० रख कर मेष का ध्रुवांक आगे जोड़ना आरंभ हुआ था और इस में मीन के ७° के नीचे ० रख कर आगे मेष का ध्रुवांक जोड़ना आरंभ हुआ है और कोई अंतर नहीं है। दोनो सारिणी के अंक उसी क्रमानुसार हैं। सारिणी शुद्ध है या नहीं यह देखने के लिये जैसे मेष के ० अंश के नीचे ध्रुवांक का जोड़ (स्वोदय बराबर) मिला था इसी प्रकार यहाँ मीन के ७° के नीचे से ध्रुवांक का योग मिलना आरंभ होगा। जैसे मीन तक का योग ६० घड़ी=० है यह मीन के ७° के नीचे आया। मेष के ७° के नीचे स्वोदय ३–४७–१० मिलेगा।

वृष के ७° के नीचे मेष और वृष के स्वोदय का योग ८–५–३० मिलेगा। इसी प्रकार आगे की राशि का स्वोदय जोड़ते जाओ तो जो योग होगा यहाँ ७° के नीचे मिले तो समझना सारिणी शुद्ध बनी हैं।

सारिणी देखना

इस सारिणी को देखने के लिये सायन सूर्य बनाने की आवश्यकता नहीं है। केवल इष्ट कालीन निरयन सूर्य लेना। सूर्य के अंश जिस राशि के भीतर हों उस राशि और अंश के नीचे सारिणी में जो अंक मिले इस में इष्टकाल जोड़ना तो वह इष्ट युक्त सारिणी अंक हुआ। इसे सारिणी में खोजो अपने अंक से मिलता जुलता समीप का अंक जिस राशि अंश के नीचे मिले वह राशि अंश लग्न की हुई। यह निरयन लग्न होगी। इस सारिणी से लग्न की कला विकला ठीक नहीं निकलती। कुछ अंतर पड़ जाता है। कारण यह है कि गणित में निरयन सूर्य को सायन बनाने के लिये जो अयनांश जोड़ा था वह सूक्ष्म रहता है और इस सारिणी में अयनांश के केवल अंश का उपयोग हुआ है। इस कारण इस सारिणी द्वारा यदि लग्न का सूक्ष्म कला विकला निकालना चाहो तो कला में अंतर पड़ेगा। यदि सारिणी से सूक्ष्म लग्न निकालना है तो निरयन सारिणी से लग्न निकालना।

सायन सारिणी देखने का उदाहरण

	रा
निरयन सूर्य	११–५°–४०′–४५″ है
रा	
सूर्य ११–५° =	५६–४४–५१–२० है
(मीन के ५°) + इष्ट	१५–५१–४२–३०
योग	७५–३६–३३–५०
इष्ट युक्त सारिणी अंक	=१५–३६–३३–५०

इष्ट युक्त सारिणी अंक को सारिणी में खोजा ६५–३८–५३–१६ मिला जो इस के समीप का है यह मिथुन के २०° के नीचे है तो निरयन लग्न मिथुन के २०° हुए।

इस सारिणी से दिनमान भी जान सकते हैं।

सूर्य के राशि अंश के नीचे जो सारिणी में अंक प्राप्त हो उसी के नीचे सातवें कोठे में सारिणी में दिये हुए घड़ी पल लेना। सातवें कोठे के अंक से पहिले का अंक घटाना तो शेष दिनमान प्राप्त होगा। जैसे :—

सूर्य रा० अं०	सारिणी अंक
२–२५	= घ. प. वि.
	= १६–३५–३१–३६
इस से सातवाँ नीचे का अंक	= ४६–५२– ४ –२४

	घ. प. वि.
	४६–५२–४–२४
	–१६–३५–३१–३६
शेष=	३३–१७–३२–४८
	= दिनमान

जिस कोठे में सारिणी अंक सूर्य की राशि अंश के सामने मिले उस को १ गिनते हुए उसके नीचे वाले सातवे कोठे में जो सारिणी अंक मिले उसे लेना और पूर्व प्राप्त अंक को इस सातवे कोठे के अंक से घटाना तो दिनमान निकल आयगा।

सायन लग्न सारिणी नरसिंहपुर अक्षांश २२°-५७′ पलभा ५-५ शाका १८६५

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ध्रुवांक घड़ी पल वि.अ.
मेष	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	०
०	५४	१	९	१६	२४	३२	३९	४७	५५	४	१३	२१	३०	३८	४७	५६	४	१३	२१	३०	३९	४७	५६	४	१३	२२	३०	३९	४८	५६	८
	९	४४	१८	५२	२७	१	३५	१०	४६	२३	०	३६	१३	५०	२६	३	४०	१६	५३	३०	६	४३	२०	५६	३३	१०	४६	२३	०	३४	३६
	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	४०
वृष	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	०
१	५	१३	२२	३१	३९	४८	५३	५	१५	२५	३६	४६	५६	६	१६	२७	३७	४७	५७	७	१८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	१०
	१३	५०	२६	३	४०	१६	५६	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	७	१९	३१	५४	५५	७	१९	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	१२
	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२१	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	८
मिथुन	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	०
२	०	१०	२०	३०	४०	५०	१	११	२२	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	११
	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३४	५३	१३	३३	५३	१३	३३	५३	१२	३२	५२	१२	३२	५२	१२	३२	५१	११	३१	५१	११	३१	५४	१९
	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५२
कर्क	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	०
३	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११
	१०	३०	५०	१०	३०	५०	१०	३०	५९	८	२८	४७	६	२६	४५	४	२४	४३	२	२२	४१	०	२०	३९	५८	१८	३७	५६	१६	३५	१९
	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	२०
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	०
४	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१५	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	१०
	५४	१४	३३	५२	१२	३१	५०	१०	७	५	३	०	५८	५६	५३	५१	४९	४६	४४	४२	३९	३७	३५	३२	३०	२८	२५	२३	२१	१८	५७
	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	४०
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	०
५	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५८	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१०
	१६	१४	११	९	७	४	२	०	५७	५५	५३	५०	४८	४६	४३	४१	३९	३६	३४	३२	२९	२७	२५	२२	२०	१८	१५	१३	११	८	५७
	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	४०

तुला	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	०
६	१२	२३	३४	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	०	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३७	११
	६	४	१	५९	५७	५४	५२	५०	९	२८	४८	७	२६	४६	५	२४	४४	३	४२	४२	१	२०	४०	५९	१८	३८	५७	१६	३६	५५	१९
	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	२०
वृश्चिक	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	०
७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	११
	१४	३४	५३	१२	३२	५१	१०	३०	४९	९	२९	४९	९	१९	४९	८	२८	४८	८	२८	४८	८	२८	४७	७	२७	४७	७	२७	४७	१९
	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४	५२
धन	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	०
८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०	३०	४०	५०	१	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२२	३२	१०
	६	२६	२६	६	२६	४६	६	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	३	१५	२७	३९	५१	३	१५	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	१२
	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	८
मकर	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	०
९	५३	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	३	११	२०	२८	३७	४६	५४	३	१२	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	२०	२९	३८	४६	५५	३	८
	५	१७	२९	४१	५३	५	१७	३०	६	४३	२०	५६	३३	१०	४६	२३	०	३६	१२	५०	२६	३	४०	१६	५३	३०	६	४३	२०	५६	३६
	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	४०
कुंभ	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	०
१०	१२	२१	२९	३८	४७	५५	४	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५८	५	१३	२४	२८	३६	४३	५१	५८	६	१३	२१	२९	३६	४४	५१	५९	७
	३३	१०	४६	२३	०	३६	१३	५०	२४	५८	३३	७	४१	१६	५०	२४	५९	३३	७	४२	१६	५०	२५	५९	३३	८	४२	१६	५१	२५	३४
	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	२०
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	०
११	६	१४	२२	२९	३७	४४	५२	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५३	०	८	१५	२३	३०	३८	४६	५३	१	८	१६	२३	३१	३९	४६	७
	५९	३४	८	४२	१७	५१	२५	०	३४	८	४३	१७	५१	२६	०	३४	९	४३	१७	५२	२६	०	३५	९	४३	१८	५२	२६	१	३५	३४
	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	२०

दशम सारिणी बनाना

यह सारिणी भी लग्न सारिणी के अनुसार बनती है। जैसे लग्न सारिणी दो प्रकार की बनती है उसी प्रकार यह दशम सारिणी भी सायन और निरयन बनती है।

लग्न सारिणी में स्वोदय का उपयोग होता है परन्तु दशम सारिणी में लंकोदय के पलों के आधार पर लग्न सारिणी बनाने के नियम के अनुसार ही बनाई जाती है।

प्रत्येक राशियों के लंकोदय पल में ३० का भाग देकर ध्रुवांक बना लेना चाहिए। इसी ध्रुवांक को लग्न सारिणी के अनुसार जोड़ते जाने से दशम सारिणी बन जाती है।

लंकोदय राशियाँ				लंकोदय पल	ध्रुवांक घड़ी–पल	घ. प. वि.
१ मेष	६ कन्या	७ तुला	१२ मीन	२७८	४–३८	०– ९–१६
२ वृष	५ सिंह	८ वृश्चिक	११ कुंभ	२९९	४–५९	०– ९–५८
३ मिथुन	४ कर्क	९ धन	१० मकर	३२३	५–२३	०–१०–४६
						=०–०

लंकोदय का योग

राशियां	योग घ. प. वि.	राशियां	योग घ. प.	राशियां	योग घ. प.
१ मेष केवल	४–३८–०	५ मेष से सिंह तक	२५–२२	९ मेष से धन तक	४५– ०
२ मेष + वृष	९–३७–०	६ ,, कन्या ,,	३०–६	१० ,, मकर ,,	५०–२३
३ मेष से मिथुन तक	१५–०–०	७ ,, तुला ,,	३४–३८	११ ,, कुंभ ,,	५५–२२
४ ,, कर्क ,,	२०–२३–०	८ ,, वृश्चिक ,,	३९–३७	१२ ,, मीन ,,	६०– ०

निरयन दशम सारिणी बनाना

जिस प्रकार निरयन लग्न सारिणी बनाई थी ठीक उसी प्रकार इसे बनाओ। इस में लंकोदय के ध्रुवांक का उपयोग करो। मेष के ० अंश के नीचे ० रखो। आगे मेष का ध्रुवांक २९° तक जोड़ते जाओ। २९° में भी वही मेष का ध्रुवांक जोड़कर वृष के ० अंश के नीचे रखो। इस के आगे वृष का ध्रुवांक जोड़ना आरंभ करो। इसी प्रकार पूरी सारिणी बनालो। और सारिणी के अंत में ये ही ध्रुवांक लिख दो।

जिस प्रकार निरयन लग्न सारिणी में सारिणी की शुद्धता की जाँच की थी उसी प्रकार यहाँ करो अर्थात् वृष के ० अंश के नीचे मेष लंकोदय ४–३८ मिलेगा। मिथुन के ० अंश के नीचे मेष से वृष तक लंकोदय का योग ९–३७ होता है वह मिलेगा। इसी प्रकार और भी आगे की राशियों के लंकोदय का योग मिलेगा। लंकोदय की राशियों का योग ऊपर बताया है उसी के अनुसार मिलान कर लेना।

निरयन दशम सारिणी नरसिंहपुर अक्षांश २२°–५७′ पलभा ५–५

अंश

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ध्रुवांक
मेष	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	० घड़ी
०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	९ पल
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	१६ वि०
वृष	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	०
१	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	९
	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	५८
मिथुन	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	०
२	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	२	२३	३३	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	१०
	२०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	४६
कर्क	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१४	१९	२०	२०	०
३	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	६	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	१०
	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	२२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	४६
सिंह	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	०
४	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	९
	०	५८	५६	४४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	५८
कन्या	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	०
५	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	९
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	१६
तुला	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	०
६	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	९
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	३८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	२२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	१६
वृश्चिक	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	०
७	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	९
	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	५८

धन	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	०
८	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	१०
	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	४६
मकर	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	०
९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	१०
	०	४६	३२	१०	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	२२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	४६
कुंभ	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	०
१०	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	९
	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	४०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	४	५८
मीन	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५७	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	६०
११	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३८	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	९
	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	३४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	१६

निरयन दशम सारिणी देखना

जैसे निरयन दशम सारिणी देखी जाती है ठीक उसी प्रकार इष्ट कालीन सायन सूर्य पर से इसे भी देखते हैं। परन्तु लग्न सारिणी में इष्ट का उपयोग होता हैं इस में नत का उपयोग होता है। पूर्व नत हो तो नत को प्राप्त सारिणी अंक से घटा देना और पश्चिम नत हो तो जोड़ देने से इष्ट युक्त सारिणी अंक आता है। नत का उपयोग न करना हो तो इष्ट में से दिनार्द्ध घटाकर दशम का इष्ट बना लेना चाहिए। सारिणी अंक में इस दशम के इष्ट को जोड़ कर इष्ट युक्त सारिणी अंक बना लेना चाहिए और शेष क्रिया निरयन लग्न सारिणी के अनुसार करके दशम निकाल लेना। इसी को स्पष्ट रूप से समझाते हैं :—

(१) इष्ट कालीन समय सूर्य की राशि अंश के नीचे का अंक = सारिणी अंक।

(२) सा. सूर्य को केवल कला विकला × सायन सूर्य की राशि का ध्रुवांक ÷ ६० = अनुपातिक ध्रुवांक पल।

(३) सारिणी अंक + दशम का इष्ट या नत (पूर्व नत हो तो घटाना) = इष्ट युक्त सारिणी अंक (यदि ६० से अधिक हो तो ६० घटा देना)

(४) इष्ट युक्त सारिणी अंक + अनुपातिक ध्रुवांक पल = इष्ट युक्त पूर्ण सारिणी अंक।

(५) इष्ट युक्त सारिणी के समीप का उस से जो कम अंक सारिणी में मिले वह अल्प कोष्टक अंक हुआ और उस के सीध में राशि अंश तो मिले वह सायन दशम के राशि अंश हुए।

(६) इष्ट अंतर = (इष्ट युक्त पूर्ण सारिणी अंक—अल्प कोष्टक)

(७) कोष्टक अंतर = (ऐष्य कोष्टक – अल्प कोष्टक) = ध्रुवांक

(८) अनुपातिक इष्ट कलादि = $\frac{\text{इष्ट अंतर} \times ६०}{\text{कोष्टक अंतर}}$ = अंतर पल आदि पिंड (एक जाति) बनाकर गुणा भाग करो।

(९) पूर्व प्राप्त दशम की राशि अंश + अनुपातिक कलादि = सायन दशम भाव।

उदाहरण

सायन सूर्य (रा) ११–२८°–२८′–४०″

	घ. प. वि.
इष्ट	१५–५१–४२॥
दिनार्द्ध	१४–५६–४२॥
शेष =	०–५५–० दशम इष्ट
दिनमान	२९–५३–२५
∴ दिनार्द्ध	१४–५६–४२॥

	घ. प. वि.
सूर्य (रा) ११–२८° = सारिणी अंक	५९–४१–२८
+ दशम का इष्ट =	०–५३– ०
इष्ट युक्त सारिणी अंक =	०–३६–२८

६० से अधिक होने से ६० घटा दिया।

मीन ध्रुवांक ६–१६
× सूर्य कलादि २८–४०

		१०	४०
	६	.०	
	७	२८	
४	१२		
४	२५	३८	४०

= अनुपातिक पल
४–२५–३८

इष्ट युक्त सारिणी अंक = ०–३६–२८
+ अनुपातिक पल = ४–२५–३८

∴ इष्ट युक्तपूर्ण सारिणी अंक } = ०–४०–५३–३८
= ०–४०–५३–३८

—अल्प कोष्टक = ०–३७–४ = मेष ४० दशम

इष्ट अंतर = ०–३–४६
= २२६ विपल

कोष्टक अंतर = ०–६–१६ मेष ध्रुवांक
= ५५६ विपल

$$\frac{\text{इष्ट अंतर } २२६ \times ६०}{\text{कोष्टक अंतर } ५५६} = \frac{१३७४०}{५५६}$$

= २४′–४२″

पूर्व प्राप्त मा. दशम मेष ४°
+ अनुपातिक कला = २४′–४२″
= सायन लग्न मेष ४°–२४′–४२″

रा
= ०–४°–२४′–४२″

घ. प. वि. अ.

उपरोक्त गणित में इष्ट अंतर ०–३–४६–३८ था। वहाँ ३८ अनुपल छोड़ कर गणित किया था तो दशम = ०–४°–२४′–४२″ आया था। यदि सूक्ष्म प्रकार से ही दशम निकलना है तो इस ३८ अनुपल को भी मत छोड़ो।

(रा above ०)

अब इष्ट अंतर ०–३–४६–३८, कोष्टक अंतर ३–४६ से अनुपातिक कला निकालते हैं

$$\frac{(३–४६–३८) \times ६०}{६–१६} = \frac{१३७७८ \times ६०}{३३३६०} = \frac{१३७७८}{५५६} = २४′–४६″$$

(सब के अनुपल बना लिये) ५५६

अल्प कोष्टक से प्राप्त
दशम राशि अंश = मेष ४°
+ अनुपातिक कला २४′–४६″

रा
= ०–४′–२४′–४६″ सायन दशम

इस में अयनांश घटा दो तो निरयन दशम भाव हो जायगा।

यह सायन दशम शुद्ध है ऊपर ३८ अनुपल छोड़ दिया था इस से ४″ का अंतर आ गया था।

```
५५६ ) ११७७८ ( २४′
      १११२
      ----
       २६५८
       २२२४
       ----
       ४३४ × ६०
५५६ ) २६०४० ( ४६″
      २२२४
      ----
       ३८००
       ३३३६
       ----
        ४६४
```

सायन दशम सारिणी नरसिंहपुर अक्षांश २२°–५७' पलभा ५–५

अंश

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ध्रुवांक घड़ी पल वि०
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	०
०	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	९
	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३८	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	५८
वृष	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	०
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३	१०
	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	४६
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	०
२	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	१०
	३८	३४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	४६
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२२	२३	२३	२३	२४	०
३	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	९
	३७	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	५३	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	१६	२४	२२	२०	१८	१६	५८
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	०
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३९	४५	९
	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	१६
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	०
५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	९
	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	१६
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	०
६	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	९
	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	४२	२२	२०	१८	६	५८
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	२४	४३	४३	४३	४३	०
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	४८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३	१०
	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	३६	२	४८	३४	२०	६	५२	४६

धन	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४"	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	०
८	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	१०
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	३४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	४६
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	०
९	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	९
	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	३८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	५८
कुंभ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	०
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	९
	१४	१२	१०	८	६	४	०	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	४६	५२	१६
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	०
११	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	९
	८	२४	४०	५६	१२	२८	४२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	१६

अयनांश युक्त सायन दशम सारिणी बनाना

इस प्रकार की सारिणी प्रायः प्रत्येक पंचांग में रहती है। जिस प्रकार का अंतर निरयन लग्न सारिणी और सायन लग्न सारिणी में है उसी प्रकार का अंतर यहाँ निरयन दशम सारिणी और सायन दशम सारिणी में है। अर्थात् दोनों में वे ही ध्रुवांक रहते हैं परन्तु निरयन में मेष के ० अंश के नीचे ० रख कर आगे ध्रुवांक जोड़ना आरंभ करते हैं। यहाँ सायन दशम सारिणी में अयनांश को १२ राशि में से घटाने से जो राशि अंश मिले उसके अनुसार ० रख कर आगे मेष का ध्रुवांक जोड़ना आरंभ करते हैं। जिस प्रकार निरयन दशम सारिणी की शुद्धता ० अंश के नीचे मिलान कर देखी थी वैसे इस में भी लंकोदय की घड़ी पल के योग के अनुसार ७ अंश के नीचे के अंक को मिलान कर सारिणी की शुद्धता जाँच कर लेनी चाहिए।

१२ राशि में से अयनांश २३–४१ घटाया तो ११–६°–१८′ हुआ अर्थात् मीन राशि का ६ अंश गत होकर सातवां अंश लग गया। इस से मीन के ७° के नीचे शून्य रखा और मीन के ८° के नीचे मेष का ध्रुवांक ०–९–१६ रखा और आगे वही ध्रुवांक २९° तक जोड़ते जाना। मेष के ६° तक वही मेष का ध्रुवांक जोड़ते जाना तो मेष के ७ अंश के नीचे मेष का लंकोदय ४–३८ घड़ा आ जायगा। आगे वृष का ध्रुवांक जोड़ना आरंभ होगा। इसी प्रकार आगे सब राशियों का ध्रुवांक जोड़ कर पूरी सारिणी बना लेना जिस प्रकार सायन लग्न सारिणी बनाई थी।

सायन दशम सारिणी देखने की रीति

इस सारिणी को देखने के लिये इष्ट कालीन निरयन सूर्य लिया जाता है। निरयन सूर्य के राशि अंश के नीचे जो सारिणी अंक मिले उस में दशम का इष्ट जोड़ दो। यदि नत हो तो पूर्व नत घटा दो या पश्चिम नत हो तो जोड़ दो तो इष्ट युक्त सारिणी अंक हो जायगा। इष्ट युक्त सारिणी अंक को सारिणी में खोजो अपने अंक से कुछ छोटा समीप का जो अंक मिले वह अल्प कोष्टक और उसके आगे का कोष्टक ऐष्य कोष्टक कहलाता है। अल्प कोष्टक के सामने निरयन दशम की राशि अंश प्राप्त होगी।

ऐष्य कोष्टक अंक और अल्प कोष्टक अंक का अंतर निकालो। यह अंतर वही अल्प कोष्टक का ध्रुवांक है जिसके जोड़ने से कोष्टक बना था = कोष्टक अंतर। इष्ट युक्त सारिणी अंक में से अल्प कोष्टक घटाना = इष्ट अंतर। फिर गणित से निकालो इतने कोष्टक अंतर में ६०′ (एक अंश) होता है तो इष्ट अंतर में कितना होगा ?

$\frac{\text{इष्ट अंतर} \times ६०}{\text{कोष्टक अंतर}}$ भाग देने के लिये दोनों के पल को एक पिंड (एक जात) बना लेना। जो उत्तर आयगा वह कला विकला होगा। अल्प कोष्टक से

प्राप्त राशि अंश में यह कला आदि जोड़ देना। उपरान्त निरयन सूर्य की जितनी कला विकला हो उसे और जोड़ देना तो निरयन दशम भाव स्पष्ट हो जायगा। इस में अयनांश का काम नहीं पड़ता। कई लोग गणित द्वारा भाव साधन न करके सारिणी से ही इसी रीति से भाव साधन करते हैं। इस रीति से दशम भाव का राशि अंश तो ठीक आ जाता है परन्तु कभी-कभी कला विकला में अंतर पड़ जाता है। इस कारण यदि सूक्ष्म दशम भाव साधन करना है तो निरयन दशम सारिणी से या गणित से दशम साधन करना चाहिए।

उदाहरण

घ. प. वि

इष्ट १५–५१–४२॥

दिनार्द्ध १४–५६–४२॥

= पश्चिम नत ०–५५–०

निरयन सूर्य ११–५°–४०′–४५″

रा घ. प. वि.

सूर्य ११–५° = ५९–५१–२८ सारिणी अंक

+ पश्चिम नत = ०–५५–०

इष्ट युक्त सारिणी अंक = ०–३६–२८

इसके समीप का अल्प कोष्टक = ०–२७–४८

इस से प्राप्त दशम की राशि अंश = मीन १०°

इष्ट युक्त सारिणी अंक = ०–३६–२८

– अल्प कोष्टक = ०–२७–४८ विकला

= इष्ट अंतर = ०–८–४० = ५२० विकला

अल्प कोष्टक का ध्रुवांक ०–९–१६ = ५५६ = कोष्टक अंतर

५५६) ३१२०० (५६′
२७८०
३४००
३३३६
६४ × ६०
५५६) ३८४० (६″
२७८०
६०

इष्ट अंतर

$$\frac{५२० \times ६०}{\text{कोष्टक अंतर } ५५६} = \frac{३१२००}{५५६} \text{ कला} = ५६'–६''$$

अनुपातिक इष्ट कला

अल्पकोष्टक का राशि अंश = मीन १०°

+ अनुपातिक इष्ट कला ५६′–६″

= मीन १०°–५६′–६″

= ११–१०°–५६′–६″

+ निरयन सूर्य की कला विकला	+ ४०–४५
	११–११–३६–५१

= निरयन दशम =

रा

∴ निरयन दशम भाव –११–११°–३६′–५१″

—: ० :—

अध्याय १६

नाक्षत्रकाल Side real time और दशम काविषु वांश

अंग्रेजी पद्धति से लग्न साधन की आवश्यकता होती है। यह समय नक्षत्रों की गति से सम्वन्ध रखता है। नाक्षत्र दिन २३ घंटा ५६ मिनट का होता है अर्थात् सूर्य काल से (सावन दिन से) प्रायः ४ मिनट कम होता है। स्थिर ध्रुव तारा के आस-पास तारों का एक बार परिक्रमा करने में २३ घं० ५६ मि० लगता है। इस कारण २४ घंटा में ४ मिनट या १ घंटा में १० सेकन्ड का अंतर पड़ता है।

लगभग सायन मेष संक्रांति (२३ मार्च) को नाक्षत्रकाल शून्य रहता है। उसके उपरान्त प्रतिदिन औसत ४ मिनट के हिसाब से नाक्षत्र काल बढ़ता है। परन्तु ध्यान रहे कि ठीक ४ मिनट का अन्तर नहीं पड़ता कभी चार मिनट से कुछ कम या कभी कुछ अधिक क्रमानुसार घटते बढ़ते रहता है। परन्तु सबका मध्यम मान (औसत) ४ मिनट का निकलता है इस कारण उपयोग के लिये ४ मिनट लिया है। ठीक नाक्षत्रकाल गणित से निकाला हुआ प्रत्येक वर्ष के ऐफेमरी में दिया रहता है। यदि इष्ट वर्ष की ऐफेमरी से न मिले तो किसी वर्ष के ऐफेमरी को देखो तो लगभग वही नाक्षत्रकाल उसमें मिलेगा। केवल २–४ मिनट का अंतर कभी पड़ जाता है।

ऐफेमरी (दैनिक ग्रह का अंग्रेजीपंचांग) में प्रतिदिन का मध्याह्न कालीन नाक्षत्रकाल दिया रहता है। उस नाक्षत्र काल पर से इष्ट काल का नाक्षत्रकाल बनाया जाता है और उसी पर से किसी भी स्थान के स्थानिक जन्म समय का नाक्षत्रकाल निकाल सकते हैं।

नाक्षत्र काल की गति

पृथ्वी २४ घंटा में एक बार अपने आस पास घूम लेती है, उतने सयय में सूर्य १° चलता है। जब सूर्य राशि के किसी विशेष स्थान में दशम बिन्दु पर एक बार आकर पुनः उस स्थान पर आ जाता है उतने समय में पृथ्वी ३६६ परिभ्रमण करती है। अर्थात् ३६५ दिन में १ दिन = २४ घंटा का अंतर पड़ जाता है।

स्थूल मान से गति
१२ मास में = २४ घंटा
१ मास ,, = २ घंटा
१ दिन ,, = ४ मिनट
१ घंटा ,, = $\frac{१}{६}$ मिनट = १० सेकन्ड

इसी को गणित से सूक्ष्म रूप से गति इस प्रकार निकालेंगे :—
३६५ दिन में = २४ घंटा
= २४×६० मिनट = १४४० मिनट
= १४४०×६० सेकन्ड = ८६४०० सेकन्ड हैं।

३६५ दिन में ८६४०० सेकन्ड, तो १ दिन में $\frac{८६४००}{३६५}$ = २३६·७१२ सेकन्ड
= ३-९४५ मिनट
= लगभग ४ मिनट

३६५) ८६४०० (२३६-७१२ सेकन्ड
७३०
———
१३४०
१०९५
———
२४५०
२१९०
———
२६००
२५५५
———
४५०
३६५
———
८५०
७३०
———
१२०

सेकन्ड
६०) २३६-७१२ (३-९४५ मिनट
१८०
———
५६७
५४०
———
२७१
२४०
———
२७१
२४०
———
३१०
३००
———
१०

= मिनट-सेकन्ड
३-५६·५६

१ दिन (२४ घंटा) में = २३६·७१२ सेकन्ड

तो १ घंटा में = $\frac{२३६·७१२}{२४}$ = ९·८६३ सेकन्ड

= लगभग १० से०

```
२४)२३६·७१२(९·८६३
   २१६          सेंकण्ड
   ---
    २०७
    १९२
    ---
     १५१
     १४४
     ---
       ७२
       ७२
       --
        ०
```

१ घंटा में = ९·८६३ सेकन्ड

तो १ मिनट = $\frac{९·८६३}{६०}$ = ·१६४ सेकन्ड

```
६०)९·८६३(·१६४
    ६०     सेकन्ड
    ---
    ३८६
    ३६०
    ---
     २६३
     २४०
     ---
      २३
```

नाक्षत्रकाल की सूक्ष्म गति इस प्रकार हुई:—

१ दिन में = २३६·७१२ सेकन्ड = ३·९४५ मि०

= ३ मिनट ५६·५६ सेकन्ड = लगभग ४ मिनट।

१ घंटा में = ९·८६३ सेकन्ड = लगभग १० से०।

१ मिनट में = ०·१६४ सेकन्ड = लगभग $\frac{१}{६}$ से०।

इष्टकाल का नाक्षत्र काल निकालना

अंग्रेजी पंचांगों मे नाक्षत्रकाल मध्याह्न के समय का घंटा मिनट में दिया रहता है और वह ० से २४ घंटा तक में बताया जाता है। इसी पर से इष्ट काल का नाक्षत्र काल बनाया जाता है।

इष्टकाल का नाक्षत्र काल निकालने की यह रीति है :—

१— इष्टकाल घंटा मिनट में लो। यह घंटा मिनट स्थानिक समय का होगा। अर्थात् स्टेन्डर्ड समय या ग्रीनविच समय हो तो उस समय को स्थानिक समय में परिवर्तन कर लेना चाहिए। उपरांत यह देखो कि वह समय मध्याह्न काल (१२ बजे) के पहिले का है या बाद का।

२ (अ) यदि मध्याह्न के पहिले का इष्ट काल हो तो मध्याह्न काल अर्थात् १२ बजे से वह समय घटा देना जो शेष बचे वह मध्याह्न का अन्तर हुआ।

(ब) इस मध्याह्न के अंतर का नाक्षत्र काल उपरोक्त रीति से निकाल कर मध्याह्न अंतर में जोड़ देना चाहिए।

(क) उस दिन मध्याह्न का जो नाक्षत्रकाल पंचांग में दिया हो उसमें से उपरोक्त नाक्षत्रकाल युक्त मध्याह्न अन्तर घटा देना चाहिए। यदि न घटे तो ऊपर की संख्या में २४ घंटा जोड़ कर घटा लेना। यदि घटाने या जोड़ने में २४ घंटा से अधिक नाक्षत्र काल आये तो उसमें से २४ घंटा घटाकर शेष नाक्षत्रकाल लेना। जैसे दिनांक १० अगस्त १९४४ ई० को ११$\frac{१}{२}$ बजे दिन का नाक्षत्र काल

घं० मि० से०

निकालना है। उस दिन पंचांग में मध्याह्न का नाक्षत्र काल ९–१०–३४ दिया है।

	घंटा० मि० से०
मध्याह्न	१२– ०–०
– इष्ट	– ११–३०–०
मध्याह्न अंतर	= ०–३०–०

इस मध्याह्न अंतर ३० मिनट का ना० काल चाहिए। १ घंटा में १० से० तो ३० मि० = $\frac{1}{2}$ घंटा में = ५ से० हुआ।

अंतर का ना० काल = + ५

ना० काल युक्त मध्याह्न अंतर } = ०–३०–५

घं० मि० से०

उस दिन के मध्याह्न का ना० काल = ९–१०–३४

ना० काल युक्त मध्याह्न अंतर = ०–३०– ५ घटाया

शेष = ८–४०–२९ (इष्ट मध्याह्न के पहिले का है)

नाक्षत्र काल

घं० मि० से०

∴ इष्ट काल का नाक्षत्र काल = ८–४०–२९

३— यदि जन्म मध्याह्न के उपरांत का हो तो मध्याह्न के उपरांत जितने घंटा अधिक हो उस समय का नाक्षत्र काल निकाल कर उन अधिक घंटों में जोड़कर इस ना० काल युक्त मध्याह्न अंतर को उस दिन के मध्याह्न के ना० काल में जोड़ देना। इष्टकाल का नाक्षत्र काल निकल आयगा।

(१) जैसे—दिनांक १८ सितम्बर १९४४ ई० को ५ बजे संध्या का नाक्षत्र काल

घ. मि. से.

निकालना है। उस दिन मध्याह्न का ना० काल ११–४८–१९ पंचांग में दिया।

जन्म ५ बजे संध्या=१७ बजे। १२ बजे मध्याह्न है। अंतर = (१७ – १२) = ५ घंटा

५ घंटा ना० काल की गति

१ घंटा में १० से० तो ५ घंटा में=५ × १०=५० से०

	घ. मि. से.
मध्याह्न अंतर	५–०–०
+ अंतर का ना०का०	=०–०–५०
योग	=५–०–५०
ना०का० युक्त अंतर	

घ. मि. से.

मध्याह्न का नाक्षत्र काल ११–४८–१९

+ ना० का० युक्त मध्याह्न अंतर=५–०–५० जोड़ा

योग=१६–४९–९=ना० का०

घ. मि. से.

∴ इष्टकाल का नाक्षत्र काल = १६–४९–९

(२) मान लो ८ मार्च १९४४ ई० को १०–४० बजे रात्रि का ना० काल निकालना है। उस दिन मध्याह्न ना० का० २३–३–२८ घ. मि. से. है मध्याह्न के बाद का इष्ट ११–४० है। मध्याह्न अंतर ११–४० हुआ।

अंतर का ना० का०

मि. से.

११ घंटा = ११ × १० = ११० से० = १–५०

४० मि० = $\frac{४० \times १}{६}$ = $\frac{२०}{३}$ = ६$\frac{२}{३}$ से० = ०–६$\frac{२}{३}$

योग – १–५६$\frac{२}{३}$

घ. मि. से.

मध्याह्न अंरर ११–४०–०

+ अंतर का ना०का० = ०–१–५६$\frac{२}{३}$

योग = ११–४२–५६$\frac{२}{३}$

मध्याह्न का ना० काल – = २३–३–२८

+ ना०का० युक्त मध्याह्न अंतर = ११–४१–५६$\frac{२}{३}$

योग = ३४–४५–२४$\frac{२}{३}$

२४ से अधिक होने से घटाया – २४

= १०–४५–२४$\frac{२}{३}$ ना० का०

घ. मि. से.

∴ इष्ट काल का ना०काल = १०–४५–२४$\frac{२}{३}$

४—इस में यह बात और ध्यान देने की है कि अंग्रेजी पंचांग में जो मध्याह्न का ना० का० दिया रहता है उस को अपने स्थान का बना लेना चाहिए। इस के लिये अपने स्थान और पंचांग के स्थान के देशान्तर का अंतर करना और उस अंतर का ना० का० निकाल लेना। अपना स्थान पूर्व में हो तो उस अंतर के ना० का० को मध्याह्न के ना० का० में जोड़ देना यदि पश्चिम हो तो घटा देना तब अपने स्थान का मध्याह्न का नाक्षत्र काल बन जाता है।

(१) उदाहरण

दिनांक १८ जुलाई १९२१ ई० स्थान नरसिंहपुर में जन्म ११ बजे दिन (स्थानिक समय) में हुआ। उस दिन ग्रीनविच की ऐफेमरी में मध्याह्न का ना० का०
घ. मि. से.
७–४३–० दिया है।

घ. मि. से.

नरसिंहपुर देशान्तर ७९°–११′ पूर्व = $\frac{७९–११}{१५}$ = + ५–१६–४४ ग्रीनविच से

पूर्व होने से +

मध्याह्न १२–०–०	अंतर का ना० का०	देशान्तर संस्कार
जन्म –११–०–०	१ घंटा = १० से०	घ. मि. से. घ. मि.
मध्याह्न अंतर =१–०–०		५–१६–४४ = ५–१७
+ अंतर का ना०का०=०–०–१०		५ घंटा=५ × १०=५०=५०से.
योग = १–०–१०		१७ मि०= $\frac{१७ \times १}{६}$ = $\frac{१७}{६}$=२$\frac{५}{६}$ से०
		=५२$\frac{५}{६}$ से०

घ. मि. से.

मध्याह्न का ना० काल = ७–४३–०

देशान्तर पूर्व होने से + = ०–०–५२$\frac{५}{६}$

योग = ७–४३–५२$\frac{५}{६}$

– ना०का० युक्त मध्याह्न अंतर = १–०–१० घटाया (मध्याह्न के पहिले का होने से)

शेष ६–४३–४२$\frac{५}{६}$ = ना० का०

घ. मि. से.

∴ इष्ट काल का ना०का० = ६–४३–४२$\frac{५}{६}$

(२) उदाहरण

दिनांक २२ जून १९४४ ई० नरसिंह पुर में १० बजे जन्म उज्जैन की ऐफेमरी में उस दिन मध्याह्न का ना० का० ६–१–१२ दिया है।

उज्जैन ७५°–४३′ पूर्व

नरसिंहपुर ७२–११ पूर्व

अंतर + ३–२८

उज्जैन से अधिक होने से नरसिंह पुर पूर्व में हुआ +

अंतर ३°–२८′

×४

१३–५२

मि० से०

अंतर = १३–५२ +

मि० से०

अंतर १३–५२ = १४ मिनट का ना० का०

१४ मि० = $\frac{१४ \times १}{६}$ = $\frac{७}{३}$ = २$\frac{१}{३}$ सेकंड +

मध्याह्न घं० मि० से०

१२–०–०

–इष्ट १०–०–०

मध्याह्न अंतर= २–०–०

म० अंतर का ना० का ०–०–२०

ना. का. युक्त म. अंतर } = २–०–२०

घं. मि. से.

मध्याह्न का ना० का० = ६–१–२२

+ देशान्तर का ना० का० = ०–०–२$\frac{१}{३}$ जोड़ा (पूर्व होने से)

योग = ६–१–२४$\frac{१}{३}$

$$६–१–२४\frac{१}{३}$$

— ना.का.युक्त मध्याह्न अन्तर=२–०–२० घटाया (मध्याह्न के पहिले का होने से)

शेष = ४–१–४$\frac{१}{३}$ = ना० का०

घं. मि. से.

∴ इष्ट काल का ना० का० = ४–१–४$\frac{१}{२}$

(३) दिनांक १३ अप्रैल १९१५ बम्बई जन्म २ बजे दिन (स्थानिक समय) उस दिन ग्रीनविच का ना० काल मध्याह्न का १–१७–३८ है। जन्म का ना० का० निकालना है।

मध्याह्न के उपरांत २ बजे जन्म है। मध्याह्न अंतर २ घंटा हुआ

२ घंटा का ना० का० = २ × १० = २० सेकंड हुआ

घं. मि. से.	
मध्याह्न अंतर	= २–०–०
अंतर का ना० का०	= ०–०–२०
ना. का. युक्त अंतर	= २–०–२०

मध्याह्न के बाद का होने से यह +

बम्बई देशान्तर ग्रीनविच से

	घं. मि. से.
मध्याह्न का ना० का०	१–१७–३८
+ देशान्तर का ना० का०	= ०– ०–४८$\frac{२}{३}$
योग	= १–१८–२६$\frac{२}{३}$
+ ना० का० युक्त म० अंतर	= २–०–२०
योग	= ३–१८–४६$\frac{२}{३}$

∴ इष्ट कालीन ना० का० · ३–१८–४६$\frac{२}{३}$

घं. मि. से.

७२°–५४′ पूर्व=$\frac{७२°–५४′}{१५}$ = ४–५१–३६

घं. मि. सें. घं. मि. =

४–५१–३६=४–५२ का ना० काल

४ घंटा = ४ × १० = ४० से०

५२ मि.= $\frac{५२ \times १}{६} = \frac{२६}{३}$ = ८$\frac{२}{३}$ से०

४८$\frac{२}{३}$ से. +

पूर्व होने से +

नाक्षत्र काल से दशम का विषुवांश बनाना

R. A. M. C. at Birth = Right ascossion of ask in meridian = R. A. of M. C = mean time of conjection in Right Ascession.

नाक्षत्रकाल × १५ दशम का विषुवांश = विषुव काल = नाक्षत्रकालांश। ना० का० जो घंटा में दिया रहता है उस के अंश बना लो तो दशम का विषुवांश हो जाता है। जिस प्रकार देशान्तर घंटे के अंश बनाये जाते हैं उसी प्रकार ना० का० घंटा मिनट के अंश बना लेना चाहिए। यही नक्षत्र कालांश या विषुवांश कहलाता है।

घंटा के अंश बनाना	घड़ी पल के अंश	अंश के घड़ी पल
१ घंटा = १५°	१ घड़ी = ६°	६° = १ घड़ी
४ मिनट = १°	१ पल = ६′	१° = १० पल
१ मिनट = १५′	१ विपल = ६″	१′ = १० विपल
१ सेकन्ड = १५″		६′ = १ पल
४ सेकन्ड = १′		१′ = $\frac{१}{६}$ विपल

उदाहरण

घ. मि. से.

(१) नाक्षत्र काल ६–४३–४२

६ घंटा = ६ × १५° = ९०° = ९०°–०′–०″

४३ मिनट = ४३ × १५′ = ६४५′ = १०–४५–०

४२ से० = ४२ × १५ = ६३० = १०–३०

योग = १००–५५–३०

∴ नाक्षत्र कालांश = १००°–५५′–३०″

घ. मि. से.

(२) ना० का० = ४–१–४

४ घंटा = ४ × १५° = ६०°–०′–०″

१ मि० = १ × १५′ = १५′ = ०–१५–०

४ से० = ४ × १५″ = ६०″ = ०–१–०

योग = ६०–१६–०

∴ नाक्षत्र कालांश = ६०°–१६′–०″

घ. मि. से.

(३) ना० का० = ३–१८–४६

३ घंटा = ३ × १५° = ४५° = ४५°–०′–०″

१८ मि० = १८ × १५ = २७०′ = ४–३०–०

४६ से० = ४६ × १५ = ६९० = ११–३०

योग = ४९–४१–३०

∴ नाक्षत्र कालांश = ४९°–४१′–३०″

नाक्षत्र काल से भाव साधन

नाक्षत्र काल का उपयोग अंग्रेजी पद्धति से भाव साधन में होता है। प्रत्येक अक्षांश के भाव साधन कोष्टक Table of Houses इंगलेंड आदि में बनाये गये हैं जिनकी एक प्रति पास रखने से भाव साधन सरलता से हो जाता है। ऐफेमरी वेचने वालों के पास ये भाव साधन कोष्टक मिलते हैं और कुछ अक्षांशों के चक्र तो ऐफेमरी में भी दिये रहते हैं।

गणित द्वारा पाश्चात्य पद्धति से भाव साधन करना बहुत क्लिष्ट है। नवीन विद्यार्थी को समझने में बहुत कठिनाई पड़ेगी इस कारण यहाँ नहीं दिया।

इस भाव साधन कोष्टक से जो भाव निकलते हैं वे सायन होते हैं। उन में से अयनांश घटा देने से निरयन भाव बन जाते हैं। यदि इच्छित अक्षांश का भाव साधन कोष्टक न मिल सके तो उस के समीप के अक्षांश के कोष्टक से भी काम चल सकता है।

इस भाव साधन कोष्टक में आरंभ में नाक्षत्र काल दिया रहता है। उपरांत १० भाव, ११ भाव, १२ भाव, लग्न, २ भाव और ३ भाव केवल दिये रहते हैं। इन में ६ राशि जोड़ देने से उन के सप्तम स्थान के भाव बन जाते हैं।

मि. से.

इस भाव साधन कोष्टक में ४–२० या किसी में ५ मिनट के लगभग अंतर के नाक्षत्र काल दिये रहते हैं। और उन के सामने उपरोक्त भाव की राशि अंश कला दी रहती है। इस सारिणी में परिवर्तन नहीं होता अर्थात् सदैव काल वही सारिणी उपयोगी होगी।

इस सारिणी से भाव साधन के लिये अपने ना० काल के समीप का ना० काल वहाँ खोजो और उस के आगे जो-जो भाव दियें हैं उन को लिख लो और उस पर से लग्न कुंडली बनालो। यदि और सूक्ष्म निकालना है तो आगे के ना० काल के सामने दिये भाव चक्र के अनुसार अंक लेकर उनका अंतर निकाल कर ना० काल के अंतर के अनुपात से अंशादि निकाल कर उसे पूर्व प्राप्त अंक में घटा बढ़ा दो।

जैसे तीसरा उदाहरण लो। जन्म स्थान बम्बई है जहाँ का अक्षांश १८°–५७′

घं. मि. से.

उत्तर है और इष्ट काल का ना० काल ३–१८–४६$\frac{२}{३}$ है। १८–५७ का भाव साधन कोष्टक उज्जैन के ऐफेमरी में मिल गया। उस में अपना ना० काल खोजा।

नाक्षत्र काल घंटा–मिनट	१० भाव	११	१२	लग्न	२	३
३–१५ =	वृष २१°-११′	मिथुन २२°	कर्क २२°	सिंह २१°-२५′	कन्या १९°	तुला १९°
३–२० =	,, २२–२५	,, २३°	,, २४°	,, २२–३४	,, २१°	,, २०
अंतर ०–५	१°–१४′	१′	२°	१°–९′	२°	१°

घं. मि. से.   घं. मि.

अपना ना० काल ३–१८–४६$\frac{२}{३}$ है। यहाँ समीप का ना० का० ३–२० है। इस कारण इस के सामने दिये भाव और उन की राशि अंश आदि ग्रहण करेंगे। यदि इस में भी बारीकी करना हैं तो २० में लगभग १ मिनट अपना ना० काल कम पड़ता है तो अंतर का पंचमांश अनुपात से निकाल कर और घटा देना।

लग्न कुण्डली

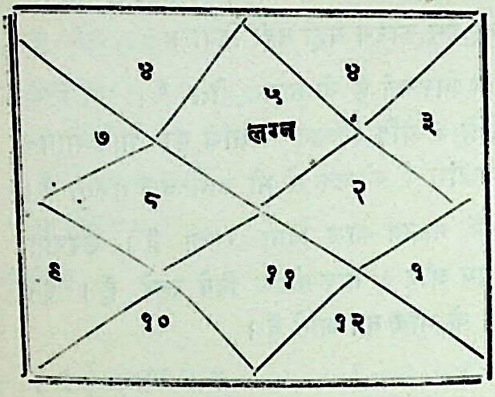

यहाँ लग्न सिंह है । कुंडली में सिंह लग्न स्थापित कर भाव कुंडली बना लेना । उपरांत इस में यथा स्थान में ग्रह भर दिये जाते हैं । पाश्चात्य पद्धति से इसी । प्रकार ना० काल पर से भाव निकाल कर लग्न कुंडली बना लेते हैं ।

सायन सूर्य पर से गणित द्वारा नाक्षत्र काल निकालना

इष्ट काल का सायन सूर्य बना लो । सायन सूर्य बनाने में यदि केतकर की रीति द्वारा अयनांश निकालो तो अच्छा है ।

मेष से आरंभ होकर सायन सूर्य की जितनी राशियाँ भुक्त हो चुकी हों उन सब के स्वोदय लेकर जोड़ डालो उपरांत सायन सूर्य के भुक्त पल निकाल कर और जोड़ देना । इस में अपना इष्ट काल भी जोड़ देना तो लग्न के भुक्त काल का नाक्षत्र काल (विषुव काल) निकल आयगा ।

इस में से ९०० पल घटा देने से दशम का ना० काल आ जाता है । जो दशम का ना० काल आता है वही मध्याह्न का स्थानिक नाक्षत्र काल है जो ऐफेमरी आदि में दिया रहता है । यदि ९०० पल घटाने से न घटे तो ऊपर की संख्या में ६० घड़ी के ३६०० पल जोड़ कर घटाना जो शेष रहे वही दशम का नाक्षत्र काल होगा । यदि शेष ३६०० पल से अधिक आवे तो ३६०० पल घटा कर शेष लेना ।

जो ना० काल पल में आता है उसके घंटा मिनट बना लो तो ना० काल घंटा मिनट में निकल आयगा । कहीं-कहीं बहुत सूक्ष्म अन्तर पड़ता है ।

भुक्त राशियों के स्वोदय जोड़ते समय ध्यान रहे कि केवल मेष से लेकर जिस राशि का सायन सूर्य हो उसी राशि के भुक्त काल तक जोड़ना । सारांश में : इष्ट काल तक जितना सूर्य होता है उसमें सम्पूर्ण राशियों के अंशों के भुक्त स्वोदय पल और इष्ट काल जोड़ने से जो योग होता है वह लग्न भुक्त काल का ना० काल होता है । इसमें से ९०० पल (१५ घड़ी या ६ घंटा) घटा देने से दशम का ना० काल होता है ।

(१) सायन सूर्य से ना० काल बनाने का उदाहरण

दिनांक १८ जुलाई १९२१ ई० नरसिंहपुर ११ बजे दिन का नाक्षत्र काल चाहिए । उस दिन ग्रीनविच ऐफेमरी में मध्याह्न का सूर्य कर्क २५°–१७′–१६″ गति ५७′–१४″ दिया है । इष्ट स्थल का बनाना है ।

घं० मि० से०

नरसिंहपुर का देशान्तर ५–१६–४४ है। जब ग्रीन विच में १२ बजे दिन था यहाँ १२ + ५–१६–४४ = १७–१६–४४ होता है। इष्ट ११ बजे दिन है। ५–१६–४४ घं० मि० से० को ११ घंटा में से घटाया तो ५–४३–१६ रहा।

अर्थात् जब यहाँ ११ बजा था तो ग्रीनविच में प्रातः ५–४३–१६ बजा होगा। मध्याह्न से इस समय का अंतर निकाल कर उस अंतर को गति निकाल कर सायन सूर्य में घटा देंगे तो इष्ट कालीन सूर्य बन जायगा।

	घं० मि० सें०
मध्याह्न	१२– ०–०
ग्रीनविच टाइम =	५–४३–१६
अंतर	६–१६–४४

घंटा मि० सें० = घ० पल० वि०
६–१६–४४ १५–४१–५०

घ० प० वि० घ० प०
१५–४१–५० = १५–४२ की गति लाग्रतमिक कोष्टक से निकालेंगे जो अध्याय ७ में दिया है।

गति ५७′–१४ = ०·०२०५०२२

घ० प०
चालन १५–४२ = ०·५८१७९०८

योग = ०·६०२२९३०

समीप का ०·६०२५४२८ = १४′–५९″ चालन ऋण

रा
सा० सूर्य = ३–२५°–१७′–१६″
चालन १४–५९
शेष = ३–२५ – २ –१७
इष्ट कालीन सायन सूर्य

कर्क भुक्तांश २५°–२′–१७″
३४० कर्क

८५०० | ६८० | ५७८०
+ १२ | + ९६ | = २०
८५१२ | ७७६
| = ५६

= ८५१२–५६–२०

जन्म ११ बजे दिन
सूर्य क्रांति उत्तर २१°-५′
२३° अक्षांश में २१° के
मि० से०
नीचे चर=३७-३० आया
६–०–०
–३७–३० उत्तर क्रांति
५–२२–३० होने से
सूर्योदय घटाया
इष्ट ११–०–०
–सुर्यादय ५–२२–३०
शेष = ५–३७–३०

मेष २२८ स्वोदय
वृष २५८ ,,
मिथुन ३०९ ,,
भुक्त कर्क २८३–४६
योग = १०७५–४६
+ इष्ट ८२८–४५
योग = १९०४–३१
– ९००
शेष १००४–३१

३०)८५१२–५६–२०(२८३
६०　कर्क भुक्त पल
२५१　२८३–४६
२४०
११२
९०
२२–५६–२०
×२
४५–५२–४०
=४६

५–३७–३०
–वेलान्तर　–६
शेष　५–३१–३०
इष्ट घं० मि० से०
५–३१–३०
घड़ी पल० वि०
=१३–४८–४५
पल – विपल
=८२८–४५ इष्ट

पल० वि०
१००४–३१
घ० प० वि०
=१६–४४–३१
घंटा मि० से०
=६–४१–४८
नाक्षत्र काल

दूसरा उदाहरण

दिनांक १३ अप्रैल १९१५ ई० १९° पर ९ बजे दिन को जन्म ।

इष्ट कालीन रवि ११–२८–३९–२४
+ अयनांश　०–१२–३९–३०
=सायन रवि=०–२१–१८–५४
मेष भुक्तांश २१°–१८′–५४″
×२३७ मेष स्वोदय

२३७	१८९६	९४८
४७४	२३७	११८५
४९७७	४२६६	१२७९८
+७४	+२१३	=१८
५०५१	४४७९	
	=३९	

=५०५१–३९–१८
३०) ५०५१–३९–१८ (१६८ पल
३०
२०५　मेष भुक्त पल
१८०　प. वि.
२५१　१६८–२३
२४०
११–३९–१८
×२
२३–१८–३६

जन्म　घ. मि. से.　प. वि.
९–०–० मेष भुक्त १६८–२३
सूर्योदय　५-४९-५० + इष्ट ४७५–०
इष्ट　३-११-०　योग=६४३२–३
वेलान्तर　–१　–९००
इष्ट घंटा= ३-१०-० यहाँ ९०० नहीं घटा
= घड़ी पल　तो ऊपर ३६०० पल
७–२५　जोड़कर घटाया
= ४७५ पल
३६००–०
+६२३–२३
योग　४२४३–२३
– ९००
शेष=३३४३–२३
प. वि.
३३४३–२३
=घड़ी प. वि.
५५–४३–२३
= घंटा मि. से.
२२–१७–२१
नाक्षत्र काल

अब इसी का ना० काल पूर्व बताई रीति से निकालते हैं।

मध्याह्न	१२–०–०	३ घंटे का ना० काल
– जन्म	६–०–०	३ घंटा = ३ × १० = ३० से०

मध्याह्न अंतर=३–०–०

+ अंतर का ना० का०–३०

भोग = ३–०–०

मध्याह्न का ना० काल		घ. मि. से.
(१३–४–१६१५ का)		१–१७–३८
ना० काल युक्त अंतर	–	३–०–३० घटाया
शेष		२२–१७–८
		घ. मि. से.

∴ इष्ट कालीन ना० का० २२–१७–८

नक्षत्र कालांश Right Assession या विषुवांश

नक्षत्र काल या विषुवकाल घंटे या पल में दिया हो तो उसके अंश बना लेना चाहिए।

१ पल या ४ मिनट का १ अंश होता है और १ घंटे में १५° होते हैं

१ घंटा = २॥ घड़ी = १५० पल = १५°
२४ घंटा = ६० घड़ी = ३६०० पल = ३६०°
} इस प्रकार विषुवकाल को १५ से गुणा करने पर विषुवांश हो जाता है।

विषुवांश को समझने के लिये चित्र संख्या १५ देखो।

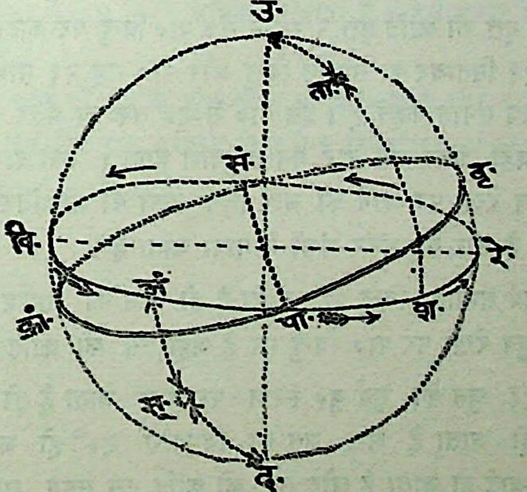

चित्र संख्या १५। विषुवांश

सू. = सूर्य
उ. = आकाश का उत्तर ध्रुव
द. = „ „ दक्षिण „
वि. रे. = विषुवत रेखा
क्रां. वृ. = क्रांति वृत्त रेखा
सं. प. = संपात विन्दु जहाँ
क्रांतिवृत्त और विषुव वृत्त
२ जगह एक दूसरे को काटते हैं
ता' = तारा का
ता. उ. = ध्रुव अंतर
ता. श = तारा की उत्तर क्रांति
पा. श. = विषुवांश = नक्षत्र कालांश
सू. द. = सूर्य का दक्षिण ध्रुव अंतर
सू. अं = „ की दक्षिण क्रांति
पा. श. रे. सं. वि. अं = सूर्य का विषुवांश

मान लो आकाश में एक तारा है जो उत्तर ध्रुव की ओर है। अब एक मध्याह्न रेखा उत्तर ध्रुव पर से उस तारा पर से होती हुई खींचो जो विषुव वृत्त पर मिल जाय। वह रेखा वि. रे. (विषुव रेखा) पर लम्ब रूप से मिलेगी। अर्थात् विषुव रेखा पर ९० अंश का कोण बनाती हुए श. विन्दु पर मिलेगी। यहाँ उ. ता. श. रेखा यह मध्याह्न रेखा का एक भाग हुआ। यह रेखा पूरे वृत्त का चतुर्थांश ९०° हुआ।

मान लो यह तारा उत्तर ध्रुव से उस के चौथाई दूरी पर है तो ९०° का चौथाई १५° हुआ। इस से ता० (तारा) और उ० (उत्तर ध्रुव) का अंतर १५° हुआ। यह ध्रुव अंतर Polardistance कहलाया उस का शेष बचा वह (९०°–१५°) = ४५° उत्तर क्रांति कहलाई क्योंकि यह तारा विषुव रेखा से उतने अंतर पर है।

विषुव वृत्त को क्रांति वृत्त २ स्थान सं० पा० विन्दु पर काटता है ये संपात विन्दु हैं। सं० यह २१ सितम्बर का सम्पात विन्दु और पा० यह २१ मार्च का सम्पात विन्दु हैं। इसी को मेष संपात कहते हैं। इस पा० से श० तक का अंतर विषुव वृत में नापा जायगा और वही अंतर उस तारे का विषुवांश होगा। इसी पा० संपात विन्दु, मेष सम्पात से विषुव रेखा पर आगे की ओर किसी तारा का जो अंतर नापा जाता है वही विषुवांश होता है और यह अंतर अंशों में नापा जाता है।

जब सूर्य सम्पात विन्दु पर रहता है तो उस का नाक्षत्र काल शून्य होता है क्योंकि वह विषुव रेखा पर पा० बिन्दु पर है जहाँ उस की क्रांति शून्य होती है।

जब २१ जून को सूर्य वृ० स्थान पर चला जाता है तो वह विषुव वृत्त पर से बहुत दूर हो जाता है और उस का विषुवांश ९०° हो जाता है अर्थात् उस के मार्ग का चौथाई हो जाता है और सूर्य की क्रांति उस समय सब से अधिक अर्थात् २३°–२८' होती है।

जब सूर्य सितम्बर के सम्पात बिन्दु सं० पर आता है तो उसका पूरा आधा चक्कर हो जाता है अर्थात् १८०° पर पहुँच जाता है। उस समय फिर विषुव वृत्त पर सूर्य चला जाता है तब भी सूर्य की क्रांति शून्य और विषुवांश १८०° हो जाता है।

मध्य जड़काले में जब सूर्य दक्षिण गोल में चला जाता है (यहाँ चित्र संख्या १५ में सू० स्थान पर सूर्य बताया है) अब एक मध्याह्न रेखा दक्षिण ध्रुव से सू० (सूर्य) पर से होते हुए सीधी लम्ब रूप से विषुव रेखा पर गिराते हुए मिलाई जाय तो वह ग्रं० स्थान पर मिलेगी। सू० और द० का अंतर ध्रुव अंतर कहलाया। मान लो ध्रुव अंतर ६०° है तो शेष ३०° सू० से ग्रं० तक का अंतर सूर्य की क्रांति होगी। और वह दक्षिण क्रांति होगी। अब सूर्य का विषुवांश नापने के लिये मेष सम्पात पा० बिन्दु से नापना आरंभ करो वहाँ से श० रे० सं० वि० स्थान पर से नापते हुए ग्रं० स्थान तक आने पर जो अंतर पा० से अं० तक का (घेर कर आया हुआ) होगा वह सूर्य का विषुवांश होगा। सम्पात बिन्दु पा० से ग्रं० तक सीधा नाप कर ३६०° में घटाने से वह अंतर निकल आयगा।

इस प्रकार चंद्र आदि सब ग्रहों की क्रांति और विषुव कालांश (नक्षत्र कालांश) नापा जाता है। पाश्चात्य पद्धति से इस नक्षत्र काल और नक्षत्र कालांश पर से गणित करते हैं। इस कारण उपयोगी समझ कर यहाँ समझा दिया गया है।

ऐफेमरी में जो मध्याह्न काल का दैनिक नाक्षत्र काल दिया रहता है वह दशम का विषुवांश है अर्थात् उस दिन मध्याह्न को उतना विषुव काल था। दिन भर में इष्ट

घ. मि.

के अनुसार विषुवकाल भी बढ़ते २, अर्थात् २३–५६ में दूसरे दिन मध्याह्न को शेष बचा २४ घंटा – (२३–५६) = ४ मिनट अधिक हो जाता है। इस प्रकार लगभग ४ मिनट विषुव काल बढ़ता है।

इसी विषुव काल को १५ से गुणा करने से विषुवांश के अंश बन जाते हैं। मेष सम्पात बिन्दु पर (जब दिन रात बराबर होता है। विषुवांश शून्य होता है और वसंत सम्पात बिन्दु पर १८०° हो जाता है।

—०—

अध्याय १७

रूपात्मक:भावबल तथा विंशोपका बल साधन

ग्रह जिस भाव में है उस का कितने विश्वा फल देगा यह जानने को विंशोपका बल साधन करना पड़ता है।

उस भाव के अंशादि के समान जो ग्रह होता है वह ग्रह उस भाव का पूर्ण फल देता है। यदि भाव के आगे पीछे ग्रह हो तो उस का अनुपातिक बल निकालना होता है। यदि संधि के अंशादि के समान ग्रह हो तो उस भाव पर उस ग्रह के आने का जो फल होता वह निष्फल जाता है। संधि से ग्रह कम हो तो विराम संधि संज्ञक भाव का फल देता है। यदि संधि से ग्रह अधिक हो तो प्रारंभिक संधि संज्ञक भाव का फल देता है। अर्थात् ग्रह आरंभ संधि से अधिक हो तो उस के पहिले भाव का फल देगा। यदि विराम संधि से अधिक ग्रह हो तो उसके आगे के भाव का फल देगा।

उस भाव का कितना फल होगा ? फल की वृद्धि हो रही है या हानि हो रही है यह भी गणित से निकालते हैं। फल बढ़ती पर होता है तो चय और घटती पर होता है तो क्षय फल कहते हैं। यह फल विश्वा में नापा जाता है। पूरे फल को २० विश्वा फल मान कर अनुपात से उस ग्रह का फल निकालते हैं।

विश्वा का विचार इस प्रकार होता है कि जब आरंभ संधि में ग्रह होता है तब उस भाव का फल शून्य होता है। जब आरंभ संधि से उस भाव तक ग्रह चलता है तब क्रमशः १ से लगातार बढ़ते-बढ़ते उस का फल भाव मध्य में आने पर २० विश्वा फल हो जाता है, इस प्रकार फल बढ़ता है। इसके उपरान्त फल घटना आरंभ होता है। अर्थात् उस भाव के मध्य से उस भाव को विराम संधि की ओर जब ग्रह बढ़ता है तो उस का फल २० विश्वा से घटते-घटते विराम संधि स्थान पर शून्य रह जाता है अर्थात् कुछ फल नहीं रहता। इसी से उस भाव पर ग्रह का विश्वाबल गणित से निकालना पड़ता है। इसी कारण चय-क्षय फल निकालते हैं। आरंभ संधि से चय फल अर्थात् भुक्त फल और भाव से विराम संधि तक क्षय फल अर्थात् भोग्य फल जानना।

गणित से जो चय-क्षय फल प्राप्त होगा उस में यदि चय फल हैं तो समझना कि उतना फल तो ग्रह का भुक्त हो चुका और उसे २० में से घटाने पर जो शेष रहे वह

भोग्य विश्वा फल होगा अर्थात् उतने विश्वा और फल भोगने को रहा। यदि क्षय फल है तो वह फल भोग्य इस प्रकार होगा कि वह भोग को शेष रहा। अर्थात् उस फल को २० में से घटा देने से जो शेष रहे वह भुक्त हो चुका।

रूपात्मक (चय-क्षयात्मक) भाव फल

चय = अच्छा फल	आरंभ संधि = भाव के पहिले की संधि
क्षय = बुरा फल	विराम संधि = ,, आगे ,, ,,

पहिले देखो ग्रह किस भाव और संधि के बीच है। ग्रह जिनके बीच में हो उनमें से एक तो वह भाव होगा जिसमें ग्रह है और दूसरा उस भाव की या तो आरंभ संधि होगी या विराम संधि होगी। इन दोनों में से (जिनके बीच में ग्रह है) देखो कि ग्रह से भाव बड़ा है तो चय फल और संधि बड़ी है तो क्षय फल होगा। या ग्रह से संधि कम है तो चय, संधि बड़ी है तो क्षय फल होगा।

ग्रह और संधि का अंतर निकाल कर, भाव और संधि का अंतर करने से जो प्राप्त हो उसका भाग, ग्रह संधि अंतर में करने से रूपात्मक भाव फल होगा।

ग्रह संधि अंतर } = जिस भाव में ग्रह हो उससे ग्रह की राशि यदि अल्प हो तो आरंभ संधि से, अधिक हो तो विराम संधि से, ग्रह घटाने पर जो प्राप्त हो।

भाव संधि अंतर } = जिस भाव और संधि के बीच ग्रह है उन दोनों का अंतर।

ग्रह संधि अंतर ÷ भाव संधि अंतर = चयक्षयात्मक या रूपात्मक भाव फल।

अंतर में जो अंश कलादि प्राप्त हो सबके विकला बना कर भाग देने से सुविधा होती है। भाग देने से जो शेष बचे उसमें ६० का गुणाकर फिर भाग देना तो रूप विरूप आदि प्राप्त होगा।

चय = भाव से ग्रह कम हो और भाव को आरंभ संधि से अधिक हो।

= (ग्रह − आरंभ संधि) = अंतर

क्षय = भाव से ग्रह अधिक हो और उस भाव की विराम संधि से कम हो।

= (विराम संधि−ग्रह) = अंतर

रूपात्मक भाव फल =

$$\frac{(\text{ग्रह}-\text{आरंभ संधि})}{(\text{भाव}-\text{आरंभ संधि})} = \text{चय या } \frac{(\text{विराम संधि}-\text{ग्रह})}{(\text{विराम संधि}-\text{भाव})} = \text{क्षय}$$

संधि अंतर = भाव साधन करते समय, भाव संधि बनाने के लिये जो क्षेपक जोड़ा गया था वही है।

विंशोपका बल या विश्वाबल

रूपात्मक भावफल × २०=विश्वावल = विश्वा, प्रति विश्वा और तत्प्रतिविश्वा

उपरोक्त चय-क्षयात्मक भाव फल में २० का गुणा करने से विंशोपका बल या विश्वाबल होता है।

या $\frac{\text{ग्रह संधि अंतर} \times २०}{\text{भाव संधि अंतर}}$ = विश्वाबल

(अंतर की विकला बनाकर गुणा भाग करना)

इससे प्रगट होता है कि उस भाव में कितने विश्वा अच्छा या बुरा फल होगा।

उदाहरण

ग्रह इन संधि और भाव के बीच में हैं

सूर्य ३-२७-२३-६

पंचम विराम संधि ३-१६-४४-३॥ } चय
षष्ठम भाव··· ४- १-१८-४६ }

सूर्य पंचम की वि० संधि के आगे और षष्ठम भाव से कम है तो ६ की आ० संधि से अंतर निकालेंगे।

सूर्य	३-२७-२३-६
६ को आरंभ संधि	३-१६-४४-३॥
ग्रह अंतर	०-१०-३९-२॥

षष्ठम भाव	४-१-१८-४६
६ की आरंभ संधि	३-१६-४४-३॥
भाव अंतर	= ०-१४-३४-४२॥

ग्रह संधि अन्तर

$\frac{०-१०-३९-२॥}{०-१४-३४-४२॥} = \frac{३८२४२॥ \text{ विकला}}{५२४८२॥ \text{ विकला}} = \frac{०-४३-४२}{\text{रूपात्मक भाव फल}}$

भाव संधि अन्तर

(०-४३-४३) × २० = १४-३४-२० चय फल। विंशोपका बल हुआ।

५२४८२) ३८२४२ (०
×६०
२२९४५२० (४३
२०९९२८
१९५२४०
१५७४४६
३७७९४ × ६०
५२४८२) २२६७६४० (४३
२०९९२८
१६८३६०
१५७४४६
१०९१४
= ०-४३-४३ रूपात्मक भावबल

रूपात्मक भाव बल
०-४३-४३
× २०

	१४	२०
१४	२०	
०		
१४	३४	२०

विश्वा-प्र०-तत्०
= १४-३४-२०
चय फल
विंशोपका बल

यहाँ सूर्य से आरंभ संधि घटाई गयी थी। आरंभ संधि घट गई तो चय फल हुआ। या ग्रह से भाव बड़ा है तो चय फल हुआ।

६० तत्प्रति विश्वा = १ प्रति विश्वा

६० प्रति विश्वा = १ विश्वा विश्व प्रति० तत्०

= सूर्य का रूपात्मक भाव बल ०–४३–४३

,, विंशोपका बल १४–३४–२० चय फल

(२) चंद्र का रूपात्मक भाव बल और विंशोपका बल साधन।

चंद्र ८–२०–५०–३५ है। एकादश भाव ९–२–९–२१ से कम है। इस कारण एकादश भाव की आरंभ संधि ८–१७–३४–८॥ को चंद्र से घटाया तो चय फल हुआ।

ग्रह अंतर	रा	भाव संधि अंतर	
चंद्र	८–२०°–५५′–३५″	एकादश भाव	९–२–९–२१
११ की आ. संधि	८–१७–३४–३८	,, आ. संधि	८–१७–३४–३८॥
= ग्रह अंतर	०–३ –२०–५७	भाव अंतर =	०–१४–३४–४२॥
	= १२०५७″		= ५२४८२″

ग्रह अंतर १२०५७ / भाव अंतर ५२४८२ = ०–१३–४७२ चय फल = चंद्र का रूपात्मक भाव बल

०–१३–४७–२	५२४८२) १२०५७ (०
×२०	×६०
०–४०	५२४८२) ७२३४२० (१३
१५–४०	५२४८२
४–२०	१९८६००
०	१५७४४६
४–३५–४०–४०	४११५४ × ६०
विंशोपका बल	५२४८२) २४६९२४० (४७
विश्वा–प्र०–त०	२०९९२८
४-३५–४०चय	३६९९६०
यहाँ आरंभ संधि से ग्रह अधिक है	३६७३७४
अर्थात् ग्रह से ११ भाव की आरंभ संधि घट गई	२८६ × ६०
तो चय फल हुआ (संधि से भाव बड़ा होने	५२४८२) १५५१६० (२
चय फल हुआ।)	१०४९६४
	५०१९६

(४) मंगल का रूपात्मक भाव बल और विंशोपका बल

मंगल १–१६–२७–५८ है यह तीसरे भाव १–२–९–२१ और तीसरे भाव

की विराम संधि १–३७–३४–३८॥ के बीच है और तीसरे भाव की विराम संधि से कम है इस कारण तृतीय विराम संधि से ग्रह घटाना पड़ेगा और वह क्षय फल होगा।

ग्रह अंतर

रा
तृ० वि० संधि १–३७°–३४′–१८″
मंगल १–१६–२७–५८
ग्रह अंतर = ०– १ – ६–४०
= ४०००″

भाव अंतर

रा
तृ० वि० सं० १–१७°–३४′–३८″
तृ० भाव १– २ – ९ –२१
भाव अंतर = ०–१५–२५–१७॥
= ५५५१७″

ग्रह अंतर ४००० / भाव अंतर ५५५१७ = ०–४–१९–२२ क्षय रूपात्मक भाव फल

०–४–१९–२२
× २०
७–२०
६–२०
१–२०
०
१–२६–२७–२०

विंशोपका वल वि० प्र० तत्
= विंशोपकावल १–२६–२७

५५५१७)४०००(०
× ६०
५५५१७)२४००००(४
२२२०६८
१७९३२ × ६०
५५५१७)१०७५९२०(१९
५५५१७
५२०७५०
४९९६५३
२१०९६ × ६०
५५७१७)१२६५८२०(२२
१११०३४
१५५४८०
१११०३४
४४४४६

तृतीय भाव से ग्रह अधिक है इस कारण क्षय फल हुआ यः ग्रह की अपेक्षा संधि अधिक है या भाव से संधि अधिक है तो क्षय फल हुआ।

(४) बुध का रूपात्मक भाव फल और विंशोपका बल

बुध ३-१३-०-३५ है। यह पंचम भाव ३-२-९-११ और पंचम भाव की विराम संधि के बीच है। यहाँ ग्रह पंचम भाग से अधिक है और पंचम विराम संधि से कम है। अर्थात् भाव से संधि अधिक है तो क्षय फल हुआ। यहाँ संधि से ग्रह घटाना पड़ेगा।

रा
पंचम वि० संधि ३–१६°–४४′–३″
बुध ३–१३ – ० –३५
ग्रह अंतर = ०– ३ –४३ –२८
= १३४०८″

पंचम वि० संधि ३–१६°–४४′–३″
पंचम भाव ३– २ – ९ –२१
भाव अंतर = ०–१४ –३४ –४२
= ५२४८२

ग्रह संधि अंतर १३४०८ / भाव संधि अंतर ५२४८२ = ०--१५--१९--४३ क्षय

५२४८२)१३४०८(०
×६०

रूपात्मक भाव फल

५२४८२)८०४४८०(१५
५२४८२
२७९९६०
२६२४१०
१७२५० × ६०
५२४८२)१०३५०००(१९
५२४८२
५१०१८०
४७२३३८
३७८४१ × ६०
५२४८२)२२७०५२०(४३
२०९९२८
१७१२४०
१५७४४६
१३७९४

०--१५--१९--४३
× २०
१४--२०
६--२०
५--०
०
५--६--३४--२०

विंशोपका बल

वि० प्र० त०

विंशोपकाबल ५--६--३४

(६) गुरु का रूपात्मक भाव फल और विश्वाबल ।

गुरु ८--१८°--४४'--५६" है यह दशम विराम संधि ८--१७--३४--३८॥ और एकादश भाव ९--२--९--२१ के बीच है। यहाँ भाव से ग्रह कम है या संधि से ग्रह अधिक है या संधि से भाव अधिक है इस कारण चय फल हुआ। यहाँ एकादश भाव से ग्रह कम है और एकादश की आरंभ संधि से अधिक है इस कारण ग्रह संधि अंतर निकालने के लिये आरंभ को ग्रह से घटाना पड़ेगा।

गुरु	८--१८--४४--५६
ऐ० आ० संधि	८--१७--३४--३८॥
ग्रह संधि अंतर	= ०-- १--१०--१७॥
	= ४२१७"

एकादश भाव	९--२--९--२१
ऐ० आ० संधि	८--१७--३४--३८॥
	०--१४--३४--४२॥
भाव संधि अंतर	= ५२४८२"

$$\frac{\text{ग्रह अंतर ४२१७}}{\text{भाव अंतर ५२४८२}} = ०-४-४९-१५ \text{ चय रूपात्मक भाव फल}$$

```
५२४८२ ) ४२१७ ( ०
         ×६०
५२४८२ ) २५३०२० ( ४
        २०९९२८
        ४३०९२×६०
५२४८२ ) २५८५५२० ( ४९
        २०९९२८
        ४८६२४०
        ४७२३३८
        १३९०२×६०
५२४८२ ) ८३४१२० ( १५
        ५२४८२
        ३०९३००
        २६२४१०
        ४६८९०
```

```
०-४-४९-१५
       ×२०
      ५-०
  १६-२०
१-२०
०
१-३६-२५-०
```

विंशोपका बल
वि. प्र. तत्
= १-३६-२५

(६) शुक्र का रूपात्मक भाव फल और विंशोपका बल

शुक्र २-१७-१४-५९ है यह चतुर्थ भाव २-२-५९-५६ से अधिक और चतुर्थ विराम संधि २-१७-३४-३८॥ से कम है। इस कारण विराम संधि से ग्रह घटाना पड़ेगा और यह क्षय फल होगा।

रा	
चतुर्थ वि० संधि २-१७°-३४′-३८॥″	चतुर्थ वि० संधि २-१७-३४-३८॥
शुक्र ग्रह २-१७-१४-५९	चतुर्थ भाव २-२-५९-५६
ग्रह संधि अंतर = ०-०-१९-३९	= भाव संधि अंतर = ०-१४-३४-४२॥
= ११७९″	= ५२४८२″

$$\frac{\text{ग्रह अंतर ११७९}}{\text{भाव अंतर ५२४८२}} = ०-१-२०-५२ \text{ क्षय रूपात्मक भाव, फल}$$

```
५२४८२ ) ११७९ ( ०
         ×६०
५२४८२ ) ७०७४० ( १
        ५२४८२
        १८२५८×६०
५२४८२ ) १०९५४८० ( २०
        १०४९६४
        ४५८४०×६०
५२४८२ ) २७५०४०० ( ५२
        २६२४१०
        १२६३००
        १०४९६४
        २१३३६
```

```
०-१-२०-५२
       ×२०
     १७-२०
   ६-४०
०-२०
०
०-२६-५७-२०
```

विंशोपका बल
= ०-२६-५७

(७) शनि का रूपात्मक भाव फल और विंशोपका बल

शनि १–२०–३०–१० है। यह चतुर्थ भाव २–२–५९–५६ और चतुर्थ आरंभ संधि १–१७–३४–३८॥ से अधिक है। इस कारण ग्रह से संधि घटानी पड़ेगी और चय फल होगा।

	रा			
शनि	१–२०°–३०′–१०″	चतुर्थ		२–२–५९–५६
चतुर्थ आ० सं०	१–१७–३४–३८॥	चतुर्थ वि० सं०		१–१७–३४–३८॥
ग्रह संधि अंतर	= ०–२–५५–३१॥	भाव संधि अंतर	=	०–१५–२५–१७॥
	= १०५३१″			= ५५५१७″

ग्रह अंतर १०५३१ / भाव अंतर ५५५१७ = ०–११–२२–५२ चय रूपात्मक भाव फल

```
५५५१७ ) १०५३१ ( ०
        × ६०
५५५१७ ) ६३१८६० ( ११
        ५५५१७
        ७६६९०
        ५५५१७
        २११७३ × ६०
५५५१७ ) १२७०३८० ( २२
        १११०३४
        १६००४०
        १११०३४
        ४९००६ × ६०
५५५१७ ) २९४०३६० ( ५२
        २७७५८५
        १६४५१०
        १११०३४
        ५३४७६
```

```
०–११–२२–५२
        × २०
     १७–२०
    ७–२०
 ३–४०
 ०
= ३–४७–३७–२०
```

विंशोपका बल

= ३–४७–३७

(८) राहु का रूपात्मक भाव फल और विंशोपका बल।

राहु ११–२–३८–३१ है। लग्न की वि-संधि ११–१५–५३–२८॥ से कम है और लग्न ११–०–२८–११ से अधिक है इस से लग्न की वि. संधि से ग्रह घटाना होगा। विराम संधि से घटा है इस कारण क्षय फल होगा।

रा

लग्न वि. सं. ११–१५°–५३′–२८″

राहु ११– २ –३८ –३१

ग्रह संधि अंतर=०–१३–१४ –५७

= ४७६९७″

लग्न वि.सं.

११–१५–५३–२८॥

लग्न ११–० –२५–१७

भाव संधि अंतर=०–१५–२५–१७

= ५५५१७″

ग्रह अंतर ४७६९७ / भावअंतर ५५५१७ = ०–५१–३२–५४ क्षय

रूपात्मक भाव फल

०–५१–३२–५४

× २०

१८–०

१०–४०

१७–०

०

= १७–१०–५८–०

विंशोपका बल

= १७–१०–५८

५५५१७) ४७६९७ (०

× ६०

,,) २८६१८२० (५१

२७७५८५

८५९७०

५५५१७

३०४५३ × ६०

५५५१७) १८२७१८० (३२

१६६५५१

१६१६७०

१११०३४

५०६३६

× ६०

५५५१७) ३०३८१६० (५४

२७७५८५

२६२३१०

२२२०६८

४०२४२

(६) केतु का रूपात्मक भाव फल और विंशोपका बल।

यह राहु के समान ही होता है। यहाँ केतु ५–२–३८–११ है। सप्तम वि. सं. से कम है और ५–०–२८–११ से सप्तम भाव (५–१५–५३–२८॥) अधिक है। इस से सप्तम वि. सं. से यह ग्रह घटाना पड़ेगा। और क्षयफल होगा।

सप्तम वि. सं. ५–१५°–५३′–२८॥

केतु ५–२ – ३८–३१

ग्रह संधि अंतर=०–१३–१४–५७″

= ४७६९७″

रा

सप्तम वि. सं. ५–१५°–५३′–२८″

सप्तम भाव ५– ० –२८ –११

भाव सं. अंतर = ०–१५–२५ –१७

= ५५५१७″

$\frac{\text{ग्रह संधि अंतर ४७६९७}}{\text{भाव सं. अंतर ५५५१७}}$ = ०–५१–३२–५४ क्षय फल

(०–५१–३२–४५) × २० = १७–१०–५८ विंशोपका बल

रूपात्मक भाव फल और विंशोपका बल चक्र

ग्रह	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
भाव	षष्ठ	एकादश	तृतीय	पंचम	एकादश	चतुर्थ	चतुर्थ	लग्न	सप्तम
रूपात्मक भाव	०–४३–४३	०–१३–४७	०–४–१९	०–१५–१९	०–४–४९	०–१–२०	०–११–२२	०–५१–५३	०–५१–३२
फल	चय	चय	क्षय	क्षय	चय	क्षय	चय	क्षय	क्षय
विश्वा बल	१४-३४-३०	४–३५–४०	१–२६–२७	५–६–३४	१-३६-२५	०-२६-५७	३-४७-३७	१७-१०-५८	१७-१०-५८

उपरोक्त उदाहरण से ध्यान में :आ गया होगा कि जहाँ ग्रह में से भाव की संधि घटानी पड़ती है तो वहाँ चयफल (फल वृद्धि) है। यह भाव संधि में से ग्रह घटाना पड़ता है तो क्षय फल (फल हानि) होता है। जैसे रवि, चंद्र, गुरु, शनि, का उन भाव में जहाँ वे हैं चय फल हुआ, शेष का क्षय फल है। इसी कारण भाव संधि और ग्रह का अंतर निकाला जाता है। जहाँ संधि से ग्रह बड़ा होता है वहाँ चय फल और कम हो तो क्षय फल होता है।

भोग्य और भुक्त विश्वाबल

जो चय-क्षयात्मक फल निकाला गया है उसके विषय में क्षय को भोग्य और चय को भुक्त विश्वाबल जानना।

वि० प्र० तत०

जैसे रवि १४–३४–२० विश्वाचय है। तो इतना विश्वाबल २० विश्वाबल में

वि० प्र० त०

से भुक्त हो चुका। शेष विश्वाबल ५–२४–४० भोग्य अर्थात् भुगतने को रह गया है ऐसा समझना।

२०– ०– ०
१४–३४–२०
५–२४–४०

चंद्र ४–३५–४० चय फल है तो शेष १५–२४–२० भोग्य अर्थात् भुगतने को रहा

२०–०–०	
४–३५–४०	भुक्त
१५–२४–२०	भोग्य

मंगल क्षय फल १–२६–२७ है तो शेष फल इस का भुक्त हो चुका है। २० में से १–२६–२७ विश्वा फल केवल और भोग्य है (भुगतने को रह गया है)। इसी प्रकार सब ग्रहों के सम्बन्ध में विचारना।

—: ० :—

अध्याय १८

दृष्टि साधन

किसी ग्रह का किस-किस ग्रह पर दृष्टि है और कितनी दृष्टि है या किस-किस भाव पर उस की दृष्टि कितनी-कितनी है यह गणित से निकाला जाता है क्योंकि फल कहने के लिये ग्रह की दृष्टि किसी भाव या ग्रह पर कितनी और कैसी है इस का विचार किया जाता है।

दृष्टि ४ प्रकार की होती है। कोई ग्रह जो देखता है उसे द्रष्टा ग्रह कहते हैं। जिसे देखता है वह दृश्य कहलाता है।

साधारण दृष्टि इस प्रकार की है:—

द्रष्टा से दृश्य सातवें स्थान में (६ राशि अंतर पर) हो तो = पूर्ण दृष्टि

" " चौथे या आठवें में (३ या ७ राशि अंतर पर) हो तो = पौन दृष्टि

" " पांचवे या नवें में (४ या ८ " ") हो तो = अर्द्ध "

" " तीसरे या दशवे में (२ या ९ " ") " = पाव "

मंगल, गुरु और शनि की विशेष पूर्ण दृष्टि होती है

मंगल की = चौथे या आठवें स्थान (३ या ७ राशि अंतर) पर = पूर्ण दृष्टि
गुरु को = ५ या ९ स्थान (४ या ८ ,, ,,) ,, = ,,
शनि की = ३ या १० ,, (२ या ९ ,, ,,) ,, = ,,

पूर्ण दृष्टि १° या ६० कला को मानी जाती है। कला में दृष्टि बल की इस प्रकार गणना होती है:-

४ पूर्ण दृष्टि	३ (त्रिपाद पौने) दृष्टि	२ द्विपाद (अर्द्ध) दृष्टि	१ एक पाद (पाव) दृष्टि
कला = ६०′	४५′	३०′	१५′

दृष्टि साधन चक्र

(दृश्य–द्रष्टा) =

मेष राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दृष्टि पाद (ध्रुवांक)	०	१	३	२	०	४	३	२	१	०	०	०
ग्रह विशेष दृष्टि	०	शनि ४	मंगल ४	गुरु ४	०	०	मंगल ४	गुरु ४	शनि ४	०	०	०

पूर्ण दृष्टि का ४ (४ पाद), पौने का ३, आधा का २ और पाव का एक ध्रुवांक है। दृश्य और द्रष्टा का अंतर निकालने पर शेष राशि से दृष्टि प्रकार जानना यहाँ बताया है। मंगल गुरु और शनि को विशेष दृष्टि भो इस में बताई गई है। बस इसी नियम के अनुसार दृष्टि साधन हो जाता है। जहाँ शेष राशि के नीचे ० दिया है उस का अर्थ यह है कि प्राप्त ध्रुवांक ० है तो कोई दृष्टि नहीं होगी। दृश्य ग्रह में से द्रष्टा ग्रह को घटाने से जो राशि अंश आदि रहें वह ग्रह अंतर हुआ। इस राशि के अंक के नीचे चक्र में दृष्टि के अंक दिये हैं उनको गणित के लिये ध्रुवांक कहते हैं।

प्राप्त ध्रुवांक = (दृश्य–द्रष्टा) अंतर में जो राशि का अंक है उस के नीचे जो ध्रुवांक दिया है।

ऐष्य ,, = प्राप्त ध्रुवांक के आगे का ध्रुवांक

ध्रुवांक अंतर = प्राप्त और ऐष्य ध्रुवांक का अंतर। यह अंतर ± होता है। ऐष्य से प्राप्त ध्रुवांक बड़ा हो तो–, कम हो तो+ होता है।

यदि द्रष्टा ग्रह मंगल गुरु या शनि में से कोई हो तो इन की विशेष दृष्टि होती है। उन का विशेष ध्रुवांक ४ नीचे दिया है। अर्थात् वह ग्रह इन में से कोई हो तो उस का ध्रुवांक ४ लेना। ऊपर लिखा हुआ ध्रुवांक न लेना। इन तीनों ग्रहों की विशेष दृष्टि का ध्रुवांक ४ है।

जैसे शनि द्रष्टा है और शेष राशि ३ है तो ३ के नीचे मंगल दिया है। यदि शनि लिखा होता तो ४ ध्रुवांक लेते। इस कारण साधारण ध्रुवांक ३ जो ऊपर लिखा है वही लेंगे।

यदि शेष ४ होता तो भी उस के नीचे शनि नहीं दिया इस से शनि का ४ ध्रुवांक न लेकर ऊपर का २ ही ध्रुवांक लेंगे।

इन तीनों की विशेष दृष्टि के ध्रुवांक के विषय में नीचे समझया है।

द्रष्टा शनि

शेष राशि २ = साधारण ध्रुवांक १ नहीं लेना ४ ध्रुवांक लेना। इस का ऐष्य (अग्रिम) ध्रुवांक ३ राशि का ३ दिया है वह लेना।

„ ७ = साधारण ४ प्राप्त ध्रुवांक, २ ऐष्य ध्रुवांक है।

„ ८ = „ २ „ „ ४ „ है। यहाँ साधारण ऐष्य ध्रुवांक १ होता है वह नहीं लेना, क्योंकि उस के नीचे शनि दिया है इस से ४ लेना।

„ ९ = प्राप्त ध्रुवांक १ न लेकर ४ लेना, अग्रिम ध्रुवांक ० लेना।

द्रष्टा मंगल

शेष राशि २ = प्राप्त ध्रुवांक १, ऐष्य ध्रुवांक साधारण न लेकर यहाँ ४ लेना।

„ ३ = „ ४, „ „ २ लेना।

„ ६ = साधारण प्राप्त ध्रुवांक ४, ऐष्य ध्रुवांक यहाँ ४ लेना।

„ ७ = विशेष प्राप्त ध्रुवांक ४, ऐष्य ध्रुवांक साधारण २ लेना।

द्रष्टा गुरु

शेष राशि ३ = साधारण प्राप्त ध्रुवांक ३, ऐष्य विशेष ध्रुवांक ४ लेना।

४ = विशेष „ „ ४, ऐष्य ध्रुवांक ० लेना।

७ = साधारण „ „ ३, ऐष्य विशेष ध्रुवांक ४ लेना।

८ = विशेष „ „ ४, ऐष्य साधारण ध्रुवांक १ लेना।

ये सब बातें ध्यान पूर्वक चक्र को देखने से ही समझ में आ जाती हैं परन्तु कहीं भ्रम न हो इसलिये यहाँ स्पष्ट रूप से समझा दिया है।

दृष्टि साधन की रीति

दृश्य (जिस पर दृष्टि साधन करना है) में से द्रष्टा ग्रह (देखने वाला ग्रह जिस की दृष्टि साधन करना है) घटाना। जो राशि अंश कलादि शेष रहे उस में राशि के नीचे का प्राप्त ध्रुवांक और आगे की राशि का ध्रुवांक (ऐष्य ध्रुवांक)

होगा। इन दोनों ध्रुवांक का अंतर निकालो (दो राशि के बीच अर्थात् १ राशि में ३०° अंतर होता है) फिर गणित से निकालो ३० अंश में इतने ध्रुव अंतर दृष्टि बल होता है तो अंतर की शेष अंश कलादि में कितना होगा ? जो कुछ उत्तर आवे यदि आगे का ध्रुवांक बड़ा है तो प्राप्त ध्रुवांक में जोड़ दो यदि ऐष्य ध्रुवांक प्राप्त ध्रुवांक से कम हो तो प्राप्त ध्रुवांक से वह उत्तर घटा देना। जो कुछ आवे उस में ४ का भाग देना तो कलात्मक दृष्टि होगी। ४ का भाग इस लिये देते हैं कि पूर्ण ४ पाद होते हैं।

इसी रीति को संक्षेप में समझाने के लिये दृष्टि साधन चक्र यहाँ फिर देते हैं।

दृष्टि साधन चक्र

शेष राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
साधारण ध्रुवांक	०	१	३	२	०	४	३	२	१	०	०	०
विशेष ध्रुवांक	०	शनि	मंगल	गुरु	०	०	मंगल	गुरु	शनि	०	०	०
		४	४	४			४	४	४			

(दृश्य-द्रष्टा) = शेष राशि अंश कला।

केवल राशि से प्राप्त ध्रुवांक और ऐष्य ध्रुवांक का अंतर = ध्रुवांक अंतर (शेष राशि की केवल अंश कला × ध्रुवांक अंतर) ÷ ३० = अनुपातिक कला (प्राप्त ध्रुवांक ± अनुपातिक कला) ÷ ४ = कलात्मक दृष्टि

(प्राप्त ध्रुवांक से ऐष्य अधिक हो तो + कम हो तो ऋण करना।)

उपरोक्त गणित को और सरल बनाने के लिये दूसरी रीति नीचे दी है जिस से दृष्टि साधन करना सरल है।

दृष्टि साधन करने की दूसरी रीति

शेष राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९
साधारण दृष्टि में	अंश/२	अंश + १५	४५ − अंश/२	३०-अंश	अंश × २	[(१०-शेष राश्यादि)= =सब के अंश × २]			
मंगल की विशेष दृष्टि में	०	(अंश × ३/२) + १५	६०−अंश	०	०	६०° दृष्टि	६०−अंश	०	०
गुरु की विशेष दृष्टि में	०	०	अंश/२ + ४५	६०−(अंश × २)	०	०	अंश/२ + ४५	६०−(अंश × ३/२)	०
शनि की विशेष दृष्टि में	अंश × २	६०−अंश/२	०	०	०	०	०	अंश + ३०	६०−(अंश × २)

स्पष्टीकरण

दृश्य द्रष्टा अंतर की राशि में साधारण प्रकार से १ राशि आवे तो राशि को छोड़ दो। केवल अंश में २ का भाग दो दृष्टि कला विकला होगी। यदि २ बचे तो केवल अंश में १५ जोड़ दो, ३ बचे तो केवल अंशादि को आधाकर ४५ से घटा दो।

इसी प्रकार यदि मंगल की दृष्टि साधन करते समय ३ राशि शेष हो तो ६० में से केवल अंश घटा देना या गुरु की दृष्टि साधन करने में ८ राशि बचे तो अंश को डेवढ़ा कर ६० में से घटा देना। इसी प्रकार और भी उपरोक्त चक्रानुसार समझना।

साधारण प्रकार से ६,७,८ या ९ बचे तो १० में से शेष राश्यादि घटाना, जो शेष बचे उन सब के अंश बनाकर २ का भाग दो तो जो उत्तर आवे वही दृष्टि होगी।

यहाँ शेष ९ तक दृष्टि दी है। ९ के आगे शेष आवे तो दृष्टि शून्य समझना।

जहाँ विशेष दृष्टि में कोई क्रिया नहीं दी अर्थात् ० दिया है वहाँ साधारण दृष्टि के अनुसार क्रिया करना। जैसे गुरु की दृष्टि साधन करते समय शेष २ बचे हैं तो, यहाँ गुरु में कोई विशेष क्रिया नहीं दी। इस से साधारण क्रिया (अंश × २) जो सब से ऊपर बताई है उसी रीति से दृष्टि साधन करना चाहिए।

यहाँ जो अंश में गुणा भाग आदि करना बताया है वहाँ राशि छोड़ केवल अंश कलादि लेना।

दृष्टि साधन करने के लिये पहिले कोई एक ग्रह की दृष्टि सब ग्रहों पर साधन कर लो। उपरांत दूसरे ग्रह की दृष्टि साधन करो जो कुछ उत्तर आवे उस का एक चक्र बना लो। आगे इन सब का उदाहरण देकर समझाया है।

दृष्टि साधन करने का उदाहरण

१ (१) पहिले रवि की दृष्टि सब ग्रहों पर साधन करते हैं। यहाँ द्रष्टा रवि हुआ और इतर ग्रह दृश्य हुए।

(अ) रीति १

	रा		
दृश्य चंद्र =	८–२०°–५५′–३५″	शेष राशि ४ है	
द्रष्टा रवि =	३–२७ –२३ – ६	प्राप्त ध्रुव =	२
शेष =	४–३ – ३२– २९	ऐष्य ,, =	०
		ध्रुवांतर =	२ ऋण

यहाँ शेष ४ राशि के नीचे २ है तो प्राप्त ध्रुव २ हुआ इस के आगे का

ध्रुव ० है। दोनों ध्रुव का अंतर किया २ आया। आगे का ध्रुव छोटा है इस से ऋण हुआ।

(अ) अंशादि ध्रुवांतर

$$\frac{३-३२-२९ \times २}{३०} = \frac{७^\circ-४'-५८''}{३०} = १४'-९'-५६'''$$ अंतर कला

प्राप्त ध्रुव २°–०′–०″–०

अंतर कला १४–९–५६

शेष = १–४५–५०–४ ÷ ४ = ०°–२६′–२७″–३१

= २६–२७–३१ दृष्टि

(ब) दूसरी रीति

शेष ४ राशि = ३०–०–०

(३०–अंश) ३–३२–२९–

२६–२७–३१ = २६–२७–३१ दृष्टि

१ (२) दृश्य मंगल १–१६–२७–५८

द्रष्टा रवि ३–२७–२३– ६

शेष ९–१९–४ –५२

(अ) शेष ९ राशि

प्राप्त ध्रुव १

ऐष्य ०

ध्रुव अंतर १ ऋण

शेष ९ राशि का ध्रुव १ हुआ। शेष ९ राशि के आगे १० होता है १० के नीचे ० है तो ऐष्य ध्रुव ० हुआ। प्राप्त से ऐष्य कम होने से ध्रुव अंतर ऋण हुआ।

अंशादि ध्रुवांतर

$$\frac{१९-४-५२ \times १}{३०} = \frac{१९-४-५२}{३०} = ०-३८-९-४४$$ अंतर कला ऋण

१– ०–०–०

–०–३८–९–४४

०–२१–५०–१६ ÷ ४

दृष्टि = ५′–२७″–३४‴

(ब) शेष ९ राशि = (१०–शेष राशि) = शेष के अंश ÷ २ = दृष्टि

१०– ०– ०– ०

९–१९– ४–५२

०–१०–५५–८ = १०°–५५′–८″ ÷ २ = ५′–२७″–३४‴ दृष्टि

दोनों रीति करने से प्रगट हुआ कि पहली से दूसरी रीति सरल है।

१ (३) बुध दृश्य ३–१३–० –३५

रवि द्रष्टा ३–२७–२३–६

शेष ११–१५–३७–२९

यहाँ शेष ११ राशि है तो कोई दृष्टि नहीं हुई।

दृष्टि = ०

१ (४) गुरु दृश्य ८–१८–४४–५६ (अ) प्राप्त ध्रुव २
रवि द्रष्टा ३–२७–२३–६ ऐष्य ,, ०
शेष ४–२१–२१–५० अंतर २ ऋण

२१–२१–५० × २

$$\frac{\text{अंशादि} \quad \text{ध्रुव}}{३०} = \frac{४२–४३–४०}{३०} = १–२५–२७–२० \text{ अंतर कला ऋण}$$

प्राप्त ध्रुव २– ०– ०– ०
– अंतर कला १–२५–२७–२०
०–३४–३२–४० ÷ ४ दृष्टि ८′–३८″–१०‴
= ०–८–३८–१०

(ब) शेष ४ राशि = ३० – अंश

३०– ०– ०

$$= \frac{२१–२१–५०}{८–३८–१०} = \text{दृष्टि } ८′–३८″–१०$$

१ (५) शुक्र दृश्य २–२७–१४–५६
रवि द्रष्टा ३–२७–२३– ६
शेष–१०

यहाँ शेष १० राशि होने से ० दृष्टि हुई।

१ (६) शनि दृश्य १–२०–३०–१०
रवि द्रष्टा ३–२७–२३– ६
शेष ६–२३– ७– ४

(अ) शेष ६
प्राप्त = १ ध्रुव
ऐष्य = ०
अंतर १ ऋण
(ऐष्य कम होने से)

$$\frac{\text{अंश} \quad \text{अंतर}}{} \qquad \frac{२३–७–४ \times १}{३०} = \frac{२३–७–४}{३०} = ४६–१४–८ \text{ ऋण}$$

प्राप्त १°–०′–०″–०
– ४६–१४–८ ऋण
०–१३–४५–५२ ÷ ४
= ०– ३–२६–२८

दृष्टि = ३′–२६″–२८‴

(ब) शेष ६ = (१०–शेष राशि) = सब के अंश ÷ २।

१०– ०– ०– ०
६–२३– ७– ४
०– ६–५२–५६

सबके अंश
६–५२–५६ ÷ २
= ३′–२६″–२८‴ दृष्टि।

१ (७) राहु दृश्य ११–२ –३८–३१
रवि द्रष्टा ३–२७–२३– ६
शेष ७– ५–१५–२५

(अ) शेष ७ प्राप्त = ३ ध्रु०
ऐष्य = २ ,,
अंतर १ ऋण

अंशादि अंतर
(ऐष्य कम होने से ऋण)

$\frac{५\text{-}१५\text{-}२५ \times १}{३०} = \frac{५\text{-}१५\text{-}२५}{३०}$ = १०′-३०″-५०‴ ऋण

प्राप्त ३°- ०′- ०″- ०
० -१० -३० -५०
२-४९-२९-१० ÷ ४
= ०-४२-२२-१७॥

दृष्टि ४२′-२२″-१७॥

(ब) शेष ७ = (१० - शेष राशि) = सबके अंश ÷ २

रा
१०- ०°- ०′- ०″
७- ५ -१५ -२५
२-२४ -४४ -३५

सबके अंश = ८४°-४४′-३५″ ÷ २
= ४२′-२२″-१७॥ दृष्टि

२ अब चंद्र की दृष्टि साधन करते हैं

(१) सूर्य दृश्य ३-२७-२३- ६
चंद्र द्रष्टा ८-२०-५५-३५
शेष = ७- ६-२७-३१

(अ) शेष ७ प्राप्त = ३ ध्रु०
ऐष्य = २ ,,
अंतर १ ऋण

अंशादि अंतर
(ऐष्य कम है तो ऋण)

$\frac{६\text{-}२७\text{-}३१ \times १}{३०} = \frac{६\text{-}२७\text{-}३१}{३०}$ = १२′-५५″-२ ऋण

प्राप्त ध्रुव ३- ०- ०- ०
– १२-५५- २
२-४७- ४-५८ ÷ ४
= ०-४१-४६-१४॥

∴ दृष्टि ४१-४६-१४॥

(ब) शेष ७ = (१०-शेष राशि) = सबके अंश ÷ २

१०- ०- ०- ०
७- ६-२७-३१
२-२३-३२-२९
= ८३°-३२′-२९″

८३-३२-२९ ÷ २
= ४१-४६-१४॥ दृष्टि

२ (२) मंगल दृश्य १-१६-२७-५८
चंद्र द्रष्टा ८-२०-५५-३५
शेष ४-२५-३२-२३

(अ) शेष ४ = प्राप्त = २
ऐष्य = ०
अंतर २ ऋण

अंशादि

$$\frac{\text{२५-३२-२३} \times \text{२}}{\text{३०}} = \frac{\text{५१-४-४६}}{\text{३०}} = \text{१}^{\circ}\text{-४२}'\text{-९}''\text{-३२ ऋण}$$

प्राप्त २- ०- ०- ०
- १-४२- ९-३२
०-१७-५०-२८ ÷ ४
= ०- ४-२७-३७

∴ दृष्टि ४′-२७″-३७

(ब) शेष ४ = (३०-अंश) ३०-०-०
२५-३२-२३
४-२७-३७ = ४-२७-३७ दृष्टि

२ (३) बुध दृश्य ३-१३- ०-३५
चंद्र द्रष्टा ८-२०-५५-३५
शेष ६-२२- ५- ०

(अ) शेष ६ = प्राप्त ४ अंशादि अंतर

ऐक्य ३ / अंतर १ ऋण $\quad \frac{\text{२२-५-०} \times \text{१}}{\text{३०}} = \frac{\text{२२-२५-०}}{\text{३०}} = \text{०}^{\circ}\text{-४४}'\text{-१० ऋण}$

दृष्टि ४८′-५७॥″

प्राप्त ४- ०- ०-०
०-४४-१०-०
३-१५-५० ÷ ४=०-४८-५७॥

(ब) शेष ६ = (१०– शेष राशि) = सबके अंश ÷ २

रा
१०-०°-०′-०″
६-२२- ५-०
३-७ -५५-०
= ९७°-५५′-०″

९७-५५-० ÷ २
= ४८′-५७″-३० दृष्टि

२ (४) गुरु दृश्य ८-१८-४४-५६ शेष ११ राशि
द्रष्टा चंद्र ८-२०-५५-३५ दृष्टि०
शेष ११-

२ (५) शुक्र दृश्य २-१७-१४-५९
चंद्र द्रष्टा ८-२०-५५-३५
शेष ५-२६-१९-२४

(अ) शेष ५
प्राप्त = ०
ऐक्य = ४
अंतर = ४ +
(ऐक्य अधिक है)

अंशादि   अंतर   प्राप्त-०-०-०-०

$$\frac{(२६\text{-}१९\text{-}२४ \times ५}{३०} = \frac{१०५^\circ\text{-}१७'\text{-}३६''}{३०} = ३^\circ\text{-}३०'\text{-}३५\text{-}१२ +$$

+ ३-३०-३५-१२
= ३-३०-३५-१२ ÷ ४

दृष्टि = ५२′–३८″–४८   = ०-५२-३८-४८

(ब) शेष ५ = अंश × २

अंश (२६–१९–२४) × २ = ५२′–३८″–४८ दृष्टि

२ (६) शनि दृश्य = १–२०–३०–१०
चंद्र द्रष्टा = ८–२०–५५–३५
शेष ४–२९–३४–३५

(अ) शेष ४
प्राप्त २
ऐष्य ०
अंतर २ ऋण

अंशादि   प्राप्त २-०-०-०

$$\frac{(२९\text{-}३४\text{-}३५) \times २}{३०} = \frac{५९\text{-}९\text{-}१०}{३०} = १^\circ\text{–}५८'\text{–}१८\text{-}२०$$
ऋण

१-५८-१८-२०
०-१-४१-४० ÷ ४

∴ दृष्टि ०′-२५″-२५   = ०-०′-२५″-२५

(ब) शेष ४ = (३०-अंश)   ३०-०-०
−२९-३४-३५ = दृष्टि ०′-२५-२५
०-२५-२५

२ (७) राहु दृश्य ११-२-३८-३१
चंद्र द्रष्टा ८-२०-५५-३५
शेष = २-११-४२-५६

(अ) शेष २
प्राप्त = १
ऐष्य = ३
अंतर २ +
(ऐष्य बड़ा है)   प्राप्त १-०-०-०

अंशादि   अंतर

$$\frac{११\text{-}४२\text{-}५६ \times २}{३०} = \frac{२३\text{-}२५\text{-}५२}{३०} = ०^\circ\text{-}४६'\text{-}५१\text{-}४४ +$$

+ ०-४६-५१-४४
=१-४६-५१-४४ ÷ ४
=०°-२६-४२″-५६

∴ दृष्टि २६′-४२″-५६

(ब) शेष २ = अंश + १५   अंश ११-४२-५६
+ १५
= २६-४२-५६ दृष्टि = २६′-४२″ ५६

३ (१) अब मंगल की दृष्टि साधन करते हैं

रा

दृश्य रवि ३–२७°–२६′–६″
द्रष्टा मंगल १– १६–२७–५८
शेष २–१०–५५– ८

(अ) इस की दृष्टि साधन करने में साधारण ध्रुवांक के नीचे यदि मंगल दिया है तो वहाँ विशेष ध्रुवांक ४ लेंगे।

(अ)

शेष ४ राशि

प्राप्त १ अंशादि अंतर

ऐष्य ४ विशेष $\frac{१०\text{-}५८\text{-}८ \times ३}{३०} = \frac{३२\text{-}४५\text{-}२४}{३०}$ = १°-५′-३०″-४८ +

अंतर ३ + प्राप्त १-०-०-०

(ऐष्य अधिक है) + १-५-३०-४८

= दृष्टि ३१′-२२″-४२ = २-५-३०-४८ ÷ ४

= ०°-३१′-२२″-४२

(ब) शेष २ = विशेष (अंश × ३/२) + १५

अंश १०-५५-८
+ ५-२७-३४ = ३/२
= १६-२२-४२
+ १५
३१-२२-४२
= ३१-२२-४२ दृष्टि

यहाँ × ३/२ करना अर्थात् डेवढ़ा अंश करने को अंश में आधा और जोड़ दिया तो डेवढ़ा हो गया।

३ (२) दृश्य चंद्र ८–२०–५५–३५
द्रष्टा मंगल १–१६–२७–५८
शेष ७– ४ –२७–३७

(अ) शेष ७
प्राप्त = ४ विशेष
ऐष्य २
अंतर २ ऋण

यहाँ ७ के नीचे मंगल लिखा है इस से विशेष ध्रुव ४ लिया।

अंशादि अंतर प्राप्त ४–०–०–०

$\frac{(४–२७–३७) \times २}{३०} = \frac{८–५५–१४}{३०}$ = ०°–१७′–५०″–२८ ऋण – ०–१७–५०–२८

३–४२–९–३२ ÷ ४

∴ दृष्टि =०°–५५′३२″२३

५५′–३२″–२३

(ब) शेष ७ = ६०–अंश

६०–०–०
४–२७–३७
= ५५–३२–२३ दृष्टि = ५५′–३२′ –२३

३ (३) दृश्य बुध	३–१३–०–३५	(अ) शेष	१
द्रष्टा मंगल	१–१६–२७–५८	प्राप्त	= ०
शेष	१–२६–३२–३७	ऐष्य	= १
		अंतर	१ +

अंशादि   अंतर   प्राप्त ०

$\frac{२६–३२–३७ \times १}{३०} = \frac{२६–३२–३७}{३०} = ०^{\circ}–५३'–५''–१४ +$ + ०–५३–५–१४

= ०–५३–५–१४ ÷ ४ः

∴ दृष्टि १३'–१६''–१८॥   = १३'–१६''–१८॥

(ब) शेष १ साधारण अंश ÷ २

अंश २६–३२–२७ ÷ २ = १३'–१६''–१८॥ दृष्टि

३ (४) दृश्य गुरु	८–१८–४४–५६	(अ) शेष	७
द्रष्टा मंगल	१–१६–२७–५८	प्राप्त	= ४ विशेष
शेष	७– २ –१६–५८	ऐष्य	= २
		अंतर	= २ ऋण

अंशादि   अंतर   प्राप्त $४^{\circ}–०'–०''–०$

$\frac{(२–१६–५८) \times २}{३०} = \frac{४–३३–५६}{३०} = ९'–७''–५२$ ऋण   − ९–७–५२

३–५०–५२–८ ÷ ४ः

= ५७–४३–२

दृष्टि = ५७'–४३''–२

(ब) शेष ७ = ६०–अंश   ६०–०–०

२–१६–५८   = दृष्टि ५७'–४३''–२

= ५७–४३–२

३ (५) दृश्य शुक्र	२–१७–१४–५९	(अ) शेष	१
द्रष्टा मंगल	१–१६–२७–५८	प्राप्त	= ०
शेष	१–०–४७–१	ऐष्य	= १
		अंतर	= १ +

अंशादि   अंतर   प्राप्त ०–०–०–०

$\frac{(०–४७–१) \times १}{३०} = \frac{०–४७–१}{३०} = ०^{\circ}–१'–३४''–२ +$ + ०–१–३४–२

= ०–१–३४–२ ÷ ४ः

= दृष्टि ०'–२३''–३०॥   = $०^{\circ}–०'–२३''–३०॥$

(ब) शेष १ = अंश ÷ २   अंश ०–४७–१ ÷ २

= ०–२३–३०॥ दृष्टि

३ (६) दृश्य शनि १–२०–३०–१० शेष ० है अर्थात् १२ राशि है
द्रष्टा मंगल १–१६–२७–५८ तो दृष्टि ० हुई
शेष ०–४–२–१२

३ (७) दृश्य राहु ११–२–३८–३१
द्रष्टा मंगल १–१६–२७–५८
शेष ६–१६–१०–३३

(अ) शेष ६
प्राप्त = १
ऐष्य = ०
अंतर = १ ऋण

अंशादि अंतर प्राप्त १–०–०–०

$\frac{(16-10-33)\times 1}{30} = \frac{16-10-33}{30} = 0^\circ-32'-21''-6$ ऋण

०–३२–२१–६

०–२७–३८–५४ ÷ ४
= ०°–६'–५४''–४३॥

∴ दृष्टि ६'–५४''–४३॥

(ब) शेष ६ = (१०–शेष राशि) = सब के अंश ÷ २
१०–०–०–०
६–१६–१०–३३
०–१३–४९–२७
= १३°–४९'–२७''

१३–४९ -२७ ÷ २
= ६–५४–४३॥ दृष्टि

४ (१) बुध की दृष्टि सब ग्रहों पर साधन करते हैं

दृश्य रवि ३–२३–२३– ६
द्रष्टा बुध ३–१३– ०–३५
शेष ०

शेष ० या १२ राशि है तो दृष्टि ० हुई।

४ (२) चंद्र दृश्य ८–२०–५५–३५
बुध द्रष्टा ३–१३– ०–३५
शेष ५–७ –५५– ०

(अ) शेष ५
प्राप्त = ०
ऐष्य = ४
अंतर = ४ +

अंशादि अंतर प्राप्त ०–०–०

$\frac{(7-55-0)\times 4}{30} = \frac{31-40-0}{30} = 1^\circ-3'-20''+$

+ १–३–२०
= १–३–२० ÷ ४
= ०°–१५'–५०''

∴ दृष्टि = १५'–५०''

(ब) शेष ५ = अंश × २ अंश ७–५०–० × २
= १५'–५०''–० दृष्टि

४ (३) मंगल दृश्य १–१६–२७–५८ शेष १०
वुध द्रष्टा ३–१३– ०–३५ = दृष्टि ०
शेष १०–३–२७–२३

४ (४) गुरु दृश्य ८–१८–४४–५६ (अ) शेष ५
वुध द्रष्टा ३–१३– ०–३५ प्राप्त ०
शेष ५– ५–४४–२१ ऐष्य ४
अंशादि अंतर ४+ प्राप्त ०°- ०′–०″–०

$\frac{(५-४४-२१) \times ४}{३०} = \frac{२२-५७-२४}{३०}$ =४५″-५४′-४८‴ +   + ०-४५-५४-४८
= ०-४५-५४-४८ ÷ ४
दृष्टि = ११′-२८″-४२‴   =११′-२८″-४२

(व) शेष ५ = अंश × २   अंश ५–४४–२१ × २
=११′–२८″-४२ दृष्टि

४ (५) शुक्र दृश्य २–१७–१४–५६ शेष ११
वुध द्रष्टा ३–१३– ०–३५ दृष्टि ०
११

४ (६) शनि दृश्य १-२०-३०-१० शेष १०
वुध द्रष्टा ३-१३-० -३५ दृष्टि ०
शेष १०–

४ (७) राहु दृश्य ११–२–३८–३१ | (अ) शेष ७
वुध द्रष्टा ३–१३–०–३५ | प्राप्त ३
शेष ७–१९–३७–५६ | ऐष्य २
अंशादि अंतर १ ऋण प्राप्त ३- ०-० -०

$\frac{(१७-३७-५६) \times १}{३०} = \frac{१९-३७-५६}{३०}$ = ०°-३९′-१५″-५२‴ ऋण   ०-३९-१५-५२
२-२०-४४- ८ ÷ ४

रा   ३५′-११″-२‴

(ब) १०-०°-०′-०″   ७०-२२-४ ÷ २
७-१९-३७-५६   = ३५′-११″-२ दृष्टि
२-१०-२२- ४
= ७०°-२२′-४″

५ (१) अब गुरु की दृष्टि सब ग्रहों पर साधन करते हैं। गुरु की विशेष दृष्टि भी होतो है पहिली रीति के बहुत उदाहरण दे चुके। अब केवल दूसरी रीति से ही दृष्टि साधन करते हैं जो सरल है।

(१) रवि दृश्य ३-२७-२३-६
गुरु द्रष्टा ८-१८-४४-५६
शेष ७-८-३८-१०

शेष ७ गुरु = (अंश + ४५)/२ विशेष दृष्टि
अंश ८-३८-१० ÷ २
= ४-१९-५
+ ४५
= ५०-१९-५
= दृष्टि ५०′-१९″-५

५ (२) चंद्र दृश्य = ८-२०-५५-३५
गुरु द्रष्टा = ८-१८-४४-५६
शेष ० रा

शेष राशि ० = १२
दृष्टि = ०

५ (३) मंगल दृश्य = १-१६°-२७′-५८″
गुरु द्रष्टा = ८-१८-४४-५६
शेष ४-२७-४३-२

शेष ४ = ६०-(अंश × २) विशेष दृष्टि
६०-(२७-४३-२) × २
= ६०-(५५-२६-४)
= ४′-३३″-५६ दृष्टि

६०- ०- ०
-५५-२६- ४
४-३३-५६

५ (४) बुध दृश्य = ३-१३- ०-२५
गुरु द्रष्टा = ८-१८-४४-५६
शेष = ६-२४-१५-३९

शेष ६ १०- ०- ०- ०
६-२४-१५-३९
= ३- ५-४४-२१
= ९५°-४४′-२१″ साधारण दृष्टि

९५-४४-२१ ÷ २
= ४७′-५२″-१०

५ (५) शुक्र दृश्य २-१७-१४-५९
गुरु द्रष्टा ८-१८- ४-५६
शेष ५-२८-३०- ३

शेष ५ = अंश × २ साधारण
(२८-३०-३) × २=५७′-०″-६‴
साधारण दृष्टि

५ (६) शनि दृश्य १-२०-३०-१०
गुरु द्रष्टा ८-१८-४४-५६
शेष ५- १-४५-१५

शेष ५ = अंश × २
(१-४५-१५) × २=३′-३०″-२८‴
साधारण दृष्टि

५ (७) राहु दृश्य ११- २-३८-३१
गुरु द्रष्टा ८-१८-४४-५६
शेष २-१३-५३-३५

शेष २ = अंश + १५
१३-५३-३५
+१५
= २८-५३-३५
= २८′-५३″-३५‴ साधारण दृष्टि

(६) शुक्र की दृष्टि साधन

(१) रवि दृश्य ३–२७–२३– ६ शेष १ = अंश ÷ २

शुक्र द्रष्टा २–१७–१४–५९ अंश १०–८–७ ÷ २ = ५′–४″–३।।‴ दृष्टि

शेष १–१०– ८– ७

६ (२) चंद्र दृश्य ८–२०–५५–३५ शेष ६ १०– ०– ०– ० (११६–१९–२४) ÷ २

शुक्र द्रष्टा २–१७–१४–५९ ६– ३–४०–३६ = ५८′–९″–४२ दृष्टि

शेष ६– ३–४०–३६ ३–२६–१९–२४

= ११६°–१९–२४

६ (३) मंगल दृश्य १–१६–२७–५८

शुक्र द्रष्टा २–१७–१४–५९ शेष १०

शेष १०–२९–१२–५९ दृष्टि = ०

६ (४) बुध दृश्य ३–१३– ०–३५ शेष ०

शुक्र द्रष्टा २–१७–१४–५९ = दृष्टि = ०

शेष ०

रा

६ (५) गुरु दृश्य ८–१८–३४–५६ शेष ६ १०–०°–०′–०″ ११८–३०–६ ÷ २

शुक्र द्रष्टा २–१७–१४–५९ ६–१–२९–५७ = ५९′–१५″–३ दृष्टि

शेष ६–१–२९–५७ ३–२८–३०–३

= ११८°–३०′–३″

६ (६) शनि दृश्य १–२०–३०–१०

शुक्र द्रष्टा २–१७–१४–५९ शेष ११ = दृष्टि = ०

शेष ११

रा

६ (७) राहु दृश्य ११–२–३८–३१ शेष ८ १०–०°–०′–०″ ४४–३६–२८ ÷ २

शुक्र द्रष्टा २–१७–१४–५९ ८–१५–२३–३२ = २२′–१८″–१४ दृष्टि

शेष ८–१५–२३–३२ १–१४–३६–२८

= ४४°–३६′–२८″

७ शनि दृष्टि साधन। इसकी विशेष दृष्टि भी होती है।

(१) रवि दृश्य ३–२७–२३–६ शेष २ = ६०–अंश विशेष दृष्टि ।
२

शनि द्रष्टा १–२०–३०–१० ६–५२–५६ ÷ २ ६०–०–० =५६'–३३''–३२
शेष २–६–५२–५६ =३–२६–२८ –३–२६–२८ विशेष
५६–३३–३२ दृष्टि

७ (२) चंद्र दृश्य ८–२०–५५–३५ शेष ७ १०–०–०–० ८९–३४–३५ ÷ २
शनि द्रष्टा १–२०–३०–१० ७–०–२५–२५ =४४–४७–१७॥
शेष ७–०–२५–२५ २–२९–३४–५ साधारण दृष्टि
= ८९°–३४'–३५''

७ (३) मंगल दृश्य १–१६–२७–५८
शनि द्रष्टा १–२०–३०–१० शेष ११ = दृष्टि = ०
शेष ११
रा

७ (४) वुध दृश्य ३–१३°–०'–३५'' शेष १ = अंश × २
शनि द्रष्टा १–२०–३०–१० अंश २२–३०–२५ × २ = ४५'–०''–४५
मेष १–२२–३०–२५ = ४५'–०''–४५ विशेष दृष्टि

७ (५) गुरु दृश्य ८–१८–४४–५६ शेष ६ १०– ०–० –० ९१–४५–१४ ÷ २
शनि द्रष्टा १–२०–३०–१० ६–२८–१४–४६ =४५'–५२''–३७
शेष ६–२८–१४–४६ ३– १–४५–१४ साधारण दृष्टि
= ९१°–४५'–१४''

७ (६) शुक्र दृश्य २–१७–१४–५९ शेष ०
शनि द्रष्टा १–२०–३०–१० दृष्टि =०
शेष ०–२६–४४–४९

७ (७) राहु दृश्य ११– २–२८–३१ शेष ९ = ६०– (अंश × २)
शनि द्रष्टा १–२०–३०–१० अंश १२–८–२१ × २ ६०– ०– ०
शेष ९–१२– ८–२१ = २४–१६–४२ –२४–१६–४२
=३५'-४३-१८''' विशेष दृष्टि ३५–४३–१८

८ राहु की दृष्टि साधन

(१) रवि दृश्य ३–२७–२३– ६ शेष ४ = ३०-अंश
राहु द्रष्टा ११– २–२८–३१ ३०– ०– ० = ५'–१५''–२५ दृष्टि
शेष ४–२४–४४–३५ २४–४४–३५
५–१५–२५

८ (२) चंद्र दृश्य ८–२०–५५–३५ शेष ९=१०– ०– ०– ० ११–४२–५६÷२

राहु द्रष्टा ११–२–३८–३१   ९–१८–१७ –४ ५′–५१″–२८ दृष्टि

शेष   ९–१८–१७– ४   ०–११–४२–५६

=११°–′४२–५६″

८ (३) मंगल दृश्य १–१६–२७–५८ शेष २ =अंश + १५   अंश १३–४९–२७

राहु द्रष्टा ११–२ –३८–३१   +१५

शेष   २–१३–४९–२७   २८–४९–२७

=२८′–४९″–२७‴ दृष्टि

८ (४) बुध दृश्य ३–१३– ०–३५ शेष ४= ३०-अंश ३०- ०- ०

राहु द्रष्टा ११–२ –३८–३१   १०-२२- ४ १९′-३७″-५६

शेष   ४–१०–२२– ४   १९-३७-५६   दृष्टि

८ (५) गुरु दृश्य ८–१८–४४–५६ शेष ९ १०– ०– ०– ०   १३-५३-३५÷२

राहु द्रष्टा ११–२ –३८–३१   ९–१६– ६–२५ = ६′-५६″-४७‴

शेष   ९–१६– ६–२५   ०–१३–५३–३५.   दृष्टि

=१३°–५३′–३५″

८ (६) शुक्र दृश्य २–१७–१४–५९ शेष ३ = ४५–अंश

२   ४५- ०- ०

राहु द्रष्टा ११– २–३८–३१ अंश १४–३६–२८÷२   ७-१८-१४

शेष   ३–१४–३६–२८   =७-१८-१४   =३७-४१-४६

=३७′-४१″-४६‴ दृष्टि

८ (७) शनि दृश्य १–२०–३०–१० शेष २ = अंश + १५

राहु द्रष्टा ११– २–३८–३१   १७–५१–३९ = ३२′–५१″–३९‴ दृष्टि

+१५

शेष   २–१७–५१–३९   ३२–५१–३९

ऊपर जो प्रत्येक ग्रहों की दृष्टि साधन की है उसे अब चक्र बनाकर दर्शाते हैं ।

ग्रहों पर ग्रहों की दृष्टि का चक्र

दृश्य ग्रह (जिन ग्रहों पर दृष्टि पड़ती है)

द्रष्टा ग्रह (देखने वाले ग्रह)

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
	कला वि० क० वि०							
सूर्य	०	२६'-२७''	५'-२७''	०	८'-३८''	०	३'-२६''	४२'-२२''
चंद्र	४१'-४६''	०	४-२७	४८-५७	०	५२-३८	०-२५	२६-४२
मंगल	३१-२२	५५-३२	०	१३-१६	५७-४३	०-२३	०	६-५४
बुध	०	१५-५०	०	०	११-२८	०	०	३५-११
गुरु	५०-१९	०	४-३३	४७-५२	०	५७-०	३-३०	२८-५३
शुक्र	५-४	५८-९	०	०	५९-१५	०	०	२२-१८
शनि	५६-३३	४४-४७	०	४५-०	४५-५२	०	०	३५-४३
राहु	५-१५	५-५१	२८-४९	१९-३७	६-५६	३७-४१	३२-५१	०

उपरोक्त दृष्टि कलात्मक है। पूर्ण दृष्टि १° या ६०' की होती है। इस कारण १५' के भीतर १ पाद दृष्टि, ३०' के भीतर द्विपाद दृष्टि, ४५' के भीतर त्रिपाद दृष्टि और इस के ऊपर पूर्ण दृष्टि समझी जाती है।

इस चक्र से प्रगट होता है कि सूर्य पर गुरु और शनि की पूर्ण दृष्टि है, चंद्र की पौन दृष्टि, मंगल की अर्द्ध दृष्टि है। शुक्र और राहु की दृष्टि अल्प होने से ० के बराबर है।

जिस प्रकार प्रत्येक ग्रहों पर दृष्टि साधन की जाती है उसी प्रकार प्रत्येक भाव पर दृष्टि साधन की जाती है जिस से प्रगट होता है कि किस भाव पर किस-किस ग्रह की कितनी-कितनी दृष्टि पड़ रही है।

भाव पर ग्रह दृष्टि साधन

१ सूर्य की दृष्टि प्रत्येक भाव पर साधन करते हैं। यहाँ भाव दृश्य है ग्रह द्रष्टा है।

१ (१)	लग्न	११-०-२८-११	१०-०-०-०	८६-५४-५५ ÷ २
	रवि	३-२७-२३-६	७-३-५-५	= ४३'-२७''-२७'''
	शेष	७-३-५-५	२-२६-५४-५५	लग्न पर सूर्य दृष्टि
			= ८६°-५४'-५५''	
१ (२)	धन	०-१-१८-४६	१०-०-०-०	५६-४-२० ÷ २
	रवि	३-२७-२३-६	८-३-५५-४०	= २८'-२''-१०
	शेष	८-३-५५-४०	१-२६-४-२०	धन पर सूर्य दृष्टि
			= ५६°-४'-२०''	

१ (३) सहज १–२–९–२१
रवि ३–२७–२३–६
शेष ९–४–४६–१५

१०–०–०–०
९–४–४६–१५
०–२५–१३–४५
= २५–१३–४५

२५–१३–४५ ÷ २
= १२′–३६″–५२
सहज पर रवि दृष्टि

१ (४) सुख २-२–५१–५६
रवि ३–२७–२३–६
शेष १०

= शेष १०
दृष्टि = ०

१ (५) सुत ३–२–९–२१
रवि ३–२७–२३–६
शेष ११ = दृष्टि = ०

१ (६) रिपु ४–१–१८–४६
रवि ३–२७–२३–६
शेष ० = दृष्टि = ०

१ (७) जाया ५–०–२८–११
रवि ३–२७–२३–६
शेष १–३–५–५

अंश ÷ २
३–५–५ ÷ २
= १′–३२″–३२ जाया पर रवि दृष्टि

१ (८) मृत्यु ६–१–१८–४६
रवि ३–२७–२३–६
शेष २–३–५५–४०

अंश + १५ अंश ३–५५–४०
+ १५
१८–५५–४०
= १८′–५५″–४० मृत्यु पर रवि दृष्टि

रा अंश
१ (९) धर्म ७– २°– ९,–२१″
रवि ३–२७ –२३ – ६
शेष ३– ४ –४६ –१५

४५– २
४–४६–१५ ÷ २
= २–२३–६

४५– ०– ०
२–२३– ६
४२–३६–५४ धर्म पर
=४२′-३६″-५४ रवि दृष्टि

१ (१०) कर्म ८– २–५९–५६
रवि ३–२७–२३– ६
शेष ४– ५–३६–५०

३०–अंश ३०– ०– ० = २४′–२३″–१०
५–३६–५० कर्म पर रवि दृष्टि
२४–२३–१०

१ (११) आय ९– २– ९–२१
रवि ३–२७–२३– ६
शेष ५– ४–४६– १५

अंश × २ ४–४६–१५ × २
= ९′-३२″-३० आय पर रवि दृष्टि

१ (१२) व्यय १०– १–१८–४६   १०– ०– ०– ०   ११६–७–२०÷२
रवि ३–२७–२३– ६   ६– ३–५२–४० =५८′-३″-४० व्यय पर
शेष ६– ३–५२–४०   ३–२६– ७–२०   रवि दृष्टि
= ११६°–७′–२०″

२ चंद्र की दृष्टि साधन

(१) लग्न ११– ०–२८–११   अंश + १५   २–९–३३–५६
चंद्र ८–२०–५५–३५   + १५
शेष २– ९–३३–५६   २४–३३–३६ दृष्टि

अंश

२ (२) धन ०– १–१८–४६   ४५– २   ४५– ०– ०
चंद्र ८–२०–५५–३५   १०–२३–११÷२   ५–११–३५
शेष ३–१०–२३–११ = ५–११–३५   ३९- ४८- ५ दृष्टि

२ (३) सहज १– २– ९–२१   ३०–अंश ३०– ०– ०
चंद्र ८–२०–५५–३५   ११–१३–४६
शेष ४–११–१३–४६   १८–४६–१४ दृष्टि

२ (४) सुहृद २– २–५९–५६   अंश × २
चंद्र ८–२०–५५–३५   १२–४–२१ × २
शेष ५–१२– ४–२१   = २४′–८″–४२ दृष्टि

२ (५) सुत ३– २– ९–२१   १०– ०– ०– ०   १०८–४६–१४÷२
चंद्र ८–२०–५५–३५   ६–११–१३–४६   = ५४′–२३″–७ दृष्टि
शेष ६–११–१३–४६   ३–१८–४६–१४
= १०८°–४६′–१४″

२ (६) रिपु ४– १–१८–४६   १०– ०– ०– ०   ७९–३६–४९÷२
चंद्र ८–२०–५५–३५   ७–१०–२३–११   = ३९–४८–२४ दृष्टि
शेष ७–१०–२३–११   २–१९–३६–४९
= ७९°–३६–४९″

२ (७) जाया ५– ०–२८–११   १०– ०– ०– ०   ५०–२७–२४÷२
चंद्र ८–२०–५५–३५   ८– ९–३२–३६   = २५′–१३″–४२ दृष्टि
शेष ८– ९–३२–३६   १–२०–२७–२४
= ५०°–२७′–२४″

२ (८) मृत्यु ६–१ –१८–४६   १०– ०– ०– ०   १९–३६–४९ ÷ २
चंद्र ८–२०–५५–३५   ९–१०–२३–११   = ९′–४८″–२४ दृष्टि
शेष ९–१०–२३–११   ०–१९–३६–४९
= १९–३६–४९

२ (९) धर्म ७- २- ९-२१   २ (१०) कर्म ८- २-५९-५६   ३ (११) आय९-२-९-२१
चंद्र ८-२०-५५-३५   चंद्र -८-२०-५५-३६   चंद्र ८-२०-५५-३५
शेष १०= दृष्टि ०   शेष ११ = दृष्टि ०   शेष ० = दृष्टि ०

२ (१२) व्यय १०–१ –१८–४६   अंश ÷ २
चंद्र ८–२०–५५–३५   १०–२३–११ ÷ २
शेष १–१०–२३–११   = ५′–११–३५ दृष्टि

३ मंगल की दृष्टि साधन

१ लग्न ११– ०–२८–११   १०–० –० – ०   १५–५९–४७ ÷ २
मंगल १–१६–२७–५८   ९–१४–० –१३   = ७′–५९″–५३ दृष्टि
शेष ९–१४– ०–१३   ०–१५–५९–४७
= १५–५९–४७

३ (२) धन ०-१- १८-४६ | ३ (३) सहज १-२ - ९-११ | ३ (४) सुख २- २-५९-१६
मंगल १-१६-२७-५८ | मंगल १-१६-२७-५८ | मंगल १-१६-२७-५८
शेष १० = दृष्टि ० | शेष ११ = दृष्टि ० | शेष ० = दृष्टि ०

३ (५) सुत ३–२–९–११   अंश ÷ २
मंगल १–१६–२७–५८   १५–४१–२३ ÷ २
शेष १–१५–४१–२३   = ७′–५०″–४१ दृष्टि

३ (६) रिपु ४–१–१८–४६   अंश × $\frac{३}{२}$ + १५   १४–५०–५८ | २२–१६–२७
मंगल १–१६–२७–५८   +७–२५–२९= $\frac{१}{२}$ | + १५
शेष २–१४–५०–४८   २२–१६–२७ | ३७–१६–२७दृष्टि

३ (७) जाया ५–०–२८–११   (६०–अंश) ६०–०–०
मंगल १–१६–२७–५८   १४–०–१३
शेष ३–१४–०–१३   ४५–५९–४७ दृष्टि

३ (८) मृत्यु ६–१–१८–४६   (३०–अंश) ३०–०–०
मंगल १–१६–२७–५८   १४–५०–४८
शेष ४–१४–५०–४८   १५–९–१२ = दृष्टि

३ (९) धर्म ७–२–९–२१   (अंश × २) १५–४१–२३ × २
मंगल १–१६–२७–५८   = ३१′–२२″–४६ दृष्टि
शेष ५–१५–४१–२३

३ (१०) कर्म ८–२–५९–५६ शेष ६ विशेष दृष्टि
मंगल १–१६–२७–५८ = ६०′ दृष्टि
शेष ६–१६–३१–५८

३ (११) आय ९–२–३–२१ (६०–अंश) ६०–०–०
मंगल १–१६–२७–५८ १५–४१–२३
शेष ७–१५–४१–२३ ४४–१८–३७ दृष्टि

३ (१२) व्यय १०–१–१८–४६ १०–०–०–० ४५–९–२ ÷ २
मंगल १–१६–२७–५८ ८–१४–५०–५८ = २२′–३४″–३१ दृष्टि
शेष ८–१४–५०–५८ १–१५–९–२
= ४५°–९′–२″

४ बुध दृष्टि साधन

(१) लग्न ११–०–२८–११ १०–०–०–० ७२–३२–२४ ÷ २
बुध ३–१३–०–३५ ७–१९–२७–३६ = ३६′–१६″–१२ दृष्टि
शेष ७–१७–२७–३६ २–१२–३२–२४
= ७२°–३२′–२४″

४ (२) धन ०– १–१८–४६ १०– ०– ०– ० ४१–४१–४९ ÷ २
बुध ३–१३– ०–३५ ८–१८–१८–११ = २०′–५०″–५४ दृष्टि
शेष ८–१८–१८–११ १–११–४१–४९
= ४१°–४१′–४९″

४ (३) सहज १–२–९–२१ १०–०–०–० १०–५१–१४ ÷ २
बुध ३–१३–०–३५ ९–१९–८–४६ = ५′–२५″–३७ दृष्टि
शेष ९–१९–८–४६ ०–१०–५१–१४
= १०–५१–१४

४ (४) सुख २–२–५९–५६ ४ (५) सुत ३–२–९–२१ ४ (६) रिपु ४–१–१८–४६
बुध ३–१३–०–३५ बुध ३–१३–०–३५ बुध ३–१३–०–३५
शेष १० = दृष्टि ० शेष ११ = दृष्टि ० शेष = ० = दृष्टि ०

४ (७) जाया ५–०–२८–११ अंश ÷ २
बुध ३–१३–०–३५ १७–२७–३७ ÷ २
शेष १–१७–२७–३७ = ८′–४३″–४८ दृष्टि

४ (८) मृत्यु ६–१–१८–४६ अंश + १५ १८–१८–११
बुध ३–१३–०–३५ + १५
शेष २–१८–१८–११ ३३–१८–११ दृष्टि

४ (९) धर्म ७–२–९–२१   ४५–अंश/२   ४५–०–०
बुध ३–१३–०–३५   १–९–८–४६ ÷ २   ९–३४–२३
शेष ३–१९–८–४६   = ९–३४–२३   = ३५–२५–३७ दृष्टि

४ (१०) कर्म ८–२–५९–५६   (३०–अंश) ३०–०–०
– बुध ३–१३–०–३५   १९–५९–२१
शेष ४–१९–५९–२१   १०–०–३९ दृष्टि

४ (११) आय ९–२–९–२१   अंश × २   १९–८–४६ × २
बुध ३–१३–०–३५   = ३८′–३७″–३२ दृष्टि
शेष ५–१९–८–४६

४ (१२) व्यय १०–१–१८–४६   १०–०–०–०   १०१–३९–४९ ÷ २
बुध ३–१३–०–३५   ६–१८–१८–११   = ५०′–५०″–५४ दृष्टि
शेष ६–१८–१८–११   = ३–११°–३९-४९

५ गुरु की दृष्टि साधन

(१) लग्न ११– ०–२८–११   (अंश + १५)   = दृष्टि
गुरु ८–१८–४४–५६   ११–४३–१५   २६′-४३″-१५‴
शेष = २–११-४३–१५   + १५–
२६–४३–१५

५ (२) धन ०– १–१८–४६   (अंश/२ + ४५)   ६-१६-५५
गुरु ८–१८–४४–५६   १२-३३-५० ÷ २   + ४५
३–१२–३३–५०   = ६-१६-५५   ५१-१६-५५ दृष्टि

५ (३) सहज १– २– ९–२१   ६०– (अंश × २)   ६०- ०- ०
गुरु ८–१८–४४–५६   १३-२४-२५ × २   २६-४८-५०
= ४–१३–२४–२५   = २६-४८-५०   ३३-११-१० दृष्टि

५ (४) सुख २– २–५९–५६   अंश × २
गुरु ८–१८–४४–५६   १४–१५–० × २
शेष ५–१४–१५–. ०   २८′–३०″–० दृष्टि

५ (५) सुत ३– २– ९–२१   १०- ०- ०- ०   १०६-३५-३५ ÷ २
गुरु ८–१८–४४–५६   ६-१३-२४-२५   ५३-१७-४७ दृष्टि
शेष ६–१३–२४–२५   ३-१६-३५-३५
= १०६°-३५-३५

५ (६) रिपु ४- १-१८-५६ अंश + ४५ ६-१६-३२
गुरु ८-१८-४४-५६ २) १२-३३-५० ÷ २ + ४५
शेष ७-१२-३३-५० = ६-१६-३२ ५१-१६-३२ दृष्टि

५ (७) जाया ५- ०-२८-११ ६०- (अंश × $\frac{3}{2}$) ११-४३-१५ ६०- ०- ०
गुरु ८-१८-४४-५६ +५-५१-३७=$\frac{3}{2}$ १७-३४-५२
शेष ८-११-४३-१५ १७-३४-५२ ४२-२५- ८ दृष्टि

५ (८) मृत्यु ६- १-१८-४६ १०- ०- ०- ० १७-२६-१० ÷ २
गुरु ८-१८-४४-५६ ९-१२-३३-५० = ८′-४३″-५ दृष्टि
शेष ९-१२-३३-५० ०-१७-२६-१०
= १७-२६-१०

५ (९) धर्म ७ -२-९-२१ ५ (१०) कर्म ८-२- ५९-५६ ५ (११) आय ९- २- ९-२१
गुरु ८-१८-४४-५६ गुरु ८-१८-४४-५६ गुरु ८-१८-४४-५६
शेष १० =दृष्टि =० शेष ११ = दृष्टि ० ० = दृष्टि ०

५ (१२) व्यय १०- १-१८-४६ अंश ÷ २
गुरु ८-१८-४४-५६ १२-३३-५० ÷ २
शेष १-१२-३३-५० =६′-१६″-५५ दृष्टि

६ शुक्र की दृष्टि साधन

(१) लग्न ११-०-२८-११ १०- ०- ०- ० ४६-४६-४८ ÷ २
शुक्र २-१७-१४-५९ ८-१३-१३-१२ = २३′-२३″-२४ दृष्टि
शेष ८-१३-१३-१२ १-१६-४६-४८
=४६°-४६-४८

६ (२) धन ०- १-१८-४६ १०- ०- ०- ० १५-५६-१३ ÷ २
शुक्र २-१७-१४-५९ ९-१४-३ -४७ = ७′-५८″-६ दृष्टि
शेष ९-१४- ३-४७ ०-१५-५६-१३
= १५-५६-१३

६ (३) सहज १- २- ९-२१ ६ (४) सुख २- २-५९-५६ ६ (५) सुत ३-२ -९ १२-
शुक्र २-१७-१४-५९ शुक्र २-१७-१४-५९ शुक्र २-१७-१४-५९
शेष १० = दृष्टि ० शेष ११ = दृष्टि ० शेष = ० = दृष्टि ०

६ (६) रिपु ४- १-१८-४६ अंश ÷ २ १४-३-४७ ÷ २
शुक्र २-१७-१४-५९ =७′-१″-५३ दृष्टि
शेष १-१४- ३-४७

६ (७) जाया ५– ०–२८–११   अंश + १५   १३–१३–१२
शुक्र २–१७–१४–५९   + १५
शेष २–१३–१३–१२   २८–१३–१२ दृष्टि

६ (८) मृत्यु ६– १–१८–४६ $४५ - \frac{अंश}{२}$ ४५– ०– ०
शुक्र २–१७–१४–५९   –७– १–५३
शेष ३–१४– ३–४७   १४–३–४७ ÷ २   ३७–५८– ७ दृष्टि
= ७–१–५३

६ (९) धर्म ७–२–९–११   (३०–अंश)   ३०–०–०
शुक्र २–१७–१४–५९   १४–५४–१२
शेष ४–१४–५४–१२   १५–५–४८ = दृष्टि

६ (१०) कर्म ८–२–५९–५६   (अंश × २)   १५–४४–५७ × २
शुक्र २–१७–१४–५९   = ३१–२९–५४ दृष्टि
शेष ५–१५–४४–५७

६ (११) आय ९–२–९–२१   १०–०–०–०   १०५–५–३८ ÷ २
शुक्र २–१७–१४–५९   ६–१४–५४–२२   = ५२'–३२''–४९ दृष्टि
शेष ६–१४–५४–२२   ३–१५–५–३८
= १०५–५–३८

६ (१२) व्यय १०–१–१८–४६   १०–०–०–०   ७५–५६–१३ ÷ २
शुक्र २–१७–१४–५९   ७–१४–३–४७   = ३७'–५८''–६ = दृष्टि
शेष ७–१४–३–४७   २–१५–५६–१३
= ७५–५६–१३

७ शनि की दृष्टि साधन

(१) लग्न ११–०–२८–११   ६०–(अंश × २)   ६०–०–०
शनि १–२०–३०–१०   ९–५८–१ × २   १९–५६–२
शेष ९–९–५८–१   = १९–५६–२   ४०–३–५८ = दृष्टि

७ (२) धन ०–१–१८–४६   ७ (३) सहज १–२–९–२१   ७ (४) सुख २–२–५९–५६
शनि १–२०–३०–१०   शनि १–२०–३०–१०   शनि १–२०–३०–१०
शेष १० = दृष्टि ०   शेष ११ = दृष्टि ०   शेष ० = दृष्टि ०

७ (५) सुत ३–२–९–२१   (अंश × २)   ११–३९–११ × २
शनि १–२०–३०–१०   = २३'–१८''–२२ दृष्टि
शेष १–११–३९–११

७ (६) रिपु ४–१–१८–४६   ६०–अंश/२   ६०–०–०

शनि १–२०–३०–१०   १०–४८–३६÷२   ५–२४–१८

शेष २–१०–४८–३६   =५–२४–१८   ५४–३५–४२ = दृष्टि

७ (७) जाया ५–०–२८–११   ४५–अंश/२   ४५–०–०

शनि १–२०–३०–१०   ९–५८–१÷२   ४–५९–०

शेष ३–९–५८–१   =४–५९–०   ४०–१–०=दृष्टि

७ (८) मृत्यु ६–१–१८–४६   (३०–अंश)   ३०–०–०

शनि १–२०–३०–१०   १०–४८–३६

शेष ४–१०–४८–३६   १९–११–२४ = दृष्टि

७ (९) धर्म ७–२–९–२१   (अंश × २)

शनि १–२०–३०–१०   ११–३९–१० × २

शेष ५–११–३९–१०   =२३′–१८″–२० = दृष्टि

७ (१०) कर्म ८–२–५९–५६   १०–०–०–०   १०७–३०–१४÷२

शनि १–२०–३०–१०   ६–१२–२९–४६   = ५३′–४५″–७ दृष्टि

शेष ६–१२–२९–४६   ३–१७–३०–१४

=१०७–३०–१४

७ (११) आय ९–२–९–२१   १०–०–०–०   ७८–१०–४९÷२

शनि १–२०–३०–१०   ७–११–३९–११   ३९′–१०″–२४ दृष्टि

शेष ७–११–३९–११   २–१८–२०–४९

=७८–१०–४९

७ (१२) व्यय १०–१–१८–४६   (अंश + ३०)   १०–४८–३६

शनि १–२०–३०–१०   +३०

शेष ८–१०–४८–३६   ४०–४८–३६=दृष्टि

८ राहु की दृष्टि साधन

(१) लग्न ११–०–२८–११   ८ (२) धन ०–१–१८–४६

राहु ११–२–३८–३१   राहु ११–२–३८–३१

शेष ११ = दृष्टि ०   शेष ० = दृष्टि ०

८ (३) सहज १–२–९–२१   (अंश÷२)

राहु ११–२–३८–३१   २९–४०–५०÷२

शेष १–२९–३०–५०   = १४′–४५″–२५ दृष्टि

८ (४) सुख २-२-५९-५६ (४५ - अंश/२) 45-0-0

राहु ११-२-३८-३१ ०-२१-२५÷२ -०-१०-४२

शेष ३-०-२१-३५ = ०-१०-४२ = ४४-४९-१८ = दृष्टि

८ (५) सुत ३-२-९-२१ (४५ - अंश/२) ४५-०-०

राहु ११- २-३८-३१ २९-३०-५० + २ १४-४५-२५

शेष ३-२९-३०-५० = १४-४५-२५ ३०-१४-३५ = दृष्टि

८ (६) रिपु ४-१-१८-४६ (३०-अंश) ३०-०-०

राहु ११- २-३८-३१ २८-४०-१५

शेष ४-२८-४०-१५ १-१९-४५ = दृष्टि

८ (७) जाया ५-०-२८-११ अंश × २ २७-४९-४० × २

राहु ११- २-३८-३१ = ५५′-३९″-२० दृष्टि

शेष ५-२७-४९-४०

८ (८) मृत्यु ६-१-१८-४६ १०-०-०-० ९१-१९-४५ ÷ २

राहु ११- २-३८-३१ ६-२८-४०-१५ = ४५′-३९″-५२ = दृष्टि

शेष ६-२८-४०-१५ ३- १-१९-४५

= ९१°-१९-४५

८ (९) धर्म ७-२-९-२१ १०-०-०-० ६०-२९-१० ÷ २

राहु ११- २-३८-३१ ७-२९-३०-५० = ३०′-१४″-३५ दृष्टि

शेष ७-२९-३०-५० २-०-२९-१०

= ६०°-२९-१०

८ (१०) कर्म ८-२-५९-५५ १०-०-०-० २९-३८-३५ ÷ २

राहु ११-२-३८-३१ ९-०-२१-२५ = १४′-४९-१७ = दृष्टि

शेष ९-०-२१-२५ ०-२९-३८-३५

= २९-३८-३५

८ (११) आय ९-२-९-२१ १०-०-०-० ०-२९-१० ÷ २

राहु ११-२-३८-३१ ९-२९-३०-५० = ०′-१४″-३५ = दृष्टि

शेष ९-२९-३०-५० ०-०-२९-१०

८ (१२) व्यय १०-१-१८-४६ = ०-२९-१०

राहु ११-२-३८-३१

शेष १० दृष्टि = ०

भाव पर ग्रह दृष्टि चक्र

ग्रह	लग्न	धन	सहज	सुख	सुत	रिपु	जाया	मृत्यु	धर्म	कर्म	आय	व्यय
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
	कला वि०											
१ सूर्य	४३′-२७″	२८′-२″	१२′-३६″	०	०	०	१′-३२″	१८′-५५″	४२′-३६″	२४′-२३″	९′-३२″	५८′-३″
२ चंद्र	२४-३३	३९-४८	१८-४६	२४-८५	५४-२३	३९-४८	२५-१३	९-४८	०	०	०	५-११
३ मंगल	७-५९	०-	०	०	७-५०	३७-१६	४५-५९	१५-९	३१-१२	६०-०	४४-१८	२२-३४
४ बुध	३६-१६	२०-५०	५-२५	०	०	०	८-४३	३३-१८	३५-२५	१०-०	३८-१७	५०-५०
५ गुरु	२६-४३	५१-१६	३३-११	२८-३०	५३-१७	५१-१६	४२-२५	८-४३	०	०	०	६-१६
६ शुक्र	२३-२३	७-५८	०	०	०	७-१	२८-१३	३७-५४	१५-५	३१-२९	५२-३२	३७-५८
७ शनि	४०-३	०	०	०	२३-१८	५४-३५	४०-१	१९-११	२३-१८	५३-४५	३९-१०	४०-४८
८ राहु	०-	०	१४-४५	४४-४९	३०-१४	१-१९	५५-३९	४५-३९	३०-१४	१४-४९	०-१४	०

उपरोक्त दृष्टि साधन केशरी जातक पद्धति के मत से किया है। जिसे ही बहुधा ज्योतिषी लोग उपयोग करते हैं। दृष्टि साधन की अन्य रीतियाँ भी हैं जो आगे बताई गई हैं।

पाराशरी मत से दृष्टि साधन इस प्रकार है:—

(दृश्य–द्रष्टा) = शेष राशि

साधारण दृष्टि

शेष १ राशि से अधिक	शेष राशि २ से अधिक	शेष राशि ३ से अधिक	शेष राशि ४ से अधिक	शेष राशि ५ से अधिक	शेष राशि ६ से अधिक
राशि छोड़ केवल अंशादि + २	राशि छोड़ केवल अंशादि + १५	(४ रा०–शेष राशि आदि) ÷ २ + ३०	(५ रा०–शेष राशि आदि	शेष राशि छोड़ केवल अंशादि × २	(१० रा०–शेष राशि आदि) फिर सब के अंश बना कर + २

यह रीति दूसरी रीति से ठीक मिलती है। इस रीति से गणित करने में कोई अंतर नहीं आता। इस प्रकार साधन दृष्टि साधन होता है।

परन्तु विशेष दृष्टि साधन करने के लिये उपरोक्त प्रकार से साधारण दृष्टि निकाल कर उस में इस प्रकार और जोड़ना पड़ता है :—

(१) शनि ३–१० स्थान को देखता है = उपरोक्त दृष्टि बल + ४५'
(२) मंगल ४–८ „ „ = „ „ + १५'
(३) गुरु ५–९ „ „ = „ „ + ३०'

अर्थात् साधारण पाव दृष्टि ३–१० स्थान पर होती है इस को पूर्ण दृष्टि बनाने को ३°/४ = ४५ और जोड़ना पड़ेगा तब शनि की पूर्ण दृष्टि होगी। (२) पौन दृष्टि ४–८ स्थान में होती है उस में १५' और जोड़ने पर मंगल की पूर्ण दृष्टि होगी। (३) अर्द्ध दृष्टि ५–९ स्थान में होती है उसे पूर्ण दृष्टि बनाने को ३०' और जोड़ दो तो गुरु की पूर्ण दृष्टि हो जायगी।

परन्तु इस प्रकार से विशेष दृष्टि शनि मंगल और गुरु को निकालने में पूर्वोक्त रीति से प्राप्त उत्तर से कुछ अंतर पड़ जाता है।

श्रीपति ने भी इसी से मिलती हुई दृष्टि साधन की रीति बनाई है।

श्रीपति पद्धति में इस प्रकार दृष्टि साधन करना बताया है :—

(दृश्य–द्रष्टा) = शेष राशि।

साधारण दृष्टि

शेष राशि १ से अधिक (शेष राशि-१ राशि)=सब की कला बनाकर ÷ ७२००	शेष २ राशि से अधिक (शेष रा०-२रा०) =सर्वकला + ६०० ÷ ३६००	शेष ३ राशि से अधिक (४रा०– शेष रा०) =सर्व कला + ३६०० ÷ ७२००	शेष ४ राशि से अधिक (५ रा०–शेष) = सर्व कला ÷ ३६००	शेष ५ राशि से अधिक (शेष–५ रा०) = सर्व कला ÷ १८००	शेष ६ राशि से अधिक (१०रा.–शेष) = सर्व. कला ÷ ७२००

इस रीति से गणित करने में और उपरोक्त पाराशर को बनाई रीति में कोई अंतर नहीं पड़ता। साधारण दृष्टि इस रीति से निकालने पर जो उत्तर आता है वह पहिली रीति से निकाले हुए उत्तर से मिल जाता है। इस में घटाने से जो बचता है उन सब की कला बना कर जोड़ना या भाग देना पड़ता है। २ अंश की ७२०० विकला होती है, इसी प्रकार और भी निकाल कर भाग दिया है। इस प्रकार साधारण दृष्टि निकलती है।

परन्तु इस में भी विशेष दृष्टि गुरु मंगल शनि की निकालने के लिये साधारण प्रकार से दृष्टि निकाल कर सब रूप (अंश) का $\frac{3}{4}$ शनि में, $\frac{1}{2}$ गुरु में, और $\frac{1}{4}$ मंगल में और निकाल कर जोड़ना पड़ता है तब विशेष दृष्टि निकलती है।

दृष्टि साधन सारिणी

१ साधारण ग्रह की दृष्टि की सारिणी

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	०	०॥	१	१॥	२	२॥	३	३॥	४	४॥	५	५॥	६	६॥	७	७॥	८	८॥	९	९॥	१०	१०॥	११	११॥	१२	१२॥	१३	१३॥	१४	१४॥
२	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
३	४५	४४॥	४४	४३॥	४३	४२॥	४२	४१॥	४१	४०॥	४०	३९॥	३९	३८॥	३८	३७॥	३७	३६॥	३६	३५॥	३५	३४॥	३४	३३॥	३३	३२॥	३२	३१॥	३१	३०॥
४	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१
५	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
६	६०	५९॥	५९	५८॥	५८	५७॥	५७	५६॥	५६	५५॥	५५	५४॥	५४	५३॥	५३	५२॥	५२	५१॥	५१	५०॥	५०	४९॥	४९	४८॥	४८	४७॥	४७	४६॥	४६	४५॥
७	४५	४४॥	४४	४३॥	४३	४२॥	४२	४१॥	४१	४०॥	४०	३९॥	३९	३८॥	३८	३७॥	३७	३६॥	३६	३५॥	३५	३४॥	३४	३३॥	३३	३२॥	३२	३१॥	३१	३०॥
८	३०	२९॥	२९	२८॥	२८	२७॥	२७	२६॥	२६	२५॥	२५	२४॥	२४	२३॥	२३	२२॥	२२	२१॥	२१	२०॥	२०	१९॥	१९	१८॥	१८	१७॥	१७	१६॥	१६	१५॥
९	१५	१४॥	१४	१३॥	१३	१२॥	१२	११॥	११	१०॥	१०	९॥	९	८॥	८	७॥	७	६४	६	५॥	५	४॥	४	३॥	३	२॥	२	१॥	१	०॥
१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

२ मंगल की विशेष दृष्टि की सारिणी

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
२	१५	१६॥	१८	१९॥	२१	२२॥	२४	२५॥	२७	२८॥	३०	३१॥	३३	३४॥	३६	३७॥	३९	४०॥	४२	४३॥	४५	४६॥	४८	५१॥	५१	५२॥	५४	५५॥	५७	५८॥
३	६०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१
६	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०
७	६०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१

३ गुरु की विशेष दृष्टि की सारिणी

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
३	४५	४५॥	४६	४६॥	४७	४७॥	४८	४८॥	४९	४९॥	५०	५०॥	५१	५१॥	५२	५२॥	५३	५३॥	५४	५४॥	५५	५५॥	५६	५६॥	५७	५७॥	५८	५८॥	५९	५९॥
४	६०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२
७	४५	४५॥	४६	४६॥	४७	४७॥	४८	४८॥	४९	४९॥	५०	५०॥	५१	५१॥	५२	५२॥	५३	५३॥	५४	५४॥	५५	५५॥	५६	५६॥	५७	५७॥	५८	५८॥	५९	५९॥
८	६०	५८॥	५७	५५॥	५४	५२॥	५१	४९॥	४८	४६॥	४५	४३॥	४२	४०॥	३९	३७॥	३६	३४॥	३३	३१॥	३०	२८॥	२७	२५॥	२४	२२॥	२१	१९॥	१८	१६॥

४ शनि की विशेष दृष्टि की सारिणी

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
१	०	२	४		८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
२	६०	५९॥	५९	५८॥	५८	५७॥	५७	५६॥	५६	५५॥	५५	५४॥	५४	५३॥	५३	५२॥	५२	५१॥	५१	५०॥	५०	४९॥	४९	४८॥	४८	४७॥	४७	४६॥	४६	४५॥
८	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
९	६०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२

दृष्टि साधन सारिणी देखने की रीति

(दृश्य-द्रष्टा) = शेष राशि अंश आदि ।

इस सारिणी में आरंभ के बाईं ओर के कोठे में राशि और ऊपर के आड़े कोठे में अंश दिये हैं । शेष का राशि अंश के सामने कला दृष्टि प्राप्त होगी ।

यहाँ राशि और अंश की दृष्टि कला मिलती है । अब शेष राशि की कला विकला की दृष्टि निकालना शेष रहता है । उसकी भी यदि दृष्टि निकालनी है तो उस कोठे के और आगे के अंश के नीचे दी हुई कला दृष्टि लेकर दोनों का अंतर निकालो । वह ऐष्य (आगे की) कला अधिक हो तो +, कम हो तो–(ऋण) जानना । अंतर को शेष कला विकला में गुणा करना, जो प्राप्त हो उसे पूर्व प्राप्त अंक में ऊपर बताये अनुसार ± करना । परन्तु इस गुणन फल को विकला जानना, क्योंकि गुणा करने के बाद ६० का भाग देने से उतनी ही विकला आती हैं । इस प्रकार पूरी शेष की दृष्टि निकल आयगी ।

साधारण दृष्टि में १ सारिणी लेना । मंगल की विशेष दृष्टि के लिये २, गुरु के लिये ३, और शनि के लिये ४ संख्या की सारिणी लेना ।

यदि मंगल, गुरु, शनि की विशेष दृष्टि हो तो केवल नीचे दी हुई उनकी विशेष सारिणी, २, ३, ४ में अंक खोजो । यदि वहाँ बाँई ओर दी हुई शेष राशि हो तो तव उनका उपयोग करना । यदि वहाँ दी हुई राशियों से भिन्न हो तो ऊपर की साधारण सारिणी उपयोग करना ।

उदाहरण—रीति = (दृश्य-द्रष्टा) = शेष । सारिणी में शेष की राशि अंश के सामने का अंक और अग्रिम अंक का अंतर = ऐष्य अंतर (आगे का अधिक +, कम–)

सारिणी के राशि अंश के सामने का अंक ± ऐष्य अंतर × शेष कलादि = (गुणन फल विकला) = दृष्टि कलात्मक ।

(१) दृश्य मंगल १–१६–२७–५८   ९ रा.–१९° = ५ ॥ कला   शेष ४′–५२″

–रवि द्रष्टा ३–२७–२३– ६   ९   –२० = ५   × ½ अंतर

शेष ९–१९– ४–५२ ऐष्य अंतर = ॥ऋण   २–२६ ऋण

पूर्व प्राप्त = ५–३०

—   ०– २–२६   = ५′–२७″–३४

५–२७–३४   दृष्टि

रा

(२) दृश्य चंद्र ८-२०°-५५′-३५″ ७-४°=५६′ शेष २७-३७×१ ५६-०

द्रष्टा मंगल १-१६ -२७ -५८ ७-५ =५५ =२७%३७″ -२७-३७

शेष ७- ४ -२७ -३७ अंतर १ ऋण =५५-३२-२३ दृष्टि

यहाँ ७ राशि मंगल की विशेष दृष्टि सारिणी में दिया है इससे विशेष सारिणी २ का उपयोग किया।

(३) गुरु दृश्य ८-१८-४४-५६
शनि द्रष्टा १-२०-३०-१०
शेष ६-२८-१४-४६

यहाँ ४ सारिणी शनि की दी है पहिले उस में देखो शेष ६ राशि वहाँ नहीं दी है इससे प्रगट हुआ विशेष दृष्टि नहीं है।

साधारण दृष्टि है तो सारिणी १ में से दृष्टि साधन किया।

रा

शेष ६-२८° = ४६′ शेष १४-४६ पूर्व प्राप्त काल ४६-०

६-२९ = ४५॥ × ½ अंतर प्राप्त ,, ७-२३

अंतर ॥ऋण = ७-२३ ऋण शेष ४५-५२-३७

(आगे का कम होने से ऋण) = ४५′-५२″-३७ दृष्टि

इस प्रकार सारिणी से निकाली हुई दृष्टि पूर्व :रीति से निकाली हुई दृष्टि के उत्तर से लगभग मिल जाती है। सारिणी से दृष्टि निकलना सरल है।

अध्याय १९

वर्ग साधन

प्रत्येक राशि के सूक्ष्म विभाग करने से उनका सूक्ष्म फल प्रगट होता है। राशि के सूक्ष्म विभाग करने को वर्ग साधन करना कहते हैं।

किसी भी राशि के जो विभाग होते हैं उनके नाम नीचे दिये हैं—

(१) होरा = राशि का $\frac{1}{2}$ भाग। प्रत्येक भाग १५° का। (२) द्रेष्काण = राशि का $\frac{1}{3}$ भाग। प्रत्येक भाग १०° का। (३) चतुर्थांश ($\frac{1}{4}$ भाग, प्रत्येक भाग ७°-३′ का), (४) सप्तमांश = ($\frac{1}{7}$ भाग = ४°-१७′), (५) नवमांश = ($\frac{1}{9}$ भाग = ३°-२०′) (६) दशमांश ($\frac{1}{10}$ = ३°), (७) द्वादशांश ($\frac{1}{12}$ भाग =

२°–२०' का), (८) षोड़शांश = (१/१६ भाग प्रत्येक २°–५२'–३०" का), (९) विंशांश (१/२० भाग प्रत्येक १°–३०' का) (१०) चतुर्विंशांश (१/२४ भाग प्रत्येक १°–१५' का), (११) भांश (१/२७ भाग प्रत्येक १°-६'–४०" का), (१२) खवेदांश (१/४० भाग प्रत्येक ०°–४५' का) (१३) अक्षवेदांश (१/४८ भाग प्रत्येक ०°–४०' का) (१४) त्रिंशांश (१/३० भाग प्रत्येक १° का), (१५) षष्ठ्यंश (१/६० भाग प्रत्येक ०°–३०' का)

इन में से प्राय: १० महत्त्व के हैं जिन को १० वर्ग कहते हैं—उनके नाम ये हैं।

(१) लग्न, (२) होरा, (३) द्रेष्काण, (४) सप्तमांश (५) नवमांश (६) दशमांश, (७) द्वादशांश, (८) षोडशांश, (९) त्रिंशांश (१०) षष्ठ्यंश।

इन में भी विशेष महत्त्व के विभाग ७ ही हैं जिन को सप्तवर्ग कहते हैं।

(१) लग्न या ग्रह की राशि (२) होरा (३) द्रेष्काण (४) सप्तमांश (५) नवमांश (६) द्वादशांश (७) त्रिंशांश

प्रत्येक राशि के वर्ग विभाग निकालने को वर्ग साधन करना कहते हैं। आगे प्रत्येक वर्ग के साधन करने की रीति बताई है।

(१) होरा

किसी भी राशि के २ समान भाग करने से प्रत्येक भाग १५° का होता है। नीचे चक्र में बताया है कि किसी राशि के पहिले भाग का स्वामी और दूसरे भाग का स्वामी कौन ग्रह होता है। चक्र में राशि का नाम न देकर ग्रहों के स्वस्थान की राशि का नाम दिया है जिससे राशि स्वामी जाना जा सकता है।

होरा चक्र

क्रम	राशि	मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृ०	धन	मकर	कुंभ	मीन
	अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१	१५	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४
२	३०	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५

यहाँ मेष के १५° तक का स्वामी सूर्य है जिसका स्व स्थान सिंह है। इस कारण १५ के सामने ५ (सिंह) लिखा है। १५° के आगे ३०° तक उसी मेष राशि में चंद्र स्वामी होता है। चंद्र का स्वस्थान कर्क है इस कारण वहाँ ४ लिखा है। इस प्रकार जहाँ ५ लिखा है उस का स्वामी सूर्य और जहाँ चंद्र लिखा है उसका स्वामी चंद्र समझना।

उदाहरण—

रा

लग्न ११–०°–२८'–११" अर्थात् मीन राशि के ०°–२८'–११" पर लग्न है। यहाँ मीन राशि के अंश १५° के भीतर है तो मीन के नीचे और १५° के सामने

देखा ४ लिखा है। इससे प्रगट हुआ कि लग्न चंद्र के होरा में है। मान लो सूर्य
रा
३–२७°–२३′–६″ है। यहाँ कर्क का २७°–३′–६″ है तो कर्क के नीचे १५° के ऊपर और ३० के भीतर ५ लिखा है जिसका स्वामी सूर्य होता है। तो सूर्य, सूर्य के ही होरा में हुआ है। चंद्र ८–२०–५५–३५ है। धन के १५° के ऊपर होने से धन के नीचे ३०° के सामने ४ (चंद्र) है तो चंद्र, चंद्र के ही होरा में हुआ। मंगल १–१६–२७–५८ हैं। वृष के १६° होने से वृष के नीचे ३०° के सामने ५ (सूर्य) है तो मंगल, सूर्य के होरा में हुआ। बुध ३–१३–०–३५ है। कर्क १३° है। यह १५° के भीतर होने से कर्क के नीचे १५° के सामने देखा ४ (चंद्र) है तो चंद्र का होता हुआ। गुरु ८–१८–४४–५६ है। धन के १८° में होने से चंद्र के होरा में गुरु हुआ। शुक्र २–१७° है मिथुन के १७° हुए। १५° से ऊपर होने से और ३०° के भीतर होने से ३०° के सामने मिथुन के नीचे देखा। कर्क (चंद्र) का होरा हुआ। शनि १–२०° है। वृष के २०° हैं। वृष के नीचे ३०° के भीतर सिंह (सूर्य) का होरा हुआ। इस प्रकार लग्न और प्रत्येक ग्रह का वर्ग साधन करना पड़ता है और उसी के अनुसार वर्ग कुण्डली बनानी पड़ती है।

होरा कुण्डली

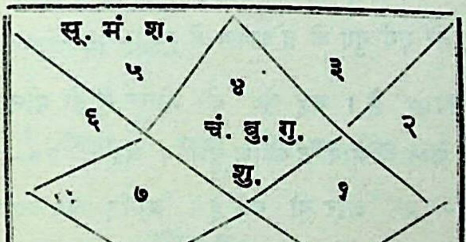

या होरा कुण्डली

चन्द्र	लग्न	शुक्र
बुध	४	गुरु
	५	
सूर्य,	मंगल,	शनि

यहाँ होरा कुण्डली बनाई गई है। लग्न में कर्क राशि का होरा निकला है तो होरा लग्न कर्क हुई। होरा कुंडली में लग्न स्थान में ४ रखा आगे ५ रखा। वहाँ केवल २ स्थान भरे जाते हैं, इससे पूरी कुंडली बनाने की आवश्यकता नहीं होती। केवल २ कोठे बना लेने से काम चल जाता है। जो ग्रह कर्क के होरा में हैं ४ (कर्क) में लिख दो और जो ग्रह ५ (सिंह) के होरा में हैं ५ में लिख दो। यहाँ लग्न कर्क राशि को है और लग्न में चन्द्र बुध गुरु शुक्र है शेष ग्रह सिंह राशि में हैं।

ऊपर जिस लग्न ग्रह स्पष्ट पर से होरा कुण्डली बनाई है आगे उदाहरण में उन्हीं का उपयोग करेंगे।

द्रेष्काण साधन

किसी राशि के ३ समान भाग करने से प्रत्येक भाग का एक द्रेष्काण होता है। प्रत्येक द्रेष्काण १०° का होता है।

द्रेष्काण चक्र

क्रम	देवता (स्वामी)	राशि अंश	१ मेष	२ वृष	३ मि०	४ कर्क	५ सिंह	६ कन्या	७ तुला	८ वृ०	९ धन	१० मकर	११ कुम्भ	१२ मीन
१	नारद	१०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
२	अगस्त्य	२०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
३	दुर्वासा	३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८

यहाँ प्रत्येक १०° पर द्रेष्काण बदल जाता है। जैसे सूर्य ३-२७-२३-६ है। कर्क के २७° हैं। यह २०° के ऊपर और ३०° के भीतर है तो तीसरा द्रेष्काण कर्क राशि का हुआ। कर्क के नीचे और ३०° के सामने १२ (मीन राशि) दिया है तो मीन का द्रेष्काण हुआ, जिस का स्वामी गुरु है; तो सूर्य गुरु के द्रेष्काण में हुआ।

लग्न ११–०–२८–११ है। मीन का ०° है। यह १०° के भीतर है तो मीन का प्रथम द्रेष्काण १२ मीन हुआ। इस से लग्न में मीन द्रेष्काण हुआ। चंद्र ८–२०–५५–३५, धन के २०° गत होकर ५५′–३५″ और हो गये हैं। अर्थात् धन का दूसरा द्रेष्काण का अंत होगा, क्योंकि २०° तक ही दूसरा द्रेष्काण होता है। यहाँ तीसरा द्रेष्काण आरंभ हो गया है। धन के तीसरे द्रेष्काण में अर्थात् ३० के सामने सिंह राशि है जिसका स्वामी सूर्य है तो चंद्र ये सूर्य के द्रेष्काण में हुआ। मंगल १–१६° (वृष के १६°) में होने से, वृष के दूसरे द्रेष्काण कन्या में हुआ। कन्या का स्वामी वुध है तो मंगल, वुध के द्रेष्काण में हुआ। वुध कर्क के १३° में है। कर्क का तीसरा द्रेष्काण वृश्चिक (मंगल) हुआ। गुरु धन १८° पर है। धन का दूसरा द्रेष्काण मेष (मंगल) हुआ। शुक्र मिथुन १७° है। दूसरा द्रेष्काण मिथुन का तुला (शुक्र) है। शनि वृष के २०°–३०′–१०″ पर है। दूसरे द्रेष्काण का अंत होकर तीसरा द्रेष्काण हुआ। वृष का तीसरा द्रेष्काण मकर राशि (शनि) है। शनि अपने ही द्रेष्काण में है।

द्रेष्काण कुंडली

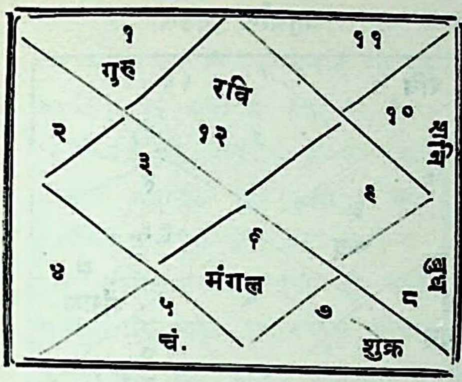

द्रेष्काण कुंडली बनाने के लिये लग्न का जो द्रेष्काण है उसी द्रेष्काण की राशि को लग्न स्थान में रखना पड़ेगा। यहाँ लग्न में मीन द्रेष्काण है तो मीन लग्न हुई। इसी क्रम से शेष कुंडली के स्थानों में राशि स्थापित करके, जिन-जिन राशि के द्रेष्काण में जो-जो ग्रह पड़ता है उसी राशि के द्रेष्काण में ग्रह लिख देने से द्रेष्काण कुंडली बन जाती है। यहाँ सूर्य मीन के द्रेष्काण में है तो सूर्य मीन राशि में रखा। गुरु मेष के द्रेष्काण में है तो उसे मेष में रखा। इसी प्रकार सब ग्रह द्रेष्काण के अनुसार कुंडली में रखे गये हैं।

चतुर्थांश

प्रत्येक राशि के ४ समान भाग करने से प्रत्येक ७'—३०" का एक चतुर्थांश होता है।

चतुर्थांश चक्र

		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अं देवता	राशि	मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धन	मकर	कुंभ	मीन
	अंक०-क०												
१ सनक	७°—३०'	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
२ सनंदन	१५ — ०	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
३ कुमार	२२ —३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
४ सनातन	३० — ०	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९

लग्न मीन ०°—२८'—११" पर है तो पहिला चतुर्थांश हुआ। मीन के पहिले चतुर्थांश में मीन ही राशि है इस से चतुर्थांश कुंडली की लग्न मीन आई। सूर्य कर्क के २७° पर है। कर्क के नीचे और ३०° के भीतर चक्र में मेष दिया है तो मेष के चतुर्थांश पर सूर्य आया। चंद्र धन के २०° पर है तो धन के तीसरे चतुर्थांश में मिथुन राशि आई तो चतुर्थांश कुंडली में चंद्र मिथुन राशि पर रखा जायेगा। मंगल वृष के १६° पर है। तीसरी चतुर्थांश में वृश्चिक राशि हुई। मंगल वृश्चिक में रहा। बुध कर्क के १३° पर है तो दूसरे चतुर्थांश में तुला राशि आई। गुरु मकर के १८°

पर है तीसरा चतुर्थांश मकर का कर्क राशि हुई। इससे गुरु कर्क पर रहेगा। शुक्र मिथुन के १७° पर है। धन का चतुर्थांश हुआ। शुक्र धन के चतुर्थांश में आ गया। शनि वृष के २०° पर हैं। वृश्चिक चतुर्थांश में आ गया तो कुंडली में वृश्चिक के चतुर्थांश में रखा जायेगा।

चतुर्थांश कुण्डली

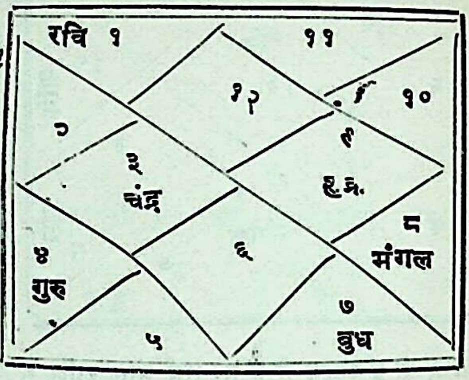

इस प्रकार चतुर्थांश कुंडली में मीन लग्न स्थापित कर चतुर्थांश में जो २ ग्रह जिस २ राशि में आये हैं वहाँ २ स्थापित कर यह चतुर्थांश कुंडली बना ली गई है।

सप्तमांश

प्रत्येक राशि के ७ समान भाग करने से प्रत्येक ४°–१७′ का एक सप्तमांश होता है।

सप्तमांश चक्र

			१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
क्रम	देवता	राशि अं० क०	मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि०	धन	मकर	कुंभ	मीन
१	क्षार	४°–१७′	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६
२	क्षीर	८–३४	२	९	७	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
३	दधि	१२–५१	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
४	आज्य	१७–८	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
५	इक्षुरस	२१–२५	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
६	मद्य	२५–४२	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११
७	शुद्धजल	३०–०	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

वर्ग साधन में आरंभ में जो अंश कला दिये रहते हैं उनको वहाँ तक वह वर्ग है ऐसा समझना। यदि इस में १ विकला अधिक हो गया तो आगे के वर्ग में चला जायगा। जैसे मेष का पहिला सप्तमांश ४°–१७′ तक में मेष है। यहाँ तक पहिला सप्तमांश समझना। यदि ४°–१७′–१″ है तो वह आगे के दूसरे सप्तमांश अर्थात् वृष सप्तमांश हो जायगा। ८°–३४′ के उपरांत तीसरा मिथुन सप्तमांश लग जायगा।

लग्न मीन के ०°–२८′ पर है ४°–१७′ के भीतर है तो मीन का पहिला सप्तमांश कन्या राशि हुई। इस कारण सप्तमांश कुंडली में कन्या लग्न रहेगी। रवि कर्क के २७° पर है यह ३०° के भीतर है कर्क का अंत का सप्तमांश कर्क ही आया। चंद्र

धन के २०° पर है २१°–२५′ के भीतर है। पाँचवाँ सप्तमांश धन का मेष आया। मंगल वृष के १६° पर है। १७°–८′ के भीतर है तो वृष का चौथा सप्तमांश कुंभ का हुआ। बुध कर्क के १३° पर है १७°–८′ के भीतर है। कर्क का चौथा सप्तमांश मेष आया। गुरु धन के १८° पर है। २१°–२५′ के भीतर है तो धन का पाँचवाँ सप्तमांश मेष हुआ। शुक्र मिथुन १७°–१४′ है। यहाँ १७°–८′ तक चौथा सप्तमांश पूरा हो गया पाँचवाँ लग गया इस कारण मिथुन का पाँचवाँ तुला राशि का सप्तमांश आया। शनि वृष के २०° पर है २१°–२५′ के भीतर है तो वृष के पाँचवें सप्तमांश में मीन आया।

सप्तमांश कुण्डली

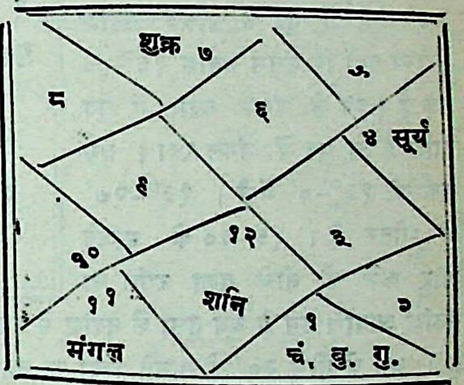

यहाँ सप्तमाँश कुंडली में लग्न में कन्या लग्न स्थापित कर जिस २ सप्तमांश में जो २ ग्रह आये हैं वहाँ२ कुंडली में रख देने से सप्तमांश कुण्डली बन गई।

नवमांश

प्रत्येक राशि के ९ भाग करने से प्रत्येक ३°–२०′ का एक नवमांश होता है।

नवमांश चक्र

			१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
क्रम	स्वामी	राशि अं०–क०	मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि०	धन	मकर	कुंभ	मीन
१	देव	३°–२०′	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४
२	नर	६–४०	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५
३	राक्षस	१०–०	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६
४	देव	१३–२०	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७
५	नर	१६–४०	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८
६	राक्षस	२०–०	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९
७	देव	२३–२०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०
८	नर	२६–४०	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११
९	राक्षस	३०–०	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२

लग्न मीन ०°–२८′ है। ३°–२०′ के भीतर है। इस के सामने मीन का पहिला नवांश कर्क आया तो नवांश कुंडली में कर्क लग्न रहेगी। रवि कर्क के २७° में है ३०° के भीतर है तो कर्क का अंतिम नवांश मीन आया। चंद्र धन के २०°–५५′

–३५″ में है। २०° तक तो छटा नवांश पूरा होगा। यहाँ धन के सातवें नवांश में चंद्र आ गया है। धन के सातवें नवांश में तुला राशि है। इस से चंद्र तुला के नवांश में रहा। मंगल वृष के १६°–२७′ में है तो वृष के पांचवें नवांश में रहा क्यों कि पंचम नवांश १६°-४० तक है। वृष के :पंचम नवांश में वृष राशि है तो वृष में मंगल रहा। बुध कर्क को १३°–०′ में है। १३°–२०′ के भीतर है। १३–२० के सामने और कर्क के नीचे तुला राशि का नवांश आया। इस से बुध तुला के नवांश में रहा। गुरु धन के १८° में २०° के भीतर है। धन के नीचे २०° के सामने कन्या का नवांश आया। शुक्र मिथुन के १७° पर है २०° के भीतर है। २०° के सामने मिथुन के नीचे मीन का नवांश आया। शनि वृष के २०°–३०′ पर है। यह २०° के उपरांत २३°–२०′ के भीतर है। वृष के नीचे और २३°–२०′ के सामने कर्क दिया है। इस से शनि कर्क के नवांश में रहा।

नवमांश कुण्डली

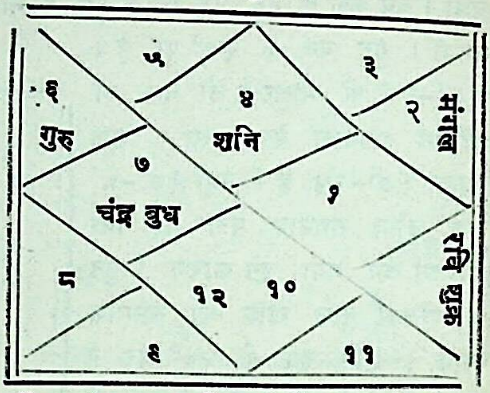

इसी प्रकार नवांश की लग्न कर्क को स्थापित कर शेष ग्रह जिन २ नवांश में हों रख देने से नवमांश कुंडली बन जाती है।

दशांश

प्रत्येक राशि के बराबर दशभाग करने पर प्रत्येक ३° का एक दशांश होता है।

दशांश चक्र

			१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
क्रम	स्वामी	राशि अं. क.	मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृशि०	धन	मकर	कुंभ	मीन
१	इन्द्र	३–०	१	१०	३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८
२	अग्नि	६–०	२	११	४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९
३	यम	९–०	३	१२	५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०
४	राक्षस	१२–०	४	१	६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११
५	बरुण	१५–०	५	२	७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२
६	मारुत	१८–०	६	३	८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१
७	कुबेर	२१–०	७	४	९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२
८	ईशान	२४–०	८	५	१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३
९	पद्मराज	२७–०	९	६	११	८	१	१०	३	१२	५	२	७	४
०	अनंत	३०–०	१०	७	१२	९	२	११	४	१	६	३	८	५

लग्न मीन के ०° पर है ३° के भीतर है। इस के सामने और मीन के नीचे देखा वृश्चिक का दशांश आया। दशांश कुंडली में वृश्चिक लग्न रहेगी। रवि कर्क के २७°–२३′ में है २७ और ३०° के भीतर है। ३० के सामने और कर्क के नीचे धन का दशांश आया। चंद्र धन के २०°–५५′ पर है २१° के भीतर है। मिथुन का दशांश आया। मंगल वृष के १६° में है १८° के भीतर होने से मिथुन का दशांश आया। बुध कर्क १३° है यह १५° के भीतर है तो कर्क का दशांश आया। गुरु धन के १८°–४४′ पर है यह २१° के भीतर है मिथुन का दशांश आया। शुक्र मिथुन के १७° पर है। यह १८° के भीतर है। मिथुन के नीचे १८° के सामने वृश्चिक का दशांश आया। शनि वृष के २०° पर है। यह २१° के भीतर है। वृष राशि में २१° के सामने कर्क का दशांश आया।

दशांश कुण्डली

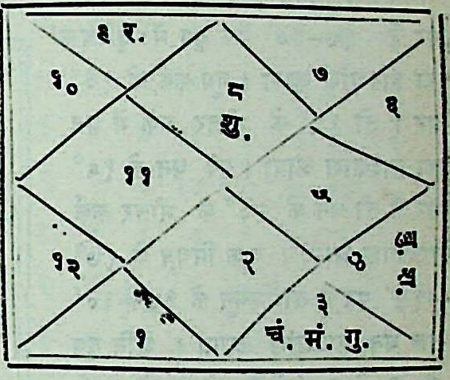

इस प्रकार दशांश की लग्न वृश्चिक को स्थापित कर ऊपर बताये अनुसार दशांश में जहाँ २ ग्रह आये हैं रख देने से दशांश कुंडली बन गई।

द्वादशांश

प्रत्येक राशि के समान १२ विभाग करने से प्रत्येक २°-३०′ का एक द्वादशांश होता है।

द्वादशांश चक्र

क्रम	स्वामी	राशि अं. क.	१ मेष	२ वृष	३ मि०	४ कर्क	५ सिंह	६ कन्या	७ तुला	८ वृश्चि.	९ धन	१० मकर	११ कुंभ	१२ मीन
१	गणेश	२°–३०′	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
२	अश्वि.कु.	५–०	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
३	यम	७–३०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
४	अहि	१०–०	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
५	गणेश	१२–३०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
६	अश्वि.कु.	१५–०	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
७	यम	१७–३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
८	अहि	२०–०	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
९	गणेश	२२–३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
१०	अ. कु.	२५–०	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९
११	यम	२७–३०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१२	अहि	३०-०	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

लग्न मीन के ०° पर है २°–३०′ के भीतर है इस के सामने मीन का पहिला द्वादशांश कुंडली में मीन राशि आई। द्वादशांश कुंडली में मीन लग्न रहेगी। रवि कर्क के २७°–२३′ पर है तो २७°–३०′ तक कर्क राशि में वृष का द्वादशांश आया। चंद्र धन के २०°–५५′ पर है २०° के उपरांत २२°–३०′ तक धन में सिंह द्वादशांश आता है। मंगल वृष के १६°–२७′ पर है १७–३० तक वृष में वृश्चिक का द्वादशांश आया। बुध कर्क के १३° पर है तो १५° के भीतर कर्क में धन का द्वादशांश आया। गुरु धन के १८° पर है तो धन के २०° के भीतर कर्क द्वादशांश आया। शुक्र मिथुन के १७°–१४′ पर है तो मिथुन के १७°–३०′ तक धन द्वादशांश आया। शनि वृष के २०°–३०′ में है तो वृष के २२°–३०′ के भीतर होने से मकर का द्वादशांश आया।

द्वादशांश कुण्डली

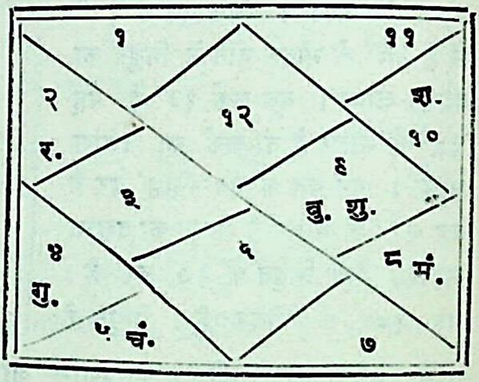

मीन लग्न रख कर उपरोक्त द्वादशांश के अनुसार ग्रह स्थापित करने से द्वादशांश कुंडली बन गई।

षोडशांश

प्रत्येक राशि के बराबर २ सोलह भाग करने से प्रत्येक १°–५२′–२०″ का एक षोडशांश होता है।

षोडशांश चक्र

क्रम	स्वामी विषम रा० में	स्वामी सम राशि में	राशि अं.क.वि.	मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कन्या	तु०	वृश्चि०	धन	मक.	कुंभ	मीन
१	ब्रह्मा	सूर्य	१°-५२′-३०″	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९
२	विष्णु	शिव	३ -४५ - ०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०
३	शिव	विष्णु	५ -३७ -३०	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११
४	सूर्य	ब्रह्मा	७ -३० - ०	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२
५	ब्रह्मा	सूर्य	९ -२२ -३०	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१

६	विष्णु	शिव	११-१५-०	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२
७	शिव	विष्णु	१३-७-२०	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३
८	सूर्य	ब्रह्मा	१५-०-०	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४
९	ब्रह्मा	सूर्य	१६-५२-३०	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५
१०	विष्णु	शिव	१८-४५-०	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६
११	शिव	विष्णु	२०-३७-३०	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७
१२	सूर्य	ब्रह्मा	२२-३०-०	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८
१३	ब्रह्मा	सूर्य	२४-२२-३०	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९
१४	विष्णु	शिव	२५-१५-०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०
१५	शिव	विष्णु	२८-७-३०	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११
१६	सूर्य	ब्रह्मा	३०-०-०	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२

लग्न मीन के ०°–२८′ पर है १°–५२′–३० के भीतर है। मीन का पहिला षोडशांश धन हुआ। यहाँ षोडशांश कुंडली में धन लग्न आई। रवि कर्क के २७°–२३′ में है। कर्क के २८–७ के भीतर है मिथुन षोड० आया। चंद्र धन के २०°–५५′ में है। २२–३० के भीतर धन में वृश्चिक का षोड० आया। मंगल वृष के १६°–२७′ पर है १६–५२–३० के भीतर वृष में मेष का षोड़० आया। बुध कर्क १३°–०′ है यह १३–७–२० के भीतर कर्क में होने से तुला का षोड० आया।

गुरु धन १८°–४४′ पर है। १८°–४५′ में धन में कन्या का षोड० आया। शुक्र मिथुन १७°–४४′ पर है। १८°-४५ के भीतर मिथुन में कन्या का षोड़० आया। शनि वृष के २०°–३०′ पर है २०°–३७′–३०″ के भीतर वृष में मिथुन का षोड़शांश होता है तो शनि मिथुन पर आया।

षोडशांश कुंडली

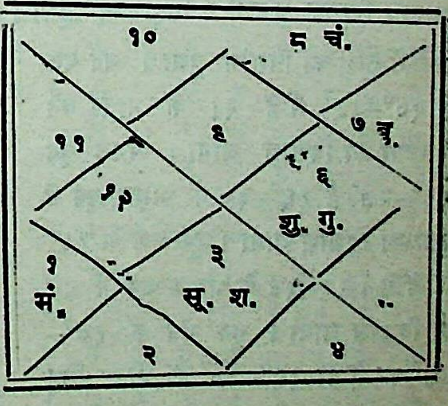

इस प्रकार कुंडली में धन लग्न रख कर उपरोक्त स्थानों में ग्रह स्थापित करने से षोड़शांश कुंडली बन गई।

एक राशि के २० भाग करने से प्रत्येक १°–३०′ का एक विशांश होता है।

विंशांश चक्र

क्रम	विषम राशि में	सम राशि में	राशि अं०क०	मेष (१)	वृष (२)	मि. (३)	कर्क (४)	सिंह (५)	कन्या (६)	तु० (७)	वृश्चिक (८)	धन (९)	म० (१०)	कुंभ (११)	मीन (१२)
स्वामी				१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१	काली	दया	१°-३०′	१	९	५	१	९	५	१	९	५	१	९	५
२	गौरा	मेघा	३ - ०	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	६
३	जया	छिन्नशीर्षा	४ -३०	३	११	७	३	११	७	३	११	७	३	११	७
४	लक्ष्मी	पिशाचिनी	६ - ०	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	८
५	विजया	धूमावता	७ -३०	५	१	९	५	१	९	५	१	९	५	१	९
६	विमला	मातंगी	९ - ०	६	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	६	२	१०
७	सती	बगला	१० -३०	७	३	११	७	३	११	७	३	११	७	३	११
८	तारा	भद्रा	१२ - ०	८	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	४	१२
९	ज्वालामुखी	अरुणा	१३ -३०	९	५	१	९	५	१	९	५	१	९	५	१
१०	श्वेता	शीतला	१५ - ०	१०	६	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	६	२
११	ललिता	पिंगला	१६ -३०	११	७	३	११	७	३	११	७	३	११	७	३
१२	बगलामुखी	छुछुका	१८ - ०	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	४
१३	प्रत्यंगिरा	घोरा	१९ -३०	१	९	५	१	९	५	१	९	५	१	९	५
१४	शची	वाराही	२१ - ०	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	६
१५	रौद्री	वैष्णवी	२२ -३०	३	११	७	३	११	७	३	११	७	३	११	७
१६	भवानी	सिता	२४ - ०	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	८
१७	वरदा	भुवना	२५ -३०	५	१	९	५	१	९	५	१	९	५	१	९
१८	जया	भैरवी	२७ - ०	६	२	१०	६	२	१०	६	२	१०	६	२	१०
१९	त्रिपुरा	मंगला	२८ -३०	७	३	११	७	३	११	७	३	११	७	३	११
२०	सुमुखी	अपराजिता	३० - ०	८	४	१२	८	४	१२	८	४	१२	८	४	१२

लग्न मीन के ०°–२८′ पर है १°–३०′ के भीतर है तो मीन का पहिला सिंह विंशांश आया। विंशांश कुंडली में सिंह लग्न रहेगी। सूर्य कर्क के २७°–२३′ में है २८–३० के भीतर कर्क में तुला का विंशांश हुआ। चंद्र धन के २०°–५५′ में है २१° के भीतर धन में कन्या का विंशांश आया। मंगल वृष १६°–२७′ है १६°–३० के भीतर वृष में तुला का विंशांश आया। बुध कर्क के १३°-०′में है। १३–३० के भीतर कर्क में धन का विंशांश आया। गुरु धन के १८°–४४′ पर है तो १९°–३०′ के भीतर सिंह का विंशांश गुरु में आया। शुक्र मिथुन

विंशांश कुण्डली

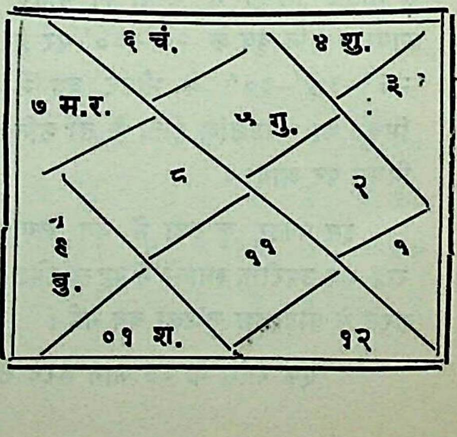

के १७°–१४′ पर है तो १८° के भीतर मिथुन में कर्क का विंशांश आया। शनि वृष के २०°–३०′ में है। २१° के भीतर वृष में मकर का विंशांश आया।

इस प्रकार विंशांश कुंडली की लग्न सिंह हुई और उपरोक्त स्थानों में ग्रह स्थापित करने से विंशांश कुंडली बन गई।

चतुर्विंशांश

प्रत्येक राशि के समान २४ विभाग करने से प्रत्येक १°–१५′ का एक चतुर्विंशांश होता है।

चतुर्विंशांश चक्र

क्रम	स्वामी विषम रा० में	सम रा. में	राशि अं. क.	१ मेष	२ वृष	३ मि०	४ कर्क	५ सिंह	६ कन्या	७ तु०	८ वृ०	९ धन	१० म०	११ कुं०	१२ मीन
१	स्कंद	भीम	१°-१५′	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४
२	पशुधर	मदन	२–३०	६	५	६	५	६	५	६	५	६	५	६	५
३	अनल	गोविन्द	३–४५	७	६	७	६	७	६	७	६	७	६	७	६
४	विश्वकर्मा	वृषध्वज	५– ०	८	७	८	७	८	७	८	७	८	७	८	७
५	भग	अंतक	६–१५	९	८	९	८	९	८	९	८	९	८	९	८
६	मित्र	मय	७–३०	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९
७	मय	मित्र	८–४५	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०
८	अंतक	भग	१०– ०	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११
९	वृषध्वज	विश्वकर्मा	११–१५	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२
१०	गोविन्द	अनल	१२–३०	२	१	२	१	२	१	२	१	२	१	२	१
११	मदन	पशुधर	१३–४५	३	२	३	२	३	२	३	२	३	२	३	२
१२	भीम	स्कंद	१५– ०	४	३	४	३	४	३	४	३	४	३	४	३
१३	स्कंद	भीम	१६–१५	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४
१४	पशुधर	मदन	१७–३०	६	५	६	५	६	५	६	५	६	५	६	५
१५	अनल	गोविन्द	१८–४५	७	६	७	६	७	६	७	६	७	६	७	६
१६	विश्वकर्मा	वृषध्वज	२०– ०	८	७	८	७	८	७	८	७	८	७	८	७
१७	भग	अंतक	२१–१५	९	८	९	८	९	८	९	८	९	८	९	८
१८	मित्र	मय	२२–३०	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९
१९	मय	मित्र	२३–४५	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०	११	१०
२०	अंतक	भग	२५– ०	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११	१२	११
२१	वृषध्वज	विश्वकर्मा	२६–१५	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२	१	१२
२२	गोविन्द	अनल	२७–३०	२	१	२	१	२	१	२	१	२	१	२	१
२३	मदन	पशुधर	२८–४५	३	२	३	२	३	२	३	२	३	२	३	२
२४	भीम	स्कन्द	३०– ०	४	३	४	३	४	३	४	३	४	३	४	३

लग्न मीन के ०°–२८′ पर है। १°–१५′ के भीतर है तो मीन के पहिले चतु० में कर्क लग्न आई। सूर्य कर्क २७°–२३′ पर है तो २७–३० के भीतर कर्क में मेष चतु० आया। चंद्र धन के २०°–५५′ में है तो २१–१५ के भीतर धन में धन का चतु० आया। मंगल वृष के १६°–२७′ में है तो १७–३० के भीतर वृष में सिंह का चतु० आया। बुध कर्क कें १३°–०′ पर है तो १३–४५ के भीतर कर्क में वृष का चतु० आया। गुरु धन के १८°-४४ में है तो १८-४५ के भीतर धन में तुला का चतु० आया। शुक्र मिथुन के १७°–१४′ में है तो १७–३० के भीतर मिथुन में कन्या का चतु० आया। शनि वृष के २०°-३०′ में है तो २१-१५ के भीतर वृष में वृश्चिक के चतु० में शनि आया।

चतुर्विंशांश कुण्डली

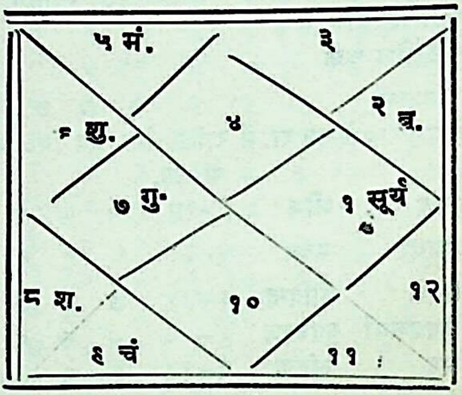

इस कुंडली की लग्न कर्क और उपरोक्त स्थानों में ग्रह रखने से चतुर्विंशांश कुण्डली बन गई।

भांश

प्रत्येक राशि के २७ समान भाग करने से १°–६′–४०″ का एक भांश होता है।

भांश चक्र

क्रम स्वामी	राशि अं. क.वि-	१ मेष	२ वृष	३ मि०	४ कर्क	५ सिंह	६ कन्या	७ तु०	८ वृश्चिक	९ ध०	१० म०	११ कुंभ	१२ मीन
१ अश्विनी कुमार	१°-६′-४०″	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०
२ यम	२-१३-२०	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११
३ अग्नि	३-२०- ०	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२
४ ब्रह्मा	४-२६-४०	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१
५ चंद्रमा	५-३३-२०	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२
६ ईश (शिव)	६-४०- ०	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३
७ अदिति	७-४६-४०	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४

८	जीव	८-५३ -२०	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५
९	अहि	१०- ०- ०	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६
१०	पितर	११- ६-४०	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७
११	भग	१२-१३-२०	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८
१२	अर्यमा	१३-२०- ०	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९
१३	सूर्य	१४-२६-४०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०
१४	त्वष्टा	१५-३३-२०	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११
१५	मरुत	१६-४०- ०	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२
१६	शक्राग्नि	१७-४६-४०	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१
१७	मित्र	१८-५३-२०	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२
१८	वासव (इन्द्र)	२०- ०- ०	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३
१९	निॠति (राक्षस)	२१- ६-४०	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४
२०	वरुण	२२-१३-२०	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५
२१	विश्वदेव	२३-२०	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६
२२	गोविन्द	२४-२६-४०	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७
२३	वसु (इन्द्र)	२५-३३-२०	११	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८
२४	वरुण	२६-४०- ०	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९
२५	अजपात	२७-४६-४०	१	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४	७	१०
२६	अहिर्बुध्न्य	२८-५३-२०	२	५	८	११	२	५	८	११	२	५	८	११
२७	पूषा	३०-० - ०	३	६	९	१२	३	६	९	१२	३	६	९	१२

लग्न मीन के ०°–२८ में है १–६–४० के भीतर है। तो मीन का पहिला भांश मकर हुआ। भांश कुंडली में मकर लग्न आई। सूर्य कर्क के २७°–२३′ में है तो २७–४६–४० के भीतर कर्क में मकर के भांश में सूर्य आया। चंद्र धन के २०°–५५′ पर है। २१-६-४० के भीतर तुला का भांश हुआ। मंगल वृष के १६°–२७′ पर है तो १६–४० के भीतर वृष में कन्या का भांश हुआ। बुध कर्क के १३°-० पर है तो १३-२० के भीतर कर्क में धन का भांश हुआ। गुरु धन के १८°-४४′ पर है तो १८-१५-२० के भीतर सिंह के भांश में गुरु आया। शुक्र मिथुन के १७-१४ में है तो १७-४६-४० के भीतर मिथुन में

भांश कुण्डली

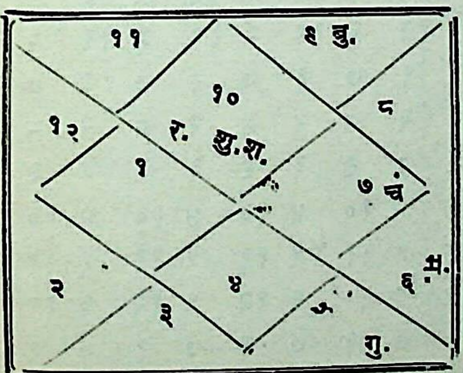

मकर का भांश आया। शनि वृष के २०°-३०′ में है २१-६-४० के भीतर है तो मकर के भांश में शनि आया।

मकर लग्न स्थापित कर उपरोक्त स्थानों में अपने २ भांश के अनुसार ग्रह स्थापित करने से यहाँ भांश कुंडली बन गई।

खवेदांश कुंडली

प्रत्येक राशि के ४० भाग करने से प्रत्येक ०°–४५ का एक खवेदांश होता है।

खवेदांश चक्र

क्रम स्वामी	राशि अं० क०	१ मेष	२ वृष	३ मि०	४ कर्क	५ सिंह	६ कन्या	७ तुला	८ वृ.	९ धन	१० म०	११ कुंभ	१२ मीन
१ विष्णु	०°-४५′	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७
२ चंद्र	१ -३०	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८
३ मरिचि	२ -१५	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९
४ त्वष्टा	३ - ०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०
५ धाता	३ -४५	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११
६ शिव	४ -३०	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२
७ रवि	५ -१५	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१
८ यम	६ - ०	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२
९ यक्षेश	६ -४५	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३
१० गंधर्व	७ -३०	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४
११ काल	८ -१५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५
१२ वरुण	९ - ०	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६
१३ विष्णु	९ -४५	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७
१४ चंद्र	१० -३०	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८
१५ मरीचि	११ -१५	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९
१६ त्वष्टा	१२ - ०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०
१७ धाता	१२ -४५	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११
१८ शिव	१३ -३०	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२
१९ रवि	१४ -१५	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१
२० यम	१५ - ०	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२

२१ यक्षेश	१५-४५	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३
२२ गंधर्व	१६-३०	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४
२३ काल	१७-१५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५
२४ वरुण	१८- ०	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६
२५ विष्णु	१८-४५	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७
२६ चंद्र	१९-३०	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८
२७ मरीचि	२०-१५	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९
२८ त्वष्टा	२१- ०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०
२९ धाता	२१-४५	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११
३० शिव	२२-३०	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२
३१ रवि	२३-४५	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१
३२ यम	२४- ०	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२
३३ यक्षेश	२४-४५	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३
३४ गंधर्व	२५-३०	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४
३५ काल	३६-१५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५	११	५
३६ वरुण	२७- ०	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६	१२	६
३७ विष्णु	२७-४५	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७	१	७
३८ चंद्र	२८-३०	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८	२	८
३९ मरीचि	२९-१५	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९	३	९
४० त्वष्टा	३०- ०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०	४	१०

खवेदांश कुंडली

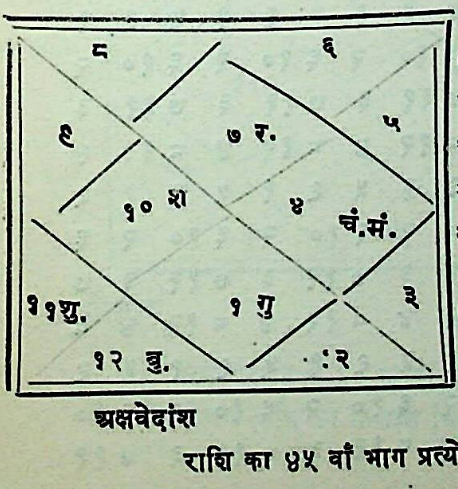

लग्न मीन०°-२८″, यह ०°-४५′ के भीतर है=तुला लग्न
रवि कर्क २७°-२३′ ,, २७-४५ ,, =तुला राशि
चंद्र धन २०-५० ,, २१- ० ,, =कर्क ,,
मंगल वृष १७-२७ ,, १६-३० ,, =कर्क ,,
बुध कर्क १३- ० ,, १३-३० ,, =मीन ,,
गुरु धन १८-४४ ,, १८-४५ ,, =मेष ,,
शुक्र मिथुन १७-१४ ,, १७-१५ ,, =कुंभ ,,
शनि वृष २०-३० ,, २१- ० ,, =मकर ,,

अक्षवेदांश

राशि का ४५ वाँ भाग प्रत्येक ४० कला का एक अक्षवेदांश होता है।

अक्षवेदांश चक्र

क्रम	राशि स्वामी चर स्थिर द्विस्वभाव राशि	अं. क.	१ मे.	२ वृष	३ मि.	४ कर्क	५ सिं.	६ कन्या	७ तु.	८ वृ.	९ धन	१० म.	११ कुं.	१२ मीन
१	ब्रह्मा शंकर विष्णु	०°-४०′	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९
२	शंकर विष्णु ब्रह्मा	१-२०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०
३	विष्णु ब्रह्मा शंकर	२– ०	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११
४	ब्रह्मा शंकर विष्णु	२–४०	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२
५	शंकर विष्णु ब्रह्मा	३–२०	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१
६	विष्णु ब्रह्मा शंकर	४– ०	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	९०	२
७	ब्रह्मा शंकर विष्णु	४–४०	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३
८	शंकर विष्णु ब्रह्मा	५–२०	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४
९	विष्णु ब्रह्मा शंकर	६– ०	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५
१०	ब्रह्मा शंकर विष्णु	६–४०	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६
११	शंकर विष्णु ब्रह्मा	७–२०	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७
१२	विष्णु ब्रह्मा शंकर	८– ०	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८
१३	ब्रह्मा शंकर विष्णु	८–४०	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९
१४	शंकर विष्णु ब्रह्मा	९–२०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०
१५	विष्णु ब्रह्मा शंकर	१०– ०	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११
१६	ब्रह्मा शंकर विष्णु	१०–४०	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२
१७	शंकर विष्णु ब्रह्मा	११–२०	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१
१८	विष्णु ब्रह्मा शंकर	१२– ०	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२
१९	ब्रह्मा शंकर विष्णु	१२–४०	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३
२०	शंकर विष्णु ब्रह्मा	१३–२०	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४
२१	विष्णु ब्रह्मा शंकर	१४– ०	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५
२२	ब्रह्मा शंकर विष्णु	१४–४०	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६
२३	शंकर विष्णु ब्रह्मा	१५–२०	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७
२४	विष्णु ब्रह्मा शंकर	१६– ०	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८
२५	ब्रह्मा शंकर विष्णु	१६–४०	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९
२६	शंकर विष्णु ब्रह्मा	१७–२०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०
२७	विष्णु ब्रह्मा शंकर	१८– ०	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११

२८	ब्रह्मा	शंकर	विष्णु	१८–४०	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२
२९	शंकर	विष्णु	ब्रह्मा	१९–२०	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१
३०	विष्णु	ब्रह्मा	शंकर	२०– ०	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२
३१	ब्रह्मा	शंकर	विष्णु	२०–४०	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३
३२	शंकर	विष्णु	ब्रह्मा	२१–२०	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४
३३	विष्णु	ब्रह्मा	शंकर	२२– ०	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५
३४	ब्रह्मा	शंकर	विष्णु	२२–४०	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६
३५	शंकर	विष्णु	ब्रह्मा	२३–२०	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७
३६	विष्णु	ब्रह्मा	शंकर	२४– ०	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८
३७	ब्रह्मा	शंकर	विष्णु	२४–४०	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९
३८	शंकर	विष्णु	ब्रह्मा	२५–२०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०
३९	विष्णु	ब्रह्मा	शंकर	२६– ०	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११
४०	ब्रह्मा	शंकर	विष्णु	२६–४०	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२
४१	शंकर	विष्णु	ब्रह्मा	२७–२०	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१
४२	विष्णु	ब्रह्मा	शंकर	२८– ०	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२	६	१०	२
४३	ब्रह्मा	शंकर	विष्णु	२८–४०	७	११	३	७	११	३	७	११	३	७	११	३
४४	शंकर	विष्णु	ब्रह्मा	२९–२०	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४	८	१२	४
४५	विष्णु	ब्रह्मा	शंकर	३०– ०	९	१	५	९	१	५	९	१	५	९	१	५

अक्षवेदांश कुंडली

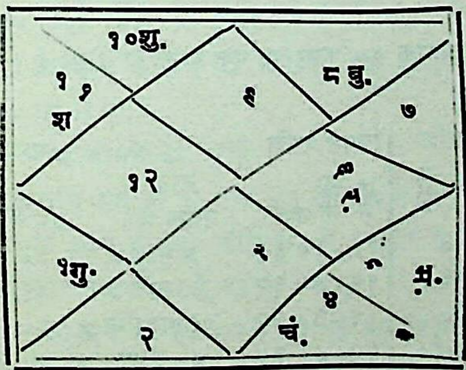

लग्न मीन ०°–२८′ = ९ राशि
रवि कर्क २७ –२३ = ६ ,,
चंद्र धन २० –५५ = ४ ,,
मंगल वृष १६ –२७ = ५ ,,
बुध कर्क १३ – ० = ८ ,,
गुरु धन १८ –४४ = १ ,,
शुक्र मिथुन १७ –१४ = १०,,
शनि वृष २० –३० = ११,,

त्रिंशांश

प्रत्येक राशि के ३० समान भाग करने से १ अंश का एक त्रिंशांश होता है। सम और विषम राशि का त्रिंशांश भिन्न २ होता है।

त्रिंशांश चक्र

विषम राशि का त्रिंशांश		१	३	५	७	९	११
स्वामी	राशि अंश	मेष	मि०	सिंह	तुला	धन	कुंभ
वह्नि	५°-०′	१	१	१	१	१	१
वायु	१०-०	११	११	११	११	११	११
शक्र	१८-०	९	९	९	९	९	९
धनद	२५-०	३	३	३	३	३	३
जलद	३०-०	७	७	७	७	७	७

सम राशि का त्रिंशांश		२	४	६	८	१०	१२
स्वामी	राशि अंश	वृष	कर्क	कन्या	वृ०	म.	मीन
जलद	५°-०′	२	२	२	२	२	२
धनद	१२-०	६	६	६	६	६	६
शक्र	२०-०	१२	१२	१२	१२	१२	१२
वायु	२५-०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
वह्नि	३०-०	८	८	८	८	८	८

विषम राशि हो तो विषम राशि के चक्र से और सम राशि हो तो सम राशि के चक्र से त्रिशांश निकालना चाहिए।

त्रिंशांश कुंडली

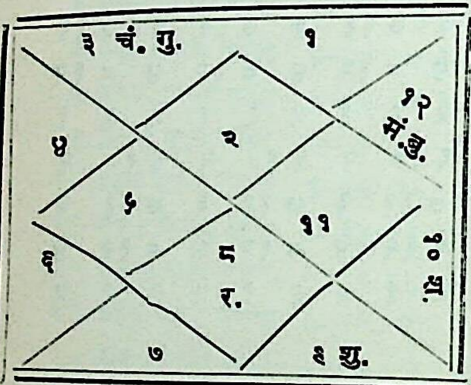

लग्न मीन ०°-२८′ सम राशि ५° के भीतर=२ राशि
रवि कर्क २७-२३ „ „ ३० „ „ =८ „
चंद्र धन २०-५५ विषम राशि २५° के भीतर=३ राशि
मंगल वृष १६-२७ सम „ २० „ =१२ „
बुध कर्क १३-० „ „ २० „ =१२ „
गुरु धन १८-४४ विषम „ २५ „ = ३ „
शुक्र मिथुन १७-१४ „ „ १८ „ = ९ „
शनि वृष २०-३० सम „ २५ „ =१० „

षष्ठ्यंश चक्र १

एक राशि के ६० भाग करने से प्रत्येक ३० कला का एक षष्ठ्यंश होता है।

षष्ठ्यंश के नाम जानना

विषम राशि अंश-कला	क्रम	नाम षष्ठ्यंश	सम राशि क्रम	अंश-कला
०-३०	१	× घोरांश ×	६०	३०-०
१-०	२	× राक्षस ×	५९	२९-३०
१-३०	३	देवा	५८	२९-०
२-०	४	कुबेर	५७	२८-३०
२-३०	५	× रक्षोगण	५६	२८-०
३-०	६	किन्नर	५५	२७-३०
३-३०	७	× भ्रष्ट ×	५४	२७-०
४-०	८	× कुलघ्न ×	५३	२६-३०

विषम राशि अंश-कला	क्रम	नाम षष्ठ्यंश	सम राशि क्रम	अंश-कला
१५-३०	३१	× मृत्यु ×	३०	१५-०
१६-०	३२	× काल ×	२९	१४-३०
१६-३०	३३	× दावाग्नि ×	२८	१४-०
१७-०	३४	× घोरा ×	२७	१३-३०
१७-३०	३५	× मय ×	२६	१३-०
१८-०	३६	× कंटक ×	२५	१२-३०
१८-३०	३७	सुधा	२४	१२-०
१९-०	३८	अमृत	२३	११-३०

४-३०	९	×गरल×	५२	२६-०	१९-३०	३९	पूर्ण चंद्र	२२	११-०
५-०	१०	अग्नि	५१	२५-३०	२०-०	४०	विष प्रदग्ध	२१	१०-३०
५-३०	११	माया	५०	२५-०	२०-३०	४१	कलिनाश या × कुलनाश	२०	१०-०
६-०	१२	×यम (प्रेत पुरी)×	४९	२४-३०	२१-०	४२	×मुख्य	१९	९-३०
६-३०	१३	अपांपत्य (वरुण)	४८	२४-०	२१-३०	४३	×वंश क्षय×	१८	९-०
७-०	१४	देव गणेश या इंद्र	४७	२३-३०	२२-०	४४	×उत्पातक×	१७	८-३०
७-३०	१५	× काल ×	४६	२३-०	२२-३०	४५	×कालरूप×	१६	८-०
८-०	१६	अहि भाग	४५	२२-३०	२३-०	४६	सौम्य	१५	७-३०
८-३०	१७	अमृतांशु	४४	२२-०	२३-३०	४७	मृदु ×	१४	७-०
९-०	१८	चंद्र	४३	२१-३०	२४-०	४८	शीतल	१३	६-३०
९-३०	१९	मृदु	४२	२१-०	२४-३०	४९	×दंष्ट्रा कराल×	१२	६-०
१०-०	२०	कोमल	४१	२०-३०	२५-०	५०	इंदु मुख	११	५-३०
१०-३०	२१	पद्म	४०	२०-०	२५-३०	५१	प्रवीण	१०	५-०
११-०	२२	विष्णु या लक्ष्मी	३९	१९-३०	२६-०	५२	कालाग्नि×	९	४-३०
११-३०	२३	वागीश	३८	१९-०	२६-३०	५३	दंडायुध	८	४-०
१२-०	२४	दिगंबर	३७	१८-३०	२७-०	५४	निर्मल	७	३-३०
१२-३०	२५	देव:	३६	१८-०	२७-३०	५५	शुभ	६	३-०
१३-०	२६	आर्द्र	३५	१७-३०	२८-०	५६	×अशुभ×	५	२-३०
१३-३०	२७	कलिनाश	३४	१७-०	२८-३०	५७	अति शीतल	४	२-०
१४-०	२८	क्षितीश	३३	१६-३०	२९-०	५८	सुधापयोधि	३	१-३०
१४-३०	२९	कमलाकर	३२	१६-०	२९-३०	५९	×भ्रमण×	२	१-०
१५-०	३०	×मंदात्मज×	३१	१५-३०	३०-०	६०	इंदुरेखा	१	०-३०

× चिह्न वाले षष्ठ्यंश अशुभ हैं। विषम षष्ठ्यंश के आदि में और समके अंत में अशुभ सूचक चिह्न × दिया है।

षष्ठ्यंश के नाम दिये हैं उनमें अंश शब्द जोड़ कर उनके नाम जानना जैसे ४७ विषम = मृदु = मृद्वंश,

अंश के नाम जानने की रीति

राशि सम हो तो उल्टे क्रम से अर्थात् जो क्रम नीचे से दिया है उससे गिनना और विषम राशि हो तो सीधे क्रम से (ऊपर से जो अंश कला दिया है उसके सामने जो क्रम और नाम दिया है वह) लेना।

जैसे सूर्य २-१०°-२′-१०″ है यह मिथुन क १०° के ऊपर और १०-३० के भीतर है। मिथुन विषम है तो ऊपर क क्रम से १०°-३०′ के सामने २१ वें क्रम में पद्मांश मिला। लग्न ०-२६°-०′-५″ है मेष विषम २६°-३०′ के भीतर ५३ वां दंडायुधांश आया। चंद्र ९-१२°-३१′-५″ मकर=सम=उल्टा १३°-०′ के भीतर २६ वां=मयांश। मंगल ११-२°-८′-१″ मीन=सम=उल्टा, २°-३०′ के भीतर ५ वां अशुभांश आया।

षष्ठ्यंश के अंश

षष्ठ्यंश चक्र २

राशियाँ

अंश कला	अंश कला	अंश कला	अंश कला	अंश कला	१ मे.	२ वृष	३ मि.	४ कर्क	५ सिं.	६ क.	७ तु.	८ वृ.	९ ध.	१० म.	११ कुं	१२ मीन
०°-३०′	६°-३०′	१२°-३०′	१८°-३०′	२४°-३०′	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१– ०	७– ०	१३– ०	१९– ०	२५– ०	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१
१–३०	७–३०	१३–३०	१९–३०	२५–३०	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
२–०	८– ०	१४– ०	२०– ०	२६– ०	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३
२–३०	८–३०	१४–३०	२०–३०	२६–३०	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४
३–०	९– ०	१५– ०	२१– ०	२७– ०	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५
३–३०	९–३०	१५–३०	२१–३०	२७–३०	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
४– ०	१०– ०	१६– ०	२२– ०	२८– ०	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७
४–३०	१०–३०	१६–३०	२२–३०	२८–३०	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८
५– ०	११– ०	१७– ०	२३– ०	२९– ०	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९
५–३०	११–३०	१७–३०	२३–३०	२९–३०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
६– ०	१२– ०	१८– ०	२४– ०	३०– ०	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

षष्ठ्यंश कुंडली

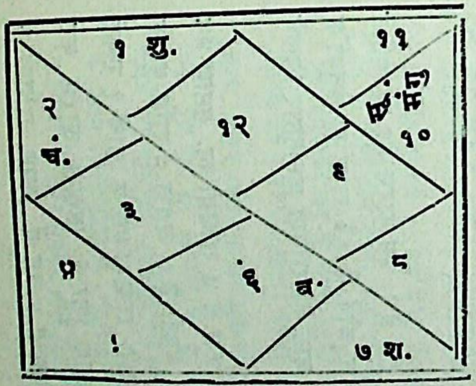

रां				
लग्न	११–	०°–	२८′–	११
सूर्य	३–	२७ –	२३ –	६
चंद्र	८–	२० –	५५ –	३५
मंगल	१–	१६ –	२७ –	५८
बुध	३–	१३ –	० –	३५
गुरु	८–	१८ –	४४ –	५६
शुक्र	२–	१७ –	१४ –	५६
शनि	१–	१० –	३० –	१०

मीन	०–३०	के भीतर	= १२ राशि
कर्क	२७–३०	,,	= १० ,,
धन	२१– ०	,,	= २ ,,
वृष	१६–३०	,,	= १० ,,
कर्क	१३–३०	,,	= ६ ,,
धन	१६– ०	,,	= १० ,,
मिथुन	१७–३०	,,	= १ ,,
वृष	२१ – ०	,,	= ७ ,,

अंशों के नाम

लग्न = मीन = सम = ०–३० = इन्दुरेखा

सूर्य = कर्क = सम = २७–३० = किन्नरांश

चंद्र = धन = विषम = २१–० = मुख्यांश = अशुभ

मंगल=वृष = सम = १६–३०=क्षितीश्वरांश

बुध = कर्क = सम = १३–३० = घोरांश = अशु.

गुरु = धन = विषम = १६–० = अमृतांश

शुक्र = मिथुन = विषम = १७–३० = मयांश = अशुभ

शनि = वृष = सम = २१–० – मृदंश

इसके अतिरिक्त षष्ठ्यंश निकालने की दो और रीतियाँ हैं जो कहीं-कहीं प्रचलित हैं। उनके चक्र ३ और ४ आगे दिये हैं। ज्योतिषी लोग बहुधा चक्र २ में ही बताई रीति से षष्ठ्यंश साधन करते हैं।

इस चक्र ४ में, चक्र २ और चक्र ३ से बहुत भिन्नता है। षष्ठ्यंश निकालने की इसकी रीति यह है कि विषम राशि हो तो बाँई ओर के उसके अंश लेना, सम राशि हो तो उसके अंश दाहिनी ओर के लेना। तब उनके सामने दिया हुआ षष्ठ्यंश प्राप्त होता है। कोई-कोई सम विषम का न विचार कर इसमें बाँई ओर दिये अंश से ही षष्ठ्यंश निकाल लेते हैं। जैसे बुध कर्क १३°–०′–३५″ है। सम होने से दाहिनी ओर के १३°–३०′ के सामने कर्क के नीचे देखा तो ८ वृश्चिक आया। यदि इसी को बाँई ओर के अंश १३°–३०′ के सामने कर्क के नीचे देखा तो ५ सिंह आया, जैसा कि कोई-कोई निकालते हैं।

इन सब रीतियों में चक्र २ में बताई हुई रीति अधिक प्रचलित और मान्य है।

वर्ग साधन चक्र बनाने की रीति

उपरोक्त वर्ग साधन के जो चक्र बने हैं उन के बनाने की रीति नीचे बताई है। इस से विना चक्र के भी वर्ग साधन कर सकते हैं।

(१) **होरा** = मेष में सूर्य का ५ उपरांत चंद्र का ४ होरा होता है। मेष में १५° के सामने ५ फिर वृष के नीचे ४, मिथुन के नीचे ५ इत्यादि क्रम से सम राशि में ४ विषम में ५ रखना।
३०″ के आगे इस के विपरीत विषम राशि में ४ और सम में ५ रखना। सूर्य मेष में उच्च का होता है इस कारण पहिले सूर्य फिर चंद्र का होरा होता है।

(२) **द्रेष्काण** = त्रिकोण का स्थान १, ५, ९, होता है। मेष के द्रेष्काण में इसी क्रम से राशियां रहती हैं अर्थात् मेष के पहिले द्रेष्काण में १० अंश तक १, फिर २०° तक ५, उपरांत ३०°तक ९ राशि का द्रेष्काण होता है आगे की राशियों के कोष्टक में इन के आगे की राशियाँ क्रमशः लिखते जाने से पूरा चक्र बन जाता है।

(३) **चतुर्थांश** = केन्द्र के ४ स्थान १, ४, ७, १० हैं। इस कारण मेष के पहिले चतुर्थांश में १, दूसरे में ४ तीसरे में ७ और चौथे में १० राशि का चतुर्थांश होता है। आगे की राशियों के नीचे इन के आगे की राशियाँ क्रमानुसार लिखने से पूरा चक्र बन जाता है।

(४) **सप्तमांश** = मेष के नीचे १, २, ३, आदि क्रम से ७ राशियों का सप्तांश मेष में आता है। यही क्रम से आगे की राशियाँ रहती हैं। अर्थात् ८ राशि वृष के प्रथम सप्तमांश में रहती है। आगे क्रमानुसार राशियां एक के नीचे १ रखते जाना। जहाँ (मीन) १२ आवे उस के आगे फिर १ लिखना आरंभ कर क्रमशः आगे लिखते जाने से चक्र बन जाता है। इस में विषम राशियों में

उन्हीं राशियों का पहिला सप्तमांश होता है और सम राशियों में विषम के आगे का आठवाँ। जैसे मेष १ + ७ = ८ वृष का पहिला सप्तमांश हुआ।

(५) नवमांश = जिस प्रकार मेष से १ आरंभ कर सप्तमांश चक्र भरा गया था उसी प्रकार नवमांश चक्र बनता है। इस में १ राशि के भीतर ९ राशि अर्थात् मेष से धन तक एक के नीचे एक मेष से लिखना और आगे की मकर राशि को वृष के पहिले नवांश में लिखना। आगे इसी प्रकार क्रमशः नीचे की ओर लिखते जाना। नीचे ९ अंक भर कर फिर आगे का अंक ऊपर से भरना आरंभ करना तो चक्र बन जायगा।

इस में मेष वृष मिथुन कर्क में १, १०, ७, ४ क्रम से राशियां प्रथम नवांश में रहती हैं। और इसी प्रकार प्रत्येक ४–४ राशियों में एक सरीखा रहता है। मेष का १ + ९ = १० वृष में, १० + ९ = १९ = ७ मिथुन में इत्यादि प्रकार से प्रथम नवमांश में होता है।

(६) दशमांश = विषम राशियों के नीचे उन्हीं राशियों की संख्या का पहिला दशमांश होता है फिर उस से दशवां अंक सम राशि के पहिले दशमांश में होता है। अर्थात् मेष का १, मिथुन का ३, सिंह का ५, तुला का ७, धन का ९, कुंभ का ११ अंक लिख लो और इन के नीचे आगे के क्रमानुसार अंक एक के नीचे एक अंतिम दशमांश तक भर लो। जो सब के नीचे दसवां अंक होगा वही आगे की समराशि का प्रारंभ अंक होगा। जैसे मेष में १ से १० तक लिखने पर अंत में १०आया तो वही १०या मेष का १ + ९ = १० वृष के पहिले दशांश में लिख कर आगे क्रमानुसार राशियां रख देना। मिथुन में ३ से आरंभ करने पर अंत में १२ आया तो कर्क के आरंभ में वही १२ या मिथुन का ३ + ९ = १२ रखा और क्रमानुसार अंक भर दिया तो चक्र बन जाता है।

(७) द्वादशांश = प्रत्येक राशियों का पहिला द्वादशांश उन्हीं राशियों का होता है इस से मेष में १, वृष में २, मिथुन में ३ इत्यादि आरंभ के अंक लिख लो फिर उन के आगे क्रमानुसार अंक भरने से चक्र बन जायगा।

(८) षोड़शांश = मेष के नीचे १ से १२ फिर आगे १ से ४ तक इस प्रकार १६ राशि लिख लो। प्रत्येक चौथी राशि में एक ही प्रकार के अंक आते हैं जैसे मेष, कर्क, तुला, मकर, का एक ही प्रकार का षोड़शांश होगा। मेष के अंत में ४ राशि आई था अब वृष के आरंभ में ५ रखो। इस प्रकार क्रमानुसार एक के नीचे एक आगे की राशियाँ भरते जाओ तो चक्र बन जायगा। इस प्रकार मेष वृष मिथुन के प्रथम षोड़शांश में १–५–९ क्रमानुसार राशियाँ रहती हैं और आगे ३–३ राशियों में इसी प्रकार क्रम रहता है।

(९) विशांश = मेष के नीचे १ से क्रमानुसार राशियाँ भरते जाओ अंत में जो आवे उस के आगे का दूसरी राशि में एक के नीचे एक भरना आरंभ करो तो चक्र बन जायगा जैसा कि षोड़शांश बनाया था। इस में भी षोड़शांश के अनुसार प्रत्येक ४-४ राशि का एक सरीखा विंशांश होता है। अर्थात् मेष का १, वृष का ९ मिथुन का ५ पहिला विंशांश होता हैं इसी क्रम से आगे की ३-३ राशियों में विंशांश रहता है।

(१०) चतुर्विंशांश = इस में सब विषम राशियों में एक सरीखा और सब सम राशियों में एक सरीखा चतु० रहता है। जिस प्रकार होरा चक्र में विषम राशि में सिंह और सम में कर्क आरंभ में था उसी प्रकार यहाँ लिख कर उसके आगे की राशियाँ क्रमानुसार एक के नीचे एक लिख दो तो चक्र बन जायगा। मेष के अंत में कर्क है वही कर्क वृष के आरंभ में है।

(११) भांश—मेष के नीचे १ रख कर क्रमानुसार एक के नीचे एक राशियाँ लिखना। अंत में जो आवे उस के आगे की राशि का अंक आगे की राशि में प्रारंभ में रख कर क्रमानुसार राशियाँ रखते जाने से चक्र बन जायगा। इस में मेष, वृष, मिथुन कर्क में आरंभ में १, ४, ७, १० राशियाँ क्रमानुसार रहती हैं। इसी प्रकार प्रत्येक ४-४ राशियों में एक सरीखा भांश होता है।

(१२) खवेदांश = इस में सब विषम राशियों में १ और सब सम राशियों में ७ आरंभ का खवेदांश होता है। इस प्रकार मेष में जो राशियाँ रहेंगी वही सब विषम राशि में होंगी जो वृष में होंगी वही सब सम राशियों में होंगी। मेष में १ और वृष में ७ से आरंभ कर उन के नीचे के अंक क्रमानुसार लिख देने से चक्र बन जायगा।

(१३) अक्षवेदांश = मेष में १ वृष में ५, मिथुन में ९ प्रारंभिक अक्ष० होता है। इसी प्रकार आगे की प्रत्येक ३-३ राशियों में एक सरीखा अक्ष० होता है। मेष के नीचे आरंभ में १, वृष के आरंभ में ४ और जोड़ कर अर्थात् ५ राशि रखो। मिथुन के आरंभ में फिर ४ जोड़ कर अर्थात् ९ राशि रखो और क्रमानुसार एक के नीचे एक राशियों के अंक लिख दो तो चक्र बन जायगा। मेष कर्क, तुला और मकर का एक सरीखा होगा। इसी प्रकार २, ५, ८, ११ राशियों का एक सरीखा और ३-६-९-१२ राशियों का एक सरीखा होगा।

(१४) त्रिंशांश = विषम राशियों का एक सरीखा और सम राशियों का एक सरीखा होता है। इसके बनाने की पद्धति दूसरों से निराली है।

(१५) षष्ठ्यंश = प्रत्येक राशियों का प्रारंभिक षष्ठ्यंश में वही राशि रहती है। इस में प्रत्येक राशियों का प्रारंभिक अंक जैसे मेष के नीचे १, वृष के नीचे २, मिथुन में ३, मीन में १२ इत्यादि लिख लो फिर उनके नीचे क्रमानुसार आगे के अंक लिखते जाओ तो चक्र बन जायगा।

षष्ठ्यंश चक्र न हो तो गणित से निकालने की रीति :—

(१) अंश को दुगुना करना यदि आगे कला भी है तो ३० के भीतर कला हो तो १ जोड़ना ३० कला से अधिक हो तो २ जोड़ना। योग में १२ का भाग देना। जो शेष बचे उतनी संख्या तक ग्रह की राशि से गिनना तो षष्ठ्यंश की राशि प्राप्त होगी। जैसा चक्र २ में दिया है। जैसे लग्न मीन ०°–२८′ है=० × २ + १ (३०′ के भीतर होने से) = ० + १ = १

मीन से १ गिना तो मीन १२ षष्ठ्यंश आया।

रवि कर्क २७°–३′ = २७ × २ + १ = ५५ ÷ १२ = शेष ७=कर्क से सातवां=१०
चंद्र धन २०°–५५′ = २० × २ + २ = ४२ ÷ १२ = शेष ६=धन से छठवां=२
मंगल वृष १६°–२७′ = १६ × २ + १ = ३३ ÷ १२ = शेष ९= वृष से नवां=१०
बुध कर्क १३°–०′ = १३ × २ + १ = २७ ÷ १२ = शेष ३=कर्क से तीसरा=६
गुरु धन १८°–४४′ = १८ × २ + २ = ३८ ÷ १२ = शेष २=धन से दूसरा = १०
शुक्र मिथुन १७°–१४′=१७ × २ + १=३५ ÷ १२=शेष ११=मिथुन से ग्यारवां=१
शनि वृष २०°–३०′–१०″=२० × २ + २=४२ ÷ १२=शेष ६=वृष से छठवां=७

(२) अन्य मत

प्रत्येक राशि के नीचे वही अंक रहते हैं जो राशि की संख्या है। उसके आगे दुबारा फिर वही अंक रहेगा। उपरांत आगे का अंक दो दो बार रखते जाने से चक्र बन जाता है। जैसा चक्र ४ में दिया है।

इसके निकालने की रीति—अंश में, यदि कला भी है तो १ और जोड़ देना, योग में १२ का भाग देकर शेष संख्या तक उस ग्रह की राशि से गिनना तो षष्ठ्यंश प्राप्त होगा। जैसे :—

बुध कर्क १३°-०′-३५″=१३ + १=१४ ÷ १२=शेष २=कर्क से दूसरा=सिंह=५
गुरु धन १८°-४४′== १८ + १=१९ ÷ १२=शेष ७=धन से सातवां=मिथुन = ३

(३) अन्यमत

राशि को दुगना करना। यदि कला ३० से कम हो तो १, यदि ३० से अधिक हो तो २ जोड़ना। योग में १२ का भाग देने से जो शेष बचे ग्रह की राशि से उस संख्या तक विषम राशि हो से क्रम से गिनना। यदि सम राशि हो

तो विरुद्ध क्रम से गिनना। जो प्राप्त हो वही षष्ठचंश की राशि होगी। जैसा चक्र ३ में बताया है।

जैसे रवि कर्क २७°–३′ =सम २७×२+१=५५÷१२=शेष ७ =कर्क से सातवीं विरुद्ध क्रम से गिना क्योंकि कर्क सम है। १ कर्क, २ मिथुन ३ वृष, ४ मेष, ५ मीन, ६ कुंभ, ७ मकर आया। इस कारण मकर १० राशि का षष्ठचंश प्राप्त हुआ। आरंभ में बताई रीति से इस में केवल इतना ही अंतर है कि सम राशि में विरुद्ध क्रम से शेष संख्या तक गिनना पड़ता है। विषम राशि में कोई अंतर नहीं आता।

यहाँ ३ प्रकार से षष्ठचंश साधन करना बताया है। परन्तु बहुधा ज्योतिषी लोग पहिली रीति से, जिसका चक्र २ में दिया है, षष्ठचंश साधन करते हैं। पाराशरी आदि में इसी प्रकार षष्ठचंश साधन करना बताया है।

वर्ग साधन का उद्देश्य

जो ग्रह का स्वस्थान है वह राशि उस ग्रह के वर्ग में आ जावे तो उसे स्ववर्ग (अपने वर्ग) में होना कहते हैं। जो ग्रह स्ववर्ग में अपने उच्च, मूल त्रिकोण, या अधि-मित्र स्थान में, वर्ग में हो तो अच्छे फल का देने वाला होता है। इस से इन की पारिजात आदि में गणना होती है।

वर्ग में जो उन के स्वामी बताये हैं वे यथानाम फल देते हैं। षष्ठचंश में क्रूर षष्ठचंश होने से शुभ फल का नाश करते हैं। इस कारण अंश के साथ उन के स्वामी (देवता) भी देख लेने चाहिए।

पृथक् २ वर्ग कुंडली से किसी विशेष २ बातों का विचार होता है। जैसे होरा कुंडली से धन सम्पत्ति आदि, द्रेष्काण से कर्म के फलों का ज्ञान, सप्तमांश से भाइयों का ज्ञान इत्यादि।

वर्ग साधन में १० वर्ग मुख्य हैं। उन से विशेष शुभाशुभ का विचार होता है। किसी राशि के वर्ग में जो राशि है उसे देखना कि दूसरे वर्गों में वह कितने वार आई है। यदि एक से अधिक वार वह राशि दश वर्ग में आती है तो उस की निम्नलिखित संज्ञा होती है—

१ वर्ग स्व अंश में	= स्वांशक	= फल	= यशस्वी बुद्धिमान सुखो।
२ वर्ग में हो	= पारिजात	= ,,	= धनवान्।
३ ,, ,,	= उत्तमांश	= ,,	= सम्पत्तिवान्।
४ ,, ,,	= गोपुर	= ,,	= धनवान् तथा सम्पूर्ण विद्या जानने वाला।

५ वर्ग में हो = सिंहासन = फल = समस्त लोकों में स्तुत्य राजा ।
६ ,, ,, = पारावत = ,, = समस्त शास्त्र जानने वाला राजा ।
७ ,, ,, = देवलोक = ,, = महादान देने वाला राजा ।
८ ,, ,, =अमर या सुरलोक=,,=सतभाज्य धनधान्य पुत्र सहित राजा ।
९ ,, ,, = ऐरावत = ,, = चक्रवर्ती राजा होकर समस्त ऐश्वर्य से परिपूर्ण ।
१० ,, ,, =स्वांशकीय वैशेथिक=,,=इन सब से श्रेष्ठ ।

जो ग्रह स्ववर्ग में हो उनकी परिजात आदि संज्ञाएं शुभफल देती हैं जो त्रिक स्थान (६–८–१२) मे या शत्रु राशि में, नीचराशि में या अस्तंगत या बल रहित या मरण अवस्था में प्राप्त हों वे शुभ फलों का नाश करते हैं ।

अब पारावत आदि संज्ञा देखने के लिये १० वर्ग चक्र बनाते हैं । पहिले जो वर्ग साधन कर चुके हैं उसी से वर्ग लिया है । ग्रह स्वस्थान, उच्च मूल त्रिकोण या अधि मित्र स्थान मं वर्ग में होता है तो उनकी संख्या गिनकर वर्ग का विचार और नाम करण होता है ।

दश वर्ग चक्र

	वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न
१	लग्न में	४	९	२	४	९स्व०	३	२	१२
२	होरा में	५ स्व०	४स्व०	५	४	४ उच्च	४	५	४
३	द्रेष्काण	१२	५	६	८	१	७ स्व.	१० स्व.	१२
४	सप्तमांश	४	१	११	१	१	७ स्व.	१२	६
५	नवमांश	१२	७	२	७	६	१२ उच्च	४	४
६	दशमांश	९	३	३	४	३	८	४	८
७	द्वादशांश	२	५	८ स्व.	९	४ उ०	९	१० स्व	१२
८	षोड़शांश	३	८	१ स्व.	७	६	६	३	९
९	त्रीशांश	८	३	१२	१२	३	९	१०स्व०	२
१०	षष्ठ्यंश	१०	२उ०	१०उ०	६ स्व,	१०	१	७	१२
		०	पारि-	उत्त-	०	उत्त-	उत्त-	उत्त-	(मीन)
	संज्ञा		जात	मांश		मांश	मांश	मांश	गोपुर

दशवर्ग चक्र में सूर्य केवल होरा में स्वस्थानी है । चन्द्र होरा में स्वस्थानी है और षष्ठ्यंश में उच्च का है २ वर्ग में बल पाया तो पारिजात हुआ । मंगल स्वद्वादशांश और स्वषोड़शांश में और षष्ठ्यंश में उच्च का होने से ३ स्थान में बल पाया तो उत्तमांश हुआ । गुरु लग्न कुंडली में स्वस्थानी है । होरा और द्वादशांश में उच्च का

है ३ बल होने से उत्तमांश हुआ। शुक्र द्रेष्काण और सप्तमांश में स्वस्थानी और नवमांश में उच्च का होने से ३ बल पाया तो उत्तमांश हुआ। शनि स्वद्रेष्काण स्वद्वादशांश और त्रिंशांश में है। ३ वर्ग में बल पाने से उत्तमांश हुआ। मीन लग्न ४ वर्ग में होने से गोपुरांश संज्ञक हुई।

कोई ग्रह केन्द्र त्रिकोण या धन स्थान का स्वामी होकर एक दूसरे से युति करें तब उसका उत्तम फल उपरोक्त होता है।

जिस प्रकार ऊपर १० वर्ग चक्र बनाया है इसी प्रकार ग्रहों का बल साधन करने के लिये सप्त वर्ग चक्र बनाया जाता है। ग्रह बल साधन करने के लिये आगे सप्त वर्ग चक्र बनाया गया है।

—. : :—

अध्याय २०

अष्टकवर्ग साधन

ग्रहों की राशि के अनुसार फल जानने के लिये उस राशि में कितना शुभत्व है अर्थात् कितना बल है यह जानने को अष्टकवर्ग साधन करना पड़ता है।

जन्म काल में जो ग्रह जिस राशि में है उसके अनुसार सब ग्रहों का अष्टक वर्ग बनाना पड़ता है।

नीचे प्रत्येक ग्रह का अष्टक वर्ग चक्र दिया है उसके अनुसार अष्टक वर्ग कुंडली बनानी पड़ती है। ग्रह के अष्टक वर्ग चक्र में जो अंक दिये हैं उनसे प्रगट होता है कि उतने स्थान पर वह ग्रह शुभ होता है। कुंडली में भरने के लिये शुभ का और अशुभ का चिह्न बनाया जाता है। कोई ० (शून्य) को शुभ। (खड़ी रेखा) को अशुभ का चिह्न मानकर उपयोग करते हैं। कोई ० को अशुभ और। को शुभ का चिह्न मानकर उपयोग करते हैं। इसमें से कोई भी चिह्न शुभ का नियुक्त कर लेना चाहिए।

यहाँ पर। (रेखा) से शुभ चिह्न और ० (शून्य) अशुभ चिह्न मानकर उपयोग किया है। ० (शून्य) खाली समझा जाता है इससे इसे अशुभ माना है। कोई दूसरी इस सम्बन्ध की पुस्तक पढ़ते समय पहिले देख लेना चाहिए कि ० को

शुभ या अशुभ माना है तब उसके अनुसार फल समझना। इस प्रकार लग्न सहित रवि से शनि तक ७ ग्रहों को लेकर ८ अष्टक वर्ग कुंडली बनाई जाती है।

अष्टक वर्ग का उपयोग

इसके साधन से गोचर फल, आयु निर्माण, दशाशुभाशुभ का प्रत्यक्ष फल मिलता है। इससे प्रत्यक्ष आयु का निर्णय मिलता है। इससे समुदाय और भिन्नायु निकाली जाती है।

जिस राशि पर चंद्र रहता है वह राशि जातक के प्रत्येक मानसिक कार्यों को सफलता-विफलता दर्शाती है। इसी के आधार पर गोचर का फल कहा जाता है। गोचर का फल स्थूल है क्योंकि सब प्राणियों को १२ राशि में से किसी एक में चंद्र रहता है। इस कारण एक राशि के आधार पर सब को एक-सा फल बताना स्थूल ही फल हुआ। परन्तु अष्टक वर्ग के साधन से गोचर का सूक्ष्म फल प्रत्येक मनुष्य का जाना जा सकता है। इस कारण अष्टक वर्ग साधन किया जाता है।

शुभ अष्टक वर्ग चक्र

सुर्य का अष्टक वर्ग ४८

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

चंद्र का अष्टक वर्ग ४८

चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	६	१०	७
७	६	५	८	७	११	११	८
१०	९	७	१०	९			१०
११	१०	८	११	१०			११
	११	१०	१२	११			
	११						

मंगल का अष्टक वर्ग ३९

मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चंद्र
१	३	६	६	१	१	३	३
२	५	१०	८	४	३	५	६
४	६	११	११	७	६	६	११
७	११	१२	१२	८	१०	१०	
८				९	११	११	
१०				१०			
११				११			

बुध का अष्टक वर्ग ५४

बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल
१	६	१	१	१	५	२	१
३	८	२	२	२	६	४	२
५	११	३	४	४	९	६	४
६	१२	४	७	६	११	८	७
९		५	८	८	१२	१०	८
१०		८	९	१०		११	९
११		९	१०	११			१०
१२		११	११				११

गुरु का अष्टक वर्ग ५६

गुरु	शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१	२	३	१	१	२	१	१
२	५	५	२	२	५	२	२
३	६	६	४	३	७	४	४
४	९	१२	५	४	९	७	५
७	१०		६	७	११	८	६
८	११		७	८		१०	९
१०			९	९		११	१०
११			१०	१०			११
			११	११			

शुक्र का अष्टक वर्ग ५२

शुक्र	शनि	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु
१	३	१	८	१	२	३	५
२	४	२	११	२	५	५	८
३	५	३	१२	३	६	६	९
४	८	४		४	९	९	१०
५	९	५		५	११	११	११
८	१०	८		८	१२		
९	११	९		९			
१०		११		११			
११				१२			

शनि का अष्टक वर्ग ३९

शनि	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
३	१	१	३	३	६	५	५
५	३	२	६	५	८	६	११
६	४	४	११	६	९	११	१२
११	६	७		१०	१०	१२	
	१०	८		११	११		
	११	१०		१२	१२		
		११					

लग्न का अष्टक वर्ग ४९

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
३	३	३	१	१	१	१	१
६	४	६	३	२	२	२	३
१०	६	१०	६	४	४	३	४
११	१०	११	१०	६	५	४	६
	११		११	८	६	५	१०
	१२			१०	७	८	११
				११	९	९	
					१०	११	
					११		

इस कुण्डली पर से अष्टक वर्ग साधन करते हैं।

लग्न कुण्डली

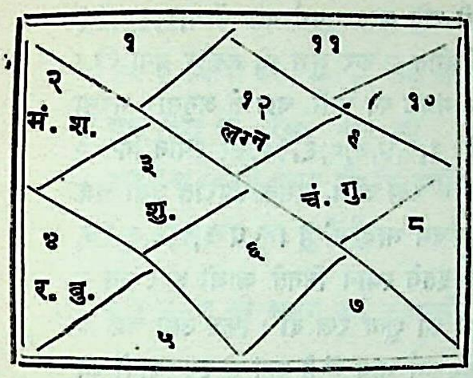

सूर्य अष्टक वर्ग कुण्डली

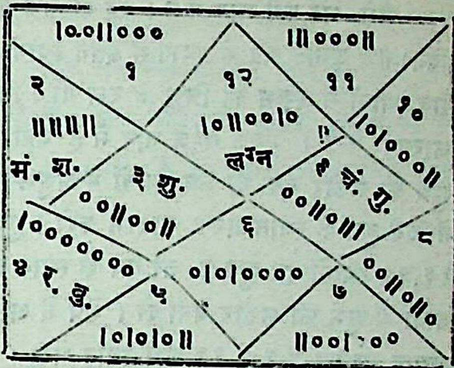

एक कुण्डली बना लेना जिसमें रवि अष्टक वर्ग को शुभ रेखाएं भरनी हैं। इस कुण्डली के ऊपर रवि अष्टक वर्ग कुण्डली लिख देना। इस कुण्डली में लग्न कुंडली सरीखे ग्रह और राशियाँ लिख लेनी चाहिए। फिर कुंडली इस प्रकार भरना आरंभ करो।—

(१) रवि अष्टक वर्ग चक्र देखो। रवि के नीचे जितने अंक दिये हैं उतने-उतने स्थान पर उन २ ग्रह से गिनकर शुभ रेखा लिख देना और जो स्थान उसमें नहीं बनाये वे अशुभ के स्थान हैं उनमें शून्य लिख देना जिससे भूल न हो कि कोई वर्ग भरने को रह तो नहीं गया। वास्तव में अशुभ का ० लिखने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु यहाँ अभ्यास के लिये अशुभ स्थान में ० भी लिख दिया है।

यहाँ सूर्य लग्न कुंडली में पंचम स्थान में है उस स्थान को १ मान कर वहाँ से रवि अष्टक वर्ग में दिये हुए रवि के शुभ स्थान १,२,४,७,८,९,१० और ११ स्थान गिन कर शुभ की लकीर बनाते जाओ। जैसे पंचम में सूर्य है तो वहां से १ स्थान अर्थात् पंचम में १ लकीर बनाया फिर २ दिया है इससे पंचम से २ गिना तो पंचम से दूसरा घर अर्थात् छटे भाव में १ लकीर बना दिया। ३(तीसरे) में शुभ नहीं है तो पंचम से तीसरे अर्थात जाया भाव में अशुभ का शून्य रख दिया। चौथे में शुभ है तो पंचम से चौथे में मृत्यु भाव है वहाँ शुभ को खड़ी लकीर बना दिया फिर ५-६ नहीं दिया इससे ५-६ में शुभ नहीं हैं तो पंचम से पांचवाँ और छठवां धर्म और कर्म भाव में अशुभ का शून्य रख दिया फिर आगे ७ से ११ तक शुभ है तो आगे के ५ भाव में शुभ की लकीर बना दिया। अर्थात् लाभ, व्यय, लग्न, धन और सहज भाव में शुभ की लकीर बना दिया। १२ में शुभ नहीं है क्योंकि १२ नहीं दिया। पंचम से बारहवाँ सुख भाव होता है वहाँ अशुभ का ० रख दिया। इस प्रकर रवि अष्टक वर्ग चक्र में दिये सूर्य के शुभ और अशुभ स्थान भर

गये । अब इसी कुंडली में शेष ग्रह चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि और लग्न के भी स्थान रवि अष्टक वर्ग चक्र के अनुसार उसी प्रकार भर देना पड़ेगा ।

जैसे चंद्र कर्म भाव में है । चंद्र के नीचे इसी रवि अष्टक वर्ग चक्र में ३,६,१०,११ दिया है । अर्थात् चंद्र के स्थान से इतने स्थानों में गिन २ कर शुभ की लकीर वना दो । शेष स्थानों में अशुभ का चिह्न ० रख दो । फिर मंगल का उसी चक्र के अनुसार भरना आरम्भ करो । मंगल सहज भाव में है यहाँ से १,२,४,७,८,९,१०,११ स्थान गिन २ शुभ की लकीर बना दो शेष स्थानों में अशुभ का ० रख दो । इसके उपरांत उसी चक्र में दिये बुध के स्थान भरना आरम्भ करो । बुध पंचम भाव में है । बुध ३,५,६,९,१०, ११,१२ स्थानों पर शुभ है तो बुध के स्थान से इतने स्थान गिनते जाओ और उन २ स्थानों में शुभ की लकीर बना दो । शेष में अशुभ का शून्य रख दो । फिर उसी चक्र के अनुसार गुरु का ५,६,९,११ शुभ स्थान भरो । गुरु कर्म भाव में है वहां से इन स्थानों को गिनकर शुभ की लकीर वना दो । शेष में अशुभ का शून्य रख दो । शुक्र सुख भाव में है वहाँ से चक्र में दिये हुए ६,७,१२ शुभ स्थान गिन कर उन स्थानों में शुभ लकीर बना दो । शेष में अशुभ का शून्य रख दो । फिर शनि का शुभ १,२,४,७,८,९,१० ११ स्थानों में भरो । शनि सहज भाव में है वहाँ से गिन २ कर इतने स्थानों में शुभ और शेष में अशुभ का चिह्न बना दो । फिर उसी चक्र में दिये अनुसार लग्न से ३,४, ६,१०,११,१२ स्थानों में शुभ शेष में अशुभ चिह्न बना दो । इस प्रकार प्रत्येक भाव में शुभ और अशुभ मिल कर ८-८ चिह्न रवि अष्टक वर्ग चक्रानुसार वन जायँगे । ८ से कम चिह्न हों तो समझना कि कहीं लिखने में भूल हो गई है । जब इस प्रकार लिखने का अभ्यास हो जावे तो अशुभ का चिह्न बनाने की आवश्यकता नहीं है; केवल शुभ का चिह्न बना दिया करो । जब आठों अष्टक वर्ग को पृथक् २ आठ कुण्डली बन जायगी तो सबका एक चक्र बना लिया जायगा ।

(२) चंद्र की अष्टक वर्ग कुण्डली

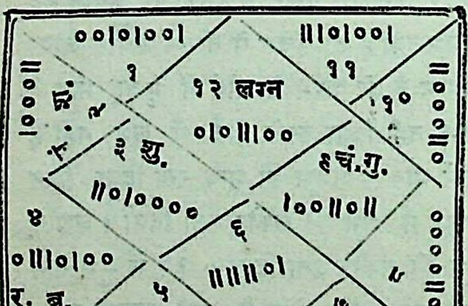

जिस प्रकार सूर्य की अष्टक वर्ग कुंडली भरनी पड़ी थी उसी प्रकार चंद्र के अष्टकवर्ग चक्र के अनुसार प्रत्येक ग्रहों के शुभ स्थान इसमें भरने पड़ेंगे । चंद्र का अष्टक वर्ग चक्र देख २ कर चंद्र की अष्टक वर्ग कुंडली के स्थान भरना आगे बताया है ।

पहिले चंद्र जिस स्थान में है वहाँ से १ गिन कर १,३,६,७,१०,११

स्थानों में शुभ चिह्न बना दो। फिर मंगल जिस स्थान में है वहाँ से २,३,५,६,६,१०, ११ स्थानों पर शुभ चिह्न बना दो। इसी प्रकार बुध, गुरु, शुक्र, शनि, लग्न और सूर्य से उन २ स्थानों पर जिनके अंक चंद्र के अष्टक वर्ग चक्र में दिये ग्रहों के नीचे दिये हैं शुभ चिह्न की रेखा बना दो। इसमें जो स्थान नहीं दिये अर्थात् अशुभ का भी ० भर देना जिससे प्रगट हो कि प्रत्येक ग्रह और लग्न के शुभ और अशुभ चिह्न मिल कर ८ चिह्न भरे जा चुके हैं।

(३) मंगल की अष्टक वर्ग कुण्डली

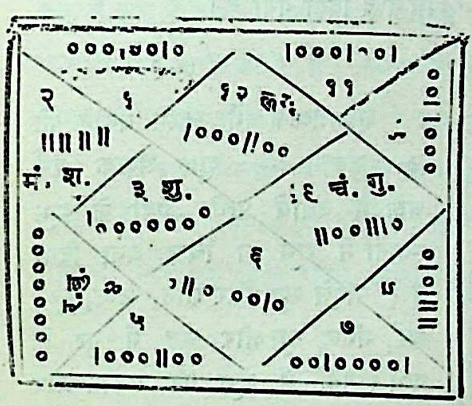

इस कुंडली में मंगल के अष्टक वर्ग चक्र के अनुसार पहिले मंगल फिर बुध, गुरु, शुक्र, शनि, लग्न और सूर्य, चंद्र के स्थान से उन-उन स्थानों में जो अंक उनके नीचे चक्र में दिये हैं शुभ की लकीर बना दो तो मंगल की अष्टक वर्ग कुंडली बन जायगी। इसमें भी अशुभ का ० चिह्न दे दिया गया है जिससे समझ में आ जावे कि कहाँ शुभ कहाँ अशुभ है।

(४) बुध की अष्टक वर्ग कुंडली

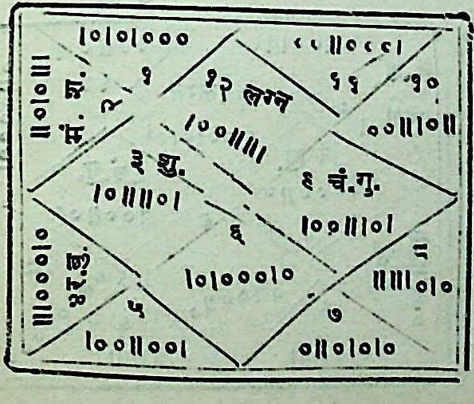

बुध के अष्टक वर्ग चक्र पर से बुध की अष्टक वर्ग कुंडली बनाई गई है। बुध, गुरु, शुक्र, शनि, लग्न, सूर्य, चंद्र और मंगल जहाँ २ हैं उन से चक्र के अनुसार स्थानों की संख्या गिन कर शुभ चिह्न बना दिया है। इस कुंडली में अशुभ चिह्न भी बना दिया गया है जिससे मिलान करने में असुविधा न हो।

(५) गुरु की अष्टक वर्ग कुंडली

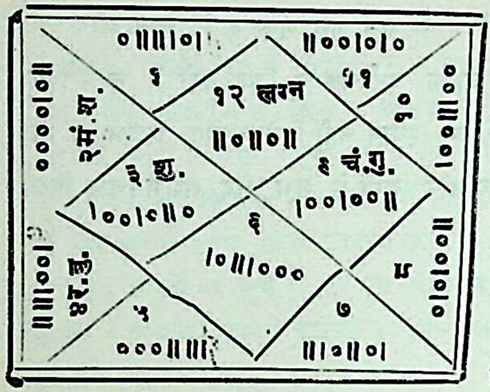

गुरु की अष्टक वर्ग कुंडली बनाने के लिये उपरोक्त प्रकार से पहिले लग्न कुंडली बनाकर फिर गुरु के अष्टक वर्ग चक्र पर से गुरु, शुक्र, शनि, लग्न, सूर्य, चंद्र, मंगल और बुध के नीचे दिये स्थानों में चक्र के अनुसार उन्हीं-उन्हीं स्थानों में शुभ स्थान का चिह्न भर दिया है। शेष में अशुभ का चिह्न दे दिया गया है।

(६) शुक्र की अष्टक वर्ग कुंडली

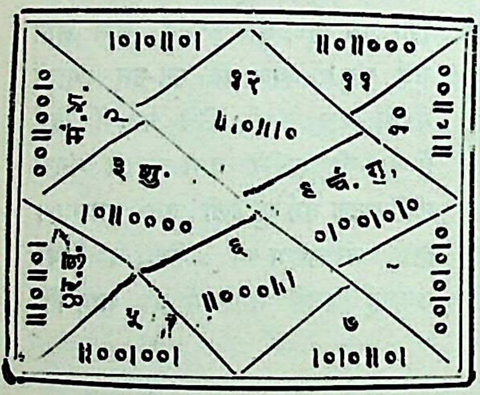

शुक्र अष्टक वर्ग कुंडली बनाने को लग्न कुंडली में, शुक्र अष्टक वर्ग चक्र में बताये प्रत्येक ग्रहों के शुभ स्थानों में शुभ का चिह्न बना दिया है। पहिले शुक्र फिर शनि, लग्न, सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध और अंत में गुरु के शुभ स्थानों में शुभ की लकीर और अनुक्त (न बताये स्थानों में) अशुभ का ० चिह्न बना देने से यह कुंडली बन गई।

शनि की अष्टक वर्ग कुंडली

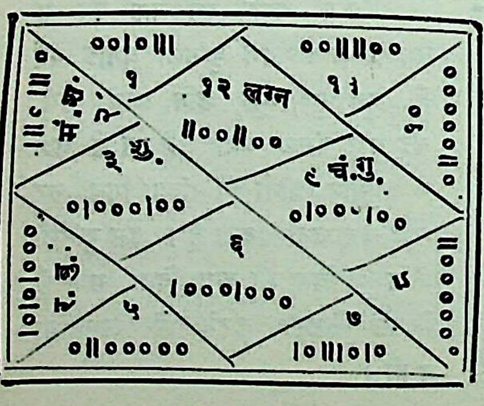

लग्न की अष्टक वर्ग कुंडली

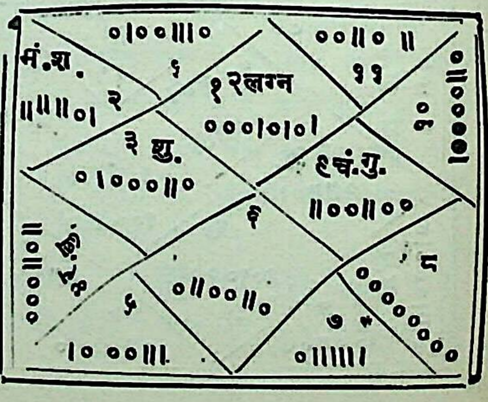

शनि अष्टक वर्ग चक्र के अनुसार शनि की और लग्न अष्टक वर्ग चक्र के अनुसार लग्न की अष्टक वर्ग कुंडली ऊपर बताई रीति के अनुसार बनाई गई है। चक्र में जिन-जिन स्थानों में शुभ के अंक दिये हैं उन्हीं स्थानों में शुभ के चिह्न शेष में अशुभ चिह्न ० लिख देने से अष्टक वर्ग कुंडली बन गई है।

ऊपर जो ८ अष्टक वर्ग कुंडली बनाई गई हैं यदि उनको नीचे बताई रीति से ८ चक्र बनाकर उनमें अष्टक वर्ग की शुभाशुभ रेखा और शून्य भरा जावे तो सुगम होगा। इसमें भूल भी नहीं हो सकती। जिस प्रकार कुंडली में रेखाएं भरी गई थीं उसी प्रकार यहाँ लिखा जाता है। अंत में शुभ रेखाओं का योग दिया जाता है। इस चक्र में लग्न कुंडली के अनुसार ही पहिले लग्न की राशि दी है जिससे अंत में व्यय भाव में कुंभ राशि आती है। स्थान की गिनती करने के लिये जहाँ ग्रह है उसे एक गिनो अर्थात् उसे पहिला स्थान गिनते हुए इच्छित स्थान तक गिनते चले जाओ। यदि कुंभ (जो बारहवें स्थान में है) के आगे और गिनना पड़े तो आगे मीन को गिनो जो लग्न में है और आवश्यक हो तो आगे और गिनते जाओ। जहाँ से गिनना आरंभ हुआ था उसके एक स्थान पहिले बारहवाँ स्थान होगा।

अष्टकवर्ग चक्र

रवि का अष्टक वर्ग चक्र

राशि	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
ग्रह	लग्न	०	मं.	शु.	र.	०	०	०	०	चं.	०	०
			श.		बु.					गु.		
सूर्य	।	।	।	०	।	।	०	।	०	०	।	।
चंद्र	०	०	।	०	०	०	।	।	०	०	०	।
मंगल	।	०	।	।	०	।	०	०	।	।	।	।
बुध	।	।	।	।	०	०	।	०	।	।	०	०
गुरु	०	।	।	०	०	।	०	।	०	०	०	०
शुक्र	०	०	।	०	०	०	०	०	।	।	०	०
शनि	।	०	।	।	०	।	०	०	।	।	।	।
लग्न	०	०	।	।	०	।	०	०	०	।	।	।
योग	४	३	८	४	१	५	२	३	४	५	४	५

चंद्र का अष्टक वर्ग चक्र

राशि	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
ग्रह	ल.	०	मं.	शु.	र.	०	०	०	०	चं.	०	०
			श.		बु.					बृ.		
चंद्र	०	०	।	।	०	०	।	।	०	।	०	।
मंगल	।	०	०	।	।	०	।	।	०	०	।	।
बुध	०	।	।	०	।	०	।	।	।	०	।	।
गुरु	।	०	०	।	।	०	।	।	।	।	०	०
शुक्र	।	।	०	०	०	।	।	।	०	।	०	।
शनि	।	०	०	०	।	०	।	।	०	०	०	०
लग्न	०	०	।	०	०	।	०	०	०	।	।	०
सूर्य	०	।	।	०	०	०	।	०	०	।	।	।
योग	४	३	४	३	४	२	७	६	२	५	४	५

मंगल का अष्टक वर्ग चक्र

राशि	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
ग्रह	ल.	०	मं. श.	शु.	र. बु.	०	०	०	०	चं. गु.	०	०
मंगल	।	०	।	।	०	।	०	०	।	।	०	।
बुध	०	०	।	०	०	०	।	०	।	।	०	०
गुरु	०	०	।	०	०	०	।	।	।	०	०	०
शुक्र	०	।	।	०	०	०	०	०	।	०	।	०
शनि	।	०	।	०	०	।	०	०	।	।	।	।
लग्न	।	०	।	०	०	।	०	०	०	।	।	०
सूर्य	०	।	।	०	०	०	।	०	।	।	०	०
चंद्र	०	०	।	०	०	०	०	।	०	०	०	।
योग	३	२	८	१	०	३	३	२	६	५	३	३

बुध का अष्टक वर्ग चक्र

राशि	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
ग्रह	ल.	०	मं. श.	शु. ०	र. बु.	०	०	०	०	चं. गु.	०	०
बुध	।	।	।	।	।	०	।	०	।	।	०	०
गुरु	०	०	।	०	।	०	०	।	।	०	०	०
शुक्र	०	।	०	।	।	।	।	।	०	०	।	।
शनि	।	०	।	।	०	।	०	०	।	।	।	।
लग्न	।	।	०	।	०	।	०	।	०	।	।	०
सूर्य	।	०	।	।	०	०	०	०	।	।	०	०
चंद्र	।	०	।	०	।	०	।	।	०	०	।	०
मंगल	।	०	।	।	०	।	०	०	।	।	।	।
योग	६	३	६	६	४	४	३	४	५	५	५	३

गुरु का अष्टक वर्ग चक्र

राशि	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
ग्रह	ल.	०	मं.	शु.	र.	०	०	०	०	चं.	०	०
			श.		बु.					गु.		
गुरु	|	०	०	|	|	०	|	|	०	|	|	|
शुक्र	|	|	०	०	|	०	०	|	|	०	०	|
शनि	०	|	०	०	|	०	|	|	०	०	०	०
लग्न	|	|	०	|	|	|	|	०	|	|	|	०
सूर्य	|	|	|	०	|	|	|	|	०	०	|	|
चंद्र	०	|	०	|	०	|	०	|	०	०	|	०
मंगल	|	०	|	|	०	|	०	०	|	|	०	|
बुध	|	|	|	०	|	|	०	|	|	|	०	|
योग	६	६	३	४	६	५	४	६	४	४	४	४

शुक्र का अष्टक वर्ग चक्र

राशि	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
ग्रह	ल.	०	मं.	शु.	र.	०	०	०	०	चं.	०	०
			श.		बु.					गु.		
शुक्र	|	|	०	|	|	|	|	|	०	०	|	|
शनि	|	०	०	०	|	|	|	०	०	|	|	|
लग्न	|	|	|	|	|	०	०	|	|	०	|	०
सूर्य	०	०	|	|	०	०	०	०	०	०	०	|
चंद्र	|	|	०	०	|	|	०	|	|	|	|	|
मंगल	|	|	०	०	|	०	|	|	०	०	|	०
बुध	|	०	|	०	०	०	|	०	|	|	०	०
गुरु	०	|	०	०	|	|	|	|	०	०	०	०
योग	६	५	३	३	६	४	५	५	३	३	५	४

शनि का अष्टक वर्ग चक्र

राशि	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
ग्रह	ल.	०	मं.	शु.	र.	०	०	०	०	चं.	०	०
			श.		बु.					गु.		
शनि	।	०	०	०	।	०	।	।	०	०	०	०
लग्न	।	०	।	।	०	।	०	०	०	।	।	०
सूर्य	०	।	।	०	।	।	०	।	०	०	।	।
चंद्र	०	०	।	०	०	०	०	।	०	०	०	।
मंगल	।	।	०	०	।	०	।	।	०	०	०	।
बुध	।	।	।	।	०	०	०	०	०	।	०	।
गुरु	०	।	।	०	०	०	०	।	।	०	०	०
शुक्र	०	।	।	०	०	०	०	०	।	०	०	०
योग	४	५	६	२	३	२	२	५	२	२	२	४

लग्न का अष्टक वर्ग चक्र

राशि	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
ग्रह	ल.	०	मं.	शु.	र.	०	०	०	०	चं.	०	०
			श.		बु.					गु.		
लग्न	०	०	।	०	०	।	०	०	०	।	।	०
सूर्य	०	।	।	।	०	०	।	।	०	।	०	०
चंद्र	०	०	।	०	०	०	।	।	०	०	०	।
मंगल	।	०	।	०	।	०	०	।	०	०	०	।
बुध	०	।	।	०	।	।	०	।	०	।	०	।
गुरु	।	।	।	।	०	।	।	।	०	।	।	०
शुक्र	०	।	०	।	।	।	।	।	०	०	।	।
शनि	।	०	।	०	।	।	०	।	०	०	०	।
योग	३	४	७	३	४	५	४	७	०	४	३	५

ऊपर जो ८ पृथक्-पृथक् अष्टक वर्ग के चक्र बने हैं उनमें से केवल शुभ अष्टक वर्ग का योग लेकर यहाँ पर सबको एकत्र कर एक चक्र में बनाया है ।

शुभ अष्टक वर्ग चक्र ।

राशि	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ
ग्रह	लग्न	. मं. श.	शु.	र. बु.	.	.	,	.	चं. गु.	.	.	.	योग
रवि	४	३	८	४	१	५	२	३	४	५	४	५	४८
चंद्र	४	३	४	३	४	२	७	६	२	५	४	५	४९
मंगल	३	२	८	१	०	३	३	२	६	५	३	३	३९
बुध	६	३	६	६	४	४	३	४	५	५	५	३	५४
गुरु	६	६	३	४	६	५	४	६	४	४	४	४	५६
शुक्र	६	५	३	३	६	४	५	५	३	३	५	४	५२
शनि	४	५	६	२	३	२	२	५	२	२	२	४	३९
लग्न	३	४	७	३	४	५	४	७	०	४	३	५	४९
योग	३६	३१	४५	२६	२८	३०	३०	३८	२६	३३	३०	३३	३८६

लग्न सहित सर्व अष्टक वर्ग कुण्डली

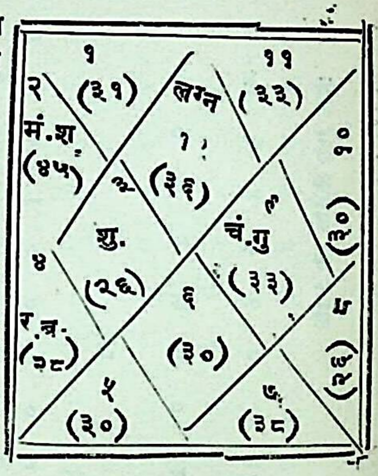

सर्व शुभ अष्टक वर्ग चक्र में नीचे जो योग आया है वही योग संख्या एक पृथक् कुंडली में लिख दिया है जिससे प्रत्येक भाव का शुभत्व प्रगट हो। जैसे लग्न मीन है। मीन में ३६ शुभ रेखा पड़ी हैं। धन भाव में मेष राशि है उसमें ३१ शुभ रेखा पड़ी हैं इत्यादि उपरोक्त कुंडली के अनुसार जानना। इस पर से फल का विचार होता है। जैसे सम्पूर्ण शुभ रेखाओं का योग यदि २८ हो तो सम फल। २८ से कम हो तो अशुभ। २८ से अधिक हो तो उत्तम फल जानना।

अष्टक वर्ग में जो शुभ अशुभ स्थान आठों कुंडली या चक्र में बताये हैं उसके अनुसार शुभ अशुभ फल होता है। प्रत्येक ग्रह के अष्टक वर्ग में देखना किसी भाव में शुभ कितना और अशुभ कितना अधिक रहता है। घटाने से जो कुछ शेष रहे उसी के अनुसार ग्रह का शुभाशुभ जानना। किसी अष्टक वर्ग में एक भाव में सम्पूर्ण ८ शुभ रेखायें हो सकती हैं। उनका फल इस प्रकार कहा है :—

शुभ रेखा यदि १ हो=क्लेश। २=धन हानि। ३=दुःख। ४=सम (अच्छा न बुरा)। ५=नित्य सुख। ६=नित्य धन आगमन। ७=सम्पत्ति की वृद्धि। ८=प्रशस्त लक्ष्मी की प्राप्ति।

सम्पूर्ण शुभ की ८ रेखायें होती हैं। शुभ अष्टक वर्ग चक्र में दिये हुए शुभ रेखा को अशुभ में से घटाने पर कितना शुभाशुभ बचता है इसका एक चक्र नीचे बना कर बताया है। जहाँ ४ शुभ ४ अशुभ है वहाँ सम लिखा है। शुभ अधिक में +,

अशुभ अधिक में – (ऋण) चिह्न दिया है जिस से प्रगट हो कि सम से कितना शुभ अधिक या कम है। ४ में सम फल होता है इससे ४ का अंतर कर यहाँ फल दिया है।

शुभाशुभ दर्शक अष्टक वर्ग चक्र

राशि	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
ग्रह	लग्न	.	मं. श.	शु.	र. बु.	.	.	.	.	चं. गु.	.	.
सूर्य	सम	–१	+४	सम	–३	+१	–२	–१	सम	+१	सम	+१
चन्द्र	सम	–१	सम	–१	सम	–२	+३	+२	–२	+१	सम	+१
मंगल	–१	–२	+४	–३	–४	–१	–१	+२	–२	+१	–१	–१
बुध	+२	–१	+२	+२	सम	सम	–१	सम	+१	+१	+१	–१
गुरु	+२	+२	–१	सम	+२	+१	सम	+२	सम	सम	सम	सम
शुक्र	+२	+१	–१	–१	+२	सम	+१	+१	–१	–१	+१	सम
शनि	सम	+१	+२	–२	–१	–२	–२	+१	–२	–२	–२	सम
लग्न	–१	सम	+३	–१	सम	+१	सम	+३	–४	सम	–१	+१

४ = पूर्ण
३ = पौन
२ = अद्र्ध
१ = पाव
+ शुभ
— अशुभ

ऊपर के चक्र में देखने से प्रगट होगा कि लग्न पर या मीन राशि पर सूर्य का सम फल है। धन भाग या मेष राशि पर पाव फल की हानि है। तीसरे भावया वृष राशि पर ४ (पूर्ण) फल की वृद्धि है। चतुर्थ भाव या मिथुन पर पौन फल की हानि है। इसी प्रकार सब ग्रहों की शुभ अशुभ की वृद्धि हानि समझना।

जहाँ + १ दिया है समफल से पाव फल को बढ़ती, + २ से आधे फल की बढ़ती, + ३ = पौन फल की बढ़ती, + ४ से पूर्ण फल की बढ़ती समझना। जहाँ + है वहाँ अशुभ रेखा एक भी नहीं है। जहाँ + ३ है वहाँ १ अशुभ, जहाँ + २ है वहाँ २ अशुभ और जहाँ + १ है वहाँ ३ अशुभ समझना।

इसी प्रकार जहाँ –१ दिया है वहाँ पाव फल को हानि समझना, वहाँ ५ अशुभ हैं। जहाँ ६ अशुभ हैं वहाँ–२ दिया है यहाँ आधे फल की हानि, जहाँ ७ अशुभ हैं वहाँ –३ दिया है अर्थात् पौन फल की हानि और जहाँ ८ अशुभ हैं, शुभ १ भी नहीं है वहाँ –४ दिया है वहाँ पूर्ण शुभ फल की हानि समझना।

उपरोक्त फल गोचर में विचार किया जाता है। इस कुण्डली के अनुसार वृश्चिक के नीचे और लग्न के सामने –४ दिया है अर्थात् वृश्चिक लग्न सदा इस के लिए अशुभ होगी। मंगल में वृष के नीचे + दिया है। इससे समझना कि वृष

का मंगल इस को सदा शुभ होगा। जब कभी गोचर में वृष का मंगल आयगा इस जातक को शुभ ही होगा। इस प्रकार अष्टक वर्ग चक्र से गोचर फल का मिलान कर फल विचार किया जाता है।

इसके अतिरिक्त किसी विशेष समय का भी अष्टकवर्ग से विचार किया जाता है।

गुरु से वर्ष शुभ रेखा, सूर्य से मास शुभ रेखा, चंद्र से दिन शुभ रेखा का विचार होता है। अर्थात् वर्ष का विचार करना हो तो गुरु के अष्टक वर्ग से, मास का विचार सूर्य के अष्टक वर्ग से और दिन का विचार चंद्र के अष्टक वर्ग से करना चाहिए।

अष्टक वर्ग का इस प्रकार भी विचार होता है कि जो ग्रह लग्न या चंद्र से ३,६,१०,११ स्थानों में या स्वस्थान में या उच्च में, या अपने मित्र के घर में या त्रिकोण में हो वह अष्टक वर्ग में पूर्ण फल देता है। परन्तु जो ग्रह अपचय (१,२,४,५,७,८,९,१२ स्थान) में स्थित हो या अपने शत्रु के घर में या अपने नीच स्थान में हो तो अपना पूर्ण शुभ फल नहीं देता।

अष्टक वर्ग सावन चक्र द्वारा बड़ी सुगमता से किसी भी कुंडली के अष्टक वर्ग के शुभ अंक शीघ्र ही प्राप्त हो जाते हैं। इस कारण इस चक्र को बना कर रख लेना चाहिये। यह बहुत उपयोगी है।

अष्टक वर्ग साधन चक्र बनाने की रीति

चित्र संख्या १६ देखो। यह एक बड़ा चक्र दिखता है। वह एक चक्र नहीं है। इसमें ९ चक्र एक के ऊपर दूसरा चक्र रख कर यह चक्र बनाया है। चक्र में दुहरी लकीरें बनाई हैं वहीं एक से मिला हुआ दूसरा चक्र ऊपर रखा है ऐसा समझना।

पहिले सबसे बड़ा गोल चक्र कागज का काट कर बना लो। वह शनि का अष्टक वर्ग चक्र होगा। उसमें १२ राशि के १२ कोठे बना कर प्रत्येक कोठे में फिर भी छोटे-छोटे ८ कोठे बना लो जैसे यहाँ चित्र संख्या १६ में बताया है उसी प्रकार उसमें केवल ऊपरी बाहरी किनारों पर ग्रह के चिह्न लिख लो। बीच का शेष भाग बिलकुल कोरा बच रहेगा।

फिर इसके ऊपर, एक दूसरे कागज का उससे छोटा चक्र काट कर बनाया हुआ जमा दो, जो शनि के कोरे बचे हुए भाग के ऊपर ठीक जम जावे। यह शुक्र का चक्र हुआ। शुक्र के चक्र में बताए अनुसार सब ग्रह उसके किनारों पर लिख लो। शेष भाग कोरा बच रहेगा।

फिर तीसरे कागज का चक्र काट कर जो शुक्र के बचे हुए कोरे भाग के बराबर हो, गुरु का चक्र बना लो जैसा चित्र में बताया है। उसी के अनुसार किनारे पर ग्रह

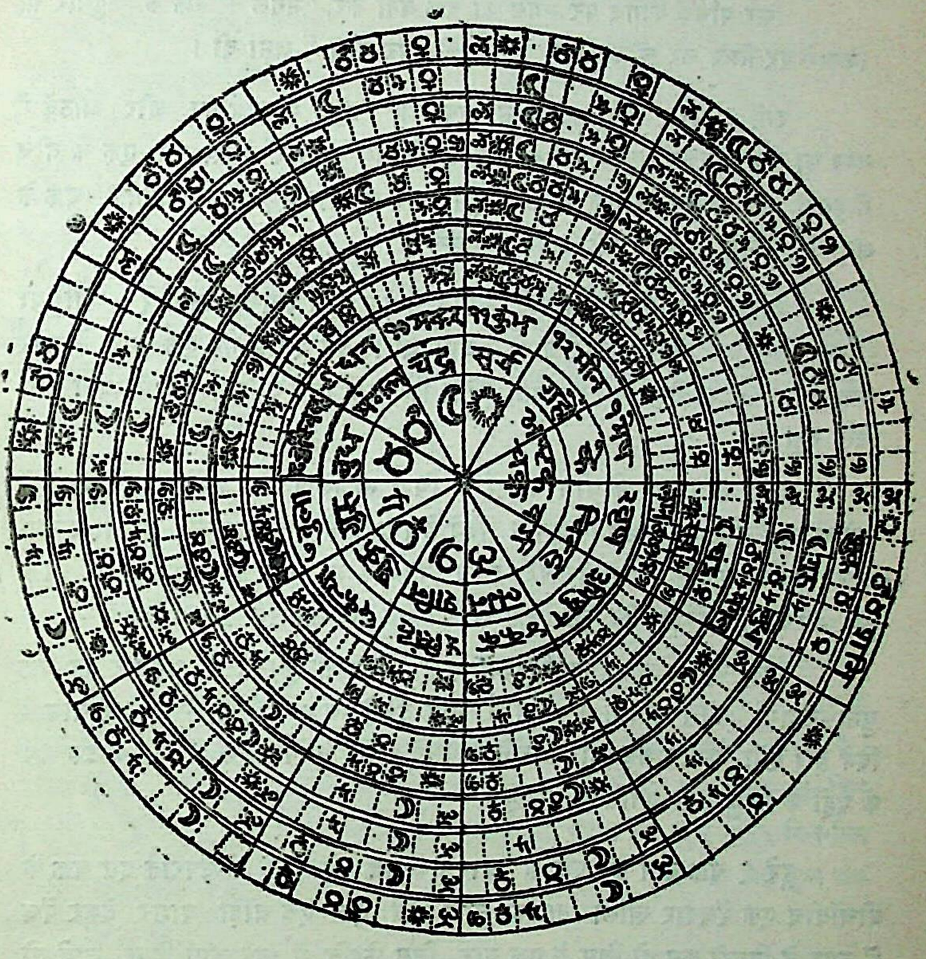

चित्र संख्या १६

अष्टक वर्ग साधन चक्र

इसमें ९ चक्र पृथक्-२ बना कर

एक दूसरे के ऊपर जमा कर रखे हुए हैं।

लिखकर, शुक्र के:बचे कोरे भाग पर इस प्रकार जमा दो कि किनारे पर लिखा न दबने पावे।

फिर चौथे कागज पर एक चक्र बुध का बना कर यहाँ बताये अनुसार बुध के चक्र के सब ग्रह किनारे पर लिख कर गुरु के बचे कोरे भाग पर जमा दो।

फिर पाँचवें कागज पर मंगल का चक्र बना कर, मंगल के चक्र के अनुसार ग्रह किनारे पर लिख कर चौथे कागज के चक्र के ऊपर बीच में जमा दो।

इसी प्रकार छठवें कागज में चन्द्र का, सातवें में सूर्य का और आठवें में लग्न का चक्र बनाकर अष्टक वर्ग के ग्रह यहाँ बताये अनुसार लिख कर एक के बीच में दूसरा चक्र क्रमानुसार एक के ऊपर दूसरा जमाते जाओ, जिससे प्रत्येक चक्र के अंत के किनारे दिखाती रहें जिनमें ग्रह लिखे हैं।

उपरांत सब के अंत में नौवें कागज में एक चक्र बनाकर उसमें १२ राशियों के नाम लिख कर सबके ऊपर बीच में जमा दो। तब इस प्रकार एक दूसरे के ऊपर चक्र जमा देने पर ऐसा दिखने लगेगा जैसा कि यहाँ चित्र संख्या १६ में बना हुआ दिख रहा है।

राशि वाले चक्र के बीच में ग्रहों के चिह्न भी लिख लो। क्योंकि इन चक्रों में ग्रहों के नाम न देकर केवल चिह्नमात्र दिये हैं। ग्रहों के कोई भी चिह्न अपनी इच्छा-नुसार चुन सकते हो जिससे ग्रह सरलता से पहचाने जा सकें। यहाँ ग्रहों के चिह्न कुछ अंग्रेजी पुस्तकों से और कुछ चिह्न इच्छित चुन कर उपयोग किये गये हैं।

पृथक् २ चक्र बनाने का उद्देश्य यह है कि किसी कुंडली के अनुसार ग्रह चक्र घुमाकर जमा सको। कुंडली के ग्रहों के नाम उनके चक्र में हिन्दी में ही पूरे नाम दे दिये हैं। इसी कारण गड़बड़ी मिटाने के लिये और सुगमता के लिये अष्टक वर्ग के ग्रहों के चिह्न मात्र बना दिये गये हैं।

पूरे ९ चक्र बना कर एक के ऊपर एक चक्र जमा लेने के उपरांत इस चक्र के बीचोंबीच एक पेंचदार खीला डालकर ऊपर नीचे एक एक चौड़ा वाशर देकर पेंच में ऊपर से ढिबरी कस दो जिस से एक बार जिस स्थिति में वह जमा दिया जावे तो वह वैसा ही जमा रहे। चक्र देखना आगे बताया है।

इस चक्र में १२ राशि के कोठे हैं और प्रत्येक कोठे के ८ विभाग कर ८ छोटे कोठे बनाये हैं। क्योंकि प्रत्येक राशि को शुभ रेखा इन्हीं से प्रगट होती है। इन ८ छोटे कोठों में क्रमानुसार नीचे बताये चिह्न दिये हैं जिससे इन के खोजने में देर न हो। यदि इन चिह्नों को पृथक् २ रंग से लिखा जाय तो इनके खोजने में और भी सरलता हो जायगी। देखने से ही शुभ रेखाओं का योग प्रगट हो जायगा इन सब बातों को आगे उदाहरण देकर समझाया है।

चिह्न	ग्रह	यदि रंग से लिखना चाहो
ल	लग्न की शुभ रेखा	नीली स्याही से
✳	सूर्य ,, ,,	गहरी लाल स्याही से
☾	चंद्र ,, ,,	बैंगनी रंग से
♂	मंगल ,, ,,	गुलाबी रंग से
☿	बुध ,, ,,	हरे रंग से
♃	गुरु ,, ,,	पीले रंग से
♀	शुक्र ,, ,,	नारंगी रंग से
♄	शनि ,, ,,	काले रंग से

इन चक्रों को बनाकर उन को पृथक-पृथक पतले पुट्ठे में प्रत्येक को चिपका लेना चाहिए जिससे जल्दी न फटें। इन चक्रों को बना लेने पर इसके सहारे बहुत ही शीघ्र अष्टक वर्ग की शुभ रेखाओं का योग निकल आता है। इस कारण इन चक्रों को अवश्य बना लेना चाहिए।

अष्टक वर्ग साधन चक्र भरने की रीति

लग्न, सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध गुरु, शुक्र और शनि का पृथक-पृथक शुभ स्थान बताने वाले चक्र लो, जो आरंभ में दिये हैं। इन प्रत्येक चक्र से पहिले लग्न के सब शुभ स्थान के अंक एकत्र करो। फिर-फिर सूर्य के शुभ स्थान के अंक प्रत्येक चक्रों से एकत्र करो। इसी प्रकार चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि के पृथक-पृथक शुभ स्थानों के अंक प्रत्येक अष्टक वर्ग चक्र से संग्रह कर लिख लो। इन्हीं अंकों पर से प्रत्येक ग्रह का अष्टक वर्ग साधन चक्र भरना पड़ेगा जैसा नीचे उदाहरण देकर बताया है।

प्रत्येक वर्ग साधन चक्र में किसी भी स्थान में उन ग्रहों के नाम लिख लो जिन के लिये वे चक्र बनाये गये हैं। ग्रह के उन्हीं लिखे हुए स्थान से शुभ स्थान गिन-गिन कर उन ग्रहों के चिह्न वहाँ बनाने पड़ेंगे जिसके अष्टक वर्ग चक्र से वह शुभ अंक लिया गया है।

(१) लग्न का अष्टक वर्ग साधन चक्र भरने के लिये

पहिले लग्न का अष्टकवर्ग चक्र लो उसमें लग्न के शुभ स्थान ३,६,१०,११ बताया है। जहाँ लग्न लिखा है वहाँ से ये स्थान गिन-गिन कर इन प्रत्येक शुभ स्थानों में लग्न अष्टक वर्ग का सूचक चिह्न ल लिख दो।

सूर्य के अष्टक वर्ग चक्र में लग्न ३,४,६,१०,११,१२ स्थानों में शुभ है इस कारण लग्न स्थान से इन स्थानों की गिनती कर प्रत्येक स्थान में सूर्य का चिह्न ✳ लिख दो।

चंद्र अष्टक वर्ग चक्र में लग्न ३,६,१०,११ स्थानों में शुभ बताया है इस कारण जहाँ लग्न लिखा है वहाँ से गिन कर इन स्थानों में चन्द्र का चिह्न ☾ बना दो।

मंगल के चक्र में लग्न १,३,६,१० स्थानों में शुभ है इन स्थानों में लग्न से गिन कर मंगल ♂ लिख दो।

बुध के चक्र में लग्न १,२,४,६,८,१०,११ स्थानों में शुभ है वहाँ ☿ बुध लिख दो।

गुरु के चक्र में लग्न १,२,४,५,६,७,९,१० स्थानों में शुभ है वहाँ ♃ गुरु लिख दो।

शुक्र में लग्न १,२,३,४,५,८,९,११ स्थानों में शुभ है वहाँ ♀ शुक्र लिख दो।

शनि में लग्न १,३,४,६,१०,११ स्थानों में शुभ होने से वहाँ ♄ शनि लिख दो।

(२) सूर्य का चक्र भरने के लिये

लग्न के चक्र में सूर्य ३,४,६,१०,११,१२ स्थानों शुभ है। जहाँ सूर्य लिखा है वहाँ से ये स्थान गिन कर वहाँ ल लग्न लिख दो।

सूर्य १,२,४,७,८,९,१०,११ स्थानों में शुभ है। सूर्य से इन स्थानों में गिनकर ✳ सूर्य लिख दो।

चंद्र के चक्र में सूर्य ३;६,७,८,१०,११, स्थानों में शुभ है सूर्य से गिन कर इन स्थानों में ☾ चंद्र लिख दो।

मंगल में सूर्य ३,५,६,१०,११ स्थानों में शुभ है सूर्य से इन स्थानों को गिनकर ♂ मंगल लिख दो।

बुध में सूर्य ५,६,९,११,१२ में शुभ होने से इन स्थानों में ☿ बुध लिख दो।

गुरु में सूर्य १,२,३,४,७,८,९,१०,११ में शुभ है यहाँ ♃ गुरु लिख दो।

शुक्र में सूर्य ८,११,१२ में शुभ होने से इन स्थानों में ♀ शुक्र लिख दो।

शनि में सूर्य १,२,४,७,८,१०,११ में शुभ है महाँ ♄ शनि लिख दो।

(३) चंद्र का चक्र भरने के लिये

लग्न के चक्र में चन्द्र ३,६,१०,११ में शुभ है। चंद्र से गिन कर वहाँ लग्न का ल लिख दो

सूर्य के चक्र में चंद्र ३,६,१०,११ स्थानों में शुभ है यहाँ सूर्य ✳ लिख दो।

चन्द्रके चक्र में चंद्र १,३,६,७,१०,११ में शुभ होने से वहाँ चंद्र ☾ लिख दो।

मंगल के चक्र में चंद्र ३,६,११ में शुभ है यहाँ मंगल ♂ लिख दो।

बुध के चक्र में चंद्र २,४,६,८,१०,११ में शुभ है वहाँ चंद्र से गिनकर ☿ बुध लिख दो।

गुरु में चंद्र २,५,७,६,११ में शुभ है चंद्र से गिनकर वहाँ ♃ गुरु लिख दो।
शुक्र में चंद्र १,२,३,४,५,८,६,११,१२ में शुभ है वहाँ ♀ शुक्र लिख दो।
शनि में चंद्र, ३,६,११ में शुभ है तो वहाँ ♄ शनि लिख दो।

इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहों के अष्टक वर्ग चक्र में से मंगल के अंक ले ले कर मंगल के चक्र में मंगल से उतने २ स्थान गिन २ कर उन ग्रहों का चिह्न बना दो जिनके

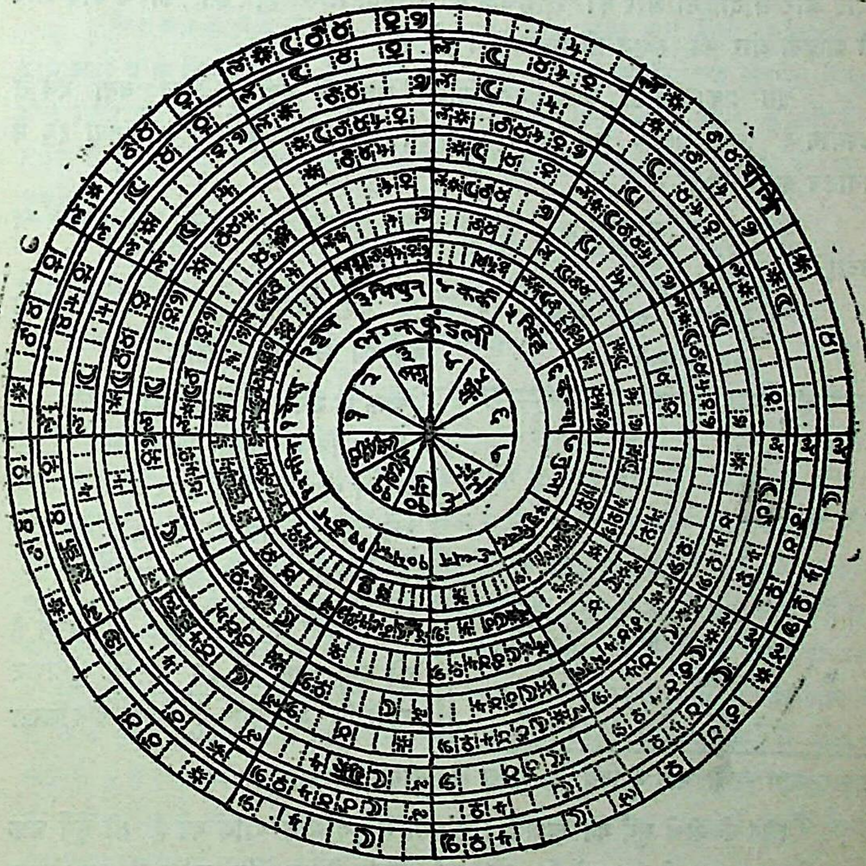

चित्र संख्या १७
लग्न कुण्डली के अनुसार
अष्टक वर्ग साधन चक्र

अष्टक वर्ग चक्र से वे लिये गये थे। इसी प्रकार प्रत्येक अष्टक वर्ग चक्र में से बुध, गुरु शुक्र और शनि के पृथक २ अंक लेकर उनके चक्रों में यहाँ बताई रीति के अनुसार उन

से स्थान गिन २ कर उन ग्रहों के चिह्न बना दो जिस अष्टक वर्ग चक्र में से ये लिये गये थे।

पहिले किसो चक्र में उस ग्रह का नाम किसी भी स्थान में लिख लो जिसका कि वह चक्र है। उपरांत उसी स्थान से शुभ स्थान के अंकों की गणना करनी चाहिए। गणना करते समय इस बात का ध्यान रहे कि जिस ओर राशि चक्र में राशि के अंक लिखे हैं उसी ओर से गणना करनी चाहिए। यहाँ सुविधा के लिए बांई ओर से:दाहिनी ओर को राशिचक्र में राशियाँ लिखी हैं, इस कारण बांई ओर से दाहिनी ओर को स्थान की गिनती की गई है।

इस प्रकार आठों अष्टक वर्ग साधन चक्रों में ग्रहों के चिह्न बना देने से उपयोग के लिए अष्टक वर्ग साधन चक्र बन जाता है। जैसे चित्र संख्या १६ में बनाकर बताया है।

अष्टक वर्ग साधन चक्र देखने के लिए कुंडली के अनुसार चक्र जमाने का उदाहरण।

यहाँ दी हुई लग्न कुंडली का अष्टक वर्ग निकालना है इसके लिए इस चक्र का उपयोग करेंगे।

लग्न कुंडली

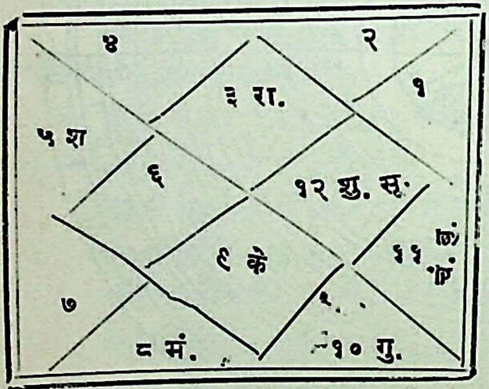

चक्र के उपयोग करने की रीतिः—
देखो चित्र संख्या १७। अष्टक वर्ग साधन चक्र में सब के ऊपर बीच में राशि चक्र दिया है उस के अनुसार सब चक्रों को कुंडली देखकर जमाना पड़ेगा!

कुंडली में लग्न राशि ३ मिथुन है तो लग्न चक्र को इस प्रकार घुमाकर रखो कि जहाँ लग्न के चक्र में लग्न लिखा है वह भाग राशि चक्र में दिये ३ राशि के सामने आ जाय।

लग्न के नीचे सूर्य का चक्र है। कुंडली में सूर्य मीन राशि का है तो सूर्य चक्र को इस प्रकार घुमा के जमाओ कि जहाँ सूर्य लिखा है वह मीन राशि के सामने आ जावे। इस प्रकार घुमाना कि पहिले के जमाये हुए चक्र न घूमने पावें।

सूर्य के नीचे चंद्र का चक्र है। चंद्र कुंभ राशि में है तो नीचे चंद्र के चक्र को इस प्रकार जमा के घुमाओ कि जहाँ चन्द्र लिखा है वह ११ राशि के सामने आ जाय।

मंगल कुंडली में ८ राशि पर है इस कारण मंगल के चक्र को इस प्रकार जमा कर नीचे लगा दो कि जहाँ मंगल लिखा है वह ८ राशि के सामने आ जाय।

कुंडली में बुध ११ राशि पर है तो इस प्रकार घुमा कर नीचे लगाओ कि जहाँ बुध लिखा है वह कुंभ ११ राशि के सामने आ जाय।

कुंडली में गुरु १० राशि पर है तो इसके चक्र को इस प्रकार घुमा के नीचे जमाओ कि वह भाग जहाँ गुरु लिखा है १० राशि के सामने आ जाय।

फिर शुक्रके चक्र को सब के नीचे इस प्रकार घुमा कर जमा दो जिससे वह भाग जहाँ शुक्र लिखा है १२ राशि के सामने आ जाय क्योंकि लग्न कुंडली में शुक्र मीन राशि का है। अन्त में सब के नीचे शनि चक्र को रखो। शनि कुंडली में ५ राशि में है इस कारण उस भाग को जहाँ शनि लिखा है घुमा के ५ राशि के सामने कर दो।

सब चक्रों को इस प्रकार जमाने के उपरांत एक बड़ा चक्र चित्र संख्या १७ के अनुसार दिखने लगेगा। अब इस चक्र के सहारे अपना अष्टक वर्ग बनालो।

इस अष्टक वर्ग साधन चक्र के देखने की रीति

पहिले इन सब चक्रों को ऊपर बताई रीति के अनुसार किसी कुंडली से मिलाकर जमालो। अर्थात् सब के बीच में जो राशियाँ लिखी हैं उन्हीं राशियों पर ग्रह जमाने हैं। अर्थात् चक्र में जहाँ लग्न लिखा है वह भाग, जो लग्न की राशि हो उसके सामने जमा दो। उसके बाद सूर्य चक्र में एक स्थान पर सूर्य लिखा है वह लिखा भाग सूर्य की राशि के अनुसार उस राशि के सामने घुमा के जमा दो। बाद को चंद्र का चक्र लो जहाँ चंद्र लिखा है वह भाग चंद्र की राशि के अनुसार इष्ट राशि के सामने घुमा कर जमा दो। बाद मंगल का चक्र लो मंगल जहाँ लिखा है वह भाग मंगल की राशि के अनुसार घुमा के जमा दो। फिर बुध का चक्र लो जहाँ बुध लिखा है वह भाग बुध राशि अनुसार घुमा के जमा दो। इसी प्रकार गुरु का, फिर शुक्र का, अंत में शनि का चक्र ले २ कर उनको घुमा कर इस प्रकार जमा दो कि कुण्डली में जो इनकी राशि हो उसी राशि के सामने ग्रहों का लिखा हुआ नाम सामने आ जावे। इसके जमाने का उदाहरण ऊपर समझा चुके हैं।

अब आगे बताये चक्र के अनुसार अष्टक वर्ग का एक चक्र बना कर रख लो और उस चक्र में उपरोक्त चक्र से देख २ कर अंक भर लो। उस चक्र के भरने की रीति नीचे दी है।

अब प्रत्येक राशि में प्रत्येक ग्रह की रेखा गिनकर जोड़ते जाओ। जहाँ ल लिखा है उस राशि में लग्न रेखा जितनी हो गिन के रख दो। अर्थात् उनके सामने

जितने ल लिखे मिलें गिन कर उनकी योग संख्या लिख लो। फिर ✳ सूर्य की रेखा का योग, ☾ से चंद्र की रेखा, ♂ से मंगल की रेखा, ☿ से बुध की रेखा का योग, ♃ से गुरु की रेखा का, ♀ से शुक्र की रेखा का और ♄ से शनि की सब रेखाओं का योग गिन कर लिख लो। लग्न की जो राशि हो पहिले इसके सामने की सब पृथक २ रेखाऐं गिन कर लिख लो। इस प्रकार क्रमानुसार प्रत्येक राशियों के सामने की भिन्न रेखाओं का योग कर लिख लो। इस प्रकार इष्ट कुण्डली के अनुसार अष्टक वर्ग की शुभ रेखाओं के योग का चक्र बन जायगा। उपरांत इन सबका योग कर लो।

अष्टक वर्ग शुभ रेखा योग चक्र

राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
ग्रह	लग्न	.	श.	.	.	मं.	.	गुरु	चं. बु.	सू. शु.	.	.
लग्न रेखा	४	४	४	३	३	७	४	४	३	३	५	५
सूर्य ,,	५	३	४	६	२	७	४	२	३	३	५	४
चंद्र ,,	३	४	६	४	३	५	७	५	२	२	५	३
मंगल ,,	५	३	५	१	२	४	५	२	३	२	४	३
बुध ,,	६	६	४	४	२	८	४	४	४	४	४	४
गुरु ,,	५	५	४	३	६	६	७	४	४	५	४	३
शुक्र ,,	५	४	२	४	८	३	४	५	३	४	६	४
शनि ,,	४	२	३	४	४	३	५	५	१	३	४	१
योग	३७	३१	३२	२९	३०	४३	३०	३१	२३	२६	३७	२७

अष्टक वर्ग साधन चक्र देखने का उदाहरण

लग्न ३ है तो पहिले लग्न की राशि ३ लिया। इसके सामने नीचे से ऊपर चक्र में (देखो चित्र संख्या १७) देखना आरंभ करो। ल = लग्न को शुभ रेखा का योग जानने के लिये देखो कितनी जगह ३ राशि के सामने ल लिखा है। इसमें ४ ल मिले तो लग्न रेखा के आगे चक्र में ४ रख दिया।

सूर्य रेखा जानने को ✳ गिनो। यहाँ ५ जगह ✳ ऐसा चिह्न है तो सूर्य रेखा ५ हुईं वही उपरोक्त चक्र में लिख दिया है।

चंद्र रेखा का ☾ चिह्न गिना तो ३ मिले वही चक्र में रखा। इसी प्रकार प्रत्येक को शुभ रेखा योग वहाँ दिये चिह्नों से खोजकर लिखते जाना। मंगल की रेखा ♂ देखी ५ जगह मिली तो ५ मंगल की शुभ रेखा हुई।

बुध रेखा योग ☿ ६ जगह है तो बुध को ६ शुभ रेखा हुई।
गुरु „ „ = ♃ ५ „ „ गुरु की ५ „ „
शुक्र „ „ = ♀ ५ „ „ शुक्र की ५ „ „
शनि „ „ = ♄ ४ „ „ शनि की ४ „ „

इस प्रकार मिथुन लग्न की रेखाओं को गिन्ती हो चुकी। इसके उपरांत कर्क आदि आगे की राशियों की रेखाएं गिनेंगे।

कर्क में ल = ४ = लग्न शुभ रेखा योग ४ हुआ
✳ = ३ = सूर्य „ „ „ ३ „
☾ = ४ = चंद्र „ „ „ ४ „
♂ = ३ = मंगल „ „ „ ३ „
☿ = ६ = बुध „ „ „ ६ „
♃ = ५ = गुरु „ „ „ ५ „
♀ = ४ = शुक्र „ „ „ ४ „
♄ = २ = शनि „ „ „ २ „

सिंह में = लग्न रेखा = ल = ४
सूर्य रेखा ✳ = ४
चंद्र „ ☾ = ६
मंगल „ ♂ = ५
बुध „ ☿ = ४
गुरु „ ♃ = ४
शुक्र „ ♀ = २
शनि „ ♄ = ३

कन्या में, लग्न रेखा = ल = ३
सूर्य „ = ✳ = ६
चंद्र „ = ☾ = ४
मंगल „ = ♂ = १
बुध „ = ☿ = ४
गुरु „ = ♃ = ३
शुक्र „ = ♀ = ४
शनि „ = ♄ = ४

तुला में, लग्न रेखा = ल = ३
सूर्य रेखा = ✳ = २
चंद्र „ = ☾ = ३
मंगल „ = ♂ = २
बुध „ = ☿ = २
गुरु „ = ♃ = ६
शुक्र „ = ♀ = ८
शनि „ = ♄ = ४

इस प्रकार आगे प्रत्येक राशि के सामने दिये हुए पृथक चिह्न जोड़कर चक्र बना लो जैसा ऊपर बना कर बताया है। सुगमता के लिये प्रत्येक राशि में प्रत्येक का अष्टक वर्ग के पृथक-पृथक ग्रह बताने को ८ छोटे छोटे कोठे बना लिये गये हैं। उनमें उपरोक्त क्रम से लग्न और सब ग्रह यिये हैं। जिससे खोजने में सुगमता हो। प्रत्येक ग्रह का पृथक-पृथक रङ्ग देने से शीघ्र ही दृष्टि मात्र से योग प्रगट हो जाता है।

अध्याय २१

अष्टक वर्ग का त्रिकोण और ऐकाधिपत्य शोधन

अष्टक वर्ग होरा आयु साधन के निमित्त त्रिकोण और एकाधिपत्य शोधन करना पड़ता है उसकी रीति नीचे दी है।

अष्टक वर्ग की शुभ रेखाओं को २ प्रकार से शोधन करना पड़ता है।

(१) त्रिकोण शोधन, (२) ऐकाधिपत्य शोधन।

त्रिकोण शोधन

प्रत्येक त्रिकोण में ३ राशियाँ होती हैं। पूरे राशि चक्र में ४ त्रिकोण होते हैं।

(१) त्रिकोण राशि १,५,९
(२) ,, ,, २,६,१०
(३) ,, ,, ३,७,११
(४) ,, ,, ४,८,१२

इस प्रकार ३—३राशियों के समुदाय का एक एक त्रिकोण होता है।

त्रिकोण शोधन की रीति

त्रिकोण की ३ राशियों में किसी एक अष्टक वर्ग चक्र में आये हुए शुभ योग के अंक लिखो। उन तीनों राशियों के अंक में से देखो सबसे छोटा अंक कौन है, जो सबसे छोटा अंक है वही संख्या तीनों में से घटा दो, जो शेष बचे उस संख्या को उन राशियों के नीचे लिख दो तो त्रिकोण शोधन हो गया।

जैसे मेष सिंह और धन का एक त्रिकोण है। अब रवि का अष्टक वर्ग शुभ रेखा पहिले लिया। इसमें मेष में ३, सिंह में ५, और धन में ५ शुभ रेखा हैं। इन तीनों अंकों में मेष का ३ अंक सब से छोटा है तो ३ सब में से घटा दिया तो मेष ०, सिंह में २, और धन में २ आया।

मेष	सिंह	धन
३	५	५
−३	−३	−३
०	२	२

यही त्रिकोण शोधन हो गया।

दूसरा उदाहरण—मान लो मेष-सिंह-धन है तो सबसे छोटा
० ५ ४
० है। शून्य सब में से घटाया तो वही रहेगा जो पहिले था। इस कारण जब त्रिकोण की ३ राशियों में से किसी में ० हो तो उसें ज्यों का त्यों रहने देना चाहिए। अर्थात् त्रिकोण शोधन होने पर भी वही रहेगा।

तीसरा उदाहरण मेष सिंह धन मान लो है। तीनों में बराबर अंक हैं तो वही ५ ५ ५ ५ सब में से घटाया तो सब में ० आ गया। इस प्रकार त्रिकोण शोधन से किसी एक में या दोनों में या तीनों राशियों में शून्य आ जायगा।

प्रत्येक अष्टक वर्ग का पृथक २ त्रिकोण शोधन करना होता है।

त्रिकोण शोधन का उदाहरण

त्रिकोण	त्रिकोण	त्रिकोण	त्रिकोण	त्रिकोण	त्रिकोण	त्रिकोण	त्रिकोण	त्रिकोण	त्रिकोण
	१	२	३	४		१	२	३	४
राशि	१५९	२६१०	३७११	४८१२	राशि	१५९	२६१०	३७११	४८१२
रवि अ. वर्ग	३५५	८२४	४३५	१४४	गुरु अ. वर्ग	६५४	३४४	४६४	६४६
	–३३३	२२२	३३३	१११		–४४४	३३३	४४४	४४३
त्रि. शो.	०२२	६०२	१०२	०३३	त्रि. शो.	२१०	०११	०२०	२०२
चंद्र अ वर्ग	३२५	४७४	३६५	४२४	शुक्र अ. वर्ग	५४३	३५५	३५४	६३६
	–२२२	४४४	३३३	२२२		–३३३	३३३	३३३	३३३
त्रि. शो.	१०३	०३०	०३०	२०२	त्रि. शो	२१०	०२२	०२१	३०३
मंगल अ. व.	२३५	८३३	१२३	०३६	शनि अ. व.	५२२	६२२	२५४	३२४
	–२२२	३३३	१११	०००		–२२२	२२२	२२२	२२२
त्रि. शो.	०१३	५००	०१२	०६३	त्रि. शो.	३००	४००	०३२	१०२
बुध अ. वर्ग	३४५	६३५	६४३	४५६	लग्न अ. ब.	४५४	७४३	३७५	४०३
	–३३३	३३३	३३३	४४४		–४४४	३३३	३३३	०००
त्रि. शो.	०१२	३०२	३१०	०१२		०१०	४१०	०४२	४०३

शुभ अष्टक चक्र जो अध्याय २० के आरंभ में निकाल कर प्रत्येक अष्टक वर्ग की शुभ रेखाओं का योग दिया है, उनके शुभ अंक लेकर यहाँ त्रिकोण के अनुसार उन्हीं राशियों में शुभ संख्या स्थापित की है और प्रत्येक त्रिकोण में उन में से जो सबसे छोटा अंक है उसे तीनों अंक में से घटाकर शेष रख दिया है, वही त्रिकोण शोधन अंक हो गया।

जैसे रवि अष्टक वर्ग में त्रिकोण १ में सबसे छोटा ३ है वह सब में घटाया तो मेष में ० सिंह में २ धन में २ रहा। त्रिकोण २ में ८-२-४ है। २ सबसे छोटा है इसे सब में से घटाया। त्रिकोण ३ में ३ सबसे छोटा है इसे सब में से घटाया त्रिकोण ४ में १ सबसे छोटा है इसे घटाने से जो आया वही त्रिकोण शोधित अंक हुआ।

इसी प्रकार सब में जानना। मंगल में त्रिकोण ४ में कर्क में ० है तो सब में से ०. घटाने से कोई परिवर्तन नहीं हुआ। इसी प्रकार सम्पूर्ण त्रिकोण का शोधन प्रत्येक, अष्टक वर्ग चक्र में दिये शुभ अंकों के योग में करना पड़ता है।

त्रिकोण शोधन के उपरांत ऐकाधिपत्य शोधन करना पड़ता है। ऐकाधिपत्य शोधन केवल उन्हीं राशियों में होता है जिन ग्रहों के स्वस्थान नें २ राशियाँ हैं। सूर्य और चंद्र का एक ही स्वस्थान है। सूर्य का सिंह और चंद्र को कर्क है। शेष ग्रहों की २-२ स्वराशियाँ हैं इस कारण शेष १० राशियों में ऐकाधिपत्य शोधन करना पड़ता है। मंगल का मेष वृश्चिक। बुध का मिथुन कन्या। गुरु का धन मीन।शुक्र का वृष तुला। शनि का मकर कुंभ स्वस्थान है। इन २ राशियों के युग्म का शोधन करना पड़ेगा। इस कारण राशि स्वामी के अनुसार राशियां स्थापित कर उनके नीचे त्रिकोण शोधन के अंक लिखकर ऐकाधिपत्य शोधन करेंगे।

ऐकाधिपत्य शोधन करने के नियम

(१) त्रिकोण शोधन के उपरांत ऐकाधिपत्य शोधन करना पड़ता है।

(२) जिन ग्रहों के स्वस्थान में २ राशियां होती हैं उन दोनों का ऐकाधिपत्य शोधन होता है। इसको ध्यान रखो कि इन राशियों में कोई ग्रह है या नहीं। प्रत्येक राशि के नीचे त्रिकोण शोधन के अंक लिखलो।

(३) जिन राशियों में ग्रह हो उनको सग्रह राशि, जिनमें ग्रह न हो उनको अग्रह राशि या ग्रह रहित राशि कहेंगे।

एक सग्रह राशि हो दूसरी ग्रह रहित, और सग्रह की शोधित संख्या छोटी और ग्रह रहित की बड़ी संख्या हो तो = (बड़ी संख्या – छोटी संख्या) = शेष ग्रह रहित राशि की संख्या होगी। सग्रह की संख्या पूर्ववत रहेगी। जैसे शनि की राशि मकर और कुंभ है। मान लो मकर में कोई ग्रह है तो वह ग्रह सहित (सग्रह राशि) हुई और दूसरी राशि कुंभ में कोई ग्रह नहीं है। अब सग्रह राशि का शोधित अंक मान लो २ है और कुंभ ग्रह रहित में ३ है तो ग्रह रहित राशि में बड़ी संख्या हुई। = (३–२) = १ बड़ी संख्या से छोटी संख्या घटाकर जो आवे वह शेष ग्रह रहित में (जहाँ बड़ा अंक है) रख देना। यहाँ ३ में से २ घटाने से १ बचा वह ग्रह रहित कुंभ के नीचे (३ के स्थान में) १ रख दिया। और ग्रह युक्त राशि में २ ही रहेगा।

(४) सग्रह में बड़ा अंक, ग्रह रहित में छोटा अंक हो तो ग्रह रहित का अंक लुप्त हो जायगा। अर्थात ग्रह रहित में छोटे अंक के स्थान में ० होता जायगा, सग्रह के अंक पूर्ववत् रहेंगे। जैसे गुरु की राशि धन और मीन है। धन में कोई ग्रह है और शोधित अंक ३ है। मीन में कोई ग्रह नहीं और शोधित अंक २ है.

तो ग्रह रहित में २ के स्थान में मीन के नीचे ० हो जायगा और धन के नीचे ३ ही रहेगा।

(५) दोनों राशियों में कोई ग्रह हो तो त्रिकोण शोधित अंक में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे मंगल की राशि मेष और वृश्चिक में २ है तो दोनों सग्रह होने से इन में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

(६) दोनों ग्रह रहित हों एक की बड़ी संख्या हो तो = (बड़ी संख्या—छोटी संख्या) = शेष को बड़ी संख्या के स्थान में रख दो। छोटी में कोई परिवर्तन नहीं होगा। मान लो बुध की राशि मिथुन और कन्या इन दोनों राशियों में कोई ग्रह नहीं है परन्तु १ में बड़ी संख्या है। मिथुन में ४ कन्या में २ है तो दोनों संख्या के अंतर (४–२) = २ को बड़ी संख्या ४ के स्थान में लिख दिया। अर्थात् मिथुन में २ रहा परन्तु कन्या के २ अंक में कोई परिवर्तन नहीं होगा वहाँ भी २ रहेगा।

(७) दोनों ग्रह रहित हों और दोनों में समान अंक हो तो दोनों में शून्य हो जायगा। जैसे मिथुन में ३ और कन्या में ३ अर्थात् दोनों में समान अंक हो और दोनों ग्रह रहित हों तो दोनों में ० हो जायगा।

(८) यदि एक राशि में ग्रह हो और दूसरे में ग्रह न हो और दोनों में एक ही प्रकार के अर्थात् समान अंक हो तो ग्रह रहित राशि के नीचे ० हो जायगा। जैसे शुक्र के २ स्थान वृष और तुला हैं। वृष में कोई ग्रह हैं तुला में कोई ग्रह नहीं है परन्तु दोनों में २–२ या ३–३ एक समान अंक है तो तुला के नीचे २ के स्थान में ० हो जायगा क्योंकि वहाँ कोई ग्रह नहीं है। केवल वृष में २ अंक पूर्ववत् रहेगा।

(९) यदि दोनों राशियों में किसी में ० हो तो दोनों में शून्य हो जायगा। चाहे दोनों सग्रह हों या एक कोई सग्रह हो या दोनो ग्रह रहित हों, ग्रह का कोई विचार न कर दोनों के अंक के स्थान में शून्य हो जाता है। जैसे मेष में २; वृश्चिक में ० हो तो यहाँ किसी एक में ० आ जाने से दूसरे में भी ० हो जायगा अर्थात् दोनो में ० हो जायगा। इन नियमों के अनुसार ऐकाधिपत्य शोधन करते है।

ऐकाधिपत्य शोधन चक्र

	(मंगल)		(बुध)		(गुरु)		(शुक्र)		(शनि)	
राशि	१	८	३	६	९	१२	२	७	१०	११
ग्रह	०	०	शु.	०	चं. गु.	०	मं. श.	०	०	०
सूर्य	०	३	१	०	२	३	६	०	२	२
ऐका०=	०	०	०	०	२	१	०	०	०	०
चंद्र	३	०	०	३	३	२	०	३	०	२
ऐकाधि०=	०	०	०	०	३	०	०	०	०	०
मंगल	०	६	०	०	३	३	५	१	०	२
ऐकाधि०=	०	०	०	०	३	०	५	०	०	०
बुध	०	१	३	०	२	२	३	१	२	०
एका०=	०	०	०	०	२	०	३	०	०	०
गुरु०	२	०	०	१	०	२	०	२	१	०
ऐका०=	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
शुक्र	२	०	०	२	०	३	०	२	२	१
ऐका०=	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१
शनि	३	०	०	०	०	२	४	३	०	२
ऐका०=	०	०	०	०	०	०	४	०	०	०
लग्न	०	०	०	१	०	३	४	४	०	२
ऐका०=	०	०	०	०	०	०	४	०	०	०

इसके भरने के लिये पहिले त्रिकोण शोधक से जो अंक आये हैं उसे अपनी राशि के नीचे रख दिया है। यहां जिन राशियों का एक स्वामी है उनको पास २ रखा है जिससे लिखने में भूल न हो जाय। उस राशि पर कोई ग्रह है या नहीं यह जानने को ग्रह के नाम भी लिख दिये हैं। इस चक्र में सूर्य चंद्र की राशि छोड़ कर और सब राशियां हैं।

इस प्रकार २-२ राशियों का युग्म स्थापित करने में किसी एक में ० देखा तो दोनों में ० रख दिया चाहे वहाँ कोई ग्रह हो या न हो।

अब शेष को शोधन करते हैं।

सूर्य = धन सग्रह, मीन ग्रह रहित, सग्रह छोटा है तो (३-२) = १ शेष ग्रह रहित में
२ ३
रखा धन में वही २ रहा।

मकर कुंभ दोनों समान अंक और ग्रह रहित हैं तो दोनों में ० रखा
२ २

चंद्र = धन सग्रह, मीन ग्रह रहित, सग्रह बड़ा है तो अग्रह का अंक लुप्त होकर ० हो गया
३ २

मंगल = धन सग्रह, मीन ग्रह रहित = एक सग्रह एक ग्रह रहित, दोनों समान अंक
३ ३
है तो अग्रह = ०। वृष सग्रह तुला अग्रह, सग्रह बड़ा = अग्रह में ० हो गया।
५ १

बुध = धन सग्रह, मीन अग्रह ! १ सग्रह, १ अग्रह = दोनों में समान अंक है।
२ २
अग्रह = ० । गुरु = वृष सग्रह, तुला अग्रह । सग्रह बड़ा = अग्रह का अंक ० हो गया ।
३ १

शुक्र = मकर, कुंभ दोनों अग्रह = (२–१) = शेष १ बड़ा अंक मकर के नीचे
२ १
१ हुआ और कुंभ में वही १ रहा ।

शनि = वृष सग्रह, तुला अग्रह । सग्रह बड़ा = अग्रह अंक = ० हो गया
४ ३

लग्न = वृष सग्रह तुला अग्रह । दोनों में समान अंक = अग्रह ० हो गया ।
४ ४

ऐकाधिपत्य शोधन के नियम संक्षेप में

(१) सग्रह छोटा, अग्रह बड़ा = (बड़ा—छोटा) = शेष ग्रह रहित में रहेगा, सग्रह पूर्ववत् रहेगा

(२) सग्रह बड़ा, अग्रह छोटा = अग्रह = ० । सग्रह पूर्ववत्

(३) एक सग्रह दूसरा अग्रह दोनों के समान अंक । = अग्रह = ० हो जायगा, सग्रह पूर्ववत् ।

(४) दोनों सग्रह = दोनों पूर्ववत्

(५) किसी एक में ० = चाहे कोई सग्रह या अग्रह एक या दोनों हों तो दोनो में = ० ।

(६) दोनों अग्रह । एक बड़ा एक छोटा = (बड़ा—छोटा) = शेष बड़े के नीचे रहेगा, छोटा पूर्ववत् ।

(७) दोनों अग्रह = समान अंक = दोनों में ० हो जायगा ।

ऐकाधिपत्य शोधन करते समय इनका ध्यान रखो तो भूल नहीं होगी ।

शोधन और ऐकाधिपत्य शोधन के उपरांत राशि गुणक और ग्रह गुणक के आधार पर राशि पिंड और ग्रह पिंड निकाल कर दोनों का योग पिंड निकालना पड़ता है जिसकी रीति आगे दी है ।

राशि गुणक और ग्रह गुणक

त्रिकोण शोधन और ऐकाधिपत्य शोधन के उपरांत राशि पिंड और ग्रह पिंड बनाने के लिये राशि गुणक और ग्रह गुणक की आवश्यकता होती है ।

(१) राशि गुणक = प्रत्येक राशियों को भिन्न-भिन्न बल प्राप्त होता है जिसे राशि गुणक कहते हैं ।

राशि गुणक चक्र

राशि	मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि०	धन	मकर	कुंभ	मीन
गुणक	७	१०	८	४	१०	५	७	८	९	५	११	१२

किसी राशि के नीचे ऐकाधिपत्य शोधन करने के उपरांत जो अंक आवे उसे उस राशि के उपरोक्त गुणक से गुणा करना चाहिए। जैसे मेष के नीचे १ है तो (मेष का अंक) १ × ७ (मेष का गुणक = ७)। कर्क के नीचे २ है तो २ × ४ (कर्क का गुणक) = ८। कुंभ के नीचे ० है तो ० × ११ (कुंभ का गुणक) = ० इत्यादि प्रकार से गुणा करना फिर सब राशियों के गुणन फल को जोड़कर जो कुछ योग आवे उसे कोष्ठ के अंत में लिख देना। यह राशि पिंड कहलाता है।

(२) ग्रह गुणक = प्रत्येक ग्रहों को भी भिन्न-भिन्न बल प्राप्त है जिसे ग्रह गुणक कहते हैं।

ग्रह गुणक

ग्रह का	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
गुणक	५	५	८	५	१०	७	५

जिस राशि में ग्रह बैठा हो उस राशि के ऐकाधिपत्य शोधन फल में ग्रह गुणक का गुणा करना। जो कुछ गुणन फल आवे उस राशि के नीचे लिख देना।

यदि किसी राशि में एक से अधिक ग्रह हों तो उस राशि के ऐकाधिपत्य शोधन के उपरांत प्राप्त फल को प्रत्येक ग्रह के गुणक से पृथक-पृथक गुणा करना। उपरांत सबका योग करके उस राशि के नीचे कोष्ठ में रख देना। अंत में सब ग्रहों के गुणन फल का योग कर अंत में लिख देना इसे ग्रह पिंड कहते हैं।

इस प्रकार राशि पिंड और ग्रह पिंड के प्राप्त अंकों को जोड़ डालना। जो योग आवे वही योग पिंड कहलाता है।

इस प्रकार ऊपर बताई हुई राशि गुणक क्रिया से, राशि पिंड और ग्रह पिंड निकाल कर योग पिंड बनाना प्रत्येक अष्टक वर्ग में अर्थात् आठों अष्टक वर्ग चक्र में पृथक-पृथक करना पड़ता है।

अब पूर्व साधित ऐकाधिपत्य शोधन के उपरांत प्राप्त अंक में जो जो क्रियायें होती हैं यहाँ एक चक्र में राशियों को क्रमशः रख कर उनमें सब क्रियायें पृथक-पृथक बतलाते हैं। यहाँ जो राशि पिंड और ग्रह पिंड स्थापित किया है इन सबका स्पष्टीकरण अंत में दिया है जिससे रीति समझ में आ जायगी।

राशि गुणक, ग्रह गुणक, राशि पिंड, ग्रह पिंड, योग पिंड आदि का चक्र

राशि १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ योग योग पिंड
ग्रह . मं. शु. र. . . . . . चं. . . . लग्न
शु, बु. गु.

सूर्य शुभ रेखा ३ ८ ४ १ ५ २ ३ ४ ५ ४ ५ ४ ४८
अ.व. त्रिकोणशो. ० ६ १ ० २ ० ० ३ २ २ २ ३ २१
ऐकाधि. शो. ० ० ० ० २ ० ० ० २ ० ० १ ५
राशि गुणक ० ० ० ० २० . . . १८ . . १२ ५० ५० रा. पिंड } यो. पि. ८०
ग्रह गुणक . . . १० + २० = ३० } ३० ३० ग्रह पिंड

चंद्र शुभ रेखा ३ ४ ३ ४ २ ७ ६ २ ५ ४ ५ ४ ४९
अ.व. त्रिकोण शो. ३ ० ० २ ० ३ ३ ० ३ ० २ १ १८
ऐकाधि.शो. ० ० ० २ ० ० ० ० ३ ० ० ० ५
राशि गुणक ८ २७ ३५ ३५ राशि पिंड } यो.पिं. १००
ग्रह गुणक . . १० + १० = २० } १५ + ३० = ४५ } ६५ ६५ ग्रह पिंड

मंगल शुभ रेखा २ ८ १ ० ३ ३ २ ६ ५ ३ ३ ३ ३९
अ.व. त्रि. शो. ० ५ ० ० ३ ० १ ६ ३ ० २ ३ ३२
ऐका. शो. ० ५ ० ० १ ० ० १ ३ ० ० ० १०
राशि गुणक ५० १० ८ २७ ६५ ६५ रा० पि } यो. पि. २०५
ग्रह गुणक ४० + २४ = ६५ } १५ + ३० = ४५ } ११० ११० ग्र० पि.

बुध शुभ रेखा ३ ६ ६ ४ ४ ३ ४ ५ ५ ५ ३ ६ ५४
अ.व. त्रि. शो. ० ३ ३ ४ ४ ० १ १ २ २ ० २ २२
ऐ० शो० ० ३ ० ० १ ० ० ० २ ० ० ० ६
राशि गुणक ३० १० १८ ५८ ५८ रा. पिं. } यो. पिं. १२७
ग्रह गुणक २४ + १५ = ३९ १० ÷ २० = ३९ ६९ ६९ ग्र. पिं

राशि १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ योग

ग्रह मं. शु. र . . . . चं. . . . लग्न
श. बु गु.

गुरु शुभ रेखा ६ ३ ४ ६ ५ ४ ६ ४ ४ ४ ४ ६ ५६
अ. व. त्रि. शो. २ ० ० ६ ५ १ २ ० ० १ ० २ १९
ऐका० शो. ० ० ० २ १ ० ० ० ० ० ० ० ३
राशि गुणक ८ १० — १८ १८ रा. पिं } यो. पिं.
ग्रह गुणक १० } — २० २० ग्र० पिं. } ३८
१० }
+२०

शुक्र शुभ रेखा ५ ३ ३ ६ ४ ५ ५ ३ ३ ५ ४ ६ ५२
अ. व. त्रि. शो. २ ० ० ६ ४ २ २ ० ० २ १ ३ २२
ऐका. शो. ० ० ० ३ १ ० ० ० ० १ १ ० ६
राशि गुणक १२ १० ५ ११ — ३८ ३८ रा. पिं. } यो. पिं.
ग्रह गुणक १५ } — ३० ३० ग्र. पिं } ६८
+१५ }
३०

शनि शुभ रेखा ५ ६ २ ३ २ २ ५ २ २ २ ४ ४ ३९
अ. व. त्रि को. ३ ४ ० ३ २ ० ३ ० ० ० २ २ १९
ऐ.शो. ० ४ ० १ ० ० ० ० ० ० ० ० ५ — ४४ ४४ रा. पिं. } यो. पिं.
राशिगुणक ४० ४ — ६२ ६२ ग्र. पिं. } १०६
ग्रह ग्रणक ३२ } +५ }
+२० } १० }
५२

लग्न शुभ रेखा ४ ७ ३ ४ ५ ४ ७ ० ४ ३ ५ ३ ४९
अ. व. त्रि. शो. ० ४ ० ४ ५ १ ४ ० ० ० २ ३ २३
ऐ. शो. ० ४ ० ४ १ ० ० ० ० ० ० ० ९
राशि गुणक ४० १६ १० — ६६ ६६ रा. पिं. } यो. पिं.
ग्रह गुणक ३२ } २० } — ९२ ९२ ग्र. पिं } १५८
+२० } २० }
५२ + ४०

उपरोक्त चक्र में जो राशि पिंड ग्रह पिंड आदि निकाला है उसका स्पष्टीकरण

(१) सूर्य = ऐकाधिपत्य शोधन के उपरांत जिन राशियों के नीचे अंक बच रहे उस अंक से ऊपर दी हुई राशि के गुणक से गुणा किया है। यहाँ सिंह के नीचे २ है। सिंह का गुणक १० है = २ × १० = २० यह सिंह का राशि पिंड हुआ। धन के नीचे २ है। धन का गुणक ९ है = ९ × २ = १८ धन का राशि पिंड हुआ। मीन के नीचे १ है। मीन का गुणक १२ है = १२ × १ = १२ मीन का राशि पिंड हुआ। शेष राशियों में ० है उनका राशि गुणक ० ही आया। उपरांत सब राशि पिंड का योग किया। सिंह का २०, धन का १८ और मीन का १२ = सबका योग ५० हुआ। यह राशि पिंड योग हुआ जो अंत में दिया है।

उपरांत ग्रह गुणक लिया। २,३,४ राशि में ग्रह तो हैं परन्तु ऐकाधिपत्य का अंक ० है तो वहाँ ० ही रहेगा। धन राशि मे चंद्र और गुरु है। धन का ऐकाधिपत्य शोधन अंक २ है तो २ से दोनों ग्रह के गुणक का पृथक-पृथक गुणा कर योग किया। चंद्र का गुणक ५ है = २ × ५ = १० और गुरु का गुणक १० है = २ × १० = २०। दोनों को जोड़ा १० + २० = ३० हुआ। यही उस राशि के नीचे ग्रह पिंड स्थापित किया। इतर राशि के नीचे कोई ग्रह नहीं है तो सर्व ग्रह पिंड का योग ३० ही हुआ। उसे अंत में लिख दिया। ग्रह गुणक और राशि गुणक का चक्र पहिले दे चुके हैं।

राशि पिंड ५० और ग्रह पिंड ३० इन दोनों को जोड़ा तो सबका योग ८० योग पिंड हुआ इसे अंत में लिख दिया।

(२) चंद्र = राशि गुणक कर्क = ऐका ० २ धन = ऐका० ३ दोनों का योग

गुणक × ४ = ८   गुणक × ९ = २७ = ३५ राशि पिंड

ग्रह गुणक = ग्रह केवल कर्क और धन में है जिनमें ऐका० के अंक है शेष में ० है

कर्क = ऐका० २ × ५ रवि = १०   धन ऐका० ३ × ५ चंद्र = १५   २० + ४५ = ६५
५ × ५ बुध = २०   ३ × १० गुरु = ३०   ग्रहपिंड
= २०   = ४५

राशिपिंड ३५ + ग्रह पिंड ६५ = १०० योग पिंड

(३) मंगल = राशि गुणक वृष ऐका० ५ सिंह ऐ० १ वृश्चिक ऐ० १ धन ऐका० ३

गुणक × १० = ५०   गुणक × १० = १०   गुणक × ८ = ८   गुणक × ९ = २७

सब का योग ५० + १० + ८ + २७ = ९५ राशि पिंड

ग्रह गुणक = वृषऐका० ५ × ८ मंगल = ४० धन ऐका० ३ × ५ चंद्रगुणक = १५

५ × ५ शनि = + २५ ३ × १० गुरु गुणक = + ३०

= ६५ ४५

ग्रह पिंड ६५ + ४५ = ११०

राशिपिंड ९५ + ११० ग्रह पिंड = २०५ योग पिंड।

(:४) बुध = राशि = वृष ऐका० = ३ सिंह ऐका० १ धन ऐका० २ ३० + १० + १८

गुणक × १० गुणक × १० गुणक × ९ = ५८ राशिपिंड

= ३० = १० = १८

ग्रह = वृष ऐका० ३ × ८ मंगल = २४ धन ऐ० २ × ५ चंद्र = १० ३९ + ३०

३ × ५ शनि = + १५ २ × १० गुरु = २० = ६९

= ३९ ३० ग्रह पिंड

राशिपिंड ५८ + ६९ ग्रह पिंड = १२७ योग पिंड।

(:५) गुरु = राशि = कर्क ऐका० २ सिंह ऐका० १ ८ + १० = १८ राशि पिंड

गुणक × ४ गुणक × १०

= ८ = १०

ग्रह = कर्क ऐका० २ × ५ रवि गुणक = १० सबका योग

२ × ५ बुध = १० = २० ग्रह पिंड

= २०

राशि पिंड १८ + २० ग्रह पिंड = ३८ योग पिंड

(:६) शुक्र = राशि = कर्क ऐका० ३ सिंह ऐ० १ मकर ऐ० १ कुम्भ ऐका० १

गुणक × ४ गुणक × १० गुणक × ५ गुणक × ११

= १२ = १० = ५ = ११

सबका योग १२ + १० + ५ + ११ = ३८ राशि पिंड

ग्रह = कर्क ऐका० ३ × ५ रवि = १५ सबका योग = ३० ग्रह पिंड

३ × ५ बुध = १५

३०

राशि पिंड ३८ + ३० ग्रह पिंड = ६८ योग पिंड

(:७) शनि = राशि वृष ऐका० ४ कर्क ऐका० १ ४० + ४ = ४४

गुणक × १० गुणक × ४ राशि पिंड

= ४० = ४

ग्रह वृष ऐका० ४ × ८ मंगल गुणक = ३२ कर्क ऐका० १ × ५ रवि = ५
४ × ५ शनि = २०   १ × ५ बुध = ५
५२   १०

५२ + १० = ६२ ग्रह पिंड

राशि पिंड ४४ + ६२ ग्रह पिंड = १०६ योग

(८) लग्न = राशि वृष ऐका० ४ कर्क ऐका० = ४ सिंह ऐका० १
,, गुणक × १० ,, गुणक = × ४ ,, गुणक × १०
= ४०   = १६   १०

४० + १६ + १० = ६६ राशि पिंड

ग्रह वृष ऐका० ४ × ८ मंगल गुणक = ३२ कर्क एका० ४ × ५ रवि = २०
४ × ५ शनि ,, = २०   ४ × ५ बुध = २०
५२   ४०

५२ + ४० = ९२ ग्रह पिंड

राशि पिंड ६६ + ९२ ग्रह पिंड = १५८ योग पिंड

उपरोक्त त्रिकोण शोधन और ऐकाधिपत्य आदि वृहत् पाराशर के मत से किया है। शम्भु होरा प्रकाश में भी यही रीति बताई हैं। परन्तु होरारत्न और जातक पारिजात में कुछ भिन्नता आगई है।

होरारत्न में त्रिकोण शोधन के लिये बताया है कि त्रिकोण को राशियों में जो सबसे छोटे अंक वाली राशि हो, उसे शेष २ और राशियों में (सबसे छोटे अंक के बराबर (अंक) रख देना। जैसे मेष में १, सिंह मे ४ धन में ५ है तो मेष में सबसे छोटा अंक १ होने के कारण सिंह और धन में भी १ हो जायगा। परन्तु अनेक विद्वानों को यह मत मान्य नहीं है। इस कारण पाराशरी मत का ही उपयोग किया है।

ऐकाधिपत्य शोधन में भी जातक पारिजात आदि में कुछ अंतर है जो नीचे बताया है।

(१) सग्रह छोटा, अग्रह बड़ा हो तो छोटे के समान दोनों में अंक रहेगा। जैसे कुम्भ सग्रह में ३ और मकर अग्रह में ४ है। यहाँ सग्रह छोटा है इससे दोनों में छोटे के बराबर अंक ३ रहेंगे।

इसको पाराशर में बताया है (बड़ा–छोटा) = शेष ग्रह रहित में रहेगा और सग्रह में कोई परिवर्तन नहीं होगा !

(२) दोनों अग्रह, १ में बड़ा दूसरे में छोटा अंक हो तो छोटे के समान दोनों में करना। जैसे मेष में ३ वृश्चिक में ४ है तो दोनों में छोटा अंक ३—३ हो जायगा।

इसी को पाराशर मत से बताया है (बड़ा—छोटा) = शेष बड़े के नीचे रखना। इस रीति से मेष में ३ वृश्चिक में १ होगा।

(३) दोनों में से किसी में शून्य हो चाहे दोनों में से किसी में ग्रह हो या न हो या दोनों में हों या दोनो अग्रह हों तो कोई परिवर्तन नहीं होगा।

इसी को पाराशर मत से बताया है कि दोनों में से किसी में ० हो तो दूसरे में भी ० हो जायगा।

शेष रीति में कोई अंतर नहीं पड़ता अर्थात् सबको मान्य हैं। वे रीति ये हैं:—

(१) सग्रह बड़ा अग्रह छोटा। अग्रह = ०। सग्रह अपरिवर्तित।

(२) १ सग्रह १ अग्रह। दोनों में समान अंक। अग्रह=० हो जायगा सग्रह अपरिवर्तित।

(३) दोनों सग्रह = दोनों अपरिवर्तित

दोनों अग्रह = दोनों में समान अंक = दोनों में = ० हो जायगा।

शोधन के उपरांत जो राशि पिंड और ग्रह पिंड से योग पिंड बनता है उससे आयु साधन किया जाता है। यह विषय आयु साधन अध्याय २८ में आगे दिया जायगा।

अध्याय २२

ग्रहषड्बल साधन

ग्रह बल ६ प्रकार से साधन किया जाता है। बल केवल ७ ग्रह का साधन किया जाता है। राहु केतु का बल नहीं साधन करते।

१ स्थान बल = ५ प्रकार के बल मिलकर स्थान बल बनता है।

(१) उच्च बल, (२) सप्तवर्गीबल, (३) ओज बल (युग्मायुग्म बल) (४) केन्द्रादि गत बल (५) द्रेष्काण बल।

२ दिग्बल = यह अकेला ही है।

३ काल बल = यह ४ प्रकार के बल मिलकर बनता है।

(१) नतोन्नत वल (२) पक्ष बल (३) दिन रात्रि त्रिभाग बल (४) वर्ष आदि बल

४ चेष्टा बल

५ नैसर्गिक वल

६ दृग्वल

ज्ञान खण्ड में इस का दिग् दर्शन करा दिया गया है। यहाँ गणित द्वारा प्रत्येक ग्रह का सब प्रकार का वल साधन करेंगे। ग्रह बल के अनुसार फल देता है। इस कारण प्रत्येक ग्रह का बल जानना आवश्यक है। यदि ग्रह पूर्ण बली हो तो अपना फल पूरा देगा वह बल कम है तो फल भी कम हो जायगा।

१ स्थान बल

कौन २ स्थान में किस ग्रह का कितना बल है यह जानने के लिए स्थान बल साधन करना पड़ता है। पहिले बता चुके हैं कि पांच प्रकार का बल मिलकर स्थान बल होता है :

(१) उच्च बल (२) सप्तवर्गी वल (३) भांश (युग्मायुग्म बल) (४) केन्द्र बल और (५) द्रेष्काण बल।

इन प्रत्येक का बल निकालने की रीति आगे बताई है।

१ (१) उच्च बल

ग्रह के उच्च या नीच स्थान के अनुसार बल का विचार होता है। जो ग्रह उच्च में होता है वह पूर्ण बली होता है। जब नीच में होता है वह बल में शून्य हो जाता है। उच्च बल और नीच बल के बीच में ६ राशि का अन्तर होता है। अर्थात् ६ राशि अन्तर हो आने पर ग्रह उच्च बल से शून्य बल हो जाता है। जो ग्रह उच्च या नीच के किसी स्थान में हो उस का बल अनुपात से निकालना पड़ता है।

पहिले यह जानना चाहिए कि कोई ग्रह अपने नीच स्थान से कितने अन्तर पर है। उपरांत गणित से बल इस प्रकार जाना जा सकता है कि ६ राशि अंतर पर पूर्ण बल १° होता है तो इतने अंतर में कितना बल होगा ?

$$\frac{(\text{ग्रह}-\text{नीच}) \times १}{६} = \text{इष्ट उच्च बल}$$

ग्रह और उसके नीच स्थान के अन्तर में ६ का भाग देने से उच्च बल निकल

आता है। बल साधन करने के लिए पूर्ण बल सदा १ अंश का माना जाता है। एक अंश को एक रूप भी कहते हैं। ६० विरूप (कला) का १ अंश होता है।

बल साधन करने में यहाँ जो ६ का भाग देना बताया है इस की विशेष रीति है। उसको समझ लेना चाहिए क्योंकि उस का कई स्थान पर काम पड़ेगा। आगे उदाहरण दिया है जिससे रीति समझ में आ जायगी।

उच्चबल साधन करने की रीति

उच्चबल साधन करने के लिए उस ग्रह के स्पष्ट में से उस ग्रह का नीच घटा देना। नीच घटाने से यदि ६ राशि से अधिक अन्तर आवे तो उसे षड्भाल्प कर लेना अर्थात् उस अन्तर को १२ राशि से घटा देना। षड्भ्=६। अल्प=कम। षड्भाल्प=६ से कम करना। षड्भाल्प इसलिए करना पड़ता है कि उच्च नीच का अन्तर ६ राशि से अधिक नहीं होता। इस कारण नीच घटाने से जो शेष अन्तर आता है उसे १२ राशियों में से घटाना पड़ता हैं। घटाते समय ऊपर राशि का अंक कम होतो ऊपर १२ राशि और जोड़ कर घटाना।यदि शेष ६ से कम रहे तो १२ से नहीं घटाना। उपरांत इस शेष में ६ का भाग देना। जो उत्तर आयगा वह कला विकला में उच्चबल निकलेगा।

६ का भाग देने की बिशेष रीति

(१) राशि स्थान में जो अंक हो उसमें ६० का गुणा करना और शेष अंश आदि में २ का गुणाकर उसे ६० के गुणा करने से आई हुई संख्या में जोड़ देना। योग में ६ का भाग देना जो कुछ उत्तर आवे वह कला बिकला बल होगा। यह केशवाचार्य की रीति है।

(२) या राशि अंश कला विकला में २ का गुणा करना। फिर राशि के अंश बना लेना। जो कुछ अंश कला हो उसमें ६ का भाग देना। उत्तर कला विकला उच्च बल होगा।

(३) या राशि अंश कला विकला है। इस में राशि के अंश बना लेना और ३ का भाग देना। जो कुछ उत्तर आवे वह कला विकला उच्च बल होगा। यह पराशर की रीति है। यह रीति सुगम है।

(४) षड्भाल्प आदि के उपरांत जो प्राप्त हो उस के लिप्ता पिंड करे (कला बना लेवें) और ६ राशि की कला १०८०० से भाग देवे तो उच्च बल निकलेगा।

इन सब रीति से एक सा उत्तर आता है परन्तु तीसरी रीति सरल है। इनके उदाहरण आगे दिये हैं।

ग्रहों का उच्च और नीच

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	रा० अं०	रा० अंश	रा० अं०	रा० अं०	रा० अं०	रा० अं०	रा० अं०
उच्च	०–१०	१–३	९–२८	५–१५	३–५	११–२७	६–२०
नीच	६–१०	७–३	३–२८	११–१५	९–५	५–२७	०–२०

(१) सूर्य उच्च बल साधन।

	रा	रा	रा
सूर्य	३–२७°–२३′–६″	१२– ०°– ०′– ०″	या उच्च ०–१०′– ०′– ०″
निच	६–१० – ० –०	शेष ९–१७ –२३ – ६	सूर्य ३–२७ –२३ – ६
शेष	९–१७ –२३ –६	शेष २–१२ –३६ –५४	शेष २–१२ –३६ –५४
	शेष ६ से अधिक है तो षड़भाल्प करना पड़ेगा।	यह षड़भाल्प हुआ इसमें ६ का योग देना है।	

जिन में षड़भाल्प करना पड़ता है उनमें यदि उच्च से ग्रह घटाया जावे तो वही उत्तर आता है जो षडभाल्प क्रिया से प्राप्त होता है। गह उच्च या नीच स्थान के भीतर रहता है। इससे या तो उच्च से ग्रह घटाओ या ग्रह से नीच घटाओ तो एक ही बात होगी। परन्तु इस प्रकार घटाने से यदि शेष ६ राशि से अधिक हो जावे तो १२ में से घटाना ही पड़ेगा। इस प्रकार १२ से घटाने में षड्भाल्प प्राप्त होता है।

रा
(१) शेष २–१२°–३६′–५४″
×६० ×२
१२० + २५–१३–४८
= १४५ – १३–४८ ÷ ६
= २४′–१२″ उच्चवल

दूसरी रीति
रा
शेष २–१२°–३६′–५४″
×२
४–२५–१३–४८
×३०
१२० + २५–१३–४८
= १४५–१३–४८ ÷ ६
= २४–१२″

६) १४५–१३–१८ (२४′
१२
२५
२४
१ × ६० + १३
६) ७३ (१२″
६
१३
१२

तीसरी रीति

रा
शेष २–१२°–३६′–५४″
× ३०
६० + १२ = ७२°–३६′–५४″
७२–३६–५४ ÷ ३
= २४′–१२″ उच्चबल

३) ७२–३६–५४ (२४′
६
१२
१२
०
३) ३६ (१२″
३
६
६
०

(२) चंद्र का उच्च बल साधन

रा
चंद्र ८–२०°–५५′–३५
नीच ७–३–०–०
शेष =१–१७–५५–३५
× २
२–३५–५१–१०
× ३०
६० + ३५
= ९५–५१–१० ÷ ६
= १५′–५८″ उच्चबल

६) ९५–५१–१० (१५
६
३५
३०
५ × ६० + ५१
६) ३५१ (५८
३०
५१
४८
३

तीसरी

रा
शेष १–१७°–५५′–३५″
× ३०
३० + १७
= ४७–५५–३५ ÷ ३
= १५′–५८″ उच्चबल

(३) मंगल का उच्च बल साधन

रा
मंगल १–१६°–२७′–५८″
– नीच ३–२८–०–०
शेष ९–१८–२७–५८

१२–०–०–०
९–१८–२७–५८
२–११–३२–२ षड्भाल्प ११
× ३०
६० + ११
= ७१–३२–२ ÷ ३
= २३′–५०″ उच्चबल

३) ७१–३२–२ (२३
६
११
९
२ × ६० + ३२
३) १५२ (५०
१५
२

सब प्रकार से एक सा उत्तर आता है इस कारण यहाँ तीसरी रीति से किया है जो सरल है।

(४) बुध का उच्च बल साधन

	रा	
बुध	३–१२°–०′–३५″	३) ११८–०–३५ (३९′
–नीच	११–१५–०–०	९
शेष=	३–२८–०–३५	२८
	×३०	२७
	९०+२८	१×६०
	=११८–०–३५÷३	३) ६० (२०″
	=३९′–२०″ उच्चबल	६
		०

(५) गुरु का उच्चबल साधन

गुरु	८–१८–४४–५६	१२–०–०–०
– नीच	९–५–०–०	११–१३–४४–५६
शेष	११–१३–४४–५६	=०–१६–१५–४ षड्भाल्प
		=१६°–१५′–४″÷३
		=५′–२५″ उच्चबल

(६) शुक्र का उच्च बल साधन

शुक्र	२–१७–१४–५९	१२–०–०–०
– नीच	५–२७–०–०	८–२०–१४–५९
शेष	८–२०–१४–५९	=३–९–४५–१
		×३०

९०+९=९९°–४५′–१″÷३=३३′–१५″ उच्चबल

(७) शनि का उच्चबल साधन

	रा	
शनि	१–२०°–३०′–१०″	
– नीच	०–२०–०–०	
	१–०–३०–१०	

×३० / ३० = ३०°–३०′–१०′÷३ = १०′–१०″ उच्चबल।

यहाँ ३ का भाग मुखाग्र दिया गया है। ३ का मुखाग्र भाग देने की रीतिः—

= ६०/३ = २० आरंभ में ३ का मुखाग्र भाग देने से जो शेष बचे इसमें २० का गुणा करना। फिर कला में ३ का भाग देने से जो लब्धि आवे उसे गुणन फल में जोड़ देना। जैसे १६–१५–४ + ३ यहाँ १६ में ३ का ५′ बार भाग गया वह कला हुई। शेष १ बचा × २० = २० + आगे की संख्या १५ में ३ का भाग दिया ५ बार गया इसे पूर्व प्राप्त २० में जोड़ा + २० + ५ = २५″। उत्तर ५′–२५″

उच्च बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	२४′-१२″	१५′-५८″	२३′-५०″	३६′-२०″	५′-२५″	३३′-१५″	१०′-१०″

उच्च बल साधन करने की चौथी रीति और है

ग्रह से नीच घटाना। यदि ६ से अधिक शेष रहे तो षड्भाल्प करना जैसे ऊपर किया है। फिर सबके अंश बना कर सबकी कला बना लेना अर्थात् शेष की कला बना कर ६ राशि की कला (६ × ३० = १८० × ६० = १०८००′) = १०८००′ से भाग देना। इस रीति से भी पूर्ववत उत्तर आता है। यह श्रीधर की रीति है आगे उदाहरण दिया है जिससे समझ में आ जावेगा कि ६ का भाग भिन्न २ रीति से देने पर भी उत्तर एक सा आता है।

उदाहरण

(१) सूर्य से नीच घटाने पर और षड्भाल्प करने पर शेष रा २–१२°–३६′–५४″ था इसके कला बनाये ४३७४′ हुए इसमें ६ राशि की कला १०८०० का भाग दिया।

रा

शेष २–१२°–३६′–५४″
×३०
६० + १२ = ७२
×६०
४३२० + ३६
= ४३५६′

१०८००) ४३५६ (० अंश
×६०
१०८००) २६१३६० (२४ कला
२१६००
४५३६०
४३२००
२१६० × ६०
१२९६००

= २४′–१२″ उच्च बल   १०८००) १२९६०० (१२ वि०

१०८००

२१६००

२१६००

०

रा

(२) चंद्र शेष १–१७°–५५′–३५″   १०८००) २८७५ (०

×३०   ×६०

३०+१७=४७–५५   १०८००) १७२५०० (१५′

×६०   १०८००

२८२०+५५   ६४५००

=२८७५′   ५४०००

१५′–५८″ उच्च   १०५००×६०

१०८००) ६३०००० (५८″

५४०००

९००००

८६४००

३६००

उच्च बल साधन करने की एक सारिणी भी होती है जिससे और भी सरलता से उच्च बल निकल आता है।

उच्च बल साधन सारिणी

ग्रह में से उसका नीच घटाने पर और यदि शेष ६ राशि से अधिक हो तो षड्भाल्प करने के उपरांत जो शेष प्राप्त हो उसके राशि अंश कला के सहारे इस सारिणी से उच्चबल निकल आता है।

उच्चबल सारिणी

राशिफल चक्र

शेष राशि	०	१	२	३	४	५	६
फल (उत्तर)	०°–०′–०″	०°–१०′–०″	०°–२०′–०″	०°–३०′–०″	०°–४०′–०″	०°–५०′–०″	१°–०′–०″

अंश फल चक्र

अंश	१°	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०°
फल																														
क०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०′
वि०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०″

कला फल चक्र

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
फल																														
वि०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०″
प्रति०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०‴

कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
फल																														
वि०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०′
प्रति०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०″

उच्च बल सारिणी देखने की रीति

शेष राशि अंश कला से प्रत्येक का फल लेकर जोड़ डालना। राशि के नीचे अंश कला विकला के अंक दिये हैं। अंश के नीचे कला विकला के अंक और कला के नीचे विकला प्रति विकला में अंक दिये हैं, उन सबको जोड़ने से कला विकला में उच्च-बल प्राप्त होगा। इससे वही उत्तर आता है जो विशेष रीति से ६ का भाग देने से आया था।

उदाहरण

रा
(१) शनि का शेष १–०°–३०′–२०″ है······ १ राशि=०°–१०′–०″
=उच्च बल १०′–१०″ ३०′ १०″–०
=०–१०–१०–०

(२) शुक्र का शेष ३–९–४५–१······ ३ राशि=०°–३०′–०″
=उच्च बल ३३′–१५″ ९ अंश = ३–०
३५ कला= १५
=०–३३–१५

रा
(३) गुरु का शेष ०–१६°–१५′–४″······ १६°=५′–२०″
=उच्च बल ५′–२५″ १५′= ५–०
=५– २५ ०

रा
(४) मंगल का शेष, २–११°–३२′–२″······ २ राशि=०°–२०
=उच्च बल २३′–५०″–४० ११° = ३–४०
३२′ = १०–४०
= ०–२३–५०–४०

इसी प्रकार और भी निकाल लो।

मेष का सप्त वर्गी चक्र

अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	२०	०
गृह	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५
होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रेष्काण	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
सप्तमांश	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
नवमांश	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
द्वादशांश	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
त्रिशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७

वृष का सप्तवर्गी चक्र

अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला	३०	२०	१७	०	४०	३३	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
गृह	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रेष्काण	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
सप्त०	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
नव०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
द्वाद०	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
त्रिशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

मिथुन का सप्तवर्गी चक्र

अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
ग्रह	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रेष्काण	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
सप्त०	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
नव०	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
द्वाद०	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१	१	१	२
त्रिंशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७

कर्क का सप्तवर्गी चक्र

अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
ग्रह	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रेष्काण	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
सप्तमांश	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
नवमांश	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
द्वाद०	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
त्रिंशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

सिंह का सप्तवर्गी चक्र

अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
गृह	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रेष्काण	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
सप्तमांश	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
नवमांश	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
द्वादशांश	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
त्रिशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७

कन्या का सप्तवर्गी चक्र

अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
ग्रह	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रेष्काण	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२
सप्तमांश	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
नवमांश	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
द्वादशांश	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
त्रिशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

तुला का सप्तवर्गी चक्र

अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
गृह	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रेष्काण	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
सप्तमांश	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
नवमांश	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
द्वादशांश	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
त्रिंशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७

वृश्चिक का सप्तवर्गी चक्र

अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
गृह	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रेष्काण	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
सप्तमांश	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
नवमांश	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
द्वादशांश	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
त्रिंशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

धन का सप्तवर्गी चक्र

अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
गृह	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रेष्काण	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
सप्तमांश	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
नवमांश	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
द्वादशांश	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
त्रिंशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७

मकर का सप्तवर्गी चक्र

अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
गृह	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रेष्काण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
सप्तमांश	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
नवमांश	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
द्वादशांश	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
त्रिंशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

कुंभ का सप्तवर्गी चक्र

अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
गृह	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रेष्काण	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
सप्तमांश	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
नवमांश	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
द्वादशांश	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
त्रिंशांश	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७

मीन का सप्तवर्गी चक्र

अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
गृह	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रेष्काण	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
सप्तमांश	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
नवमांश	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
द्वादशांश	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
त्रिंशांश	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

१ (२) सप्तवर्गी बल—यह स्थान बल के अंतर्गत दूसरा बल है।

वर्ग साधन करना पहिले बता चुके हैं। इसमें केवल ७ ही वर्ग साधन करना पड़ता है। यहाँ ग्रह अपने वर्ग में पंचधा मैत्री के अनुसार मित्र शत्रु आदि के स्थान में से किसके स्थान में पड़ा है उसके अनुसार इसके बल का विचार होता है।

सप्तवर्गी बल में केवल इन वर्गों का विचार होता है :—

(१) ग्रह (लग्न कुंडली के अनुसार ग्रह का स्थान = ग्रह) (२) होरा कुण्डली के अनुसार (३) द्रेष्काण (४) सप्तमांश (५) नवमांश (६) द्वादशांश, और (७) त्रिशांश कुण्डली के अनुसार ग्रहों का स्थान।

यद्यपि प्रत्येक ग्रह का वर्ग साधन करना पहिले बता चुके हैं परन्तु सुविधा के लिये राशि के अनुसार सप्तवर्गीचक्र पृथक बना लिया गया है जो यहाँ दिया है जिसमें एक ही चक्र में सब वर्ग एकत्र मिल जाते हैं। इनका उपयोग करना चाहिए।

यद्यपि १० वर्ग साधन कर एक चक्र बना चुके हैं अब यहाँ केवल ७ वर्ग लेकर वर्ग साधन कर नीचे एक चक्र बना दिया है। इसमें केवल विशेषता इतनी ही है कि राशियों के नीचे उसके स्वामी ग्रह का नाम भी लिख दिया गया है। स्पष्ट रूप से दिखाने के लिये दूसरा सप्तवर्गी चक्र भी बना दिया गया है जिसमें केवल राशि स्वामी ग्रह का ही नाम लिखा है।

इसी चक्र के अनुसार विचार होगा कि कौन ग्रह अपने वर्ग में किस ग्रह के घर में है और उससे कैसी मैत्री है। इसी का विचार कर ग्रह का बल निकाला जाता है।

सप्तवर्गीचक्र

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मं०	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ लग्न	४चं.	९गु.	२शु.	४चं.	९गु.	३बु.	२शु.
२ होरा	५र.	४चं.	५र.	४चं.	४चं.	४चं.	५र.
३ द्रेष्काण	१२गु.	५र.	६बु.	८मं.	१मं.	७शु.	१०श.
४ सप्तमांश	४चं.	१मं.	११श.	१मं.	१मं.	७शु.	१२गु.
५ नवमांश	१२गु.	७शु.	२शु.	७शु.	६बु.	१२गु.	४चं.
६ द्वादशांश	२शु.	५र.	८मं.	९गु.	४चं.	९गु.	१०श.
७ त्रिशांश	८मं.	३ बु.	१२गु.	१२गु.	३बु.	९गु.	१०श.

सप्तवर्ग स्वामीचक्र

वर्ग	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
१लग्न	चं.	गु.	शु.	चं.	गु.	बु.	शु.
२होरा	र.	चं.	र.	चं.	चं.	चं.	र.
३द्रे०	गु.	र.	बु.	मं.	मं.	शु.	श.
४सप्त.	चं.	मं.	श.	मं.	मं.	शु.	गु.
५नव०	गु.	शु.	शु.	शु.	बु.	गु.	चं.
६द्वा०	शु.	र.	मं.	गु.	चं.	गु.	श.
७त्रि०	मं.	बु.	गु.	गु.	बु.	गु.	श.

ग्रह मैत्री जानने के लिये पंचधा मैत्री निकालनी पड़ती है। तात्कालिक मैत्री और नैसर्गिक मैत्री मिलकर पंचधा मैत्री होती है। इसके लिये लग्न कुण्डली पर से पंचधा मैत्री निकालते हैं।

लग्न कुण्डली

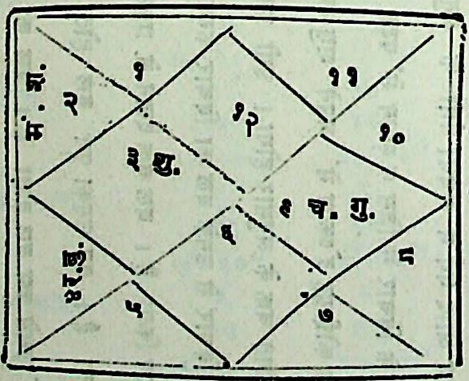

मित्र + मित्र = अधि मित्र

शत्रु + शत्रु = अधि शत्रु

मित्र + शत्रु = सम

मित्र + सम = मित्र

शत्रु + सम = शत्रु

मैत्री चक्र

	मैत्री	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
तात्कालिक मैत्री	मित्र	मं. शु. श.	०	शु. र. बु.	मं. श. शु.	०	र. बु. मं. श.	शु. र. बु.
	शत्रु	चं. गु. बु.	गु. मं. श. शु. र. बु.	श. चं. गु.	र. चं. गु.	मं. श. शु. र. बु. चं.	चं. गु.	मं. चं. गु.
नैसर्गिक मैत्री	मित्र	चं. मं. गु.	र. बु.	र. चं. गु.	र. शु.	र. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.
	शत्रु	शु. श.	०	बु.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र.चं.मं.
	सम	बु.	मं. गु. शु. श.	शु. श.	मं. गु. श.	श.	मं. गु.	गु.

पंचधा मैत्री चक्र

मैत्री	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
अधिमित्र	मं.	.	र.	शु.	.	बु.श.	शु.बु.
मित्र	.	.	शु.	मं.श.	.	मं.	.
सम	श.गु. शु.चं.	र.बु.	बु.चं. गु.	र.	मं.र. चं.	र.	र.
शत्रु	बु.	गु.मं. शु.श.	श.	गु.	श.	गु.	गु.
अधिशत्रु	.	.	.	चं.	बु.शु.	चं.	मं.चं.

ग्रह बल

ग्रह	बल
उच्च में	६०′–०″
मूल त्रिकोण में	४५–०
स्वगृह में	३०–०
अधिमित्र में	२२–३०
मित्र में	१५– ०
सम में	७–३०
शत्रु में	३–४५
अधिशत्रु में	१–५२
नीच में	०

यहाँ पंचधा मैत्री और ग्रह बल दिया है, उसके अनुसार ग्रह बल निकाला जाता है। कोई ग्रह लग्न होरा द्रेष्काण आदि वर्ग में पंचधा मैत्री के अनुसार अपने स्वस्थान या शत्रु मित्र आदि के स्थान के विचार से जिस के स्थान में पड़ा हो उसके अनुसार बल का विचार होता है। जैसे कोई ग्रह द्रेष्काण में अपने शत्रु स्थान में हो तो शत्रु स्थान का बल ३′–४५″ उपरोक्त चक्र के अनुसार होगा। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह का प्रत्येक वर्ग में पंचधा मैत्री के विचार से उसके बल का विचार करना पड़ेगा। आगे इस का उदाहरण देकर स्पष्टीकरण किया है। बल चक्र देखने से प्रकट होगा कि ग्रह अपने उच्च में अधिक बलवान होता है। तब उसका पूर्ण बल होता है। मूल त्रिकोण में उस से कम फिर स्वगृह में उससे कम्म बल होता है। बल का क्रम ऊपर बताया है।

सप्तवर्गी बल चक्र

वर्ग	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ गृह (लग्न)	चं. सम ७′–३०″	गु. शत्रु ३′–४५″	शु. मित्र १५′–०″	चं. अधिश. १′–५२″	गु. स्व. ३०′–०″	बु. अ.मित्र २२′–३०″	शु. अ.मि. २२′–३०″
२ होरा	र. स्व. ३०′–०″	चं. स्व. ३०′–०″	र. अ.मि. २२′–३०″	चं. अ.श. १′–५२″	चं. सम ७′–३०″	चं. अ.श. १′–५२	र. सम ७′–३०″
३ द्रेष्काण	गु. सम ७′–३०″	र. सम ७′–३०″	बु. सम ७′–३०″	मं. मित्र १५′–०″	मं. सम ७′–३०″	शु. स्व. ३०′–०″	श. स्व. ३०′–०″
४ सप्तमांश	चं. सम ७′–३०″	मं. शत्रु ३′–४५″	श. शत्रु ३′–४५″	मं. मित्र १५′–०″	मं. सम ७′–३०″	शु. स्व. ३०′–०″	ग. शत्रु ३′–४५″
५ नवमांश	गु. सम ७′–३०″	शु. शत्रु ३′–४५″	शु. मित्र १५′–०″	शु. अ.मि. २२′–३०″	बु. अ.श. १′–५२′	गु. शत्रु ३′–४५″	चं. अ.श. १′–५२″
६ द्वादशांश	शु. सम ७′–३०″	र. सम ७′–३०″	मं. स्व. ३०′–०″	गु. शत्रु ३′–४५″	चं. सम ७′–३०″	गु. शत्रु ३′–४५″	श. स्व. ३०′–०″
७ त्रिंशांश	मं. अ.मि. २२′–३०″	बु. सम ७′–३०″	गु. सम ७′–३०″	गु. शत्रु ३′–४५″	बु. अ.श. १′–५२″	गु. शत्रु ३′–४५″	श. स्व. ३०′–०″
बल योग	१°–२८′–०″	१°–३′–४५″	१°-४१′-१५″	१°-३′-४४″	१°-३′-४४″	१°-३५′-३७″	२°-५′-३७″

उपरोक्त सप्तवर्गी बल चक्र का स्पष्टीकरण नीचे दिया है।

सूर्य गृह में अर्थात् लग्न कुण्डली में चंद्र के स्थान में है, वह चंद्र पंचधा मैत्री के अनुसार सूर्य का सम है, सम का बल ७′–३०″ होता है वही यहाँ चक्र में दिया है। रवि होरा कुण्डली में रवि के होरा में है वह उसका स्वस्थान है। स्वस्थान का बल ३०′–०″ होता है। सूर्य गुरु के द्रेष्काण में है जो सम है बल ७′–३०″ हुआ। रवि, चंद्र के सप्तमांश में है। चंद्र सूर्य का सम है। बल ७′–३० हुआ। रवि गुरु के नवमांश में है। गुरु रवि का सम है, बल ७′–३०″ हुआ। रवि, शुक्र के द्वादशांश में है। शुक्र रवि का सम है। बल ७′–३० हुआ। रवि में मंगल का त्रिंशांश है। रवि का मंगल अधिमित्र है जिसका बल २२′–३० होता है।

चंद्र यह गुरु के स्थान (ग्रह) में है। गुरु चंद्र का शत्रु है। बल ३′–४५ हुआ। चंद्र स्वहोरा में है बल ३०′–०″ हुआ। चंद्र, रवि के द्रेष्काण में है। रवि चंद्र का सम है बल ७′–३०″ हुआ। चंद्र के सप्तमांश में मंगल है जो चंद्र का शत्रु है बल ३′–४५″ हुआ। नवमांश में शुक्र है जो चंद्र का शत्रु है बल ३′–४५″। द्वादशांश में रवि है जो चंद्र का सम है बल ७′–३०″ हुआ। त्रिंशांश में बुध है जो चंद्र का सम है बल ७′–३० हुआ।

इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के वर्ग स्वामी का विचार कर जिस प्रकार की मैत्री हो उसके अनुसार उपरोक्त चक्र में बल रख दिया है।

प्रत्येक ग्रह के ७ वर्ग हैं। प्रत्येक वर्ग में जो राशि है उसका स्वामी ग्रह, वर्गेश्वर या वर्ग स्वामी कहलाता है। जैसे लग्न कुण्डली में सूर्य कर्क का है अर्थात् चंद्र के स्थान में हैं तो उसका स्वामी या वर्गेश्वर चंद्र हुआ। लग्न कुण्डली के अनुसार जो स्थान होता है उसे स्थान या गृह कहते हैं। इस कारण पहिला वर्ग स्थान या गृह का होता हैं। वहां का जो स्वामी हो वह गृहेश, कहलाता है। होरा में जो, कोई स्थान का स्वामी हो वह होरेश, द्रेष्काण में किसी स्थान का स्वामी ग्रह द्रेष्काणेश, सप्तमांश में सप्तमांशेश, नवमांश में नवमांशेश, द्वादशांश में द्वादशांशेश और त्रिंशांश में त्रिंशांशेश कहलाता है।

इस प्रकार किसी ग्रह की वर्ग स्वामी से पंचधा मैत्री के ही अनुसार मैत्री विचार कर उसका बल, उपरोक्त बल चक्र के अनुसार लिखकर अंत में सातों वर्ग के बल का योग कर देते हैं वह प्रत्येक ग्रह का वर्ग बल होता है।

जैसे सूर्य का स्थान बल ७′–३०″, होरा ३०′–०″ द्रेष्काण ७′–३०″ सप्तमांश ७′–३०″, नवमांश ७′–३०″, द्वादशांश ७′–३०″ और त्रिंशांश बल २२′–३० है। इन सब का योग किया तो १°–२८′–०″ हुआ। यही सूर्य का सप्तवर्गी बल हुआ। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के बल का योग कर प्रत्येक ग्रह का सप्तवर्गी बल नीचे दिया है।

१ (२) सप्तवर्गी बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
बल	१°-२८-०	१°-३'-४५''	१°-४१'-१५''	१°-३'-४४''	१°-३'-४४''	१°-३५'-३७''	२°-५'-३७''

उपरोक्त बल केशवाचार्य के मत से दिया है। परन्तु पाराशर को रीति में मैत्री विचार के सम्बन्ध से कुछ भिन्नता है। इस कारण उसे भी यहाँ बतला देते हैं।

पाराशर होरा शास्त्र के मत से सप्तवर्गी बल

वर्ग	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ ग्रह	चं. गुरु शत्रु	गु.	शु.	चं.	गु.	बु.	श.
	३-४५	३०-०	२२-३०	३-४५	३०-०	१-५२	२२-३०
२ होरा	र. चंद्र सम	चं	र.	चं	चं	चं.	र.
	७-३०	३-४५	७-३०	३-४५	३-४५	३-४५	७-३०
३ द्रेष्काण	गु. (स्व.)	र.	बु.	मं.	मं.	शु.	शु.
	३०-०	७-३०	१-५२	१५-०	१५-०	२२-३०	२२-३०
४ सप्तमांश	चं. गुरु शत्रु	मं.	श. शु. अ. मि.	मं.	मं.	शु.	गु.
	३-४५	१५-०	२२-३०	१५-०	१५-०	२२-३०	३०-०
५ नवमांश	ग, गु. स्व.	शु.	शु.	शु.	बु.	गु.	चं
	३०-०	२२-३०	२२-३०	२२-३०	१-५२	३०-०	३-४५
६ द्वादशांश	शु. बु. अ. मि.	र.	मं.	गु.	चं.	गु.	श.
	२२-३०	७-३०	१५-०	३०-०	३-४५	३०-०	२२-३०
७ त्रिंशांश	मं. शुक्र मित्र	बु. चं. अ. श.	गु.	गु.	बु.	गु.	श.
	१५-०	१-५२	३०-०	३०-०	१-५२	३०-०	२२-३०
योग	१°-५२'-३०''	१°-२८'-७''	२°-१'-५२''	२°-०'-०''	१°-११'-१४''	२°-२०'-३७''	२°-११'-१५''

इसमें और पहिले बताये सप्तवर्ग साधन में कोई अंतर नहीं है। पिछले ही चक्र के अनुसार यह चक्र है। उसी चक्र के अनुसार यहाँ वर्गेश्वर की भी स्थापना की है। इसमें भी मैत्री पंचधा मैत्री के अनुसार ही विचार की जाती है। परन्तु मैत्री सम्बन्ध विचारने की रीति में केवल अंतर है। जैसे :—

रवि

(१) गृहेश चंद्र है यह चंद्र गृह में (लग्न कुण्डली में) गुरु के स्थान में है। गुरु चंद्र का पंचधा मैत्री में शत्रु है। शत्रु बल = ३′–४५″।

(२) होरेश रवि है। लग्न कुण्डली में रवि चंद्र के स्थान में है। रवि का चंद्र सम है। बल ७′–३०″।

(३) द्रेष्काणेश गुरु है। गुरु लग्न कुण्डली में स्वस्थान में है। स्वस्थान बल=३० ′-३०″।

(४) सप्तमांशेश चंद्र है। लग्न कुण्डली में चंद्र गुरु के घर में है। गुरु चंद्र का शत्रु है। शत्रु बल = ३′–४५।

(५) नवमांश में गुरु है। गुरु लग्न कुण्डली में स्वस्थान में है। स्वस्थान बल=३०–०″।

(६) द्वादशांश में शुक्र है। यह शुक्र लग्न कुण्डली में बुध के घर में हैं। शुक्र का बुध अधि मित्र है अधि मित्र का बल = २२′–३०।

(७) त्रिंशांश में मंगल है। वह मंगल लग्न कुण्डली में शुक्र के घर में है। मंगल का शुक्र मित्र है। मित्र बल १५′–०″।

इस प्रकार यहां सब ग्रहों का मैत्री सम्बन्ध लग्न कुंडली की ग्रह स्थिति के अनुसार ही विचारना पड़ता है।

लग्न कुंडली

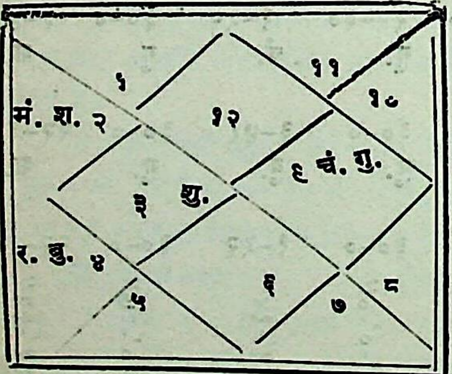

इस में वर्गेश्वर का गृह में (लग्न कुंडली में) सम्बन्ध जैसा एक स्थान में है वैसा ही प्रत्येक स्थान में होगा। इस कारण यदि वर्ग में आये हुए ७ ग्रहों का सम्बन्ध एक बार विचार लिया जाय तो वही सम्बन्ध प्रत्येक स्थान में रहेगा। जैसे जहाँ२ वर्ग में चंद्र आयगा उस का बल ३.४५ होगा क्योंकि चंद्र गुरु के स्थान में है जो उस का शत्रु है।

ऊपर रवि, चंद्र, मंगल, गुरु, और शुक्र का विचार हो चुका है केवल बुध और

शनि का और विचारना है। चंद्र के त्रिशांश में बुध है लग्न कुंडली में बुध चंद्र के स्थान में है। बुध का चंद्र अधिशत्रु है बल १'–५२" हुआ। मंगल के सप्तमांश में शनि है। लग्न कुंडली में शनि यह शुक्र के घर में है जो उस का अधिमित्र है। अधिमित्र का बल २२'–३०" हुआ।

लग्न कुंडली की स्थिति के अनुसार प्रत्येक वर्गेश्वर का बल यहाँ इस प्रकार निकलता है।

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मैत्री	सम गृही	शत्रु गृही	मित्र गृही	अधि शत्रु	स्वगृही	अ. मित्र	अ.मि. गृही
बल	७'–३०"	३'–४५"	१५'–०"	१'–५२"	३०'–०"	२२'–३०"	२२'–३०"

उपरोक्त सप्तवर्गी चक्र के वर्ग में जहाँ २ ये ग्रह आये हैं यहाँ बताये अनुसार बल रख दिया है और अंत में सब का योग कर दिया है।

पाराशरी मत से सप्तवर्गी बल इस प्रकार हुआ

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
बल	१०-५२'-३०"	१०-२८'-७"	२०-१'-५२"	२०-०'-०"	१०-११'-१४"	२०-२०'-३७"	२०-११'-१५"

पाराशरी के अनुसार सप्तवर्गी बल में वर्गेश्वर का सम्बन्ध, लग्न कुंडली से विचार कर बल दिया है। परन्तु केशव ने ग्रह से वर्गेश का सम्बन्ध विचार कर बल निकाला है। केशव का मत कइयों को मान्य है। इस कारण केशव मत से ही पहिले सप्तवर्गी बल साधन किया है।

१ (३) युग्मायुग्म या भांश बल

स्थान बल के अन्तर्गत तीसरा बल युग्मायुग्म बल है जिसे भांश बल या सुगमा-युगमा बल भी कहते हैं।

स्त्री संज्ञक ग्रह चंद्र और शुक्र हैं। शेष ग्रह: पुरुष हैं। यहां नपुंसक ग्रह भी पुरुष ग्रह में सम्मिलित हैं।

सम राशि स्त्री संज्ञक होती है। बिषम राशि पुरुष संज्ञक हैं।

स्त्री ग्रह स्त्री राशि में बलवान होता है। पुरुष ग्रह पुरुष राशि में बलवान होता है।

इस प्रकार लग्न कुंडली की राशि और नवमांश कुंडली में ग्रह और राशि का स्त्री पुरुष सम्बन्ध विचारने से जो बल होता है वह युग्मायुग्म बल कहलाता है।

युग्मायुग्म बल में यह देखना पड़ता है कि कोई ग्रह स्त्री है या पुरुष और वह सम राशि या नवांश में है या विषम राशि या नवांश में है या सम या विषम राशि में है और उसी प्रकार के नवांश में भी है। यदि राशि और नवांश दोनों में हो तो आधा बल ०°-३०′-०″, यदि किसी एक में हो तो पाव बल०°-१५′-०″ होता है।

केशव मत से

स्त्रीग्रह–	शुक्र या	और	चंद्र	पुरुष-ग्रह	सूर्य, मंगल, या	बुध, गुरु	शनि
सम राशि में (स्त्री)	सम नवांश में (स्त्री)	सम राशि और सम नवांश दोनों में हो तो	इन में से किसी में न हो तो	विषम राशि में (पुरुष)	विषम नवांश में	विषम राशि और विषम नवांश दोनों में हो तो	इन में से किसी में न हो तो
बल १५′	१५′	३०′	०	१५′	१५′	३०′	०′

युग्मायुग्म बल साधन

ग्रह	सूर्य (पुरुष)	चंद्र स्त्री	मंगल (पुरुष)	बुध (पुरुष)	गुरु (पुरुष)	शुक्र (स्त्री)	शनि (पुरुष)
राशि	४	९	२	४	९	३	२
(लग्न कुंडली में)	सम	विषम	सम	सम	विषम	विषम	सम
नवांश में	१२	७	२	७	६	१२	४
	सम	विषम	सम	विषम	सम	सम	सम
बल	०	०	०	१५′	१५′	१५′	०

इस में सप्तवर्गी चक्र के अनुसार ग्रह की राशि और नवांश की राशि प्रत्येक ग्रह को लेकर इस चक्र में लिख दिया है और नीचे बता दिया है कि वह राशि सम है या विषम।

यहाँ सूर्य पुरुष ग्रह सम राशि या सम नवांश में है इससे सूर्य का ० बल हुआ। यदि राशि या नवांश में से कोई भी विषम होता तो १५′ बल मिल जाता। यदि दोनों विषम होते तो ३०′ बल मिल जाता। परन्तु यहाँ दोनों सम हैं इस कारण बल

० हुआ। यदि दोनों सम होते तो ३०′ बल हो जाता। मंगल पुरुष ग्रह की राशि और नवांश दोनों सम है इससे ० बल हुआ। बुध पुरुष ग्रह नवांश में विषम है तो १५′ बल हुआ।

यदि राशि भी विषम होती तो बल ३०′ हो जाता। इसी प्रकार गुरु पुरुष ग्रह विषम राशि में होने से बल १५′ पाया। नवांश में सम होने से नवांश का बल नहीं रहा। शुक्र स्त्री ग्रह है। नवांश में सम होने से १५′ बल हुआ। राशि विषम होने से राशि का बल नहीं रहा। शनि पुरुष ग्रह है सम राशि में और सम नवांश में होने से किसी का बल नहीं रहा अर्थात् शून्य बल हुआ।

युग्मायुग्म बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
बल	०	०	०	१५′	१५′	१५′	०

कई लोगों ने इस रीति को माना है परन्तु पाराशरी में कुछ भिन्न प्रकार दिया है।

पाराशर मत—राशि और नवांश दोनों में हो तब १५′ बल मिलता है अन्यथा बल ० हो जाता है। अर्थात् पुरुष ग्रह यदि राशि या नवांश में से किसी एक में विषम हो तो शून्य बल हो जाता है। यदि राशि और नवांश दोनो में विषम हो तब १५′ बल मिलता है इसी प्रकार स्त्री ग्रह राशि या नवांश में से किसी एक में सम हो तो ० बल होगा। यदि राशि और नवांश दोनों में सम हो तब १५′ बल मिलेगा।

१ (४) केन्द्रादि बल

स्थान बल के अंतर्गत चौथा केन्द्रादि बल है। ग्रह केन्द्र में पूर्ण बली होता है। पणफर में आधा बल और आपोक्लिम में चौथाई बल होता है। इस कारण ग्रह का बल निकाला जाता है।

लग्न कुण्डली

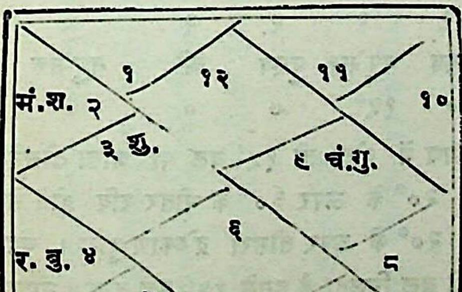

	केन्द्र में	पणफर	आपोक्लिम
(भाव)	१,४,७,१०	२,५,८,११	३,६,९,१२
बल	६०′	३०′	१५′

केन्द्रादि बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
बल	३०′	६०′	१५′	३०′	३०′	६०′	१५′

यहाँ शुक्र चतुर्थ भाव में और चंद्र ग्रह दशम भाव में हैं इस कारण शुक्र चंद्र गुरु केन्द्र में हुए बल ६०'। तीसरे भाव आपोक्लिम में मंगल और शनि हैं बल १५'। पंचम भाव पणफर में रवि बुध होने से इनका ३०' बल हुआ।

इसमें पाराशर और केशव का एक मत है।

१ (५) द्रेष्काण बल

स्थान बल के अंतर्गत यह पाँचवाँ बल है।

सप्त वर्ग साधन में द्रेष्काण निकाल चुके हैं, उसी के अनुसार ग्रहों के बल का विचार होता है। प्रत्येक राशि के ३ द्रेष्काण होते हैं। पहिले द्रेष्काण में पुरुष ग्रह का प्रभाव (अधिकार) रहता है। तीसरे द्रेष्काण में स्त्री ग्रह का और बीच के द्रेष्काण में नपुंसक गह का प्रभाव रहता है। इसी के अनुसार बल का विचार होता है।

यदि ग्रह के अधिकार में वह द्रेष्काण होता है तो ¼ (१५') बल होता है नहीं तो बल हीन समझा जाता है।

कोई ग्रह १०° तक पहिले, २०° तक दूसरे और ३०° तक तीसरे द्रेष्काण में समझा जाता है। इस प्रकार ३ भेद हैं।

क्रम	ग्रह लिंग	ग्रह	द्रेष्काण	बल	यदि अन्यथा हो तो बल
१	पुरुष ग्रह	सूर्य, मंगल, गुरु	पहिला = १०° तक	१५'	०
२	नपुंसक ,,	बुध, शनि	दूसरा = २०° ,,	१५'	०
३	स्त्री ,,	चंद्र, शुक्र	तीसरा = ३०° ,,	१५'	०

द्रेष्काण बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि-अंश	३-२७°	८-२०°-५५'	१-१६°	३-३०°	८-१८°	२-१७°	१-२०°-३०
द्रेष्काण	३	१	२	२	२	२	३
लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक
बल	०	१५'	०	१५°	०	०	०

यहाँ रवि पुरुष ग्रह है पहिले द्रेष्काण में होता तो १५' बल पा जाता तीसरे द्रेष्काण में होने से बल हीन हो गया। २०° के ऊपर ३०° के भीतर रवि होने से तीसरा द्रेष्काण हुआ। चंद्र २०°-५५' है २०° के ऊपर तीसरा द्रेष्काण हुआ। चंद्र स्त्री ग्रह है। तीसरे द्रेष्काण में स्त्री ग्रह को बल मिलता है इससे १५' बल हुआ। मंगल १०° के ऊपर २०° के भीतर हैं तो दूसरा द्रेष्काण हुआ। मंगल पुरुष ग्रह है उसको दूसरे द्रेष्काण में बल नहीं मिलता इससे ० बल हुआ। बुध १०° के ऊपर २०° के भीतर

है दूसरा द्रेष्काण हुआ। यह नपुंसक ग्रह होनेसे दूसरे द्रेष्काण में १५′ बल पा गया। गुरु १०° से ऊपर २०° के भीतर है दूसरा द्रेष्काण हुआ। पुरुष ग्रह को इसमें बल नहीं मिलता इससे शून्य बल हुआ। शुक्र १०° के ऊपर २०° के भीतर हैं दूसरा द्रेष्काण हुआ। शुक्र स्त्री ग्रह है इससे इसमें बल नहीं मिला ० बल हुआ। शनि २०°- ३०′ हैं २,° से ऊपर ३०° के भीतर है तीसरा द्रेष्काण। शनि नपुंसकग्रह होने से तीसरे द्रेष्काण में बल नहीं पाया ० बल हुआ।

१ स्थान बल का योग

ऊपर जो स्थान बल के अंतर्गत ५ प्रकार का बल निकाल चुके हैं उन्हीं सबका योग कर देने से स्थान बल हो जाता हैं।

स्थान बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
(१) उच्च बल	०°–२४′–१२″	०°–१५′–५८″	०°–२३′–५०″	०°–३९′–२०″	०°–५′ –२५″	०°–३३′–१५″	०°–१०′–१०″
(२) सप्तवर्गी बल	१ –२८ – ०	१ – ३ –४५	१ –४१ –१५	१ – ३ –४४	१ – ३ –४४	१ –३५ –३७	२ – ५ –३७
(३) युग्मा युग्म बल	० – ० – ०	० – ० – ०	० – ० – ०	० –१५ – ०	० –१५ – ०	० –१५ – ०	० – ० – ०
(४) केन्द्रादि ,,	० –३० – ०	१ – ० – ०	० –१५ – ०	० –३० – ०	१ – ० – ०	१ – ० – ०	० –१५ – ०
(५) द्रेष्काण ,,	० – ० – ०	० –१५ – ०	० – ० – ०	० –१५ – ०	० – ० – ०	० – ० – ०	० – ० – ०
स्थान बल योग	२ –२२ –१२	२ –३४ –४३	२ –२० – ५	२ –४३ –४	२ –२४ – ९	३ –२३ –५२	२ –३० – ४७

भिन्न २ प्रकार के स्थान के सम्बंध से यह प्रत्येक ग्रह का स्थान बल हुआ।

२ दिग्बल । दिग् = दिशा ।

इसमें दिशाओं के सम्बंध से प्रत्येक ग्रह के बल का विचार होता है। ग्रह और भाव की दिशाएं नीचे बताई हैं। यदि ग्रह और भाव की दिशा एक होती है तो ग्रह बलवान् हो जाता है नहीं तो उसी अनुपात से ग्रह का बल घट जाता है। केन्द्र में ग्रह बलवान् होता है। केन्द्र के कौन-कौन स्थान में कौन ग्रह बलवान् होता है नीचे दिया है।

ग्रह	बुध, गुरु	शनि	चंद्र, शुक्र	सूर्य, मंगल
ग्रह दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
भाव	लग्न	सप्तम	चतुर्थ	दशम
भाव की दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण

ऊपर बताये भाव में ग्रह का पूर्ण बल होता है। इनसे ६ राशि अंतर पर ग्रह चले जाने पर शून्य बल हो जाता है। इस कारण बली भाव से ६ राशि के अंतर पर जो भाव हो वह ग्रह स्पष्ट में से घटा देने पर प्रगट हो जाता है कि ग्रह शून्य बल से कितने अंतर पर है। उपरांत अनुपात से बल निकाला जाता है कि ६ राशि अंतर हो जाने पर पूर्ण बल १° या ६०′ होता है तो इतने अंतर होने पर कितना बल होगा ? ग्रह और निर्बली भाव का अंतर निकाल कर ६ का भाग उसमें दे देने से दिग्बल प्राप्त होता है। यहाँ ६ का भाग उसी रीति से देना जैसा उच्चबल साधन में किया था। ६ का भाग देने के ४ प्रकार वहाँ बता चुके हैं उन में से किसी एक प्रकार से भाग देना। उन सबमें सरल रीति यही है कि अंश बनाकर ३ का भाग दे दिया जाय। इसका बल निकालने के लिये उच्चबल सारिणी भी उपयोगी है। उच्च बल निकालने की रीति के अनुसार उस सारिणी से उसी प्रकार दिग्बल निकल आता है।

दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
बली भाव	लग्न	सप्तम	चतुर्थ	दशम
निर्बली भाव	सप्तम	लग्न	दशम	चतुर्थ
ग्रह	बुध, गुरु,	शनि	चंद्र, शुक्र	सूर्य, मंगल,

दिग्बल साधन

(१) सूर्य या मंगल = (ग्रह स्पष्ट—चतुर्थ भाव) = शेष ÷ ६ = दिग्बल कलादि
(२) चंद्र या शुक्र = (ग्रह स्पष्ट – दशम भाव) = ,, ,, = ,,
(३) बुध या गुरु = (ग्रह स्पष्ट—सप्तम) = ,, ,, = ,,
(४) शनि = (ग्रह स्पष्ट—लग्न) = ,, ,, = ,,

उच्चबल साधन के अनुसार ग्रह से भाव का अंतर ६ राशि से अधिक हो तो १२ राशि में से शेष घटाकर षड्भाल्प कर लेना, उपरांत शेष में ६ का भाग देना चाहिए तब दिग्बल निकलता है।

उदाहरण रा

(१) सूर्य ३–२७°–२६′–६″ ५४°–२३′–१०″ ÷ ३
–चतुर्थ भाव २–२–५९–५६ = १८′–७″–४३‴ दिग्बल सूर्य का
शेष १–२४–२३–१०
= ५४°–२३′–१०″

रा
(२) चंद्र ८–२०°–५५′–३५ १७°–५५′–३९″ ÷ ३
–दशम भाव ८– २ –५९ –५६ = ५′–५८″–३३‴ चन्द्र का दिग्बल
शेष = ०–१७ –५५ –३९
= १७°–५५′–३९″

रा
(३) मंगल १–१६°–२७′–५८″ १२– ०– ०– ० १६°–३१′–५८″ ÷ ३
–चतुर्थभाव २– २ –५९ –५६ ११–१३–२८– २ = ५′–३०″–३९‴
शेष ११–१३ –२८ – २ शेष ०–१६–३१–५८ मंगल का दिग्बल
= १६°–३१′–५८″

६ से अधिक होने से षड्भाल्प किया

रा
(४) बुध ३–१३°– ०′–३५″ १२– ०– ०– ० ४७°–२७′–३६″ ÷ ३
–सप्तमभाव ५– ० –२८ –११ १०–१२–३२–२४ = १५′–४९″–१२‴
शेष १०–१२ –३२ –२४ शेष १–१७–२७–३६ बुध का दिग्बल
= ४७°–२७′–३६″

६ से अधिक है षड्भाल्प किया

रा
(५) गुरु ८–१८°–४४′–५६″ १०८°–१६′–४५″ ÷ ३
–सप्तमभाव ५– ० –२८ –११ = ३६′–५″–३५‴
शेष ३–१८ –१६ –४५ गुरु का दिग्बल
= १०८°–१६′–४५″

(६) शुक्र २–१७–१४–५६   १२– ०– ०– ०   १६५°–४४'–५७'' ÷ ३
–दशमभाव ८– २–५६–५६   ६–१४–१५– ३   =५५–१४–५६
शेष ६–१४–१५– ३   शेष ५–१५–४४–५७   शुक्र का दिग्बल
= १६५°–४४'–५७''

६ से अधिक है षड़भाल्प किया

रा
(७) शनि १–२०°–३०'–१०''   ८०°–१'–५६'' ÷ ३
–लग्न ११– ० –२८ –११   = २६'–४०''–३६'''
शेष २–२० – १ –५६   शनि का दिग्बल ।
= ८०°–१'–५६''

२ दिग्बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
बल	१८'–७''–४३'''	५'–५८''–३३'''	५'–३०''–३१'''	१५'–४६''–१२'''	३६'–५''–३५'''	५५'–१४''–५९'''	२६'–४०''–३९'''

३ काल बल

४ प्रकार से काल के सम्बंध का बल मिल कर काल बल होता है ।
(१) नतोन्नत बल (२) पक्ष बल, (३) दिन रात्रि त्रिभाग बल (४) समाधि बल ।

समय के अनुसार जो ग्रह का बल होता है वह काल बल कहलाता है (१) नत और उन्नत के विचार से जो बल होता है वह नतोन्नत बल है । नत मध्याह्न काल और उन्नत अर्द्ध रात्रि काल से विचार होता है । (२) पक्ष के अनुसार पक्ष बल होता है । (३) दिन रात्रि के ३ भाग करने पर दिन रात्रि के विभाग के अनुसार दिन रात्रि त्रिभाग बल होता है और (४) जन्म दिन, मास वर्ष आदि से ग्रह का सम्बंध स्थापित कर जो बल का विचार होता है वह समाधि बल है । इस प्रकार समय के भिन्न-२ विभाग के अनुसार बल का बिचार करना पड़ता है ।

३ (१) नतोन्नत बल   (नत + उन्नत = नतोन्नत)
(१) चंद्र,मंगल,शनि,

ये ग्रह रात्रि में बली होते हैं अर्द्ध रात्रि में पूर्ण बली होते हैं । दिन को हीन

बल और मध्याह्न में इन का बल शून्य होता है। अर्द्ध रात्रि और मध्याह्न में ३० घड़ी का अन्तर होता है।

अपना इष्ट जितना हो उससे नत (मध्याह्न अन्तर) निकालना पड़ता है। फिर गणित से बल निकलता है। ३० घड़ी में पूर्ण नत बल १ रूप = ६०′ होता है तो इष्ट नत में कितना नत बल होगा ? इस प्रकार नत में ३० का भाग देने से चंद्र मंगल शनि का नत बल निकल आता है।

(२) सूर्य, शुक्र, गुरु

ये ग्रह मध्याह्न में पूर्ण बली होते हैं, रात्रि में हीन बल और अर्द्ध रात्रि में इन का बल ० हो जाता है। अर्द्ध रात्रि से उन्नत अन्तर निकाला जाता है। अर्द्ध रात्रि में शून्य बल होकर मध्याह्न में पूर्ण बल प्राप्त होने को ३० घड़ी लग जाते हैं। इस प्रकार ३० घड़ी में पूर्णबल १° होता है तो अर्द्धरात्रि अन्तर (उन्नतमें कितना होगा ?

उन्नत में ३० का भाग देने से सूर्य,शुक्र, गुरु का बल निकल आता है। नत और उन्नत निकालना पहिले बता चुके हैं।

(३) बुध दिन और रात दोनों में बली होता है इससे इसका पूर्ण बल १ अंश सदा लिया जाता है

नत-उन्नत साधन

घ. प. वि.

इष्ट काल ३६–३४–३७॥ दिन मान ३२,–१०–३६, दिनार्द्ध १६–५–१८
इष्ट काल मध्याह्न और अर्द्ध रात्रि के बीच है = पश्चिम नत
पश्चिम नत = (दिनार्द्ध + रात्रि गत घटी) रात्रि गत घटी = (रात्रि इष्ट–दिनमान)

इष्ट	३६–३४–३७॥	दिनार्द्ध	१६– ५–१८	३०– ०– ०
– दिनमान	३२–१०–३६	+ रात्रि गतघटी	४–२४– १॥	२०–२९–१९॥ प.न
= रात्रि गत घटी	४–२४– १॥	= पश्चिम नत	२०–२९–१९॥	९–३०–४०॥ उ.

नतोन्नत बल साधन

(१) चंद्र मंगल शनि का

नत (२०–२९–१९॥) ÷ ३० = ०°–४०′–५८″–३९‴ बल

(२) सूर्य शुक्र गुरु का

उन्नत (९–३०–४०॥) ÷ ३० = ०°–१९′–१″–२१‴ बल

(३) बुध का बल सदा एक सा रहता है = १° = ६०′ बल

नतोन्नत बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
बल	१९′-१″-२१‴	४०′-५८″-३९‴	४०-५८-३९	६०′-०″-०‴	१९′-१″-२१‴	१९′-१′-२१″	४०-५८-३९

पाराशरी मत से नतोन्नत बल साधन

दिवाबल = इष्ट काल मध्याह्न से अर्द्ध रात्रि तक हो।

रात्रि बल = ,, अर्द्धरात्रि से मध्याह्न ,, ,,

दिवानत = (दिनार्ध–इष्ट) = नत। उन्नत = (३०–नत)

(दोनों में जो घटे घटाना)

उन्नत बल = (उन्नत × २)

इष्ट ३६–५४–३७॥	३०– ०– ०	उन्नत × २ = उन्नत बल
दिनार्ध १६– ५–१८	२०–२९–१९॥	९–३०–४०॥ × २
नत = २०–२९–१९॥	९–३०–४०॥ उन्नत	= १९–१–२१ उन्नत बल

बल निकालने की रीतिः—

ग्रह	दिवा बल	रात्रि बल	मध्याह्न से अर्द्ध रात्रि के बीच जन्म है तो यहाँ दिवा बल ग्रहण करेंगे।
(१) सूर्य, शुक्र, गुरु	उन्नत बल	(६०-उन्नत बल)	
(२) मङ्गल, शनि, चंद्र	(६०–उन्नत बल)	उन्नत बल	
(३) बुध	६०′	६०′	

(१) सू' शुक्र, गुरु का बल = उन्नत बल = १९′–१″–२१‴

(२) मंगल शनि चंद्र का ,, = (६०–उन्नत बल) = ४०–५८–३९

दोनों रीति से एक सा उत्तर आता है।

६०–०–०
१९–१–२१
= ४०–५८–३९

३ (२) पक्ष बल

काल बल के अंतर्गत यह दूसरा बल है।

पक्ष के अनुसार प्रत्येक ग्रह के बल का विचार होता है। पक्ष का सम्बंध चंद्र से है। चंद्र शुक्ल पक्ष में द्वितीया से बढ़कर शुभ ग्रहों के बल की वृद्धि करता है और पाप ग्रहों के बल को क्षीण करता है। पूर्णिमा के अंत में पूर्ण शुभ होकर शुभ ग्रह को १रूप (१ अंश) बल देता है। उस समय पाप ग्रहों का बल शून्य हो जाता है। १५

तिथि शुक्ल पक्ष की जाने पर कृष्ण पक्ष की तिथि होती है। कृष्ण अमावस्या को पाप ग्रह का बल पूर्ण होता है। कृष्ण पक्ष या शुक्ल पक्ष में तिथि बढ़ने के साथ बल भी बढ़ता है। इसी अनुपात से ग्रह का पक्ष बल निकाला जाता है।

शुक्ल पक्ष = शुभ ग्रह बली = पाप ग्रह निर्बल

कृष्ण ,, = पाप ,, = शुभ ,, ,,

शुक्ल पक्ष में पाप ग्रह बल = (१ × ऐष्य तिथि) ÷ १५ = (१५–गत तिथि) ÷ १५
= १–(गत तिथि ÷ १५)

ऐष्य = आगे की १५ तिथि से गत तिथि घटाने से ऐष्य तिथि होती है।

कृष्ण पक्ष = पाप ग्रह बल = (१ × गत तिथि) ÷ १५ = (१५–ऐष्य तिथि) ÷
१५ = १–(ऐष्य तिथि ÷ १५)

शुक्ल पक्ष में शुभ ग्रह बल = (१° × गत तिथि) ÷ १५

कृष्ण " " " " " = (१ × ऐष्य तिथि) ÷ १५

पक्ष बल साधन को रीति

शुक्ल गत तिथि = शुक्ल प्रतिपदा से जन्म की तिथि तक

(१) जन्म शुक्ल पक्ष = गत तिथि और घड़ी पल ÷ १५ = शुक्ल पक्ष का = पक्ष बल

(२) " कृष्ण " = (१५–कृष्ण पक्ष की गत तिथि घड़ी आदि ÷ १५ = कृष्ण पक्ष का पक्ष बल।

(१) बुध, गुरु, शुक्र, बल = उपरोक्त बल कृष्ण या शुक्ल पक्ष का

(२) रवि, मंगल, शनि, " = (६० कला–उपरोक्त बल)

(३) चंद्र बल = बुध गुरु आदि का बल × २

पक्ष बल साधन करने के लिये इष्टकालीन गत तिथि घड़ी पल चाहिए।

तिथि निकालने की रीति

(चंद्र स्पष्ट–सूर्य स्पष्ट) = शेष राशि के अंश बनाकर केवल अंश ÷ १२ = गत तिथि।

रा

चंद्र स्पष्ट = ८–२०°–५५′–३५″   १२) १४३° (११ तिथि

– सूर्य स्पष्ट = ३–२७–२६–६   १२

शेष ४–२३–२९–२९   २३

= १४३°–२९′–२९″   १२

  ११

= १४३° ÷ १२ = गत तिथि ११, शेष ११°–२९′–२९″

यहाँ गत तिथि निकाली है वर्तमान तिथि की घड़ी पल और निकालना है; जिस की रीति यह है ।—

(चंद्र गति–सूर्य गति) = गति अंतर । इतना गति अंतर ६० घड़ी में होता है तो शेष अंश कला विकला में कितना होगा ? इसके लिए उपरोक्त १२ का भाग देने से बचा हुआ शेष अंशादि की विकला बना कर ६० का गुणा करो उपरांत गति अंतर की विकला बना कर भाग दो तो वर्तमान तिथि की घड़ी पल आदि निकलेगी ।

(शेष × ६०) ÷ गति अंतर = घड़ी पल आदि वर्तमान तिथि की ।

चंद्र गति ७६३'–१६'' शेष ११°–२९'–२९''
–सूर्य गति ५७–२८ × ६०
गति अंतर = ७०५–४८ ६६० + २९
७०५'–४८'' = ६८९ × ६०
× ६० = ४१३४० + २९''
४२३०० + ४८ = ४१३६९''
= ४२३४८'' गति अंतर शेष की विकला

शेष ११°–२९'–२९'' × ६० / गतिअंतर ७०५'–४८'' = ४१३६९'' × ६० / ४२३४८ = २४८२१४० / ४२३४८

घ. प. वि.
= ५८–३६–२९

४२३४८) २४८२१४० (५८
२११७४०
३६४७४०
३३८७८४
२५७५६ × ६०
४२३४८) १५४५३६० (३६
१२७०४४
२७४९२०
२५४०८८
२०८३२ × ६०
४२३४८) १२४९९२० (२९
८४६९६
४०२९६०
३८११३२
२१८२८

∴ शुक्ल पक्ष की गत तिथि
ति. घ. प. वि.
११–५८–३६–२९

इसमें १५ का भाग देने से शुभ ग्रह का शुक्ल पक्ष का पक्षबल होता है । यदि कृष्ण पक्ष का जन्म होता तोः—

(१५ तिथि–गत तिथि घड़ी आदि) ÷ १५ = शुभ ग्रह का पक्ष बल होता ।

पक्ष बल साधन

(१) शुक्ल पक्ष की गत तिथि ११–५८–३६–२९ ÷ १५ = पक्षबल
= ०°–४७'–५४''–२६''' पक्षबल शुभ ग्रह का (बुध, गुरु, शुक्र का)

(२) पाप ग्रह रवि मंगल शनि का पक्षबल १– ०– ०– ०
१–(०°–४७'–५४''–२६''') = ०°–१२'–५''–३४''') ०–४७–५४–२६
पक्षबल = ०–१२– ५–३४

(३) चंद्र पक्ष बल = शुभ बल × २
(०°–४७′–५४″–२६‴) × २ = १°–३५′–४८″–५२‴

कई आचार्यों का मत इसे दूना करने का नहीं है क्योंकि यही चेष्टा बल होता है। वे लोग चन्द्र का पक्ष बल ०-४७–५४–२६ ही मानेंगे।

यहाँ शुक्ल पक्ष के जन्म का उदाहरण दिया है। यदि कृष्ण पक्ष का जन्म हो तो चंद्र और सूर्य स्पष्ट का अंतर निकाल कर ऊपर बताये अनुसार गत तिथि घड़ी आदि निकाल लेना। उपरांत जो गत तिथि घड़ी आदि आवे उसे १५ तिथि से घटा देना। जो बचे उस तिथि घड़ी पल आदि में १५ का भाग देना तो शुभ ग्रह का पक्ष बल निकल आयगा। और १° में से शुभ ग्रह का पक्ष बल घटाने से पाप ग्रह का पक्ष बल होगा।

यहाँ चंद्र का बल, शुभ बल का दूना नहीं लिया है क्योंकि कई आचार्य दूना करने के पक्ष में नहीं हैं।

पक्ष बल चक्र।

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
बल	१२′–५″–३४‴	४७′–५४′–२६″	१२′–५″–३४‴	१२′–५″–३४‴	४७′–५४″–२६‴	४७′–५४″–२६‴	१२′–५″–३४‴

यहाँ बुध सूर्य के साथ रहने से पाप ग्रह में ले लिया गया है। उपरोक्त पक्षबल केशव की रीति से किया है।

पाराशर को रीति कुछ भिन्न है परन्तु वह सरल है। उसी रीति से पक्षबल साधन करना चाहिए। वह रीति नीचे दी है।

पाराशर मत से = (चंद्र–सूर्य) = चंद्र अंतर। यह अंतर ६ से अधिक हो तो षड्भाल्प कर लेना (१२ से अंतर घटाना)। फिर सबके अंश बनाकर ३ का भाग देना तो शुभ ग्रह बुध, चंद्र, गुरु, शुक्र का पक्ष बल होगा। ६०′–उपरोक्त शुभ बल = पाप ग्रह मंगल सूर्य शनि का पक्ष बल।

रा
उदाहरण—चंद्र स्पष्ट ८–२०°–५५′–३५″
सूर्य ,, ३–२७ – २६–६
अंतर = ४–२३ – २९–२९
= १४३°–२९′–२९″
१४३°–२९–२९ ÷ ३
= ४७′–४९″–४९‴
शुभ बल

६०′–०–०
४७–४९–४९
१२–१०–११ = पाप बल

इसे भी उच्च बल साधन सारिणी जो पहिले दे चुके हैं उससे भी बल निकाल सकते हैं। जैसे अंतर ४रा–२३°–२६′–२६″ है

पाराशर की रीति से गणित में अधिक अंतर नहीं आता परन्तु रीति सरल है। इस मत से चंद्र को दुगुना नहीं करना पड़ता।

४ राशि =	०–४०′
२३ अंश =	७–४०
२६ कला =	६–४०
२६ विकला =	६–४०
शुभ बल =	०–४७–४६–४६–४०

श्रीपति ने भी पाराशरी के अनुसार ही बताया है परन्तु गणित कुछ क्लिष्ट है।

(चंद्र–सूर्य) = अंतर। यह ६ से अधिक हो तो १२ से घटाकर सब की कला बनाकर ६ राशि की १०८००″ का भाग देना = पक्षबल

कृष्ण पक्ष में = (१°–उपरोक्त बल)। शुक्ल पक्ष में जो शुभ ग्रह का बल है वह कृष्ण पक्ष में पाप ग्रह का बल समझना।

(चन्द्र–सूर्य) = अंतर ४ रा–२३°–२६′–२६″ = ८६०६′–२६″ $= \frac{८६०६}{१०८००}$

= ० रा–४७°–४६′–४६″ उपरोक्त ही आया।

पक्ष बल साधन करने के लिये पाराशरी की रीति से ही पक्ष बल साधन करना चाहिए जिसमें पक्ष आदि का कुछ विचार नहीं है। केवल चंद्र से सूर्य घटा कर आवश्यक हो तो शेष को पड़भाल्प कर राशि के अंश बना कर अंश कलादि में ३ का भाग देना तो शुभ ग्रह का पक्ष बल कलादि प्राप्त होगा इसे ६०′ में से घटाने पर पाप ग्रह बल होगा। या उच्च बल सारिणी से पक्ष बल निकाल लो।

३ (३) दिन रात्रि त्रिभाग बल

यह काल बल के अंतर्गत तीसरा बल है।

दिन में या रात्रि में जैसा जन्म हो दिनमान या रात्रिमान का तीन भाग करने पर यह देखना पड़ता है कि किस भाग में जन्म हुआ है। जिस भाग में जन्म होगा उस का बल १ रूप (अंश) होता है। इसी प्रकार समय अनुसार ग्रह के बल का विचार होता है।

दिन में प्रातः काल बुध बली होता है। मध्याह्न में सूर्य बली होता है। संध्या को शनि। रात्रि में प्रथम काल में चंद्र, अर्द्ध रात्रि में शुक्र और अन्त रात्रि में मंगल बली होता है। गुरु दिन और रात्रि में सदा बली रहता है। इस प्रकार

समय के अनुसार ग्रहों का बल १ रूप होता है। अन्य समय में उस का बल शून्य माना जाता है।

=अंश बल=दिन रात्रि त्रिभाग बल।

दिन रात्रि के विभाग	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	
दिन में	बुध	सूर्य	शनि	गुरु का सदा
रात्रि में	चंद्र	शुक्र	मंगल	बल
बल	१°	१°	१°	१°

उदाहरण

	घ. प. वि.		
इष्ट	३६–३४–३७।।	६०–०–०	रात्रिमान
दिनमान	३२–१०–३६	३२–१०–३६ दिनमान	(२७–४९–२४) ÷ ३
शेष रात्रि	४–२४–१।।	२७–४९–२४ = रात्रिमान = ९–१६–२८ एकभाग	
			घ० प० वि०

रात्रि का विभाग करने पर १ भाग ९–१६–२८ का होता है। जन्म समय में रात्रि ४–२४–१।। गत हुई थी। यह समय पहिले भाग के अंतर्गत है। इस कारण रात्रि के प्रथम खंड में जन्म हुआ। रात्रि के प्रथम खंड में चंद्र को १° बल मिलता है गुरु का चाहे रात हो या दिन हो चाहे कोई भाग हो सदा १° बल रहता है। शेष ग्रहों का बल शून्य हुआ क्योंकि जन्म काल रात्रि के पहिले खंड में है। यदि दूसरे खंड में होता तो शुक्र का १° बल होता, तीसरे खंड में मंगल को १° बल मिलता। यदि दिन के पहिले खंड में जन्म होता तो बुध को दूसरे खंड में सूर्य को और तीसरे खंड में शनि को १° बल मिल जाता। इसमें केवल कोई एक ही ग्रह को जन्म के अनुसार बल मिलता है और गुरु को तो बल मिलता ही है। और कोई ग्रह को बल नहीं मिलता।

अंश बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
बल	०	१°	०	०	१°	०	०

३ (४) समाधिबल

काल बल के अंतर्गत यह चौथा बल है।

४ प्रकार का बल मिल कर समाधि बल बनता है।

(१) होरा बल (२) दिनेश बल (३) मासेश बल और (४) वर्षेश बल।

जन्म समय के अनुसार यह बल निकाला जाता है। जो सब से थोड़े समय रहता है उसका अधिक बल होता है। होरा के विचार से जो होरेश होगा उसका बल १° होगा क्योंकि वह थोड़े समय रहता है। उससे अधिक समय तक रहने वाला

दिन का स्वामी है। दिनेश का बल होरेश से १/४ कम जाता है अर्थात् दिनेश का बल ३/४°, मासेश इससे अधिक समय रहता है इससे उसका बल १/२° और सबसे अधिक काल तक वर्षेश का प्रभाव रहता है इससे :उसका बल १/४° या १५' हुआ। इस प्रकार वर्ष, मास, दिन, और होरा का स्वामी निकाल कर उसका बल लिखते हैं। जो ग्रह जन्म के समय इनमें से किसी का स्वामी होगा उसके अनुसार उसे बल मिलेगा। जैसे जन्म समय मंगल का होरा है तो होरेश मंगल को १° बल मिलेगा। यदि जन्म दिन मंगलवार है तो मंगल को दिन बल ३/४° और मिल जायगा। यदि बुधवार का जन्म है तो जन्म दिन स्वामी बुध ग्रह को ३/४° बल मिल जायगा। यदि मास स्वामी गुरु है तो गुरु को मास बल १/२° मिलेगा। यदि वर्ष स्वामी शनि है तो शनि को वर्ष बल १/४° मिलेगा। यदि किसी के भी स्वामी नहीं हैं तो उनका बल शून्य होगा।

समाधिबल	ग्रह	होरेश	दिनेश	मासेश	वर्षेश
	बल	६०'–०"	४५'–०"	३०'–०"	१५'–०"

आगे होरेश आदि निकालने की रीति दी है।

३ (४/१) होरेश

जन्म समय बार का होरा जानने की रीति।

६० घड़ी में सातों ग्रह का होरा ग्रहों के सूर्य की परिक्रमा करने के क्रम से व्यतीत होते हैं। २॥ घड़ी (१ घंटा) का एक होरा होता है। दिन रात के २४ होरा होते हैं। होरा का क्रम इस प्रकार है :—

(१) शनि (२) गुरु (३) मंगल (४) सूर्य (५) शुक्र (६) बुध (७) चंद्र।

जो दिन होता है उस का होरा पहिले होता है उस के आगे उपरोक्त क्रम से होरा होता है।

होरा निकालने की रीति

(लग्न–सूर्य) × २ = होरा ÷ ७ = शेष बचे उतनो संख्या जन्म दिन से उपरोक्त क्रम से गिनने पर जो ग्रह आवे वह ग्रह उस दिन का होरेश होता है

	रा ० ' "
लग्न	११-०-२८-११
-सूर्य	३-२७-२३-६
शेष	७-३-५-५
	× २
	१४-६-१०-१०

= १५ + ७ शेष १

जन्म दिन बुधवार है। बुधवार को आदि बार लेकर उपरोक्त क्रम से गिना तो शेष १ होने से पहिला होरा बुध का ही आया। इस से होरेश बुध हुआ। यदि शेष ४ बचता तो उपरोक्त क्रम से बुध से गिनते १ बुध २ चंद्र, ३ शनि, ४ गुरु, ५ मंगल, ६ सूर्य, ७ शुक्र इस क्रम से गिनना पड़ता परन्तु यहाँ शेष ४ होता तो चौथा होरा गुरु का उस समय होता। यदि शेष ० या ७ बचता तो सातवां शुक्र का होरा होता।

होरा निकालने की दूसरी रीति

(इष्ट घड़ी × २) ÷ ५ = लब्धि होरा क्रम । लब्धि ७ से अधिक हो तो ७ का भाग देकर शेष लेना ।

	घ. प. वि.
इष्ट	३६–३४–३७॥
	× २
	७३–६–१५ = ७४

७४ ÷ ५ = १४$\frac{४}{५}$ लब्धि=१५ यह लब्धि ७ से अधिक होने से ७ का भाग दिया शेष १ वचा तो उस बार का पहिला होरा हुआ । वुधबार में पहिला होरा वुध का हुआ ।

३ ($\frac{४}{२}$) दिनेश

जिस दिन का जन्म होता है वही उस दिन का स्वामी होता है । जैसे वुधवार का जन्म है । इस बार का स्वामी वुध होने से वुध दिनेश को ४५′ बल प्राप्त हुआ ।

मासेश और वर्षेश निकालने में कुछ गणित करना पड़ता है । वर्षेश साधन के लिए पहिले कलियुगादि इष्ट अहर्गण निकालना पड़ता है । अहर्गण निकालना पहिले बता चुके हैं । यहाँ वर्षेश निकालने के लिए सूर्य सिद्धांत की रीति से निकाला हुआ अहर्गण लेते हैं । सू. सि. का अहर्गण जन्म दिन का कलि युगादि अहर्गण १८३१५२६ है (देखो अध्याय ८)

३ ($\frac{४}{३}$) **वर्षेश साधन की रीति**

(कलि०अहर्गण–३७३) ÷ २५२० = लब्धि छोड़कर केवल शेष लेना ।

$$\frac{\left(\frac{\text{शेष}}{३६०} \times ३\right) + १}{७}$$

= शेष में ३६० का भाग देकर केवल लब्धि लेना । – लब्धि में ३ का गुणा कर १ जोड़ना और ७ का भाग देना लब्धि छोड़कर केवल शेष लेना । रविवार से शेष संख्या गिनना जो दिन आवे वहीं वर्षेश होगा ।

$$\frac{१८३१५२६ - ३७३}{२५२} = १६३६ \text{ शेष (७२६ लब्धि छोड़ दिया)}$$

कलि० अ० १८३१५२६
−३७३

२५२०)१८३११५३(७२६लब्धि
१७६४० इसे त्याग दिया
६७१५
५०४०
१६७५३
१५१२०
१६३३ शेष
इसे लिया

$$\frac{\left(\frac{\text{शेष } १६३३}{३६०} \times ३\right) + १}{७}$$

$$= \frac{(४ \text{ लब्धि} \times ३) + १}{७}$$

$$= \frac{१२ + १}{७} = \frac{१३}{७}$$

= शेष ६ = शुक्रवार
यहाँ शेष ६ लिया

३६०)१६३३(४
१४४०
१९३
लब्धि लिया शेष त्याग दिया

७)१३(१ लब्धि
७ ×
६ शेष

रविवार से ६ गिना तो छठावार शुक्रवार आया

इससे शुक्र वर्षेश हुआ । वर्षेष शुक्र बल = १५′

३ ($\frac{५}{४}$) मासेश साधन की रीति

(अहर्गण–३७३) ÷ २५२० = का शेष लेना ।

शेष

$\frac{(\frac{३० \text{ की लब्धि} \times २}{}) + १}{७}$ = शेष मास पति

उपरोक्त शेष १६३३ था

$\frac{(\frac{१६३३ \text{ की लब्धि} \times २}{३०}) + १}{७}$

```
३० ) १६३३ ( ५४
     १५०          लब्धि
     ---
      १३३         लिया
      १२०
      ---
       १३ शेष
     त्याग दिया

७ ) १०९ ( १५
    ७
    --
    ३९
    ३५
    --
     ४ शेष
```

$= \frac{(\text{लब्धि } ५४ \times २) + १}{७} = \frac{१०८ + १}{७} = \frac{१०९}{७} = ४$ शेष

= शेष ४ इतवार से गिना चौथ वुधवार आया इससे वुध मासपति हुआ । मासेश वुध बल $\frac{१}{२}$° ।

३ (४) समाधिवल (वर्षेश आदि बल) =

	होरेश	दिनेश	मासेश	वर्षेश
	वुध	वुध	वुध	शुक्र
बल	१°	४५′	३०′	१५′

समाधि बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि
बल	०	०	०	२°–१५′	०	१५′	०

यहाँ वुध होरेश दिनेश और मासेश भी है वुध तीनों में बल पाया तीनों का बल का योग १° + ४५′ + ३०′ = २°–१५′ बल वुध का हुआ । शुक्र का बल केवल १५′ ही रहा । शेष ग्रहों को कोई अधिकार न मिलने से बल शून्य रहा ।

३ काल बल चक्र :

इन चारों बल का योग मिल कर काल बल होता है।

बल	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ नतोन्नत बल	०-१९-१-२१	०-४०-५८-३९	०-४०-५८-३९	१-०-०-०	०-१९-१-२१	०-१९-१-२१	०-४०-५८-३९
२ पक्ष बल	०-१२-५-३४	०-४७-५४-२६	०-१२-५-३४	०-१२-५-३४	०-४७-५४-२६	०-४७-५४-२६	०-१२-५-३४
३ त्र्यंश बल	०-०-०-०	१-०-०-०	०-०-०-०	०-०-०-०	१-०-०-०	०-०-०-०	०-०-०-०
४ समाधि „	०-०-०-०	०-०-०-०	०-०-०-०	२-१५-०-०	०-०-०-०	०-१५-०-०	०-०-०-०
काल बल योग	०-३१-६-५५	२-२८-५३-५	०-५३-४-१३	३-२७-५-३४	२-६-५५-४७	१-२१-५५-४७	०-५३-३-१३

४ स्फुट चेष्टा बल (यह चौथा बल है)

स्फुट चेष्टा बल निकालने के लिए पहिले (१) ग्रहों की क्रांति निकालनी पड़ती है (२) फिर क्रांति से अयन बल साधन करना पड़ता है। (३) उपरांत चेष्टा केन्द्र (४) और चेष्टा केन्द्र से चेष्टा बल साधन कर अंत में अयन बल जोड़कर (५) स्फुट चेष्टा बल निकाला जाता है।

परम क्रांति मिथुन के अंत में होती है तब ग्रह का पूरा बल १° होता है।

इसी प्रकार परम दक्षिण क्रांति में १ अंश बल मिलता है। परम क्रांति २४° होती है। दोनों परम क्रांतियों की संधि में आधा बल मिलता है। इस प्रकार ग्रहों की क्रांति से ग्रह का बल निकालना पड़ता है। इस कारण पहिले ग्रहों की क्रांति साधन करनी चाहिए। उस क्रांति से ग्रहों का अयन बल निकालना पड़ता है। क्रांति उत्तर या दक्षिण होती है। कोई ग्रह उत्तर क्रांति में, कोई दक्षिण क्रांति में बली होते हैं। इस कारण अयन के अनुसार ग्रहों का बल निकाला जाता है।

(१) बुध= उत्तर और दक्षिण दोनों क्रांति में (दोनों अयनों में) बलवान होता है। जब विषुवत रेखा पर बुध होता है तो $\frac{1}{2}$° बल होता है। जब परम क्रांति २४ होती है तो पूरा बल होता है। गणित से निकालते हैं कि २४° परम क्रांति का अंतर पड़ने पर $\frac{1}{2}$° बल का अंतर पड़ता है तो इष्ट क्रांति में कितना होगा ?
(इष्ट क्रांति × $\frac{1}{2}$) ÷ २४ = बुध क्रांति ÷ ४८ = $\frac{1}{2}$ + (बुध क्रांति ÷ ४८)
= (२४ + बुध क्रांति) ÷ ४८

(२) शनि और चंद्र = ये दक्षिणायन में बली होते हैं। दक्षिण परम क्रांति में पूर्ण बल १° मिलता है। उत्तर परम क्रांति में बलहीन होते हैं। इसके बीच गोल संधि में आधा बल मिलता है। उपरांत दक्षिण गोल में बल बढ़ना आरंभ होता है। उत्तर क्रांति में बल क्षीण होने लगता है

इनका इस प्रकार बल निलकता है—

दक्षिणायन में = (बुध के अनुसार) = (२४° + क्रांति) ÷ ४८
उत्तरायण में = (इसके विरुद्ध) = (२४° — क्रांति) ÷ ४८

(३) शेष, सुर्य, मंगल, गुरु, और शुक्र = उत्तरायण में बल बढ़ता है दक्षिणायन में बल घटता है। इस कारण शनि चंद्र के विरुद्ध इसमें क्रिया करनी पड़ती है।
उत्तरायण = (बुध के अनुसार) = (२४ + क्रांति) ÷ ४८
दक्षिणायन = (इसके विरुद्ध) = (२४ — क्रांति) ÷ ४८

जिस अयन में ग्रह निर्बल होता है २४ से क्रांति घटाते हैं। पूरी २४ परम क्रांति में तो ० बल हो जाता है। इष्ट क्रांति परम क्रांति से घटाने से यह प्रगट हो जाता है कि कितने शेष बल की क्रांति रही। जहाँ ग्रह बली होता है २४ में क्रांति जोड़नी पड़ती है और २४ × ४८ का भाग देना पड़ता है तब अयन बल निकलता है।

भौमादि ग्रह चंद्र समागम होने या बक्र होने से चेष्टाबली होते हैं। इससे प्रत्येक ग्रह का चेष्टा बल निकालकर उसमें अयन बल जोड़ कर स्फुट चेष्टा बल निकालते हैं।

क्रांति साधन

क्रांति बल साधन के लिये पहिले प्रत्येक ग्रह का क्रांति-साधन करना पड़ेगा। सूर्य की क्रांति साधन करना अध्याय ३ में बता चुके हैं उसी प्रकार प्रत्येक ग्रह की क्रांति निकालनी पड़ती है।

क्रांति निकालने के लिये ग्रह स्पष्ट में अयनांश मिलाकर पहिले सायन ग्रह बना लेना पड़ता है। इससे यहाँ अयनांश निकालते हैं।

श्रावण शुक्ल १२ सम्वत् १९७० शाके १८३५ का ग्रह लाघवीय अयनांश :—

१८३५ वर्ष आरम्भ का =२३°–११′–०″ चैत्रशु. १ से श्रावण शु. १ तक=४ मास
–४४४ चलित २२ श्रा. शु. १ से श्रा.शु.१२ तक =१२ दिन
६०)१३९१ (२३ =२३–११–२२ ४ मास × ५″ = २०″
१२० अयनांश १२ दिन × १०‴ = १२०‴ = २
१९१ चलित अय० = २० + २ = २२″
१८०
११

४ (१) क्रांति साधन

क्रांति २ प्रकार की होती है उत्तरायण और दक्षिणायन।

सायन ग्रह तुलादि = दक्षिक्रणांति, मेषादि = उत्तरक्रांति।

क्रांति साधन की रीति अध्याय ३ में दे चुके हैं, एक और रीति यहां देते हैं।

क्रांति खंड	१	२	३	४	५	६	७	८	९
ध्रुव	४०	८०	११७	१५१	१८१	२०६	२२४	२३६	२४०

इसी के अनुसार भुजांश पर से स्थूल क्रांति निकालने की सारिणी अध्याय ३ में दे चुके हैं। यहाँ गणित द्वारा क्रांति निकालने की रीति देते हैं।

सायन ग्रह के भुजांश बनाकर १० का भाग देना। केवल अंश में १० का भाग देने से जो लब्धि आवे वह क्रांति खंड हुआ इसे प्राप्त खंड और इसके आगे के खंड को अग्रिम खंड कहेंगे। अग्रिम खंड के ध्रुव से प्राप्त खंड के ध्रुव का अन्तर निकालकर शेष अंश कलादि में गुणाकर उस में प्राप्त खंड का ध्रुवांक जोडकर १० का भाग देना जो उत्तर आवे वही क्रांति होगी।

इस रीति से प्रत्येक ग्रह की क्रांति साधन करते हैं। भुजांश बनाना पहिले बता चुके हैं।

(१) सूर्य क्रांति साधन

रा

सूर्य ३-२७°-२३′-६″ भुजांश ३९°-२५′-३२″ ÷ १० शेष ९°-२५′-३२″

+ अयनांश ०-२३-११-२२ = लब्धि ३ = तीसरा खंड × ३४

सायन सूर्य = ४-२०-३४-२८ शेष ९°-२५′-३२″ | १८ | ८

= १४०°-३४′-२८″ प्राप्त तीसरा खंड = ११७ ध्रुवांक १४ | १० |

१८०- ०- ० अग्रिम चौथा ,, = १५१ = ३०६

-१४०-३४-२८ = ध्रुव अंतर = ३४ ३२० | २८ | ८

= भुजांश ३९-२५-३२ ३२०-२८-८ ÷ १०

= ३२-२-४८

$$\left(\frac{\text{शेष} \times \text{ध्रुवांतर}}{१०} + \text{प्राप्त ध्रुव}\right) \div १० = \text{क्रांति}$$

+ ११७

= १४९-२-४८

$$\left(\frac{(९°-२५′-३२″) \times ३४}{१०} + ११७\right) \div १०$$

१४९-२-४८ ÷ १०

$$= \left(\frac{३२०-२८-८}{१०} + ११७\right) \div १० = \frac{(३२-२-४८) + ११७}{१०}$$

= १४९-२-४८ ÷ १० = १४°-५४′-१६″ उत्तर क्रांति (सायन ग्रह मेषादि होने से)

(२) चंद्र क्रांति साधन

भुजांश ७५°-५३′-३″ ÷ १० शेष ५-५३-३

रा = लब्धि ७ प्राप्तखंड × १२ ध्रुवांतर

चंद्र ८-२०°-५५′-३५″ शेष ५°-५३′-३″ ०-३६

+ अयनांश ०-२३-११-२२ प्राप्त खंड ७ = २२४ ध्रुवांक १०-३६

सायन चंद्र = ९-१४-६-५७ अग्रिम ,, ८ = २३६ ,, ६०

= २८४°-६′-५७″ ध्रुव अन्तर १२ ७०-३६-३६ ÷ १०

३६०- ०- ० = ७°-३′-३९″

२८४- ६-५७ + २२४

भुजांश = ७५-५३- ३ २३१-३-३९ ÷ १०

= २३-६-२१ क्रांति

$$\left(\frac{(\text{शेष } ५-५३-३) \times १२ \text{ ध्रुवांतर}}{१०} + २२४\right) \div १०$$

$$= \left(\frac{७०-३६-३६}{१०} + २२४\right) \div १० = \frac{(७-३-३९) + २२४}{१०}$$

= २३१-३-३९ ÷ १० = २३-६-३१ क्रांति दक्षिण (तुलादि होने से)

(३) मंगल क्रांति साधन

रा

मंगल १-१६°-२७′-५८″ प्राप्त खंड ६=२०६ध्रुवांक   शेष ९-३९-२०

+अयनांश०-२३ -११-२२   अग्रिम ,, ७=२२४ ,,   ×१८

सायन भौम=२-९-३९-२०   ध्रुवांतर =१८   ६-०

=६९°-३९′-२०″ (शेष—९-३९-२० × १८ / १० + २०६) ÷ १०   ११४२

=भुजांश६९°-३९′-२०″   १६०

१०) ६९-३९-२० (६ प्राप्त खंड = (१७३-४८-० / १० + २०६) ÷ १०   १७३-४८-० ÷ १०

६०   =१७-२२-४८

शेष ९-३९-२०   = (१७-२२-४८ + २०६) ÷ १०   +२०६

=२२३-२२-४८ ÷ १०   २२३-२२-४८ ÷ १०

=२२-२०-१६ क्रांति उत्तर (मेषादि)   =२२-२०-१६ क्रांति

(४) बुध क्रांति साधन   भुजांश ५३°–४८′–३ ÷ १०   ३″–४८–३

बुध ३–१३– ०–३५ = प्राप्त खंड=५=१८१ ध्रुवांक   ×२५

+अयनांश ०–२३–११–२२   अग्रिम " ६=२०६   १–१५

सायन बुध =४– ६–११–५७   ध्रुवांतर= २५   १२–०

=१२६°–११′–५७″   शेष ३°–४८′–३″   ७५

१८०– ०– ०   (शेष ३-४८-३ × २५ / १० + १८१) ÷ १०   ८७–१–१५ ÷ १०

१२६–११–५७   =८–४२–७

भुजांश ५३–४८–३   = (८७–१–१५ / १० + १८१) ÷ १०   +१८१

१८९–४२–७ ÷ १०

(८–४२–७ + १८१) ÷ १०   १८–५८–१२

= १८९–४२–७ ÷ १०   क्रांति

= १८°–५८′–१२″ क्रांति उत्तर मेषादि

(५) गुरु क्रांति साधन

रा

गुरु ८–१८°–४४′–५६″   (शेष ८°-३-′-४२″ × १२ / १० + २२४) ÷ १०   ८–३–४२

× १२

+अयनांश ०-२३-११-२२   = (९६-४४-२४ / १० + २२४) ÷ १०   ८–२४

सायन गुरु ९-११-५६-१८   ०–३६

९६

९६–४४–२४ ÷ १०

= २८१°–५६′–१८″   = (९–४०–२६ + २२४) ÷ १०

३६०– ०– ०   = २३३–४०–२६ ÷ १०

२८१–५६–१८   = २३°–२२′–२″ क्रांति दक्षिण   = ९–४०–२६

भुजांश=७८– ३–४२ ÷ १०   (तुलादि)   + २२४

प्राप्त खंड ७ = २२४ ध्रुवांक   = २३३-४०-२६ ÷ १०

अग्रिम " ८ = २३६ "   = २३३–४०–२६ ÷ १०

ध्रुवांतर १२   = २३°–२२′–२″

शेष ८°–३′–४२″

(६) शुक्र क्रांति साधन   भुजांश ७९–३३–३९ ÷ १०   ९–३३–३९

रा   × १२

शुक्र २-१७°-१४′-५९″   प्राप्त खंड ७=२२४ ध्रुवांक   ७-४८

+ अयनांश ०–२३–११–२२   ऐष्य ,, ८=२३६ ,,   ६–३६

सायन शुक्र=३-१०-२६-२१   ध्रुवांतर १२   १०८

=१००°-२६′-२१″   शेष ९°–३३′–३९″   ११४–४३–४८ ÷ १०

$\left(\dfrac{(९\text{-}३३\text{-}३९ \times १२)}{१०} + २२४\right) \div १०$ =११-२८-२२

+ २२४

१८०–०–० $= \left(\dfrac{११४\text{-}४३\text{-}४८}{१०} + २२४\right) \div १०$ २३५-२८-२२ ÷ १०

१००–२६–२१   = २३-३२-५०

भुजांश ७९–३३–३९   = (११-२८-२२ + २२४) ÷ १०

= २३५-२८-२२ ÷ १०

= २३°–३२′–५०″ क्रांति उत्तर (मेषादि)

(७) शनि क्रांति साधन

रा $\left(\dfrac{\text{शेष } ३\text{-}४१\text{-}३२ \times १२}{१०} + २२४\right) \div १०$ ३-४१-३२

शनि १–२०°–३०′–१०″   × १२

अयनांश ०-२३-११-२२ $\left(\dfrac{४४\text{-}१८\text{-}२४}{१०} + २२४\right) \div १०$ ६–२४

सायन शनि=२-१३-४१-३२   ८–१२

= ७३°–४१′–३२″   = (४–२५–५० + २२४) ÷ १०   ३६

भुजांश=७३°-४१′-३२″ ÷ १०   =२२८-२५–५० ÷ १०   ४४-१८-२४ ÷ १०

प्राप्त खंड ७=२२४ ध्रुवांक   = २२°–५०′–३५″ क्रांति   = ४–२५–५०

ऐष्य ,, ८=२३६   उत्तर (मेषादि)   + २२४

ध्रुवांतर = १२   = २२८-२५-५० ÷ १०

शेष = ३°-४१′-३२″   = २२-५०-३५

४ (१) क्रांति चक्र (सब ग्रहों की क्रांति इस प्रकार हुई)

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
क्रांति	१४°–५४′–१६″	२३°–६′–२१″	२२°–२०′–१६″	१८°–५८′–१२″	२३°–२२′–२′	२३–५२–५०	२२°–५०′–३५″
	उत्तर	दक्षिण	उत्तर	उत्तर	दक्षिण	उत्तर	उत्तर

४ (२) केशवी मत से अयन बल साधन

(१) रवि, गुरु, मंगल, शुक्र = $\frac{२४ \pm क्रांति}{४८}$ (उत्तर दक्षिण)
                                  +   —

(२) शनि, चंद्र = (२४ ± क्रांति) ÷ ४८ (उत्तर दक्षिण)
                                                –   +

(३) बुध = (२४ + क्रांति ÷ ४८ (उत्तर दक्षिण)
                                          +   +

(१) सूर्य क्रांति १४–५४–१६ उत्तर +

२४– ०– ०
+ १४–५४–१६
= ३८–५४–१६ ÷ ४८
= ०°–४८′–३७″
सूर्य अयनबल

४८)३८°–५४–′–१६″(०°
× ६०
२२८० + ५४
४८)२३३४(४८′
१९२
४१४
३८४
३०

३० × ६०
१८०० + १६
४८)१८१६(३७″
१४४
३७६
३३६
४०

(२) चंद्र क्रांति २३°–६′–२१″ दक्षिण +

२४– ०– ०
+ २३– ६–२१
= ४७– ६–२१ ÷ ४८
= ०°–५८′–५२″
चंद्र अयनबल

४८)४७°–६′–२१″(०
× ६०
२८२० + ६
४८)२८२६(५८′
२४०
४२६
३८४
४२

४२ × ६०
२५२० + २१
४८)२५४१(५२″
२४०
१४१
९६
४५

(३) मंगल क्रांति २२°–२०′–१६″ उत्तर+ ४८) ४६–२०–१६ (० ४४×६०

२४–०–०
+२२–२०–१६
४६–२०–१६ ÷ ४८
=०°–५७′–५५″

×६०
२७६० + २०
४८) २७८० (५७′
२४०
३८०
३३६
४४

४४ × ६०
२६४० + १६
४८) २६५६ (५५″
२४०
२५६
२४०
१६

मंगल का अयन बल

(४) बुध क्रांति १८°–५८′–१२″ उत्तर + ४८) ४२–५८–१२ (० ३४×६०

२४–०–०
+१८–५८–१२
४२–५८–१२ ÷ ४८
=०–५३–४२

×६०
२५२० + ५८
४८) २५७८ (५३′
२४०
१७८
१४४
३४

३४ × ६०
२०४० + १२
४८) २०५२ (४२″
१९२
१३२
९६
३६

बुध अयन बल

(५) गुरु क्रांति २३–२२–२ दक्षिण – ४८) ३७–५८ (०′

२४–०–०
– २३–२२–०
०–३७–५८ ÷ ४८
=०°–०′–४७″

×६०
२२२० + ५८
४८) २२७८ (४७″
१९२
३५८
३३६
२२

गुरु अयन बल

(६) शुक्र क्रांति २३–५२–५० उत्तर + ४८) ४७–५२–५० (०   ४० × ६०

२४–०–०

\+ २३–५२–५०

४७–५२–५० ÷ ४८

०–५९–५१

× ६० = २८२० + ५२

४८) २८७२ (५९′
२४०
४७२
४३२
४०

४० × ६० = २४०० + ५०

४८) २४५० (५१″
२४०
५०
४८
२

शुक्र अयन बल

(७) शनि क्रांति २०–५०–३५ उत्तर – ४८) ३–९–२५ (०   ४५ × ६०

२४–०–०

– २०–५०–३५

३–९–२५ ÷ ४८

= ०°–३′–५६″

× ६० = १८० + ९

४८) १८९ (३′
१४४
४५

४५ × ६० = २७०० + २५

४८) २७२५ (५६″
२४०
३२५
२८८
३७

शनि अयन बल

अयन बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
अयन बल	०–४८′–३७″	०–५८′–५२″	०–५७′–५५″	०–५३′–४२″	०–०′–५७″	०–५९′–५१″	०–३′–५६″

अयन बल साधन करने में कहीं २४ में क्रांति जोड़ी गई है कहीं २४ से क्रांति घटाई गई है, इसका कारण ऊपर बताया जा चुका है कि बुध दोनों अयन में बली होता है शनि और चंद्र दक्षिणायन में बली, सूर्य मंगल गुरु और शुक्र उत्तरायण में बली होते है। जहाँ बली होते हैं वहाँ परम क्रांति २४ में इष्ट क्रांति जोड़ी जाती है और जहाँ निर्बल होते हैं वहाँ २४ में से इष्ट क्रांति घटाई जाती है। उपरांत ४८ का भाग देकर अयन बल निकाला जाता है।

आगे अयन बल सारिणी दी है जिस से सुगमता से अयन बल निकल आता है। अयन बल निकालने के लिये उसी का उपयोग करना चाहिए।

भिन्न भिन्न-मत—प्रारब्ध योग में कुछ भिन्न प्रकार से अयन बल निकालना बताया है।

बली अयन में क्रांति में + २४ जोड़ कर ४८ का भाग दिया है और निर्बल अयन में क्रांति में २४ घटाकर ४८ का भाग दिया है। इस रीति से बली अयन में तो कोई अंतर नहीं पड़ता परन्तु निर्बल अयन में बहुत अंतर पड़ जाता हैं। क्रांति में २४ घटाने से न घटे तो ऊपर ३० अंश और जोड़कर २४° घटाना पड़ता है। यहाँ इस प्रकार गणित करने में गुरु और शनि में कुछ अंतर आता है। गणित नीचे दिया है।

(५) गुरु क्रांति २३–२२–२ दक्षिण – ४८) २९–२२–२ (०

२३°–२२′–२″   × ६०   ३४ × ६०

–२४   १७४० + २२   २०४० + २

शेष २९–२२–२ ÷ ४८   ४८) १७६२ (३६′ ४८) २०४२ (४२

= ०°–३६′ ·४२″   १४४   १९२

३२२   १२२

२८८   ९६

गुरु अयन बल   ३४   २६

(७) शनि क्रांति २३–५२–५० उत्तर – ४८) २६–५०–३५ (०   २६ × ६०

२०–५०–३५   × ६०   १५६० + ३५

–२४   १५६० + ५०   ४८) १५९५ (

२६–५०–३५   ४८) १६१० (३३   १४४

= ०–३३–३३   १४४   १५५

१७०   १४४

१४४   ११

शनि अयन बल   २६

अयन बल साधन करने में और भी भिन्न २ मत हैं उन्हें आगे दिया है।

पराशर होरा शास्त्र का मत

सायन ग्रह के भुजांश बनाकर उस भुजांश से सीधे अयन बल निकालते हैं, क्रांति निकालने की आवश्यकता नहीं है।

अयन बल निकालने की रीति

भुजराशि	०	१	२	क्रिया
खंड (गुणक)	×४५	×३३	×१२	÷३०+गत खंड=अ.

भुज की राशि छोड़ अंशादि में गुणा करना फिर ३० का भाग देकर गतखंड जोड़ देना। =अ.

(१) सूर्य, मंगल गुरु शुक्र में :—

तुलादि में=(३राशि–अ.)=सब के अंश बनाकर÷३

मेषादि में=(३राशि+अ.)= ,, ,, ,, ,,

(२) शनि; चंद्र में

तुलादि में=(३ राशि +अ.)=सब के अंश बनाकर÷३

मेषादि में=(३ राशि–अ.)= ,, ,, ,, ,,

(३) बुध सदा=(३ राशि+अ.) ,, ,, ,,

३ राशि में यह अ, इस प्रकार जोड़ना घटाना पड़ता है कि (१) सूर्यादि में तुलादि में घटाना मेषादि में जोड़ना (२) शनि चंद्र में इस के विरुद्ध करना (३) बुध में सदा जोड़ना। उपरांत सब के अंश बनाकर ३ का भाग देना तो अयन बल निकलेगा।

पहिले निकाला हुआ भुजांश लेकर अयन बल निकालते हैं

भुजांश चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
भुजांश	३६°–२५′–३२″	७५°–५३′–३″	६६°–३६′–२०″	५३°–४८′– ३″	७८°–३′–४२″	७६°–३२′–३६″	७४°–४१′–३२″
सायन ग्रह	मेषादि	तुलादि	मेषादि	मेषादि	तुलादि	मेषादि	मेषादि

रा
(१) सूर्य भुज १–९°–२५′–३२″ यहाँ १ राशि है तो × ३३ का गुणा करना पड़ेगा। राशि छोड़कर केवल अंश में ३३ का गुणा करना है।
केवल अंश

–९–२५–३२
×३३

२९७	७५	९६
	७५	९६
२९७	८२५	१०५६ ÷ ६०
+१४	+१७	=३६
३११	८४२	

=२
=३११–२–३६ ÷ ३०
= १०–२२–५
+४५……गत खंड (उसके पहिले)
५५–२२–५ = अ. का खंड

अ. ५५°–२२′–५″
रा
=१–२५°–२२′–५″
+३ मेषादि होने से +
४–२५–२२–५ राशि के अंश बनाये
=१४५°–२२′–५″ ÷ ३
= ४८′–२७″–२१‴

सूर्य का अयन बल
पहिले ४८′–३९″ आया था
थोड़ा ही अंतर पड़ा

(२) चंद्र भुजांश ७५°–५३′–३″ तुलादि

रा
=२–१५°–५३′–३″ = २राशि =
१५°–५३′–२″ गुणक १२
×१२
१८०–६३६–३६
+१०
१९० = ३६
=१९०–३६–३६ ÷ ३०
=६°–२१′–१३″
गतखंड +३३
३९–२१–१३ = अ.

अ. ३९°–२१′–१३″
रा
=१–९°–२१′–१३″
तुलादि +३
४–९ –२१ –१३ राशि के
१२९°–२१′–१३ ÷ ३ अंश बनाये
४३′–७″–४‴
चंद्र अयन बल ४३′–७″–४‴

(३) मंगल भुजांश ६९°–३९′–२०″ मेषादि

रा
=२–९°–३९′–२०″ राशि २ = गुणक १२

९°–३९′–२०″
×१२
१०८–४६८–२४० ÷ ६०
+७ +४– ०
११५ ४७२
=५२
=११५°–५२′–०″ ÷ ३०
३°–५१′–४४″
+ गतखंड ३३
३६–५१–४४ = अ.

अ. = ३६°–५१′–४४″
रा
= १–६°–५१′–४४″
मेषादि + ३
= ४–६ –५१ –४४
= १२६°–५१′–४४″ ÷ ३
= ४२′–१७″–१४‴ मंगल का अयन बल

(४) बुध भुजांश ५३°–४८′–३″ मेषादि
रा
= १–२३°–४८′–३″ = १ राशि = ×३३
२३°–४८′–३″
×३३

६९	१४४	९९
६९	१४४	
७५९	१५८४	९९
+२६	+१	= ३९
७८५	१५८५	

= २५
= ७८५–२५–३९ ÷ ३०
= २६°–१०′–५१″
गत खंड + ४५
= ७१–१०–५१ = अ.

अ. ७१°–१०′–५१″
+३ राशि = ९०
= १६१–१०–५१ ÷ ३
= ५३′–४३″–३७‴

बुध अयन बल

(५) गुरु भुजांश ७८°–३′–४२″ तुलादि
रा
= २–१८°–३′–४२″ = २ राशि = ×१२
१८°–३′–४२″
×१२
२१६–३६–५०४

गुरु तुलादि है तो ऋण ३ राशि=९०° से घटाना
९०– ०– ०
४०–१३–२८
=४९–४६–३२

२१६°–४४′–२४ ÷ ३०
= ७°–१३′–२८

२१६ | ३६ +८ / ४४ | ५०४ = २४ + गत खंड ३३ = ४०–१३–२८ = अ.

४९–४६–३२ ÷ ३
= १६′–३५″–३०
गुरु अयन बल

= २१६°–४४′–२४″

(६) शुक्र भुजांश ७९°–३३′–३९″ मेषादि

रा

= २–१९°–३३′–३९″ = २ राशि × १२

. १९–३३–३९
× १२

अ. ४०°–४९′–२७″

३ राशि = + ९० मेषादि होने से

२३४°–४३′–४८″ ÷ ३०
= ७°–४९′–२१″ = अ.

१३०–४९–२७ ÷ ३
= ४०′–३६″–२९‴

२२८ +६ / २३४ | ३९६ +७ / ४०३ | ४६८ = ४८ + गत खंड ३३
= ४३

अ. = ४०–४९–२७

शुक्र अयन बल

=२३४°–४३′–४८″

(७) शनि भुजांश ७३°–४१′–३२″ मेषादि

शनि मेषादि में ऋण
३ राशि = ९० से घटाया

रा

= २–१३°–४१′–३२″ । राशि = × १२

९०– ०– ०

१३–४१–३२

५°–२८′–३० ३८–२८–३०

× १२

+ गत खंड ३३

५१–३१–३० ÷ ३

१५६–४९२–३८४

३८–२८–३० = अ.

= १७′–१०″–३०‴

+८ +३ = २४

१६४ ४९५

शनि अयन बल

= १५

= १६४–१५–२४ ÷ ३०

५°–२८′–३०″ =

इस रीति से कई ग्रह के अयन बल में अंतर पड़ जाता है ।

श्रीधर पद्धति के अनुसार अयन बल साधन

(१) सूर्य, मंगल गुरु शुक्र=परम क्रांति २४° या १४४०°±ग्रह क्रांति=क्रांति उत्तर दक्षिण

(२) शनि, चंद्र .... „ „ ± „ = „ ± ∓

(३) बुध „ „ ± „ = „ + +

$$= (२४^{\circ} \text{ या } १४४०' \pm \text{क्रांति}) \times ३ + १४४०' = \text{अ०} \qquad \frac{\text{अ०} \times ३० \times ६०}{१०८००' \ (\text{६ राशि})}$$

$$= \frac{२४^{\circ} \pm \text{क्रांति अंशादि} \times ३}{२४^{\circ} \ (१४४०')} = \text{अ.} \qquad \frac{\text{अ०} \times ३० \times ६०}{\text{६ राशि} \times ३० \times ६० = (१०८००')}$$

$$= \frac{२४ \pm \text{क्रांति} \times ३}{२४} = \text{अ०} \qquad \frac{\text{अ०} \times १}{६}$$

$$= \frac{२४ \pm \text{ग्रह क्रांति}}{८} \times \frac{१}{६} = \frac{२४ \pm \text{ग्रह क्रांति}}{२४} = \text{अयन बल}$$

श्रीपति ने जो रीति बताई है वह कुछ चक्कर की है परन्तु विश्लेषण करने से प्रगट होगा कि यह केशव की रीति के समान ही है। श्रीपति ने अंश के कला बनाकर उपयोग किया है। केशव की रीति सरल है।

परन्तु अयन बल निकालने की सारिणी में ४८ का भाग देने की खट पट नहीं है सीधे क्रांति से ही अयन बल निकल आता है।

श्रीपति ने अयन बल निकालने के लिये १४४०' (२४°) ± क्रांति करने के उपरांत ३ से गुणा कर १४४० का भाग देना बताया है उपरांत जो राश्यादि लब्धि हो उसका कला पिंड करके १०८००' का भाग देना बताया है। इन सब गणित से बचने के लिये सारिणी का उपयोग करो। अयन बल सारिणी से सरलता से अयन बल क अंक प्राप्त हो जाते हैं।

अयनबल सारिणी

१ प्रथम क्रांति भाग, अंश फल चक्र + धन का (क्रांति दिशा अनुसार + करने का)

	क्रांति	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
फल	अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
	क.	३०	३१	३२	३३	३५	३६	३७	४८	४०	४१	४२	४३	४५	४६	४७	४८	५०	५१	५२	५३	५५	५६	५७	५८	०
	वि.	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०

२ द्वितीय क्रांति भाग अंश फल चक्र—ऋण का (क्रांति दिशा अनुसार ऋण करने का)

	क्रांति	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
फल	अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	क.	३०	२८	२७	२६	२५	२३	२२	२१	२०	१८	१७	१६	१५	१३	१२	११	१०	८	७	६	५	३	२	१	०
	वि.	०	४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०	४५	३०	१५	०

३ कला फल

	क्रांति कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
	कला	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	विकला	१	२	३	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५
	प्रति वि०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०
	क्रांति कला	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
फल	कला	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	विकला	२६	२७	२८	३०	३१	३२	३३	३५	३६	३७	३८	४०	४१	४२	४३	४५	४६	४७	४८	५०
	प्रति वि०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०
	क्रांति कला	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
फल	कला	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	विकला	५१	५२	५३	५५	५६	५७	५८	०	१	२	३	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१५
	प्रति वि०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०

विकला में भी यही कला का चक्र काम देगा विकला का उत्तर विकलादि में निकलेगा।

सारिणी देखने की रीति

ग्रह क्रांति ± करने के सम्बन्ध से क्रांति अंश के २ चक्र सारिणी में पृथक् २ दिये हैं। जिनमें ० से लेकर २४ अंश तक के फल अयन बल का दर्शाया है।

(१) जब सूर्य मंगल गुरु शुक्र की उत्तर क्रांति हो या चंद्र व शनि की दक्षिण क्रांति हो और बुध की उत्तर या दक्षिण क्रांति हो अर्थात् जिन में + होता है (२४° में जिनकी क्रांति जोड़ी जाती है) उसके लिये प्रथम क्रांति भाग चक्र का उपयोग करो। उसमें क्रांति के नीचे का फल जो अंश कला विकला का दिया हो उसे लेकर कला चक्र द्वारा इष्ट कला से जो फल कलादि प्राप्त हो उसे अंश फल में जोड़ देने से अयन बल प्राप्त होगा।

(२) जब ऊपर बताई क्रांति से विपरीत क्रांति हो (अर्थात् जहाँ ऋण करना पड़ता है) तो द्वितीय क्रांति भाग के चक्र का उपयोग करो। उस चक्र के अंश फल को लेना। उसमें से कला विकला का फल जो कला चक्र से प्राप्त हो, घटा देना तो अयन बल प्राप्त होगा।

उदाहरण

(१) सूर्य क्रांति उत्तर +   १४° = ०°–४७′–३०″ अंश के प्रथम चक्र से प्राप्त
क्रांति १४°–५४′–१६″ है   ५४′ =   १ – ७ –३० कला चक्र से प्राप्त
१६″ =   ० –२०– ,,   ,,

= ०°–४८′–३७″ अयन बल। योग = ० –४८ –३७ –५०

कला चक्र में कला का उत्तर कला में, विकला का उत्तर विकला में प्राप्त होता है।

(२) चंद्र क्रांति दक्षिण +   २३° = ०°–५८′–४५″
क्रांति २३°–६′–२१   ६′ =   ० – ७–३०
= ०°–५८′–५२″ अयन बल २१ =   ०–२६–१५
योग – ० –५८ –५२–५६–१५

(३) मंगल क्रांति उत्तर +   २२° = ०°–५७′–३०″
क्रांति २२–१०–१६″   २०′ =   ०–२५
= ०°–५७′–५५ अयन बल   १६″ =   ०–२०
योग = ० –५७–५५–२०

(४) बुध क्रांति उत्तर +   १८° = ०°–५२′–३०″
क्रांति १८°–५८′–१२″   ४८′ =   १–१२–३०
= ०°–५३′–४२″ अयन बल   १२ =   ०–१५
योग = ० –५३ –४२–४५

(५) शुक्र क्रांति उत्तर+ २३° = ०°–५८′–४५″
क्रांति २३°–५२′–५०″ ५२′ = १– ५–०
= ०°–५९′–५१″ अयन बल ५०″ = १–२–३०
योग = ० –५९–५१–२–३०

(६) विपरीत क्रांति का उदाहरण द्वितीय क्रांति चक्र से कला चक्र स
गुरु क्रांति दक्षिण–(ऋण) २३° = ०°-१′-१५″ २२-०′-२७″-३०‴
क्रांति २३°–२२′–२ कलादि का ०- २७- ३३ घटाया २″ = ०- २-३०
शेष ०-०-४७-२७ योग = ० -२७-३२-३०
= ०°–०′–४७ अयन बल =०′–२७″–३३

(७) शनि क्रांति उत्तर– (ऋण) द्वितीय चक्र से कला चक्र से
क्रांति २०°–५०′–३५ २० = ०°-५′-०″ ५०′ = १-२″-३०‴
= ०°–३′–५६″ अयन बल कलादि का १ -३-१४ घटाया ३५″ = ० -४३-४५
शेष ०-३-५६-४६ योग १-३-१३-४५
= १–३–१४

इस प्रकार सारिणी द्वारा अयन बल साधन करना सरल है। इस सारिणी द्वारा प्राप्त उत्तर गणित द्वारा पूर्व प्राप्त उत्तर से मिल जाता है।

४ (३) चेष्टा केन्द्र साधन

ग्रह का चेष्टा बल साधन करने के लिये पहिले चेष्टा केन्द्र साधन करना पड़ता है। ग्रहों की गति के सम्बन्ध से जो बल होता है उसे चेष्टा बल (motional strength) कहते हैं।

चेष्टा केन्द्र साधन की रीति

(१) मंगल, गुरु और शनि का चेष्टा केन्द्र = मध्यम सूर्य—((मध्यम ग्रह—स्पष्ट ग्रह) / २)

(२) बुध का चेष्टा केन्द्र = (मध्यम सूर्य + बुध केन्द्र)– ((मध्यम सूर्य + स्पष्ट बुध) / २)

(३) शुक्र का ,, = (मध्यम सूर्य + शुक्र केन्द्र)–((मध्यम सूर्य + शुक्र स्पष्ट) / २)

(४) सूर्य चन्द्र का चेष्टा केन्द्र नहीं निकाला जाता।

इस चेष्टा केन्द्र साधन के लिये इन बातों की आवश्यकता होती है :—

(१) मध्यम ग्रह (२) बुध केन्द्र (३) शुक्र केन्द्र

मध्यम ग्रह mean Planat निकालने का गणित और सारिणियाँ आगे उत्तरार्द्ध में दी हैं। बुध और शुक्र केन्द्र निकालना भी वहीं बताया है।

जो मध्यम सूर्य होता है वही मध्यम बुध और मध्यम शुक्र भी होता है। इन तीनों में कोई अंतर नहीं है।

उत्तरार्द्ध में मध्यम ग्रह आदि बनाने का पूरा गणित उदाहरण सहित दिया है। वहाँ निकाले हुए मध्यम ग्रह आदि के अंक नीचे चक्र में दिये हैं।

मध्यम और स्पष्ट ग्रह का चक्र

	मध्यम ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	चंद्र	चंद्रोच्च	मंगल	बुध केन्द्र	शुक्र केन्द्र	गुरु	शनि
	राशि	३	३	३	८	१०	११	७	८	९	१
	अंश	२८	२८	२८	१५	२८	२७	२४	११	०	२०
	कला	४३	४३	४३	५२	२६	११	१६	१३	४९	६
	विकला	१०	१०	१०	४९	३५	४४	५३	९	३१	१
स्पष्ट	रा	३	३	२	८		१			८	१
ग्रह	अं.	२७	१३	१७	२०		१६			१८	२०
	क.	२३	०	१४	५५		२७			४४	३०
	वि.	६	३५	५९	३५		५८			५६	१०

जो ग्रह वक्री होते हैं उनका चेष्टा केन्द्र निकाला जाता है। जो ग्रह वक्री नहीं होते (जैसे सूर्य और चंद्र) उनका चेष्टा केन्द्र नहीं होता। इस कारण उनका चेष्टा केन्द्र नहीं निकाला।

४ (४) चेष्टा बल साधन की रीति

(१) उपरोक्त चेष्टा केन्द्र=६ राशि से अधिक हो= $\frac{\text{१२ राशि--चेष्टा केन्द्र}}{\text{३}}$ =चेष्टाबल

(२) ,, ,, = ,, कम हो = चेष्टा केन्द ÷ ३ = ,,

(३) सूर्य का ,, ,, = सूर्य का जो अयन बल हो वही ... = ,,

(४) चंद्र ,, ,, ,, = चंद्र का जो पक्ष बल हो वही .... = ,,

इसमें राशि के अंश बना कर ३ का भाग देना चाहिए।

४ (३) (४) चेष्टा केन्द्र और चेष्टा बल साधन का गणित

मंगल, गुरु, शनि का = मध्यम सूर्य $-\left(\frac{\text{(मध्यम ग्रह + स्पष्ट ग्रह)}}{\text{२}}\right)$

(१) मंगल का चेष्टा केन्द्र और चेष्टा बल

रा
मध्यम मंगल=११–२७°–११′–४४″
+स्पष्ट मंगल= १–१६–२७–५८
योग =१३–१३–३६–४२ ÷ २
अर्ध = ६–२१–४६–५१

रा
मध्यम सूर्य ३-२८°-४३′-१०″
—अर्ध ६-२१-४६-५१ घटाया
शेष ६-६-५३-१६
चेष्टा केन्द्र

षडभाल्प चेष्टा केन्द्र
रा
२–२३°–६′–४१″
=८३°–६′–४१″ ÷ ३ = २७′–४२″–१३‴ चेष्टा बल

षडभाल्प किया
रा
१२– ०°– ०′– ०″
९–६–५३–१९
२–२३–६–४१

(२) गुरु का चेष्टा केन्द्र और चेष्टा बल।

रा
मध्यम गुरु ६–०°–४६′३१″
+स्पष्ट गुरु ८–१८–४४–५६
योग १७–१६–३४–२७ ÷ २
रा
=अर्ध ८–२४°–४७′–१३″

रा
मध्यम सूर्य ३–२८°–४३′–१०″
– अर्ध ८–२४–४७–१३ घटाया
शेष ७–०–५५–५७ चेष्टा केन्द्र
षडभाल्प किया
१२–०–०–०
७–३–५५–५७ चेष्टा केन्द्र
४–२६–४–३

रा
षडभाल्प चेष्टा केन्द्र ४–२६°–४′–३″
=१४६°–४′–३″ ÷ ३ = ४८′–४१″–२१‴ चेष्टा बल

(३) शनि का चेष्टा केन्द्र और चेष्टा बल।

रा
मध्यम शनि १–२०°–६′–१″
+स्पष्ट शनि १–२०–३०–१०
योग ३–१०–३६–११ ÷ २
रा
अर्ध=१–२०°–१८′–५″

रा
मध्यम सूर्य ३–२८°–४३′–१०″
– अर्ध १–२०–१८–५
शेष= २–८–२५–५ चेष्टा केन्द्र

रा
चेष्टा केन्द्र २–८°–२५′–५″
=६८°–२५′–५″ ÷ ३ = २२′–४८″–२१‴ चेष्टा बल

(४) बुध का चेष्टा केन्द्र और चेष्टा बल=(मध्यम सूर्य + बुध केन्द्र)−(मध्यम सूर्य + स्पष्ट बुध / २)

रा
मध्यम सूर्य (बुध)=३−२८°−४३′−१०″
+ बुध स्पष्ट =३−१३−०−३५
योग=७−२१−४३−४५ ÷ २
अर्ध=३−१०−५१−५२

रा
मध्यम सूर्य ३−२८°−४३′−१०″
+ बुध केन्द्र ७−२४ −१६ −५३
योग ११−२३ −० − ३
−अर्ध ३−२० −५१ −५२
शेष ८− २−८ −११
चेष्टा केन्द्र

षड्भाल्प किया चे. के.
रा
३−२७°−५१′−४९″
=११७−५१ −४९ ÷ ३
= ३९′−१७″−१६″ चेष्टा बल

षड्भाल्प किया
१२− ०− ०− ०
८− २− ८−११ चे. के.
३−२७−५१−४९

(५) शुक्र का चेष्टा केन्द्र और चेष्टा बल

रा
मध्यम शुक्र या सूर्य ३−२८°−४३′−१०″
+ स्पष्ट शुक्र २−१७−१४−५९
योग ६−१५−५८−९ ÷ २
अर्ध =३−७−५९−४

रा
मध्यम सूर्य ३−२८°−४३−१०″
+ शुक्र केन्द्र [illegible]−११ −१३− ९
योग =[illegible]− ९ −५६−१९
−अर्ध ३− ७ −५९− ४
शेष ९− १ −५७−१५
चेष्टा केन्द्र

षड्भाल्प चेष्टा केन्द्र
रा
२−२८°−२′−४५″
=८८°−२′−४५″ ÷ ३
=२९−२०−५५″ चेष्टा बल

चेष्टा केन्द्र षड्भाल्प किया
१२− ०− ०− ०
९− १−५७−१५
शेष २−२८−२−४५

(६) सूर्य—सुर्य का चेष्टा केन्द्र नहीं निकाला जाता। सूर्य का जो अयन बल है वही सूर्य का चेष्टा बल कहलाता है। सूर्य का अयन बल ०°-४८′-३७″ है यही सूर्य का चेष्टा बल हुआ

चेष्टा बल से स्फुट चेष्टा बल बनाने को प्रत्येक में अयन बल जोड़ना पड़ता है। ईस कारण सूर्य के चेष्टा बल में अयन बल फिर जुड़ने से अयन बल दुगुना हो जाता है। इसी कारण पहिले बताया था कि सूर्य के अयन बल को दुगुना करना। सुर्य के अयन बल को दुगुना करने से सूर्य का स्फुट चेष्टा बल हो जाता है

(७) चंद्र—चंद्र का भी चेष्टा बल नहीं निकाला जाता। चंद्र का जो पक्ष बल होता है वही चंद्र का चेष्टा बल होता है। चंद्र का पक्ष बल ०°-४७′-५४″-२६‴ है यही चंद्र का चेष्टा बल हुआ। इस में चंद्र का अयन बल जोड़ देने से स्फुट चेष्टा बल हो जाता है।

४ (५) स्फुट चेष्टा बल साधन

प्रत्येक ग्रह के चेष्टा बल में अयन बल जोड़ देने से स्फुट चेष्टा बल होता है।

स्फुट चेष्टा बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
चेष्टा बल	०°-४८′-३७″	०°-४७′-५४″-२६″	०-२७-४२-१३	०-३९-१७-६	०-४८-१-२१	०-२९-२०-५५	०-२२-४८-२१
+ अयन बल	०-४८-३७	०-५८-२२-०	०-५७-५५-०	०-५३-४२-०	०-०-४७-०	०-५९-५१	०-३-५६
स्फुट चेष्टा बल	१-३७-१४	१-४६-१६-२६	१-२५-३७-१३	१-३२-५९-१६	०-४८-४८-२१	१-२९-११-५५	०-२६-४४-२१

चेष्टा केन्द्र निकालने के लिए मध्यम ग्रह में स्पष्ट ग्रह जोड़ कर अर्द्ध करना पड़ता है। मध्यम में स्पष्ट ग्रह जोड़ते समय यदि योग १२ से अधिक आवे तो ज्यों का त्यों रहने दो उसे १२ से कम मत करो क्योंकि उसका आधा करना पड़ता है। जो कुछ दोनों का योग आवे उसका आधा करना चाहिए।

चेष्टा बल निकालने के लिए चेष्टा केन्द्र यदि ६ राशि से अधिक हो तो उसे १२ से घटाकर षड़भाल्प कर लेना चाहिए, जैसा उच्च बल निकालते समय किया था और उच्च बल साधन के अनुसार ही उपरांत ६ का भाग देना पड़ता है। यहाँ सरलता के लिए राशि के अंश बना कर ३ का भाग दे देते हैं तो वही उत्तर आ जाता है। इस कारण यहाँ ३ का ही भाग दिया है।

षड़भाल्प किया हुआ चेष्टा केन्द्र से उच्च बल सारिणी द्वारा चेष्टा बल उच्च बल सदृश निकाल सकते हो जिससे ३ का भाग देने की बचत हो जाती है।

चेष्टा बल साधन करने में भिन्न२ मत हैं जिनके अनुसार चेष्टाबल साधन करना बतला देते हैं।

केशव की रीति से चेष्टा केन्द्र साधन

शीघ्रोच्च— $\frac{\text{मध्यम ग्रह} + \text{स्पष्ट ग्रह}}{२}$ = चेष्टा केन्द्र

चेष्टा केन्द्र ६ राशि से अधिक हो तो १२ से घटाकर षड़भाल्प करना =
= शोधित चेष्टा केन्द्र

चेष्टा बल = शोधित चेष्टा केन्द्र ÷ ६ या $\frac{\text{चेष्टा के॰} \times २}{६} = \frac{\text{चेष्टा के॰}}{३}$

यहाँ चेष्टा बल साधन करने में जो ६ का भाग देना बताया है वह उच्च बल सरीखा है। यदि चेष्टा केन्द्र को दुगुना कर ६ का भाग दो या चेष्टा केन्द्र के अंश बना कर तीन का भाग दो। या उच्च बल सारिणी से ही चेष्टा केन्द्र से सीधे चेष्टा बल निकाल लो।

यहाँ और सब रीति उपरोक्त है परन्तु शीघ्रोच्च का उपयोग किया है इस कारण इसे भी समझा देते हैं।

शीघ्रोच्च

(१) मंगल, गुरु और शनि का शीघ्रोच्च = मध्यम सूर्य ।
(२) बुध का शीघ्रोच्च = मध्यम सूर्य + बुध शीघ्र केन्द्र ।
(३) शुक्र ,, = मध्यम सूर्य + शुक्र शीघ्र केन्द्र ।

इसी कारण ऊपर के गणित में शीघ्रोच्च न लिखकर पृथक् २ ग्रह स्पष्ट रीति से लिख दिया है जिससे प्रगट हो कि वास्तव में कौन २ ग्रह हैं। इस प्रकार प्रगट होगा कि उपरोक्तरीति और केशव की रीति में कोई अन्तर नहीं है।

श्रीपति ने रीति कुछ२ भिन्न प्रकार से बताई है परन्तु उत्तर एक सरीखा आता है।

श्रीपति की रीति

चेष्टा केन्द्र = मध्यम ग्रह से स्पष्ट ग्रह बड़ा हो तो

(स्पष्ट–मध्यम ग्रह) ÷ २=(शीघ्रोच्च–अर्ध)–मध्यम ग्रह ।

मध्यम ग्रह से स्पष्ट ग्रह छोटा हो तो

(मध्यम–स्पष्ट ग्रह) ÷ २ = (शीघ्रोच्च + अर्द्ध) — मध्यम ग्रह ।

शोधित चेष्टा केन्द्र = चेष्टा केन्द्र ६ राशि से अधिक हो तो १२ से घटा कर षड़भाल्प कर लेना ।

चेष्टा बल = शोधित चेष्टा केन्द्र की कला बनाकर ÷ १०८०० कला (६ राशि) यहाँ १०८०० कला का या ६ राशि का भाग देने से वही उत्तर आता है जो अंश बनाकर ३ का भाग देने से आता है ।

उदाहरण चेष्टा केन्द्र निकालने का

(१) मंगल-मध्यम मंगल रा ११-२७°-११′-४४″

स्पष्ट ,, १-१६ -२७ -५८ घटाया

शेष १०-१०-४३-४६ ÷ २

∴ अर्ध = ५- ५- २१-५३

मंगल का चेष्टा केन्द्र रा ९-६°-५३′-१९″

मध्यम सूर्य रा ३-२८°-४३′-१०″ (मंगल शीघ्रोच्च)

+ अर्ध ५-५-२१-५३ जोड़ा

योग ९-४ -५- ३

—मध्यम मंगल } —११-२७-११-४४ घटाया

शेष ९- ६ -५३-१९

चेष्टा केन्द्र

(२) शनि

स्पष्ट शनि रा १-२०°-३०′-१०″

मध्यम ,, १-२०- ६- १ घटाया

शेष = ०- ०- २४- ९ ÷ २

∴ अर्ध = ०- ०- १२- ४॥

= शनि का चेष्टा केन्द्र रा २-८°-२५′-४″

शनि शीघ्रोच्च (मध्यम सूर्य) रा ३-२८°-४३′-१०″

—अर्ध ०- ० -१२ -४॥ घटाया

शेष ३-२८-३१ -५

—मध्यम शनि १-२०- ६ -१ घटाया

= २-८ -२५-४

= चेष्टा केन्द्र

श्रीपति की रीति चेष्टा केन्द्र निकालने में कोई अंतर नहीं पड़ता ।

पाराशरी की रीति कुछ भिन्न है

चेष्टा केन्द्र = शीघ्रोच्च—मध्यम ग्रह ± (मध्यम ∽ स्पष्ट ग्रह)] / २ ∽ = अंतर

स्पष्ट से मध्यम

कम अधिक

— +

चेष्टा बल—शोधित चेष्टा केन्द्र के अंश बनाकर ÷ ३

सूर्य, चंद्र = पूर्ववत् करके + ३ राशि = चेष्टा बल

उदाहरण—चेष्टा केन्द्र निकालने का।

रा	रा
मंगल मध्यम मं.=११-२७°-११′-४४″	मध्यम मं० ११-२७°-११′-४४″
स्पष्ट मं.=१-१६ -२७- ५८ घटाया	+ अर्ध + ५ -५ -२१ -५३ जोड़ा
अंतर= १०-१०-४३ -४६ ÷२	अ. मं. =५ -२ -३३ -३७
अर्ध = ५-५ -२१ -५३	अ. मं. =अर्ध संस्कृत मध्यम ग्रह (यहाँ मध्यम अधिक होने से अर्ध जोड़ा)

शीघ्रोच्च=३-५८-४३-१०
(म. रवि)
अ० मं०=५-२ -३३-३७ घटाया
१०-२६-९-३३=चेष्टा केन्द्र

श्रीपति आदिने अर्ध को मध्यम ग्रह में ± नहीं किया है शीघ्रोच्च में ± किया है इस कारण यहाँ अन्तर पड़ जाता है।

४ (६) ग्रह युद्ध बल

स्फुट चेष्टा बल में ग्रह युद्ध बल भी सम्मिलित किया जाता है। जब ग्रहों का किसी ग्रह से युद्ध होता है तो उसका भी बल निकालना पड़ता है जिसे ग्रह युद्ध बल कहते हैं। यदि किसी ग्रह का युद्ध नहीं है तो बल निकालने की आवश्यकता नहीं है।

ग्रह युद्ध

जब २ ग्रह एक राशि में आकर एक ही अंश और एक ही कला विकला में हो तो ऐसे दोनों ग्रहों का युद्ध होना समझा जाता है। सूर्य और चंद्र का किसी और ग्रह के साथ या आपस में युद्ध नहीं होता। केवल (१) मंगल (२) बुध (३) गुरु (४) शुक्र और (५) शनि का आपस में युद्ध हो सकता है। इन पाचों ग्रहों में से कोई २ या अधिक ग्रह एक ही राशि अंश कला पर हो तो उस समय उनका युद्ध हुआ हैं ऐसा समझा जाता है, परन्तु इन युद्ध कर्ता ग्रहों में सूर्य या चंद्र न हो; क्योंकि सूर्य चन्द्र हो तो युद्ध नहीं हो सकता। यदि सूर्य हुआ तो ग्रह सूर्य के अन्तर गत हो जाने से अस्त हो जाता है। चंद्र से हो तो चंद्र ग्रस्त हो जाता है उस समय चंद्र के साथ उन ग्रहों का समागम होना कहते हैं। इस कारण सूर्य चंद्र में से कोई भी ग्रह साथ हो तो युद्ध नहीं हो सकता।

जब प्रकट हो जाय कि २या अधिक ग्रह का युद्ध हुआ है तो उन की हार जीत जानकर उनका बल निकालना चाहिए। इस के निमित्त युद्ध करने वाले ग्रहों का पहिले बाण अर्थात् शर निकालना चाहिए। पहिले जो गणित से चेष्टा बल निकाला था उस का फिर संस्कार करना होता है तब चेष्टा बल से ग्रह का शर निकलता है।

शर Lati tude बनाना

कई ज्योतिषी लोग नीचे लिखी रीति से शर साधन करते हैं परन्तु यह रीति चन्द्र के शर साधन करने की है।

ग्रह का शर = (स्पष्ट ग्रह-स्पष्ट राहु)=शेष राशि आदि जो हो उसका भुज बना कर

भुजांश बना के फिर कला विकला कर × ११/७ = अगुंलादि शर

शर की दिशा=(स्पष्ट ग्रह—स्पष्ट राहु) = शेष की राशि, मेषादि हो तो उत्तर शर केवल उत्तर या दक्षिण होता है, तुलादि हो तो दक्षिण। ग्रह लाघव की रीति से पंच ताराओं का शर साधन करने की रीति उदाहरण सहित उत्तरार्ध में दी है। उसी तरह से शर निकाल लेना। ग्रह का बल और अधिक बली ग्रह जानना।

जिन ग्रहों का युद्ध हुआ हो उन का स्फुट चेष्टा बल का अंतर निकाल कर अंतर की अंश कला विकला बना कर × १/२ = ग्रह बल अर्ध। (२ ग्रहों का शर का अंतर को कला विकला कर) × १/२ =शर अर्ध ग्रह बल अर्ध = शर अर्ध=अंश कला विकला लब्धि=अ.

स्फुट चेष्टा बल ± अंशादि लब्धि अ. = युद्ध बल शर उत्तर दक्षिण

\+ —

इस प्रकार निकालने से प्रगट हो जाता है कि किसका बल अधिक हैं। जिसका बल अधिक है वह बलवान समझा जाता है।

शर अंगुलादि होता है उस में ३ से गुणा करने से उस की कला बन जाती

अं. व्या.

है जैसे शर ३४-३८ × ३ = १०३'-५४' = १°-४३'-५४" हुआ।

हारा हुआ ग्रह = कांति हीन हो या दूसरे ग्रह के दक्षिण में हो।

जीता हुआ ग्रह = जिस का बिम्ब dise तेजोमय हो और बड़ा हो चाहे वह दूसरे के उत्तर या दक्षिण में हो।

हार जीत निर्णय

युद्ध करने वाले दोनों ग्रह का बल ऐक्य लेना। जिस का बलैक्य अल्प हो वह हार गया जानना। हारे हुए ग्रह के बलैक्य में से जीते हुए ग्रह के बल ऐक्य का अंतर निकालो। वह अंतर, बल अंतर कहलाया। हारे हुए ग्रह के बल ऐक्य में बल अंतर घटाना जो बल शेप रहे उतने बल से वह ग्रह हारा जानना। जिस का बल एक्य अधिक हो उसे जीता हुआ समझना। उस के बल ऐक्य में बल अंतर मिलाना तो उत्तर दिशा का बल हुआ अर्थात् उतने बल से वह ग्रह जीत गया ऐसा जानना।

कल्पित उदाहरण पाराशर मत से

रा-°-'-"

बुध स्पष्ट ४-३-८-१० } दोनों ग्रह की राशि अंश कला विकला बराबर है इस
शुक्र „ ४-३-८-१० } कारण दोनों ग्रहों का युद्ध हुआ है ऐसा समझना।

इन दोनों ग्रहों के बलैक्य(बल का योग) लिया।

बुध बलैक्य	३-४-२	अधिक बल	=जीता
शुक्र „	२-६-५	अल्प बल	=हारा
बल अन्तर	०-५७-५७	=यह अंतर अधिक बल वाले में जोड़ना कम वाले में घटाना।	

बुध बलैक्य ३-४-२	शुक्र बलैक्य २-६-५
बल अंतर + ०-५७-५७	बल अंतर ०-५७-५७ घटाया
योग = ४-१-५९	शेष = १-८-८
इतने बल से बुध जीता	इतने बल से शुक्र हारा
	यही दक्षिण दिशा का निर्जित बल हुआ

युद्ध बल—जिन २ ग्रहों के युद्ध का लक्षण हो उन दोनों ग्रहों के षड्बलैक्य का अंतर करके उसमें उन्हीं दोनों ग्रहों के शर के अंतर की कला बना के भाग देने से लब्धि युद्ध बल होता है। यह युद्ध बल उत्तर दिशा में स्थित ग्रह के (जीतने वाले के) षड् बलैक्य में जोड़ना। दक्षिण में स्थित ग्रह के (हारने वाले के) षड्बलैक्य में घटा देना।

यहाँ उदाहरण स्वरूप जिन ग्रहों का षड्बल साधन कर रहे हैं उन में युद्ध के लक्षण नहीं हैं इस कारण युद्ध बल नहीं निकाला

श्रीधर मत से युद्ध बल।

जब २ ग्रह एक साथ हों और उनकी रेखांश कला विकला तक मिलती हों तब ग्रह युद्ध होता है।

प्रत्येक के बल का योग लेना और उनके रेखांश (ग्रह स्पष्ट) के अंतर का भाग देना जो आये वह जीते हुए ग्रह के बल में जोड़ना यदि वह उत्तर हो ; और यदि दक्षिण हो तो जीते हुए ग्रह से घटाना और उनका अंतर १ अंश से कम हो तो ग्रह का युद्ध होना कहो।

पाराशर मत से

दोनों लड़ने वाले ग्रहों का बल निकालो और दोनों के बल का अंतर निकालो। जो अंतर हो उसे हारे हुए ग्रह के पूर्ण बल से घटा दो और जीतने वाले ग्रह में जोड़ दो जो आवे वह लड़ने के बाद का ग्रहों का बल प्रगट करेगा।

गति बल

चेष्टा बल के अतिरिक्त पाराशर ने गति बल भी दिया है ग्रह गति के प्रकार नीचे बताये हैं जिनमें उनका बल भी दिया है जिससे प्रगट हो कि किस प्रकार की गति में क्या बल मिलता है।

गति बल चक्र

गति	वक्रीग्रह	मार्गी	सूर्ययुक्त	चंद्रयुक्त	मंदगति	पूर्व से अल्प गति	शीघ्रगति	अतिशीघ्र गति
कला बल	६०′	३०′	१५′	३०′	१५′	७½′	४५′	३०′

ग्रहों की गति इस प्रकार की है :

(१) वक्र गति=जब ग्रह लौटता है Rotrograde (२) ऋजु गति=अनुवक्र (मार्गी ग्रह) Progresseie (३) विकल गति = सूर्य के साथ (४) समागम = चंद्र के साथ (५) मंद = मध्यम गति से कुछ कुछ कम गति (६) मंदतर = मध्यम गति से अधिक मंद गति। (७) शीघ्र = मध्यम गति से कुछ अधिक गति (८) शीघ्र तर= मध्यम गति से अधिक शीघ्र गति।

बक्र गति में मंद गति होने से ग्रह का स्तंभन होता है जब ग्रह उस राशि पर बहुत दिनों तक रहता है उसे स्तंभ कहते हैं। मंगल स्तंभ हो तो उसे कुच स्तंभ कहते हैं मंद गति और मंदतर गति सूर्य संनिधि होने से होती है।

ग्रहों की मध्यम गति उत्तरार्द्ध में दी है और ग्रहों की स्पष्ट गति ग्रह साधन में दी है। मध्यम गति और वर्तमान ग्रह की स्पष्ट गति से प्रगट हो जाता है कि ग्रह मंद गामी है या शीघ्र गामी है। इसी को प्रगट करने के लिये नीचे चक्र दिया है।

गति बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मध्यम गति	५९'-५८''	७९०'-३५''	३१'-२६''	५९'-५८''	५'-०''	५९'-५८''	२'-०''
स्पष्ट गति	५७-३१	७६३-१७	३७-५१	४२'-१४''	३-२६ वक्री	६७-४४	३-७
गति प्रकार	मंद	मंद	शीघ्र	शीघ्र सूर्य युक्त	वक्री चंद्र युक्त	शीघ्र	शीघ्र
बल	१५'	१५'	४५'	१५'	६०'-०	४५'	४५'

५ नैसर्गिक बल

नैसर्गिक बल में कभी परिवर्तन नहीं होता। ग्रह जितना सूर्य के समीप है उसके अनुसार और प्रभाव के अनुसार बल स्थिर किया है। सबसे बलवान सूर्य हैं। उससे कम बल चंद्र का है, चंद्र से कम शुक्र, शुक्र से कम गुरु, गुरु से कम बुध, उससे कम मंगल और सबसे कम शनि बलवान् है। यहाँ बल के अनुसार नीचे ग्रह दिये हैं और उनका बल भी बताया है।

नैसर्गिक बल

ग्रह	सूर्य	चंद्र	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल	शनि
बल = ,,	१°-०'-०'' $७^{७}$	०°-५१'-२६'' $७^{६}$	०-४२-५१ $७^{५}$	०-३४-१७ $७^{४}$	०-२५-४३ $७^{३}$	०-१७-९ $७^{२}$	०-८-३४ $७^{१}$
स्थूल रूप से बल	१-०-०	०-५१-०	०-४३-०	०-३४-०	०-२५-०	०-१७-०	०-९-०

ये ग्रह चाहे जिस स्थान में हों चाहे जितने अंश पर हों उनके नैसर्गिक बल में कोई परिवर्तन नहीं होता हैं। कहीं भी सूर्य हो बल १° होगा। इसी प्रकार कहीं भी शनि हो बल ०–९' होगा। उपरोक्त स्थूल बल पाराशर मत से दिया है।

५ नैसर्गिक बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
बल	१°–०'–०"	०°–५१'–२६"	०°–१७'–८"	०°–२५'–४३"	०°–३४'–१७"	०°–४२'–५१"	०°–८'–३४"

६ धन-ऋणात्मक दृग् बल

प्रत्येक ग्रह की पहिले दृष्टि साधन कर चुके हैं देखो अध्याय १८। उस दृष्टि चक्र में २ प्रकार के ग्रहों की दृष्टि है, पाप और शुभ ग्रह। उस चक्र से दृष्टि लेकर शुभ ग्रहों को और पाप ग्रहों की दृष्टि का पृथक्-पृथक् योग करना और उस योग का चतुर्थांश निकालने के उपरांत जो $\frac{1}{4}$ दृष्टि प्राप्त हो उसे लेना। वही शुभ या पाप ग्रह के दृष्टि का बल योग होगा।

रीति = पाप दृष्टि योग ÷ पाप दृष्टि चतुर्थांश अंश कलादि

शुभ „ „ ÷ ४ = शुभ दृष्टि „ „ „

(१) यदि शुभ दृष्टि अधिक होतो

(शुभ दृष्टि चतुर्थांश)—(पाप दृष्टि चतुर्थांश) = शेष + धन = दृग्बल

(२) यदि पाप दृष्टि अधिक होतो

(पाप दृष्टि चतुर्थांश)—शुभ दृष्टि चतुर्थांश = शेष – ऋण = दृग् बल

अर्थात् शुभ दृष्टिबल अधिक होतो उसमें पाप दृष्टि घटाने पर जो बचे वह + धन दृग्बल होगा। उसका अर्थ यह है कि पाप ग्रह से उतनी दृष्टि अधिक है।

यदि शुभ ग्रह से पाप ग्रह अधिक हो तो पाप से शुभ घटाने पर जो बचे वह ऋण दृग् बल होगा। इसका अर्थ यह है कि शुभ से पाप दृष्टि इतनी अधिक है। या पाप से शुभ इतना कम है।

दृष्टि चक्र (अध्याय १८ के दृष्टि साधन चक्र पर से)

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ चंद्र	४१′–४६″	०	४′–२७″	४८′–५७″	०	५२′–३८″	०′–२५″
गुरु	५० –१९	०	४ –३३	४७ –५२	०	५७ –०	३ –३०
शुक्र	५– ४	५८–९	०	०	५९–१५	०	०
शुभ दृष्टि योग	१°–३७′–९″	०°–५८′–९″	०°– ९′– ०″	१°–३६′–४९″	०°–५९′–१५″	१°–४९′–३८″	०°–३′–५५″ + ४
शुभ दृष्टि चतुर्थांश	० –२४–१७	० –१४–३२	० – २ –१५	०–२४–१२	०–१४–४८	०–२७–२४	०–०–५८
पाप सूर्य	०	२६–२७	५–२७	०	८–३८	०–	३–२६
मंगल	३१–१२	५५–३२	०	१३–१६	५७–४३	०–२३	०
बुध	०	१५–५०	०	०	११–२८	०	०
शनि	५६–३३	४४–४७	०	४५–०	४५–५२	०	०
पाप दृष्टि योग	१–२७–५५	२–२२–३६	०–५–२७	०–५८–१७	२–३–४१	०–०–२३	०–३–२६
पाप चतुर्थांश	०–२१–५८	०–३५–३९	०–१–२०	०–१४–३४	०–३०–५५	०–०–५	०–०–५१

धन-ऋणात्मक दृष्टि बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ दृष्टि चतुर्थांश	०°–२४′–१७″	०°–१४′–३२″	०°–२′–१५″	०°–२४′–१२″	०°–१४′–५८″	०°–२७′–२४″	०°–०′–५८″
पाप ,, ,,	० –२१ –५८	० –३५ –३९	० –१ –२१	० –१४ –३४	० –३३ –५५	० – ० – ५	० –०– ५१
धन-ऋणात्मक	० – २–१९	० –२१– ७	० –० –५४	० – ९ –३८	० –१६–७	० –२७ –१९	० –०– ७
दृष्टि बल	+	–	+	+	–	+	+

बुध सूर्य के साथ रहने से उपरोक्त चक्र में बुध पाप ग्रह में लिया गया है।

उपरोक्त चक्र में सब शुभ ग्रहों की दृष्टि का योग कर उस योग में ४ का भाग देकर शुभ दृष्टि चतुर्थांश निकाला है। इसी प्रकार पाप ग्रहों की दृष्टि का योग कर उसका भी चतुर्थांश निकाला है। फिर दोनों चतुर्थांश का अंतर निकालने को बड़ी संख्या में से छोटी संख्या घटाया है। शुभ अधिक होने से +, पाप अधिक होने से— (ऋण),

षड्बल योग

षड् बल साधन करते समय उपरोक्त गणित से जोर बल आये हैं उनमें पहले (१) स्थान बल (२) दिगबल, (३) काल बल (४) स्फुट चेष्टा बल और (५) नैसर्गिक बल का योग करना फिर अंत में (६) धन ऋण आत्मक दृष्टि बल का संस्कार कर (धन हो तो जोड़ कर, ऋण हो तो घटाकर) जो संख्या प्राप्त हो वही ग्रहों का षड् बल होगा।

ग्रह षड् बल चक्र

बल	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ स्थान बल	२°२२'१२' ०"	२°३४'४३'०"	२°२०' ५'०"	२°४३'४'०"	२°२४'६'०"	३°२३'५२'०	२°३०'४७'०
२ दिग् ,,	० १८ ७ ४३	० ५५ ८३ ३	० ५३ ०३ ६	०१५४६१२	० ३६ ५३ ५	० ५५ १४ ५६	० २६ ४० ३६
३ काल ,,	० ३१ ६ ५५	२ २८ ५३ ५	० ५३ ४१ ३	३२७५ ३४	२ ६५ ५४ ७	१ २१ ५५ ४७	० ५३ ३ १३
४ स्फुट चेष्टा बल	१ ३७ १४ ०	१ ४६ १३२६	१ २५ ३७ १३	१३२५६१६	० ४८ ४८ ३१	१ २६ ११ ५५	० २६ ४४ २१
५ नैसर्गिक ,,	१ ० ० ०	० ५१ २६ ०	० १७ ६ ०	०२५५३ ०	० ३४ १७ ०	० ४२ ५१ ०	० ८३ ४ ०
पंच बल योग	५ ४८ ४० ३८	७ ४७ १७ ४	५ १२ ६ ५	८२४४१ २	६ ३० ५ ४३	७ ५३ ५ ४१	४ २५ ४६ १३
(६) ऋणधना०	० २ १६ ०	० २१ ७ ०	० ०५ ४ ०	०६ ३८ ०	० १६ ७ ०	० २७ १६ ०	० ० ७ ०
दृष्टि बल	+	—	+	+	—	+	+
षड् बल योग	५५०५६३८	७ २६१०४	५ २२ ० ५	८३४१६ २	६१३५८४३	८२०२४४१	४ २५ ५६१३
षड्बल	५–५०–५६	७–२६–१०	५–२–२०	८–३४–१६	६–१३–५८	८–२०–२४	४–२५–५६

अध्याय २३

भाव षड्बल

जिस प्रकार से ग्रह का षड्बल निकाला जाता है उसी प्रकार भाव का भी ३ प्रकार से बल निकालते हैं।

(१) भाव स्वामी बल (२) भाव दिग्बल (३) भावदृग्बल, इन तीनों के योग से भाव बल बनता है।

(१) उस भाव पर उस के स्वामी का जितना षड्बल है वह भावस्वामी बल कहलाता है। जो उस भावस्वामी का बल होगा वही उस भाव का बल लिया जायगा। भाव स्वामी के संम्बन्ध से भाव का विचार अवश्य होता है। यदि भाव स्वामी बलवान् हुआ तो उस भाव में बल आयगा। इस कारण भाव स्वामी के बल का विचार होता है।

(२) भाव की दिशा के सम्बन्ध से जो बल निकलता है उसे भावदिग्बल कहते हैं। उस भाव में कौन सी राशि है। वह राशि इस भाव में बलवान् होती है या निर्बल ? इस प्रकार भाव की दिशाओं के सम्बन्ध से भाव की राशि का विचार होता है जिस के अनुसार बल निकलता है।

(३) दृग् बल = जिन२ ग्रहों की दृष्टि इस भाव पर पड़ती है इसके विचार से जो बल भाव को मिलता है वह दृग्बल कहलाता है।

इन सब को आगे उदाहरण देकर समझाया है।

त्रिविध भाव बल साधन

१ भाव स्वामी बल

१२ भाव होते हैं प्रत्येक भाव का स्वामी ७ ग्रह में से कोई होता है। ७ ग्रहों का षड्बल पहिले साधन कर चुके हैं। उसी ग्रह षड्बल में से भाव स्वामी का षड्बल लेकर उस भाव के नीचे स्थापित कर देने से उस भाव स्वामी का बल प्रगट हो जायगा।

भाव स्वामी बल चक्र

	भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
	राशि	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
भाव स्वामी ग्रह		गुरु	मं.	शुक्र	बुध	चंद्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि
षड्बल भाव स्वामी का	अंश	६	५	८	८	७	५	८	८	५	६	४	४
	क.	१३	२	२०	३४	२६	५०	३४	२०	२	१३	२५	२५
	वि.	५८	२०	२४	१९	१०	५९	१९	२४	२०	५८	५६	५६

जैसे १ भाव (लग्न) पर मीन राशि है। मीन के स्वामी गुरु का षड्‌बल ६-१३′-५८″ है इस कारण भावस्वामी बल ६-१३-५८ रखा। धन भाव-दूसरा भाव-में मेष राशि है उस का स्वामी मंगल है। मंगल का षड्‌बल ५-५-२० है इस कारण भावस्वामी बल ५-२० हुआ। इसी प्रकार प्रत्येक भाव के स्वामी का जो बल है वही बल भाव के नीचे रख दिया जाता है जैसा ऊपर चक्र में बताया है।

२ भाव दिग्‌बल

उस भाव की राशि पुरुष कीटक जलचर या चतुष्पद है इस का विचार कर और उस की दिशा के बिचार से उस भाव के बल का बिचार होता है। अर्थात् वह राशि किस दिशा में बली होती है और उस भाव की क्या दिशा है और उस की पुरुष कीटक आदि क्या संज्ञा है इस पर विचार कर बल निकाला जाता है। राशि की पुरुष जलचर आदि संज्ञा और दिशाएँ आगे २ बताई हैं।

भाव की दिशाएँ आदि

भाव	लग्न	सप्तम	चतुर्थ	दशम
दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
समय	प्रातः	संध्या	अर्धरात्रि	मध्याह्न
बलवान राशि	नर	कीटक	जलचर	चतुष्पद
निर्बल राशि	कीटक	नर	चतुष्पद	जलचर

जैसे नर राशि लग्न में बली होती है। लग्न की दिशा पूर्व और समय प्रातः काल है। नर राशि लग्न में बलवान होती है सप्तम (संध्या) में निर्बल होती है। सूर्य उदय के समय अत्यन्त स्फूर्ति रहती है और संध्या होते ही मनुष्य (नर) की स्फूर्ति घट जाती है। इसी प्रकार चतुष्पद (चौपाया) मध्याह्न (दोपहर) में बलवान होते हैं। अर्ध रात्रि में निर्बल होते हैं। कीट राशि अस्त समय बलवान होते हैं उदय होते ही निर्बल होकर छिप जाते हैं। जलराशि (जलचर) अर्ध रात्रि में बलवान होते हैं। मध्याह्न में निर्बल होते हैं। इस प्रकार जिस भाव पर जो राशि बलवान होती है उससे छटवें भाव पर वह राशि निर्बल होती है। इस कारण निर्बलता लाने वाली राशि का उस भाव से जिसमें वह राशि है अंतर करना। जिस प्रकार निर्बलता का अंतर अधिक होगा उसी प्रकार उस भाव का बल बढ़ते जायगा और ६ राशि अंतर हो जाने से वह भाव जिस में वह राशि है पूर्ण बली हो जाती है। ज्यों २ निर्बलता की ओर अंतर कम होते जाता है उस अंतर के अनुसार निर्बलता बढ़ती है और बल घटता है। इस कारण उस भाव से जिस में वह राशि है वह भाव जिसमें निर्बलता लाने वाली राशि है घटा कर ६ का भाग देने से भावदिग्‌बल निकल आता है।

दिग्वल निकालने की रीति

राशिभेद	नामराशि	बलवान	निर्वल	बल साधन की रीति
नर (मनुष्य)	मिथुन, तुला, कन्या धन का पूर्व भाग	लग्नमें	सप्तम में	(भाव नर राशि का–सप्तम) ÷ ६=बल
चतुष्पद	मेष, वृष, सिंह धन का पश्चिम भाग	दशम	चतुर्थ	(भाव चतुष्पद का–चतुर्थ) ÷ ६ बल
कीटक	कर्क वृश्चिक मकर का पूर्व भाग	सप्तम	लग्न	(भाव कीटक का–लग्न) ÷ ६ बल
जलचर	कुंभ मीन मकर का पश्चिम भाग	चतुर्थ	दशम	(भाव जलचर का–दशम) ÷ ६ बल

जैसे नर राशि लग्न में बली है सप्तम में निर्वल है तो नर राशि का जो भाव हो अर्थात् जिस भाव पर नर राशि हो उसमें से सप्तम भाव घटा कर उसकी निर्वलता का अंतर निकालना अंतर ६ से अधिक हो तो १२ से घटा कर षड्भाल्प कर लेना। ६ राशि में पूर्ण १° बल होता है तो उतने भाव अंतर में कितना बल होगा ? यह जानने को भाव अंतर में ६ का भाग दे देना तो भाव बल निकल आयगा। यहाँ ६ का भाग उच्चवल साधन के अनुसार ही देना पड़ता है। यदि भाव अंतर की राशि के अंश बनाकर ४ का भाग दे दो तो दिग् बल निकल आयगा। या उच्च बल सारिणी का उपयोग कर भाव अंतर की राशि अंश आदि द्वारा उच्च बल सारिणी से उच्च बल निकालने सरीखा फल लेकर जोड़ देना तो भाव दिग्वल निकल आयगा।

राशि की नर आदि संज्ञा

राशि	मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृ०	धन पूर्वा०	धन परा०	मकर पूर्वा०	मकर परा०	कुंभ	मीन
संज्ञा	चतुष्पद	चतु.	नर	कीट.	चतु.	नर	नर	कीट.	नर	चतु.	कीट.	जलचर	जलचर	जलचर

स्पष्टीकरण – पूर्व भाग = पूर्वार्द्ध = पहिले का आधा भाग।

परार्द्ध = उत्तरार्द्ध = पश्चिम भाग = अंत का भाग।

द्विपद = नर = मनुष्य = पुरुष Biped। चौपाया = चतुष्पद quatribed

कीट = कीटक = कीड़ा = Raptile। जलचर = जल में रहने वाले watery।

भाव दिग्वल साधन की स्पष्ट रीति

जो भाव पुरुष राशि का हो = पुरुष राशि − सप्तम भाव = अंतर

,, चतुष्पद ,, ,, = चतुष्पद ,, − चतुर्थ ,, = अंतर

,, कीटक ,, ,, = कीटक ,, − लग्न = अंतर

,, जल चर ,, ,, = जलचर ,, − दशम = अंतर

अंतर यदि ६ राशि से अधिक हो तो १२ से घटाकर षड्भाल्प कर लेना। ६ से कम हो तो घटाने की आवश्यकता नहीं है। उपरांत राशि के अंश बनाकर ३ का भाग देना तो दिग्वल निकल आयगा। या उच्चबल साधन सरीखा उच्चबल सारिणी से दिग्बल निकाल लेना।

उदाहरण

(१) लग्न मीन राशि है जलचर है इसमें से दशम भाव घटाना पड़ेगा।

	रा	
लग्न	११–०°–२८′–११″	८७°–२८′–१५″ ÷ ३
− दशम	८–२ –५९–५६	२९′–९″ –२५
अंतर =	२–२७–२८–१५	लग्न दिग्वल
	= ८७°–२८′–१५″	

(२) धन भाव = मेष राशि = चतुष्पद है इसमें चतुर्थ घटाना

	रा		
दूसरा भाव	०–१°–१८′–४६″	१२–०–०–०	६१°–४१′–१०″ ÷ ३
− चतुर्थ ,,	२–२–५९–५६	९–२८–१८–५०	= २०-३३-४३
अंतर =	९–२८–१८–५०	= २–१–४१–१०	
		= ६१°–४१′–१०″	धन भाव का दिग्वल

(३) तृतीय भाव = वृष राशि = चतुष्पद है चतुर्थ घटाना।

	रा		
तृतीय भाव	१–२°–९′–२१″	१२ – ० – ० – ०	३०°–५०′–४५″ ÷ ३
− चतुर्थ ,,	२–२–५९–५६	१० –२९– ९ –१५	=१०′–३६″–५५′′
अंतर =	१०–२९–९–१५	=१– ० –५०–४५	तीसरे भाव का दिग्वल
		=३०°–५०′–४५″	

(४) चतुर्थ भाव = मिथुन राशि = पुरुष = सप्तम घटाना

रा

चतुर्थ भाव=२–२°–५९′–५६″   १२– ० – ० – ०   ८७–२८–१५ ÷ ३

– सप्तम ,,   ५–०–२८–११   ९– २ – ३१–४५   =२९′–९″–२५‴

अंतर = ९–२–३१–४५   = २–२७–२८–१५

= ८७°–२८′–१५″   चतुर्थ का दिग्बल

(५) पंचम भाव में = कर्क राशि = कीटक इसमें लग्न घटाना

पंचम भाव ३–२–९–२१   १२१°–४१′–१०″ ÷ ३

– लग्न   ११–०–२८–११   =४०′–३३″–४३‴

अंतर   ४–१–४१–१०

= १२१–४१–१०   पंचम भाव का दिग्बल

(६) षष्ठ भाव में सिंह राशि है = चतुष्पद । इसमें से चतुर्थ घटाना

छटा भाव   ४–१–१८–४६   ५८–१८–५० ÷ ३

– चतुर्थ   २–२–५९–५६   १९′–२६″–१६‴

अंतर = १–२८–१८–५०

= ५८°–१८′–५०   षष्ठ भाव का दिग्बल

(७) सप्तम भाव में कन्या राशि है = पुरुष । इसमें सप्तम घटाना

सप्तम भाव ५–०–२८–११   ० ÷ ३

– सप्तम भाव ५–०–२८–११   = ० सप्तम का दिगबल

अंतर   ०–०– ० –०

(८) अष्टम भाव में तुला राशि है = पुरुष । सप्तम घटाना

अष्टम ६–१–१८–४६   ३०°–५०′–३५″ ÷ ३

–सप्तम   ५–०–२८–११   = १०–१६ –५१

अंतर=१–०–५०–३५   अष्टम का दिग् बल ।

= ३०°–५०′–३५″

(९) नवम भाव में वृश्चिक राशि = कीट । लग्न घटाना

रा

नवम   ७–२°–९′–२१″   १२– ०– ०– ०   ११८°–१८′–५०″ ÷ ३

–लग्न   ११–०–२८–११   ८– १–४१–१०   ३९′–२६″–१६‴

अन्तर=   ८–१–४१–१०   = ३–२८–१८–५०   नवम का दिग्बल

= ११८°–१८′–५०″

(१०) दशम भाव में धन राशि है १५° से कम है=धन पूर्वार्ध=पुरुष राशि। सप्तम घटाना

दशम ८–२–५६–५६   ९२°–३१'–४५'' ÷ ३

–सप्तम ५–०–२८–११   = ३०'–५०''–३५'''

अंतर = ३–२–३१–४५   दशम का दिग् बल

= ९२°–३१'–४५''

(११) एकादश भाव में मकर राशि १५° से कम है = मकर पूर्वार्ध = कीटक। लग्न घटाना।

एकादश ९ –२–९–२१   १२– ०– ०– ०   ५८°–१८'–५०'' ÷ ३

–लग्न ११–०–२८–२८   १०– १–४१–१०   = १९'–२६''–१६

अंतर = १०–१–४१–१०   १–२८–१८–५०

= ५८'–१८''–५०'''   एकादश का दिग् बल

(१२) द्वादश भाव कुंभ = जलचर। दशम घटाना।

द्वादश १०–१–१८–४६   ५८°–१८'–५०'' ÷ ३

–दशम ८– २–५९–५६   १९'–२६''–१६'''

अंतर = १–३८–१८–५०   द्वादश भाव का दिग्बल

= ५८°–१८'–५०''

२ भाव दिग्बल चक्र

भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
बल	२६'–६''–२५'''	२०'–३३''–४३'''	१०–३६''–५५'''	२६–६''–२५'''	४०'–३३''–४३'''	१६'–३६''–१६'''	०	१०'–१६''–५१''	३६'–२६''–१६'''	३०'–५०''–३५'''	१६'–२६''–१६'''	१६'–२६''–१६'''

३ धन-ऋणात्मक भाव दृग्बल

जिस प्रकार ग्रह का धन-ऋणात्मक दृग्बल निकाला था उसी प्रकार भाव का भी निकालना पड़ता है।

भाव पर ग्रहों की दृष्टि पहिले साधन कर चुके हैं देखो अध्याय १८; उसमें सब शुभ ग्रहों की दृष्टि के पृथक् योग का चतुर्थांश निकालना फिर सब पाप ग्रहों की दृष्टि का योग कर उसका भी चतुर्थांश निकालना। जैसे नीचे बताया है। उपरांत दोनों चतुर्थांशों का अन्तर निकालना। बड़ी संख्या में से छोटी संख्या घटाने पर जो शेष बचे वही दृग्बल होगा। शुभ अधिक हो तो +, और पाप अधिक हो तो – ऋण, दृग् बल होगा।

भाव दृष्टि चक्र

	भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
	चंद्र	२४'-३३''	३९'-४८''	१८'-४६''	२४'-८''	५४''-२३''	३९'-४८''	२५''-१३''	९'-४८''	०	०	०	५''११''
	गुरु	२६-४३	५१-१६	३३-११	२८-३०	५३-१७	५१ -१६	४२-२५	८-४३	०	०	०	६-१६
	शुक्र	२३-२३	७-५८	०	०	०	७ -१	२८-१३	३७-५८	१५-५	३१-२९	५२-३२	३७-५८
शुभ दृष्टि	शुभ योग	१°-४'-३६''	१°-३६'-२०''	०-५१-५७	०-५२-३८	१-४७-४०	१-३८-५	१-३५-५१	०-५६-२६	०-१५-५	०-३१-२६	०-५२-३''	०-४६-२५
	शुभ चतुर्थांश	०-१८-३६	०-२४-४५	०-१२-५६	०-१३-६	०-२७-५५	०-२४-३१	०-२३-५७	०-१४-७	०-३-४६	०-७-५२	०-१३-८	०-१२-३१
	सूर्य	४७-२७	२८-२	१२-३६	०	०	०	१-३२	१८-५५	४२-३६	२४-२३	९-३२	५८-३
	मंगल	७-५९	०	०	०	७-५०	३७-१६	४५-५९	१५-९	३१-२२	६०-०	४४-१८	२२-३५
पाप दृष्टि	बुध	३६-१६	२०-५०	५-२५	०	०	०	८-४३	३३-१८	३५-२५	१०-०	३८-१७	५०-५०
	शनि	४०-३	०	०	०	२३-१८	५४-३५	४०-१	१९-११	२३-१८	५३-४५	३९-१०	४०-४८
	पाप योग	२-७-४५	०-४८-५२	०-१८-१	०	०-३१-८	१-३१-५१	१-३६-१५	१-२६-३३	२-१२-४१	२-२८-८	२-११-१७	२-५२-१५
	पापचतुर्थांश	०-३१-५६	०-१२-१३	०-४-३०	०	०-७-४७	०-२२-५७	०-२४-३	०-२१-३८	०-३३-१०	०-३७-२	०-३२-३९	०-४३-३

धन-ऋणात्मक दृष्टि बल

भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
शुभ $\frac{1}{4}$	१८′-३९″	२४′-४५″	१२′-५९″	१३′-९″	२७′-४५″	२४′-३१″	२३′-५७″	१४′- ७″	३′-४६″	७′-५२″	१३′-८″	१२′-३१″
पाप $\frac{1}{4}$	३१–५६	१२–१३	४–३०	०	७–४७	२१–५७	२४– ३	२१–३८	३३–१०	३७– २	३२–४९	४३– ३
±दृष्टि	१३–१७	१२–३२	८–२९	१३′-९″	२०– ८	१–३४	०– ६	७–३१	२९–२४	२९–१०	१९–४१	३०–३२
बल	–	+	+	+	+	+	–	–	–	–	–	–

लग्न पर शुभ दृष्टि योग १°–१४′–३९″ है इसमें ४ का भाग दिया तो चतुर्थांश ०°–१८′–३९″ हुआ। लग्न पर पाप दृष्टि योग २°-७′–४५″ है इसमें ४ का भाग दिया। पाप चतुर्थांश ३१′–५६″ हुआ। दोनों चतुर्थांश में पाप बड़ा है इसे ऋणात्मक दृष्टि बल हुआ। इस पाप दृष्टि चतुर्थांश ३१–५६ में से जो बड़ी संख्या है शुभ दृष्टि चतुर्थांश १८′–३९″ घटाया तो शेष १३′–१७″ रहा। यही लग्न का ऋणात्मक दृष्टि बल हुआ।

धन भाव (दूसरे भाव) का शुभ योग १°–३९–′२″ है इसका चतुर्थांश ०°–२४′–४५″ है इस भाव का पाप दृष्टि योग ०°–४८′–५२″ है जिसका पाप चतुर्थांश ०°–१२′–१३″ हुआ। दोनों चतुर्थांश में शुभ चतुर्थांश बड़ा है इससे धनात्मक दृष्टि बल हुआ। इस शुभ $\frac{1}{4}$ २४′–४५″ में से जो बड़ी संख्या है पाप $\frac{1}{4}$ १२′–१३″ घटाया तो शेष १२–३२ रहा यही धनात्मक धन भाव का दृष्टि बल हुआ।

इसी प्रकार सब भाव का दृष्टि बल धन ऋणात्मक बल निकालकर उपरोक्त चक्र में बताया है। इस चक्र में बुध सूर्य पाप ग्रह के साथ होने से बुध को पाप ग्रह में गणना की है।

इस दृष्टि बल में एक और संस्कार होता है जिसे गेज्य बल (बुध गुरु का बल) कहते हैं।

जिन भावों पर बुध और गुरु की दृष्टि होती है उन भावों में गुरु और बुध की दृष्टि और जोड़नी पड़ती है। भाव बल में बुध और गुरु की दृष्टि और भी जोड़ना बाराह मिहिर ने बताया है क्योंकि इन दोनों की दृष्टि से भाव बलवान होता है। इस मत को केशव ने भी माना है इस कारण यहाँ दोनों की दृष्टि भी जोड़ दी है।

(१) भाव स्वामी बल और (२)दिग्बल का योग कर उसमें धन ऋणात्मक दृष्टि बल का संस्कार करने पर भाव या बल प्राप्त होता है। अन्त में बुध और गुरु की दृष्टि जोड़ कर भाव स्फुट बल प्राप्त हुआहै जिसका चक्र नीचे दिया है।

भाव स्फुट बल चक्र

	१	२	३	४	५	६
भाव	लग्न	धन	सहज	सुहृद	सुत	रिपु
१भाव स्वामी बल	६°-१३′-५८″- ०‴	५°- २′-२०″-०‴	८°-२०′-२४″- ०‴	८°-३४′-१९″- ०	७°-२६′-१०″- ०	५°-५०′-५९″-०
२ दिग्बल	०°-२९′- ९″-२५‴	०-२०-३०-४३	०-१०-३६ -५५	०-२९- ९ -२५	०-४०-३३ -४३	०-१९-२६-०
योग	६-४३- ७ -२५	५-२२-५३-४३	८-३१- ० -५५	९- ३-२८ -२५	८- ६-४३ -४३	६-१०-२५-१६
±दृष्टि बल	०-१३-१७ - ०	०-१२-३२- ०	०- ८-२९ - ०	०-१३- ९ - ०	०-२०- ८ - ०	०- १-३४- ०
	−	+	+	+	+	+
दृग संस्कृत-						
भाव बल	६-२९-५० -२५	५-३५-२५-४३	८-३९-२९ -५५	९-१६-३७-२५	८-२६-५१-४३	६-११-५९-१६
गुरु दृष्टि	२६-४३- ०	५१-१६- ०	३३-११ - ०	२८-२०- ०	५३-१७ - ०	५१-१६- ०
बुध दृष्टि	३६-१६- ०	२०-५०- ०	५-२५ - ०	०- ०- ०	०- ०- ०	०- ०- ०
भाव स्फुट बल	७-३२-४९-२५	६-४७-३१-४३	९-१८-- ५ -२५	९-४५- ७-२५	९-२०- ८-४३	७-३-१५-१६

भाव	७ जाया	८ मृत्यु	९ धर्म	१० कर्म	११ आय	१२ व्यय
(१) भाव स्वामी बल	८°-३४'-१९"-०	८°-२०'-२४"-०	५°-२'-२०"-०	६°-१३'-५८"-०	४°-२५'-५६"-०	४°-२५'-५६"-०
(२) दिग्बल	०- ०- ०- ०	०-१०-१६-५१	०-३९-२६-१६	०-३०-५०-३५	०-१९-२६-१६	०-१९-२६-१६
योग	८-३४-१९-०	८-३०-४०-५१	५-४१-५६-१६	६-४४-४८-३५	४-४५-२२-१६	४-४५-२२-१६
± दृष्टि बल	०- ०- ६-०	०- ७-३१-०	०-२६-२४-०	०-२९-१०-०	०-१९-४१-०	०-३०-३२-०
	—	—	—	—	—	—
दृग संस्कृत भाव बल	८-३४-१३-०	८-२३-९-५१	५-१२-२२-१६	६-१५-३८-३५	४-२५-२१-१६	४-१४-५०-१६
गुरु दृष्टि	+४२-२५-०	८-४३-०	०- ०- ०	०- ०- ०	०- ०- ०	६-१६-०
बुध दृष्टि	+ ८-४३-०	३३-१८-०	३५-२५-०	१०- ०- ०	३८-१७-०	५०-५०-०
भाव स्फुट बल	८-५१- ८-०	९-५-१०-५१	५-४७-४०-१६	६-२५-३८-३५	५-३-२८-१६	५-२१-५६-१६

यहाँ लग्न पर भाव स्वामी बल ६°-१३'-५८" है और (२) दिग्बल ०°-२९'-९-२५" का योग किया ६°-४३'-७"-२५ हुआ इसमें ± दृग्बल का संस्कार किया ०°-१३'-१७" दृग्बल ऋण होने से इसमें से घटाया तो ६°-२९'-५०"-२५ :दृग्बल संस्कृत भाव बल हुआ। इसमें गुरु की दृष्टि बल ०°-२६'-४३"-० और बुध का दृष्टि बल ०°-३६'-१६'-० दोनों को जोड़ा तो ७°-३२'-४९"-२५ यह लग्न का भाव स्फुट बल हुआ। इसी प्रकार सम्पूर्ण भाव का बल निकाला है। :उपरोक्त चक्र देखने से समझ में आ जायगा। इसी को भाव षड्बल भी कहते हैं।

इसमें पाराशर का विशेष मत है कि जिस भाव में बुध गुरु हो तो पूर्वोक्त बल में १° मिलाना। शनि या मंगल इनमें से कोई भी हो तो भाव बल में १° कम करना।

अध्याय २४

उच्चरश्मि, चेष्टारश्मि, और इष्ट कष्ट साधन

उच्च बल से उच्च रश्मि और चेष्टा बल से चेष्टा रश्मि बनता है। उच्च रश्मि और चेष्टा रश्मि का काम आगे आयुर्दाय विषय में पड़ेगा।

अध्याय २२ के ग्रह बलसाधन में १ (१) में उच्च बल और ४ (४) में चेष्टा बल निकाल चुके हैं वही लेना। परन्तु सूर्य और चंद्र का चेष्टा बल आगे बताई रीति से निकाल कर लेना। उपरांत उच्च बल और उच्च रश्मि से उच्च रश्मि और चेष्टा रश्मि निकाल लेना।

उच्च रश्मि और चेष्टा रश्मि साधन की रीति

(१) उच्च रश्मि = ग्रह उच्च बल × ६ = अंशादि + १अंश।

(२) चेष्टा रश्मि = (शोधित चेष्टा केन्द्र के अंश ÷ ३ = चेष्टा बल)

ग्रह चेष्टा बल × ६ = अंशादि + १अंश

उदाहरण (१) ग्रह की उच्च रश्मि साधन

अध्याय २३ में निकाला उच्च बल नीचे दिया है।

ग्रह उच्च रश्मि साधन चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्चबल	०°-२४′-१२″	०°-१५′-१८″	०°-२३′-५०″	०°-३९′-२०″	०°-५′-२५″	०°-३३′-१५″	०°-१०′-१०″
	× ६	× ६	× ६	× ६	× ६	× ६	× ६
गुणनफल	२-२५-१२	१-३५-४८	२-२३-०	३-५६-०	०-३२-३०	३-१९-३०	१-१-०
+ १	+ १	+ १	+ १	+ १	+ १	+ १	+ १
उच्च रश्मि	३-२५-१२	२-३५-४८	३-२३-०	४-५६-०	१-३२-३०	४-१९-३०	२-१-०

ग्रह चेष्टा रश्मि साधन

सूर्य और चंद्र का चेष्टा बल छोड़कर शेष ग्रहों का वही चेष्टा बल लिया जो अध्याय २२ में निकाला था।

सूर्य और चंद्र का चेष्टा बल निकालना।

पहिले सूर्य अयन बल को सूर्य चेष्टा बल और चंद्र पक्ष बल को चंद्र चेष्टा बल लिया था परन्तु यहाँ सूर्य और चंद्र का चेष्टा बल निकालने की भिन्न रीति है।

(१) सूर्य चेष्टा केन्द्र = सायन सूर्य + ३राशि

(२) चंद्र ,, ,, = (चंद्र स्पष्ट—सूर्य स्पष्ट)

चेष्टा केन्द्र ६ से अधिक हो तो १२ से घटाकर षड्भाल्प कर लेना वह शोधित चेष्टा केन्द्र हुआ।

चेष्टा बल = शोधित चेष्टा केन्द्र के अंश बनाकर ÷ ३

उदाहरण

	रा	रा	१२६°–२५′–३२″ ÷ ३
(१) सायन + सूर्य	४–२०°–३४′–२८″	१२–०°–०′–१″	=४३′–८″–२०″
	+३	७–२०–३४–२८	सूर्य चेष्टा बल
सूर्य चेष्टा केन्द्र	=७–२० –३४ –२८	शेष ४–९–२५–३२	
	६ से अधिक है	=१२९°–२५′–३२″	

(२) चंद्र स्पष्ट   ८–२०–५५–३५   रा

—सूर्य स्पष्ट ३–२७–२३– ६   ४–२३°–३२′–२९″ चन्द्र चेष्टा केन्द्र

शेष ४–२३–३२–२९   = १४३–३२–२९ ÷ ३

चंन्द्र चेष्टा केन्द्र   =   ४७–५०–४९

चंद्र चेष्टा बल

चेष्टा रश्मि साधन चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
चेष्टावल	०-४३-८	०-४७-५०	०-२७-४२	०-३९-१७	०-४८-१	०-२९-२०	०-२२-४८
	× ६	× ६	× ६	× ६	× ६	× ६	× ६
गुणनफल	४-१८-४८	४-४७-०	२-४६-१२	३-५५-४२	४-४८-६	२-५६-०	२-१६-४८
+ १	+ १	+ १	+ १	+ १	+ १	+ १	+ १
चेष्टारश्मि	५-१८-४८	५-४७-०	३-४६-१२	४-५५-४२	५-४८-६	३-५६-०	३-१६-४८

इष्ट कष्ट साधन

भाव और ग्रह में कितना शुभत्व है और कितना अशुभत्व है यह जानने के लिए इष्ट और कष्ट बल निकालना पड़ता है।

इष्ट=शुभ (अच्छा फल), कष्ट=अशुभ (बुरा फल)

इष्ट और कष्ट के अनुसार अच्छा और बुरा फल होता है। अधिक इष्ट हो तो शुभ फल की अधिकता होती है। कष्ट अधिक हो तो बुरे फल की अधिकता होती है। इष्ट और कष्ट बराबर हो तो दोनों का तुल्य (समान) फल होता है। इस कारण अच्छे और बुरे का परिणाम जानने को इट कष्ट साधन करना पड़ता है।

इन में इनके षड़बल का गुणा करने से इष्ट बल और कष्ट वल बनता है। इसी प्रकार इष्ट और कष्ट में ग्रहों की दृष्टि का गुणा करने से ग्रहों की इष्ट दृष्टि और कष्ट दृष्टि होती है प्रत्येक भाव पर भी ग्रहों की इष्ट और कष्ट दृष्टि निकाली जाती है। इसी प्रकार और भी गणित कर अंत में स्पष्ट शुभ और स्पष्ट अशुभ निकालते हैं। इन सब का गणित क्रमशः आगे बताया है।

इष्ट और कष्ट साधन की रीति

इष्ट = $\sqrt{}$ (चेष्टा बल × उच्च बल) = ग्रहों का अच्छाफल

कष्ट = $\sqrt{}$ (१°–चेष्टा बल) × (१°–उच्च बल) = ग्रहों का बुरा फल

चेष्टा बल और उच्च बल का गुणा कर उसका वर्गमूल Square root निकालने से जो आवे वह इष्ट बल होता है। किसी संख्या के पहले $\sqrt{}$ चिह्न होने से उसका वर्ग मूल निकालना पड़ता है। वर्ग मूल निकालने की रीति उत्तरार्द्ध में दी है।

१ अंश में से चेष्टा बल घटाना और १° में से उच्च बल पृथक् घटाना। उपरांत चेष्टा बल का शेष और उच्च बल का शेष आपस में गुणा करना। जो गुणन फल आवे उसका वर्ग मूल निकालना जो उत्तर आवे वह कष्ट होगा।

ग्रहों का इष्ट कष्ट साधन के लिये जो उच्च बल और चेष्टा बल यहाँ आवश्यक है वह वही लेना जो उच्च रश्मि और चेष्टा रश्मि साधन में लिया था। उच्च बल को उच्च फल और चेष्टा बल को चेष्टा फल भी कहते हैं।

उच्च और चेष्टा फल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
उच्च फल	०°–२४°–१२″	०°–१५′–१८″	०°–२३′–५०″	०°–३९′–२०″
चेष्टा फल	०–४३–८	०–४७–५०	०–२७–४२	०–३९–१७

ग्रह	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च फल	०°–५′–२५″	०°–२३′–१५″	०°–१०′–१०″
चेष्टा फल	०–४८–१	०–२९–२०	०–२४–४८

इष्ट साधन का उदाहरण

(१) सूर्य इष्ट साधन

√(उच्च बल चेष्टा बल)

२४'–१२" × ४३'–८"

= √(२४–१२) × (४३–८)

= √१०४३'–४९"

= ३२'–१८" सूर्य इष्ट

२४, –१२" उच्च बल
× ४३– ८" चेष्टा बल

	१	३६
२	१२	
८	३६	
७२		
९६		
१०४३	४९	३६

= १०४३–४९

३ | १०·४३·४ (३२
+३ | ९
६२ | १४३
१२४
१९ + १
३२ × २ — २० × ६०
= ६४ + २ — १२०० + ४९
= ६६) १२४९ (१८
६६
५८९
५२८
६१ = ३२'–१८"

(२) चंद्र इष्ट साधन

√(उच्च ०) × (चेष्टा ०)

(१५–१८) (४७–५०)

= √(१५–१८) × (४७–५०)

= √७३१–५१

= २७'–४" चंद्र इष्ट

१५–१८ उच्च०
× ४७–५० चेष्टा०

	१५	
१२	३०	
१४	९	
७०५		
७३१	५१	०

२ | ७·३१·–५१ | २७
+२ | ४
४७ | ३३१
३२९
२ + १ = ३ × ६०
१८० + ५१
२७ × २ + २ = ५६) २३१ (४
२२४
७
= २७'–४"

(३) मंगल इष्ट साधन

√(उच्च०) × (चेष्टा०)

= √(२३-५०) × (२७-४२)

= √६६०'–११"

= २५'–४१" मंगल इष्ट

२३–५० उ०
× २७–४२ चे०

	३५	०
१६	६	
२२	३०	
१६१		
४६		
६६०	११	

२ | ६·६०·–११ (२५
+ २ | ४
४५ | २६०
२२५
३५ + १ = ३६ × ६०
२१६० + ११
२५ × २ + २ = ५२) २१७१ (४१
२०८
९१
५२
३९
= २५'–४१

(४) बुध इष्ट साधन

$\sqrt{(उ०) \times (चे०)}$

$= \sqrt{(३९-२०) \times ३९-१७)}$

$\sqrt{१५४५८'-८''}$

$= ३९'-१८''$ बुध इष्ट

```
    ३९-२०
  × ३९-१७
 ----------
        |५|४०
     ११ |३
 ----------
     १३ |०
    ३५१ |
    ११७ |
 ==========
 १५४५|८ |४०
```

```
   ३|१५'४५-८(३९
 + ३| ९
 ----------
  ६९|६४५
     ६२१
    ----
     २४ + १ = २५ × ६०
              --------
              १५०० + ८
 ३९ × २ + २ = ८०)१५०८(१८
                 ८०
                ----
                 ७०८
 = ३९'-१८''      ६४०
                ----
                  ६०
```

(५) गुरु इष्ट साधन

$\sqrt{उच्च० \times चेष्टा०}$

$= \sqrt{(५-२५) \times (४८-१)}$

$\sqrt{२६०'-५''}$

$= १६'-८''$ गुरु इष्ट

```
      ५-२५
    × ४८-१
 ----------
       |०|२५
     ० | ५
 ----------
    २० | ०
   २४० |
 ==========
   २६०| ५,२५
```

```
   १|२'६०'-५(१६
 + १|१
 ----------
  २६|१६०
     १५६
    ----
      ४ + १ = ५ × ६०
              ------
              ३०० + ५
 १६ × २ + २ = ३४)३०५(८
                 २७२
                ----
 = १६-'८''        ३३
```

(६) शुक्र इष्ट साधन

$\sqrt{उच्च० \quad चेष्टा०}$

$= \sqrt{(३३-१५) \times (२९-२०)}$

$= \sqrt{९७५'-२०''}$

$= ३१'-१४''$ शुक्र इष्ट

```
     ३३-१५
   × २९-२०
 ----------
       | ५|०
    ११ | ०
 ----------
     ७ |१५
   २९७ |
    ६६ |
 ==========
   ९७५/२०|०
```

```
   ३|९'७५'-२०(३१
 + ३|९
 ----------
  ६१| ७५
      ६१
     ----
      १४ + १ = १५ × ६०
               --------
               ९०० + २०
 ३१ × २ + २ = ६४)९२०(१४
                 ६४
                ----
 = ३१'-१४''      २८०
                 २५६
                ----
                  २४
```

(७) शनि इष्ट साधन

$\sqrt{\text{उच्च०} \times \text{चेष्टा०}}$

$= \sqrt{(१०\text{-}१०) \times (२२\text{-}४८)}$

$= \sqrt{२५२'-८''}$

$= १५'-५२''$ शनि इष्ट

```
      १०–१०
    × २४–४८
   |  ८|०
  ८|   ०
  ४|   ०
२४०|
२५२| ८|०
```

```
 १|२·५२·–८(१५
+१|१
२५|१५२
   १२५
    २७ + १ = २८ × ६०
             १६८० + ८
१५ × २ + २ = ३२)१६८८(५२
              १६०
               ८८
               ६४
               २४
```

इष्ट चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट	३२'-१८''	२७'-४''	२५'-४१''	३६'-१८''	१६'-८''	३१'-१४''	१५'-५२''

कष्ट साधन का उदाहरण

$$\text{कष्ट} = \sqrt{(१^\circ - \text{उच्चबल}) \times (१^\circ - \text{चेष्टाबल})}$$

उच्चबल शेष और चेष्टा बल शेष चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	१°–०′–०″	१°–०′–०″	१°–०′–०″	१°–०′–०″	१°–०′–०″	१°–०′–०″	१°–०′–०″
–उच्च बल	०–२४–१२	०–१५–१८	०–२३–५०	०–३९–२०	०–५–२५	०–३३–१५	०–१०–१०
शेष उच्च०	०–३५–४८	०–४४–४२	०–३६–१०	०–२०–४०	०–५४–३५	०–२६–४५	०–४९–५०
	१–०–०	१–०–०	१–०–०	१–०–०	१–०–०	१–०–०	१–०–०
–चेष्टा बल	०–४३–८	०–४७–५०	०–२७–४२	०–३९–१७	०–४८–१	०–२९–२०	०–२२–४८
शेष चेष्टा	०–१६–४२	०–१२–१०	०–३२–१८	०–२०–४३	०–११–५९	०–३०–४०	०–३७–१२

कष्ट साधन

(१) सूर्य कष्ट

$\sqrt{(\text{उच्च शेष} \times \text{चेष्टा शेष})}$

$\sqrt{(३५'–५८'') \times (१६'–४२'')}$

$\sqrt{५९७–५१}$

= २४′–२७″ सूर्य कष्ट

३५–४८ उच्च. शे.
× १६-४२चेष्टा. शे.

३३ | ३६
२४ | ३०
१२ | ४८
५६०
५९७ | ५१ | ३६

२ | ५९७–५१ (२४
+२ | ४
४४ | १९७
१७६
२१ + १ = २२ × ६०
१३२० + ५१
२४ × २ + २ = ५०) १३७१ (२७
१००
३७१
३५०
२१

= ·४′–२७″

(२) चंद्र कष्ट

$\sqrt{(४४-४२) \times (१२-१०)}$

$= \sqrt{५४३-५१}$

= २३′–१९ चंद्र कष्ट

```
     ४४–४२        २|५४३–५१(२३
   × १२–१०       +२|४
     |  ७|०       ४३|१४३
  ७|२०|             १२९
  ८|२४|              १४+१=१५×६०
५२८|                      ९००+५१
५४३|५१|०   २३×२+२=४८)९५१(१९
                          ४८
      =२३″–१८             ४७१
                          ४३२
                           ३९
```

(३) मंगल कष्ट

$\sqrt{(३१-१०) \times (३२-१८)}$

$= \sqrt{११६८'-११}$

= ३४′–११″ मंगल कष्ट

```
     ३६–१०        ३|११६८–११(३४
   × ३२–१८       +३|९
       ३|०        ६४|२६८
   १०|४८|            २५६
    ५|२०|             १२+१=१३×६०+११
   ७२|       ३४×२+२=७०)७९१(११
  १०८|                    ७०
११६८|११०                  ९१
      =३४′–११″            ७०
                          २१
```

(४) बुध कष्ट

$\sqrt{(२०-४०) \times (२०-४३)}$

$= \sqrt{४२८-८}$

= २०′–४१″ बुध कष्ट

```
     २०–४०        २|४२८–८(२०
   × २०–४३       +२|४
     |२८|४०       ४०|  २८+१=२९×६०+८
   १४|२०|                  =४२)१७४८(४१
   १३|२०|       २०×२+२          १६८
  ४००|                           ६८
४२८| ८|४०                         ४२
          २०′–४१″                 २६
```

(५) गुरु कष्ट

√(५४-३५) × (१?-५६)
= √६५४'-५''
= २५'-३४'' गुरु कष्ट

```
       ५४-३५
     × ११-५६
        |३४|२५
     ५३| ६|
     ६|२५|
   ५९४|
   ६५४| ५|२५
```

```
  २|६·५४-५(२५
+ २|४
 ४५|२५४
    २२५
     २९+१=३०×६०+५
२०×२+२=५२)१८०५(३४
              १५६
               २४५
               २०८
                ३७
= २५'-३४''
```

(६) शुक्र कष्ट

√(२६-४५) × (३०-४०)
=√८२०'-२०''
=२८'-३८'' शुक्र कष्ट

```
       २६-४५
     × ३०-४०
        |३०|०
     १७|२०|
     २२|३०|
    ७८०|
    ८२०|२०|०
```

```
  २|८·२०·-२०(२८
+ २|४
 ४८|४२०
    ३८४
     ३६+१=३७×६०+२०
२८×२+२=५८)२२४०(३८
             १७४
              ५००
              ४६४
               ३६
= २८'-३८''
```

(७) शनि कष्ट

√(४९-५०) × (३७-१२)
=√१८५३'-४८''
=४३'-३'' शनि कष्ट

```
       ४९-२०
     × ३७-१२
        ९|१०|०
         |४८|
       ३०|५०|
      ३४३|
      १४७|
     १८५३|४८|०
```

```
  ४|१८५३-४८(४३
+ ४|१६
 ८३| २५३
     २४९
      ४+१=५×६०+४८
४३×२+२=८८)३४८(३
            २६४
             ८२
= ४३'-३''
```

कष्ट चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कष्ट	२४'-२७''	२३'-१६''	३४'-१९''	२०'-४९''	२५'-३४''	२८'-३८''	४३'-३''

इष्ट बल और कष्ट बल साधन

(षड्बल युक्त इष्ट कष्ट साधन)

ग्रहों के षड्बल के प्रमाण से ग्रहों का इष्ट और कष्ट कितना रहता है, यह निकालना पड़ता है। ग्रहों का षड्बल अध्याय २२ में निकाल चुके हैं।

इष्ट में षड्बल का गुणा करने से षड्बल युक्त इष्ट बल निकलता है और
कष्ट में „ „ „ „ कष्ट „ „ ।

इष्ट गुणित षड्बल को इष्टघ्न षड्बलैक्य या इष्ट बल कहते हैं
कष्ट „ „ कष्टघ्न „ „ कष्ट „ „ .

पिछला साधन किया हुआ ग्रह षड्बल और इष्ट कष्ट नीचे चक्र में दिया है।

ग्रह इष्ट कष्ट और षड्बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
षड्बल	५°-५१'-३''	७°-३६'-१०''	५°-२'-२३''	८°-३४-१६''	६°-१३'-५८''	८°-२०'-२४''	४°-२५'-५६''
इष्ट	०-३२-१८	०-२७-४	०-२५-४१	०-३६-१८	०-१६-८	०-३१-१४	०-१५-५२
कष्ट	०-२४-२७	०-२३-१६	०-३४-११	०-२०-४१	०-२५-३४	०-२८-३८	०-४३-३

इष्टघ्न षड्बलैक्य साधन का उदाहरण

इष्ट × षड्बल = इष्टघ्न षड्बलैक्य = इष्ट बल।

(१) सूर्य इष्टघ्न षड्वलैक्य

सूर्य षड्वल ५°-५१'-३''

सूर्य इष्ट × ० -३२ -१८

			०	५४
		१५	१८	
	१	३०		
…	…	…	…	…
		१	१६	
	२७	१२		
२	४०			
…	…	…	…	…
०	०	०		
३	८	५८	३४	५४

सूर्य इष्टघ्न षड्वलैक्य

= ३°-८'-५८''

(२) चंद्र इष्टघ्न षड्वलैक्य

७-२६-१० चंद्रषड्वल

× ०-२७- ४ चंद्र इष्ट

			०	४०
		१	४४	
	०	२८		
…	…	…	…	…
		४	३०	
	११	४२		
३	९			
…	…	…	…	…
०	०	०		
३	२१	१६	१४	४०

चंद्र इष्टघ्न षड्वलैक्य

= ३°-२१'-१६''

(३) मंगल इष्टघ्न षड्वलैक्य

मंगल षड्वल ५°-२'-२३''

,, इष्ट × ०-२५-४१

			१५	४३
		१	२२	
	३	२५		
…	…	…	…	…
		९	३५	
	०	५०		
२	५			
…	…	…	…	…
०	०	०		
२	९	२६	१२	४३

भौम इष्टघ्न षड्बलैक्य

= २°-९'-२६''

(४) बुध इष्टघ्न षड्वलैक्य

बुध षड्वल ८°-३४'-१९''

,, इष्ट ० -३९ -१८

			५	४२
		१०	१२	
	२	२४		
…	…	…	…	…
		१२	२१	
	२२	६		
५	१२			
…	…	…	…	…
०	०	०		
५	३६	५२	३८	४२

बुध इष्टघ्न षड्वलैक्य

= ५°-३६'-५२''

(५) गुरु इष्टघ्न षड्बलैक्य

गुरु षड्बल ६°–१३′–५८″
,, इष्ट × ० –१६ – ८

			७	४४
		१	४४	
	~	४८		
...	...	...	...	...
		३५	२८	
	३	२८		
१	३६			
...	...	...	...	...
०	०	०		
१	४०	३३	१६	४४

गुरु इष्टघ्न षड्बलैक्य
= १°–४०′–३३″

(६) शुक्र इष्टघ्न षड्बलैक्य

शुक्र षड्बल ८°–२०′–२४″
,, इष्ट × ०–३१–१४

			५	३६
		४	४०	
	१	५२		
...	...	...	...	...
	१०	१२	२४	
	८	२०		
४				
...	...	...	...	...
०	०	०		
४	२०	२९	९	३६

शुक्र इष्टघ्न षड्बलैक्य
= ४°–२०′–२९″

(७) शनि इष्टघ्न षड् बलैक्य

शनि षड् बल ४°–२५′–५६″
,, इष्ट × ०–१५–५२

			३२
		२१	
	३	२८	
...	...	...	...
१		१४	
	६	१५	
	०		
...	...	...	...
०	०	०	
१	१०	१९	३२

शनि इष्टघ्न षड् बलैक्य
= १°–१०′–१९″

इष्टघ्न षड् बलैक्य या इष्ट बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट बल	०°–८′–५८″	३°–२१′–१६″	२°–१′–२६″	५°–३६′–५२″	१°–४०′–३३″	४°–२०′–२९″	१°–१०′–१९″

इष्टघ्न षड् बलैक्य साधन का उदाहरण

कष्ट × षड् बल = कष्टघ्न षड् बलैक्य = कष्ट बल

(१) सूर्य कष्टघ्न षड् बलैक्य

सूर्य षड् बल   ५°–५१′–३″

,, कष्ट   × ०–२४–७

			१	२१
		२२	५७	
	२	१५		
…	…	…	…	…
		१	१२	
	२०	२४		
२	०			
…	…	…	…	…
०	०	०		
२	२३	३	१०	२१

सूर्य कष्टघ्न षड्बलैक्य

= २°–२३′–३″

(२) चंद्र कष्टघ्न षड् बलैक्य

चंद्र षड्बल   ७°–२९′–१०″

,,कष्ट   × ०–२३–१९:

			३	१०
		८	१४	
	२	१३		
…	…	…	…	…
	९	३	५०	
		५८		
२	४१			
…	…	…	…	…
०	०	०		
२	५३	२३	७	१०

चंद्र कष्टघ्न षड्बलैक्य

२°–५३′–२३″

(३) मंगल कष्टघ्न षड्बलैक्य

मंगल षड् बल ५°–२′–२३″

,,   कष्ट × ०–३४–११

			४	१३
		०	२२	
	०	५५		
…	…	…	…	…
		१३	२	
	१	८		
२	५०			
…	…	…	…	…
०	०	०		
२	५२	१६	२८	१३

भौम कष्टघ्न षड् बलैक्य २°-५२′-१६″

(४) बुध कष्टघ्न षड् बलैक्य

बुध षड् बल ८°–३४′–१९″

,,   कष्ट × ०-२०-४१

			१२	५९
		२३	१४	
	५	२८		
…	…	…	…	…
		६	२०	
	११	२०		
२	४०			
…	…	…	…	…
०	०	०		
२	५७	१७	४६	५९

बुध कष्टघ्न षड़ बलैक्य२-५७′-१७″

(५) गुरु कष्टघ्न षड् बलैक्य

गुरु षड्बल ६°-१३'-५८"
,, कष्ट × ०-२५-३४

			३२	५२
		७	२२	
	३	२४		
...	...	...	...	...
		२४	१०	
	५	२५		
२	३०			
...	...	...	...	...
०	०	०		
२	३९	२१	४	५२

गुरु कष्टघ्न षड्बलैक्य २°-३९'-२१"

(६) शुक्र कष्टघ्न षड् बलैक्य

शुक्र षड् बल ८°-२०'-२४"
,, कष्ट ०-२८-३८

			१५	१२
		१२	४०	
	५	४		
...	...	...	...	...
		११	१२	
	९	२०		
३	४४			
...	...	...	...	...
०	०	०		
३	५८	४८	७	१२

शुक्र कष्टघ्न षड्बलैक्य ३°-५८'-४८"

(७) शनि कष्टघ्न षड् बलैक्य ।

शनि षड्बल ४°–२५'–५६"
,, कष्ट ०–४३–३

			२	४८
		१	१५	
	०	१२		
...	.	.	.	.
		४०	८	
	१७	५५		
२	५२			
.	.	.	.	.
०	०	०		
३	१०	४८	२५	४८

शनि कष्टघ्न षड्बलैक्य ३°–१०'–४८"

कष्टघ्न षड्बलैक्य या कष्ट बल चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कष्ट बल	२°–२३'–३"	३°–५३'–२३"	२°–५२'–१६"	२°–५७'–१६"	२°–३९'–२१"	३°–५८'–४८"	३°–१०'–४८"

इष्ट और कष्ट दृष्टि साधन

जिस प्रकार इष्ट बल और कष्ट बल साधन किया था उसी प्रकार ग्रहों की इष्ट दृष्टि और कष्ट दृष्टि साधन करनी पड़ती है।

इष्ट × दृष्टि बल = इष्ट दृष्टि

कष्ट × „ „ = कष्ट दृष्टि

पहले जो दृष्टि अध्याय १८ में साधन कर चुके हैं वही ग्रह दृष्टि लेकर इष्ट और कष्ट दृष्टि साधन करना पड़ता है इसे इष्टघ्न या कष्टघ्न ग्रह दृष्टि भी कहते हैं।

किसी ग्रह की किसी ग्रह पर जितनी दृष्टि हो उससे और द्रष्टा ग्रह के इष्ट का गुणा करने से इष्ट दृष्टि होती है, यदि कष्ट का गुणा किया जाय तो कष्ट दृष्टि होती है। इस प्रकार प्रत्येक द्रष्टा ग्रह की प्रत्येक दृष्टि ग्रह पर इष्ट या कष्ट दृष्टि साधन करनी पड़ती है। गुणन फल से प्राप्त दृष्टि अंशात्मक न मानकर कलात्मक मानी जायगी।

इष्ट दृष्टि (इष्टघ्न ग्रह दृष्टि) साधन का उदाहरण

प्रत्येक द्रष्टा ग्रह की दृष्टि जो दृश्य ग्रह पर पड़ती है। अध्याय १८ से लेकर प्रत्येक में इष्ट का गुणा करेंगे।

(१) सूर्य की प्रत्येक ग्रह पर इष्ट दृष्टि साधन

सूर्य की दृष्टि

सूर्य इष्ट	चंद्र पर	मंगल पर	बुध पर	गुरु पर	शुक्र पर	शनि पर
३२′-१८″	२६′-२७″	५′-२७″	०	८′-३८″	०	३′-२६″

चंद्र २६′-२७″
रवि इष्ट × ३२-१८

		८	६
	७	४८	
	१४	२४	
१३	५२		
१४	१४	२०	६

मंगल ५′-२७″
रवि इष्ट × ३२-१८

		८	६
	१	३०	
	१४	२०	
२	४०		
२	५६	२	६

गुरु ८′-३८″
रवि इष्ट × ३२-८

		५	४
	१	४	
	२०	१६	
४	१६		
४	३७	२५	४

शनि ३′-३६″
रवि इष्ट ३२-८

		३	२८
	०	४	
	१३	५२	
१	३६		
१	५०	१६	२८

रवि इष्ट दृष्टि—

१४′–१४″ :चंद्र पर, २′–५६″ मंगल पर, ४′–३७ गुरु पर, १′-५०″ शनि पर

(२) चंद्र की प्रत्येक ग्रह पर इष्ट दृष्टि साधन

चंद्र की दृष्टि

चंद्र इष्ट	सूर्य पर	मंगल पर	बुध पर	गुरु पर	शुक्र पर	शनि पर
२७′–४″	४१′–४६″	४′–२७″	४८′–५७″	०	५२–३८	०–२५

सूर्य ४१'–४६" मंगल ४'–२७" बुध ४८–५७ शुक्र ५२'–३८" शनि ०–२५

चंद्र इष्ट × २७-४ × २७-४ × २७-४ × २७-४ × २७-४

```
  | |३|४        | |१|४८        | |३|२६        | |२|३२        ०| १|४०
 २|४४|          ०|१६|           ३|१२|          ३|२८|       ०|११|१५|
२०|३२|         |१२| ९|        |२५|३६|        |१६| ७|      ०|११|१६|४०
१८|२७|        १|४८|        २१| ९|         २३|२४|        चंद्र की इ० दृष्टि
१८|५०|२६| ४   २| ०|२६|४८   २१|३७|५४|३६   २३|४३|३७|३२   ०'–११" शनि पर
```

चंद्र इष्ट दृष्टि––

सूर्य पर १८'–५०", भौम पर २'–०", बुधपर २१–३७, शुक्र पर २३'–४३"

(३) मंगल की इष्ट दृष्टि साधन

मंगल की दृष्टि

मंगल इष्ट	शनिपर	सूर्य पर	चंद्र पर	बुध पर	गुरु पर	शुक्र पर
२५'–४१"	०	३१'–२२"	५५'–३२"	१३'–१६"	५७'–४३"	०'–२३"

दृश्य सूर्य ३१'-२२"
भौम इ. × २५-४१

```
   |  |१५| २
   |२१|११|
   | ९|१०|
 १७|५५|
 १३|२५|२६| २
```

दृश्य चंद्र ५५-३२
भौ. इ. × २५-४१

```
   |  |२१|५२
   |३७|३५|
   |१३|२०|
 २२|५५|
 २३|४६|१६|५२
```

दृश्य बुध १३'-१६"
भौम इ. × २५-४१

```
   |  |१०|१६
   | ८|५३|
   | ६|४०|
  ५|२५|
  ५|४०|४३|५६
```

दृश्य गुरु ५७'-४३"
भौ. इ. × २५-४१

```
   |  |२९|२३
   |३८|५७|
   |१७|५५|
 २३|४५|
 २४|४२|२१|२३
```

दृश्य शुक्र ०'-२३"
भौ. इ. × २५'-४१

```
   |  |१५| ४३
   | ०| ०|
   | ९|३५|
  ०| ०|
  ०| ९|५०| ४३
```

भौम की इष्ट दृष्टि—

१३'–२५" सूर्य पर, २३'-४६" चंद्र पर, ५'-४०" बुध पर, २४'-४२" गुरु ०'-९" शुक्र पर,

(४) बुध की इष्ट दृष्टि साधन

बुध की दृष्टि

बुध इष्ट	सूर्य पर	चंद्र पर	मंगल पर	गुरु पर	शुक्र पर	शनि पर
३९′-१८″	०	१५′-५०″	०	११′-२८″	०	०

दृश्य चंद्र १५′-५०″
बुध इ० × ३९-१८

		१५	०
	४	३०	
	३२	४०	
९	४५		
१०	२२	२५	०

बुध की इ० दृष्टि
१०′-२०″ चंद्र पर

दृश्य गुरु ११′-२८″
बुध इ० × ३९-१८

		८	२४
	३	१८	
	१८	१२	
७	९		
७	३०	३८	२४

बुध की इ० दृष्टि
७′-३०″ गुरु पर

(५) गुरु की इष्ट दृष्टि साधन

गुरु की दृष्टि

गुरु इष्ट	सूर्य पर	चंद्र पर	मंगल पर	बुध पर	शुक्र पर	शनि पर
१६′-८″	५०′-१९″	०	४′-३३″	४७′-५२″	५७′-०″	३′-३०″

दृश्य सूर्य ५०′-१९″, बुध ४७′-५२″, शुक्र ५७-०, मंगल ४-३३, शनि ३′-३०″

गुरु इष्ट × १६-८ गुरु इ० × १६-८ गुरु इ० × १६-८ गुरु इ० × १६-८ गुरु इ० × १६-८

		२	३२
	६	४०	
	५	४	
१२	२०		
१३	३१	४६	३२

		६	५६
	६	१६	
	१३	५२	
१२	३२		
१२	५२	१४	५६

		०	०
	७	३६	
	०	०	
१५	१२		
१५	१९	३६	०

		४	२४
	०	३२	
	८	४८	
१	४		
१	१३	२४	२४

		४	०
	०	२४	
	८	०	
०	४८		
०	५६	२८	०

गुरु की इष्ट दृष्टि—

१३′-३१सूर्य पर, १२′-५२″बुध पर, १५′-१९″शुक्र पर, १′-१३″ मं० पर, ०′-५६″ शनि पर

(६) शुक्र की इष्ट दृष्टि साधन

शुक्र की दृष्टि

शुक्र ईष्ट	सूर्य पर	चंद्र पर	मंगल पर	बुध पर	गुरु पर	शनि पर
३१′-१४″	५′-४″	५८′-९″	०	०	५९′-१५″	"

दृश्य सूर्य ५′– ४″ दृश्य चंद्र ५८′–९ गुरु दृश्य ५९′–१५″

शुक्र इष्ट × ३१–१४ शुक्र इष्ट × ११–१५ शुक्र इष्ट × ३१–१४

		०	५६
	१	१०	
...	...	...	...
	२	४	
२	३५		
२	३८	१४	५६

		१	१६
	१३	३२	
...	...	...	...
	४	३९	
२९	५८		
३०	१६	१२	१६

		३	३०
	१३	४६	
...	...	...	...
	७	४५	
३०	२९		
३०	५०	३४	३०

शुक्र की इष्ट दृष्टि—

२′–३८″ सूर्य पर, ३०′–१५″ चंद्र पर, ३०′–५०″ गुरु पर,

(७) शनि की इष्ट दृष्टि साधन

शनि इष्ट	शनि की दृष्टि सूर्य पर	चंद्र पर	मंगल पर	बुध पर	गुरु पर	शुक्र पर
१५′-५२″	५६–३३	४४–४७	०	४५–०	४५–५२	०

दृश्य सूर्य ५६′–३३″ दृश्य चंद्र ४४′–४७″ दृश्य बुध ४५′–०″ गुरु दृश्य ४५-५२

शनि इष्ट × १५–५२ शनि इष्ट × १५–४२ शनि इ० × १५–५२ शनि इ० × १५-५२

		२८	३६
	४८	३२	
...	...	...	...
	८	१५	
१४	०		
१४	५७	१५	३६

		४०	४४
	३८	८	
...	...	...	...
	११	४५	
११	०		
११	५०	३३	४४

	३९	०	०
		०	
...	...	...	...
११	०	०	
	४५		
११	५४	०	०

	३९	४५	४
		०	
...	...	...	...
११	१३	०	
	१५		
१२	७	४५	४

शनि की इष्ट दृष्टि—

१४′–५७″ सूर्य पर, ११′–५०″ चंद्र पर, ११′–५४″ बुध पर, १२′–७″ गुरु पर

इष्टघ्न दृष्टि (इष्ट दृष्टि) चक्र

द्रष्टा ग्रह	दृश्य ग्रह रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
रवि	०′– ०″	१४′–१४″	२′–५६″	०′– ०″	४′–३७″	०′– ०″	१′–५०″
चंद्र	१८–५०	२– ०	०– ०	२१–३७	०– ०	२३–४३	०–११
मंगल	२३–२५	२३–४६	०– ०	५–४०	२४–४२	०– ६	०– ०
बुध	०– ०	१०–२२	०– ०	०– ०	७–३०	०– ०	०– ०
गुरु	१३–३१	०– ०	१–१३	३२–५२	०– ०	१५–१९	०–५६
शुक्र	२–३८	३०–१६	०– ०	०– ०	३०–५०	०– ०	०– ०
शनि	१४–५७	११–५०	०– ०	११–५४	१२– ७	०– ०	०– ०

कष्टघ्न दृष्टि (कष्ट दृष्टि)

जिस प्रकार ग्रह इष्ट से इष्टघ्न दृष्टि साधन किया था उसी प्रकार ग्रह कष्ट में ग्रह दृष्टि का गुणा करने से जो आता है उसे कष्ट दृष्टि या कष्टघ्न दृष्टि कहते हैं ।

कष्ट दृष्टि साधन का उदाहरण

सूर्यकष्ट	सूर्य दृष्टि	चंद्र पर	मंगलपर	गुरुपर	शनिपर	शेष ग्रहपर
२४–३७		२६–२७	५–२७	८–३८	३–२६	०

(१) सूर्य की कष्ट दृष्टि साधन

चंद्र पर २६′–२७″ मंगलपर ५′–२७″ गुरु पर ८′–३८″ शनि पर ३′–२६″

सूर्य कष्ट × २४–२७ सूर्य कष्ट × २४–२७ सूर्य कष्ट × २४–२७ सूर्य कष्ट × २४–२७

चंद्र पर:

		१२	९
	११	४२	
…	…	…	…
	१०	४८	
९	२४		
९	४६	४२	९

मंगलपर:

		१२	९
	२	१५	
…	…	…	…
	१०	४८	
२	०		
२	१३	१५	९

गुरु पर:

		१७	९
	३	३६	
…	…	…	…
	१५	१२	
३	१२		
३	३१	५	६

शनि पर:

		११	४२
	१	२१	
…	…	…	…
	९	२४	
१	१२		
१	२२	५६	४२

सूर्य कष्ट दृष्टि—

९′–४६″ चंद्र पर, २′–१३″ मंगल पर, ३′–३१″ गुरु पर, १′–२२″ शनि पर,

(२) चंद्र कष्ट दृष्टि साधन

चंद्र कष्ट	चंद्र दृष्टि	सूर्य पर	भौम पर	बुध पर	शुक्र पर	शनि पर	शेष पर
२३′–१९″		४१–४६	४–२७	४८–५७	५२–३८	०–२५	०

सूर्य पर ४१′-४६″ भौम पर ४′-२७″ बुधपर ४८′-५७ शुक्रपर ५२′-३८ शनिपर ०′-२५″

चंद्रकष्ट × २३-१९ चंद्रक० × २३-१९ चंद्रक० × २३-१९ चंद्रक० × २३-१९ चंद्रक. × २३-१९

सूर्य पर:

		१४	३४
	१२	५	
…	…	…	…
	१७	३८	
१५	४३		
१६	१३	५१	३४

भौम पर:

		८	३३
	१	१६	
…	…	…	…
	१०	२१	
१	३२		
१	४३	०५	३३

बुध पर:

		१८	३
	१५	१२	
…	…	…	…
	२१	५१	
१८	२४		
१९	१	२१	३

शुक्र पर:

		१२	२
	१६	२८	
…	…	…	…
	१४	३५	
१९	५६		
२०	२७	१५	२

शनि पर:

		७	५५
	०	०	
…	…	…	…
	९	३५	
०	०		
०	९	४२	५५

चंद्रकष्ट दृष्टि—

१६-१३ सूर्य पर, १-४३ मंगल पर, १९-१ बुध पर, २०-२७ शुक्र पर, ०-९ शनि पर,

(३) भौम की कष्ट दृष्टि साधन

मंगल कष्ट	मंगल की दृष्टि सूर्य पर	चंद्र पर	बुध पर	गुरु पर	शुक्र पर	शेष ग्रह पर
३४'–११"	३१'-२२"	५५-३२	१३'-१६"	५७'-४३"	०'–२३	०

सूर्यपर ३१'-२२" चंद्रपर ५५'-३२" बुधपर १३'-१६" गुरुपर ५७'-४३" शुक्रपर ०'-२३"

मंगलक. × ३४-११ मं.क. × ३४-११ मं.क. × ३४-११ मं.क. × ३४-११ मं.क. × ३४-११

		४	२
	५	३१	
	१२	२८	
१७	३४		
१७	५२	१३	२

		५	५२
	१०	५	
	१८	८	
३१	१०		
३१	२८	१८	५२

		२	५६
	२	२३	
	९	४	
७	२२		
७	२३	२९	५६

		७	५३
	१०	२७	
	२४	२२	
३२	१८		
३२	५२	५६	५३

		४	१३
	०	०	
	१३	२	
०	०		
०	१३	६	१३

मंगल कष्ट दृष्टि—

१७'-५२ सूर्य पर, ३१-२८ चंद्र पर, ७'-२३" बुध पर, ३२-५२ गुरु पर, ०'-१३ शुक्र पर

(४) बुध की कष्ट दृष्टि साधन

बुध कष्ट	बुध दृ० चंद्र पर	गुरु पर	शेष पर
२०'–४१"	१५'–५०"	११'–२८"	०

चंद्र पर दृ० १५–५०" गुरु पर दृ० ११–२८"

बुध कष्ट × २०–४१ बुध कष्ट २०–४१

		३४	१०
	१०	१५	
	१६	४०	
५	०		
५	२७	२९	१०

		१९	८
	७	३१	
	९	२०	
३	४०		
३	५७	१०	८

बुध कष्ट दृष्टि—

५-२७ चंद्र पर ३–५७ गुरु पर

(५) गुरु की कष्ट दृष्टि साधन

गुरु की दृष्टि

गुरु कष्ट	सूर्य पर	मंगल पर	बुध पर	शुक्र पर	शनि पर	शेष ग्रह पर
२५–३४	५०–१९	४–३३	४७–५२	५७–०	३–३०	०

सूर्य पर ५०–१९ मं० पर ४–३३ बुध पर ४७–४२ शुक्र पर ५७–० शनि पर ३–३०

सू. क. × २५-३४ गु. क. × २५-३४ गु.क. × २५-३४ गु. क. २५-३४ गु.क. × २५-३४

		१०	४६
	२८	२०	
	७	५५	
२०	५०		
२१	२६	२५	४६

		१८	४२
	२	१६	
	१३	४५	
१	४०		
१	५६	१९	४२

		२९	२८
	२६	३८	
	२१	४०	
१९	३५		
२०	२३	४७	२८

		०	०
	३२	१८	
	०	०	
२३	४५		
२४	१७	१८	०

		१७	०
	१	४२	
	१२	३०	
१	१५		
१	२९	२९	०

गुरु कष्ट दृष्टि—

२१′-२६″ सूर्य पर, १-५६ मं. पर, २०-२३ बुध पर, २४-१७ शुक्र पर, १-२९ शनि पर

(६) शुक्र की कष्ट दृष्टि साधन

शुक्र कष्ट	शुक्र की दृष्टि सूर्य पर	चंद्र पर	गु० पर	शेष पर
२८–३८	५–४	५८–९	५९–१५	०

सूर्य पर ५′–४″ चंद्र पर ५८–९ गु० पर ५९–१५

शुक्र कष्ट × २८–३८ शुक्र क० × २८–३८ शुक्र क० × २८–३८

		२	३२
	३	१०	
	१	५२	
२	२०		
२	२५	४	३२

		५	४२
	३६	४४	
	५	४२	
२७	४		
२७	४६	६१	४२

		९	३०
	३७	२२	
	७	०	
२७	३७		
२८	१६	३१	३०

शुक्र कष्ट दृष्टि—

२२–५ सूर्य पर २७–४६ चंद्र पर २८–१६ गु० पर

(७) शनि कष्ट दृष्टि साधन।

शनि कष्ट	शनि की दृष्टि	सूर्य पर	चंद्र पर	बुध पर	गुरु पर	शेष पर
४३–३		५६–३३	४४–४७	४५–०	४५–५२	०

सूर्य पर दृष्टि ५६–३३ चंद्र पर ४४–४७ बुध पर ४५–० गुरु पर ४५–५२

शनि कष्ट × ४३–३ शनि कष्ट × ४३–३ शनि कष्ट × ४२–३ शनि कष्ट × ४३–३

		१	३९
	२	४८	
	२२	३९	
४०	८		
४०	३४	२८	३९

		२	२१
	२	१२	
	३३	४१	
३१	३२		
३२	७	५५	२१

		०	०
	२	१५	
	०	०	
३२	१५		
३२	१७	१५	०

		२	३६
	२	१५	
	३७	१६	
३२	१५		
३२	५४	३३	३६

शनि कष्ट दृष्टि—

४०–३४ सूर्य पर, ३२–७ चंद्र पर, ३२–१७ बुध पर, ३२–५४ गुरु पर

कष्टघ्न दृष्टि (कष्ट दृष्टि) चक्र ।

दृष्टा ग्रह	दृश्य ग्रह सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	०'–०"	९'–४६"	२'–१३"	०'–०	३'–३१"	०'–०"	१'–२२"
चंद्र	१६–१३	०–०	१–४३	२९–१	०–०	२०–२७	०–९
मंगल	१७–५२	३१–२८	०–०	७–३३	३२–५२	०–१३	०–०
बुध	०–०	५–२७	०–०	०–०	३–५७	०–०	०–०
गुरु	२१–२६	०–०	१–५६	२०–२३	०–०	२४–१७	१–२९
शुक्र	२–२५	२७–४६	०–०	०–०	२८–१६	०–०	०–०
शनि	४०–३४	३२–७	०–०	३२–१७	३२–५४	०–०	०–०

भाव पर इष्ट कष्ट दृष्टि साधन

जिस प्रकार प्रत्येक ग्रह के इष्ट या कष्ट को ग्रह की दृष्टि से गुणा कर इष्ट या कष्ट दृष्टि साधन किया था उसी प्रकार प्रत्येक भाव पर जो ग्रह की दृष्टि है उस में इष्ट या कष्ट का गुणा करने से भाव को ईष्ट या कष्ट दृष्टि होती है ।

भाव दृष्टि में ग्रह इष्ट का गुणा करने से भाव इष्ट दृष्टि या भाव ईष्टघ्न दृष्टि होती है और कष्ट से गुणा करने से भाव कष्टघ्न दृष्टि या भाव कष्ट दृष्टि होती है । इसका उदाहरण आगे दिया है ।

भाव इष्ट दृष्टि साधन का उदाहरण ।

भाव पर ग्रह दृष्टि अध्याय १८ में निकाल चुके हैं उसे भाव दृष्टि चक्र से यहाँ लेकर गणित करते हैं ।

सूर्य का भाव इष्ट दृष्टि साधन

सूर्य का		भाव जिन पर सूर्य की दृष्टि है			
इष्ट	कष्ट	लग्न	२ भाव	३ भाव	७ भाव
३२-१८	२४-२७	४३-२८	२८-२	१२-३६	१-३२
८ भाव	९ भाव	१० भाव	११ भाव	१२ भाव	
१८-५५	४२-३६	२४-२३	९-३२	५८-३	

लग्न पर४३′-२७″
सूर्य इष्ट × ३२-१८

		८	६
	१	५४	
२	१४	२४	
२२	५६		
२३	२३	२६	६

२ भाव पर २८-२
सूर्य इष्ट × ३२-१८

		०	३६
	८	२४	
१४	१	४	
	५६		
१५	५	२८	३६

३ भाव पर १२-३६
सू० इष्ट × ३२-१८

		१०	४८
	८	३६	
	१९	१२	
६	२९		
५	४६	५८	४८

सूर्य इष्ट दृष्टि—
लग्न पर २३-२३ २ भाव पर १५-५ ३भावपर ६-४६

७ भाव पर १-३२
सू० इष्ट × ३२-१८

		९	३६
	०	१८	
	१७	४	
०	३२		
०	४९	३१	३६

८ भाव पर १८-५५
सूर्य इष्ट × ३२-१८

		१६	३०
	५	२४	
	२९	२०	
९	३६		
१०	१५	०	३०

सूर्य इष्ट दृष्टि—
७ भाव पर ०-४९ ८ भाव पर १०-१५

९ भाव पर ४२-३६
सूर्य इ० × ३२-१८

		१०	४८
	२२	३६	
	१९	१२	
२२	२४		
२२	५५	५८	४८

१० भाव पर २४-२३
सू० इ० × ३२-१८

		६	५४
	७	१२	
	१२	१६	
१२	४८		
१३	७	३४	५४

११ भाव पर ९-३२
सू० इ० × ३२-१८

		९	३६
	२	४८	
	१७	४	
४	४८		
५	७	५५	३६

१२ भाव पर ५८-३
सूर्य इ० × ३२-१८

		०	५४
	१७	२४	
	१	३६	
३०	५६		
३१	१५	०	५४

सूर्य इष्ट दृष्टि--
९ भाव पर २२-५५, १० भाव पर १३-७, ११ भाव पर ५-७, १२ भाव पर ३१-१५

(१) सूर्य भाव कष्ट दृष्टि साधन

लग्नपर ४३-२७

सू० क० × २४-२७

		१२	६
	१६	१०	
....	....	....	....
	१०	४८	
१७	१२		
१७	४२	११	६

२ भावपर २८-२

सू० क० × २४-२७

		१	५४
	१२	३६	
....	....	....	....
	१	४८	
११	१२		
११	२५	४४	५४

३ भावपर १२-३६

सू० क० × २४-२७

		१६	१२
	५	२४	
....	....	....	....
	१४	२४	
४	४८		
५	८	४	१२

र्य कष्ट दृष्टि—

१७-४२ लग्न पर ११-२५ भाव २ पर ५-८ भाव ३ पर

७ भाव पर १-३२

सू० क० × २४-२७

		१४	२४
	०	२७	
....	....	....	....
	१२	४८	
०	२४		
०	३७	२६	२४

८ भाव पर १८-५५

सू० क० × २४-२७

		२४	४५
	८	६	
....	....	....	....
	२२	०	
७	१२		
७	४२	३०	४५

सूर्य कष्ट दृष्टि—

०-३७ भाव ७ पर ७-४२ भाव ८ पर

९ भाव पर ४२-३६ | १० भाव पर २४-२३ | ११ भाव पर ९-३२ | १२ भाव ५८-३

सू० क० × २४-२७ | सूर्य क० × २४-२७ | सू० क० × २४-२७ | सू० क० × २४-२७

		१६	१२
	१८	५४	
....	....	....	..
	१४	२४	
१६	४८		
१७	२१	३४	१२

		१०	२१
	१०	४८	
....	....	....	....
९	९	१२	
	३६		
९	५६	१०	२०

		१४	२४
	४	३	
....	....	....	....
	१२	४८	
३	३६		
३	५३	५	२४

		१	२१
	२६	६	
....	....	....	....
	१	१२	
२३	१२		
२३	३९	१९	२१

सूर्य कष्ट दृष्टि—

१७-२१ भाव ९ पर, ९-५६ भाव१०पर, ३-५३ भाव११पर, २३-३९ भाव १२पर

(२) चंद्र का भाव इष्ट कष्ट दृष्टि साधन

चंद्र का		भाव जिन पर चंद्र की दृष्टि है			
इष्ट	कष्ट	लग्न	२ भाव	३ भाव	४ भाव
२७-४	२३-१९	२४-३३	३९-४८	१८-४६	२४-८
५ भाव	६ भाव	७ भाव	८ भाव	१२ भाव	
५४-२३	३९-४८	२५-१३	९-४८	५-११	

चंद्र की भाव इष्ट दृष्टि साधन

लग्न पर दृ० २४-३३
चं० इं० × २७-४

```
   |   १|  २|१२
   |    |३६ |
---|----|---|---
   |१४  |५१ |
१० |४८  |   |
११ |  ४ |२९ |१२
```

२ भाव पर ३९-४८
चं० इं० × २७-४

```
   |    |  ३|१२
   |   २|३६ |
---|----|---|---
   |२९  |३६ |
१७ |३३  |   |
१८ |   ५|१५ |१२
```

३ भाव पर १८-४६
चं० इं० × २७-४

```
   |    |  ३| ४
   |   १|१२ |
---|----|---|---
   |२०  |४२ |
 ८ | ६  |   |
 ८ |२८  |  ७| ४
```

चंद्र इष्ट दृष्टि--

११-४ ल०पर, १८-५ भाव २पर, ८-२८ भाव ३पर,

४ भाव पर २४-८
चं० इं० × २७-४

```
   |    |  ०|३२
   |   १|३६ |
---|----|---|---
   |   ३|३६ |
१० |४८  |   |
१० |५३  |१२ |३२
```

५ भाव पर ५४-२३
चं० इं० × २७-४

```
   |    |  १|३२
   |   ३|३६ |
---|----|---|---
   |१०  |२१ |
२४ |१८  |   |
२४ |३१  |५८ |३२
```

चंद्र इंष्ट दृष्टि—

१०-५३ भाव ४पर, २४-३१ भाव ५पर

६ भाव पर ३९–४८ ७ भाव पर २५–१३ ८ भाव पर ९–४८ १२ भाव पर ५–११

चं० इ० × २७–४ चं० इ० × २७–४ चं० दृ० × २७–४ चं० इ० × २७–४ .

		३	१२
	२	३६	
	२९	३६	
१७	३३		
१८	५	१५	१२

		०	५२
	१	४०	
	५	४१	
११	१५		
११	२२	२१	५२

		३	१२
	०	३६	
	२९	३६	
४	३		
४	३३	१५	१२

		०	४४
	०	२०	
	४	५७	
२	१५		
२	२०	१७	४४

चंद्र इष्ट दृष्टि––

१८–५ भाव ६ पर, ११–२२ भाव ७ पर, ४–३३ भाव ८ पर, २–२० भाव १२ पर

चंद्र की भाव कष्ट दृष्टि साधना

लग्न पर २४–३३ २ भाव पर ३९–४८ ३ भाव भाव १८–४६

चं० क० × २३–१९ चं०क० × २३–१९ चं० क० × २३–१९

		१०	२७
	७	३६	
	१२	३९	
९	१२		
९	३२	२५	२७

		१५	१२
	१२	२१	
	१८	२४	
१४	५७		
१५	२८	०	१२

		१४	३४
	५	४२	
	१७	३८	
६	५४		
७	१७	३४	३४

चंद्र कष्ट दृष्टि––

९-३२ लग्न पर, १४-२८ भाव २ पर, ७-१७ भाव ३ पर,

४ भाव २४–८ ५ भाव पर ५४–२३

चं०क० × २३–१९ चं० क० × २३–१९

		२	३२
	७	३६	
	३	४	
९	१२		
९	२२	४२	३२

		७	१७
	१७	६	
	८	४९	
२०	४२		
२१	८	२	१७

९-२२ भाव ४ पर, २१-८ भाव ५ पर

६ भाव पर ३९--४८ ७ भाव पर २५–१३ ८ भाव पर ९–४८ १२ भाव पर ५–११

चंद्र कष्ट × २३–१९ चंद्र क० × २३–१९ चंद्र क० × २३-१९ चंद्र कष्ट × २३–१९

		१५	१२
	१२	२१	
...	...	...	...
	१८	२४	
१४	५७		
१५	२८	०	१२

		४	७
	७	५५	
...	...	...	...
	४	५९	
९	३५		
९	४७	५८	७

		१५	१२
	२	५१	
	...	...	...
	१८	२४	
३	२७		
३	४८	३०	१२

		३	२९
	१	३५	
	...	...	...
	४	१३	
१	५५		
२	०	५१	२९

चंद्र कष्ट दृष्टि––

१५–२८ भाव ६ पर, ९–४७ भाव ७ पर, ३–४८ भाव ८ पर, २–२० भाव १२ पर

(३) मंगल की भाव इष्ट कष्ट दृष्टि साधन है।

मंगल का		भाव जिन पर मंगल की दृष्टि है।								
इष्ट	कष्ट	लग्न	५ भाव	६ भाव	७ भाव	८ भाव	९ भाव	१०भाव	११भाव	१२भाव
२५-४१	३४-११	७-५९	७-५०	३७-१६	४५-५९	१५-९	३१-२२	६०-०	४४-१८	२२-३४

लग्न पर ७-५९ ५ भाव पर ७-५० ६ भाव पर ३७-१६

मंगल इ० × २५-४१ मं० इष्ट × २५–४१ मं० इ० × २५–४१

		४०	१९
	४	४७	
...	...	...	...
	२४	३५	
२	५५		
३	२५	२	१९

		३४	१०
	४	४७	
...	...	...	...
	२०	५०	
२	५५		
३	२१	११	१०

		११	३७
	२५	१७	
...	...	...	...
	६	४०	
१५	२५		
१५	५७	८	३७

मंगल इष्ट दृष्टि––३-२५ लग्न पर, ३-२१ भाव ५ पर, १५-५७ भाव ६ पर

७ भाव पर ४५-४९ ८ भाव पर १५-९

मं० इ० × २५–४१ मं० इ० × २५–४१

		४०	१९
	३०	४५	
...	...	...	...
	२४	३५	
१८	४५		
१९	४१	१०	१९

		६	९९
	१०	१५	
...	...	...	...
	३	४५	
६	१५		
६	२९	६	९

मंगल इष्ट दृष्टि––१९-४१ भाव ७ पर, ६-२९ भाव ८ पर

भाव ९ पर ३१-२२ भाव १० पर ६०-० भाव ११ पर ४४-१८ भाव १२ पर २२-३४

मं० इ० × २५-४१ मं० इ० × २५-४१ मं० इ० × २५-४१ मं० इ० × २५-४१

		१५	२
	२१	११	
		९	१०
१२	५५		
१३	२५	३६	२

		०	०
	४१	०	
		०	०
२५	०		
२५	४१	०	०

		१२	१८
	३०	४	
	७	३०	
१८	२०		
१८	५७	४६	१८

		२३	१४
	१५	२	
	१४	१०	
९	१०		
९	२९	३५	१४

मंगल इष्ट दृष्टि—

१३-२३ भाव ९पर, २५-४१ भाव १०पर, १८-५७ भाव११पर, ९-२७ भाव १२ पर

मंगल की भाव कष्ट दृष्टि साधन

लग्न पर ७-५९ ५ भाव पर ७-५० ६ भाव पर ३७-१६

मं० क० × ३४-११ मं० क० × ३४-११ मं० क० × ३४-११

	१	१०	४९
		१७	
	३३	२६	
३	५८		
४	३२	५३	४९

		९	१०
	१	१७	
	२८	२०	
३	५८		
४	२७	४६	१०

		२	५६
	६	४७	
	९	४	
२०	५८		
२१	१३	१३	५६

मंगल कष्ट दृष्टि—

४-३२ लग्न पर ४-२७ भाव ५ पर २१-१३ भाव ६ पर

७ भाव पर ४५-५९ ८ भाव पर१५-९

मं० क० × ३४-११ मं० क० × ३४-११

		१०	४९
	८	१५	
	३३	२६	
२५	३०		
२६	११	५१	४९

		१	३९
	२	४५	
	५	६	
८	३०		
८	३७	५२	३९

मंगल कष्ट दृष्टि

२६-११ भाव ७ पर ८-३७ भाव ८ पर

भाव ९ पर ३१-२२ भाव १० पर ६०-० भाव ११ सर ४४-१८ भाव १२ पर २२-३४

मं० क० × ३४-११

		४	२
	५	४१	
	१२	२८	
१७	३४		
१७	५२	१३	२

मं० क० × ३४-११

		०	०
	११	०	
	०	०	
३४	०		
३४	११	०	०

मं० क० × ३४-११

		३	१८
	८	४	
	१०	१२	
२४	५६		
२५	१४	१९	१८

मं० क० × ३४-११

		६	१४
	४	२	
	१९	१६	
१२	२८		
१२	५१	२४	१४

मंगल कष्ट दृ०—

१७-५२ भाव ९पर, ३४-११ भाव१०पर, २५-१४ भाव ११ पर, १२-५१ भाव १२ पर

(४) बुध की भाव इष्ट कष्ट दृष्टि साधन

बुध		भाव जिन पर बुध की दृष्टि है									
इ०	क०	लग्न	भाव २	३भाव	७भाव	८भाव	९भाव	१०भाव	११भाव	१२भाव	
३९-१८	२०-४१	३६-१६	२०-५०	५-२५	८-४३	३३-१८	३५-२५	१०-०	३८-१७	५०-५०	

बुध भाव इष्ट दृष्टि साधन

लग्न पर ३६-१६

बुध इ० × ३९-१८

		४	४८
	१०	४८	
	१०	२४	
२३	२४		
२३	४५	१६	४८

बुध इ० इ०—

२३-४५ लग्न पर

२ भाव पर २०-५०

बुध इ० × ३९-१८

		१५	०
	६	०	
	३२	३०	
१३	०		
१३	३८	४५	०

१३-३८ भाव २ पर

३ भाव पर ५-२५

बुध इ० × ३९-१८

		७	३०
	१	३०	
	१६	१५	
३	१५		
३	३२	५२	३०

३-३२ भाव ३ पर

७ भाव पर ८-४३

बुध इ० × ३९-१८

		१२	५४
	२	२४	
	२७	५७	
५	१२		
५	४२	३३	५४

बुध इ० इ०—

५-४२ भाव ७ पर

८ भाव पर ३३-१८

बुध इ० × ३९-१८

		५	२४
	९	५४	
	११	४२	
२१	२७		
२१	८४	४१	२४

बुध इ० इ०

२१-४८ भाव ८ पर

९ भाव पर ३५–२५ १०भाव पर१०–० ११ भाव पर३८–१७ १२भाव पर५०–५०

बुध इ० × ३९–१८ बुध इ० × ३९–१८ बुध इ० × ३९–१८ बुध इ० × ३९–१८

		७	३०
	१०	३०	
	१६	१५	
२२	४५		
२३	११	५२	३०

		०	०
	३	०	
	०	०	
६	३०		
६	३३	०	०

		५	६
	११	२४	
	११	३	
२४	४२		
२५	४	३२	६

		१५	०
	१५	०	
	३२	३०	
३२	३०		
३३	१७	४५	०

बुध इ० ह०—

२३–११ भाव ९ पर, ६–३३ भाव १० पर, २५–४ भाव ११ पर, ३३–१७ भाव १२पर

बुध भाव कष्ट दृष्टि साधन

लग्न पर ३६-१६ २ भावपर २०-५० ३ भावपर ५-२५

बुध क० × २०–४१ बुध क० × २०–४१ बुध क० × २०–४१

		१०	५६
	२४	३६	
	५	२०	
१२	०		
१२	३०	६	५६

		३४	१०
	१३	४०	
	१६	४०	
६	४०		
७	१०	५०	४०

		१७	५
	३	२५	
	८	२०	
१	४०		
१	५२	२	५

बुध कष्ट ह०—

१२-३० लग्न पर ७-१० भाव २ पर १-१५ भाव ३पर

७ भाव पर ८-४३ ८ भाव पर ३३-१८

बुध क० × २०–४१ बुध क० × २०–४१

		२९	२३
	५	२८	
	१४	२०	
२	४०		
३	०	१७	२३

		१२	१८
	२२	३३	
	६	०	
११	०		
११	२८	४५	१८

बुध कष्ट ह०—

३-० भाव ७ पर ११-२८ भाव ८ पर

९ भाव पर ३५–२५ १० भाव पर १०–० ११ भाव पर ३८–१७ १२ भाव पर५०–५०

वुध क० × २०–४१ बुध क० × २०–४१ वुध क० × २०–४१ वुध क × २०–४१

		१७	५
	२३	५५	
	८	२०	
११	४०		
१२	१२	३२	५६

		०	०
	६	५०	
	०	०	
३	२०		
३	२६	५०	०

		११	३७
	२५	५८	
	५	४०	
१२	४०		
१३	११	४९	३७

		३४	१०
	३४	१०	
	१६	४०	
१६	४०		
१७	३१	२४	१०

वुध क० इ०––

१२–१२ भाव ९ पर, ३–२६ भाव १० पर, १३–११ भाव ११ पर, १७–३१ भाव१२पर

(५) गुरु की भाव इष्ट कष्ट दृष्टि साधन

गुरु		भाव जिन पर गुरु की इ० है।							
इ०	क०	ल०	२भाव	३भाव	४भाव	५भाव	६भाव	७भाव	८भाव१२भाव
१६-८	२५-३४	२६-४३	५१-१६	३३-११	२८-३०	५३-१७	५१-१६	४२-२५	८-४३ ६-१६

गुरु भाव इष्ट दृष्टि साधन

ल० पर २६-४३ २ भा० पर ५१-१६ ३ भा० पर ३३-११

गु० इ० × १६–८ गु० इ० × १६–८ गु० इ० × १६–८

		५	४४
	३	२८	
	१	१२	८
	६५	६	
	७१	१	१४४

		२	८
	६	४८	
	४	१६	
१३	३६		
१३	४७	६	८

		१	२८
	४	२४	
	२	५६	
८	४८		
८	५५	२१	२८

गुरु इ० इ०––

७-११ ल० पर १३-४७ भाव २ पर ८-५५भाव ३ पर

४ भा० पर २८-३० ५ भा० पर ५३-१७

गु० इ० × १६–८ गु० इ० × १६–८

		४	०
	३	४४	
	८	०	
७	२८		
७	३९	४८	०

		२	१६
	७	४	
	४	३२	
१४	८		
१४	१९	३८	१६

गुरु इ० इ०—

७-३९ भाव ४ पर १४-१९ भाव ५ पर

६ भाव पर ५१-१६ गुरु इष्ट × १६-८

		२	८
	६	४८	
	४	१६	
१३	३६		
१३	४७	६	८

७ भाव पर ४२-२५ गु० इ० × १६-८

		३	२०
	५	३६	
	६	४०	
११	१२		
११	२४	१६	२०

८ भाव पर ८-४३ गु० इ० × १६-८

		५	४४
	१	४	
	११	२८	
२	८		
२	२०	३७	२४

१२ भाव पर ६-१६ गु० इं० × १६-८

		२	८
	०	४८	
	४	१६	
१	३६		
१	४१	६	८

गुरु इष्ट दृष्टि—

६ भाव पर १३-४७, ७ भाव पर ११-२४, ८ भाव पर २-२०, १२ भाव पर १-४१

गुरु भाव कष्ट दृष्टि साधन

लग्न पर २६-४३ गुरु कष्ट × २५-३४

		२४	२२
	१४	४४	
	१७	५५	
१०	५०		
११	२३	३	२२

२ भाव पर ५१-१६ गुरुक० × २५-३४

		६	४
	२८	५४	
	६	४०	
२१	१५		
२१	५०	४३	४

३ भाव पर ३३-११ गु०क० × २५-३४

		६	१४
	१८	४२	
	४	३५	
१३	४५		
१४	८	२३	१४

गुरु कष्ट दृष्टि—

लग्न पर ११-२३ २ भाव पर २१-५० ३ भाव पर १४-८

४ भाव पर २८-३० गु०क० × २५-३४

		१७	०
	१५	५२	
	१२	३०	
११	४०		
१२	८	३६	०

५ भाव पर ५३-१७ गु० क० × २५-३४

		६	३८
	३०	२	
	६	५५	
२२	५		
२२	४२	६	३८

गुरु कष्ट दृष्टि—

४ भाव पर १२-८ ५ भाव पर २२-४२

६ भाव पर ५१-१६
गुरु कष्ट × २५-३४

		९	४
	२८	५४	
	६	४०	
२१	१५		
२१	५०	४३	४

७ भाव पर ४२-५५
गुरु कष्ट × २५-३४

		१४	१०
	२३	४८	
	१०	२५	
१७	३०		
१८	४	२७	१०

८ भाव पर ८-४३
गुरु कष्ट × २५-३४

		२४	२२
	४	३२	
	१७	५५	
३	२०		
३	४२	५१	२२

१२ भाव पर ६-१६
गुरु कष्ट × २५-३४

		९	४
	३	२४	
	६	४०	
२	३०		
२	४०	१३	४

गुरु कष्ट दृष्टि—

६ भाव पर २१-५० ७ भाव पर १८-४ ८ भाव पर ३-४२ १२ भाव पर २-४०

(९) शुक्र की भाव इष्ट कष्ट दृष्टि साधन।

शुक्र		भाव जिन पर शुक्र की दृष्टि है								
इष्ट	कष्ट	लग्न	२भाव	६भाव	७भाव	८भाव	९भाव	१०भाव	११भाव	१२भाव
३१-१४	२८-३८	२३-२३	७-५८	७-१	२८-१३	३७-५८	१५-५	३१-२९	५२-३२	३७-५८

शुक्र भाव इष्ट दृष्टि साधन

लग्न पर २३-२३
शुक्र इष्ट × ३१-१४

		५	२२
	५	२२	
	११	५३	
११	५३		
१२	१०	२०	२२

२ भाव पर ७-५८
शुक्र इष्ट × ३१-१४

		१३	१२
	१	३८	
	२९	५८	
३	३७		
४	८	४९	१२

६ भाव पर ७-१
शुक्र इष्ट × ३१-१४

		०	१४
	१	३८	
	०	३१	
३	३७		
३	३९	९	१४

७ भाव पर २८-१३
शुक्र इष्ट × ३१-१४

		३	२
	६	२	
	६	४३	
१४	२८		
१४	४०	४८	२

८ भाव पर ३७-५८
शुक्र इष्ट × ३१-१४

		१३	३२
	८	३८	
	२९	५८	
१९	७		
१९	४५	४९	३२

शुक्र इष्ट दृष्टि—

लग्न पर १२-१०, २भाव पर ४-८, ६भाव पर ३-३९, ७भाव पर १४-४०, ८भाव पर १९-४५

९ भाव पर १५-५
शुक्र इष्ट × ३१-१४

		१	१०
	३	३०	
	२	३५	
७	४५		
७	५१	६	१०

१० भावपर ३१-२९
शुक्र इष्ट × ३१-१४

		६	४६
	७	१४	
	१४	५९	
१६	१		
१६	२३	१९	४६

११ भाव पर ५२-३२
शुक्र इष्ट × ३१-१४

		७	२८
	१२	८	
	१६	३२	
२६	५२		
२७	२०	४७	२८

१२ भाव पर ३७-५८
शुक्र इष्ट × ३१-१४

		१३	३२
	८	३८	
	२९	५८	
१९	७		
१९	४५	४९	३२

शुक्र ईष्ट दृष्टि—

९ भाव पर ७-५१, १० भाव पर १६-२३; ११ भाव पर २७-२०, १२ भाव पर १९-४५

शुक्र की भाव कष्ट दृष्टि साधन

लग्न पर २३-२३
शुक्र क० × २८—३८

		१४	३५
	१४	३५	
	१०	४४	
१०	४४	०	
१०	९	३३	३५

२ भाव पर ७-५८
शुक्र क० × २८—३८

		३६	४४
	४	२६	
	२७	४	
३	१६		
३	४८	६	४४

६ भाव पर ७-१
शुक्र क० × २८—३८

		०	३८
	४	२६	
	०	२८	
३	१६		
३	२०	५४	३८

७ भाव पर २८-१३
शुक्र क० × २८—३८

		८	१४
	१७	४४	
	५	५४	
१३	४		
१३	२७	४६	१४

८ भाव पर ३७-५८
शुक्र क० × २८—३८

		३६	४४
	२३	२६	
	२७	४	
१७	१६		
१८	७	६	४४

शुक्र क० दृ०—

ल०पर ११-९, २भाव पर ३-४८, ६भाव पर ३-२०, ७ भावपर १३-२७, ८भावपर१८-७

९ भाव पर १५–५ शुक्र क० × २२--३८			
		३	१०
	९	३०	
	२	२०	
७	०		
७	११	५३	१०

१०भावपर३१–२९ शुक्रक० × २२–३८			
		१८	२२
	१९	३८	
	१३	३२	
१४	२८		
१५	१	२८	२२

११भावपर५२–३२ शुक्रक० × २२–३८			
		२०	१६
	३२	५६	
	१४	५६	
२४	१६		
२५	४	१२	१६

१२भावपर३७–५८ शुक्रक० × २२–३८			
		३६	४४
	२३	२६	
	२७	४	
१७	१६		
१८	७	६	४४

शुक्र क० इ०—

९ भाव पर ७–११, १० भाव पर १५–१, ११ भाव पर २५–४, १२ भाव पर १८–७

(७) शनि की भाव इष्ट कष्ट दृष्टि साधन

शनि		भाव जिन पर शनि की इ० है								
इ०	क०	ल०	५ भाव	६ भाव	७भाव	८भाव	९ भाव	१०भाव	११भाव	१२भाव
१५-५२	४३-३	४०-३	२३-१८	५४-३५	४०-१	१९-११	२३-१८	५३-४५	३२-१०	४०-४८

शनि की भाव इष्ट दृष्टि साधन

लग्न पर ४०-३ शनि इ० × १५–५२			
		२	३६
	३४	४०	
	०	४५	
१०	०		
१०	३५	२७	३६

५ भाव पर २३-१८ शनि इ० × १५–५२			
		१५	३६
	१९	५६	
	४	३०	
५	४५		
५	९	४१	३६

६ भाव पर ५४-३५ शनि इ० × १५–५२			
		३०	२०
	४६	४८	
	८	३५	
१३	२०		
१४	१६	३	२०

७ भाव पर ४०-१ शनि इ० × १५–५२			
		०	५२
	३४	४०	
	०	१५	
१०	०		
१०	३४	५५	५२

८ भाव पर १९-११ शनि इ० × १५–५२			
		९	३२
	१६	२८	
	२	४५	
४	४५		
५	४	२२	३२

शनि इ० इ०—

ल०पर १०-३५, ५ भावपर ५-९, ६भावपर १४-१६, ७भावपर १०-३४, ८ भावपर५-४

९ भाग पर २३-१८ शनि इष्ट × १५–५२

		१५	३६
	१९	५६	
	४	३०	
५	४५		
६	९	४१	३६

१०भागपर५३-४५ शनि इ० × १५–५२

		३९	०
	४५	५६	
	११	१५	
१३	१५		
१३	१२	५०	०

११भागपर३९-१० शनिइ० × १५–५२

		८	४०
	३३	४८	
	२	३०	
९	४५		
१०	२१	२६	४०

१२भागपर४०-४८ शनिइ० × १५–५२

		४१	३६
	३४	४०	
	१२	०	
१०	०		
१०	४७	२१	३६

शनि इ० दृ०—

९ भाग पर ६-९, १० भाग पर१४-१२, ११ भाग पर१०-२१, १२ भाग पर १०-४७

शनि की भाव कष्ट दृष्टि साधन

लग्न पर ४०-३ शनि कष्ट × ४३–३

		०	९
	२	०	
	२	९	
२८	४०		
२८	४४	९	९

५ भागपर २३-१८ शनि कष्ट × ४३–३

		०	५४
	१	९	
	१२	५४	
१६	२९		
१६	४३	३	५४

६ भाग पर ५४-३५ शनि कष्ट × ४३–३

		१	४५
	२	४२	
	२५	५	
३८	४२		
३९	९	४८	४५

७ भाग पर ४०-१ शनि कष्ट × ४३–३

		०	३
	२	०	
	०	४३	
२८	४०		
२८	४२	४३	३

८ भाग पर १९-११ शनि कष्ट × ४३–३

		०	३३
	०	५७	
	७	५३	
१३	३७		
१३	४५	५०	३३

शनि क० दृ०—

ल०पर२८-४४, ५भागपर१६-४३, ६भागपर३९-९, ७भागपर २८-४२, ८भागपर१३-४५

९भाग पर२३-१८ शनि क० × ४३–३

		०	५४
	१	९	
	१२	५४	
१६	२९		
१६	४३	३	५४

१० भाग पर ५३-४५ शनि क० × ४३–३

		२	१५
	२	३९	
	३२	१५	
३७	५९		
३८	३३	५६	१५

११ भाग पर३९-१० शनि क० × ४३–३

		०	३०
	१	५७	
	७	१०	
२७	५७		
२८	६	७	३०

१२ भाग पर ४०-४८ शनि क० × ४३–३

		२	२४
	२	०	
	३४	२४	
२८	४०		
२९	१६	२६	२४

शनि कष्ट दृष्टि—

९भाग पर१६-४३, १०भाग पर३८-३३, ११ भाग पर२८-६, १२ भाग पर २९-१६

इष्टघ्न भाव दृष्टि (भाव इष्ट दृष्टि) चक्र

भाग	लग्न	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	२३'-२३"	१५'-५"	६'-४६"	०'-०"	०'-०"	०'-०"	०'-४९"	१०'-१५"	२२'-५५"	१३'-७"	५'-७"	३१'-१५"
चंद्र	११-४	१८-५	८-२८	१०-५३	२४-३१	१८-५	११-२२	४-३३	०-०	०-०	०-०	२-२०
मंगल	३-२५	०-०	०-०	०-०	३-२१	१५-५७	१९-४१	६-२९	१३-२५	२५-४१	१८-५७	९-२९
बुध	२३-४५	१३-३८	३-३२	०-०	०-०	०-०	५-४२	२१-४८	३३-११	६-३३	२५-४	३३-१७
गु०	७-११	१३-४७	८-५५	७-३९	१४-१९	१३-४७	११-२४	२-२०	०-०	०-०	०-०	१-४१
शुक्र	१२-११	४-८	०-०	०-०	०-०	३-१९	१४-४०	१९-४५	७-५१	१६-२३	१७-२०	१९-४५
शनि	१०-३५	०-०	०-०	०-०	५-९	१४-१६	१०-३४	५-४	६-९	१४-१२	१०-२१	१०-४७
शुभ योग	३०-३६	३६-०	१७-२३	१८-३२	३८-५०	३५-३१	३७-२६	२६-३८	७-५१	१६-३३	१७-२०	२३-४६
पाप योग	४१-८	२८-४३	१०-१८	०	८-३०	३०-१३	३६-४६	४३-३६	६५-४०	५९-३३	५९-१९	८४-४८

कष्टघ्न भाव दृष्टि (भाव कष्ट दृष्टि) चक्र

भाव	लग्न	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	१७'-४२"	११'-२५"	५'-८"	०-०"	०'-०"	०'-०"	०'-३७"	७'-४२"	१७'-२१"	९'-५६"	३'-५३"	२३'-३९"
चंद्र	९-३२	१५-२८	७-१७	९-२२	२१-८	१५-२८	९-४७	३-४८	०-०	०-०	०-०	२-०
मंगल	४-३२	०-०	०-०	०-०	४-२७	२१-१३	२६-११	८-३७	१७-५२	३४-११	२५-१४	१२-५१
बुध	१२-३०	७-१०	१-५२	०-०	०-०	०-०	३-०	११-२८	१२-१२	३-२६	१३-११	१७-३१
गु०	११-२३	२१-५०	१४-८	१२-८	२२-४२	२१-५०	१८-४	३-४२	०-०	०-०	०-०	२-४०
शुक्र	११-९	३-४८	०-०	०-०	०-०	३-२०	१३-२७	१८-७	७-११	१५-१	२५-४	१८-७
शनि	२८-४१	०-०	०-०	०-०	१६-४३	३९-९	२८-४२	१३-४५	१६-४३	३८-३३	२८-६	२९-१६
शुभ योग	३२-४	४१-६	२१-२५	२१-३०	४३-५०	४०-३८	४१-१८	२५-३७	७-११	१५-१	२५-४	२२-४७
पाप योग	६३-२५	१८-३६	७-०	०	२१-१०	६०-२२	५८-३०	४१-३२	६४-८	८६-६	१००-२४	८३-१७

जो उपरोक्त भाव इ० क० ह० दी है इस में भो, शुभ ग्रहों की और पाप ग्रहों की दृष्टि का पृथक् २ योग कर नीचे दिया है। बुध को (सूर्य के साथ रहने से) पाप ग्रह में गणना करने से, सूर्य, मंगल, बुध और शनि का इ० योग पाप इ० क० योग हुआ और चंद्र गु० शुक्र का शुभ इ० क० ह० योग हुआ।

भाव इ० क० गुणित षड्बल या भाव इ० और क० बल या भाव इ० षड्बल और भाव क० षड्बल।

जिस प्रकार ग्रह के षड्बल में ग्रह इ० और क० का पृथक् २ गुणा कर षड्बल युक्त इ० और क० बल साधन किया था। उसी प्रकार भाव के षड्बल से भाव स्वामी के इ० और क० का पृथक् २ गुणा करने से भाव का षड्बल युक्त इ० और क० बल होता है।

भाव षड्बल × भाव स्वामी इ० = भाव इ० षड्बल

" × " " क० = " क० "

अध्याय २३ में साधन किया हुआ भाव षड्बल (भाव स्फुट बल और पूर्व साधित भावस्वामी (ग्रहों) का इष्ट और कष्ट नीचे चक्र में दिया है जिनके गुणा करने से भाव इष्टघ्न या कष्टघ्न षड्बल प्राप्त होगा।

भाव	लग्न	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
भाव षड्बल	७°-३२'-४९''	६°-४७'-३४''	९°-१८'-५''	९°-४५'-७''	९°-२०'-८''	७°-३'-१९''	८°-५१'-८''	९°-५'-१०''	५°-४७'-५०''	६°-२५'-३८''	५°-३'-३८''	५°-२१'-५६''
भाव स्वामी	गुरु	मंगल	शुक्र	बुध	चंद्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि
ग्रह इष्ट	१६'-८''	२५'-४१''	३१'-१४''	३९'-१८''	२७'-४''	३२'-१८''	३९'-१८''	३१'-१४''	२५'-४१''	१६'-८''	१५'-५२''	१५'-५२''
ग्रह कष्ट	२५'-३४''	३४'-११''	२८'-३८''	२०-४१''	२३'-१९''	२४'-२७''	२०'-४१''	२८'-३८''	३४'-११''	२५'-३४''	४३'-३''	४३'-३''

भाव इष्टघ्न षड्बल या भाव इष्टबल साधन का उदाहरण

भाव स्वामी इष्ट × भाव स्फुट बल (भाव षड्बल) = भाव इष्ट बल ।

लग्न षड्बल ७°–३२′–४९″
भावेश इष्ट × ०–१६–८

			६	२२
		४	१६	
	०	५६		
		१३	४	
	८	३२		
१	५२			
०	०	०		
२	१	४५	२६	३२

लग्न भाव इष्ट बल

२ भाव षड्बल ६°–४७′–३४″
भावेश इष्ट × ०–२५–४१

			२३	१४
		३२	७	
	४	६		
		१४	१०	
	१९	३५		
२	३०			
०	०	०		
२	५४	२७	४०	१४

२ भाव का इष्ट बल

३ भाव ष० ९°–१८′–५″
भावेश इष्ट × ०–३१–१४

			१	१०
		४	१२	
	२	६		
		२	३५	
	९	१८		
४	३९			
०	०	०		
४	५०	३०	४८	१०

३ भाव का इष्ट बल

४ भाव ष० ९°–४५′–७″
भावेश इ० × ०–३९–१८

			२	६
		१३	३०	
	२	४२		
		४	३३	
	२९	१५		
५	५१			
०	०	०		
६	२३	१५	५	६

४ भाव का इष्ट बल

५ भाव का ष० ९°–२०′–८″
भावेश इष्ट × ०–२७–५

			०	३२
		१	२०	
	०	३६		
		३	३६	
	९	०		
४	३			
०	०	०		
४	१२	४०	५६	३२

५ भाव का इष्ट बल

६ भाव का ष० ७°–३′–१९″
भावेश इष्ट × ०–३२–१८

			५	४२
		०	५४	
	२	६		
		१०	८	
	१	१६		
३	५४			
०	०	०		
३	४७	३३	७	४२

६ भाव का इष्ट बल

७ भाव का ष० ८°–५१′–७″
भागेश इष्ट × ०–३९–१८

			२	२४
		१५	१८	
	२	२४		
	–	–	–	–
		५	१२	
	३३	९		
५	१२			
–	–	–	–	–
०	०	०		
–	–	–	–	–
५	४७	५३	३२	२४

७ भाव का ईष्टबल

८ भाव का ष० ९°–५′–१०″
भागेश इ० × ०–३१–१४

			२	२०
		१	१०	
	२	६		
	–	–	–	–
		५	१०	
	२	३५		
४	३९			
–	–	–	–	–
	०	०	७	
–	–	–	–	–
४	४३	४७	२२	२०

८ भाव का इष्टबल

९ भावका ष० ५°–४७′–५०″
भागेश इष्ट × ०–२५–४१

			३४	१०
		३२	७	
	३	२५		
–	–	–	–	–
		२०	५०	
	१	३५		
२	५			
–	–	–	–	–
०	०	०		
–	–	–	–	–
२	२८	५३	३१	१०

९ भाव का इष्टबल

१० भाव का ष० ६–२५–३८
भागेश इष्ट × ०–१६–८

			५	४
		३	२०	
	०	४८		
–	–	–	–	–
		१०	८	
	६	४०		
१	३६			
–	–	–	–	–
०	०	०		
–	–	–	–	–
१	४३	४१	३३	४

१० भाव का इष्टबल

११ भाव का ष०५°–३′–२८″
भागेश इष्ट × ०–१५–५२

			३२	५६
		२	३६	
	४	२०		
	–	–	–	–
		९	३०	
	०	४५		
१	१५			
–	–	–	–	–
०	०	०		
–	–	–	–	–
१	२०	१७	८	५६

११ भाव का इष्टबल

१२ भाव का ष०५°–२१′–५६″
भागेश इष्ट × ०–१५–५२

			४८	३२
		१८	१२	
	४	२०		
	–	–	–	–
		१४	०	
	५	१५		
१	१५			
–	–	–	–	–
	०	०	०	०
–	–	–	–	–
१	२५	८	०	३२

१२ भाव का इष्टबल

भाव इष्टघ्न षड्बलैक्य (भाव इष्टबल) चक्र

भाव	लग्न	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
इष्टबल	२°-१'-१५"	२°-५४'-२७"	४°-५०'-३०"	६°-२३'-१५"	४°-१२'-४०"	३°-४७'-३३"	५°-४७'-५३"	४°-४३'-४७"	२°-२८'-५३"	१°-४३'-४१"	१°-२०'-१७"	१°-२५'-८"

भाव कष्टघ्न षड्बलैक्य या भाव कष्ट बल साधन

भाव स्वामी क० × भाव स्फुट बल (भाव बल) = क० बल

लग्न षड् बल ७°-३२'-४९"

लग्नेश क० × ०-२५-३४

			२७	४६
		१८	८	
	३	५८		
		२०	२५	
	१३	२०		
२	५५			
०	०	०		
३	१२	५७	०	४६

लग्न का क० बल

२ भाव का ष० ६°-४७'-३४"

भावेश क० × ०-३४-११

			६	१४
		८	३७	
	१	६		
		१९	१६	
	२६	३८		
३	२४			
०	०	०		
३	५२	११	५९	१४

२ भाव क० बल

३ भाव का ष० ९-१८-५

भावेश क० × ०-२३-३८

			३	१०
		११	२४	
	५	४२		
		२	२०	
	८	२४		
४	१२			
०	०	०		
४	२५	१९	४७	१०

३ भाव का क० बल

४ भाव ष० ९-४५-७

भावेश क० × ०-२०-४१

			४	४७
		३०	४५	
	६	९		
		२	२०	
	१५	०		
३	०			
०	०	०		
३	२१	४२	९	४७

४ भाव का क० बल

५ भाग का प० ९°–२०′–८″

भागेश क० × ०–२३–१९

			२	३२
		६	२०	
	२	५१		
		३	४	
	७	४०		
३	२७			
०	०	०		
३	३७	४०	२६	३२

५ भाग का क. बल

७ भाग का प० ८–५१–८

भागेश क० × ०–२०–४१

			५	२८
		३४	१५	
	५	२८		
		२	४०	
	१७	०		
२	४०			
०	०	०		
३	३	५	३६	२८

७ भाग का क. बल

९ भाग का प. ५–४७–५०

भागेश क. × ०–३४–११

			९	१०
		८	३७	
	०	५५		
		२८	२०	
	२६	३८		
२	५०			
०	०	०		
३	१८	१०	६	१०

९ भाग का क. बल

६ भाग का प० ७°–३′–१९″

भागेश क० × ०–२४–२७

			८	३३
		१	२१	
	३	९	.	
		७	३६	
	१	१२		
२	४८			
०	०	०		
२	५२	३०	५	३३

६ भाग का क. बल

८ भाग का प० ९–५–१०

भागेश क० × ०–२८–३८

			६	२०
		३	१०	
	५	४२		
		४	४०	
	२	२०		
४	१२			
०	०	०		
४	२०	९	५६	२०

८ भाग का क. बल

१० भाग का प० ६–२५–३८

भागेश क. × ०–२५–३४

			२१	३२
		१४	१०	
	३	२४		
		१५	५०	
	१०	२५		
२	३०			
०	०	०		
२	४४	१९	२१	३२

१० भाग का क. बल

११ भाव का ष. ५–३–३८
भावेश क. × ०–४३–३

			१	१४
		०	६	
	०	१५		
		२७	१४	
	२	६		
३	३५			
०	०	०		
३	३७	५१	२४	५४

११ भाव का क. बल

१२ भाव का ष. ५–२१–५६
भावेश क. × ०–४३–६

			२	४८
		१	३	
	०	१५		
		४०	८	
	१५	३		
३	३५			
०	०	०		
३	५०	५६	१३	४८

१२ भाव का क. बल

भाव कष्टघ्न षड्बलैक्य (भाव कष्ट बल) चक्र

भाव लग्न	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
कष्ट ३°	३°	४°	३°	३°	२°	३°	४°	३°	२°	३°	३°
बल १२′	५२′	२५′	२१′	३७′	५२′	३′	२०′	१८′	४४′	३७′	५०′
५७″	११″	१६″	४२″	४०″	३०″	५″	६″	१०″	१६″	५१″	५६″

अध्याय २५

ग्रह के सप्तवर्ग के अनुसार शुभ अशुभ साधन

सप्तवर्ग का शुभाशुभ निर्णय करने के लिए सप्तवर्ग का स्पष्ट शुभ और स्पष्ट अशुभ निकालना पड़ता है जिस के लिये नीचे बताये अनुसार क्रम से गणित द्वारा स्पष्ट शुभ अशुभ साधन करना पड़ता है।

(१) सप्त वर्ग का शुभ और अशुभ चक्र बनाना

(२) शुभ पंक्ति और अशुभ पंक्ति बनाना

(३) शुभ गुणित शुभ पंक्ति और अशुभ गुणित अशुभ पंक्ति निकालना

(४) वर्गेश का इष्टघ्न या कष्टघ्न षड्बलैक्य और ग्रह के इष्टघ्न या कष्टघ्न षड्बलैक्य का गुणनफल निकालना।

(५) उपरोक्त गुणनफल का वर्गमूल निकालना।

(६) उपरोक्त वर्गमूल और क्रम ३ में बताये हुए शुभ या अशुभ गुणित पंक्ति का गुणन फल निकालना।

इस प्रकार शुभ को लेकर गणित करने से शुभ स्फुट होता है और अशुभ को लेकर गणित करने से स्फुट अशुभ होता है।

उपरोक्त गणित का उदाहरण आगे दिया है।

(१) सप्तवर्ग का शुभ और अशुभ चक्र बनाना

इस के लिए सप्तवर्ग चक्र का उपयोग होता है। अध्याय २२ के स्थान बल साधन के अंतर्गत १(२) सप्तवर्ग बल निकालने को सप्तवर्ग चक्र बना चुके हैं, वही सप्तवर्ग यहाँ लिया है। उस सप्तवर्ग में जो बल दिया है उस के अनुसार बल यहाँ नहीं लिया है। शुभ चक्र बनाने के लिए बल स्थापित करने की रीति यहाँ भिन्न हैं, वह रीति नीचे बतायी गई है।

सप्तवर्ग चक्र १

ग्रह	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ स्थान (गृह)	चंद्र	गुरु	शुक्र	चंद्र	गुरु	बुध	शुक्र
	सम	शत्रु	मित्र	अ. शत्रु	स्व.	अ. मित्र	अ. मित्र ;
(पूर्ण बल)	७-३०	३-४५	१५-०	१-५२	३०-०	२२-३०	२२-३०

२ होरा	रवि	चंद्र	रवि	चंद्र	चंद्र	चंद्र	रवि
	स्व.	स्व.	अ.मि.	अ.श.	सम	अ.श.	सम
(आधाबल)	१५-०	१५-०	११-१५	०-५६	३-४५	०-५६	३-४५
३ द्रेष्काण	गुरु	रवि	बुध	मंगल	मंगल	शुक्र	शनि
	सम	सम	सम	मित्र	सम	स्व.	स्व.
(आधाबल)	३-४५	३-४५	३-४५	७-३०	३-४५	१५-०	१५-०
४ सप्तमांश	चंद्र	मंगल	शनि	मंगल	मंगल	शुक्र	गुरु
	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	स्व०	शत्रु
(आधा)	३-४५	१-५२॥	१-५२॥	७-३०	३-४५	१५-०	१-५२॥
५ नवमांश	गुरु	शुक्र	शुक्र	शुक्र	बुध	गुरु	चंद्र
	सम	शत्रु	मित्र	अ.मि.	अ.श.	शत्रु	अ.श.
(आधा)	३-४५	१-५२॥	७-३०	११-१५	०-५६	१-५२॥	०-५६
६ द्वादशांश	शुक्र	रवि	मंगल	गुरु	चंद्र	गुरु	शनि
	सम	सम	स्व.	शत्रु	सम	शत्रु	स्व.
(आधा)	३-४५	३-४५	१५-०	१-५२॥	३-४५	१-५२॥	१५-०
७ त्रिशांश	मंगल	बुध	गुरु	गुरु	बुध	गुरु	शनि
	अ.मि.	सम	सम	शत्रु	अ.श.	शत्रु	स्व.
(आधा)	११-१५	३-४५	३-४५	१-५२॥	१-५६	१-५२॥	१५-०

इसी चक्र पर से शुभ और अशुभ चक्र बनता है : पहिले शुभ चक्र बनाना चाहिए। शुभ चक्र बनाने के लिए सप्तवर्ग में पंचधा मैत्री के अनुसार नीचे दिये चक्र से लेकर बल स्थापित करना होता है। स्थान में पूरा और शेष होरादि में उस बल का आधा बल नीचे दिए चक्र के अनुसार लिया जाता है।

ग्रह बल चक्र २

मैत्री आदि प्रकार	उच्च	मूलत्रि-कोण	स्व गृह	अधि मित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधि शत्रु	नीच
स्थान में बल (पूरा)	६०'-०''	४५'-०''	३०'-०''	२२'-३०''	१५'-०''	७'-३०''	३'-४५''	१'-५२''	०'-०''
होरा आदि में बल (आधा)	३०-०	२२-३०	१५-०	११-१५	७-३०	३-४५	१-५२॥	०-५६	०-०-०

उपरोक्त सप्तवर्ग चक्र में जो बल स्थान में लिया है वह पूर्ण बल है परन्तु होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश और त्रिशांश में पूर्ण बल का आधा बल ही लिया गया है।

जैसे स्थान में रवि सम गृह है। सम का बल ७'-३०'' है। चंद्र शत्रु गृही है ३'-४५'' शत्रु बल हुआ। मंगल मित्र गृही है मित्र बल १५-० हुआ। बुध अधिशत्रु गृही है। अधिशत्रु का बल १-५२ हुआ। गुरु स्वगृही है स्व. का बल ३०-० हुआ। शुक्र अधिमित्र के घर में है। अधि मित्र बल २२-३० हुआ। शनि भी अधि मित्र गृही होने से २०-३० बल पाया। यह स्थान बल पूर्व साधित सप्तवर्ग बल के अनुसार ही हुआ।

अब शेष होरादि वर्ग में जो पूर्ण बल होता है उस का आधा ही लेना पड़ेगा। होरा में रवि स्व. ३०-० का आधा १५-० बल पाया। चंद्र स्व. १५-०, मंगल अधि मित्र घर में ११-१५, बुध अ. शत्रु घर में ०-५६, गुरु सम गृह में ३-४५, शुक्र अ.श. घर में ०-५६, शनि सम घर में ३-४५ बल पाया। इसी प्रकार शेष वर्गों में भी आधाबल उपरोक्त बल चक्र के अनुसार सप्तवर्ग चक्र में रखा है।

अन्त में सब बल का योग, योग का चतुर्थांश स्थापित करना जैसे नीचे बताया है यही शुभ चक्र बन गया।

(१) शुभ चक्र ३

वर्ग	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ स्थान	७'-३०''	३'-४५''	१५'-०''	१'-५२''	३०'-०''	२२'-३०''	२२'-३०''
२ होरा	१५-०	१५-०	११-१५	०-५६	३-४५	०-५६	३-४५
३ द्रेष्काण	३-४५	३-४५	३-४५	७-३०	३-४५	१५-०	१५-०
४ सप्तमांश	३-४५	१-५२॥	१-५२॥	७-३०	३-४५	१५-०	१-५२॥
५ नवमांश	३-४५	१-५२॥	७-३०	११-१५	०-५६	१-५२॥	०-५६
६ द्वादशांश	३-४५	३-४५	१५-०	१-५२॥	३-४५	१-५२॥	१५-०
७ त्रिशांश	११-१५	३-४५	३-४५	१-५२॥	०-५६	१-५२॥	१५-०
योग	४८'-४५''	३३'-४५''	५८'-७॥''	३२'-४८''	४६'-५२''	५६'-३॥''	१०-१४'-३॥''
योग चतुर्थांश	१२-११	८-२६	१४-३१	८-१२	११-४२	१४-४५	०-१८-३०

यहाँ रवि के वर्ग का योग किया तो ४८'-४५'' हुआ। इस का चौथाई १२-११ हुआ। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के वर्ग का योग कर उस का चतुर्थांश निकाल कर चक्र के नीचे रखा है।

अशुभ चक्र बनाना

ऊपर जो सप्तवर्ग में बल स्थापित कर शुभ चक्र बनाया है इस शुभ बल को स्थान में १° में से घटाकर और होरादि में ३०' में से घटाकर स्थापित करना तो अशुभ चक्र बन जायगा।

ग्रह	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
स्थान में=	१°-०'-०"	१°-०'-०"	१°-०'-०"	१°-०'-०"	१°-०'-०"	१°-०'-०"	१°-०'-०'
-शुभ	०-७-३०	३-४५	१५-०	१-५२	३०-०	२२-३०	२२-३०
शेष अशुभ	०-५२-३०	०-५६-१५	०-४५-०	०-५८-८	०-३०-०	०-३७-३०	०-३७-३०
होरा में=	३०'-०"	३०'-०"	३०'-०"	३०'-०"	३०'-०"	३०'-०"	३०'-०'
-शुभ	१५-०	१५-०	११-१५	०-५६	३-४५	०-५६	३-४५
शेप अशुभ	१५-०	१५-०	१८-४५	२९-४	२६-१५	२९-४	२६-१५

इसी प्रकार प्रत्येक वर्ग का अशुभ निकालना पड़ता है। द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश द्वादशांश, त्रिशांश को भी इसी प्रकार निकाल लेना। इन में जो शुभ बल है उसे होरा के अनुसार ३०'-०" में से घटा देने पर अशुभ निकल आयगा।

प्रत्येक वर्ग के अंक को बार२ घटाने की असुविधा मिटाने के लिए नीचे १° में से घटाया हुआ अंक दिया है वही स्थान में अशुभ होगा और उसका आधा होरादि में अशुभ होगा। वास्तव में दोनों रीति से एक सा उत्तर आता है।

अशुभ बल चक्र ४

	स्व ग्रह	अधिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
	१°०'०"	१°०'०"	१°०'०"	१°०'०"	१°०'०"	१°०'०"
शुभ घटाया	३०-०	२२-३०	१५-०	७-३०	३-४५	१-५२
पूर्ण अशुभ	०-३०-०	०-३७-३०	०-४५-०	०-५२-३०	०-५६-१५	०-५८-८
अर्द्ध	०-१५-०	०-१८-४५	०-२२-३०	०-२६-१५	०-२८-७॥	०-२९-४

सप्तवर्ग में मैत्री के अनुसार ग्रह में पूर्ण अशुभ और होरादि में उसका आधा लेना जैसे ऊपर चक्र में बताया है।

जैसे सूर्य सम ग्रही है सम का अशुभ ५२-३० हुआ। चंद्र शत्रु ग्रही है तो उपरोक्त चक्र के अनुसार बल ५६-१५ हुआ मंगल मित्र गृही है ४५-० अशुभ बल मित्र का हुआ। बुध अधिशत्रु ग्रही है ५८-८ अशुभ बल हुआ। गुरु स्वस्थानी है स्व० का अशुभ बल

३०—० हुआ। शुक्र और शनि अधिमित्र गृही हैं जिन का अशुभ बल ३७—३० हुआ। यहाँ स्थान में पूर्ण अशुभ बल लिया है।

होराद्रि में पूर्ण अशुभ बल का आधा ही लिया जायगा। जैसे रवि स्व होरा में है तो आधा अशुभ बल १५-० लिया। चंद्र स्वगृही है १५—० अशुभ बल लिया। मंगल अधिमित्र के घर में है आधा अशुभ १८—४५ हुआ। बुध अधिशत्रु गृही है २९—४ अशुभ बल हुआ। गुरु सम गृही है तो आधा अशुभ बल २६—१५ हुआ। शुक्र अधिशत्रु गृहीं है अशुभ बल २९—४ हुआ। शनि सम गृही है अशुभ २६—१५ हुआ।

इसी प्रकार शेष द्रेष्काण आदि वर्ग में मैत्री के अनुसार आधा अशुभ बल निकाल कर नीचे दिए अशुभ चक्र में स्थापित किया है।

अशुभ चक्र ५

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ स्थान	५२′-३०″	५६′-१५″	४५′-०″	५८′-८″	३०′-०″	३७′-३०″	३७′-३०″
२ होरा	१५–०	१५–०	१८–४५	२९–४	२६–१५	२९–४	२६–१५
३ द्रेष्काण	२६–१५	२६–१५	२६–१५	२२–३०	२६–१५	१५–०	१५–०
४ सप्तमांश	२६–१५	२८–७॥	२८–७॥	२२–३०	२६–१५	१५–०	२८–७॥
५ नवमांश	२६–१५	२८–७॥	२२–३०	१८–४५	२९–४	२८–७॥	२९–४
६ द्वादशांश	२६–१५	२६–१५	१५–०	२८–७॥	२६–१५	२८–७॥	१५–०
७ त्रिंशांश	१८–४५	२६–१५	२६–१५	२८–७॥	२९–४	२८–७॥	१५–०

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
अशुभ योग	३°–११′–१५″	३°–२६′–१५″	३°–१′–५२॥″	३°–२७′–१२″
अशुभ चतुर्थांश	०–४७′–४८″	०–५१–२३	०–४५–२८	०–५१–४८

	गुरु	शुक्र	शनि
अशुभ योग	३°–१३′–८″	३–०–५६॥	२–४५–५६॥
अशुभ चतुर्थांश	०–४८–१७	०–४५–१४	०–४१–२९

इस चक्र के अंत में प्रत्येक ग्रह के अशुभ का योग करके उस योग का चतुर्थांश निकाल कर नीचे स्थापित किया है वह आगे काम आयगा।

शुभ योग और अशुभ योग को जोड़ने से ४° आता है जैसे सूर्य का अशुभ योग ३°–११′–१५″ और शुभ योग ४८′–४५″ है। दोनों का योग ४° हुआ इसी प्रकार सब ग्रहों के शुभ और अशुभ का योग कर के देख लेना कि योग ४° आता है या नहीं। यदि ४° से अधिक या कम योग आवे तो समझना कहीं भूल हो गई है। इसी प्रकार शुभ और अशुभ चतुर्थांश का योग १° होता है। चतुर्थांश निकालने में विकला के ३/४ तक शेष रहने पर कुछ भाग छूट जाने से २ विकला तक अंतर पड़ सकता है।

(२) शुभ और अशुभ पंक्ति बनाना

पहिले जो शुभ और अशुभ योग चतुर्थांश निकाल चुके हैं उसी शुभ चतुर्थांश से शुभ पंक्ति और अशुभ चतुर्थांश से अशुभ पंक्ति बनती है। परन्तु गृह (स्थान) में पूरा चतुर्थांश रहता है और होरादि शेष ६ वर्ग में चतुर्थांश का आधा रहता है।

शुभ और अशुभ चतुर्थांश पर से शुभ और अशुभ पंक्ति बनाना नीचे चक्र में बताया गया है।

वर्ग के शुभ योग का चतुर्थांश। चक्र ६

	सूर्य	चंद्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि	
								गृह (स्थान) में
शुभचतुर्थांश	१२'-११"	८'-२६"	१४'-३१"	८'१२"	११'-४२'	१४'-४५"	१८-३०	शुभपंक्ति
अशुभ ,,	४७-४८	५१-३३	४५-२८	५१-४८	४८-१७	४५-१४	४१-२९=	अशुभपंक्ति
								होरादि शेष वर्ग में
शुभचतु०अर्द्ध	६-५	४-१३	७-१५	४-६	५-५१	७-२२	९-१५=	शुभपंक्ति
अशुभचतु०,,	२३-५४	२५-४६	२२-४४	२५-५४	२४-८	२२-३७	२०-४४=	अशुभपंक्ति

शुभ पंक्ति चक्र ७

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ गृह	१२'-११"	८'-२६"	१४'-३१"	८'-१२"	११'-४२"	१४'-४५"	१८'-३०"
२ होरा	६-५	४-१३	७-१५	४-६	५-५१	७-२२	९-१५
३ द्रेष्काण	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
४ सप्तमांश	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
५ नवमांश	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
६ द्वादशांश	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
७ त्रिशांश	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,

अशुभ पंक्ति चक्र ८

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ गृह	४७'-४८"	५१'-३३"	४५'-२८"	५१'-४८"	४८'-१७"	४५'-१४"	४१'-२९"
२ होरा	२३-५४	२५-४६	२२-४४-	२५-५४	२४-८	२२-३७	२०-४४
३ द्रेष्काण	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
४ सप्तमांश	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
५ नवमांश	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
६ द्वादशांश	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
७ त्रिशांश	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,

यहाँ पर शुभ चतुर्थांश रवि का १२–११ है वह शुभ पंक्ति में रवि के नीचे रखा और उसका आधा ६–५ होरा में रखा। जितना होरा में है उतना ही शेष वर्ग में रहता है।

इसी प्रकार अशुभ चतुर्थांश सूर्य का ४७–४८ है वह सूर्य की अशुभ पंक्ति में ग्रह में रखा। इस का आधा २३–५४ होरा में रखा और होरा के अनुसार ही शेष वर्ग में वही अंक रहेगा।

इस प्रकार शेष ग्रहों के शुभ और अशुभ चतुर्थांश और उसका आधा लेकर उपरोक्त शुभ पंक्ति और अशुभ पंक्ति बनाई गई है।

(३) वर्गेश शुभ योग गुणित शुभ पक्ति और वर्गेश अशुभ योग गुणित अशुभ पंक्ति (शुभ गुणित शुभ पंक्ति और अशुभ गुणित अशुभ पंक्ति) बनाना

वर्गेश शुभ योग × ग्रह के स्थान होरादि की शुभ पंक्ति = शुभ गुणित शुभ पंक्ति।

शुभ गुणित शुभ पंक्ति बनाना

इसके बनाने के लिये ग्रह जिस ग्रह के घर में हो उस घर के स्वामी का शुभ योग लेना और उस ग्रह के शुभ पंक्ति से (जो पहिले निकाल चुके हैं) गुणा करना। जो दोनों का गुणनफल होगा वही उस ग्रह का शुभ गुणित शुभ पंक्ति में रखा जायगा।

इसी अध्याय के आरंभ का सप्तवर्ग चक्र देखो, जिससे रवि के विषय में विचार करते हैं।

(१) रवि चंद्र के स्थान में है = चंद्र शुभयोग × रवि ग्रह शुभपंक्ति शुभगुणित शुभपंक्ति
३३–४५ १२–११ = ०–६–५१

(२) रवि स्व (रवि) होरा ,, = रवि शु०योग × रवि होरा शुभपंक्ति
४८–४५ ६'–५" = ४–५६

(३) ,, गुरु के द्रेष्काण में है = गुरु शु०योग ४६–५२ × रविद्रेष्काण शु०पं० ६-५=४-४५
(४) ,, चंद्र के सप्तमांश ,, = चंद्र ,, ३३–४५ × ,, सप्तमांश शु०पं० ६-५=३-२५
(५) ,, गुरु के नवमांश ,, = गुरु ,, ४६–५२ × ,, नवमांश ,, ६-५=४-४५
(६) ,, शुक्र के द्वादशांश ,, = शुक्र ,, ५९–३॥ × ,, द्वादशांश ,, ६-५=५-५९
(७) ,, मंगल के त्रिंशांश ,, = मंगल ,, ५८–७॥ × ,, त्रिंशांश ,, ६-५=५-२३

इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के सम्बन्ध में विचार कर वह ग्रह जिस के स्थान में हो उसके शुभ योग से और वर्ग के अनुसार उस ग्रह के शुभ पंक्ति से गुणाकर आगे दिया हुआ शुभ गुणित शुभ पंक्ति के चक्र में स्थापित किया है। यहाँ गुणनफल अंशात्मक न मानकर कलात्मक माना है।

शुभ गुणित शुभ पंक्ति निकालने का गणित

(१) रवि चंद्र के स्थान में है

चंद्र शु० योग ३३′–४५″

रवि शु० पं० × १२–११

(स्थान में)

		८	१५
	६	३	
…	…	…	…
	९	०	
६	३६		
६	५१	११	१५

रवि स्थान में ६′- ५१″

२ रवि स्व होरा में

रवि शु० यो० ४८–४५

रवि शु० पं० × ६–५

(होरा में)

		३	४५
	४	०	
…	…	…	…
	४	३०	
४	४८		
४	५६	३३	४५

रवि होरा में ४′ ५६″

३-४ रवि, गुरु द्रेष्काण और गुरु नवांश में है

गुरु शु० यो० ४६′–५२″

रवि शु० पं× ६– २

द्रेष्काण और नवांश में

		४	२०
	३	५०	
…	…	…	…
	५	१२	
४	३६		
४	४५	६	२०

रवि द्रेष्काण में = ४–४५

,, नवांश में = ४–४५

५ रवि, सप्तमांश चंद्र का हैं।

चंद्र शु० यो० ३३′–४५″

रवि शु० पं० × ६–५

(सप्तमांश में)

		३	४५
	२	४५	
…	…	…	…
	४	३०	
३	१८		
३	२५	१८	४५

रवि सप्तमांश में

= ३–२५

१/द्वा रवि के द्वादशांश में शुक्र है

शुक्र शु० यो० ५९—३

रवि शु० पं × ६—५

(द्वादशांश में)

		०	१५
	४	५५	
...	...	...	...
	०	१८	
५	५४		
५	५९	१३	१५

रवि द्वादशांश में = ५—५९

२/स्था चंद्र गुरु के स्थान में

गुरु शु० यो० ४६—५२

चंद्र शु० पं० × ८—२६

(स्थान में)

		२२	३२
	१९	५६	
....	....	....	....
	६	५६	
६	८		
६	३५	१४	३२

चंद्र गृह में = ६—३५

२/द्रे—६ चंद्र के द्रेष्काण जौर द्वादशांश में रवि है

रवि शु० यो० २८—४५

चंद्र शुभ पं० × ४—१३

(द्रेष्काण आदि में)

		९	४१
	१०	२४	
....	....	....	....
	३	०	
३	१२		
३	२५	३३	४५

चंद्र द्रेष्काण में ३—२५

„ द्वादशांश में = ३—२५

१/त्रि रवि के त्रिशांश में मंगल है

मंगल शु० यो० ५८—७

रवि शु० पं० × ६—५

(त्रिशांश में)

		०	३५
	४	५०	
....	....	....	....
	०	४२	
५	४८		
५	५३	३२	३५

रवि त्रिशांश में = ५—५३

२/हो चंद्र स्व होरा में

चंद्र शु० यो० ३३—४५

चंद्र शु० पं० × ४—१३

(होरा में)

		९	४५
	७	९	
....	....	....	....
	३	०	
२	१२		
२	२२	१८	४५

चंद्र होरा में = २—२२

२/स चंद्र के सप्तमांश में मंगल है

मंगल शु० यो० ५८—७

चंद्र शु० पंक्ति × ४—१३

(सप्तमांश में)

		१	३१
	२२	३४	
....	....	....	....
	०	२८	
३	५२		
४	५	३	३१

चंद्र सप्तमांश में = ४—५

२/५ चंद्र के नवांश में शुक्र है
शुक्र शु० यो० ५९–३
चंद्र शु० पं० × ४–१३
(नवांश में)

		०	३९
	१२	४७	
......	......	......	......
	०	१२	
२	५७		
३	९	५९	३९

चंद्र नवांश में = ३–९

३/१ मंगल में शुक्र गृही है
शुक्र शु० यो० ५९–३
मंगल शु० पं० × १४–३१
(गृह में)

		१	३३
	३०	२९	
......	......	......	......
	०	४२	
१	४६		
१४	१७	२	३३

मंगल गृह में = १४–१७

३/३ मंगल के द्रेष्काण
में बुध है।
बुध शु० यो० ३२–४८
मंगल शु० पं० × ७–१५
(द्रेष्काण में)

		१२	०
	८	०	
	५	३६	
३	४४		
३	५७	४८	०

मंगल द्रेष्काण में
= ३–५७

२/७ चंद्र के त्रिशांश में बुध है
बुध शु० यो० ३२–४८
चंद्र शु० पं × ४–१३
(त्रिशांश में)

		१०	२४
	६	५६	
......	......	......	......
	३	१२	
२	८		
२	१८	१८	२४

चंद्र त्रिशांश में = २–१८

३/२ मंगल के होरा में रवि है
रवि शु० यो० ९८–४५
मंगल शु० पं० × ७–१५
(होरा में)

		११	१५
	१२	०	
......	......	......	......
	५	१५	
५	३६		
५	५३	२६	१५

मंगल होरा में = ५–५३

३/४ मंगल के सप्तमांश
में शनि हैं
शनि शु० यो० १°–१४′–३″
मंगल शु० पं० × ७–१५
(सप्तमांश म)

	३	०	४५
०	१५	३०	
१	०	२१	
७	३८		
८	५६	५१	४५

मंगल सप्तमांश में
= ८–५६

$\frac{३}{५}$ मंगल के नवांश में
शुक्र है
शुक्र शु० यो० ५९–३
मंगल शु० पं० × ७–१५
(नवांश में)

		०	४५
	१५	४५	
....	....	....	....
	०	२१	
६	५३		
७	८	६	४५

मंगल नवांश में = ७–८

$\frac{४}{३–५}$ बुध के द्रेष्काण
और सप्तमांश में मंगल है
मंगल शु० यो० ५८–७
बुध शु० पं० × ४–६
(द्रेष्काण आदि में)

		०	४२
	५	४८	
....	....	....	....
	०	२८	
३	५२		
३	५८	१९	४२

बुध द्रेष्काण में ३–५८
,, सप्तमांश में ३–५८

$\frac{५}{४}$ बुध के नवमांश
में शुक्र है
शुक्र शु० यो ५९–३
बुध शु० पं० × ४–६
(नवांश में)

		०	१८
	५	५४	
....	....	....	....
	०	१२	
३	५६		
४	२	६	१८

बुध नवांश में ४–२

$\frac{४}{६–७}$ बुध के द्वादशांश
और त्रिंशांश में गुरु है
गुरु शु० यो० ४६–५२
बुध शु० पं० × ४–६
(त्रिंशांश आदि में)

		५	१२
	४	३६	
....	....	....	...
३	३	२८	
	४		
३	१२	९	१२

बुध द्वादशांश में ३–१२
,, त्रिंशांश में ३–१२

५/१ गुरु के स्व (गुरु के) स्थान में है

गुरु शु० यो० ४६−५२

गुरु शु०पं० × ११−४२

(गृह में)

		३६	२४
	३२	१२	
	९	३२	
६	२६		
६	८	२०	२४

गुरु गृह में = ६−८

५/३−४ गुरु के द्रेष्काण और सप्तमांश में मंगल है

मंगल श०यो० ५८−७

गुरु श० पं. × ५−५१

		५	५७
	४९	१८	
	०	३५	
४	५०		
५	३९	५८	३७

गुरु द्रेष्काण में ५−३९

,, सप्तमांश में ५−३९

६/५ शुक्र ये बुध के गृह में है

बुध श० यो. ३२−४८

शुक्र श०.पं. × १४−४५

(गृह में)

		३६	०
	२५	३६	
	११	१२	
७	२८		
८	५	२८	०

शुक्र गृह में ८−५

५/२−६ गुरु के होरा और द्वादशांश में चंद्र है

चंद्र शु० यो० ३३−४५

चंद्र श०पं० × ५−५१

(होरादि में)

		३८	१५
	२८	३	
	३	४५	
२	४५		
३	१७	२६	१५

गुरु होरा में ३−१७

,, द्वादशांश मे ३−१७

५/५−७ गुरु के नवांश और त्रिशांश में बुध है

बुध श०यो० ३२−४८

गुरु श० पं० × ५−५१

		४०	४८
	२७	१२	
	४	०	
२	४०		
३	११	५२	४८

गुरु नवांश में ३−११

,, त्रिशांश में ३−११

६/२ शुक्र के होरा में चंद्र है

चंद्र श० यो. ३३−४५

शुक्र श०.पं. × ७−२२

(होरादि में)

		१६	३०
	१२	६	
	५	१५	
३	५१		
४	८	३७	३०

शुक्र होरा में ४−८

६ शुक्र के द्रेष्काण
३–४ और सप्तमांश में शुक्र

शुक्र शु. यो. ५९–३
शुक्र शु. पं. × ७–२२

		१	६
	२१	३८	
—	—	—	—
	०	२१	
६	५३		
—	—	—	—
७	१५	०	६

६ शनि ये शुक्र गृही है।
शुक्र शु. यो. ५९–३
शनि शु. पं. × १८–३०
(गृह में)

		१	३०
	२९	३०	
—	—	—	—
	०	५४	
१७	४२		
—	—	—	—
१८	१२	२५	३०

शनि गृह में १८–१२

७ शनि के द्रेष्काण
३–६–७ द्वादशांश, त्रिशांश: में शनि है।
शनि शु. यो. १–१४–३
शनि शु.पं. × ९–१५

		०	४५
	३	३०	
०	१५		
—	—	—	—
	०	२७	
२	६		
९			
—	—	—	—
११	२४	५७	४५

शनि के द्रे.द्वा.त्रि. में
११–२४

६ शुक्र के नवांश
५–६–७ द्वादशांश,
त्रिशांश में गुरु है
गुरु शु. यो. ४६–५२
शुक्र शु. पं. × ७–२२

		१९	४
	१६	५२	
—	—	—	—
	६	४	
५	२२		
—	—	—	—
५	४५	१५	४

शुक्र नवांश, द्वादशांश
और त्रिशांश में ५–४५
३ शनि के होरा में रवि है।
रवि शु. यो. ४८–४५
शनि शु. पं. × ९–१५
(होरादि में)

		११	१५
	१२	०	
—	—	—	—
	६	४	
७	१२		
—	—	—	—
७	३०	५६	१५

शनि होरा में ५–३०

४ शनि के सप्तमांश
में गुरु है
गुरु शु. यो. ४६–५२
शनि शु. पं. × ९–१५

		१३	०
	११	३०	
—	—	—	—
	७	४८	
६	५४		
—	—	—	—
७	१३	३१	०

शनि सप्तमांश में
७–१३

९ शनि के नवांश में

चंद्र है

चंद्र शु. यो. ३३—४५

शनि शु. पं. × ९—१५

		११	१५
	८	१५	
	६	४५	
४	५७		
५	२	११	१५

शनि नवांश में ५—२

ऊपर गुणा करने से जो अंक प्राप्त हुए हैं उन्हीं को नीचे चक्र में स्थापित कर शुभ गुणित शुभ पंक्ति का चक्र बनाया है।

शुभ गुणित शुभ पंक्ति चक्र ९

वर्ग	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ स्थान	६'-५१"	६'-३५"	१४'-१७"	४'-३६"	९'-८"	८'-५"	१८'-१२"
२ होरा	४-५६	२-२२	५-५३	२-१८	३-१७	४-८	७-३०
३ द्रेष्काण	४-४५	३-२५	३-५७	३-५८	५-३९	७-१५	११-२४
४ सप्तमांश	३-२५	४-५	८-५६	३-५८	५-३९	७-१५	७-१३
५ नवमांश	४-४५	३-९	७-८	४-२	३-११	५-४५	५-२
५ द्वादशांश	५-५९	३-२५	७-१	३-१२	३-१७	५-४५	११-२४
७ त्रिंशांश	५-५३	२-१८	५-३९	३-१२	३-११	५-४५	११-२४

अशुभ गुणित अशुभ पंक्ति बनाना।

जिस प्रकार ग्रह के गृह होरादि में जिस ग्रह का वर्ग है उस का शुभ योग से शुभ पंक्ति का गुणा कर शुभ गुणित शुभ पंक्ति चक्र बनाया था उसी प्रकार शुभ योग स्थानों में अशुभ योग और शुभ पंक्ति के स्थानों में अशुभ पंक्ति का गुणा करने से जो गुणन फल आता है उस से वर्गेश अशुभ योग गुणित अशुभ पंक्ति (अशुभ गुणित अशुभ पंक्ति) बन जाता है

ग्रह जिसके गृह में हो उस घर के स्वामी का अशुभ योग से और उस ग्रह के अशुभ पंक्ति से गुणा करना। जो गुणन फल आवे उसे अशभ गुणित अशुभ पंक्ति के चक्र में स्थापित करना। पहिले बताये हुए सप्तवर्गी चक्र के अनुसार ही इसका भी विचार करना।

अशुभ गुणित अशुभ पंक्ति बनाने का गणित

१/१ रवि चंद्र गृही है

चंद्रअशुभ योग ३°–२६′–१५″

रवि अशुभ पंक्ति × ०–४७′–४८″

			१२	०
		२०	४८	
	२	२४		
		११	४५	
	२०	२२		
२	२१			
०	०	०		
२	४४	१८	४५	०

रवि गृह में २–४४–१८

$\frac{१}{३–५}$ रवि के द्रेष्काण और नवांश में गुरु है

गुरु अ. यो. ३°–१३′–८″

रवि अ. पं. × ०–२३–५४

			७	१२
		११	४२	
	२	४२		
		३	४	
	४	५९		
१	९			
०	०	०		
१	१६	५५	५३	१२

रवि द्रेष्काण और नवांश में १–१६–५५

१/२ रवि स्वहोरा में

रवि अ. यो. ३°–११′–१५″

रवि अ. पं. × ०–२३–५३

			१३	१०
		९	५४	
	२	४२		
		२	४५	
	४	१३		
१	९			
०	०	०		
१	१६	१०	५७	२०

रवि रोहा में १–१६–१०

१/४ रवि के सप्तमांश में चंद्र है

चंद्र अ. यो. ३°–२६′–१५″

रवि अ. पं. × ०–२३–५४

			१३	३०
		२३	२४	
	२	४२		
		५	४५	
	९	५८		
१	९			
०	०	०		
१	२२	९	२२	३०

रवि सप्तमांश में १–२२–९

१/६ रवि द्वादशांश में
शुक्र है

शुक्र अ. यो. ३-०-५६

रवि अ. पं. × ०-२३-५४

			५०	२४
		०	०	
	२	४२		
		२१	२८	
	०	०		
१	९			
०	०	०		
१	१२	४	१८	२४

रवि द्वादशांश में १-१२-४

१/७ रवि त्रिंशांश में
मंगल है

मंगल अ. यो ३-१-५२

रवि अ. पं. × ०-२३-५४

			४६	४८
		०	५४	
	२	४२		
		१९	५६	
	०	२३		
१	९			
०	०	०		
१	१२	२६	३६	४८

रवि त्रिंशांश में १-१२-२६

२/४ चंद्र गुरु गृही हैं

गुरु अ. यो. ३-१३-८

चंद्र अ. पं. × ०-५१-३३

			४	२४
		७	९	
	१	३९		
		६	४८	
	११	३		
२	३३			
०	०	०		
२	४५	५६	१	२४

चंद्र गृह में २-४५-५६

२/२ चंद्र स्वहोरा में

चंद्र अ. यो. ३-२६-१५

चंद्र अ. पं. × ०-२५-४६

			११	३०
		१९	५६	
	२	२८		
		६	१५	
	१०	५०		
१	१५			
०	०	०		
१	२८	३४	२२	३०

चंद्र होरा में १-२८-३४

$\frac{२}{३-६}$ चंद्र द्रेष्काण और

द्वादशांश में रवि

रवि अ. यो. ३–११–१५

चंद्र अ. पं. × ०–२५–४६

			११	३०
		८	२६	
	२	१८		
		६	१५	
	४	३५		
१	१५			
०	०	०		
१	२२	७	५२	३०

चंद्र द्रेष्काण, द्वादशांश

में १–२२–७

$\frac{२}{५}$ चंद्र नवांश में

शुक्र है

शुक्र अ. यो. पं. × ३–०–५६

चंद्र अ. पं × ०–२५–४६

			४२	५६
		०	०	
	२	१८		
		२३	२०	
	०	०		
१	१५			
०	०	०		
१	१७	४२	२	५६

चंद्र नवांश में

१–१७–४२

$\frac{२}{४}$ चंद्र सप्तमांश में

मंगल है.

मंगल अ. यो. ३–१–५२

चंद्र अ. पं. × ०–२५–४६

			३९	५२
		०	४६	
	२	१८		
		२१	४०	
	०	२५		
१	१५			
०	०	०		
१	१८	५	२५	५२

चंद्र सप्तमांश में

१–१८–५

$\frac{२}{७}$ चंद्र त्रिंशांश में

बुध है।

बुध अ. यो. ३–२७–१२

चंद्र अ. पं. × ०–२५–४६

			९	१२
		२०	४२	
	२	१८		
		५	०	
	११	१५		
१	१५			
०	०	०		
१	२८	५८	५१	५६

चंद्र नवांश में

१–२८–५८

३/१ मंगल शुक्र गृही है

शुक्र अ० यो० ३–०–५६

मंगल अ० पं० × ०–४५–२८

			२६	८
		०	०	
	१	२४		
…	…	…	…	…
		४२	०	
	०	०		
२	१५			
…	…	…	…	…
०	०	०		
२	१७	६	२६	८

मंगल गृह में २–१७–६

३/२ मंगल होरा में रवि है

रवि अ० यो० ३–११–१५

मंगल अ० पं० × ०–२२–४४

			११	०
		८	४	
	२	१२		
…	…	…	…	…
		५	३०	
	४	२		
१	६			
…	…	…	…	…
०	०	०		
१	१०	२७	४५	०

मंगल होरा में १–१०–२७

३/३ मंगल द्रेष्काण में बुध है

बुध अ० यो० ३–२७–१२

मंगल अ० पं० × ०–२२–४४

			८	४८
		१९	४८	
	२	१२		
…	…	…	…	…
		४	२४	
	६	५४		
१	६			
…	…	…	…	…
०	०	०		
१	१८	३०	२०	४८

मंगल द्रे० में १–१८–३०

३/४ मंगल सप्तमांश में शनि है

शनि अ० यो० २–४५–५६

मंगल अ० पं० × ०–२२–४४

			४१	४
		३३	०	
	१	२८		
…	…	…	…	…
		२०	३२	
	१६	३०		
०	४४			
…	…	…	…	…
०	०	०		
१	२	५२	१३	४

मं० सप्त० में १–२–५२

३/५ मंगल नवांश में शुक्र है

शुक्र अ० यो० ३–०–५६

मंगल अ० पं० × ०–२२–४६

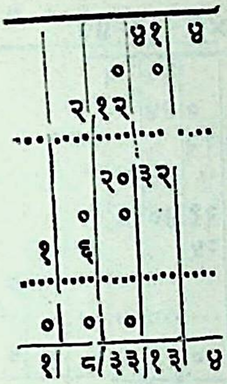

मंगल नवांश में १–८–३३

३/६ मंगल द्वादशांश में स्व = मंगल

मंगल अ० यो० ३–१–५२

मंगल अ० पं० × ०–२२–४४

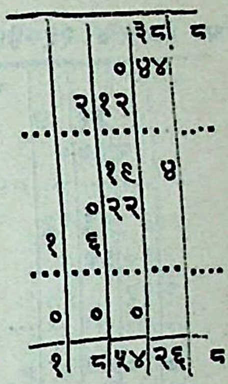

मं० द्वादशांश में १–८–५४

३/७ मंगल त्रिशांश में गुरु

गुरु अ० यो० ३–१३–८

मंगल अ० पं० × ०–२२–४४

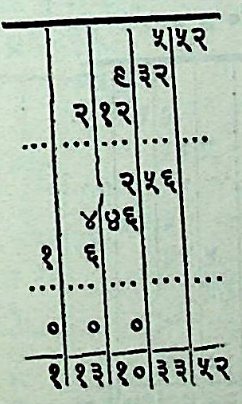

मंगल त्रिशांश में १–१३–१०

४/१ बुध चंद्र गृही है

चंद्र अ० यो० ३–२६–१५

बुध अ० पं० × ०–५१–४८

बुध गृह में २–५८–२

५ बुध होरा में चंद्र है

बुध अ० यो० ३–२६–१५
बुध अ० पं० × ०–२५–४४

			११	०
		१९	४	
	२	१२		
…	…	…	…	…
		६	१५	
	१०	५०		
१	१५			
…	…	…	…	…
०	०	०		
१	२८	२७	३०	०

बुध होरा में १–१८–२७

४
३–४ बुध द्रेष्काण व सप्तमांश में मंगल है

मंगल अ० यो० ३–१–५२
बुध अ० पं० × ०–२५–४४

			३८	८
		०	४४	
	२	१२		
…	…	…	…	…
		२१	४०	
	०	२५		
१	१५			
…	…	…	…	…
०	०	०		
१	१८	०	२	८

बुध द्रे० व सप्त० में १–१८–०

५ बुध नवांश में शुक्र है

शुक्र अ० यो० ३–०–५६
बुध अ० पं० × ०–२५–४४

			४१	४
		०	०	
	२	१२		
…	…	…	…	…
		२३	२०	
	०	०		
१	१५			
…	…	…	…	…
०	०	०		
१	१७	३६	१	४

बुध नवांश में १–१७–३६

४
६–७ बुध द्वादशांश व त्रिशांश में गुरु है

गुरु अ० यो० ३–१३–८
बुध अ० पं० × ०–२५–४४

			५	५२
		९	३२	
	२	१२		
…	…	…	…	…
		३	२०	
	५	२५		
१	१५			
…	…	…	…	…
०	०	०		
१	२२	४९	५७	५२

बुध द्वा० व त्रिशांश में १–२२–४९

५/६ गुरु स्व स्थानी

गुरु अ० यो० ३—१३—८

गुरु अ० पं० × ०—४०—१७

			२	१६
		३	४१	
	०	५१		
…	…	…	…	…
		६	२४	
	१०	२४		
२	२४			
…	…	…	…	…
०	०	०		
२	३५	२५	७	१६

गुरु गृह में २—३५—२५

५/२—६ गुरु होरा द्वादशांश में चंद्र है

चंद्र अ० यो० ३—२६—१५

गुरु अ० पं० ० × २४—८

			२	०
		३	२८	
	०	२४		
…	…	…	…	…
		६	०	
	९	२४		
१	१२			
…	…	…	…	…
०	०	०		
१	२१	५७	३०	०

गुरु होरा व द्वादशांश में १—२१—५७

५/३—४ गुरु द्रेष्काण व सप्तमांश में मंगल है

मंगल अ० यो० ३—१—५२

गुरु अ० पं० × ०—२४—८

			६	५६
		०	८	
	०	२४		
…	…	…	…	…
		२०	४८	
	०	२४		
१	१२			
…	…	…	…	…
०	०	०		
१	१३	९	२	५६

गुरु द्रेष्काण व सप्तमांश में—१—१३—९

५/५—७ गुरु नवांश व त्रिंशांश में बुध है

बुध अ० यो० ३—२७—१२

गुरु अ० पं० × ०—२४—८

			१	३६
		३	३६	
	०	२४		
…	…	…	…	…
		४	४८	
	१०	४८		
१	१२			
…	…	…	…	…
०	०	०		
१	२३	२०	२५	३६

गुरु नवांश व त्रिंशांश में १—२३—२०

५/६ शुक्र, बुध गृही है

बुध अ.यो. ३–२७–१२

शु. अ. पं. × ०–४५–१४

			२	४८
		६	१८	
	०	४२		
		९	०	
	२०	१५		
२	१५			
०	०	०		
२	२६	१२	२०	४८

शुक्र गृह में २–२६–१२

५/६ शुक्र होरा में चंद्र है

चंद्र अ. यो. ३–२६–१५

शुक्रअ.पं. × ०–२२–३९

			९	१५
		१६	२	
	१	५१		
		५	३०	
	९	३२		
१	६			
०	०	०		
१	१७	५४	४१	१५

शुक्र होरा में १–१७–४४

६ शुक्र द्रेष्काण व

३–४ सप्तमांश में शुक्र है

शुक्र अ.यो. ३–०–५६

शुक्र अ.पं. × ०–२२–३७

			३४	३२
		०	०	
	१	५१		
		२०	३२	
	०	०		
१	६			
०	०	०		
१	८	१२	६	३२

शुक्र द्रेष्काण वं

सप्तमांश में १–८–१२

६ शुक्र नवांश

५–६–७ द्वादशांश, त्रिंशांश में गुरु

गुरु अ.यो. ३–१३–८

शुक्र अ.पं. × ०–२२–३७

			४	५६
		८	१	
	१	५१		
		२	५६	
	४	४६		
१	६			
०	०	०		
१	१२	४८	१	५६

शुक्र नवांश, द्वा० त्रि०

में १–१२–४८

५ शनि शुक्र गृही है

शुक्र अ.यो. ३–०–५६

शनि अ.पं. × ०–४१–२९

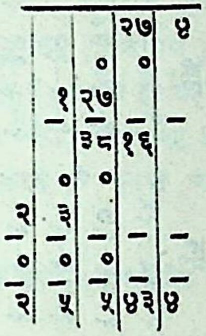

शनि गृह में २–५–५

६ शनि होरा में रवि

रवि अ.यो. ३–११–१५

शनि अ.पं. × ०–२०–४४

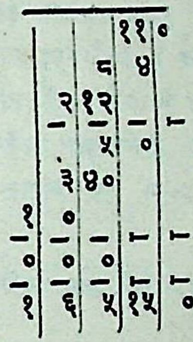

शनि होरा में १–६–५

७ शनि द्रेष्काण

३–६–९ द्वादशांश त्रिशांश में

शनि है।

शनि अ.यो. २–४५–५६

शनि अ.पं. × ०–२०–४४

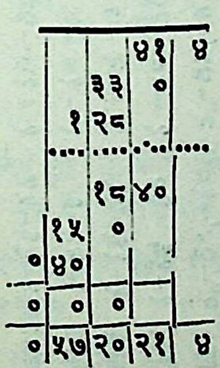

शनि द्रे० द्वाद० व

त्रिशांश में ०–५७–२०

८ शनि सप्तमांश में

गुरु है।

गुरु अ.यो. ३–१३–८

शनि अ.पं. × ०–२०–४४

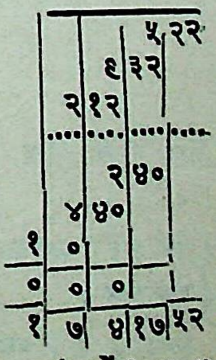

शनि सप्तमांश में १–७–४

ड़ शनि नवांश में चंद्र है:।

चंद्र अ.यो. ३–२६–१५

शनि अ.पं, × ०–२०–४४

			११	०
		१६	४	
	२	१२		
		५	०	
	८	४०		
१	०			
०	०	०		
१	११	१६	१५	०

शनि नवांश में १–११–१६

अशुभ गुणित अशुभ पंक्ति चक्र १०

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ स्थान	२°–४४′–१८″	२°–४५′–५६″	२°–१७′–६″	२°–५८′–२″	२°-३५′–२५″	२°–२६′–१२″	२°–५′–५″
२ होरा	१–१६–१०	१–२८–२४	१–१०–२७	१–२८–२७	१–२१–५७	१–१७–४४	१–६–५
३ द्रेष्काण	१–१६–५५	१–२२–७	१–१८–३०	१–१८–०	१–१३–९	१–८–१२	०–५७–२०
४ सप्तमांश	१–२२–९	१–१८–५	१–२–५२	१–१८–०	१–१३–९	१–८–१२	१–७–४
५ नवमांश	१–१६–५५	१–१७–४२	१–८–३३	१–१७–३६	१–२३–२०	१–१२–४८	१–११–१६
६ द्वादशांश	१–१२–४	१–२२–७	१–८–५४	१–२२–४९	१–२१–५७	१–१२–४८	०–५७–२०
७ त्रिंशांश	१–१२–२६	१–२८–५८	१–१३–१०	१–२२–४९	१–२३–२०	१–१२–४८	०–५७–२०

(४) वर्गेश तत्रस्थ ग्रह इष्टघ्न या कष्टघ्न बलैक्य घात साधन

अर्थात् ग्रह इष्ट बल या कष्ट बल और वह ग्रह जिस ग्रह के वर्ग में है (वर्ग स्वामी) दोनों के इष्ट बल या कष्ट बल का गुणन फल ।

इसके लिये, सप्तवर्ग चक्र के प्रत्यक वर्ग में जो २ ग्रह हैं उस वर्गेश का और ग्रह, जिसका वह वर्ग है, दोनों के इष्ट बल या कष्ट बल का गुणा करना पड़ता है । पहिले इष्टघ्न षड्बलैक्य (इष्ट बल) और कष्टघ्न षड्बलैक्य (कष्ट बल) अध्याय २४ में निकाल चुके हैं उनका ही यहाँ उपयोग होता है । दोनों के इष्ट बल का गुणा करने से एक चक्र वर्गेश तत्रस्थ ग्रह इष्टघ्न षड्बलैक्य चक्र बनेगा और दोनों के कष्ट बल का गुणा करने से दूसरा चक्र वर्गेश तत्रस्थ ग्रह कष्ट षड्बलैक्य घात चक्र बनेगा ।

सुविधा के लिये इष्टघ्न और कष्टघ्न षड्बलैक्य चक्र नीचे दिया है ।

इष्ट बल और कष्ट बल चक्र ११

बल	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट षड् बलैक्य (इष्ट बल)	३°—८'—५८''	३°—२१'—१६''	२°—६'—२४''	४°—३६'—५२''	१°—४०'—३३''	४°—२०'—२६''	१°—१०'—१६''
कष्टघ्न षड्बलैक्य (कष्ट बल)	२—२३—३	२—५३—२३	२—५२—१६	२—५७—१६	२—३६—२१	३—५८—४८	३—१०—५८

पूर्व दिये हुए सप्तवर्गी चक्र के अनुसार ही ग्रह और वर्गेश लेकर उनके इष्ट बल और कष्ट बल का गुणा करेंगे ।

(१) वर्गेश इष्टघ्न षड्बलैक्य (इष्ट बल) × ग्रह इष्टघ्न षड्बलैक्य (इष्ट बल)
(२) „ कष्टघ्न „ (कष्ट बल) × „ कष्टघ्न „ „ (कष्ट बल)

उदाहरण—यदि रवि का पहिले प्रत्येक वर्ग के सम्बन्ध से उपरोक्त घात निकालना है तो रवि का इष्ट बल लेकर वर्ग में जो वर्गेश हो प्रत्येक का पृथक् २

इष्ट बल लेकर गुणा करेंगे। जैसे रवि का इष्ट बल ३–८–५८ है। रवि के गृह और सप्तमांश में वर्गेश चंद्र है तो चंद्र का इष्ट बल × रवि का इष्ट बल ३–५–५८। रवि स्वहोरा में है तो रवि इष्ट ३–५–५८ × रवि इष्ट बल ३–५–५८। रवि के द्रेष्काण और नवांश में है तो गुरु इष्ट बल १–४०–२३ × रवि इष्ट बल ३–८–५८। इसी प्रकार प्रत्येक वर्गेश के इष्ट बल से रवि के इष्ट बल का पृथक्-२ गुणा करगें। इसी प्रकार और भी ग्रहों का गणित करने से इष्टघ्न घात चक्र बनेगा।

कष्टघ्न में रवि के कष्ट बल से प्रत्येक वर्गेश के कष्ट बल का पृथक् २ गुणा करना। इसी प्रकार सब ग्रहों के सम्बंध से गणित करने से कष्ट घात चक्र बनेगा। आगे इन सबका स्पष्ट उदाहरण दिया है।

(४) वर्गेश तत्रस्थ ग्रह इष्टघ्न षड्बलैक्य घात साधन

(ग्रह इष्ट बल × वर्ग स्वामी इष्ट बल।

१
१–४ रवि के गृह और
सप्तमांश में चंद्र है
चंद्र वर्गेश ३°–२१′–१९″
रवि ग्रह × ३–८–५८

			१५	२८
		२०	१८	
	२	५४		
		२	८	
	२	४८		
०	२४			
	०	४८		
१	३			
९				
१०	३३	५२	४१	२८

= १०–३३–५२

२ रवि के होरा में
रवि है
रवि होरेश ३–८–५८
रवि ग्रह × ३–८–५८

			५६	४
		७	४४	
	२	५४		
		७	४४	
	१	४		
०	२४			
	२	४		
०	२४			
९				
९	५५	८	२४	४

= ९–५५–८

१/३–५ रवि के द्रेष्काण व नवांश में गुरु है

गुरु वर्गेश १–४०–३०

रवि ग्रह × ३–८–५८

			३१	५४
		३८	४०	
	०	५८		
		४	२४	
	५	२०		
०	८			
	१	३९		
२	०			
३				
५	१६	५०	३५	५४

= ५–१६–५०

१/६ रवि द्वादशांशेश शुक्र है

शुक्र वर्गेश ४–२०–९

रवि ग्रह × ३–८–५८

			८	४२
		१९	२०	
	३	५२		
		१	१२	
	२	४०		
०	३२			
	०	२७		
१	०			
१२				
१३	३९	१९	४०	४२

= १३–३९–१९

१/७ रवि का त्रिशांशेष मंगल है

मंगल वर्गेश २–९–३६

रवि ग्रह × ३–८–५८

			२५	८
		८	४२	
	१	१६		
		३	२८	
	१	१२		
०	१६			
	१	१८		
०	२७			
६				
६	४६	५८	३५	८

= ६–४६–५८

२/९ चंद्र का गृहेश गुरु है

गुरु वर्गेश १–४०–३३

चंद्र ग्रह × ३–२१–१६

			८	४८
		१०	४०	
	०	१६		
		११	३३	
	१४	०		
०	२१			
	१	३९		
२	०			
३				
५	३७	१७	२१	४८

= ५–३७–१७

१
३-६ चंद्र का द्रेष्काणेश
और द्वादशांशेश रवि
चंद्र × रवि
= १०-३३-५२

देखो $\frac{१}{१}$

$\frac{३}{४}$ चंद्र का सप्तमांशेश
मंगल है
मंगल वर्गेश २-९-२६
चंद्र ग्रह × ३-२१-१६

			६	५६
		२	२४	
	०	३२		
		९	६	
	३	९		
०	४२			
	१	१८		
०	२७			
६				
७	१४	१०	३६	५६

= ७-१४-१०

$\frac{३}{५}$ चंद्र × नवांशेश शुक्र
शुक्र वर्गेश = ४-२०-२९
चंद्र ग्रह × ३-२१-१६

			७	४४
		५	२०	
	१	४		
		११	९	
	७	०		
१	२४			
	१	२७		
१	०			
१२				
१४	३३	४७	३६	४४

= १४-३३-४७

$\frac{३}{७}$ चंद्र × त्रिशांशेश बुध
बुध वर्गेश ५-३६-५२
चंद्र ग्रह × ३-२१-१६

			१३	५२
		९	३६	
	१	२०		
		१८	१२	
	१२	३६		
१	४५			
	२	३६		
१	४८			
१५				
१८	५०	०	१	५२

= १८-५०-०

३/१–५ मंगल × ग्रहेश व
नवांशेश शुक्र

वर्गेश शुक्र–४–४०–२९

मंगल ग्रह × २–९–२६

			१२	३४
		१७	२०	
	१	४४		
		४	२१	
	६	०		
०	३६			
	०	५८		
१	२०			
८				
१०	५	३	५३	३४

= १०–५–३

३/२ मंगल का होरेश
रवि है

रवि × मंगल

= ६–४६–५८

देखो ३/७

३/३ मंगल × द्रेष्काणेश
बुध

बुध वर्गेश–५–३६–५२

मंगल ग्रह × २–९–२६

			२२	३२
		१५	३६	
	२	१०		
		७	४८	
	५	२४		
०	५४			
	१	४४		
१	१२			
१०				
१२	१५	४१	४६	३२

= १२–१५–४१

३/४ मंगल का सप्तमांशेश
शनि

शनि वर्गेश १–१०–१९

मंगल ग्रह × २–९–२६

			८	१४
		४	२०	
	०	२६		
		२	५१	
	१	३०		
०	९			
	०	३८		
०	२०			
२				
२	३१	४१	१९	१४

= २–३१–४१

३/६ मंगल का द्वादशांशेश मंगल
मंगल वर्गेश २-९-२६
मंगल ग्रह × २-९-२६

			११	३६
		३	५४	
	०	५२		
		३	५४	
	१	२१		
०	१८			
	०	५२		
०	१८			
४				
४	१८	५२	५४	३६

= ४-१८-५२

३/७ मंगल का त्रिशांशेश गुरु है
गुरु वर्गेश १-४०-३३
मंगल ग्रह × २-९-२६

			१४	१८
		१७	२०	
	०	२६		
		४	५७	
	६	०		
०	९			
	१	६		
१	२०			
२				
३	३६	५४	३१	१८

= ३-३६-५४

४/१-२ बुध का ग्रहेश व
होरेश चंद्र है
चंद्र × बुध
= १८-५०-०
देखो २/७

४/३-४ बुध का
द्रेष्काणेश व
सप्तमांशेश मंगल है
मंगल × बुध
= १२-१५-४१
देखो ३/३

४/५ बुध का नवांशेश
शुक्र है
शुक्र वर्गेश ४-२०-२९
बुध ग्रह × ५-३६-५२

			२५	८
		१७	२०	
	३	२८		
		१७	२४	
	१२	०		
२	२४			
	२	२५		
१	४०			
२०				
२४	२२	२८	९	८

= २४-२२-२८

४/६-७ बुध का द्वादशांशेश
व त्रिशांशेश गुरु है
गुरु वर्गेश १-४०-३३
बुध ग्रह × ५-३६-५२

			२८	३६
		३४	४०	
	०	५२		
		१९	४८	
	२४	०		
०	३६			
	२	४५		
३	२०			
५				
९	२०	३१	५६	३६

= ९-२०-३१

५/१ गुरु का गृहेश गुरु है

गुरु वर्गेश १–४०–३३

गुरु ग्रह × १–४०–३३

			१८	९
		२३	३९	
	०	३३		
		२२	०	
	२६	४०		
०	४०			
१	४०	३३		
२	४८	३१	५७	९

= २–४८–३१

५/(२–६) गुरु का होरेश व

द्वादशांशेश है

चंद्र × गुरु

= ५–३७–१८

देखो २/१

५/(३–४) गुरु का द्रेष्काण

व सप्तमांश में

मंगल है

मंगल × गुरु

= ३–३६–५४

देखो ३/७

५/(५–७) गुरु के नवांश

व त्रिंशांश में

बुध है

बुध × गुरु

= ९–२०–३१

देखो ४/६

६/१ शुक्र का गृहेश

बुध है

बुध × शुक्र

= २४–२२–२८

देखो ४/५

६/२ शुक्र का होरेश

चंद्र है

चंद्र × शुक्र

= १४–३३–४७

देखो २/५

६ / ३–४ शुक्र के द्रेष्काण व सप्तमांश में शुक्र है

शुक्र वर्गेश ४–२०–२९

शुक्र ग्रह × ४–२०–२९

			१४	१
		९	४०	
	१	५६		
		९	४०	
	६	४०		
१	२०			
	१	५६		
१	२०			
१६				
१८	५०	५१	३४	१

= १८–५०–५१

६ / ५–६–७ शुक्र के नवांश द्वादशांश व त्रिंशांश में गुरु है

गुरु वर्गेश १–४०–३३

शुक्र ग्रह × ४–२०–२९

			१५	५७
		१९	२०	
	०	२९		
		११	०	
	१३	२०		
०	२०			
	२	१२		
२	४०			
४				
७	१६	३१	= ५	५७

= ७–१६–३१

$\frac{२}{१}$ शनि का गृहेश शुक्र है

शुक्र वर्गेश ४–२०–२९

शनि ग्रह × १–१०–१९

			९	११
		६	२०	
	१	१६		
		४	५०	
	३	२०		
०	४०			
४	२०	२९		
५	५	१६	१९	११

= ५–५–१६

$\frac{२}{१}$ शनि का होरेश रवि है

रवि वर्गेश ३–८–५८

शनि ग्रह × १–१०–१९

			१८	२२
		२	३२	
	०	५७		
		९	४०	
	१	२०		
०	३०			
३	८	५८		
३	४१	२७	३०	२२

= ३–४१–२७

७
३-६-७ शनि के द्रेष्काण
द्वादशांश व त्रिंशांश
में शनि

शनि वर्गेश १-१०-१९
शनि ग्रह × १-१०-१९

			६	१
		३	१०	
	०	१९		
		३	१०	
	१	४०		
०	१०			
१	१०	१९		
१	२२	२४	२६	१

= १-२२-२४

६/७ शनि के सप्तमांश
में गुरु है

गुरु वर्गेश १-४०-३३
शनि ग्रह १-१०-१९

			१०	२७
		१२	४०	
	०	१९		
		५	३०	
	६	४०		
०	१०			
१	४०	३३		
१	५७	५०	२०	२७

= १-५७-५०

६/९ शनि नवांश में चंद्र है
चंद्र वर्गेश ३-२१-१६
शनि ग्रह × १-१०-१९

			५	४
		६	३९	
	०	५७		
		२	४०	
	३	३०		
०	३०			
३	२१	१६		
३	५५	५२	२९	४

= ३-५५-५२

वर्गेशतत्रस्थग्रहयोरिष्टघ्नषड्बलैक्ययोर्घातः

(वर्गेश और ग्रह के इष्ट बल का गुणन फल का) चक्र १२

वर्ग	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ गृह	१०°–५३′–५२″	५°–३७′–१७″	१०°–५′–३″	१८°–५०′–०″	२°–४८′–३१″	२४°–२२′–२८″	५°–५′–१६′
२ होरा	६ –५५ –८	१०–५३–५२	६–४६–५८	१८ –५० –०	५ –३७ –१७	१४ –३३ –४७	३ –४१–२७
३ द्रेष्काण	५ –१६ –४०	१०–३३–५२	१२–१५–४१	१२–१५–४१	३ –३६ –५४	१८ –५० –५१	१ –२२–२४
४ सप्तमांश	१० –३३ –५२	७–१४–१०	२–३१–४१	१२–१५–४१	३ –३६ –५४	१८ –५०–५१	१ –५७–५०
५ नवमांश	५ –१६ –४०	१४–३३–४७	१०–५ –३	२४–२२–२८	६ –२० –३१	७ –१६–३१	३ –५५–५२
६ द्वादशांश	१३ –३९ –१	१०–३३–५२	४–३९–१२	६–२०–३१	५ –३७ –१७	७ –१६–३१	१ –२२–२४
७ त्रिंशांश	६ –४६ –५८	१८–५०– ०	३–३६–५४	६–२०–३१	६ –२० –३१	७ –१६–३१	१ –२२–२४

(४) वर्गेश तत्रस्थ ग्रह कष्टघ्न षड्बलैक्य घात साधन ।

(वर्गेश और ग्रह के कष्ट बल का गुणन फल)

ग्रह कष्ट बल × वर्गेश कष्ट बल

$\frac{१}{१-४}$ रवि गृहेश सप्तमेश चंद्र

चंद्र वर्गेश २-५३-२३
रवि ग्रह × २-२३-३

			१	९
		२	३९	
	०	६		
		८	४९	
	२०	१९		
०	४६			
	०	४६		
१	४६			
४				
६	५३	२२	२९	९

= ६-५३-२२

$\frac{१}{२}$ रवि होरेश रवि

वर्गेश रवि २-२२-३
रवि ग्रह × २-२३-३

			०	९
		१	९	
	०	६		
		१	९	
	८	४९		
०	४६			
	०	६		
०	४६			
४				
५	५१	३	१८	९

= ५-५१-३

$\frac{१}{३-५}$ रवि के द्रेष्काण व नवांश में गुरु है ।

गुरु वर्वेश २-३९-२१
रवि ग्रह × २-२३-३

			१	३
		१	५७	
	०	६		
		८	३	
	१४	५७		
०	४६			
	०	४२		
१	१८			
४				
५	१९	५५	१	३

= ५-१९-५५

$\frac{१}{१२}$ रवि के द्वादशांश में शुक्र है ।

शुक्र वर्गेश २-५८-४७
रवि ग्रह × २-२३-३

			२	२१
		२	५४	
	०	६		
		१८	१	
	२२	१४		
०	४६			
	१	३४		
१	५६			
४				
७	६	१४	५७	२१

= ७-६-१४

१/७ रवि के त्रिंशांश में
मंगल है
मंगल वर्गेश २–५२–१९
रवि ग्रह × २–२३–३

			०	४८
		२	३६	
	०	६		
......	......	......	......	......
		६	८	
	१९	५६		
०	४६			
	०	३२		
१	४४			
४				
६	५०	४२	४४	४८

= ६–५०–४२

३/२ चंद्र का होरेश
चंद्र है
चंद्र वर्गेश २–५३–२३
चंद्र ग्रह × २–५३–२३

			८	४९
		२०	१९	
	०	४६		
		२०	१९	
	४६	४९		
१	४६			
	०	४६		
१	४६			
४				
८	२१	१	४६	४९

= ८–२१–१

२/१ चंद्र का गृहेश
गुरु है
गुरु वर्गेश २–३९–२१
चंद्र ग्रह × २–५३–२३

			११	५३
		१४	५७	
	०	४६		
......	......	......	......	......
		२७	२३	
	३४	२७		
१	४६			
	१	२		
१	१८			
४				
७	४०	५७	३१	५३

= ७–४०–५७

२/३–६ चंद्र के द्रेष्काण व
द्वादशांश में रवि है
रवि × चंद्र
= ६–५३–२२
देखो १/१

$\frac{२}{४}$ रवि के सप्तमांश
में मंगल है
मंगल वर्गेश २-५२-१६
चंद्र ग्रह × २-५३-२३

			६	८
		१९	५६	
	०	४६		
		१४	८	
	४५	५६		
१	४६			
	०	३२		
२	४४			
४				
८	१७	४८	१०	८

= ८-१७-४८

$\frac{२}{६}$ चंद्र नवांश में
शुक्र है
शुक्र वर्गेश २-५८-४७
चंद्र ग्रह × २-५३-२३

			१८	१
		२२	१४	
	०	४६		
		४१	३१	
	५१	१४		
१	४६			
	१	३४		
१	५६			
४				
८	३६	३८	३	१

= ८-३६-३८

$\frac{२}{७}$ चंद्र के त्रिशांश
में बुध है
बुध वर्गेश २-५७-१६
चंद्र ग्रह × २-५३-२३

			६	८
		२१	५१	
	०	४६		
		१४	८	
	५०	२१		
१	४६			
	०	३२		
२	५४			
४				
९	३२	१५	५	८

= ९-३२-१५

$\frac{३}{१-५}$ मंगल का गृहेश
व नवांशेश शुक्र है
शुक्र वर्गेश २-५८-४७
मंगल ग्रह × २-५२-१६

			१२	३२
		१५	२८	
	०	३२		
		४०	४४	
	५०	१६		
०	३२			
	१	३४		
१	५६			
४				
७	२१	१८	२४	३२

$\frac{३}{२}$ मंगल का होरेश
रवि है
रवि × मंगल
= ६-४०-४२
देखो $\frac{१}{३}$

$\frac{३}{३}$ मंगल के द्रेष्काण
में बुध है
बुध वर्गेश २-५७-१६
मंगल ग्रह × २-५२-१६

			४	१६
		१५	१२	
	०	३२		
…	…	…	…	…
		१३	५२	
	१६	४६		
१	४४			
	०	३२		
१	५४			
४				
७	५६	२२	८	१६

=७-५६-२२

$\frac{३}{४}$ मंगल के सप्तमांश
में शनि है
शनि वर्गेश ३-१०-४८
मंगल ग्रह × २-५२-१६

			१२	४८
		२	४०	
	०	४८		
		४१	३६	
	८	४०		
२	३६			
	१	३६		
०	२०			
६				
९	७	४८	२८	४८

=९-७-४८

$\frac{३}{६}$ मंगल के द्वादशांश
में मंगल है
मंगल वर्गेश २-५२-१६
मंगल ग्रह × २-५२-१६

			४	१६
		१३	५२	
	०	३२		
		१३	५२	
	४५	४		
१	४४			
	०	३२		
१	४४			
४				
८	१४	३५	४८	१६

= ८-१४-३५

$\frac{३}{३}$ मंगल के त्रिशांश
में गुरु है

गुरु वर्गेश २–२९–२१
मंगल ग्रह × २–५२–१६

			५	३६
		१०	२४	
	०	३२		
		१८	१२	
	३३	४८		
१	४४			
	०	४२		
१	१८			
३६				
७	३७	३०	४१	३६

= ७–३७–३०

$\frac{४}{१–२}$ बुध के ग्रहेश व
होरेश चंद्र है

चंद्र × बुध
= ९–३२–१५ देखो $\frac{३}{३}$

$\frac{४}{३–४}$ बुध का द्रेष्काणेश
व सप्तमांशेश मंगल है
मंगल × बुध
= ७–५६–२२–
देखो $\frac{३}{३}$

$\frac{४}{५}$ बुध के नवांश में
शुक्र है

शुक्र वर्गेश २–५८–४७
बुध ग्रह २–५७–१६

			१२	३२
		१५	२८	
	०	३२		
		४४	३९	
	५५	६		
१	५४			
	१	३४		
१	५६			
४				
८	४८	१२	१९	३२

= ८–४८–१२

$\frac{४}{६–७}$ बुध के द्वादशांश
व त्रिशांश में गुरु है

गुरु वर्गेश २–३९–२१
बुध ग्रह × २–५७–१६

			४	५
		१०	२४	
	०	३२		
		१९	५७	
	३७	३		
१	५४			
१	०	४२		
४	१८			
७	५०	४७	२६	३६

= ७–५०–४७

५/१ गुरु का गृहेश
गुरु है
गुरु वर्गांश २-३९-२१

			७	२१
		१३	३९	
	०	४२		
		१३	३९	
	२५	२१		
१	१८			
	०	४२		
१	१८			
४				
७	३	१२	२५	२१

=७-३-१२

५

२-६ गुरु होरा व
द्वादशांश में चंद्र है
चंद्र × गुरु
= ७-४०-५७ देखो २/१

५

३-४ गुरु द्रेष्काण व
सप्तमांश में मंगल है
मंगल × गुरु
= ७-३७-३०
देखो ३/७

५

५-७ गुरु नवांश व
त्रिंशांश बुध में है
बुध × गुरु
= ७-५०-४७ देखो ४/६

६/१ शुक्र का गृहेश बुध है
बुध × शुक्र
= ८-४८-१२ देखो ४/८

६/२ शुक्र का होरेश चंद्र है
चंद्र × शुक्र
=८-३६-३८
देखो ३/८

६

३-४ शुक्र द्रेष्काण व
सप्तमांश शुक्र में है
शुक्र वर्गांश २-५८-४७
शुक्र ग्रह × २-५८-४७

			३६	४९
		४५	२६	
	१	३४		
		४५	२६	
	५६	४		
१	५६			
	१	३४		
१	५६			
४				
८	५५	४३	२८	४९

= ८-५५-४३

७/१ शनि का गृहेश

शुक्र है

शुक्र वर्गेश २-५८-४७

शनि ग्रह × ३-१०-४८

			२७	३६
		४६	२४	
	१	३६		
		७	५०	
	६	४०		
०	२०			
	२	२१		
२	५४			
६				
९	२८	३१	४१	३६

= २-२८-३१

७ / ३-६-७ शनि द्रेष्काण

द्वादशांश व त्रिंशांश

में शनि है

शनि वर्गेश ३-१०-४८

शनि ग्रह × ३-१०-४८

			२८	२४
		८	०	
	२	२४		
		८	०	
	१	४०		
०	३०			
	२	२४		
०	३०			
९				
१०	६	४४	२८	२४

= १०-६-४४

७/२ शनि का होरेश

रवि है

रवि वर्गेश २-२३-३

शनि ग्रह × ३-१०-४८

			२	२४
		१८	२४	
	१	३६		
		०	३०	
	३	५०		
०	२०			
	०	९		
१	९			
६				
७	३४	५३	५६	२४

= ७-३४-५३

७/४ शनि के सप्तमांश

में गुरु है

गुरु वर्गेश २-३९-२१

शनि ग्रह × ३-१०-४८

			१६	४८
		२१	१२	
	१	३६		
		३	३०	
	६	३०		
०	२०			
	१	३		
१	५७			
६				
८	२६	३३	५८	४८

= ८-२६-३३

८ं शनि नवांश में चंद्र है

चंद्र वर्गेश २–५३–२३

शनि ग्रह × ३–१०–४८

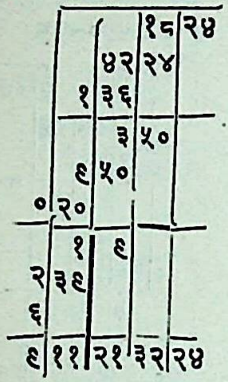

= ९–११–२१

वर्गेश तत्रस्थग्रहयोः कष्टघ्नषड्बलैक्ययोर्घातः

(वर्गेश और ग्रह के कष्ट बल का गुणन फल का) चक्र १३

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१ ग्रह	६°–५३′–२२″	७°–४०′–५७″	७°–२१′–१८″	९°–३२′–१५″
२ होरा	५ –४१ – ३	८ –२१ – १	६ –४० –४२	९ –३२ –१५
३ द्रेष्काण	५ –१९ –५५	६ –५३ –२२	६ –५६ –२२	७ –५६ –२२
४ सप्तमांस	६ –५३ –४२	८ –१७ –४८	९ – ७ –४८	७ –५६ –२२
५ नवमांश	५ –१९ –५५	८ –३६ –३८	७ –२१ –१८	८ –४८ –१२
६ द्वादशांश	७ –६ –१४	६ –५३ –२२	८ –१४ –३५	७ –५० –४७
७ त्रिंशांश	६ -५० –४२	९ –३२ –१५	७ –३७ –३०	७ –५० –४७

गुरु	शुक्र	शनि
७°–३′–१२″	८°–४८′–१२″	९°–२८′–३१″
७–४०–५७	८ –३६ –३८	७ –३४ –५३
७–३७–३०	८ –५५ –४३	१० – ६ –४४
७–३७–३०	८ –५५ –४३	८ –२६ –३३
७–५०–४७	७ –५३ –४९	९ –११ –२१
७–४०–५७	७ –५३ –४९	१० –६ –४४
७–५०–४७	७ –५३ –४९	१० –६ – ४४

(५) वर्गांश और ग्रह के इष्टघ्न षड्बलैक्य (इष्ट बल) के गुणनफल का वर्गमूल निकालना है ।

वर्गमूल निकालने के लिये गुणन फल की संख्या जो अंश कला विकला में है इन सबकी विकला बना लेनी चाहिए। तब उतरार्द्ध में बनाई रीति के अनुसार उसका वर्गमूल निकालना चाहिए।

वर्गांश और ग्रह के इष्ट बल के गुणन फल का चक्र दिया है उसी का वर्गमूल निकलना है ।

१/१–४ रवि ग्रह और सप्तमांश में = १०°–३३′–५२″

१०°–३३′–५२″
× ६०
६०० + ३३ = ६३३′–५२″
× ६०
३७९८० + ५२
= ३८०३२″

१	३८०३२(१९५
+१	१
२९	२८०
+९	२६१
३८५	१९३२
	१९२५

१९५ + १ = १९६ × २ = ३९२

७ + १ = ८ × ६०

३९२)४८०(१
३९२
८८

= १९५″–१‴
= ३′–१५″–१‴

— १/२ रवि होरा = ९°–५५′–८″

९°–५५′८″
× ६०
५४० + ५५ = ५९५ × ६०
= ३५७०० + ८ = ३५७०८″

१	३५७०८(१८८
+१	१
२८	२५७
+८	२२४
३६८	३३०८
	२९४४

३६४ + १ = ३६५
× ६०

२७८)२१९००(५७
१८९०
३०००
२६४६
३५४

= १८८″–५७‴
= ३′–८″–५७‴

$\frac{१}{३-५}$ रवि द्रेष्काण नवांश

= ५–१६–४०

५°–१६′–४०″

× ६०

३०० + १६ = ३१६ × ६०

१८९६० + ४०

= १९०००″

१	१९०००(१३७
+ १	१
२३	९०
+ ३	६९
२६७	२१००
	१८६९

२३१ + १ = २३२

× ६०

२७६)१३९२०(५०

१३८०

१२०

= १३७″–५०‴

= २′–१७″–५०‴

$\frac{१}{६}$ रवि द्वादशांश

= १३–३९–१

१३°–३९′–१″

× ६०

७८० + ३९ = ८१९

× ६०

= ४९१४० + १

= ४९१४१″

२	४९१४१(२२१
+ २	४
४२	९१
+ २	८४
४४१	७४१
	४४१

३०० + १

३०१ × ६०

४४४)१८०६०(४०

१७७६

३००

= २२१′–४०″

= ३′–४१″–४०‴

$\frac{१}{७}$ रवि त्रिशांश

= ६°–४६′–५८″

६°–४६′–५८″

× ६०

३६० + ४६ = ४०६ × ६०

= २४३६० + ५८ = २४४१८″

$\frac{२}{९}$ चंद्र गृह

= ५°–३७′–१७″

५°–३७′–१७″

× ६०

३०० + ३७ = ३३७ × ६०

= २०२२० + १७

= २ २३७

```
   १ | २ं४४ं१ं८(१५६
 + १ | १
 ----|-----
  २५ | १४४
 + ५ | १२५
 ----|-----
 ३०६ | १९१८
     | १८३६
       ---------
        ८२ + १ = ८३
                × ६०
  ३१४)४९८०(१५
      ३१४
      ----
      १८४०
      १५७०
      ----
       २७०
 = १५६″–१५‴
 = २′–३६″–१५‴
```

```
   १ | २ं०ं२ं३७(१४२
 + १ | १
 ----|-----
  २४ | १०२
 + ४ | ९६
 ----|-----
 २८२ | ६३७
     | ५६४
       ---------
        ७३ + १ = ७४
                × ६०
  २८६)४४४०(१५
      २८६
      ----
      १५८०
      १४३०
      ----
       १५०
 = १४२″–१५‴
 = २′–२२″–१५‴
```

१/२ चंद्र होरा

= १०°–५३′–५२″

```
 १०–५३–५२
 × ६०
 ----------
 ६०० + ५३ = ६५३′ × ६०
      = ३९१८० + ५२
      = ३९२३२″
```

२/३–६ चंद्र द्रेष्काण

व द्वादशांश

= १०–३३–५२

रवि ग्रह के

अनुसार

३°–१५″–१‴ देखो १/२

```
   १ | ३९२३२(१९८
 + १ | १
 ----|-----
  २९ | २९२
 + ९ | २६१
 ----|-----
 ३८९ | ३१३२
     | ३११२
       ---------
        २० + १ = २१
                × ६०
              ------
              १२६०
```

३९८)१२६०(३
११९४
६६
= १९८″–३‴
= ३′–१८″–३‴

३. चंद्र सप्तमांश = ७°–१४′–१०″

७–१४–१०
× ६०
४२० + १४ = ४३४′–१०″
× ६०
२६०४० + १०
= २६०५०

१	२६०५०(१६१
+१	१
२६	१६०
+६	१५६
३२१	४५०
	३२१

१२९ + १ = १३०
× ६०
३२४)७८००(२४
६४८
१३२०
१२९६
२४
= १६१″–२४‴
= २′–४१″–२४

२. चंद्र नवांश = १४°–३३′–४७″

१४°–३३′–४७″
× ६०
८४० + ३३ = ८७३′–४७″
× ६०
५२३८० + ४७
= ५२४२७

२	५२४२७(२२८
+२	४
४२	१२४
+२	८४
४४८	४०२७
	३५८४

४४३ + १ = ४४४
× ६०
४५८)२६६४०(५८
२२९०
३७४०
३६६४
१७६
= २२८″–५८‴
= ३′–४८″–५८‴

$\frac{२}{७}$ चंद्र त्रिशांश १८–५०–०

१८–५०–०

× ६०

१०८० + ५० = ११३०″

× ६०

= ६७८००

२ | ६७८००(२६०

+२ | ४

४६ | २७८

+६ | २७६

५२० | २०० + १ = २०१

× ६०

५२२)१२०६०(२३

१०४४

१६२०

१५६६

५४

२६०″–२३‴

= ४′–२०″–२३‴

$\frac{३}{२}$ मंगल होरा

६°–४६′–५८″

रवि त्रिशांश के

अनुसार = २′–३६″–१५‴

देखो $\frac{१}{७}$

$\frac{३}{१–५}$ मंगल गृह व नवांश १०–५–३

१०°–५′–३″

× ६०

६०० + ५ = ६०५ × ६०

= ३६३०० + ३

= ३६३०३

१ | ३६३०३(१९०

+१ | १

२९ | २६३

+९ | २६१

३८० | २०३ + १ = २०४

× ६०

३८२)१२२४०(३२

११४६

७८०

७६४

१६

१९०″–३२‴

= ३′–१०″–३२‴

$\frac{३}{३}$ मंगल द्रेष्काण

१२–१५–४१

१२°–१५′–४१″

× ६०

७२० + १५ = ७३५ × ६०

= ४४१०० + ४१

= ४४१४१

२ | ४४१४१(२१०

+२ | ४

४१ | ४१

+१ | ४१

४२० | ४१ + १ = ४२

× ६०

२५२०

४२२) २५२० (५
२११०
४१०
= २१०″–५‴
= ३°–३०″–५‴

$\frac{3}{4}$ मंगल सप्तमांश

२–३१–४१
२°–३१′–४१″
× ६०
१२० + ३१ = १५१ × ६०
= ९०६० + ४१
= ९१०१

९ | ९१·०१· (९५
+९ | ८१
१८५ | १००१
९२५
७६ + १ = ७७
× ६०
१९२) ४६२० (२४
३८४
७८०
७६८
= ९५″–२४‴ १२
= १′–३५″–२४‴

$\frac{3}{6}$ मंगल द्वादशांश

४–३९–१२
४°–३९′–१२″
× ६०
२४० + ३९ = २७९
× ६०
= १६७४० + १२
= १६७५२″
१ १·६७·५२· (१२९
+१ | १
२२ | ६७
+२ | ४४
२४९ | २३५२
२२४१
१११ + १
११२ × ६०
२६०) ६७२० (२५
५२०
१२९′–२५‴ १५२०
= २′–९″–२५‴ १३००
२२०

$\frac{३}{७}$ मंगल त्रिशांश

३–३६–५४

३°–३६′–५४″

× ६०

१८० + ३६ = २१६ × ६०

= १२९६० + ५४

= १३०१४

```
 १| १·३०·१४· ( ११४
+१| १
 २१| ३०
+१| २१
 २२४| ९१४
      ८९६
      १८ + १ = १९
           × ६०
२३० ) ११४० ( ४
      ९२०
      २२०
```

= ११४′–४‴

= १–५४″–४‴

$\frac{४}{१–२}$ बुध गृह और होरा

१८°–५०′–०″

चंद्र त्रिशांश के

अनुसार वर्गमूल

= ४–२०″–२३″ देखो $\frac{३}{७}$

$\frac{४}{३–४}$ बुध द्रेष्काण व

सप्तमांश

१२–५१–४८

मंगल द्रेष्काण के

अनुसार वर्गमूल

= ३′–१०″–५″ देखो $\frac{३}{७}$

$\frac{४}{५}$ बुध नवांश

२४-२२–२८

२४°–२२′–२८″

× ६०

१४४० + २२ = १४६२

× ६०

८७७२०

$\frac{४}{६–७}$ बुध द्वादशांश

व त्रिशांश ९–२०–३१

९–२०–३१

× ६०

५४० + २० = ५६० × ६०

= ३३६०० + ३१ = ३३६३१″

= ८७७२० + २८

= ८७७४८

८ | ८'७७'४८' (२९६

+२ | ४

४९ | ४७७

+९ | ४४१

५८६ | ३६४८

३५१६

१३२ + १

१३३ × ६०

५९४) ७९८० (१३

५९४

२०४०

१७८२

२५८

२९६''–१३'''

४'–५६''–१३'''

५/४ गुरु ग्रह २°–४८'–३१''

२–४८–३१

× ६०

१२० + ४८ = १६८ × ६०

= १००८० + ३१

= १०१११''

१ | १'०१'११' (१००

+१ | १

२०० | ०१११ + १ = ११२

× ६०

२२०) ६७२० (३३

६०६

६६०

= १००''–३३''' ६०६

= १'–४०''–३३''' ५४

१ | ३'३६'३१'(१८३

+१ | १

२८ | २३६

+८ | २२४

३६३ | १२३१

१०८९

१४२ + १ =

= १४३ × ६०

३६६) ८५८० (२३

७३६

१२२०

११०४

११६

= १८३''–२३'''

= ३'–३''–२३'''

५/२–६ गुरु होरा व द्वादशांश

५–३७–१७

चंद्र ग्रह के समान

वर्गमूल २'–२२''–१५'''

देखो २/१

५/३–४ गुरु द्रेष्काण व सप्तमांश

३–३६–५४

मंगल त्रिशांश के समान

वर्गमूल १'–५४''–४'''

देखो ३/७

४/५–७ गुरु नवांश त्रिशांश

९–२०–३१

बुधद्वादशांश के समान

वर्गमूल ३'–३''–२३''' देखो ४/६

६/१ शुक्र ग्रह

२४°–२२–२८

बुध नवमांश के समान व

वर्गमूल ४′–५६″–१३‴

देखो ४/८

६/२ शुक्र होरा

१४–३३–४७

चंद्र नवांश के समान

वर्गमूल ३′–४८″–५८‴

देखो ३/८

६/३–४ शुक्र द्रेष्काण व

सप्तमांश १८–५०–५१

१८–५०–५१

× ६०

१०८० + ५० = ११३०

× ६०

= ६७८०० + ५१

= ६७८५१

२	६·७८·५१· (२६०
+ २	४
४६	२७८
+ ६	२७६
५२०	२५१ × १ = २५२
	× ६०

५२२) १५१२० (२८

१०४४

४६८०

४१७६

२६०″–२८‴ ५०४

= ४′–२०″–२८‴

६/५–६–७ शुक्र नवांश द्वादशांश

त्रिंशांश ७–१६–३१

७–१६–३१

× ६०

४२० + १६ = ४३६ × ६०

७/१ शनि ग्रह ५–५–१६

५°–५′–१६″

× ६०

३०० + ५ = ३०५ × ६०

१८३०० = १६ = १८३१६

=२६१६० + ३१ = २६१९१

१	२·६१·९१· (१६१
+१	१
२६	१६१
+६	१५६
३२१	५९१
	३२१
	२७१ + १ = २७२
	× ६०

३२४) १६३२० (५०

१६२०

१६१″–५०‴ १२०

= २–४१″–५०‴

१ ८३·१६· (१३५

१	१·८३·१६· (१३५
+१	१
२३	८३
+३	६९
२५६	१४१६
	१३२५
	९१ + १ = ९२
	× ६०

२७२) ५५२० (२०

५४४

१८०

= १३५″–२०‴

= २′–१५″–२०‴

७

३–६–७ शनि द्रेष्काण

द्वादशांश त्रिंशांश

१–२२–२४ १–२२–२४

× ६०

६० + २२ = ८२ × ७०

= ४९२० + २४ = ४९४४

७	४९·४४·(६०
+७	४९
१४०	४४ + १ = ४५
	× ६०

१४२) २७०० (१९

१४२

१२८०

१२७८

= ७०″–१९‴ २

= १′–१०–१९‴

ृ शनि होरा ३–४१–२७

३–४१–२७

× ६०

१८० + ४१ = २२१ × ६०

= १३२६० + २७ = १३२८७

१	१३२८७ (११५
+१	१
२१	३२
+१	२१
२२५	११८७
	११२५
	६२ + १ = ६३
	× ६०

२३२) ३७८० (१६

२३२

१४६०

१३९२

= ११५″–१६‴ ६८

= १′–५५″–१६‴

७ँ शनि सप्तमांश

१–५७–५०

१–५७–५०

×६०

६० + ५७ = ११७ × ६०

= ७०२० + ५० = ७०७०″

```
      ·  ·
  ८ | ७०७०(८४
 +८ | ६४
 ---| ---
 १६४| ६७०
    | ६५६
      -----
        १४ + १ = १५
                × ६०
```

१७०)९००(५

८५०

५०

= ८४″–५‴

= १′–२४″–५″

८ँ शनि नवांश

३–५५–५२

३°–५५′–५२″

×६०

१८० + ५५ = २३५ × ६०

= १४१०० + ५२

= १४१५२

```
       ·  ·  ·
   १ | १४१५२(११८
  +१ | १
  ---| ---
  २१ | ४१
  +१ | २१
  ---| ----
  २२८| २०५२
       १८२४
       -----
        २२८ + १ = २२९
                  × ६०
```

२३८)१३७४०(५७

११९०

१८४०

१६६०

१७४

११८″–५७‴

= १′–५८″–५७‴

वर्गेश और ग्रह के इष्टबल के गुणनफल का चक्र आगे दिया है।

(५) वर्गेश और ग्रह के कष्टघ्न षड्बलैक्य (कष्ट बल) के गुणनफल का वर्गमूल निकालना।

जिस प्रकार इष्टघ्न षड्बलैक्य के गुणन फल का वर्गमूल निकाला था उसी प्रकार कष्टघ्न बलैक्य के गुणन फल के अंशादि की गिकला बना-बना उपरोक्त रीति से वर्गमूल निकाल लेना चाहिए।

वर्गेश और ग्रह के कष्ट बल के गुणन फल का चक्र पहिले दे चुके हैं उसी का वर्गमूल निकालना है।

१ / १-४ रवि गृह व सप्तमांश

६-५३-२२

६°-५३'२२''

×६०

३६०+५३=४१३×६०

=२४७८०''+२२

=२४८०२

१	
+१	
२५	
+५	
३०७	

२४८०२(१५७
१
१४८
१२५
२३०२
२१४९
१५३+१=१५४
×६०
३१६)९२४०(२९
६३२
२९२०
२८४४
७६

=१५७'-२९''

=२'-३७''-२९

१/२ रवि होरा

=५-४१-३

५°-४१'-३''

×६०

३००+४१=३४१×६०

=२०४६०+३

=२०४६३

१	
+१	
२४	
+४	
२८३	

२०४६३(१४३
१
१०४
९६
८६३
८४९
१४+१=१५
×६०
२८८)९००(३
८६४
३६

=१४३''-३'''

=२'-२३''-३'''

१ / ३-५ रवि द्रेष्काण, नवमांश

५-१९-५५

५°-१९'-५५

×६०

३०० +१९=३१९×६०

=१९१४०+५५=१९१९५

१/६ रवि द्वादशांश

७-६-१४

७°-६'-१४''

×६०

४२०+६=४२६×६०

=२५५६०+१४=२५५७४

१ +१ २३ +३ २६८	१९१९५(१३८ १ ९१ ६९ २२९५ २१४४ १५१+१=१५२ ×६० २७८)९१२०(३२ ८३४ ७८० ५५६ २२४ =१३८″–३२‴ =२′–१८″–३२‴

१ +१ २५ +५ ३०९	२५५७४(१५९ १ १५५ १२५ ३०७४ २७८१ २९३+१=२९४ ×६० ३२०)१७६४०(५५ १६०० १६४० १६०० ४० = १५९″–५५‴ = २′–३९″–५५‴

७ रवि त्रिंशांश

६–५०–४२

६°–५०′–४२″

×६०

३६०+५०=४१०×७०

=२४६००+४२=२४६४२

१ +१ २५ +५ ३०६	२४६४२(१५६ १ १४६ १२५ २१४२ १८३६ ३०६+१=३०७ ×६०

३ चंद्र ग्रह

७–४०–५७

७°–४०′–५७″

×६०

४२०+४०=४६०×६०

=२७६००+५७=२७६५७

१ +१ २६ +६ ३२६	२७६५७(१६६ १ १७६ १५६ २०५७ १९५६ १०१+१=१०२ ×६०

```
३१४)१८४२०(५८
    १५७०
    ----
    २७२०
    २५१२
    ----
     २०८
= १५६″–५८‴
= २′–३६″–५८‴
```

```
३३४)६१२०(१८
    ३३४
    ----
    २७८०
    २६७२
    ----
     १०८
=१६६″–१८‴
= २′–४६″–१८‴
```

$\frac{२}{२}$ चंद्र होरा ८–२१–१

८°–२१′–१″

× ६०

४८० + २१=५०१ × ६०

=३००६० + १=३००६१

```
   १ |   ३००६१(१७३
 + १ |   १
 ----|   ---
  २७ |   २००
 + ७ |   १८९
 ----|   ----
 ३४३ |    ११६१
         १०२९
         --------
          १३२ + १=१३३
                × ६०
```

```
३४८)७९८०(२२
    ६९६
    ----
    १०२०
     ६९६
    ----
     ३२४
```

=१७३″–२२‴

=२′–५३″–२२‴

$\frac{२}{३–६}$ चंद्र द्रेष्काण

द्वादशांश ६°–५३′–२२″

रवि ग्रह के अनुसार

वर्गमूल २′–३७″–२९‴

देखो $\frac{१}{१}$

२/४ चंद्र सप्तमांश

८–१७–४८

८°–१७′–४८″

× ६०

४८० + १७ = ४९७ × ६०

= २९८२० + ४८

= २९८६८

१ | २·९८·६८· (१७२

+ १ | १

२७ | १९८

+ ७ | १८९

३४२ | ९६८

६८४

२८४ + १ = २८५

× ६०

३४८) १७१०० (४९

१३९२

३१८०

३१३२

१७२″–४९‴ ४८

= २′–५२″–४९‴

२/८ चंद्र नवमांश

८–३६–३८

८°–३६′–३८

× ६०

४८० + ३६ = ५१६ × ६०

= ३०९६० + ३८ = ३०९९८

१ | ३·०९·९८· (१७५

+ १ | १

२७ | २०९

+ ७ | १८९

३४५ | १९९८

१७२५

२७३ + १ = २७४

× ६०

३५२) १६४४० (४६

१४०८

२३८०

२११२

१७५′—४६‴ २६८

= २–५५″–४६‴

२/७ चंद्र त्रिंशांश

९–३२–१५

९°–३२′–१५″

× ६०

५४० + ३२ = ५७२

= ३४३२० + १५

= ३४३३५″

३/१–५ मंगल ग्रह व नवांश

७–२१–१८

७°–२१′–१८″

× ६०

४२० + २१ = ४४१ × ६०

= २६४६० + १८ = २६४७८

१   ३४३३५ (१८५
+१   १
२८   २४३
+८   २२४
३६५   १९३५
१८२५
११०+१=१११
×६०
३७२) ६६६० (१७
३७२
२९४०
२६०४
=१८५″–१७‴   ३३६
=३′–५″–१७

१/२ मंगल होरा ६–४०–४२
६°–४०′–४२″
×६०
३६०+४०=४००×६०
२४०००+४२=
२४०४२

१   २६४७८ (१६२
+१   १
२६   १६४
+६   १५६
३२२   ८७८
६४४
२३४+१+२३५
×६०
३२६) १४१०० (४३
१३०४
१०६०
९७८
=१६२″–४३‴   ८२
=२′–४२″–४३‴

१/२ मंगल द्रेष्काण
७-५६-२२
७-५६-२२
×६०
४२०+५६=४७६×६०
=२८५६०+२२
=२८५८२

१   २४०४२ (१५५
+१   १
१४०
२५   १२५
+५   १५४२
३०५   १५२५
१७+१=१८
×६०
१०८०

१   २८५८२ (१६९
+१   १
१८५
२६   १५६
+६   २९८२
३२९   २९६१
२१+१=२२
×६०
१३२०

३१२)१०८०(३
९३६
१४४
=१५५″–३‴
=३′–३५″–३‴

३४०)१३२०(३
१०२०
३००
=१६९″–३‴
=२–४९–३

∴ मंगल सप्तमांश

९–७–४८
९°–७′–४८″
×६०
५४० + ७ = ५४७ × ६०
= ३२८२०″ + ४८
= ३२८६८

∴ मंगल द्वादशांश,

८–१४–३५
८–१४–३५
×६०
४८० + १४ = ४९४ × ६०
= २९६४० + ३५
= २९६७५

∵

१ + १ २८ + ८ ३६१	३२८६८ (१८१ १ २२८ २२४ ४६८ ३६१ १०७ + १ = १०८ × ६० ३६४) ६४८० (१७ ३६४ २८४० २५४८ = १८१′–१७ २९२ = ३′–१″–१७‴

∵

१ + १ २७ + ७ ३४२	२९६७५ (१७२ १ १९६ १८९ ७७५ ६८४ ९१ + १ = ९२ × ६० ३४६) ५५२० (१५ ३४६ २०६० १७३० = १७२′–१५″ ३३० = २′–५२″–१५‴

$\frac{२}{३}$ मंगल त्रिशांश

७–३७–३०

७°–३७′–३०″

× ६०

४२० + ३७ = ४५७ × ६०

= २७४२० + ३०

= २७४५०

२७४५० (१६५

१	१
+१	१७४
२६	१५६
+६	१८५०
३२५	१६२५

२२५ + १ = २२६

× ६०

३३२) १३५६० (४०

१३२८

२८०

= १६५″–४०‴

= २′–४५″–४०‴

$\frac{५}{६}$ बुध नवमांश

८–४८–१२

८°–४८′–१२″

× ६०

४८० + ४८ = ५२८ × ६०

= ३१६८० + १२ = ३१६९२″

$\frac{४}{}$
१–२ बुध गृह व होरा

९–३२–१५

चंद्र त्रिशांश के समान

वर्ग मूल ३′–५″–१७

देखो $\frac{२}{३}$

$\frac{४}{}$
३–४ बुध द्रेष्काण व सप्तमांश ७–५६–२२
मंगल के द्रेष्काण के समान वर्ग मूल =
२′–४९″–३ देखो $\frac{३}{३}$

$\frac{४}{}$
६–७ बुध द्वादशांश व त्रिशांश ७-५०-४७

७–५०–४७

× ६०

४२० + ५० = ४७० × ६०

= २८२०० + ४७

= २८२४७

१ | ३१९९२ (१७८
+१ | १
२७ | २१९
+७ | १८९
३४८ | २७९२
२७८४
८+१=९
×६०
३५८) ५४० (१
३५८
१८२
=१७८''–१
=२'–५८''–१'''

५/१ गुरु गृह ७°–३'–१२''
७–३–१२
×६०
४२०+३=४२३×६०
=२५३८०+१२=२५३९२

१ | २५३९२ (१५९
+१ | १
२५ | १५३
+५ | १२५
३०९ | २८९२
२७८१
१११+१=११२
×६०
३२०) ६७२० (२१
६४०
३२०
३२०
०
=१५९''–२१'''
=२'–३९''–२१'''

१ | २८२४७ (१६८
+१ | १
२६ | १८२
+६ | १५६
३२८ | २६४७
२६२४
२३+१=२४
×६०
३३८) १४४० (४
१३५२
८८
=१६८''–४
=२'–४८''–४'''

५
२–६ गुरु होरा, द्वादशांश
७–४०–५७
चंद्र के समान
वर्गमूल २'–४६''–१८'''
देखो २/१

५
३–४ गुरु द्रेष्काण
सप्तमांश ७–३७–३०
मंगल त्रिशांश के समान
वर्ग मूल=२'–४५''–४०
देखो ३/७

५
५–७ गुरु नवांश, त्रिशांश
७–५०–४७

बुध द्वादशांश के
समान वर्ग मूल
=२–४८–४ देखो ४/६

$\frac{६}{}$ शुक्र ग्रह ८–४८–१२
बुध नवांश के अनुसार
वर्गमूल २–५८–१
देखो $\frac{६}{}$

$\frac{६}{२}$ शुक्र होरा ८–३६–३८
चंद्र नवांश के समान
वर्गमूल २′–५५″–४६
देखो $\frac{६}{३}$

$\frac{६}{}$
३–४ शुक्र द्रेष्काण व
सप्तमांश ८–५५–४३
८°–५५′–४३″
× ६०
४८० + ५५ = ५३५ × ६०
= ३२१०० + ४३ = ३२१४३″

१	३२१४३ (१७९
+१	१
२७	२२१
+७	१८९
३४९	३२४३
	३१४१
	१०२ + १ = १०३
	× ६०

३६०) ६१८० (१७
३६०
२५८०
२५२०
६०

= १७९″–१७‴
= २′–५९″–१७‴

$\frac{६}{}$ शुक्र नवांश
५–६–७
द्वादशांश, त्रिशांश
७–५३–४९

७–५३–४९
× ६०
४२० + ५३ = ४७३ × ६०
= २८३८० + ४९

$\frac{७}{१}$ शनि ग्रह
९–२८–३१
९–२८–३१
× ६०
५४० + २८ = ५६८ × ६०
= ३४०८० + ३१
= ३४१११

१ | २८४२६ (१६८
+१ | १
२६ | १८४
+६ | १५६
३२८ | २८२६
२६२४
२०५ + १ = २०६
× ६०
३३८) १२३६० (३६
१०१४
२२२०
२०२८
१९२
= १६८″–३६
= २′–४८″–३६‴
∴ शनि होरा ७°–३४′–५३″
७–३४–५३
× ६०
४२० + ३४ = ४५४ × ६०
= २७२४० + ५३
= २७२९३

१ | २७२९३ (१६५
+१ | १
२६ | १७२
+६ | १५६
३२५ | १६९३
१६२५
६८ + १ = ६९
× ६०
४१४०

१ | ३४१११ (१५५
+१ | १
२५ | १४१
+५ | १२५
३०५ | १६११
१५२५
८६ + १ = ८७
× ६०
३१२) ५२२० (१६
३१२
२१००
१८७२
२२८
= १५५″–१६‴
= २′–३५″–१६‴

७ शनि द्रेष्काण
३–६–७ द्वादशांश व त्रिंशांश
१०–६–४४
१०°–६′–४४″
+ ६०
६०० + ६ = ६०६ × ६०
= ३६३६० + ४४
= ३६४०४

१ | ३६४०४ (१९०
+१ | १
२९ | २६४
+९ | २६१
३८० | ३०४ + १ = ३०५
× ६०
१८३००

३३२) ४१४० (१२
३३२
८२०
६६४
१५६
= १६५″–१२‴
= २′–४५″–१२‴

३८२.) १८३०० (४८
१५२८
३१२०
३०५६
६४
= १९०″–४८‴
= ३′–१०″–४८‴

७ँ शनि सप्तमांश ८–२६–३३

८–२६–३३
× ६०
४८० + २६ = ५०६ × ६०
= ३०३६० + ३३ = ३०३९३

१	३०३९३ (१९८
+१	१
२९	२०३
+९	१७१
३८८	३२९३
	३१०४
	१८९ + १ = १९०
	× ६०

३९८) ११४०० (२८
७९६
३४४०
३१८४
२५६
= १९८″–२८‴
—३′–१८″–२८‴

८ँ शनि नवांश ९–११–२१

९–११–२१
× ६०
५४० + ११ = ५५१ × ६०
= ३३०६० + २१ = ३३०८१

१	३३०८१ (१८१
+१	१
२८	२३०
+८	२२४
३६१	६८१
	३६१
	३२० + १ = ३२१
	× ६०

३६४) १९२६० (५२
१८२०
१०६०
७२८
३३२
= १८१″–५२‴
= ३′–१″–५२‴

वर्गेश और ग्रह के इष्टघ्न पड्बलैक्य के गुणनफल का वर्गमूल का चक्र १४

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ गृह	३'-१५''-१'''	२'-२२''-१५'''	३'-१०''-३२''	४'-२०''-२३'''	१'-४०''-३३''	४'-५६''-१३'''	२'-१५''-२०'''
२ होरा	३-८-१७	३-१८-३	२-३६-१५	४-२०-२३	२-२२-१५	३-४८-५८	१-५५-१६
३ द्रेष्काण	२-१७-५०	३-१५-१	३-३०-५	३-३०-५	१-५४-४	४-२०-२८	१-१०-१६
४ सप्तमांश	३-१५-१	२-४१-२४	१-३५-२४	३-३०-५	१-५४-४	४-२०-२८	१-२४-५
५ नवमांश	२-१७-५०	३-४८-५८	३-१०-३२	४-५६-१३	३-३-२३	२-४१-५०	१-५८-५७
६ द्वादशांश	२-४१-४०	३-१५-१	२-६-२५	३-३-२३	२-२२-१५	२-४१-५०	१-१०-१६
७ त्रिशांश	२-३६-१५	४-२०-२३	१-५४-४	३-३-२३	३-३-२३	२-४१-५०	१-१०-१६

वर्गेश और ग्रह के कष्टघ्न पड्बलैक्य के गुणनफल का वर्गमूल का चक्र १५

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ गृह	२'-३७''-२६'''	२'-४६''-१८'''	२'-४२''-४३	३'-५''-१७'''	२'-३६''-२१'''	२'-५८''-१'''	२'-३५''-१६'''
२ होरा	२-२३-३	२-५३-२२	२-३५-२	३-५-१७	२-४६-१८	२-५५-४६	२-४५-१२
३ द्रेष्काण	२-१८-३२	२-३७-२६	२-४६-३	२-४६-३	२-४५-४०	२-५६-१७	३-१०-४८
४ सप्तमांश	२-३७-३६	२-५२-३१	३-१-१७	२-४६-३	२-४५-४०	२-५६-१७	३-१८-२८
५ नवमांश	२-१८-३२	२-५५-४६	२-४२-४३	२-५८-१	२-४८-४	२-४८-३६	३-१-५२
६ द्वादशांश	२-३६-५५	२-३७-२६	२-५२-१५	२-४८-४	२-४६-१८	२-४८-३६	३-१०-४८
७ त्रिशांश	२-३६-५८	३-५-१७	२-४५-४०	२-४८-४	२-४८-४	२-४८-३६	३-१०-४८

(६) स्फुट शुभ और स्फुट अशुभ निकालना

पिछला निकाला हुआ शुभ गुणित शुभ पंक्ति में उपरोक्त इंष्टबल के गुणनफल के वर्गमूल से गुणा करने पर स्फुट शुभ होता है और अशुभ गुणित अशुभ पंक्ति में कष्टबल के गुणनफल का वर्गमूल का गुणा करने से स्फुट अशुभ होता है।

शुभ गुणित शुभ पंक्ति और अशुभ गुणित अशुभ पंक्ति क्रम (२) में निकाल चुके हैं। इष्टबल और कष्टवल के गुणनफल का वर्गमूल क्रम (५) में अभी निकाला इनका पृथक्-पृथक् गुणा करना है।

(६) स्फुट शुभ साधन

= शुभ गुणित शुभ पंक्ति × वर्गेश और ग्रह के इष्टबल का गुणनफल का वर्गमूल

१/१ सूर्य ग्रह

वर्गमूल ३′-१५″-१‴

शुभ पंक्ति × ६′-५१″-०

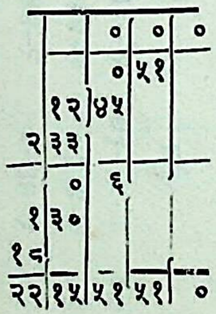

= २२′-१५″

= ०°-२२′-१५″

१/२ सूर्य होरा

वर्गमूल ३′-८″-५७‴

शु. पंक्ति × ४-५६-०

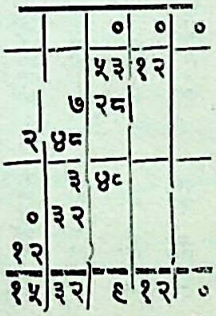

= १५′-३२″

= ०°-१५′-३२″

१/(३-५) सूर्य द्रेष्काण व नवमांश

वर्गमूल २-१७-५०

शु. पं. × ४-४५-०

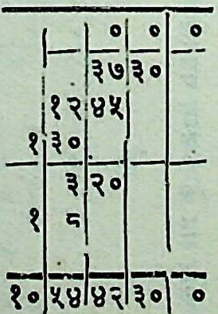

= १०′-५४″

= ०°-१०′-५४″

१/७ सूर्य सप्तमांश

वर्गमूल ३′-५१″-१‴

शु. पं. × ३-२५-०

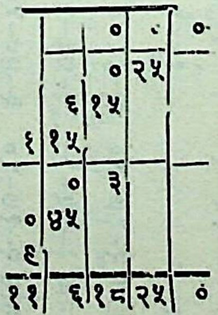

= ११′-६″

= ०°-११′-६″

१/१२ सूर्य द्वादशांश

वर्गमूल ३–४१–४०

शु. पं. × ५–५९–०

		०	०	०
		३९	२०	
	४०	१९		
२	५७			
	३	२०		
३	२५			
१५				
२२	६	१८	२०	९

= २२′–६″

= ०°–२२′–६″

१/३ सूर्य त्रिंशांश

वर्गमूल २–३६–१५

शु. पं. × ५–५३–०

		०	०	०
		१३	१५	
	३१	८		
१	४६			
	१	१५		
३	०			
१०				
१५	१९	१६	१५	०

= १५′–१९″

= ०°–१५′–१९″

२/१ चंद्र ग्रह

वर्गमूल २–२२–१५

शु. पं. × ६–३५–०

		०	०	०
		८	४५	
	१२	५०		
१	१०			
	१	३०		
२	१२			
१२				
१५	३६	२८	४५	०

= १५′–३६″

= ०°–१५′–३६″

२/२ चंद्र होरा

व. मू. ३–१८–३

शु. पं. × २–२२–०

		०	०	०
		१	६	
	६	३६		
१	६			
६	३६	६		
७	४८	४३	६	०

= ७′–४८″

= ०°–७′–४८″

२/३-६ चंद्र द्रेष्काण व. द्वादशांश

वर्गमूल ३-१५-१

शु. पं. × ३-२५-०

		०	०	०
		०	२५	
	६	१५		
१	१५			
९	४५	३		
११	६	१८	२५	०

= ११'-६"

= ०°-११'-६"

६/४ चंद्र सप्तमांश

वर्गमूल २-४१-२४

शु. पं. × ४-५-०

		०	०	०
		२	०	
	३	२५		
०	१०			
	१	३६		
२	४४			
८				
१०	५९	३	०	०

= १०'-५९'

= ०°-१०'५९"

३/५ चंद्र नवमांश

वर्गमूल ३-४८-५८

शु. पं. × ३-९-०

		०	०	०
		८	४२	
	७	१२		
०	२७			
	२	५४		
२	२४			
६				
१२	१	१४	४२	०

= १२'-१"

= ०°-१२'-१"

२/७ चद्र त्रिशांश

वर्गमूल ४-२०-२३

शु. पं. × २-१८-०

		०	०	०
		६	५४	
	६	०		
१	१२			
८	४०	४६		
९	५८	५२	२४	०

= ९'-५८"

= ०°-९'-५८"

$\frac{3}{1}$ मंगल ग्रह
वर्गमूल ३-१०-३२
शु. पं. × १४-७-०

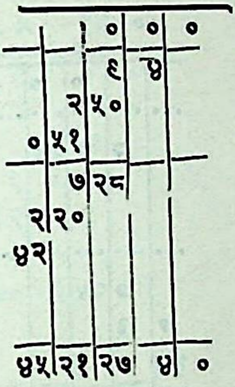

= ४५'-२१"
= ०°-४५'-२१"

$\frac{3}{2}$ मंगल होरा
वर्गमूल २-२६-१५
शु. पं. × ५-५३-०

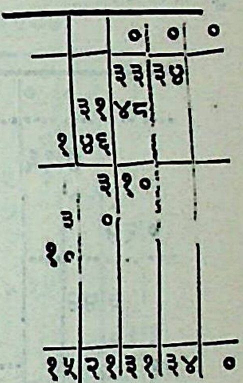

= १५'-२१"
= ०°-१५'-२१"

$\frac{3}{3}$ मंगल द्रेष्काण
वर्गमूल ३-३०-५
शु. पं. × ३-५९-०

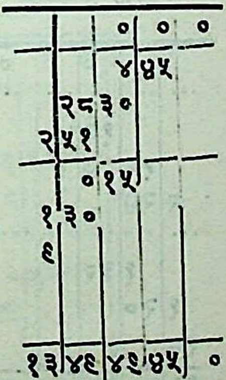

= १३'-४९"
= ०°-१३'-४९"

$\frac{3}{4}$ मंगल सप्तमांश
वर्गमूल १-३५-२४
शु. पं. × ८-५६-०

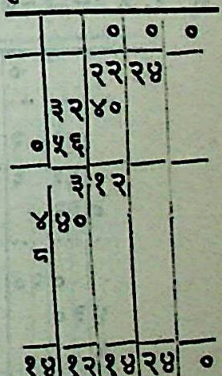

= १४'-१२"
= ०°-१४'-१२"

३/८ मंपल नवांश
वर्गमूल ३–१०–३२
शु. पं. × ७–८–०

		०	०	०
…	…	…	…	…
		४	१६	
	१	२०'		
०	२४			
…	…	…	…	
	३	४४		
१	१०			
२१				….
२२	३९	८	१६	०

=२२'–३९"
=०°–२२'–३९"

३/९ मं० द्वादशांश
व. मू. २–९–२५
शु. पं, × ७–१–०

		०	०	०
…	…	…	…	…
	२	९	२५	
…	…	…	…	…
	२	२५		
१	३			
१४				
१	८	४	२५	०

=१५'–८"
=०°–१५'–८"

३/७ मंगल त्रिशांश
व० मू. १–५४–४
शु. पं. × ५–३९–०

		०	०	०
…	…	…	…	…
		२	३६	
	३५	६		
०	३९			
…	…	…	…	…
	०	२०		
४	३०			
५				
१०	४४	२८	३६	०

=१०'–४४"
=०°–१०'–४४"

४/१ बुध ग्रह
व. मू. ४–२०–२३
श. पं. × ४–३६–०

		०	०	०
…	…	…	…	…
		१३	४८	
	१२	०		
२	२४			
…	…	…	…	…
	१	३२		
१	२०			
१८				
१९	५७	४५	४८	०

= १९–५७
= ०°–१९'–५७"

४/२ बुध होरा

व. मू. ४–२०–२३

शु. पं. × २–१८–०

		०	०	०
...	...	...	...	...
		६	५४	
	६	०		
१	१२			
...	...	...	...	...
८	४०	४६		
९	५८	५२	५४	०

= ९′–५८″

= ०°–९′–५८″

४/३–४ बुध द्रेष्काण व सप्तमांश

व. मू. — ३–३०–५

शु. पं. × ३–५८–०

		०	०	
...	...	...	...	...
		४	५०	
	२९	०		
२	५४			
...	...	...	...	...
	०	१५		
१	३०			
९				
१३	५३	१९	५०	०

=१३′–५३″

=०°–१३′–५३″

४/८ बुध नवमांश

ग. मू. ४–५६–१३

शु. पं. × ४–२–०

		०	०	०
...	...	...	...	...
		०	२६	
	१	५२		
०	८			
...	...	...	...	...
	०	५२		
३	४४			
१६				
१९	५४	४४	२६	०

= १९–५४

= ०°–१९′–५४″′

४/६–७ बुध द्वादशांश व त्रिंशांश

ग. मू. ३–३–२३

शु. पं. × ३–१२–०

		०	०	०
...	...	...	...	...
		४	३६	
	३६	३६		
...	...	...	...	...
	१	९		
९	९			
९	४६	४९	३६	०

=९′–४६″

=०°–९′–४६″

५/१ गुरु गृह

वर्गमूल १–४०–३३

शु. पं. × ९–८–०

		०	०	०
–	–	–	–	–
		४	२४	
	५	२०		
०	८			
–	–	–	–	–
	४	५७		
६	०			
९				
–	–	–	–	–
१५	१८	२१	२४	४

= १५′–१८″

= ०°–१५′–१८″

५

२–६ गुरु होरा द्वादशांश

व. मू. २–२२–१५

शु. पं. × ३–१७–०

		०	०	०
–	–	–	–	–
		४	१५	
	६	१५		
०	३४			
–	–	–	–	–
	०	४५		
१	६			
६				
–	–	–	–	–
७	४७	३	१५	०

= ७′–४७″

= ०°–७′–४७

५

३–४ गुरु द्रेष्काण व सप्तमांश

व. मू. १–५४–४

शु. पं. × ५–३९–०

		०	०	०
…	…	…	…	…
		२	३६	
	३५	६		
०	३९			
…	…	…	…	…
	०	२०		
४	३०			
५				
१०	४४	२८	३६	०

= १०′–४४″

= ०°–१०′–४४″

५

५–७ गुरु नवांश व त्रिशांश

व. मू. – ३–३–२३

शु. पं. × ३–११–०

		०	०	०
…	…	…	…	…
		४	१३	
	०	३३		
०	३३			
…	…	…	…	…
	१	९		
०	९			
९				
९	४३	४६	१३	०

=९′–४३″

=०°–९′–४३″

६/१ शुक्र ग्रह

व. मू. ४-५६-१३

शु. पं. × ८-५-०

		०	०	०
		१	५	
	४	४०		
०	२०			
	१	४४		
७	२८			
३२				
३९	५४	२५	५	०

= ३९'-५४"

=०°-३९'-५४"

६/२ शुक्र होरा

व. मू. ३-४८-५८

शु. पं. × ४-८-०

		०	०	०
		७	४४	
	६	२४		
०	२४			
	३	५२		
३	१२			
१२				
१५	४६	२३	४४	०

=१५'-४६"

=०°-१५'-४६"

६/३-४ शुक्र द्रेष्काण व सप्तमांश

व. मू. ४-२०-२८

शु. पं. × ७-१५-०

		०	०	०
		७	०	
	५	०		
१	०			
	३	१६		
२	२०			
२८				
३१	२८	२३	०	०

= ३१'-२८"

= ०°-३१'-२८"

६/५-६-७ शुक्र नवमांश द्वादशांश व त्रिंशांश

व. मू. २-४१-५०

शु. पं × ५-४५-०

		०	०	०
		३७	३०	
	३०	४५		
१	३०			
	४	१०		
३	२५			
१०				
१५	३४	३२	३०	०

=१५'-३४"

=०°-१५'-३४"

७/१ शनि गृह

व. मू. २-१५-२०
शु. प. × १८-१२-०

		०	०	०
		४	०	
	३	१		
०	२४			
	६	०		
४	३०			
३६				
४१	३	५	०	०

= ४१′-३″
= ०°-४१′-३″

७/२ शनि होरा

व. मू. १-५५-१५
शु. प. × ७-३०-०

		०	०	०
		८	०	
	२७	३०		
०	३०			
	१	५२		
६	२५			
७				
१४	२४	३०	०	०

= १४′-२४″
= ०°-१४′-२४″

७/(३-६-७) शनि द्रेष्काण
द्वादशांश, त्रिशांश

व. मू. १-१०-१९
शु. प. × ११-२४-०

		०	०	०
		७	३६	
	४	०		
०	२४			
	३	२९		
१५	०			
११				
१३	२१	३६	३६	०

= १३-२१
= ०°-१३′-२१″

७/४ शनि सप्तमांश

व. मू. १-२४-५
शु. प. × ७-१३-०

		०	०	०
		१	५	
	५	१२		
०	१३			
	०	३५		
२	४८			
७				
१०	६	४८	५	०

= १०′-६″
= ०°-१०-६″

६ शनि नवमांश

व. मू. १–५८–५७

शु. पं. × ५–२–०

		०	०	०
		१	५५	
	१	५६		
०	२			
	४	४५		
४	५०			
५				
६	५८	४२	५४	०

= ६-५८

= ०-६-५८

स्फुट अशुभ साधन

= अशुभ गणित अशुभ पंक्ति × वर्गेश और ग्रह के कष्टबल का गुणन फल का वर्गमूल

१/१ सूर्य ग्रह

वर्ग मूल २'–३७''–२६'''

अशुभ पंक्ति २°–४४'–१८''

			८	४२
		११	६	
	०	३६		
		२१	१६	
	२७	८		
१	२८			
	०	५८		
१	१४			
४				
७	११	१४	३०	४२

=७°–११'–१४''

१/२ सूर्य होरा

व. मू. २'–२३''–३'''

अ. पं. × १°–१६'–१०''

			०	:०
		३	५०	
	०	२०		
—	—	—	—	—
		०	४८	
	६	८		
०	३२			
—	—	—	—	—
२	२३	३		
—	—	—	—	—
३	१	३५	३०	३०

=३°–१'–३५''

$\frac{१}{३-५}$ सुर्य द्रेष्काण व नवमांश

व. मू. २-१८-३२

अ. पं. × १-१६-५५

			२९	२०
		१६	३०	
	१	५०		
	—	—	—	—
		८	३२	
	४	४८		
०	३२			
—	—	—	—	—
२	१८	३२		
—	—	—	—	—
२	५७	३५	३१	२०

= २°-५७'-३५"

$\frac{१}{४}$ सुर्य सप्तमांश

व. मू. २'-३७"-२९'''

अ. पं. × १°-२२'-९"

			४	२१
		५	३३	
	०	१८		
	—	—	—	—
		१०	३८	
	१३	३४		
०	४४			
—	—	—	—	—
२	३७	२९		
—	—	—	—	—
३	३५	३९	१५	२१

= ३°-३५'-३९"

$\frac{१}{६}$ सूर्य द्वादशांश

व. मू. २-३९-५५

अ. पंक्ति × १-१२-४

			३	४०
		२	३६	
	०	८		
....	....	....	....	....
		११	०	
	७	४८		
०	२४			
२	३९	५५		
३	१२	५	३९	४०

= ३-१२-५

$\frac{१}{७}$ सूर्य त्रिशांश

व. मू. २-३६-५८

अ. पं × १-१२-२६

			२५	८
		१५	३६	
	०	५२		
....	....	....	....	....
		११	३६	
	७	१२		
०	२४			
२	३६	५८		
३	९	२९	३७	८

= ३-९-२९

$\frac{२}{१}$ चंद्र गृह

व. मू. २–४६–१८

अ. पं. × २–४५–५६

			१६	४८
		३२	५६	
	१	५२		
		१३	२०	
	३४	३०		
१	३०			
	०	३६		
१	३२			
४				
७	३९	५४	३२	४८

= ७–३९–५४

$\frac{३}{२}$ चंद्र होरा

व. मू. २–५३–२२

अ. पं. × १–२८–३४

			१२	२८
		३०	२	
	१	८		
		१०	१६	
	२२	४४		
०	५६			
२	५३	२२		
४	१३	५४	३०	२८

= ४–१३–५४

$\frac{२}{३-६}$ चंद्र द्रेष्काण व द्वादशांश

व. मू. २–३७–२९

अ. पं. × १–२२–७

			३	२३
		४	१९	
	०	१४		
...	...	...	...	...
		१०	३८	
	१३	३४		
०	४४			
...	...	...	...	...
२	३७	२९		
३	३५	३२	०	२३

= ३–३५–३२

$\frac{२}{४}$ चंद्र सप्तमांश

व. मू. २–५२–३१

अ. पं. × १–१८–५

			२	३५
		४	२०	
	०	१०		
...	...	...	...	...
		९	१८	
	१५	३६		
०	३६			
...	...	...	...	...
	५२	३१		
३	४४	३०	३०	३५

= ३–४४–३०

३/५ चंद्र नवमांश

व. मू. २–५५–४६

अ. पं. × १–१७–४२

			३२	१२
		३८	३०	
	१	२४		
...	...	...	...	...
		१३	२	
	१५	३५		
०	३४			
...	...	...	..	...
२	५५	४६		
३	४७	३७	४	१२

= ३–४७–३७

३/७ चंद्र त्रिशांश

व. मू. ३–५–१७

अ. पं. × १–२८–५९

			१६	९
		४	४५	
	२	५१		
...	...	...	...	...
		७	५६	
	२	२०		
१	२४			
...	...	...	...	...
३	५	७		
४	३४	४०	५७	९

= ४–३४–४०

३/६ मंगल गृह

व. मू. २–४२–४३

अ. पं. × २–१७–६

			४	१८
		४	१२	
	०	१२		
		१२	११	
	११	५४		
०	३४			
	१	२६		
१	२४			
४				
६	११	४८	२७	१८

= ६–११–४८

३/२ मंगल होरा

व. मू. २–५३–३

अ. पं. × १–१०–२७

			१	२१
		१५	४५	
	०	५४		
		०	३०	
	५	५०		
०	२०			
२	५३	३		
३	२	३	१६	२१

= ३–२–३

$\frac{३}{३}$ मंगल द्रेष्काण

व. मू. २–४९–३

अ. पं. × १–१८–३०

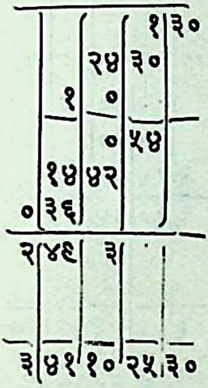

= ३–४१–१०

$\frac{३}{४}$ मंगल सप्तमांश

व. मू. ३–१–१७

अ.पं. × १–२–५२

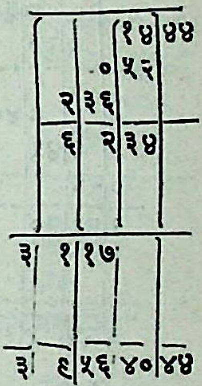

= ३–९–५६

$\frac{३}{५}$ मंगल नवमांश

व. मू. २–४२–४३

अ. पं. × १–८–३३

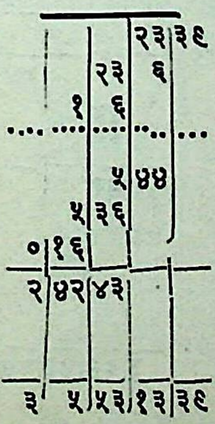

= ३–५–५३

$\frac{३}{६}$ मंगल द्वादशांश

व. मू. २–५२–१५

अ. पं. × १–८–२४

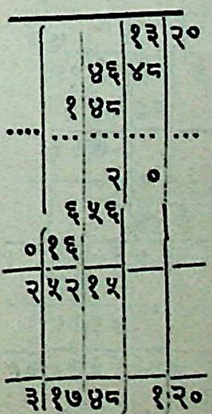

= ३–१७–४८

३ मंगल त्रिंशांश

व. मू. २-४५-४०

अ. पं × १-१३-१०

६ | ४०
७ | ३०
० | २०
....
८ | ४०
९ | ४५
० | २६
२ | ४५ | ४०

३ | २२ | १ | १६ | ४०

= ३-२२-१

४ बुध गृह

व. मू. ३-५-१७

अ. प. × २-५८-७

६ | १० | ३४
....
१६ | ९
४ | ५०
२ | ५४
६ | १० | ३४

९ | ९ | ४६ | १९ | ३४

= ९-९-४६

२ बुध होरा

व. मू. ३-५-१७

अ. पं. × १-२८-२७

७ | ३
२ | १५
१ | २१
७ | ५६
२ | २०
१ | २४
३ | ५ | १७

४ | ३३ | ८ | १८ | ३९

= ४-३३-८

४

३-४ बुध द्रेष्काण व सप्तमांश

व. मू. २-४९-३

अ. पं. × १-१८-०

० | ० | ०
० | ५४
१४ | ४२
० | ३६
२ | ४९ | ३

३ | ३९ | ४५ | ५४ | ०

= ३-३९-४५

$\frac{५}{६}$ बुध नवमांश

व. मू. २–५८–१

अ. पं. × १–१७–३६

			०	३६
		३४	४८	
	१	१२		
		०	१७	
	१६	२६		
०	३४			
२	५८	१		
३	५०	१४	५	३६

= ३–५०–१४

$\frac{४}{६–७}$ बुध द्वादशांश त्रिंशांश

व. मू. २–४८–४

अ. पं. × १–२२–४९

			३	१६
		३९	१२	
	१	३८		
		१	१८	
	१७	३६		
०	४४			
२	४८	४		
३	५१	५८	४३	१६

= ३–५१–५८

$\frac{५}{४}$ गुरु गृह

व. मू. २–३९–२१

अ. पं. × २–३५–२५

			८	४५
		१६	१५	
	०	५०		
		१२	१५	
	२२	४५		
१	१०			
	०	४२		
१	१८			
४				
६	५२	४५	३८	४५

= ६–५२–४५

$\frac{५}{२–६}$ गुरु होरा द्वादशांश

व. मू. २–४६–१८

अ. पं. × १–२१–५७

			१७	६
		४३	३२	
	१	५४		
		६	१८	
	१६	६		
०	४२			
२	४६	१८		
३	४७	८	७	६

= ३–४७–८

५ / ३-४ : गुरु द्रेष्काण व सप्तमांश

व. मू. २-४५-४०

अ. पं. × १-१३-६

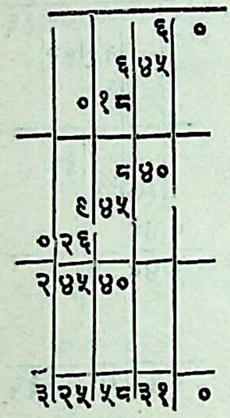

= ३-२५-५८

५ / ५-७ गुरु नवमांश व त्रिंशांश

व. मू. २-४८-४

अ. पं. × १-२३-२०

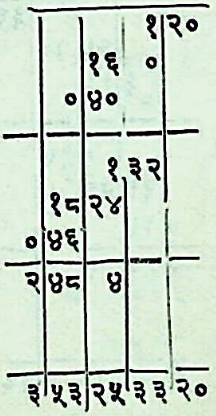

= ३-५३-२५

६ / ६ शुक्र गृह

व. मू. २-५८-१

अ. पंक्ति × २-२६-१२

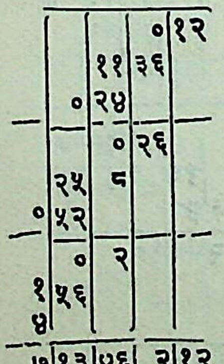

= ७-१३-४६

६ / २ शुक्र होरा

व. मू २-५५-४६

अ. पं. × १-१७-४४

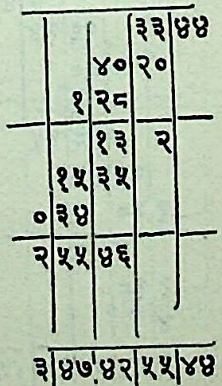

= ३-४७-४२

६
३-४ शुक्र, द्रेष्काण
सप्तमांश

व. मू. २-५९-१७

अ. पं. × १-८-१२

			३	२४
		११	४८	
	०	२४		
		२	१६	
	७	५२		
०	१६			
२	५९	१७		
३	२३	४७	७	२४

= ३-२३-४७

६
५,६,७ शुक्र नवमांश
द्वादशांश, त्रिंशांश

व. मू. २-४८-३६

अ. पं. × १-१२-४८

			२८	४८
		३८	२४	
	१	३६		
		७	१२	
	९	३६		
०	२४			
२	४८	३६		
३	२४	३४	४	४८

= ३-२४-३४

७/१ शनिग्रह

व. मू. २-३५-१६

अ. पं. × २-५-५

			१	२०
		२	५५	
	०	१०		
		१	२०	
	२	५५		
०	१०			
	०	३२		
१	१०			
४				
५	२३	४१	१६	२०

= ५-२३-४१

७/२ शनि होरा

व. मू. २-४५-१२

अ. पं. × १-६-५

			१	०
		३	४५	
	०	१०		
		१	१२	
	४	३०		
०	१२			
२	४५	१२		
३	१	५६	५८	०

= ३-१-५६

७
―――
३-६,७ शनि द्रेष्काण
द्वादशांश, त्रिशांश

व. मू. ३-१०-४८
अ. पं. × ०-५७-२०

			१६	०
		३	२०	
	१	०		
		४५	३६	
	६	३०		
२	५१			
०	०	०		
३	१	१६	१२	०

= ३-१-१६

४ शनि सप्तमांश

व. मू. ३-१८-२८
अ. पं. = १-७-४

			१	५२
		१	१२	
	०	१२		
		३	१६	
	२	६		
०	२१			
३	१८	२८		
३	४१	४०	२६	५२

= ३-४१-४०

५ शनि नवमांश

व. मू. ३-१-५२
अ.पं, × १-११-१६

			१३	५२
		०	१६	
	०	४८		
		६	३२	
	०	११		
०	३३			
३	१	५२		
३	३६	१	१	५२

= ३-३६-१

स्फुट शुभ चक्र १६

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ ग्रह	०°–२२′–१५″	०°–१५′–३६″	०°–४५′–२१″	०°–१९′–५७″	०°–१५′–१८″	०°–३९′–५४″	०°–४१′–३″
२ होरा	०–१५–३२	०–७–४८	०–१५–२१	०–९–५८	०–७–४७	०–१५–४६	०–१४–२४
३ द्रेष्काण	०–१०–५४	०–११–६	०–१३–४९	०–१३–५३	०–१०–४४	०–३१–२८	०–१३–२१
४ सप्तमांश	०–११–६	०–१०–५९	०–१४–१२	०–१३–५३	०–१०–४४	०–३१–२८	०–१०–६
५ नवमांश	०–१०–५४	०–१२–१	०–२२–३९	०–१९–५४	०–९–४३	०–१५–३४	०–९–५८
६ द्वादशांश	०–२२–६	०–११–६	०–१५–८	०–९–४६	०–७–४७	०–१५–३४	०–१३–२१
७ त्रिंशांश	०–१५–१९	०– ९–५८	०–१०–४४	०–९–४६	०–९–४३	०–१५–३४	०–१३–२१

स्फुट अशुभ चक्र १७

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ ग्रह	७°–११′–१४″	७°–३९′–५४″	६°–११′–४८″	९°–९′–४६″	६°–५२′–४५″	७°–१३′–४६″	५°–२३′–४१″
२ होरा	३–१–३५	४–१३–५४	३–२–३	४–३३–८	३–४७–८	३–४७–५२	३–१–५६
३ द्रेष्काण	२–५७–३५	३–३५–३२	४–४१–१०	३–३९–४५	३–२५–४८	३–२३–४७	३–१–१९
४ सप्तमांश	२–३५–३९	३–४४–३०	३–९–५६	३–३९–४५	३–२५–४८	३–२३–४७	३–४१–४०
५ नवमांश	२–५७–३५	३–४७–३७	३–५–५३	३–५०–१४	३–५३–२४	३–२४–३४	३–३६–१
६ द्वादशांश	३–१२–५	३–३५–३२	३–१७–४८	३–५१–५८	३–४७–८	३–२४–३४	३–१–१९
७ त्रिंशांश	३–९–२९	३–३४–४०	३–२२–१	३–५१–५८	३–५३–२४	३–२४–३४	३–१–१९

अध्याय २६

आयुर्दाय

जिस से जातक की आयु जानी जाती है उसे आयुर्दाय कहते हैं। आयुर्दाय २ प्रकार का है

(१) योगज=जो विशेष योगों से (ग्रहों की विशेष परिस्थिति से) प्रगट होती है। इस प्रकार की आयु अ नियमित होती है।

(२) गणितागत = गणित करने से जो आयु जानी जाती है। इसे नियमित आयु भी कहते हैं।

(१) योगज आयु ४ प्रकार की है

(अ) रिष्टज= अरिष्ट आदि के होने से अल्पायु होना।
(क) परम = ग्रहों के योग से परम (दीर्घ) आयु का होना।
(ख) नियत = निश्चित आयु जो विशेष योगों से प्रगट हो।
(ग) अमित

इन सब योगों का वर्णन फलित ज्योतिष में दिया है।

(२) गणितागत आयु ५ प्रकार की है।

(अ) अंशायु = सत्याचार्य के मत से
(क) पिंडायु = मयादि ,, ,,
(ख) नैसर्गिक = पाराशरी ,, ,,
(ग) जीवायु = जीवशर्मा ,, ,,
(घ) मिश्रायु = इन्हीं ४ प्रकार की आयु का मिश्रण जैसा आगे बताया है।
इनके अतिरिक्त अष्टक वर्ग से भी आयु निकाली जाती है। यह विषय आगे दिया है।

(३) कब कौन आयु लेना इसका विचार

लग्न, सूर्य और चंद्र इन में से सबसे बली जो हो उसका विचार कर उस प्रकार की आयु ग्रहण करना।

(१) लग्न = अंशायु = अर्थात् लग्न बली हो तो अंशायु लेना।
(२) सूर्य = पिंडायु = ,, सूर्य ,, ,, पिंडायु ,,
(३) चंद्र = निसर्गायु = ,, चंद्र ,, ,, निसर्गायु ,,

(४) जीवायु = ये तीनों (लग्न, सूर्य, चंद्र) बल हीन (अल्पबली) हों तो जीवायु लेना

(५) मिश्रायु = यदि लग्न चंद्र और सूर्य इन तीनों में दो का बल समान हो तो दोनों की आयु का योगार्द्ध लेना। इस प्रकार के मिश्रण को मिश्रायु कहते हैं।

मिश्रायु ४ प्रकार की है

(अ) सूर्य व लग्न समान बल = (पिंडायु + अंशायु) ÷ २ = मिश्रायु
(क) सूर्य व चंद्र ,, ,, = पिंडायु + नैसर्गिक आयु ÷ २ = ,,
(ख) लग्न व चंद्र ,, ,, = (अंशायु + नैसर्गिक आयु) ÷ २ = ,,
(ग) तीनों का ,, ,, हो तो=तीनों का आयु का योग ÷ ३ = ,,
बल का विचार = सूर्य और चंद्र का बल ग्रह षड्बल से और लग्न का बल भाव षड्बल से लेना।

समान बल = बल में दोनों या तीनों तुल्य हों जैसे

दोनों या तीनों अल्प बली = ३° से अल्प बल ,, ,, मध्य बली = ३ से ६° तक बल ,, ,, पूर्ण बली = ६° से अधिक बल	} षड्बल के अनुसार बल के विचार से

(४) मैत्री विचार

आयु विचारने में मैत्री का विचार करना पड़ता है वह किस प्रकार की मैत्री लेना इसका विचार—

अंशायु में केशवी जातक में आश्रय गुणक बनाने में अधिमित्र अधिशत्रु आदि का भी विचार किया है इस कारण उसमें पंचधा मैत्री का उपयोग करना पड़ता है।

श्रीधर ने भी इसी प्रकार आश्रय गुणक बनाने में पंचधा मैत्री का उपयोग किया है परन्तु पिंडायु, नैसर्गिक आयु और जीवायु में इन दोनों आचार्यों ने नैसर्गिक मैत्री का ही उपयोग किया है।

पाराशर आदि अन्य आचार्यों ने अंशायु आदि सब प्रकार की आयु में नैसर्गिक आयु का ही उपयोग किया है। इस कारण पाराशरी मत से आयु निकालने में नैसर्गिक मैत्री का ही यहाँ उपयोग किया है।

(५) हानि के सम्बंध में विचार

पिंडादि त्रय आयु में चक्रार्द्ध हानि और अस्तंगत शत्रुक्षेत्री नीच आदि के अनुसार भी हानि होती है। यह सब को मान्य है। अंशायु में भी केशव और श्रीपति की रीति को छोड़कर उपरोक्त दोनों हानि की जाती है।

केशव ने चक्रार्द्ध हानि के लिये लग्न में से ग्रह घटाकर शेष ६ राशि से अल्प होने पर चक्रार्द्ध हानि विशेष रीति से की है अर्थात् चक्रार्द्ध गुणक निकाल कर ग्रह आयुर्भाग में इसका गुणा कर चक्रार्द्ध हानि संस्कृत आयुर्भाग बनाया है। केशव ने अस्तंगत और नीच ग्रह का विचार नहीं किया है, परन्तु आश्रय गुणक बनाने में अधिशत्रु आदि का विचार पंचधा मैत्री के अनुसार दायांश में हानि करने के लिये किया है। इस प्रकार केशव की रीति कुछ चक्करदार है। वृहज्जातक आदि में जो आयुर्दाय साधन किया है वह सरल है।

वृहज्जातक में अंशायु में उच्चादि के अनुसार वृद्धि भी की है इसका विशेष विचार केशव ने नहीं किया।

इस कारण वृहज्जातकोक्त आयुर्दाय साधन करने की रीति पहिले दी है जिसके अनुसार आयु साधन करने में सरलता होती है। आगे केशवाचार्य की भी रीति दी है जिससे सब प्रकार से अनुभव प्राप्त हो जावे।

पहिले अंशायु साधन करने की रीति बतलाते हैं।

अंशायु साधन

इसमें नवांश के अनुसार सब ग्रह एवं लग्न की आयु निकाली जाती है

(१) नवांश – ३°–२०′ = २००′ का होता है। एक नवांश बराबर एक वर्ष के माना जाता है। इस प्रकार जितने नवांश ग्रह में हों उसी के अनुसार ग्रह की आयु होती है।

(२) इसमें प्रत्येक ग्रह की आयु १२ वर्ष से अधिक नहीं ली जाती। इस कारण १२ वर्ष से अधिक आयु गणित से निकलने पर आयु वर्ष में १२ या उसका गुणन फल जो घट सके घटा कर शेष आयु ली जाती है।

(३) जिस ग्रह की आयु निकालनी है उसकी राशि आदि की कला विकला बना कर २०० कला का भाग देने से लब्धि वर्ष मास आदि आयु प्राप्त होती है।

कलादि से वर्ष आदि आयु निकालने में २००′ का भाग देने में गणित क्रिया करनी पड़ती है इसका ध्यान रहे, उदाहरण से स्पष्ट समझ में आ जायगा।

उदाहरण

(१) सूर्य ३रा–२७°–२३′–६″ = ७०४३′–६″ ÷ २०० २००′)७०४३′–६″(३५ वर्ष

×३०
———
९० + २७
= ११७ × ६०
= ७०२३′ + २३
= ७०४३′–६″

वर्ष मा. दि. घ. प.
= ३५-२-१७-३४-४८
—२४
———
शेष ११-२-१७-३४-४८
सूर्य की असंस्कृत आयु।

६००
———
१०४३
१०००
———
४३–६
×१२
———
५१७–१२

यहाँ आयु ३५ वर्ष होने से १२ × २ = २४ वर्ष घटा शेष वर्ष ग्रहण किया।

२००' के भाग देने की विशेष रीतिः—

कला विकला ÷ २०० = लब्धि वर्ष

शेष कला और विकला × १२ ÷ २०० = लब्धि मास

शेष „ „ × ३० ÷ २०० = „ दिन

शेष × ६० ÷ २०० = „ घड़ी

शेष × ६० ÷ २०० = „ पल

इस प्रकार से भाग देने में ठीक उत्तर आता है। अर्थात् पहिले जो शेष बचता है और आगे दी हुई विकला इन दोनों में १२ का गुणा करना न कि केवल शेष में।

```
२००) ५१७-१२ (२
     ४००      मास
     ११७-१२
        × ३०
        ६-०
       ३५१०
२००) ३५१६ (१७
     २००      दिन
     १५१६
     १४००
     ११६ × ६०
२००) ६९६० (३४
     ६००      घड़ी
     ९६०
     ८००
     १६० × ६०
२००) ९६०० (४८
     ८००      पल
     १६००
     १६००
        ०
```

(२) दूसरी रीति

ग्रह स्पष्ट की सब को विकला बना कर २००' × ६० = १२०००" भाग देने से आयु निकल आयगी।

रा

जैसे सूर्य ३–२७°–२३'–६"

= ७०४६'–६"

× ६०

४२२५८० + ६

= ४२२५८६"

४२२५८६" ÷ १२०००"

```
१२०००) ४२२५८६ (३५
  कला  ३६०००   वर्ष
       ६२५८६
       ६००००
       २५८६ × १२
       ३१०३२

१२०००) ३१०३२ (२ मास
       २४०००
       ७०३२ × ३०
१२०००) २१०९६० (१७ दिन
       १२०००
       ९०९६०
       ८४०००
       ६९६०
```

व. मा. दि. घ. प.
= ३५–२–१७–३४–४८
—२४
= ११–२–१७–३४–४८
सूर्य की असंस्कृत आयु

६९६० × ६०
१२०००) ४१७६००(३४
३६००० घड़ी
५७६००
४८०००
९६०० × ६०
५७६०००

१२०००)५७६०००(४८
४८००० पल
९६०००
९६०००
०

(३) तीसरी रीति

१ नवांश = $३^\circ–२०' = ३\frac{१}{३}^\circ = \frac{१०}{३}^\circ$

$\frac{१०}{३}^\circ$ अंश (एक नवांश) में १ वर्ष तो ग्रह स्पष्ट के सर्व अंश में कितनी आयु होगी ? यह निकालने को ग्रह स्पष्ट × $\frac{३}{१०}$ = आयु । ग्रह स्पष्ट की राशि के अंशादि बना कर × $\frac{३}{१०}$ = आयु वर्ष आदि ।

५–५१–३६
× ३०
१८–०
२५–३०
१५०

रा
जैसे सूर्य ३–२७°–२३′–६″
= ११७°–२३′–६″
× ३
१०) ३५२–९–१८ (३५ वर्ष
३५०
२–९–१८
× १२
२४–१०८–२१६ ÷ ६०
+१ +३ = ३६
२५ १११ ÷ ६०
= ५१
= २५–५१–३६
१०) २५–५१–३६ (२ मास
२०
५–५१–३६

१०) १७५–४८ (१७ दिन
१०
७५
७०
५–४८
× ६०
४८–०
३००
१०) ३४८ (३४ घड़ी
३०
४८
४०
८ × ६०

१०) ४८० (४८ पल
४०
८०
८०
०

=वर्ष मा. दि. घ. प.
३५-२-१७-३४-४८
—२४
११-२-१७-३४-४८
= सूर्य की असंस्कृत आयु

(४) चौथी रीति

ग्रह स्पष्ट × १०८ = गुणन फल = ग्रह आयु

गुणन फल के अंतिम अंक वर्ष में १२ का भाग देकर शेष ग्रहण करना।

जैसे विकला × १०८ ÷ ६० शेष पल, लब्धि घटी

(कला × १०८) + लब्धि घटी ÷ ६० = शेष: घटी, लब्धि दिन

(अंश × १०८) + लब्धि दिन ÷ ३० = शेष दिन, लब्धि मास

(राशि × १०८) + लब्धि मास ÷ १२ = शेष मास, लब्धि वर्ष

सुर्य रा० अं. क. वि०

३–२७–२३–६

× १०८

	३२४	७५६ २१६	३२४ २१६	६४८
३५ लब्धि वर्ष	३२४ + ९८ ४२२ ÷ १२ = २ शेष मास	२९१६ + ४१ २९५७ ÷ ३० १७ शेष दिन	२४८४ + १० २४९४ ÷ ६० ३४ घड़ी शेष	६४८ ÷ ६० = ४८ शेष पल

= व. मा. दि. घ. प.

३५-२-१७-३४-४८

—२४

११-२-१७-३४-४८ = सूर्य की असंस्कृत आयु

(५) पाँचवी रीति = अनुपात से आयु निकालना।

$३^\circ–२०' = १$ वर्ष

$\therefore १०^\circ = \frac{१}{३}$ राशि = ३ वर्ष

१ राशि = ९ वर्ष

$५^\circ = १॥$ वर्ष = १८ मास

$१^\circ = \frac{१८}{५}$ मास या $३ + \frac{३}{५}$ मास

लब्धि मास, शेष × ६ = दिन

$१' = \frac{९}{५}$ दिन = लब्धि दिन शेष × १२ = घड़ी

$१'' = \frac{९}{५}$ घटी = लब्धि घटी शेष × १२ = पल

१ राशि = ९ वर्ष

१ अंश = $\frac{१८}{५}$ मास, शेष × ६ = दिन

१ कला = $\frac{९}{५}$ दिन, शेष × १२ = घड़ी

१ विकला = $\frac{९}{५}$ घड़ी, शेष × १२ = पल

रा

जैसे सूर्य $३–२७^\circ–२३'–६''$

३ राशि = ३ × ९ = २७ वर्ष

$२७^\circ = \frac{२७ \times १८}{५} = \frac{४८६}{५} = \frac{\text{मास}}{९७} — \frac{\text{शेष}}{१ \times ६} = \frac{\text{दिन}}{६}$ = वर्ष–मा. दिन
८–१–६

$२३' = \frac{२३ \times ९}{५} = \frac{२०७}{५} =$ दिन शेष घड़ी
४१–२ × १२ = २४
= मास दिन घ.
१–११–२४

$६'' = \frac{६ \times ९}{५} = \frac{५४}{५} =$ घड़ी शेष पल
१०–४ × १२ = ४८
= घ. प.
१०–४८

वर्ष–मा. दिन घ. प.
२७–०–०–०–०
८–१–६
१–११–२४
०–१०–४८
= ३५–२–१७–३४–४८
–२४
= ११–२–१७–३४–४८
सूर्य की असंस्कृत आयु

(६) छटवी रीति

सब गणित से बचने के लिये एक सारिणी भी बना ली गई है उससे सरलता से आयु निकल आती है। सारिणी आगे दी है।

सत्याचार्य मत से अंशायु साधन सारिणी

अंश																														
राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
व०	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८
४मा०	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८
८ दि०	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२
राशि																														
५ व.	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५
१ मा.	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८
९ दि.	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२
राशि																														
२ व.	६	६	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	११	११	११	११	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
६ मा.	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८
१ दि.	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२
राशि																														
३ व.	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११
७मा.	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८	०	३	७	१०	२	६	९	१	४	८
११दि.	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२	०	१८	६	२४	१२

कला फल

कला	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
दिन	0	१	३	५	७	९	१०	१२	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२८	0	२	४	६	७	९	११	१३	१५	१६	१८	२०	२२	
घड़ी	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२
कला	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
मास	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
दिय	२४	२५	२७	२९	१	३	४	६	८	१०	१२	१३	१५	१७	१९	२१	२२	२४	२६	२८	०	१	३	५	७	९	१०	१२	१४	१६
घड़ी	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२

विकला फल

विकला	0	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
दिन	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
घड़ी	०	१	३	५	७	९	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३४	३६	३७	३९	४१	४३	४५	४६	४८	५०	५२
पल	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२
विकला	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
दिन	0	0	0	0	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
घड़ी	५४	५५	५७	५९	१	३	४	६	८	१०	१२	१३	१५	१७	१९	२१	२२	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४०	४२	४४	४६
पल	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२	0	४८	३६	२४	१२

सारिणी देखने की रीति और उदाहरण

पहिले अंशायु निकालने की कई प्रकार की रीतियाँ दे चुके हैं जिससे पाठक किसी रीति से अनभिज्ञ न रहें। परन्तु इन सबसे सुगम अंशायु निकालने को यहाँ सारिणी दी है जिसके द्वारा बड़ी सरलता से अंशायु निकल आती है। किसी ग्रह की आयु निकालने के लिये २००' का भाग देने से जो उत्तर आता है वही उत्तर इस सारिणी से प्राप्त हो जाता है। इसमें १२ का गुणन फल घटाने की आवश्यकता नहीं है।

ग्रह की जो राशि हो उस राशि के आगे और ऊपर दिये हुए अंश के नीचे जो आयु वर्ष मास दिन में प्राप्त हो वह राशि और अंश की आयु हुई। ग्रह की कला के नीचे कला फल में मास दिन घड़ी में आयु मिलेगी और विकला के नीचे विकला फल में दिन घड़ी पल आयु निकलेगी। सब का योग करने से ग्रह की असंस्कृत आयु निकल आयगी।

उदाहरण—(असंस्कृत आयु सारिणी से निकालने का)

(१) सूर्य रा ३–२७°–२३'–६"

३ राशि के सामने २७° के नीचे = व. मा. दि. घ. प.
११–१–६

कला फल में २३' ,, ,, = १–११–२४

विकला फल में ६" ,, ,, = ०–१०–४८

योग = ११–२–१७–३४–४८ = सूर्य अंशायु

(२) चंद्र रा ८–२०°–५०'–३५"

रा	वर्ष मा. दि. घ. प.
८–२०° =	६–० – ०
५५' =	३ – ९–०
३५" =	१–३–०
योग =	६–३–१०–०

चंद्र अंशायु

(३) मंगल रा १–१६°–२७'–५८"

रा	वर्ष मा. दि. घ. प.
१–१६° =	१–९–१८
२७' =	१–१८–३६
५८" =	१–४४–२४
योग =	१–११–८–२०–२४

मंगल की अंशायु

(४) बुध रा ३–१३°–०'–३५"

रा	वर्ष मा. दि. घ. प.
३–१३° =	६–१०–२४
०' =	०–०–०
३५" =	१–३–०
योग =	६–१०–२५–३

बुध की अंशायु

(५) गुरु रा ८–१८°–४४'–५६"

रा	वर्ष मा. दि. घ. प.
८–१८° =	५–४–२४
४४' =	२–१९–१२
५६" =	१–४०–४८
योग =	५–७–१४–५२–४८

गुरु की अंशायु

रा

(६) शुक्र २–१७°–१४′–५६″

रा वर्ष मा. दि. घ. प.

२–१७° = ११–१–६

१४° = ०–२५–१२

५६″ = १–४६–१२

योग = ११–२–२–५८–१२

शुक्र की अंशायु

रा

(७) शनि १–२०°–३०′–१०″

रा वर्ष मा. दि. घ. प.

१–२०° = ३–०–०

३०′ = १–२४–०

१०″ = ०–१८–०

योग = ३–१–२४–१८–०

शनि की अंशायु

रा

(८) लग्न ११–०°–२८′–११″

रा–० वर्ष मा. दि. घ. प.

११–० = ३–०–०

२८′ = १–२०–२४

११″ = ०–१९–४८

योग = ३–१–२०–४३–४८

लग्न अंशायु

असंस्कृत अंशायु चक्र

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल
१ सूर्य	११	२	१७	३४	४८
२ चंद्र	६	३	१०	३	०
३ मंगल	१	११	८	२०	२४
४ बुध	६	१०	२५	३	०
५ गुरु	५	७	१४	५२	४८
६ शुक्र	११	२	२	५८	१२
७ शनि	३	१	२४	१८	०
८ लग्न	३	१	२०	४३	४८

(३) इस प्रकार लग्न सहित सातों ग्रह की आयु निकालना तब लग्न या ग्रह की असंस्कृत आयु होती है।

(४) इस असंस्कृत आयु में हानि वृद्धि करने के उपरांत जो आयु प्राप्त हो वह संस्कृत आयु होती है।

(५) उपरोक्त :असंस्कृत आयु में पहिले हानि करने के उपरांत वृद्धि करनी पड़ती है।

हानि वृद्धि करने की रीति आगे दी है।

(६) हानि २ प्रकार की होती है

एक चक्रार्द्ध हानि दूसरी :शत्रु क्षेत्री अस्तंगत नीच आदि के अनुसार हानि। ये दो प्रकार की हानि असंस्कृत आयु में करनी पड़ती है।

(७) चक्रार्द्ध हानि

भाव	१२	११	१०	९	८	७
पाप ग्रह में हानि	(१ पूरा)	$\frac{१}{२}$	$\frac{१}{३}$	$\frac{१}{४}$	$\frac{१}{५}$	$\frac{१}{६}$
शुभ ग्रह में हानि	$\frac{१}{२}$	$\frac{१}{४}$	$\frac{१}{६}$	$\frac{१}{८}$	$\frac{१}{१०}$	$\frac{१}{१२}$

चंद्र और बुध इसके लिये सदा शुभ ग्रह माने जाते हैं। ये इसमें पाप ग्रह नहीं माने जाते।

(अ) जब ऊपर बताये भाव में से किसी भाव में ग्रह हो तो पाप या शुभ ग्रह के विचार से सम्पूर्ण आयु में से उपरोक्त प्रमाण से आयु की हानि होती है।

जैसे लग्न कुंडली के दशम भाव में कोई पाप ग्रह हो तो उसकी पूर्ण असंस्कृत आयु का $\frac{१}{३}$ भाग घटेगा। यदि वहाँ शुभ ग्रह हो तो केवल $\frac{१}{६}$ भाग उसकी आयु का घटेगा। इसी को चक्रार्द्ध हानि कहते हैं।

इसी कारण श्रीधर और केशव ने लग्न से ग्रह घटाया है शेष ६ राशि से कम होगा तो ग्रह ७ और १२ भाव के बीच कहीं आधे चक्र में होगा तब ही हानि होगी अन्यथा नहीं। शेष ६ राशि से अधिक हो तो ग्रह १ से ६ भाव तक में कहीं होगा, तब हानि होगी। इसी कारण आधे चक्र के विचार से यहाँ हानि की जाती है। इसी से इसको चक्रार्द्ध हानि कहते हैं। केशव ने पहिले ही दायांश में यह हानि करके फिर कर्म योग गुणक से गुणा कर: २००′ का भाग देकर आयु निकाली है।

(क) हानि करने के लिये = पाप ग्रह = सूर्य मंगल शनि और शुभ ग्रह = चंद्र बुध गुरु शुक्र को मानना।

(ख) एक भाव में एक से अधिक ग्रह हों तो जो ग्रह अधिक बली होगा उसी को आयु का हरण (हानि) होगा चाहे वह शुभ या पाप ग्रह हो।

(ग) ऊपर बताये भाव के अतिरिक्त और किसी भाव में ग्रह हों तो उनकी कोई हानि इसके अनुसार नहीं होगी।

(८) चक्रार्द्ध हानि कर लेने के उपरांत नीचे बताये प्रकार में भी हानि होती है।

मैत्री	मंगल को छोड़कर अन्य शत्रु क्षेत्री ग्रह में	नीच राशि में ग्रह हो तो	शुक्र और शनि को छोड़ कर अन्य अस्तंगत ग्रह में	वक्रीग्रह शत्रु राशि में हो तो भी $\frac{१}{३}$ भाग नहीं घटेगा
हानि	$\frac{१}{३}$	$\frac{१}{२}$	$\frac{१}{२}$	०

इस प्रकार ग्रह की परिस्थिति होने में ग्रह की आयु का उपरोक्त भाग घट जायगा। जैसे बुध शत्रु क्षेत्री है तो उसकी आयु का $\frac{1}{3}$ भाग घट जायगा। घटाने से जो शेष बचे वह बुध की आयु होगी। यदि मंगल शत्रु क्षेत्री है तो उसकी आयु नहीं घटेगी। शुक्र या शनि अस्तंगत हो तो भी आयु न घटेगी। इसी प्रकार वक्री ग्रह शत्रु क्षेत्री भी हो तो आयु न घटेगी।

अस्तंगत

जब सूर्य के साथ ग्रह नीचे लिखे हुए अंशों के भीतर हो तो वह ग्रह अस्त कहलाता है। अर्थात् सूर्य से ग्रह का अंतर परम कालांश के भीतर हो तो ग्रह अस्त समझा जाता है।

ग्रह	चंद्र	मंगल	बुध मार्गी	बुध वक्री	गुरु	शुक्र मार्गी	शुक्र वक्री	शनि
परम कालांश	१२ अंश	१७	१४	१२	११	१०	८	१५

(९) ग्रह की आयु में वृद्धि करने के नियम

ऊपर बताई दोनों प्रकार की हानि तो सब प्रकार की आयु में होती है परन्तु यह वृद्धि केवल अंशायु में ही होती है।

ग्रह महत्व	उच्च राशि का तथा वक्री ग्रह	ग्रह स्व राशि, स्व नवांश वर्गोत्तम या स्वद्रेष्काण में हो
वृद्धि	आयु × ३	आयु × २

अर्थात् ग्रह उच्च हो या वक्री हो तो आयु तिगुनी करना, स्वराशि आदि में से किसी में हो, जो ऊपर बताया है, तो आयु दुगनी होगी।

(१०) ऊपर जो हानि और वृद्धि करना बताया है उसके अनुसार हानि वृद्धि करते समय नीचे बताई बातों पर ध्यान रखना।

हानि = हानि २ प्रकार की है जैसा ऊपर (८) और (९) में बताया है।

(अ) इनमें पहिले ८ चक्रपात हानि करना फिर दूसरी हानि करना।

(क) आयु में एक ही प्रकार की हानि कई बार आवे तो उसमें की केवल एक ही बार हानि करना। जैसे ग्रह नीच राशि और अस्तंगत में भी हो तो प्रत्येक में $\frac{1}{2}$ हानि होना था परन्तु ऐसी स्थिति में यहाँ एक ही बार उस ग्रह की आयु का $\frac{1}{2}$ हानि करना, दूसरी $\frac{1}{2}$ हानि त्याग देना।

(ख) जब एक से अधिक प्रकार की हानि प्राप्त हो तो जो सबसे अधिक हानि हो केवल उसी हानि को करना, शेष हानि छोड़ देना। जैसे ग्रह अस्तंगत और शत्रु ग्रही भी हो तो अस्तंगत की $\frac{1}{2}$ और शत्रु क्षेत्री की $\frac{1}{3}$ हानि प्राप्त होती है,

ऐसी स्थिति में सबसे बड़ी हानि $\frac{1}{2}$ है, इससे केवल $\frac{1}{2}$ हानि करना, $\frac{1}{3}$ हानि छोड़ देना।

(ग) जब एक प्रकार की हानि कर लेने के उपरांत दूसरे प्रकार की भी हानि प्राप्त हो तो दूसरी हानि भी करना। जैसे मंगल ग्रह सप्तम भाव में है तो उसकी आयु का $\frac{1}{6}$ भाग चक्रार्द्ध हानि की रीति के अनुसार घटेगा। परन्तु ग्रह नीच राशि में भी है तो यह दूसरे प्रकार की हानि हुई। इस कारण चक्रपात हानि कर लेने के उपरांत जो आयु बचे उसका और $\frac{1}{2}$ भाग नीच राशि में होने के कारण घटेगा, क्योंकि दोनों भिन्न २ प्रकार की हानियाँ हैं।

वृद्धि = (अ) हानि कर लेने के उपरांत वृद्धि करना

(क) आयु में बार २ दुगुना या तिगुना करने का योग प्राप्त हो तो एक ही बार दुगना या तिगुना करना। जैसे ग्रह उच्च का है, वक्री भी है तो उच्च का होने से आयु तिगुनी होगी, परन्तु वक्री भी होने से तिगुना प्राप्त होता है ऐसी स्थिति में एक ही बार तिगुना करना। या ग्रह स्वराशि में हो और स्वद्रेष्काण में भी हो तो २ बार दुगुना नहीं करना, एक ही बार दुगुना करना।

(ख) जिसकी आयु में दुगुना और तिगुना भी करना एक साथ प्राप्त हो तो सबसे बड़ा अर्थात् तिगुना केवल करना, दुगुना करना छोड़ देना। जैसे ग्रह वक्री हो और स्वराशि में भी हो तो केवल वक्री का तिगुना करना। स्वराशि से प्राप्त दुगुना करना त्याग दो।

(११) लग्नायु में वृद्धि करने का नियम

(अ) लग्न षड्बल के विचार से बलवान (पूर्ण बली) हो तो लग्न की राशि तुल्य वर्ष लग्न में और जोड़ना। लग्न की शेष अंशादि का भी उसी अनुपात से वर्ष निकाल कर और जोड़ देना।

रा

जैसे लग्न ११–०°–२८′–११″ है यह पूर्ण बली है तो राशि ११ होने से लग्नायु में ११ राशि के ११ वर्ष और जोड़ा शेष ०°–२८′–११″ का भी उसी अनुपात से आयु निकाल कर और जोड़ना।

अनुपात निकालने की सरल रीति आगे दी है

(क) जब लग्न का बल ६ अंश से अधिक (पूर्ण बली) हो तो यह वृद्धि होती है इससे कम बल होने पर यह वृद्धि नहीं होती।

(ख) वृद्धि करने के लिये अनुपात की सरल युक्ति

१ राशि = १२ मास = १ वर्ष   जितनी राशि हों उतने वर्ष ।
१° = १२ दिन = $\frac{२}{५}$ मास   अंश × २ ÷ ५ = लब्धि मास, शेष × ६ = दिन
१′ = १२ घटी = $\frac{१}{५}$ दिन   कला ÷ ५ = ,, दिन, ,, × १२ = घटी
१″ = १२ पल = $\frac{१}{५}$ घटी   विकला ÷ ५ = ,, घटी, ,, × १२ = पल

रा

जैसे लग्न ११–०°–२८′–११″ है । बल ६° से अधिक होने से इसमें वृद्धि करनी पड़ेगी ।

११ राशि = ११ वर्ष
० अंश = ०
२८′ ÷ ५ = लब्धि ५ दिन शेष ३ × १२ = ३६ घड़ी
११′ ÷ ५ = ,, २ घटी ,, १ × १२ = १२ पल

वर्ष–मा. दि. घ. प.
११–०–०–०–०
०–०–०–०
०–०–०
५–३६–०
२–१२
= ११–०–५–३८–१२ वृद्धि

लग्नायु व. मा. दि. घ. प.
३–१–२०–४३–४८
+ वृद्धि ११–०–५–३८–१२
योग = १४–१–२६–२२–० = यह लग्न की संस्कृत आयु हुई ।

लग्न की अंशायु में और कोई हानि नहीं होती । उसे क्रूरोदय हरण कहते हैं यह क्रूरोदय हरण अंशायु में नहीं होता ।

उदाहरण

प्रत्येक ग्रह की जो असंस्कृत आयु प्राप्त हुई है उसमें हानि और वृद्धि का विचार कर संस्कृत आयु निकालते हैं ।

लग्न कुण्डली

नैसर्गिक मैत्री

४ सूर्य = मित्र क्षेत्री   शुक्र } स्वद्रेष्काण
६ चंद्र = सम ,,   शनि } में
२ मंगल = सम ,,   गुरु = वक्री है
४ बुध = शत्रु ,,   अस्तंगत = कोई नहीं
१ गुरु = स्वराशि ,,   नीच में = ,,
३ शुक्र = मित्र क्षेत्री
२ शनि = मित्र क्षेत्री

(१) चक्रार्द्ध हानि

केवल गुरु और चंद्र दशम भाव में हैं इस कारण इनकी हानि होनी है। ये दोनों एक राशि में हैं। इस कारण दोनों का बल देखने से प्रगट हुआ कि दोनों में चंद्र बलवान है। इस कारण केवल चंद्र की चक्रार्द्ध हानि होगी। गुरु की हानि नहीं होगी।

चंद्र शुभ ग्रह है। दशम भाव में शुभ ग्रह की $\frac{1}{६}$ हानि होती है। इस कारण चंद्र की $\frac{1}{६}$ हानि होगी।

व. मा. दि. घ. प.

चंद्र की आयु ६-३-१०-३-० ÷ ६

$\frac{1}{६}$ = १-०-१६-४०-३० हानि

शेष = ५-२-२३-२२-३० आयु बची

व. मा. दि. घ. प.

∴ चंद्र की संस्कृत आयु -५-२-२३-२२-३०

(२) इतर हानि = केवल बुध शत्रुक्षेत्री है = $\frac{1}{३}$ हानि

बुध आयु व. मा. दि. घ. प.

६-१०-२५-३-० ÷ ३

$\frac{1}{३}$ = २- ३-१८-२१-०

शेष = ४- ७- ६-४२-० शेष आयु

(और कोई ग्रह की हानि नहीं होगी।)

व. मा. दि. घ. प.

∴ बुध संस्कृत आयु ४-७-६-४२-०

(३) वृद्धि = गुरु वक्री ×३, स्वगृही ×२ = केवल वक्री की आयु × ३ होगी।

शुक्र = स्व द्रेष्काण = आयु × २

शनि = स्व द्रेष्काण = आयु × २

(और कोई की वृद्धि नहीं होगी।)

गुरु	शुक्र	शनि
व. मा. दि. घ. प.		
५-७-१४-५२-८	११-२-२-५८-१२	३-१-२४-१८-०
× ३	× २	× २
=१६-१०-१४-३५-२४	=२२-४-५-५६-२४	६-३-१८-३६-०
वक्री की वृद्धि	स्वद्रेष्काण की वृद्धि	स्वद्रेष्काण की वृद्धि

संस्कृत अंशायु चक्र

ग्रह	वर्ष मास दिन घड़ी पल	
१ सूर्य	११- २-१७-३४-४८	इसमें कोई हानि नहीं हुई
२ चंद्र	५- २-२३-२२-३०	दशम भाव की $\frac{1}{६}$ हानि कृत
३ मंगल	१-११- ८-२०-२४	कोई हानि नहीं

४ बुध	४– ७– ६–४२– ०	शत्रु क्षेत्री को $\frac{1}{3}$ हानि
५ गुरु	१६–१०–१४–३८–२४	स्वगृही, वक्री=केवल वक्री को × ३ वृद्धि
६ शुक्र	२२– ४– ५–५६–२४	स्वद्रेष्काण = × २ वृद्धि
७ शनि	६– ३–१८–३६– ०	स्वद्रेष्काण = × २ वृद्धि
८ लग्न	१४– १–२६–२२– ०	लग्न बली=राशि तुल्य वर्ष आदि की वृद्धि
योग	८२– ८– १–३२–३०	

केशवी जातक की रीति से अंशायु साधन की संक्षिप्त रीति

१ प्रत्येक ग्रह की चेष्टा रश्मि और उच्च रश्मि पहिले बना लेना चाहिए।

उच्च बल से उच्च रश्मि और चेष्टाबल से चेष्टा रश्मि बनती है।

यह अध्याय २४ के आरंभ में बता चुके हैं।

चेष्टाबल × ६ = अंशादि + १° = चेष्टा रश्मि

उच्चबल × ६ = अंशादि + १° = उच्च रश्मि

२ प्रत्येक ग्रह की रश्मि से गुणक बनाना

(रश्मि ३ से कम हो + १) ÷ ४=गुणक } चेष्टा रश्मि से चेष्टा गुणक होता है
(„ „ अधिक – १) ÷ २=गुणक } उच्च „ उच्च „ „

इस प्रकार चेष्टा रश्मि से चेष्टा गुणक और उच्च रश्मि से उच्च गुणक बनाना।

३ $\sqrt{\text{चेष्टा गुणक} \times \text{उच्च गुणक}}$=स्फुट गुणक

४ आश्रय गुणक बनाकर संस्कृत आश्रय गुणक बनाना

जिसे वास्तविक आश्रय गुणक भी कहते हैं।

वास्तविक आश्रय गुणक ३ प्रकार से बनता है

४ (अ) केशवी जातक की रीति से, ४ (ब) श्रीपति पद्धति की रीति से

४ (क) सारिणी द्वारा

इन सब में सारिणी द्वारा आश्रय गुणक निकालना सरल है। तीनों रीतियाँ आगे दी हैं।

४ (अ) केशव की रीति से आश्रय गुणक बनाना

मैत्री	स्व	अधि मित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधि शत्रु	बिशेष भाजक	
गृह में	३६	३०	२६	१८	१०	६	वर्गोत्तम स्वनवांश	गृह में होरादि से दूना अंक है
होरादि वर्ग में	१८	१५	१३	९	५	३	स्वद्रेष्काण में	
साधारण भाजक	३६	४८	५४	७२	१०८	१४४	३६	

ग्रह वर्गोत्तम, स्व नवांश, या स्वद्रेष्काण में हो तो उपरोक्त साधारण भाजक न लेकर विशेष भाजक अंक ३६ लेना।

(१) पहिले एक सप्तवर्गी चक्र बना लेना। फिर पंचधा मैत्री के अनुसार यह विचार करना कि ग्रह की मैत्री वर्गेश से कैसी है उस मैत्री के अनुसार ऊपर बताये अंक सप्तवर्गी चक्र में रखना। जो अंक गृह में रखे जाते हैं, शेष होरादि ६ वर्ग में उसके आधे ही अंक ऊपर बताये चक्र के अनुसार रखे जाते हैं।

(२) अंत में सब वर्गों के अंकों का योग प्रत्येक ग्रह का पृथक्-पृथक् कर नीचे रखना, यही अंक योग है।

(३) उस अंक योग के नीचे मैत्री के अनुसार ऊपर बताये भाजक अंक रखना। यहाँ मैत्री उस ग्रह के केवल गृह स्थान के सम्बन्ध से विचारना

(४) अंक योग में भाजक का भाग देना और ३ संख्या तक लब्धि अंश कला विकला में निकाल कर सब से नीचे रखना, यही अंक साधारण आश्रय गुणक होता है।

(५) संस्कृत आश्रय गुणक (स्पष्ट आश्रय गुणक)

उपरोक्त विधि से जो साधारण आश्रय गुणक प्राप्त होता है उसका विशेष संस्कार करना पड़ता है। जो ग्रह वर्गोत्तम स्वनवांश या स्वद्रेष्काण में हो परन्तु स्वगृही न हो, उस में यह विशेष संस्कार होता है। यदि ये ग्रह स्वगृही भी हों तो विशेष संस्कार नहीं करना पड़ता।

मैत्री	अधिशत्रु गृह	अधिमित्र गृही	शत्रु गृही	मित्र गृही
विशेष भाजक अंक	६३ ऋण	+६४	९४ ऋण	+९४

इस प्रकार जो ग्रह के गृह अंक हों उनमें उपरोक्त प्रकार के भाजक का भाग देने से जो लब्धि अंश कलादि आवे उसे पूर्व प्राप्त साधारण आश्रय गुणक में उपरोक्त प्रकार से ± करना पड़ता है तब संस्कृत आश्रय गुणक होता है। यह संस्कार केवल अधि मित्र, मित्र, शत्रु, या अधिशत्रु मैत्री में केवल उसी समय होता है जब ग्रह स्वगृही न हो, परन्तु वर्गोत्तम, स्वनवांश या स्वद्रेष्काण में हो।

इस प्रकार से प्राप्त आश्रय गुणक ही स्पष्ट आश्रय गुणक या वास्तविक आश्रय गुणक कहलाता है।

४ (ब) श्रीपति की रीति से वास्तविक आश्रय गुणक निकालना

(१) सप्तवर्ग चक्र बना कर उस में पंचधा मैत्री के अनुसार मैत्री लिखना। फिर उस में मैत्री के अनुसार नीचे बताये अंक रखना।

(२) आश्रय गुणक का स्पष्ट गुणक

मैत्री	वर्गोत्तम	स्व स्थान	स्व नवांश	स्व द्रेष्काण	अधि मित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधि शत्रु
गृह में	× १/२	× १/२	× १/२	× १/२	× ३/८	× १/३	× १/४	× १/६	× १/८
होरादि शेष ६ वर्ग में	× १/४	× १/४	× १/४	× १/४	× ३/१६	× १/६	× १/८	× १/१२	× १/१६
भगुण (बिशेष भाजक)	× २	× २	× २	× २	× ११/७	× २६/११	× १	× १३/२१	× ३/७

(३) भगुण का उपयोग

जब ग्रह स्वगृही तो न हो परन्तु स्वद्रेष्काण, स्वनवांश, या वर्गोत्तम में हो तो उपरोक्त गुणक के अतिरिक्त उसमें भगुण का भी गुणा करना पड़ता है।

(४) इस प्रकार गुणा करने से जो गुणनफल प्राप्त होता है वह आश्रय गुणक का स्पष्ट गुणक बनता है।

(५) सप्त वर्ग का वास्तविक आश्रय गुणक=स्पष्ट गुणक × अंतर ताड़क

(६) अंतर ताड़क = मैत्री के अनुसार गुणनफल के अंक नीचे दिये हैं। राशि या वर्ग में ग्रह की मैत्री के अनुसार अंतर ताड़क होते हैं।

मैत्री	स्व गृही	अधि मित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
अंतर ताडक	× २	× ५/३	× १३/९	× १	× ५/९	× १/३

(७) वास्तविक आश्रय गुणक = सप्तवर्गी चक्र में ऊपर बताये गुणन फल को निकालकर रखना। उपरांत प्रत्येक ग्रह के सब वर्गों का पृथक २ योग कर रखना। यही वास्तविक आश्रय गुणक या संस्कृत आश्रय गुणक होता है।

(८) वास्तविक आश्रय गुणक यहां भिन्न रूप में निकलता है अंश कला में भिन्न को परिवर्तन करने का एक चक्र होता है उसके सहारे भिन्न रूप का अंश कलादि बना कर रखना वही वास्तविक आश्रय गुणक उपयोग में आता है।

४ (क) वास्तविक आश्रय गुणक निकालने के लिये उपरोक्त दोनों रीतियों में बहुत गणित करना पड़ता है। इससे बचने के लिये एक सारिणी बना दी गई है जिसके सहारे सरलता से आश्रय गुणक निकल आता है। इसी सारिणी का उपयोग करना चाहिए।

५ उपरोक्त बताये ४ (अ), ४ (ब) या ४ (क) में से किसी प्रकार से आश्रय गुणक निकाल लेने पर उससे कर्म योग बनाया जाता है, जिससे आयु निकाली जाती है।

कर्म योग गुणक = $\sqrt{\text{स्फुट गुणक} \times \text{वास्तविक आश्रय गुणक}}$

६ आयुर्भाग (दायांश)

ग्रह या लग्न की राशि आदि के अंश बना कर ÷ ४० = शेष अंश कला विकला।
यहां केवल अंश में ४० का भाग देना और जो अंश शेष बचे और उसकी कला विकला सब मिलकर आयुर्भाग (दायांश) होता है।

७ हानि संस्कृत आयुर्भाग के लिये चक्रार्द्ध हानि गुणक निकालना।

ग्रहोनित लग्न = (लग्न–ग्रह) = शेष ६ राशि से अल्प हो = षड्भाल्प ग्रहोनित लग्न हो = तब चक्रार्द्ध हानि होती है।

यदि शेष ६ राशि से अधिक हो तो कोई हानि नहीं होती।

(१) गुणक = १ ($\frac{१०८०००''}{३०\ \text{अंश की}}$ —षड्भाल्प ग्रहोनित लग्न की विकला)

(२) गुणक=१–(ग्रहोनितलग्न १ राशि से कम हो तो सबके अंश बनाकर ÷ ३० अंश)

(३) शुभ ग्रह में गुणक = (१–पूर्वोक्त लब्धि का आधा)

(४) एक राशि में १ से अधिक ग्रह हो तो सबसे बली ग्रह का गुणक निकालना। शेष को छोड़ देना।

८ चक्रार्द्ध हानि संस्कृत आयु = (चक्रार्द्ध हानि गुणक × ग्रह आयुर्भाग)

९ ग्रहायु=(हानि कृत अंशायु दायांश × कर्म योग गुणक) ÷ २००''=वर्ष मास दिन आदि

२००' के भाग देने की विशेष रीति

सबकी कला बनाकर कला विकला ÷ २०० = लब्धि वर्ष, शेष कला विकला
शेष कला विकला × १२ ÷ २०० = लब्धि मास, शेष कला विकला
" " × ३० ÷ २०० = " दिन " " "
" " × ६० ÷ २०० = " घड़ी " " "
" " × ६० ÷ २०० = " पल " " "

१० लग्नायु = (लग्नायुर्भाग × ३) ÷ १० = वर्ष मास आदि

+ (लग्न की राशि छोड़ कर केवल अंश कलादि) × २ ÷ ५ = मास दिन आदि
(यहाँ १० और ५ का भाग भी ऊपर बताई रीति से देना)

+ लग्न का षड् बल ६ रूप से अधिक हो तो लग्न में जितनी राशि हो उतने वर्ष और जोड़ना।

इन सब का योग लग्नायु वर्षादि होता है

११ इस प्रकार आई हुई प्रत्येक ग्रह की और लग्न की आयु चक्र में स्थापित करना और अंत में सबका योग करना। यही अंशायु हुई।

आगे उदाहरण देकर अंशायु निकालने का पूरा गणित स्पष्ट रूप से समझाया गया है।

केशवी रीति से अंशायु साधन करने का उदाहरण

स्पष्ट गुणक साधन

१—स्पष्ट गुणक साधन करने के लिये उच्च रश्मि और चेष्टा रश्मि का उपयोग होता है। उच्च और चेष्टा रश्मि अध्याय २४ के आरम्भ में निकाल चुके हैं उसी का चक्र नीचे दिया है।

उच्च रश्मि और चेष्टा रश्मि चक्र

चक्र	ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल
१	उच्च रश्मि	३°–२५′–१२″	२°–३५′–४८″	३°–२३′–०″
२	चेष्टा रश्मि	५ –१८ –४८	५ –४७– ०	३ –४६ –१२

		बुध	गुरु	शुक्र	शनि
		४°–५६′–०″	१°–३२′–३०″	४°–१९′–३०″	२°–१′–०″
		४ –२५–४२	५ –४८–६	३ –५६ –०	३ –१६–४८

२—उच्च गुणक और चेष्टा गुणक बनाने की रीति

	यदि ३ राशि से कम हो तो	यदि ३ राशि से अधिक हो
(१) उच्च गुणक = उच्चराशि यदि	(उच्च रश्मि + १) ÷ ४	(उच्च रश्मि–१) ÷ २
(२) चेष्टा गुणक = चेष्टा ,, ,,	(चेष्टा रश्मि + १) ÷ ४	(चेष्टा रश्मि–१) ÷ २

उच्च गुणक और चेष्टा गुणक साधन का गणित

रश्मि	सूर्य	चंद्र	मंगल
उच्च रश्मि	३°–२५′–१२″	२–३५–४८	३°–२३°–०″
रीति	–१	+१	–१
	= २–२५–१२ ÷ २	३–३५–४८ ÷ ४	२–२३–० ÷ २
∴ उच्च गुणक	१–१२–३६	०–५३–१७	१–१२–३०

	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	४°–५६′–०″	१°–३२′–३०″	४°–१९′–३०	२°–१′–०″
	–१	+१	–१	+१
	३–५६–० ÷ २	२–३२–३० ÷ ४	३–१९–३० ÷ २	३–१–० ÷ ४
उ० गु०	१–५८–०	०–३८–७	१–३९–४५	०–४५–१५

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
चेष्टा रश्मि	५–१८–४८	५–४७–०	३–४६–१२	४–२५–४२
रीति	–१	–१	–१	–१
	४–१८–४८ ÷ २	४–४७–० ÷ २	२–४६-१२ ÷ २	३–२५-४५ ÷ २
∴ चेष्टा गुणक =	२–९–२४	२–२३–३०	१–२३–६	१–४२–५१

	गुरु	शुक्र	शनि
	५–४८–६	३–५६–०	३–१६–४८
	–१	–१	–१
	४–४८–६ ÷ २	२–५६–० ÷ २	२-१६-४८ ÷ २
चेष्टागुणक	२–२४–३	१–२८–०	१–८–२४

जहाँ संख्या ३ राशि से कम है वहाँ १ जोड़कर ४ का ४ दिया है। जहाँ ३ राशि से अधिक है वहाँ १ घटाकर २ का भाग दिया है इस प्रकार उच्च रश्मि से क्रिया करने पर उच्च गुणक और चेष्टा रश्मि से क्रिया करने पर चेष्टा गुणक बना है।

उच्चरश्मि और चेष्टा रश्मि चक्र

चक्र	ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल
३	उच्च गुणक	१°–१२′–३६″	०°–५३′–३७″	१°–१२′–३०″
४	चेष्टा गुणक	२–९–२४	२–२३–३०	१–२३–६

बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१°–५८′–०″	०°–३८′–७″	१°–३९′–४५″	०°–४५′-१५″
१–४२–५१	२–२४–३	१–२८–०	१–८–२४

३—स्पष्ट गुणक $\sqrt{\text{चेष्टा गुणक} \times \text{उच्च गुणक}}$

इन्हीं दोनों का आपस में गुणा कर गुणन फल का वर्गमूल निकालने से स्पष्ट गुणक बनता है।

३ स्पष्ट गुणक साधन गणित

(१) सूर्य स्पष्ट गुणक साधन

उच्च गुणक १°–२२′३६″

× चेष्टा गुणक २-९-२४

			१४	२४
		४	४८	
	०	२४		
		५	२४	
	१	४८		
०	९			
	१	१२		
०	२४			
२				
२	३६	३४	२६	२४

= २°-३६′-३४″

× ६०

१२० + ३६ = १५६

× ६०

९३६० + ३४

= ९३९४″

९	९३९४(९६
+९	८१
१८६	१२९४
	१११६
	१७८ + १

१७९५६०

१९४)१०७४०(५५

९७०

१०४०

९७०

७०

= ९६″–५५‴

= १′–३६″–५५‴

सूर्य स्पष्ट गुणक

(२) चंद्र स्फुट गुणक साधन

उच्च गु० ०°–५३′–५७″

× चेष्टा गु० २–२३–३०

			२८	३०
		२६	३०	
	०	०		
		२१	५१	
	२०	१९		
०	०			
	१	५४		
१	४६			
०				
२	९	१	४९	३०

= २°–९′–१″

× ६०

१२० + ९ = १२९ × ६०

= ७७४० + १

= ७७४१″

८ | ७७४१(८७
\+ ८ | ६४
१६७ | १३४१
११६९
१७२ + १
१७३ × ६०
१७६)१०३८०(५८
८८०
१५८०
१४०८
१७२
= ८७″–५८‴
= १′–२७″–५८‴
चंद्र स्पष्ट गुणक

(३) मंगल स्पष्ट गुणक साधन

उच्च गु० १–१२–३०

× चेष्टा गु० १–२३–६

			३		०
		१	१२		
	०	६			
		११	३०		
	४	३६			
०	२३				
१	१२	३०			
१	४४	२४	४५		०

= १°-४४′-२४″

× ६०

६० + ४४ = १०४ × ६०

= ६२४० + २४

= ६२६४″

७ | ६२६४(७९
\+ ७ | ४९
१४९ | १३६४
| १३४१
२३ + १ = २४
× ६०
१६०)१४४०(९
१४४०
०
= ७९″–९‴
= १′–१९––९‴
मंगल स्पष्ट गुणक

(४) बुध स्पष्ट गुणक साधन

उच्च गु० १-५८-०

× चेष्टा गु० १-४२-५१

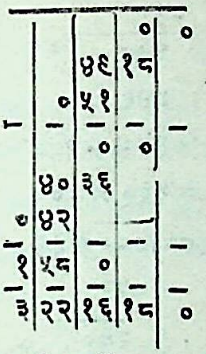

= ३°-२२′-१६″

× ६०

१८० + २२ = २०२ × ६०

= १२१२० + १६

= १२१३६″

```
    १ | १२१३६(११०
  + १ | १
  ---   ---
   २१ | २१
  + १ | २१
  ---   --------
  २२० |   ०३६ + १
```

= ३७ × ६०

२२२)२२२०(१०

२२२

०

= ११०″-१०‴

= १′-५०″-१०‴

बुध स्पष्ट गुणक

(५) गुरु स्पष्ट गुणक साधन

उच्च गु० ०-३८-७

× चेष्टा गु० २-२४-३

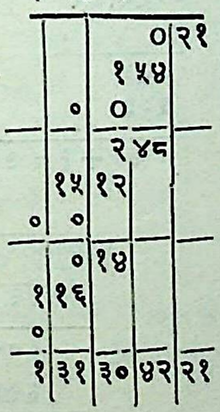

= १°-३१′-३०″

× ६०

६० + ३१ = ९१ × ६०

= ५४६० + ३०

= ५४९३″

```
    ७ | ५४९३(७४
  + ७ | ४९
  ---   ---
  १४४ |  ५९३
         ५७६
        --------
        १७ + १ = १८
```

× ६०

१५०)१०८०(७

१०५०

३०

= ७४″-७‴

= १′-१४″-७‴

गुरु स्पष्ट गुणक

(६) शुक्र स्पष्ट गुणक साधन

उच्च गु. १-३९-४५
× चे. गु. १-२८-०

–	–	०/२१	०/०	०
	१८	१२		
०	२८			
–	–	–	–	–
१	३९	४५		
२	२६	१८	०	०

= २°-२६'-१८"
× ६०
१२० + २६ = १४६ × ६०
= ८७६०" + १८"
= ८७७८"

| ९
+९
१८३ | ८७७८(९३
८१
६७८
५४९
१२९ + १
= १३० × ६०
१८८)७८००(४१
७५२
२८०
१८८
९२

= ९३"-४१"'
= १'-३३"-४१"'
शुक्र स्पष्ट गुणक

(७) शनि स्पष्ट गुणक साधन

उच्च गु. ०-४५-१५
× चे. गु. १-८-२४

			६	०
		१८	०	
	०	०		
		२	०	
	६	०		
०	०			
०	४५	१५		
०	५१	३५	६	०

= ०°-५१'-३५"
× ६०
३०६० + ३५
= ३०९५"

५
+५
१०५ | ३०९५(५५
२५
५९५
५२५
७० + १ = ७० = ७१
× ६०
११२)४२६०(३८
३३६
९००
८९६
४

= ५५"-३८"
= ०-५५"-३८"
शनि स्पष्ट गुणक

३ स्पष्ट गुणक चक्र

चक्र	सुर्य	चंद्र	मंगल
५	१–३६″–५५‴	१–२७″–५८″	१–१६″–६‴
बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१′–५०″–१०‴	१′–१४″–७‴	१–३३″–४१‴	०′–५५″–३८‴

इस स्फुट गुणक का गुणा आश्रय गुणक में कर उसके गुणन फल का वर्गमूल निकालने से कर्म योग गुणक बनता है जिससे अंशायु निकाली जाती है।

यहाँ स्फुट गुणक निकाल चुके अब आश्रय गुणक निकालना है।

आश्रय गुणक ३ प्रकार से निकाला जाता है

४ (अ) केशव की रीति से

४ (ब) श्रीधर की रीति से

४ (क) सारिणी द्वारा।

आगे इन तीनों रीतियों से पृथक २ आश्रय गुणक निकालकर मिलान किया गया है जिससे प्रगट हुआ कि यद्यपि रीति भिन्न है परन्तु उत्तर एक सा आता है।

इन तीनों में ४ (क) सारिणी द्वारा आश्रय गुणक निकालना सरल है। आगे सब का गणित देखने से समझ पड़ेगा।

४ (अ) केशव के मत से आयुर्दाय का आश्रय गुणक निकालना

गृह अंक

मैत्री	स्व०	अधि मित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधि शत्रु
गृह (स्थान) में	३६	३०	२६	१८	१०	६
शेष वर्ग में	१८	१५	१३	९	५	३

(गृह का आधा)

यहां सप्तवर्गी चक्र के पंचधा मैत्री के अनुसार गृह (स्थान) के अंक दिये हैं। होरादि शेष ६ वर्ग में गृह का आधा अंक लेना। अर्थात् होरादि वर्ग से गृह के अंक देने हैं।

अध्याय २२ में सप्तवर्गी बल १ (२) साधन करने के लिये जो पंचधा मैत्री युक्त सप्तवर्गी चक्र बनाया था वही चक्र यहां लेना। अब उपरोक्त गृह अंक के अनुसार सप्तवर्गी चक्र का विचार कर आश्रय गुणक के अंक स्थापित करते हैं।

सप्तवर्गी चक्र का आश्रय गुणक अंक चक्र ६

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ गृह	सम १८	शत्रु १०	मित्र २६	अ. श. ६	स्व. ३६	अ. मि. ३०	अ.मि. ३०
२ होरा	स्व. १८	स्व. १८	अ.मि. १५	अ.श. ३	सम ३	अ. श. ३	सम ९
३ द्रेष्काण	सम ९	सम ९	सम ९	मित्र १३	सम ९	स्व. १८	स्व. १८
४ सप्तमांश	सम ९	शत्रु ५	शत्रु ५	मित्र १३	सम ९	स्व. १८	शत्रु ५
५ नवमांश	सम ९	शत्रु ५	मित्र १३	अ.मि. १५	अ. श. ३	शत्रु ५	अ. श. ३
६ द्वादशांश	सम ९	सम ९	स्व. १८	शत्रु ५	सम ९	शत्रु ५	स्व. १८
७ त्रिंशांश	अ.मि. १५	सम ९	सम ९	शत्रु ५	अ. श. ३	शत्रु ५	स्व. १८
योगांक	८७	६५	९५	६०	७८	८४	१०१
भाजक	७२	१०८	५४	१४४	३६	३६	३६
आश्रय गुणक	१°-१२'-३०''	०°-३६'-७''	१°-४५'-३३''	०°२५'-०''	२°-१०'-०''	२°-२०'-०''	२°-४८'-२०''

रवि गृह में सम = १८, होरा में स्व = १८, सप्तमांश सम = ९, द्रेष्काण सम = ९, नवमांश सम = ९, द्वादशांश सम = ९, त्रिशांश अ. मि. = १५

इसी प्रकार सप्तवर्गी चक्र में पंचधा मैत्री आदि के अनुसार शेष ग्रहों का भी विचार कर उनमें उपरोक्त गृह अंक के अनुसार अंक रखे हैं। जहाँ गृह की मैत्री है वहाँ गृह स्थान के अंक लिये हैं। शेष होरादि ६ वर्ग में गृह के अंक के आधे उपरोक्त चक्र के अनुसार लिये हैं।

इस प्रकार सप्तवर्गी चक्र में मैत्री के अनुसार अंक स्थापित कर नीचे सब का योग करके रखना वही योगांक है। योगांक के नीचे भाजक लिखना जैसा यहाँ चक्र में बताया है। चक्र में सब अंकों का योग नीचे दिया है वही योगांक है। उसके नीचे भाजक दिया है। भाजक निकालने की रीति नोचे दो है। योगांक में भाजक का भाग देने से आश्रय गुणक बनता है।

गृह भाजक चक्र

	मैत्री	स्वगृह	अधि मित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
१ साधारण भाजक	अंक	३६	४८	५४	७२	१०८	१४४

२ विशेष. भाजक यदि ग्रह स्व नवांश या स्व द्रेष्काण या वर्गोत्तम में हो तो } $= \frac{\text{योगांक}}{\text{३६}}$ = आश्रय गुणक

उपरोक्त सप्तवर्गी चक्र में मैत्री के अनुसार ये ही भाजक अंक नीचे रखे हैं। जैसे रवि गृह में सम गृही है तो सम का भाजक ७२ हुआ यही सूर्य के नीचे भाजक रखा है। चंद्र शत्रु गृही है तो भाजक १०८ हुआ। मंगल गृह में मित्र गृही होने से भाजक ५४ हुआ। इसी प्रकार बुध अधिशत्रु गृही = १४४, गुरु स्वगृही = ३६, शुक्र अधिमित्र गृही है परन्तु स्वद्रेष्काण में भी है इस कारण अधिमित्र का साधारण भाजक नहीं लिया। स्वद्रेष्काण का विशेष भाजक ३६ होता है वही ३६ भाजक शुक्र के नीचे रखा है। इसी प्रकार शनि भी अधिमित्र गृही तो है परन्तु स्वद्रेष्काण में भी है तो अधिमित्र का साधारण ४८ भाजक न लेकर स्वद्रेष्काण का विशेष भाजक ३६ लिया है। इसी प्रकार विचार कर भाजक अंक उपरोक्त सप्तवर्गी चक्र के नीचे स्थापित किया है।

योगांक में भाजक का भाग देकर लब्धि अंश कलादि में निकाल कर रखा है वही आश्रय गुणक है। उपरोक्त सप्तवर्गी चक्र के नीचे आश्रय गुणक अंश कलादि में लिखा है।

आश्रय गुणक = (योगांक ÷ भाजक) = अंश कला विकला

सूर्य

योगांक / भाजक = ८७ / ७२

७२) ८७ (१
७२
१५ × ६०
७२) ९०० (१२
७२
१८०
१४४
३६ × ६०
७२) २१६० (३०
२१६
०

सूर्य
आश्रय गुणक
=१°–१२'–३०"

चंद्र

६५ / १०८

१०८) ६५ (०
× ६०
१०८)३९००(३६
३२४
६६०
६४८
१२ × ६०
१०८) ७२० (६
६४७=७
७२

चंद्र
आ० गु०
०°–३६'–७"

मंगल

९५ / ५४

५४) ९५ (१
५४
४१ × ६०
५४)२४६०(४५
२१६
३००
२७०
३० × ६०
५४)१८००(३३
१६२
१८०
१६२
१८

मंगल
अ० गु०
१°–४५'–३३"

बुध

६० / १४४

१४४)६०(०
× ६०
१४४)३६००(२५
२८८
७२०
७२०
०

बुध
आ० गु०
०°–२५'–०"

गुरु	शुक्र	शनि
७८ / ३६	८४ / ३६	१०१ / ३६
३६)७८(२	३६)८४(२	३६)१०१(२
७२	७२	७२
६ × ६०	१२ × ६०	२९ × ६०
३६)३६०(१०	३६)७२०(२०	३६)१७४०(४८
३६	७२	१४४
०	०	३००
गुरु	शुक्र	२८८
आ० गु०	आ. गु.	१२ × ६०
२°-१०'-०"	२°-२०'-०"	३६)७२०(२०
		७२
		०
		शनि
		आ० गु०
		२°-४८'-२०"

५ संस्कृत आश्रय गुणक साधन

पहिले जो गणित से आश्रय गुणक निकाल चुके हैं वह साधारण आश्रय गुणक हैं। इसमें यह देखना पड़ेगा कि-कोई ग्रह स्वगृही तो नहीं है और ग्रह स्वनवांश आदि में है क्या ? यदि ग्रह स्वद्रेष्काण, स्वनवांश या वर्गोत्तम हो और स्वगृही न हो तो उपरोक्त साधारण आश्रय गुणक में विशेष संस्कार करना पड़ता है जिसके उपरांत वास्तविक आश्रय गुणक निकलता है। उसी को संस्कृत आश्रय गुणक कहते हैं।

संस्कृत आश्रय गुणक बनाने की रीति

विशेष संस्कार जिससे संस्कृत आश्रय गुणक बनता है

	ग्रहांक
यदि ग्रह शत्रु गृह में हो तो साधारण आश्रय गुणक	—६४
,, मित्र ,, ,, ,, ,, ,,	+ ,,
,, अधि शत्रु ,, ,, ,, ,, ,,	— ग्रहांक
	६३
,, अधि मित्र ,, ,, ,, ,, ,,	+ ,,

यदि ग्रह स्वगृही हो या मैत्री में सम हो तो यह विशेष संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है। जब ग्रह केवल स्वद्रेष्काण, स्वनवांश या वर्गोत्तम हो तब यह विशेष संस्कार करना चाहिए। इस प्रकार साधारण आश्रय गुणक में विशेष संस्कार करने से संस्कृत आश्रय गुणक बनता है।

जो ग्रह स्वगृही है उसका विशेष संस्कार नहीं होगा चाहे वह स्वद्रेष्काण, स्वनवांश आदि में भी हो।

यहाँ केवल शुक्र और शनि ही २ ग्रह ऐसे हैं जो स्वगृही तो नहीं हैं परन्तु स्वद्रेष्काण में हैं। इस कारण दोनों का विशेष संस्कार करना पड़ेगा।

गृहांक = आश्रय गुणक चक्र ६ में केवल गृह स्थान में जो अंक दिये हों वह लेना।

शुक्र = अधि मित्र गृही = साधारण आश्रय गुणक + $\frac{\text{गृहांक}}{६३}$

शनि = ,, ,, ,, ,, + ,,

आश्रय गुणक चक्र ६ देखा। शुक्र के गृह का अंक ३० दिया है वही शुक्र का गृहांक हुआ। गृह में गृहांक के अनुसार ३० अंक आया था वही अंक है। इस कारण गृहांक ३० हुआ = $\frac{३०}{६३}$ = ०–२८–३४ इसे साधारण आश्रय गुणक में जोड़ दिया।

साधारण आश्रय गुणक शुक्र का = २–२०–०

विशेष ,, ,, +०–२८–३४

संस्कृत आश्रय गुणक ,, = २–४८–३४

इसी प्रकार शनि का भी निकालना पड़ेगा

```
६३ ) ३० ( ०
     ×६०
६३ ) १८०० ( २८
     १२६
     ५४०
     ५०४
      ३६ × ६०
६३ ) २१६० ( ३४
     १८९
      २७०
      २५२
       १८
```

शनि = साधारण आश्रय गुणक + $\frac{\text{गृहांक}}{६३}$

शनि का गृहांक ३० है (देखो चक्र ६) = $\frac{३०}{६३}$ = ०–२८–३४

शनि का साधारण आश्रय गुणक + विशेष

(२–४८–२०) (०-२८-३४) = ३°–१६′–५४′

शनि का संस्कृत आश्रय गु०

शेष ५ ग्रह में विशेष संस्कार नहीं करना पड़ा उनका साधारण आश्रय गुणक ही संस्कृत आश्रय गुणक होगा।

५ आश्रय गुणक चक्र ६ (अ)

सूर्य	चंद्र	मंगल	वुध	गुरु
१°-१२′-३०″	०°-३६′-७″	१°-४५′-३३″	०°-२५′-०″	२°-१०′-०″

शुक्र	शनि
२°-४८′-३४″	३°-१६′-५४″

४ (ब) श्रीपति पद्धति की रीति से आश्रय गुणक निकालना

आश्रय गुणक का स्पष्ट गुणक अंतर ताड़क आदि निकाल कर संस्कृत आश्रय गुणक निकालना ।

(२) गुणक चक्र

मैत्री	वर्गोत्तम में	स्व स्थान	स्व नवांश	स्व द्रेष्काण	अधि मित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधि शत्रु
गुणक राशि में	× १/२	× १/२	× १/२	× १/२	× ३/८	× १/३	× १/४	× १/६	× १/८
होरादि में	× १/४	× १/४	× १/४	× १/४	३/१६	× १/६	× १/८	× १/१२	× १/१६
भगुण	× २	× २	× २	× २	× ११/७	× २९/२१	× १	× १३/२१	× ३/७

होरादि शेष ६ वर्ग में गृह (राशि) का आधा है। स्वस्थान को छोड़ कर स्व द्रेष्काण आदि में जब ग्रह हो तो भगुण (विशेष गुणक) का भी गुणा करना पड़ता है ।

ऊपर बताये राशि, होरा आदि गुणक और भगुण का उपयोग सप्तवर्ग में होता है । सप्तवर्ग में ग्रह के वर्ग में ग्रह मैत्री विचार कर सप्तवर्ग के अनुसार गुणक निकालना पड़ता है ।

अध्याय २२ में सप्तवर्गी बल साधन में जो सप्तवर्गी चक्र दिया है उपयोग के लिये उस को यहाँ बना लेते हैं ।

(१) सप्तवर्गी चक्र ७ (अध्याय २२ से)

वर्ग	रवि	चंद्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ स्थान	चंद्र=सम	गुरु=शत्रु	शुक्र=मित्र	चंद्र=अ.श.	गुरु=स्व.	वुध=अ.मि.	शुक्र=अ.मि.
२ होरा	रवि=स्व	चंद्र=स्व.	रवि=अ.मि	चंद्र=अ.श.	चंद्र=सम	चंद्र=अ.श.	रवि=सम
३ द्रेष्काण	गुरु=सम	रवि=सम	वुध=सम	मं०=मित्र	मं०=सम	शुक्र=स्व	शनि=स्व
४ सप्तमांश	चंद्र=सम	मं०=शत्रु	शनि=शत्रु	मं०=मित्र	मं०=सम	शुक्र=स्व	गुरु=शत्रु
५ नवमांश	गुरु=सम	शुक्र=शत्रु	शुक्र=मित्र	शुक्र=अ.श.	वुध=अ.श.	गुरु=शत्रु	चंद्र=अ.श.
६ द्वादशांश	शुक्र=सम	रवि=सम	मं०=स्व.	गुरु=शत्रु	चंद्र=सम	गुरु=शत्रु	शनि=स्व
७ त्रिशांश	मं०=अ.मि.	वुध=सम	गुरु=सम	गुरु=शत्रु	वुध=अ.श.	गुरु=शत्रु	शनि=स्व.

ऊपर बनाये गुणक और भगुण के अंक से सप्तवर्गी मैत्री को स्थिति के अनुसार गुणा किया जाता है जिससे सप्तवर्गी चक्र के अनुसार गुणक बनता हैं। इसको आगे समझाया है ।

(२) भगुण का उपयोग

ऊपर जो भगुण दिया है वह विशेष गुणक संख्या है उसका उपयोग इस प्रकार होता है

जब कोई ग्रह अपना स्व गृही तो न हो परन्तु वर्गोत्तम या स्व नवांश या स्व द्रेष्काण में हो तो उसमें पहिले बताये राशि या होरा गुणक से जैसी स्थिति हो गुणा करने के उपरांत भगुण से भी गुणा करना पड़ता है ।

यदि ग्रह स्व स्थानी हो तो भगुण का उपयोग नहीं करना पड़ता अर्थात भगुण का उपयोग वर्जित है और कोई दूसरे प्रकार के वर्ग में भगुण का गुणा नहीं करना पड़ता ।

जहाँ भगुण का गुणा गृह स्थान में किया हो तो उसके होरादि में भगुण का गुणा करने में भगुण की प्राप्त संख्या का आधा नहीं करना पड़ता किन्तु भगुण के गुणा करने के पूर्व जो गुणक था उसका ही आधा गुणा करने में लेना, न कि भगुण गुणित गुणक का आधा ।

जैसे चंद्र यदि स्व नवांश मे हो तो स्व नवांश का गुणक $\frac{१}{२}$ हुआ और स्व नवांश होने से इसमें भगुण का भी गुणा करना पड़ेगा । इस में देखा चंद्र गृह में कहां है । मान लो चंद्र गृह में शत्रु के स्थान में है तो शत्रु का भगुण $\frac{१३}{२१}$ होता है । अब गुणक और भगुण दोनों का गुणा किया । गुणक $\frac{१}{२}$ × भगुण $\frac{१३}{२१}$=$\frac{१३}{४२}$ यह चंद्र के गृह में लिखेंगे । परन्तु होरादि में पृथक गुणक (राशि गुणक) का आधा अर्थात $\frac{१}{४}$ ही लिखेंगे ।

मान लो मंगल स्व द्रेष्काण में है तो स्व द्रेष्काण का गुणक $\frac{१}{२}$ हुआ । परन्तु गृह में यह मंगल अधिमित्र स्थान में होने से इस अधिमित्र का भगुण $\frac{११}{७}$ हुआ । गुणक $\frac{१}{२}$ × भगुण $\frac{११}{७}$ = $\frac{११}{१४}$ हुआ । परन्तु होरादि में पृथक गुणक का आधा ($\frac{१}{२}$ का आधा) अर्थात् $\frac{१}{४}$ ही रहेगा ।

जो होरा में गुणक होगा वही द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश और त्रिशांश में भी होगा । अर्थात शेष ६ वर्ग में होरा के समान गुणक का अंक होगा ।

वर्गोत्तम=जो ग्रह अपने स्व स्थान में हो वही अपने नवांश में भी हो तो वर्गोत्तम होता है । श्रीपति ने बताया है कि गृह में और नवांश में भी अधिमित्र का नवांश हो, तो भी वर्गोत्तम होता है।

यदि कोई ग्रह गृह में स्व स्थान में हो तो उस के लिये भगुण का उपयोग नहीं होता। अर्थात् उसका राशि के गृह में १/२ ही लिखेंगे जो स्वस्थान का गुणक है। स्वस्थानी ग्रह के लिये भगुण का गुणा करना वर्जित है।

अब अपने सप्तवर्गी चक्र पर से विचार करेंगे। प्रगट हुआ कि केवल गुरु ही स्वस्थान में हैं। इस कारण गुरु के लिये भगुण का उपयोग नहीं होगा अर्थात भगुण का गुणा नहीं करना पड़ेगा।

स्व द्रेष्काण और स्व नवांश में कौन ग्रह है देखा तो प्रगट हुआ कि शुक्र और शनि केवल स्वद्रेष्काण में है। स्व नवांश में कोई नहीं है। इस लिये इनके गुणक १/२ होंगे और इन के होरादि शेष वर्ग में १/४ ही गुणक होगा। परन्तु इनमें भगुण का भी गुणा करना पड़ेगा। परन्तु और किसी भी ग्रह में भगुण का गुणा नहीं करना पड़ेगा। इसका कारण यह है कि जहाँ ग्रह स्व स्थान में होता है वहाँ भगुण का गुणा नहीं करना पड़ता। गुरु स्वस्थान में होने से भगुण का गुणा से बच गया। भगुण का गुणा केवल उन्हीं में करना पड़ता है जो ग्रह वर्गोत्तम, स्वनवांश या स्वद्रेष्काण में हो। इस कारण केवल शुक्र और शनि में भगुण का गुणा होगा। शेष ग्रह मंगल, बुध, रवि और चंद्र ये तो न स्व नवांश में है न स्वद्रेष्काण में ही हैं। इस कारण इनमें भी भगुण का गुणा नहीं करना पड़ेगा।

शुक्र अधिमित्र स्थान में है तो भगण अधिमित्र का १ १/७ होता हैं इसमें, इसका गुणक १/२ से गुणा किया। शुक्र स्वद्रेष्काण में होने से उसका गुणक स्वनवांश का १/२ लिया जायगा न कि अधिमित्र का गुणक ३/८। भगुण १ ५/७ × गुणक १/२ = १/१४ गृह में गुणक रहेगा परन्तु इसके होरादि में पूर्व गुणक १/२ का आधा १/४ ही रहेगा।

इसी प्रकार शनि भी अधिमित्र के घर में है। गुणक १ १/७ होगा। शनि स्वद्रेष्काण में होने से गुणक १/२ होगा न कि अधिमित्र का गुणक ३/८। भगुण १ ५/७ × गुणक १/२ = १/१४ गृह में होगा और

होरादि शेष ६ वर्ग में १/२ का आधा १/४ ही रहेगा।

शेष ग्रह में गुणक उनकी मैत्री के अनुसार ही होगा, जिसका गुणक चक्र ८ में आगे बताया है। इस प्रकार जो गुणक निकलता है वह आश्रय गुणक का स्पष्ट गुणक होता है।

यहाँ सप्तवर्गी चक्र की मैत्री पर से गुणक निकाल कर नीचे चक्र ८ में बताया है।

(४) आश्रय गुणक का स्पष्ट गुणक चक्र ८

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि
मैत्री	सम	शत्रु	मित्र	अ. शत्रु	स्वगृही	अ. मित्र स्वद्रेष्काण	अ. मित्र स्वद्रेष्काण
गुणक राशि में	$\frac{१}{४}$	$\frac{१}{६}$	$\frac{१}{३}$	$\frac{१}{८}$	$\frac{१}{२}$	$\frac{११}{१४}$	$\frac{११}{१४}$
गुणक होरादि में	$\frac{१}{८}$	$\frac{१}{१२}$	$\frac{१}{६}$	$\frac{१}{१६}$	$\frac{१}{४}$	$\frac{१}{४}$	$\frac{१}{४}$

(५) आश्रय गुणक बनाने के लिये उपरोक्त स्पष्ट गुणक में अंतरताड़क का गुणा करने से जो गुणन फल होता है वही प्रत्येक वर्ग का आश्रय गुणक कहलाता है।

वर्ग आश्रय गुणक = उपरोक्त स्पष्ट गुणक × अंतर ताड़क

इस कारण वर्ग का आश्रय गुणक निकालने के लिये अंतर ताड़क की आवश्यकता होती है।

अंतर ताड़क चक्र नीचे दिया है उस पर से सप्तवर्ग का अंतर ताड़क चक्र बनाना पड़ता है।

(६) अंतर ताड़िका

मैत्री आदि	ग्रह राशि या वर्ग में स्वगृही हो तो	अधि मित्र स्थान में	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
गुणक	×२	$\frac{५}{३}$	$\frac{१३}{९}$	१	$\frac{५}{९}$	$\frac{१}{३}$

जैसे सप्तवर्ग में रवि सम गृही है सम = १, स्वहोरा में = २, सम द्रेष्काण = १, अधिमित्र त्रिंशांश में $\frac{५}{३}$, इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह का अंतर ताड़क निकाल कर सप्तवर्ग के अनुसार चक्र बना अंतर ताड़क अंक स्थापित करना।

इसी पर से मैत्री के अनुसार अंतर ताड़क अंक सप्तवर्गी चक्र ९ में स्थापित किया है।

(७) अंतर ताड़क चक्र ९

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ गृह	सम १	शत्रु $\frac{५}{९}$	मित्र $\frac{१३}{९}$	अ. श. $\frac{१}{३}$	स्व. २	अ. मि. $\frac{५}{३}$	अ.मि. $\frac{५}{३}$
२ होरा	स्व. २	स्व २	अ. मि. $\frac{५}{३}$	अ. श. $\frac{१}{३}$	सम १	अ. श. $\frac{१}{३}$	सम १
३ द्रेष्काण	सम १	सम १	सम १	मित्र $\frac{१३}{९}$	सम १	स्व. २	स्व. २
४ सप्तमांश	सम १	शत्रु $\frac{५}{९}$	शत्रु $\frac{५}{९}$	मित्र $\frac{१३}{९}$	सम १	स्व. २	शत्रु $\frac{५}{९}$
५ नवमांश	सम १	शत्रु $\frac{५}{९}$	मित्र $\frac{१३}{९}$	अ.मि $\frac{५}{३}$	अ.श. $\frac{१}{३}$	शत्रु $\frac{५}{९}$	अ.श. $\frac{१}{३}$
६ द्वादशांश	सम १	सम १	स्व. २	शत्रु $\frac{५}{९}$	सम १	शत्रु $\frac{५}{९}$	स्व. २
७ त्रिंशांश	अ. मि. $\frac{५}{३}$	सम १	सम १	शत्रु $\frac{५}{९}$	अ.श. $\frac{१}{३}$	शत्रु $\frac{५}{९}$	स्व. २

आश्रय गुणक बनाने के लिये अंतर ताड़क चक्र ९ से स्पष्ट गुणक चक्र ८ का गुणा करने से जो गुणन फल आयेगा वही वर्ग का आश्रय गुणक होगा। आगे चक्र १० में इसका गणित दिया है और चक्र १० (अ) में आश्रय गुणक दिया है।

वर्ग का आश्रय गुणक साधन का गणित चक्र १०

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	अं.ता. × गु = आ.						
१ गृह	$१ \times \frac{१}{४} = \frac{१}{४}$	$\frac{५}{९} \times \frac{१}{६} = \frac{५}{५४}$	$\frac{१३}{९} \times \frac{१}{३} = \frac{१३}{२७}$	$\frac{१}{३} \times \frac{१}{८} = \frac{१}{२४}$	$२ \times \frac{१}{२} = १$	$\frac{५}{३} \times \frac{११}{१४} = \frac{५५}{४२}$	$\frac{५}{३} \times \frac{११}{१४} = \frac{५५}{४२}$
२ होरा	$२ \times \frac{१}{८} = \frac{१}{४}$	$२ \times \frac{१}{१२} = \frac{१}{६}$	$\frac{५}{३} \times \frac{१}{६} = \frac{५}{१८}$	$\frac{१}{३} \times \frac{१}{१६} = \frac{१}{४८}$	$१ \times \frac{१}{४} = \frac{१}{४}$	$\frac{१}{३} \times \frac{१}{४} = \frac{१}{१२}$	$१ \times \frac{१}{४} = \frac{१}{४}$
३ द्रेष्का.	$१ \times \frac{१}{८} = \frac{१}{८}$	$१ \times \frac{१}{१२} = \frac{१}{१२}$	$१ \times \frac{१}{६} = \frac{१}{६}$	$\frac{१३}{९} \times \frac{१}{१६} = \frac{१३}{१४४}$	$१ \times \frac{१}{९} = \frac{१}{४}$	$२ \times \frac{१}{४} = \frac{१}{२}$	$२ \times \frac{१}{४} = \frac{१}{२}$
४ सप्त०	$१ \times \frac{१}{८} = \frac{१}{८}$	$\frac{५}{९} \times \frac{१}{१२} = \frac{५}{१०८}$	$\frac{५}{९} \times \frac{१}{६} = \frac{५}{५४}$	$\frac{१३}{९} \times \frac{१}{१६} = \frac{१३}{१४४}$	$१ \times \frac{१}{४} = \frac{१}{४}$	$२ \times \frac{१}{४} = \frac{१}{२}$	$\frac{५}{९} \times \frac{१}{४} = \frac{५}{३६}$
५ नवां०	$१ \times \frac{१}{८} = \frac{१}{८}$	$\frac{५}{९} \times \frac{१}{१२} = \frac{५}{१०८}$	$\frac{१३}{९} \times \frac{१}{६} = \frac{१३}{५४}$	$\frac{५}{३} \times \frac{१}{१६} = \frac{५}{४८}$	$\frac{१}{३} \times \frac{१}{३} = \frac{१}{१२}$	$\frac{५}{९} \times \frac{१}{४} = \frac{५}{३६}$	$\frac{१}{३} \times \frac{१}{४} = \frac{१}{१२}$
६ द्वाद०	$१ \times \frac{१}{८} = \frac{१}{८}$	$१ \times \frac{१}{१२} = \frac{१}{१२}$	$२ \times \frac{१}{६} = \frac{१}{३}$	$\frac{५}{९} \times \frac{१}{१६} = \frac{५}{१४४}$	$१ \times \frac{१}{४} = \frac{१}{४}$	$\frac{५}{९} \times \frac{१}{४} = \frac{५}{३६}$	$२ \times \frac{१}{४} = \frac{१}{२}$
७ त्रिशां.	$\frac{५}{३} \times \frac{१}{८} = \frac{५}{२४}$	$१ \times \frac{१}{१२} = \frac{१}{१२}$	$१ \times \frac{१}{६} = \frac{१}{६}$	$\frac{५}{९} \times \frac{१}{१६} = \frac{५}{१४४}$	$\frac{१}{३} \times \frac{१}{४} = \frac{१}{१२}$	$\frac{५}{९} \times \frac{१}{४} = \frac{५}{३६}$	$२ \times \frac{१}{४} = \frac{१}{२}$

वर्ग आश्रय गुणक चक्र १० (अ)

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ गृह	१/४	५/२४	१३/२७	१/२४	१	५५/४२	५५/४२
२ होरा	१/४	१/६	५/१८	१/४८	१/४	१/१२	१/४
३ द्रेष्काण	१/८	१/१२	१/६	१३/१४४	१/४	१/२	१/२
४ सप्तमांश	१/८	५/१०८	५/२४	१३/१४४	१/४	१/२	५/३६
५ नवमांश	१/८	५/१०८	१३/५४	५/४८	१/१२	५/३६	१/१२
६ द्वादशांश	१/८	१/१२	१/३	५/१४४	१/४	५/३६	१/२
७ त्रिंशांश	५/२४	१/१२	१/६	५/१४४	१/१२	५/३६	१/२

यहाँ चक्र में जो अंक बटे में दिये हैं इसी को ग्रंथ कलादि में परिवर्तन करने के लिये चक्र ११ बनाया है ।

भिन्न को स्पष्ट अंश कलादि में परिवर्तन करने का चक्र ११

भिन्न	अं. क. वि.	भिन्न	अं. क. वि.	भिन्न	अं. क. वि.	भिन्न	अं. क. वि.	भिन्न	अं. क. वि.	भिन्न	अं. क. वि.
१/४	०–१५–०	१/१२	०– ५– ०	५/१०८	०–२–४७	५/४८	०–६–१५	१३/१४४	०– ५–२५	५/३६	०–८–२०
१/२	०–३०–०	१/३	०–२०– ०	५/२४	०–५–३३	५/१४४	०–२–५	१३/५४	०–१४–२७	१/२४	०–२–३०
१/६	०–१०–०	५/२४	०–१२–३०	५/१८	०–१६–४०	१३/२७	०–२८–५३	५५/४२	१–१८–३४	१/४८	०–१–१५
१/८	०–७–३०										

वर्ग आश्रय गुणक अंशादि में चक्र १२

वर्ग	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ ग्रह	$0°$–१५′– ०″	$0°$–५′–२३″	$0°$–२८′–५३″	$0°$–२′–३०″	१°–०′–०″	१°–१८′–३४″	१–१८–३४
२ होरा	० –१५– ०	० –१०–०	०–१६–४०	०–१–१५	०–१५–०	०–५–०	०–१५–०
३ द्रेष्काण	०–७–३०	०–५–०	०–१०–०	०–५–२५	०–१५–०	०–३०–०	०–३०–०
४ सप्तमांश	०–७–३०	०–२–४७	०–५–२३	०–५–२५	०–१५–०	०–३०–०	०–८–२०
५ नवमांश	०–७–३०	०–२–४७	०–१४–२७	०–६–१५	०–५–०	०–८–२०	०–५–०
६ द्वादशांश	०–७–३०	०–५–०	०–२०–०	०–२–०	०–१५–०	०–८–२०	०–३०–०
७ त्रिंशांश	०–१२–३०	०–५–०	०–१०–०	०–२–५	०–५–०	०–८–०	०–३० ०
योग आश्रय गुणक	१–१२–३०	०–३६–७	१–४५–३३	०–२५–०	२–१०–०	२–४८–३४	३–१६–५४
वास्तविक							

कश्यव को रीति से यही उत्तर आया।

चक्र १० (अ) में जो अंक भिन्न रूप में दिया है उन्हीं को चक्र १२ में अंशादि में बताया है। जैसे सूर्य ग्रह में ¼ है तो ¼ = ०–१५–० हुआ इससे ¼ के स्थान में ०°–१५′–०″ लिख दिया। इसी प्रकार प्रत्येक अंक को चक्र १२ के सहारे अंशादि में परिवर्तन करके इस चक्र १२ में रखा है। प्रत्येक ग्रह के वर्ग के आश्रय गुणक के सब अंशादि का योग करने से जो आता है वही वास्तविक आश्रय गुणक होता है।

गुणक और ताड़क का गुणा कर भिन्न (बटे) के रूप में आश्रय गुणक निकाल कर उसको अंशादि में परिवर्तन करना पड़ता है जिसमें अड़चन होती है और समय लगता है। इस कठिनाई को दूर करने के लिये आगे एक सारिणी बना दी गई है जिसका उपयोग करने से विना अड़चन सप्तवर्गी मैत्री चक्र पर से अंशादि में सीधे प्रत्येक वर्ग का आश्रय गुणक प्राप्त हो जाता है जिसके योग करने से वास्तविक आश्रय गुणक निकल आता है।

४ (क) साधारण वास्तविक आश्रय गुणक सारिणी चक्र १३

	मैत्री	स्व.	अधिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
केवल ग्रह में		१-०-०	०-३७-३०	०-२८-५३	०-१५-०	०-५-३३	०-२-३०
शेष ६ वर्ग में	स्व	०-३०-०	०-२२-३०	०-२०-०	०-१५-०	०-१०-०	०-७-३०
	अधि मित्र	०-२५-०	०-१८-४५	०-१६-४०	०-१२-३०	०-८-२०	०-६-१५
	मित्र	०-२१-४०	०-१६-१५	०-१४-२७	०-१०-५०	०-७-१३	०-५-२५
	सम	०-१५-०	०-११-१५	०-१०-०	०-७-३०	०-५-०	०-३-४५
	शत्रु	०-८-२०	०-६-१५	०-५-३३	०-४-१०	०-२-४७	०-२-५
	अधिशत्रु	०-५-०	०-३-४५	०-३-२०	०-२-३०	०-१-४०	०-१-१५.

उपरोक्त चक्र १३ को यहाँ भिन्नरूप में बताया है। चक्र १४

	मैत्री	स्व	अ. मित्र	मित्र	सम	शत्रु	अ. शत्रु
केवल ग्रह में		१	५ ÷ ८	१३ ÷ २७	१ ÷ ४	५ ÷ २४	१ ÷ २४
शेष ६ वर्ग में	स्व	१ ÷ २	३ ÷ ८	१ ÷ ३	१ ÷ ४	१ ÷ ६	१ ÷ ८
	अधिमित्र	५ ÷ १२	५ ÷ १६	५ ÷ १८	५ ÷ २४	५ ÷ ३६	५ ÷ ४८
	मित्र	१३ ÷ ३६	१३ ÷ ४८	१३ ÷ ५४	१३ ÷ ७२	१३ ÷ १०८	१३ ÷ १४४
	सम	१ ÷ ४	३ ÷ १६	१ ÷ ६	१ ÷ ८	१ ÷ १२	१ ÷ १६
	शत्रु	५ ÷ ३६	५ ÷ ४८	५ ÷ २४	५ ÷ ७२	५ ÷ १०८	५ ÷ १४४
	अधिशत्रु	१ ÷ १२	१ ÷ १६	१ ÷ १८	१ ÷ २४	१ ÷ ३६	१ ÷ ४८

विशेष आश्रय गुणक सारिणी चक्र १५

मैत्री	स्व	अधिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
ग्रह	१°-०′-०″	१°-१८′-३४″	०°-५६′-५०″	०°-३०′-०″	०°-१०′-१६″	०°४′-१०″
होरादि	०-३०-०	०-२५-०	०-२१-४०	०-१५-०	०-८-२०	०-५-०

ग्रह वर्गोत्तम, स्वद्रेष्काण या स्वनवांश में हो तो इस विशेष चक्र १५ का उपयोग करना। ऐसा न हो तो साधारण चक्र १३ का उपयोग करना।

विशेष आश्रय गुणक सारिणी १५ का भिन्न रूप चक्र १६

मैत्री	स्व	अधिमित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
केवल ग्रह में	१	५५ ÷ ४२	३७७ ÷ ३७८	१ ÷ २	६५ ÷ ३७८	३ ÷ ४२
होरादि वर्ग में	१ ÷ २	५ ÷ १२	१३ ÷ ३६	१ ÷ ४	५ ÷ ३६	१ ÷ १२

यह सारिणी ग्रह या होरादि गुणक और अंतर ताड़क के गुणनफल से बनी है। जहाँ स्वद्रेष्काण आदि है वहाँ भगुण का भी इसमें गुणनफल है। जैसे शक्र ग्रह में अधिमित्र में है और स्वद्रेष्काण भी है तो स्वद्रे० $\frac{१}{२}$ × भगुण $\frac{११}{७}$ × अंतर ताड़क $\frac{५}{३}$ = $\frac{५५}{४२}$ = १°–१८′–३४″। (यही चक्र १५ में दिया है)

आश्रय गुणक सारिणी देखने की रीति

देखो समवर्गी चक्र ७। रवि सम ग्रही है। ग्रह में सम का गुणक $\frac{१}{४}$ × सम का अंतर ताड़क १ = $\frac{१}{४}$ × १ = $\frac{१}{४}$ हुआ यही आश्रय गणक चक्र १० (अ) में रखा है जिस का अंशादि ०–१५–० हुआ। देखो आश्रय गुणक चक्र १२

इसी को उपरोक्त साधारण आश्रय गुणक सारिणी में देखा तो ग्रह में सम के नीचे ०–१५–० रखा है जो गणित से निकाले हुए उत्तर से मिल गया। इसमें गुणक अंतर ताड़क आदि का काम नहीं है। इस सारिणी से सीधा उत्तर मिलता है।

यदि ग्रह वर्गोत्तम, स्वद्रेष्काण, स्वनवांश हो तो चक्र १५ (विशेष आश्रय गुणक सारिणी) में उत्तर मिलेगा। यदि स्वनवांश आदि न हो तो साधारण आश्रय गुणक सारिणी चक्र १३ में उत्तर मिलेगा।

अब इस सारिणी के अनुसार आश्रय गुणक देखते हैं।

रवि ग्रह में सम है सम का चक्र १३ से ०–१५–० है
,, ,, ,, और होरा में स्व है। सम के नीचे स्व के सीध में ०–१५–०
,, ,, ,, द्रेष्काण में सम है। ,, ,, सम ,, ०–७–३०
,, ,, ,, सप्तांश, नवांश, द्वादशांश में भी सम है। सम-सम ०–७–३०
,, ,, ,, त्रिंशांश में अधिमित्र है। सम के नीचे अ.मि के सीध में ०–१२–३०

चंद्र गृह शत्रु ०-५-३०
" " और होरा में स्व है शत्रु के नीचे स्व के आगे ०-१०-०
" " और द्रेष्काण, द्वादशांश त्रिशांश में सम है शत्रु-सम =०-५-०
" " " सप्तमांश, नवांश में शत्रु है। शत्रु-शत्रु =०-२-४७
मंगल गृह मित्र =०-२८-५३
" " " होरा अधिमित्र का मित्र-अधिमित्र =०-१६-४०
" " " द्रेष्काण, त्रिशांश में सम मित्र-सम =०-१०-०
" " " सप्तमांश में शत्रु मित्र-शत्रु =०-५-३३
" " " नवांश मित्र - मित्र-मित्र =०-१४-२७
" " " द्वादशांश स्व = मित्र-स्व =०-२०-०
बुध गृह अधिशत्रु =०-२-३०
" " " होरा अधिशत्रु =अधिशत्रु-अधिशत्रु =०-१-१५
" " " द्रेष्काण सप्तमांश में मित्र = " - मित्र =०-५-२५
" " " नवांश अधिमित्र " - अधिमित्र =०-६-१५
" " " द्वादशांश त्रिशांश शत्रु " - शत्रु =०-२-५
गुरु गृह में स्व =१-०-०
" " " होरा द्रेष्काण सप्तांश, द्वादशांश सम =स्व-सम =०-१५-०
" " " नवांश त्रिशांश अधिशत्रु =स्व-अधिशत्रु =०-५०

शुक्र गृह में अधि मित्र है परन्तु स्वद्रेष्काण में भी है तो

चक्र १५ देखा अधिमित्र का =१-१८-३४
" " " होरा अधिशत्रु चक्र १५ से अधिशत्रु का =०- ५- ०
" " " द्रेष्काण, सप्तांश में स्व " " स्व का =०-३०- ०
" " " नवांश, द्वादशांश त्रिशांश शत्रु " " =०- ८-२०

शनि गृह में अधि मित्र है परन्तु स्व द्रेष्काण में भी होने से

चक्र १५ देखा अधिमित्र का =०-१८-३४
" " होरा में सम है। चक्र १५ से समका =०-१५- ०
" " द्रेष्काण, द्वादशांश त्रिशांश में स्व - चक्र १५ में स्व का =०-३०- ०
" " सप्तांश में शत्रु———," " शत्रु का =०-८-२०
" " नवांश में अधिशत्रु———," अधिशत्रु का =०-५- ०

इस प्रकार बड़ी सरलता से सारिणी द्वारा आश्रय गुणक निकल आता है। इन सबका योग करने से आश्रय गुणक बनता है जैसा चक्र १२ के नीचे बताया है।

५ कर्म योग गुणक = $\sqrt{\text{आश्रय गुणक} \times \text{स्फुट गुणक}}$

स्पष्ट गुणक चक्र ५ और संस्कृत आश्रय गुणक चक्र ६ (अ) या चक्र १२ का आपस में गुणाकर गुणन फल का वर्गमूल निकालने से जो कलादि संख्या प्राप्त होती है वह कर्म योग गुणक होता है।

हानि कृत दायांश बनाना आगे बताया है उसमें कर्म योग गुणक का गुणा कर २००' का भाग देने से अंशायु के वर्ष आदि प्रगट होते हैं। इसका गणित आगे दिया है।

कर्म योग गुणक साधन चक्र १७

गुणक	सूर्य	चंद्र	मंगल
आश्रय गुणक	१°–१२'–३०"	०°–३६'–७"	१°–४५'–३३"
स्फुट गुणक	१–३६–५५	१–२७–५८	१–१९–९
दोनों का गुणन फल	१-५७-६०	५२-५२-५७	२–१९-१४
कर्म योग गु०	१-२३-४९	०-५६-२१	१-३१-२४

गुणन फल का वर्गमूल

	बुध	गुरु	शु	शनि
आ.गु.	०°-२५'-०"	२°-१०'-०"	२°-४८'-२४"	३°-१६'-५४"
स्फुटगु.	१-५०-१०	१-१४-७	१-३३-४१	०-५५-३८
गु. फ.	०-४५-५४	२-४०-३५	४-२३-११	३-२-३४
कर्म योग गु.	०-५२-२८	१-३८-९	२-५-३९	१-४४-३९

इसका गणित नीचे दिया है

(१) सूर्य

आश्रय गु० १–१२–३०
× स्फुट गु० १–३६–५५

			२७	३०
		११	०	
०	०	५		
...	...	...	...	...
		१८	०	
	७	१२		
७	३६			
...	...	...	...	...
१	२	३०		३०
९	४३	४६	१३	०

= १–५७–६
× ६०

६० + ५७ = ११७ × ६०
= ७०२० + ६
= ७०२६"

```
   ८ | ७०२६(८३
 + ८ | ६४
 ----|
 १६३ | ६२६
     | ४८९
       ------
       १३७ + १
       -------
       १३८ × ६०
१६८)८२८०(४९
       ६७२
       ----
       १५६०
       १५१२
       ----
         ४८
```

= ८३"–४९
= १'-२३"-४९"'
सूर्य का
कर्म योग गुणक

(२) चंद्र

आ. गु. ०–३६–७
× स्फुट गु. १–२७–५८

६|४६
३४|४८
० ०
……………………
३ ९
१६|१२
० ०
……………………
०|३६| ७
०|५२|५७| ३|४६

= ०–५२–५७
६०
३१२० + ५७
= ३१७७″

५ | ३१७७(५६
+ ५ | २५
१०६ | ६७७
६३६
४१ + १
४२
× ६०
११४)२५२०(२१
२२८
२२०
११४
६
= ५६″–२१‴
= ०′-५६″-२१‴
चंद्र का
कर्म योग गुणक

(३) मंगल

आ. गु. –१–४५–३३
स्फुट ग. × १–१९–९

४|५७
६|४५
– –० –९ – –
–१०|–२७
१४|१५
० १९
–१|–४५|–३३ – –
–२|–१९|–१४|–१६|–५७

= २–१९–१४
× ६०
१२० + १९ = १३९
× ६०
= ८३४० + १४
= ८३५४″

९ | ८३५४(९१
+ ९ | ८१
१८१ | २५४
१८१
७३ + १
७४ × ६०
१८४)४४४०(२४
३६८
७६०
७३६
२४
= ९१″–२४
= १′–३१″–२४‴
मंगल का
आश्रय गुणक

(४) बुध

आ. गु. ०–२५–०

स्फुट ग. × १–५०–१०

			०	०
		४	१०	
–	–०/–	०/–/०	–/०	–
	२०	५०		
०/–/०	०/–/२५	–/०	–	–
०	४५	५४	१०	०

= ०–४५–५४

× ६०

२७०० + ५४

= २७५४″

$$\begin{array}{r|l} ५ & २७५४(५२ \\ +५ & २५ \\ \hline १०२ & \end{array}$$

२५४
२०४
———
५० + १
———
५१ × ६०

१०६)३०६०(२८
२१२
———
९४०
८४८
———
९२

५२″–२८‴

= ०′–५२″–२८‴

बुध का

कर्म योग गुणक

(५) गुरु

आ. गु. २–१०–०

स्फुट गु. × १–१४–७

			३	०
		१	३६	
	०	१४		
		०	०	
	२	२०		
	०	२८		
	२	१०	०	
	२	४०	३५	१०	०

= २–४०–३५

× ६०

१२० + ४० = १६०

× ६०

= ९६०० + ३५

= ९६३५″

$$\begin{array}{r|l} ९ & ९६३५(९८ \\ +९ & ८१ \\ \hline १८८ & १५३५ \\ & १५०४ \end{array}$$

———
३१ + १

= ३२ × ६०

१९८)१९२०(९
१७८२
———
१३८

= ९८″–९‴

= १′–३८″–९‴

गुरु का

कर्म योग गुणक

(६) शुक्र

आ. गु. २–४८–३४

स्पुट गु. × १–३३–४१

			२३	१४
		३२	४८	
	१	२२		
……	……	……	……	……
		१८	४२	
	२६	२४		
१	६			
२	४८	३४		
४	२३	११	५३	१४

= ४–२३–११

+ ६०

२४० + २३ = २६३ × ६०

= १५७८० + ११

= १५७९१″

१ | १५७९१(१२५
+ १ | १
२२ | ५७
+ २ | ४४
२४५ | १३९१
१२२५
१६६ + १
१६७ × ६०
२५२)१००२०(३९
७५६
२४६०
२२६८
१९२

१२५″–३९

= २′–५″–३९‴

शुक्र का कर्म योग गुणक

(७) शनि

आ. गु. ३–१६–५४

स्फुट गु. ०–५५–३८

			३४	१२
		१०	८	
	१	५४		
		४९	३०	
	१४	४०		
२	४५			
०	०	०		
३	२	३४	१२	१२

= ३–२–३४

३–२–३४

× ६०

१८० + २ = १८२ × ६०

= १०९२० + ३४

= १०९५४

५ | १०९५४(१०४
+ १ | १
२० | ०९५४
+ ० | ८१६
२०४ | १३८ + १
= १३९ × ६०
१०)८३४०(३९
६२०
२०४०
१८९०
१५०

= १०४″–३९

= १′–४४″–३९‴

= १–४४–३९

शनि का कर्म योग गुणक

कर्म योग गुणक चक्र १७ (अ)

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
१′–२३″–५६	०′–५६″–२१	१′–३१″–२४	०–५२″–२८
गुरु	शुक्र	शनि	
१′–३८″–९	२′–५″–३६	१′–४४″–३६	

६ अंशायु साधन के लिये दायांश बनाना

जन्म समय के ग्रह स्पष्ट लेना और ग्रह स्पष्ट की राशि के अंश बनाकर अंश कलादि जो हो चक्र में रखना। प्रत्येक ग्रह के अंश कलादि में ४०° का भाग पृथक २ देना। भाग देने से जो शेष अंश कला विकला बचे उसी को अंशायु अंश या दायांश कहते हैं। इस दायांश की कला विकला बनाकर चक्र में स्थापित करना।

यह सब नीचे उदाहरण देकर समझाया है।

अध्याय १४ में भाव कुण्डली बनाने के लिये जो लग्न और ग्रह दियें हैं वे हो यहां नीचे दिये हैं।

ग्रह	चक्र १८ ग्रह स्पष्ट रा० अं० क० वि०	चक्र १९ ग्रह स्पष्ट अंश में अंश० क० वि०
सूर्य	३–२७–२३–६	११७–२३–६
चंद्र	८–२०–५५–३५	२६०–५५–३५
मंगल	१–१६–२७–५८	४६–२७–५८
बुध	३–१३–०–३५	१०३–०–३५
गुरु	८–१८–४४–५६	२५८–४४–५६
शुक्र	२–१७–१४–५६	७७–१४–५६
शनि	१–२०–३०–१०	५०–३०–१०
लग्न	११–०–२८–११	३३०–२८–११

	चक्र २० दायांश अं० क० वि०	चक्र २१ दायांश कला कला – वि०
सूर्य	÷४० = ३७°–२३′–६″	२२४२′–६
चंद्र	÷४० = २०–५५–३५	१२५५–३५
मंगल	÷४० = ६–२७–५८	३८७–५८
बुध	÷४० = २३–०–३५	१३८०–३५
गुरु	÷४० = १८–४४–५६	११२४–५६
शुक्र	÷४० = ३७–१४–५६	२२३४–५–६
शनि	÷४० = १०–३०–१०	६३०–१०
लग्न	÷४० = १०–२८–११	६२८–११

जन्म समय के स्पष्ट ग्रह चक्र १८ में दिये हैं जिसके अंश बना कर चक्र १९ में रखे हैं। चक्र १९ के केवल अंश ४० का भाग देने से शेष अंश कलादि आया वह दायांश हुआ जो चक्र २० में रखा है। इसी अंशादि के कलादि बना कर चक्र २१ में रखे है। दायांश निकालने का गणित नीचे दिया है।

ग्रह स्पष्ट के अंश में ÷ ४० = दायांश

(१) रवि स्पष्ट अंशादि

४०) ११७°–२३′–६″ (२
८०
शेष ३७–२३–६

दायांश
३७°–२३′–६″
× ६०
२२२० + २३ = २२४३
= २२४३′–६″ दायांश
अंशायु कला

(२) चंद्र अंशादि

४०) २६०–५५–३५ (६
२४०
शेष २०–५५–३५

दायांश
२०°–५५′–३५″
× ६०
१२०० + ५५ = १२५५
= १२५५′–३५″
अंशायु कला

(३) मंगल

४०) ४६–२७–५८ (१
४०
शेष ६–२७–५८

दायांश
६°–२७′–५८″
× ६०
३६० + २७ = ३८७
= ३८७′–५८″
अंशायु कला

(४) बुध

४०) १०३°–०′–३५″ (२
८०
शेष २३–०–३५

दायांश
२३°–०′–३५
× ६०
१३८० + ० = १३८०
= १३८०′–३५″
अंशायु कला

(५) गुरु

४०) २५८°–४४′–५६″ (६
२४०
शेष १८–४४–५६

(६) शुक्र

४०) ७७–१४–५९ (१
४०
शेष ३७–१४–५९

गुरु दायांश
= १८°–४४′–५६″
× ६०
१०८० + ४४ = ११२४
= ११२४–५६″
दायांश
= अंशायु कला

शुक्र दायांश
= ३७°–१४′–५८
× ६०
२२२० + १४ = २२३४
= २२°–३४′–५८″
दायांश
अंशायु कला

(७) शनि
४०) ५०–३०–१० (१
४०
शेष– १०–३०–१०
दायांश
= १०°–३०′–१०″
× ६०
६०० + ३० = ६३०
= ६३०′–१०″
दायांश
= अंशायु कला

(८) लग्न
४०) ३३०–२८–११ (८
३२०
शेष १०–२८–११
= १०°–२८′–११″
× ६०
६०० + २८ = ६२८
= ६२८′–११″
दायांश
अंशायु कला

इसी को श्रीपति ने ग्रह स्पष्ट की कला बनाकर २४०० कला (४०° × ६०′) का भाग देना बताया है। जो शेष बचता है वह अंशायु कला होती है। जैसे

रवि स्पष्ट
११७°–२३′–६″
× ६०
७०२० + २३
= ७०४३′–६″

२४००) ७०४३′–६″ (२
४८००
२२४३–६ = दायांश कला
= अंशायु कला
यही अंशायु कला पहली रीति से प्राप्त हुई थी।

७ चक्रार्द्ध हानि गुणक

चक्रार्द्ध हानि गुणक निकालने की रीति नीचे दी है। इसका उपयोग अंशायु के अतिरिक्त पिंडादि त्रय आयु में भी होता है। इसके अनुसार हानि होती है। दायांश में चक्रार्द्ध हानि का संस्कार करने पर चक्रार्द्ध हानि संस्कृत दायांश या आयु अंश होता है।

अंतरांश (अंतर अंश)=लग्न और ग्रह के अंतर करने में जो अंश शेष रहे=शेष

(लग्न-ग्रह)=शेष=६ राशि से अल्प हो तो= $\frac{\text{३० अंश} \quad = \text{१०८००० विकला}}{\text{शेष राशि अंश- शेष की विकला}}$ =लब्धि

,,=१ ,, ,, ,, ,, ,,= $\left(१- \frac{\text{अंतरांश}}{३०}\right)$ = = ''

,, ६ ,, ,, अधिक ,, =चक्रार्द्ध हानि गुणक नहीं करना।

इस के उपरांत उपरोक्त लब्धि में निम्नलिखित विशेष क्रिया करना।

गुणक = पाप ग्रह में = (१-लब्धि)

शुभ ,, ,, = $\frac{\text{(१-लब्धि)}}{२}$

यदि एक राशि में, २ या २ से अधिक ग्रह हों तो सबसे जो बली ग्रह होगा उसी ग्रह का गुणक बनाना। सब ग्रहों का गुणक नहीं बनाना।

लग्न से ग्रह स्पष्ट घटाने पर देखो कौन २ ग्रह ६ राशि से अधिक हैं, कितने ६ राशि से कम हैं। जो ग्रह लग्न से घटाने पर शेष ६ राशि से अधिक हों तो उनको छोड़ देना, जो घटाने पर ६ राशि से कम बचें केवल उन्हीं को लेना। क्योंकि ६ राशि से अल्प रहने वाले ग्रहों का ही गुणक बनाया जाता है।

नीचे प्रत्येक ग्रह को लग्न में से घटाया है जिस से प्रगट हो कि कितने में शेष ६ से कम रहता है।

चक्र २२ (लग्न—ग्रह) = शेष

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
	रा	रा	रा	रा
लग्न	११-०°-२८'-११''	११-०°-०'-११''	११-०°-२८'-११	११-०°-२८'-११''
-ग्रह	३-२७	८-२०-५५-३५	१-१६	३-१३
शेष	७×	२-९-३२-३६	९×	७×

गुरु	शुक्र	शनि
११-०-२८-११	११-०-२८-११	११-०-२८-११
८-१८-४४-५६	२-१७	१-२०
२-११-४३-१५	८×	९×

इस प्रकार लग्न से ग्रह घटाने पर केवल चंद्र और गुरु ही का शेष ६ राशि से अल्प रहता है। अतः इन दोनों का ही केवल चक्रार्द्ध हानि करने के लिये गुणक बनाना पड़ेगा।

चंद्र और गुरु की चक्रार्द्ध हानि करने को गुणक बनाने के प्रथम यह भी देखना पड़ेगा कि दोनों एक ही स्थान में तो नहीं हैं। यदि एक स्थान में हैं तो उन में बली कौन है ?

कुण्डली में ये दोनों ग्रह एक ही राशि में है। चंद्र स्पष्ट ८रा–२०°–५५′–३५″ और गुरु ८रा–१८°–४४′–५६″ है। दोनों धन राशि में हैं। दोनों का षड्बल

चंद्र बल ७°–२६′–१०″
गुरु बल ६ –१३ –५८

देखने से प्रगट हुआ कि दोनों में चंद्र बली है। इस कारण चंद्र का ही गुणक निकालेंगे। चंद्र शुभ ग्रह है। साधारण प्रकार से शेष ६ राशि से अल्प होने पर शेष की विकला बना कर ३० अंश की विकला १०८००० में भाग देना पड़ता है। भाग देने से जो लब्धि प्राप्त हो उसके शेष में ६० का गुणा कर ५ संख्या तक आगे लब्धि निकालना इस लब्धि को चंद्र शुभ ग्रह होने से आधा करके १° में से घटाना वही चक्रार्द्ध हानि गुणक होगा ? जैसा ऊपर बताया है।

इसी रीति से चंद्र का गुणक निकालते हैं।

(लग्न-ग्रह) = शेष २रा–९°–३२′–३६″

२रा–९°–३२′–३६″ अंतर
×३०
६० + ९ = ६९
×६०
४१४० + ३२
= ४१७२ × ६०
= २५०३२० + ३६
= २५०३५६ अंतर विकला

भाजक
१०८००० भाज्य = लब्धि
२५०३५६ भाजक
= ०–२५–५२–५९–१८ लब्धि

अर्द्ध = ०–१२–५६–२९–३९
१– ०– ०– ०– ०
—०–१२–५६–२९–३९
शेष = ०–४७– ३–३०–२१
चक्रार्द्ध हानि गुणक

∴ चक्रार्द्ध हानि गुणक चंद्र का = ०°–४७′–३″–३०–२१ } चक्र २३

```
२५०३५६ ) १०८००० ( ०                    २५०३५६ ) १४८४९२८० ( ५९
           × ६०                                  १२५१७८०
२५०३५६ ) ६४८०००० ( २५                           २३३१४८०
          ५००७१२                                 २२५३२०४
          १४७२८८०                                 ७८२७६ × ६०
          १२५१७८०                       २५०३५६ ) ४६९६५६० ( १८
          २२११०० × ६०                              २५०३५६
२५०३५६ ) १३२६६००० ( ५२                            २१९३०००
          १२५१७८०                                 २००२८४८
          ७४८२००                                  १९११५२
          ५००७१२                        = लब्धि ०–२५–५२–५९–१८
          २४७४८८ × ६०
```

यहाँ भाजक का भाज्य में भाग देकर शेष में ६० का गुणा कर फिर भाग दिया इस प्रकार ४ बार ६० का गुणा कर भाजक का भाग देने पर लब्धि पाँच संख्या में इस प्रकार प्राप्त हुई।

चंद्र शुभ ग्रह होने से लब्धि का आधा कर १ में से घटाया है यदि पाप ग्रह होता तो पूरी लब्धि १ में से घटा देते लब्धि का अर्द्ध करने की आवश्यकता नहीं थीं।

चक्रार्द्ध हानि हर निकालना

लग्न और चंद्र का जो अंतर अंश कला विकला में प्राप्त हुआ है उसमें २ का गुणा कर ६० का भाग देने से या अंतर में केवल ३० का भाग देने से जो प्राप्त होता है उसे चक्रार्द्ध हानि हर कहते हैं।

उदाहरण = (लग्न – चंद्र) = अंतर ६९°–३२′–३६″ ÷ ३० = २°–१९′–५″–१२
या अंतर ६९–३२–३६ × २ = १३९–५–१२ ÷ ६० = २–१९–५–१२
∴ चक्रार्द्ध हानि हर = २°–१९′–५″–१२ (चक्र २४)

८ चक्रार्द्ध हानि संस्कृत आयु अंश (दायांश)

संस्कृत चक्रार्द्ध हानि आयु अंश = दायांश × चक्रार्द्ध हानि गुणक

जिस ग्रह का कोई चक्रार्द्ध हानि गुणक हो उसके अंशायु अंश (दायांश) से चक्रार्द्ध हानि गुणक का गुणा कर रखना वह चक्रार्द्ध हानि संस्कृत आयुरंश होता है। जिस ग्रह का कोई चक्रार्द्ध हानि गुणक नहीं है उसमें कोई गुणा नहीं करना पड़ता जो कुछ दायांश में अंश कलादि होता है उसी को चक्रार्द्ध हानि संस्कृत आयु अंश में लिख देना।

यहाँ केवल चंद्र का ही चक्रार्द्ध हानि गुणक है और किसी ग्रह का नहीं है। इस कारण चंद्र के चक्रार्द्ध हानि गुणक में चंद्र दायांश का गुणा करेंगे तो चंद्र का चक्रार्द्ध

संस्कृत आयु अंश होगा। शेष ग्रहों का जो दायांश चक्र २०–२१ में दिया है वही संस्कृत आयु अंश होगा। उनका कोई चक्रार्द्ध हानि न होने से उनके दायांश में अंतर न पड़ेगा।

चंद्र का चक्रार्द्ध हानि गुणक ०°–४७′–३″–३०–२१ (चक्र २३ से)

चंद्र का दायांश × २०–५५–३५–० – ० (चक्र २० से

				०	०	०	०	०
			०	०	०	०	०	
					१२	१५		
				१७	३०			
			१	४५				
		२७	२५					
	०	०						
				१९	१५			
			२७	३०				
		२	४५					
	४३	५						
०	०							
			७	०				
		१०	०					
	१	०						
१५	४०							
०								
१६	२४	४५	४६	५१	५७	१५	०	०

= १६–२४–४५

चंद्र की चक्रार्द्ध हानि संस्कृत आयु अंश

चक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न
२५ चक्रार्द्ध हानि संस्कृत आयु अंश	३७°–२३′–६″	१६°–२४′–४५″	६°–२७′–५८″	२३°–०′–३५″	१८°–४४′–५६″	३७°–१४′–५६″	१०°–३०′–१०″	१०° २८′–११″
२६ चक्रा०हा०सं० आयुकला	२२४३′–६″	९८४′–४५″	३८७′–५८″	१३८०′–३५″	११२४′–५६″	२२३४′–५६″	६३०′–१०″	६२८′–११

९ अंशायु साधन में ग्रह आयु स्पष्ट करना ।

ग्रह आयु – (चक्रार्द्ध हानि संस्कृत आयु अंश × कर्म योग गुणक) ÷ २००

चक्र २५ चक्र १७ अ०

दोनों के गुणनफल में २०० का भाग देने की विशेष रीति :—

गुणन फल के अंश को कला बनाकर कला विकला में २०० का भाग देना ;

अंश की कला आदि ÷ २०० = लब्धि वर्ष शेष कला विकला

शेष कला विकला × १२ ÷ २०० = लब्धि मास शेष कला विकला

„ „ × ३० ÷ २०० = „ दिन „ „ „

„ „ × ६० ÷ २०० = „ घड़ी „ „ „

„ „ × ६० ÷ २०० = „ पल „ „ „

आगे उदाहरण दिया है जिससे रीति स्पष्ट समझ में आ जावेगी ।

(१) रवि

चक्रार्द्ध हा० सं० आ० ३७°–२३′–६″

× कर्म योग गुणक १–२३–४०

			४	०
		१५	२०	
	२४	४०		
	–	–	–	–
		२	१८	
	८	४६		
१४	११			
–	–	–	–	–
३७	२३	६		
–	–	–	–	–
५२	७	५२	४२	०

= ५२°–७′–५२″

× ६०

३१२० + ७

= ३१२७′–५२″ ÷ २००′

वर्ष मा० दि० घ० प०

१५–७–२०–९–३६

रवि अंशायु

२००′) ३१२७′–५२″ (१५ वर्ष

२००

११२७

१०००

१२७–५२

× १२

१०–२४

१५२४

२००) १५३४–२४ (७ मास

१४००

१३४–२४

× ३०

१२–०

४०२०

२००) ४०३२ (२० दिन

४००

३२ × ६०

२००) १९२० (९ घड़ी

१८००

१२० × ६०

= ७२००

२००)७२००(३६ पल
६००
———
१२००
१२००
———
०

एक वर्ष में १ नवांश के हिसाब से दायांश के वर्ष बनाये जाते हैं। १ नवांश $=३^{\circ}-२०'=२००'$ का होता है। २००' में १ वर्ष तो इष्ट दायांश में कितना होगा यह जानने को २०० का भाग देते हैं।

यहाँ २००' के भाग देने की विशेष रीति क्यों है यह विचारणीय है। भाज्य कला विकला में है और इसके वर्ष आदि निकालना है। यह सब संख्या विकला में कर दी जाये तो फिर विशेष रीति की आवश्यकता नहीं होती। जैसे

(३१२७'–५२" ÷ २००'
= १८७६७२" ÷ १२०००"
वर्ष मा० दि० घ० प०
= १५–७–२०–९–३६
रवि अंशायु

१२०००)१८७६७२(१५ वर्ष
१२०००
———
६७६७२
६००००
———
७६७२ × १२
१२०००)९२०६४(७ मास
८४०००
———
८०६४ × ३०
१२०००)२४१९२०(२० दिन
२४०००
———
१९२० × ६०
१२०००)११५२००(९ घड़ी
१०८०००
———
७२०० × ६०
१२०००)४३२०००(३६
३६०००
———
७२०००
७२०००
———
०

(२) चंद्र

चक्रार्द्ध० १६°-२४'-४५"

× कर्म० ०-५६-२१

			१५	४५
		८	२४	
	५	३६		
		४२	०	
	२२	२४		
१४	५६			
०	०	०		
१५	२४	५०	३६	४५

१५°-२४'-५०"

× ६०

९०० + २४

= ९२४'-५०"

२००)९२४'-५०"(४ वर्ष

८००

१२४-५०

× १२

१०-०

१४८८

२००)१४९८(७ मास

१४००

९८ × ३०

२००)२९४०(१४ दिन

२००

९४०

८००

१४० × ६०

२००)८४००(४२ घड़ी

८००

४००

४००

०

= वर्ष मा० दि० घ० प०

४-७-१४-४२-०

चंद्र अंशायु

(३) मंगल

चक्रार्द्ध ०६°–२७′–५८″

× कर्म० १–३१–२४

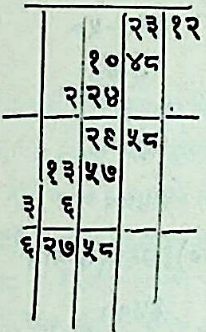

६|५१| ०| ६|१२

= ६–५१–०

× ६०

५४० + ५१ = ५६१′–०″

५६१′ ÷ २००′

वर्ष–मा. दि. घ. प.

२–११–१३–४८–०

मंगल अंशायु

२००) ५६१ (२ वर्ष

४००

१६१ × १२

२००) २२६२ (११ मास

२००

२६२

२००

६२ × ३०

२००) २७६० (१३ दिन

२६००

१६० × ६०

२००) ९६०० (४८ घड़ी

८००

१६००

१६००

०

(४) बुध

चक्रार्द्ध ०, २३°–०′–३५″

× कर्म० ०–५२–२८

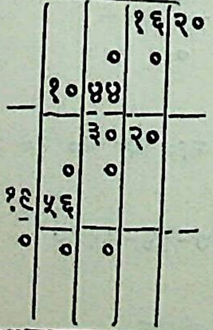

१०| ७|१४|३६|२०

= २०–७–१४

× ६०

१२०० + ७ = १२०७′–१४″

(१२०७′–१४″) ÷ २००

– वर्ष मा. दि. घ. प.

६–०–१३–१२

बुध अंशायु

२००) १२०७-१४ (६ वर्ष
१२००
७-१४
×१२
२-४८
८४
२००) ८६-४८ (० मास
×३०
२४-०
२५८०
२६०४

२००) २६०४ (१३ दिन
२६००
४×६०
२००) २४० (१ घड़ी
२००
४०×६०
२००) २४०० (१२ पल
२४००
०

(५) गुरु
चक्रार्द्ध० १८°-४४'-५६"
×कर्म० १ - ३८-९

			८	२४
		६	३६	
	२	४२		
		३५	२८	
	२७	५२		
११	२४			
१८	४४	५६		
३०	४०	१२	१२	२४

=३०-४०-१२
×६०
१८००+४०=१८४०'
(१८४०'-१२")÷२००
=व. मा. दि. घ. प.
९-२-१२-२१-३६
गुरु अंशायु

२००) १८४०-१२ (९ वर्ष
१८००
४०-१२
×१२
२-२४
४८०
२००) ४८२-२४ (२ मास
४००
८२-२४
×३०
१२-०
२४६०
२००) २४७२ (१२ दिन
२४००
७२×६०
२००) ४३२० (२१ घड़ी
४२००
१२०×६०
२०२) ७२०० (३६
७२००
०

(६) शुक्र

चक्रार्द्ध° ३७°–१४′–५९″
× कर्म० २–५–३९

				३८	२१
			९	६	
		२४	३		
			४	५५	
		१	१०		
	३	५			
		१५८			
	०	२८			
७४					
७८	०	२५	३९	२१	

= ७८–०–२५
× ६०
४६८० + ० = ४६८०′–२५″
४६८०′–२५″ ÷ २००
= व. मा. दि. घ. प.
२३–४–२४–४५–०

शुक्र अंशायु

२००) ४६८०–२५ (२३ वर्ष
४६००
८०–२५
× १२
५–०
९६०
२००) ९६५ (४ मास
८००
१६५ × ३०
२००) ४९५० (२४ दिन
४८००
१५० × ६०
२००) ९००० (४५ घड़ी
९०००
०

(७) शनि

चक्रार्द्ध° १०°–३०′–१०″
× कर्म० १–४४–३९

			६	३०
		१९	३०	
	६	३०		
		७	३०	
	२२	०		
७	२०			
१०	३०	१०		
१८	१९	६	५६	३०

= १८°–१९′–६
× ६०
१०८० + १९
= १०९९′–६″
१०९९′–६″ ÷ २००
= वर्ष मा. दि. घ. प.
५–५–२८–२२–४८

शनि अंशायु

२००) १०६६–६ (५ वर्ष
१०००
६६–६
×१२
१–१२
११८८
२००)११८६–१२(५ मा.
१०००
१८६–१२

१८६–१२
×३०
६–०
५६७०
२००) ५६७६ (२८ दिन
५६००
७६×६०
२००) ४५६० (६० घड़ी
४४००
१६०×६०
२००) ६६०० (४८ पल
६६००
०

१० अंशायु साधन में लग्नायु निकालना

अंशायु के वर्ष आदि निकालने की रीति।

ग्रह की आयु निकालने की रीति से लग्न की आयु निकालने की रीति भिन्न है।

लग्नायु = $\frac{\text{लग्न दायांश} \times ३}{१०}$ = वर्ष मास दिन घटी पल।

यदि लग्न का बल ६ से अधिक हो तो लग्न को राशि के स्थान में जितनी भुक्त राशि हो उस राशि की संख्या के बराबर वर्ष और जोड़ना, यदि ६ से अल्प बल हो तो नहीं जोड़ना।

इसके अतिरिक्त लग्न की राशि छोड़कर जो अंशादि हो उसकी मासायु भी नीचे बताये प्रकार से निकाल कर और जोड़ना पड़ता है।

मासायु = लग्न भुक्तांश × २ ÷ ५ = मास दिन आदि।

उदाहरण लग्नायु

लग्न संस्कृत दायांश = $\frac{१०^\circ–२८'–११'' \times ३}{१०} = \frac{३१^\circ–२४'–३३''}{१०}$ = वर्ष मा. दि. घ. प. ३-१-२०-४३-४८

(चक्र २५ से)

यहाँ १० का भाग देने की भी विशेष रीति है। इसी रीति से भाग देना अन्यथा उत्तर अशुद्ध आयगा। :१० का भाग देने से जो बचे उस सम्पूर्ण शेष कला

विकला में १२ का गुणा कर १० का भाग देना तो लब्धि मास आयगा उपरांत सम्पूर्ण शेष मास दिन घटी में ३० का गुणा कर १० का भाग देना लब्धि १० होगा। शेष दिन घटी आदि में ६० का गुणा कर १० का भाग देने से घटी और शेष में ६० का गुणा कर १० का भाग देने से पल आयगा जैसा नीचे बताया है। गुणा करने से जो संख्या आती है उस में ६० का भाग देकर जो शेष आवे रखना जो लब्धि आवे बांई ओर की संख्या में जोड़ देना इस प्रकार ६० से शुद्धि करना। गुणन फल चक्र के अनुसार यहाँ गुणा करने में सरलता होती है। यहाँ गुणन फल चक्र से गुणा किया है।

१०) ३१°–२४′–३३″ (३ वर्ष
३०
शेष १–२४–३३
×१२
६–३६
४–४८
१२
१०) १६–५४–३६ (१ मास
१०
६–५४–३६
×३०
१८–०
२७–०
१८०
२०७–१८

१०)२०७–१८(२० दिन
२००
७–१८
×६०
१८–०
४२०
१०)४३८(४३ घड़ी
४०
३८
३०
८×६०
४८०

१०)४८०(४८पल
४०
८०
८०
:०

= वर्ष–मा. दि. घ. पल
३–१–२०–४३–४८ लग्नायु

इस लग्नायु में यदि लग्न का बल ६° से अधिक हुआ तो लग्नराशि तुल्य वर्ष जोड़ना पड़ेगा। भाव स्फुट बल चक्र में लग्न का बल ७°–३२′–४६″ दिया है। बल ६° से अधिक है इस कारण लग्नायु में लग्न की भुक्त राशि तुल्य वर्ष और जोड़ना

रा

पड़ेगा। लग्न ११–०°–२८′–११″ है। इसमें ११ राशि पूर्ण भुक्त हो चुकी है इस कारण ११ राशि होने से राशि तुल्य ११ वर्ष इस में जोड़ना पड़ेगा। लग्न के भुक्तांश ०°–२८′–११″ है। इसकी मासायु भी निकाल कर जोड़नी पड़ेगी।

लग्न मासायु = $\frac{\text{लग्न भुक्तांश} \times २}{५}$

$= \frac{०^\circ–२८'–११'' \times २}{५}$

$= \frac{०–५६–२२}{५}$

लग्न मासायु = मास दिन घ. प.
०–५–३८–२२

लग्नायु — वर्ष–मा. दि. घ. प.
३–१–२०–४३–४८

```
५)०–५६–२२(० मास        ३–११
  ०                     ×६०
  ------                ------
  ०–५६–२२               ११–०
   ×३०                  १८०
  ------                ५)१९१(३८ घड़ी
  ११–०                    १५
  २८–०                    ----
  ०                       ४१
५)२८–११(५ दिन              ४०
  २५                      ----
  ------                   १×६०
  ३–११                  ५)६०(१२पल
                          ६०
                          ----
                           ×
```

\+ लग्न राशि तुल्य वर्ष = ११–०–०–०–०

\+ लग्न मासायु ०–०–५–३८–१२

लग्न की स्पष्ट आयु = १४–१–२६–२२–०

उत्पत्ति—आयु का विचार = १ नवांश में १ वर्ष के हिसाब से १ राशि के ३० अंश में ९ नवांश के ९ वर्ष हुए। अर्थात् १०° में ३ वर्ष तो लग्न दायांश में कितना होगा ? यह निकालने को $\frac{\text{लग्न दायांश} \times ३}{१०}$ करना पड़ता है यह पूर्ण राशि का विचार हुआ। इसमें शेष अंशादि के भी मास निकाल कर जोड़ना पड़ता है तब स्पष्ट आयु होती है। ३० अंश में १२ मास (१ वर्ष) तो शेष इष्ट अंश में कितना होगा ?

$\frac{\text{शेष अंश} \times ११}{३०} = \frac{\text{शेषांश} \times २}{५} =$ मासादिक ।

इस लग्न वृद्धि को इस प्रकार अनुपात से भी निकाल सकते हैं

राशि × १ = वर्ष — जैसे — ११ रा० × १ = ११ वर्ष

अंश × $\frac{२}{५}$ = मास — रा — ० अं. × $\frac{२}{५}$ = ० मास

कला × $\frac{१}{५}$ × = दिन — लग्न ११–०°–२८′–११″ — २८ क. × $\frac{१}{५}$ = $\frac{२८}{५}$ दिन–घड़ी
५–३६

विकला × $\frac{१}{५}$ = घड़ी — ११ वि. × $\frac{१}{५}$ = $\frac{११}{५}$ =
२–१२ पल

= वर्ष–मा. दि. घ. प.
११–०–५–३८–१२ — ११–०–५–३८–१२

इस प्रकार लग्न की वृद्धि निकालना सरल है ।

११ अंशायु वर्ष आदि चक्र २७

अंशायु को आचार्यों ने प्रामाणिक माना है।

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
सुर्य	१५	७	२०	९	३६
चंद्र	४	७	१४	४२	०
मंगल	२	११	१३	४८	०
बुध	६	०	१३	१	१२
गुरु	९	२	१२	२१	३६
शुक्र	२३	४	२४	४५	०
शनि	५	५	२८	२२	४८
लग्न	१४	१	२६	२२	०
योग	८१	६	३	३२	१२

अध्याय २७

आयुत्रिक [पिंडायु, निसर्गायु और जीवायु] साधन

१ तीनों प्रकार की उपरोक्त आयु साधन के लिये पहिले दायांश बना लेना पड़ता है। यह दायांश तीनों प्रकार की आयु साधन में काम देता है।

(अ) दायांश बनाने की रीति

दायांश = उच्चांतर के अंश आदि

(ग्रह का उच्च—ग्रह स्पष्ट) = उच्चांतर

यदि ग्रह अधिक हो और उच्च की राशि कम हो तो उच्च की राशि में १२ जोड़कर ग्रह घटाना।

(क) यदि उच्चांतर ६ राशि से कम हो तो १२ राशि में से उच्चांतर घटा देवे जो शेष बचे वह शोधित उच्चांतर हुआ। उच्चांतर की राशि का अंश बना लेने पर दायांश अंश कला विकला में होता है।

(ख) उच्चांतर निकालने की दूसरी रीति भी है ।

(ग्रह स्पष्ट–ग्रह उच्च)—उच्चांतर

इसमें भी शेष ६ राशि से अल्प हो तो १२ राशि में से उच्चांतर घटाकर लेना वह भी शोधित उच्चांत हुआ । इसकी राशि के अंश बना लेने पर दायांश अंश कलादि होता है ।

चाहे (अ) या (ख) की रीति से दायांश निकालो एक ही सा उत्तर आता हैं ।

२ इस दायांश से असंस्कृत आयु निकाली जाती है ।

३ दायांश से असंस्कृत आयु निकालने के लिये प्रकार की आयु के ग्रह के पृथक्-पृथक् गुणक वर्ष हैं जिनका दायांश में गुणा कर ३६० का भाग देना पड़ता है तब वर्ष मास आदि ७ ग्रहों की आयु निकल आती हैं ।

४ पिंडायु साधन = दायांश × ग्रह गुणक वर्ष ÷ ३६० = असंस्कृत आयु

ग्रह गुणक	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वर्ष	१९	२५	१५	१२	१५	२१	२०

५ निसर्ग आयु साधन = दायांश × ग्रह गुणक वर्ष ÷ ३६० = असंस्कृत आयु .

ग्रह गुणक	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वर्ष	२०	१	२	९	१८	२०	५०

६ जीवायु साधन = $\frac{\text{दायांश}}{२१}$ वर्षादि + $\frac{\text{दायांश} \times ५}{४२}$ घड़ी पल = ग्रह असंस्कृत आयु

७ तीनों प्रकार की आयु में लग्न आयु निकालने की रीति

लग्न स्पष्ट की राशि छोड़कर केवल अंश कलादि ÷ २०० लब्धि वर्ष आदि आयु । या अंशायु निकालने की सारिणी द्वारा आयु निकाल लेना ।

८ इन सब में ३६० या २१ या ५ या २०० का भाग देने की विशेष रीति है । अर्थात् शेष अंश कलादि जो बचता है सब अंकों में १२ या ३० आदि का गुणा वर्ष के मास दिन आदि बनाने में करना पड़ता है ।

९ असंस्कृत पिंडायु साधन की रीति

(अ) (पिंड दायांश × पिंडायु गुणक वर्ष) ÷ ३६० = लब्धि वर्ष मास आदि

इसमें पिंड दायांश में ग्रह पिंडायु वर्ष का गुणा कर ३६० का विशेष रीति से भाग देना तो वर्ष मास आदि में असंस्कृत आयु निकलती है ।

(क) पिंडदायांश और पिंडायु वर्ष के गुणनफल में ३६० के भाग देने की

सरल रीति

लब्धि = वर्ष	जैसे मंगल दायांश	गुणक = गुणन फल
	२५१°–३२′–२″ × १५	३७७३-०-३०÷३६०
केवल अंश = दिन	३६०)३७७३(१० लब्धि वर्ष	३०)१७३ दिन (५ मास
	३६००	१५०
कला = घड़ी	शेष १७३ दिन	२३ दिन
विकला = पल	घड़ी पल	
	०′–३०″ = ० – ३०	
प्रति विकला=विपल	= वर्ष–मा. दि. घ. पल	
	१०–५–२३ ०–३०	

पहिले दायांश में ३६० का भाग देने से जो लब्धि आवे उसे वर्ष और शेष को दिन जानो। दिन के मास बना लो। जो दायांश की कला हो उसे घड़ी, विकला को पल, प्रति विकला को विपल समझ कर सबका योग करो तो आयु वर्ष मास आदि में तुरन्त निकल आयगी। विशेष रीति से ३६० का भाग देने में कुछ अड़चन होती है। इस रीति से सरलता से उत्तर मिल जाता है।

(ख) दायांश की कला विकला बनाकर गुणक वर्ष का गुणा कर गुणन फल में १२ राशि की कला २१६००″ का भाग दो तो भी वही उत्तर आयगा। परन्तु यहाँ २१६००′ का भाग भी विशेष रीति से देना पड़ेगा।

(ग) दायांश की विकला बना कर गुणक वर्ष का गुणाकर गुणनफल में १२ राशि की विकला १२९६००० का भाग साधारण प्रकार से देने से ही उत्तर प्राप्त हो जाता है।

$$\frac{\text{(घ) इंष्ट उच्चांतर}}{\text{(६ राशि का) ६४८०००″}} \times \frac{\text{ग्रह वर्ष}}{\text{२}} = \frac{\text{इष्ट उच्चांतर विकला}}{\text{६४८००}}$$

$$\times \frac{\text{वर्ष} \times \text{६ मास}}{\text{१}} = \text{मास दिन आदि}$$

(ङ) उच्च के समीप ग्रह हो तो=(ग्रह ∽ उच्च)=अंतर } जिससे जो घटे घटाना
नीच ,, ,, ,, =(ग्रह ∽ नीच)=अंतर } ∽ =अंतर

नीच अंतर में = (ग्रहार्द्ध आयु + अंतर आयु) = योग, असंस्कृत आयु
उच्च ,, = (ग्रह पूर्णायु – अंतर आयु) = शेष, ,, ,,

राशि × वर्ष = मास	अंतरपर से इस प्रकार आयु निकाल कर सबका योग करने से अंतर आयु होती है
अंश × वर्ष = दिन	
कला × वर्ष = घड़ी	
विकला × वर्ष = पल	

(च) शोधित उच्चांतर से इस प्रकार आयु निकाल लेना ।

राशि × ग्रह वर्ष	= मास	सबका योग करने से असंस्कृत	
अंश × ,,	= दिन		
कला × ,,	= घड़ी	आयु निकल आती है	
विकला × ,,	= पल		

ऊपर कई प्रकार से आयु निकालने की रीति दी है परन्तु सबसे सरल असंस्कृत आयु निकालने की यही रीति है। ऊपर बताई किसी रीति से आयु निकालो परन्तु सबका एकसा उत्तर आयगा ।

१०—असंस्कृत आयु से संस्कृत आयु निकालने की २ रीतियाँ हैं ।

(अ) असंस्कृत आयु निकाल कर उपरांत उसमें हानि करने से संस्कृत आयु निकल आती है ।

(क) दायांश से हानिकृत दायांश बनाया जाता है। फिर हानिकृत दायांश पर से ऊपर बताई रीति से संस्कृत आयु बताई जाती है। (= हानि कृत दायांश × ग्रह वर्ष) ÷ ३६० = संस्कृत आयु ।

११–हानि करने या हानि कृत दायांश बनाने के लिये इसमें नैसर्गिक मैत्री लेना और इस प्रकार हानि करना ।

(अ) मैत्री	शत्रु गृह	अस्त	शुक्र शनि अस्त में	वक्री शत्रुगृही ग्रह हो तो
हानि	$\frac{1}{3}$	$\frac{1}{2}$	कोई हानि नहीं होती	कोई हानि नहीं होती

(क) जिस ग्रह की $\frac{1}{2}$ और $\frac{1}{3}$ भी हानि हो तो केवल $\frac{1}{2}$ हानि करना ।

(ख) यदि उस ग्रह का चक्रार्द्ध हानि हो तो जिस प्रकार अंशायु साधन अध्याय २६ के ७ में चक्रार्द्ध हानि गुणक निकालना बताया है उसी प्रकार निकाल कर = (हानि कृत दायांश × चक्रार्द्ध हानि गुणक) = स्पष्ट हानि कृत पिंड दायांश ।

(ग) इस प्रकार हानि कृत पिंड दायांश निकाल कर इस से तीनों प्रकार की आयु की संस्कृत आयु निकल आती है ।

(घ) जिन ग्रहों की कोई हानि नहीं हुई उनको आयु निकालने को साधारण पिंड दायांश लेकर आयु निकालना जैसा ४ में बताया है। उस प्रकार निकाली हुई असंस्कृत आयु ही संस्कृत आयु कहलायगी, क्योंकि उसमें कोई हानि नहीं करना है ।

१२–दोनों प्रकार की हानि के अतिरिक्त एक और हानि होती है जिसे क्रूरोदय हानि या क्रूरोदय हरण कहते हैं ।

(अ) यह क्रूरोदय हानि केवल आयुत्रिक (पिंडायु, निसर्गायु और जीवायु) में होती यह हानि अंशायु में नहीं होती ।

(क) लग्न में कोई क्रूर ग्रह हो तो उस क्रूर ग्रह की आयु में हानि होती है। इस कारण देखना कि लग्न में कोई क्रूर ग्रह है ? वह अकेला है या कोई शुभ ग्रह भी साथ है या उस पर कोई शुभ ग्रह की दृष्टि है।

(ख) यदि लग्न में क्रूर ग्रह न हो परन्तु लग्न पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो क्रूरोदय हरण होता है।

१२ अ—केशव के मत से क्रूरोदय हरण

(१) लग्न में पाप ग्रह = (ग्रह पिंडदायांश × लग्न के केवल अंशादि) ÷ ३६० =लब्धि (उस पाप ग्रह का दायांश-लब्धि) =पाप ग्रह का पिंडादि दायांश

(२) लग्न पर ग्रह की दृष्टि= (द्रष्टा ग्रह का दायांश–लब्धि)=द्रष्टा ग्रह का दायांश।
पिंड दायांश = आयुर्भाग = आयुरंश=शोधित उच्चांतर के अंश कलादि।

१२ क—मतांतर

पाप दृष्टि में = दायांश—(पाप ग्रह का भाव फल × लब्धि)

शुभ „ = दायांश—(शुभ ग्रह का भाव फल × लब्धि) / २

१२ ख—अन्य मत से क्रूरोदय हरण

(१) लग्न में क्रूर ग्रह हो तो क्रूर ग्रह की गणितागत आयु में इस प्रकार की हानि होती है।

(लग्नस्थ पाप ग्रह की आयु × लग्न की उदित नवांश संख्या) ÷ १०८=वर्ष मास आदि।
(लग्नस्थ पाप ग्रह की आयु–प्राप्त वर्ष मास आदि) = शेष आयु क्रूर ग्रह की। १ राशि में ९ नवांश होते हैं। १२ राशि × ९ = १०८ नवांश।

पूरे नवांश में पाप ग्रह की इतनी आयु है तो इष्ट उदित नवांश में कितनी आयु होगी ? यह गणित से निकालना।

इस प्रकार उदित नवांश संख्या से आयु में गुणाकर १०८ का भाग देने से जो हानि होने वाली है वह प्राप्त होगी। उस आयु को पाप ग्रह की आयु में घटा देने से उस ग्रह की शेष आयु रह जाती है।

(२) यह लग्नस्थ क्रूर ग्रह पर शुभ ग्रह की दृष्टि भी हो तो :—

(लग्नस्थ क्रूर ग्रह आयु × लग्न की उदित नवांश संख्या) ÷ २१६=लब्धि वर्ष मास आदि
(१०८ × २)

(लग्नस्थ क्रूर ग्रह आयु–लब्धि वर्ष आदि) = शेष क्रूर ग्रह आयु।

(३) लग्न में कई पापग्रह हो तो जो ग्रह बली हो उसकी आयु लेना।

(४) यदि लग्नस्थ क्रूर ग्रह लग्नेश हो तो क्रूरोदय हानि नहीं करना।

(५) लग्न में पाप ग्रह न हो तो यह हानि नहीं होती।

(६) यदि लग्न पर पाप दृष्टि हो और लग्न में कोई पाप ग्रह न हो तो प्राप्त हानि का आधा ही घटेगा

(७) यदि लग्नस्थ पाप ग्रह पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्राप्त हानि का आधा ही घटाना बताया है। इसी कारण १०८ × २ = २१६ का भाग देना ऊपर बताया है।

(८) उदित नवांश

एक राशि में ९ नवांश होते हैं इनमें से जो नवांश वर्तमान समय में उदय हो वही उदित नवांश कहलाता है।

नवांश विचारने के लिये राशि छोड़कर केवल अंश कलादि को लेकर नवांश निकालना।

(अ) उदित नवांश निकालने रीति

$$३०^{\circ} \text{ में ९ नवांश तो इष्ट कलादि में कितना होगा ?} = \frac{\text{लग्न अंशादि} \times ९}{३०}$$

$$= \frac{\text{लग्न अंश} \times ३}{१०} \text{ उदित नवांश}$$

यह ऊपर बताई रीति से मिलती है।

$$\frac{\text{ग्रह दायांश} \times \text{उदित नवांश}}{१०८} = \frac{\text{दायांश}}{१०८} \times \frac{\text{लग्न अंशादि} \times ९}{३०} = \frac{\text{दायांश} \times \text{लग्न अंशादि}}{३६०}$$

इस प्रकार = दायांश × लग्न नवांश ÷ १०८ } दोनों का एक ही
या = ,, × लग्न अंशादि ÷ ३६० } सिद्धांत है।

उदित नवांश संख्या से गुणा करने में कुछ स्थूलता आ जाती है परन्तु लग्न अंशादि से गुणा करने से ठीक उत्तर आता है।

१३ निसर्गायु साधन

(अ) ग्रह गुणक	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वर्ष	२०	१	२	९	१८	२०	५०

(क) इस में सब क्रिया पिंडायु निकालने के समान है केवल अंतर यही है कि इसमें निसर्गायु के गुणक वर्ष का गुणा उसी प्रकार करना पड़ता है जैसे पिंडायु साधन में पिंडायु के गुणक वर्ष का गुणा किया था उसके स्थान में यहाँ निसर्ग आयु गुणक लेना। और सब क्रिया पिंडायु साधन के समान करना।

१४—जीवायु साधन

वर्ष–दिन

(अ) जीव शर्मा ने पूर्णायु १२०-५ को मान कर ७ ग्रहों में बाँट दिया है। प्रत्येक की आयु वर्ष मा. दि. घ. प. होती है। यह उच्चवर्ष १२ राशि में होती
१७–१–२२– ८–३४$\frac{2}{7}$
है। इस पर से एक सारिणी बना ली गई है जिससे सरलता से आयु निकल आती है।

(क) आरंभ में जो उच्चांतर से तीनों प्रकार को आयु साधन के लिये जो दायांश बनायें हैं उसी पर से आयु निकाली जाती है।

(ख) गणित से जीवायु निकालने के लिये

$$\frac{\text{दायांश}}{२१}\ \text{वर्षादि} + \frac{\text{दायांश} \times ५}{४२}\ \text{घड़ी पल} = \text{जीवायु}$$

(ग) इस में भी शेष क्रियायें पिंडायु साधन के समान हैं। अर्थात् जिस प्रकार हानि का विचार होकर असंस्कृत आयु से संस्कृत आयु बनाने का नियम पहिले बता चुके हैं वे सब नियम यहाँ भी लागू होंगे।

१५—उदाहरण देकर तीनों प्रकार की आयु साधन करना आगे बताया है जिससे सब बातें समझ में आ जायंगी।

पिंडायु, निसर्गायु और जीव शर्मोक्त आयु साधन के लिये दायांश बनाने का उदाहरण

तीनों प्रकार की आयु साधन के लिये पहिले पिंडादि त्रिक आयुरंश अर्थात् पिंडदायांश बनाना पड़ता है। उस पर से असंस्कृत आयु निकाल कर हानि क्रिया करने के उपरांत संस्कृत आयु बनाई जाती है या इस पिंड दायांश में ग्रह की नैसर्गिक मैत्री के अनुसार ग्रह जिस स्थान में होता है उसके अनुसार हानि आदि क्रिया करने के उपरांत हानि कृत पिंडादि त्रिक आयु अंश पर से संस्कृत आयु बनाई जाती है।

दायांश पर से तीनों प्रकार की आयु साधन की रीति आगे बताई गई है। पिंड दायांश केवल ७ ग्रह का बनता है। लग्न का दायांश निकालने की आवश्यकता नहीं है। लग्न की आयु पृथक् निकाली जाती है।

१ पिंडादि त्रिक आयु अंश (तीनों प्रकार की आयु के दायांश) बनाने की रीति

(ग्रह स्पष्ट–ग्रह उच्च) = शेष ६ राशि से अल्प हो तो = (१२ राशि–शेष) = शेष राशि के अंशादि। उच्चराशि के परम उच्च अंश में ग्रह होने से पूर्ण आयु मिलती है, परन्तु अपने नीच राशि के परम नीच अंश में आधी आयु रह जाती है। इससे ग्रह की राशि से परम उच्च नीच का अंतर जानना पड़ता है। इस कारण उच्च घटाना पड़ता है।

पिंड दायांश बनाना चक्र १

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	रा	रा	रा	रा	रा	रा	रा
ग्रह स्पष्ट	३-२७°-२३'-६"	८-२०°-५५'-३५"	१-१६°-२७'-५८"	३-१३°-०'-३५"	८-१८°-४४'-५६"	२-१७°-१४'-५९"	१-२०°-३०'-१०"
-ग्रह उच्च	०-१०	१-३	६-२८	५-१५	३-५	११-२७	६-२०
शेष	३-१७-२३-६	७-१७-५५-३५	३-१८-२७-५८	९-२८-०-३५	५-१३-४४-५६	२-२०-१४-५९	७-०-३०-१०
६ से कम	१२-०-०-०		१२-०-०-०		१२-०-०-०	१२-०-०-०	
होने से	३-१७-२३-६		३-१८-२७-५८		५-१३-४४-५६	२-२०-१४-५९	
घटाया							
शेष=	८-१२-३६-५४		८-११-३२-२		६-१६-१५-४	९-९-४५-१	

राशि के अंश } २५२°-३६'-५४", २२७°-५५'-३५", २५१°-३२'-२", २९८-०-३५, १९६-१५-४, २७९-४५-१, २१०°-३०'-१०"
= पिंड दायांश }

पिंडादि त्रिक आयु अंश या पिंड दायांश चक्र २

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पिंड दायांश	२५२°-३६'-५४"	२२७°-५५'-३५"	२५१°-३२'-२"	२९८°-०'-३५"	१९६°-१५'-४"	२७९-४५-१	२१०-°३०'-१०"

दूसरी रीति

(उच्च-ग्रह स्पष्ट) = शेष । ६ राशि से अल्प हो तो १२ से शेष घटाना ।

	रा		रा		रा
उदाहरण सूर्य उच्च	०-१०°-०'-०"	बुध उच्च	५-१५°-०'-०"		१२-०°-०'-०"
सूर्य स्पष्ट	३-२७-२३-६	बुध स्पष्ट	३-१३-०-३५		२-१-५९-२५
शेष	८-१२-३६-५४	शेष	२-१-५९-२५	शेष	९-२८-०-३५

= पिंड दायांश २५२°-३६'-५४"

६ से अल्प होने से १२ से घटाया ।

रा

तो ९-२८°-०'-३५ = २९८°-०'-३५" पूर्वोक्त पिंड दायांश आया । दोनों प्रकार से एक ही उत्तर आता है ।

(१) पिंडायु साधन का उदाहरण

$$\frac{\text{पिंड दायांश} \times \text{ग्रह पिंडायु वर्ष}}{३६०} = \text{असंस्कृत पिंडायु वर्ष मास आदि}$$

चक्र २ (अ)

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल
पिंड दायांश	२५२°–३६'–५४"	२२७°–५५'–३५"	२५१°–३२–२"
गुणक पिंडायु वर्ष	१९	२५	१५

बुध	गुरु	शुक्र	शनि
२९८°–०'–३५"	१९६°–१५'–४"	२७९°–४५'–१"	२१०°–३०'–१०"
१२	१५	२१	२०

(१) रवि

दायांश २५२°–३६'–५४"
× गुणक वर्ष × १९
१७–६
११–२४
४७८८
३६०) ४७९९–४१–६ (१३ वर्ष
३६०
११९९
१०८०
११९–४१–६
× १२
१–१२
८–१२
१४२८
३६०) १४३६–१३–१२ (३ मास
१०८०
३५६–१३–१२

३५६–१३–१२
× ३०
६–०
६–३०
१०६८०
३६०) १०६८६–३६–० (२९ दिन
७२०
३४८६
३२४०
२४६–३६
× ६०
३६–०
१४७६०
३६०) १४७९६ (४१ घड़ी
१४४०
३९६
३६०
३६ × ६०
३६०) २१६० (६
२१६०
०

सूर्य की असंस्कृत आयु
वर्ष–मा. दि. घ. पल
१३–३–२९–४१–६

(२) चंद्र

दायांश २२७°-५५'-३५"
गुणक वर्ष × २५

१४-३५
२२-५५
११३५
४५४
३६०) ५६९८-९-३५ (१५ वर्ष
३६०
२०९८
१८००
२९८-९-३५
× १२
७-०
१-४८
३५७६
३६०) ३५७७-५५-० (९ मास
३२४०
३३७-५५

३३७-५५
× ३०
२७-३०
१०११०
३६०) १०१३७-३० (२८ दिन
७२०
२९३७
२८८०
५७-३०
× ६०
३०-०
३४२०
३६०) ३४५० (९ घड़ी
३२४०
२१० × ६०
३६०) १२६०० (३५ पल
१०८०
१८००
१८००
०

चंद्र की असंस्कृत आयु
वर्ष मा. दि. घ. प.
१५-९-२८-९-३५

इसी प्रकार और भी ग्रहों की आयु निकाल लेना।

यहाँ गुणनफल में ३६० का भाग देने में कुछ अड़चन प्रतीत होती है इस कारण ३६० के भाग देने की सरल कुंजी यह है।

पूर्ण दायांश में ३६० का भाग देने से लब्धि वर्ष आता है। शेष अंश को दिन कला को घड़ी विकला को पल मानकर आयु निकाल लो। जैसे

(१) सूर्य गुणन फल

३६०) ४७९९°–४१′–६″ (१३ वर्ष
३६०
११९९ ३०) ११९ (३ मास
१०८० ९०
११९–४१–६ २९ दिन
दिन–घड़ी–पल
= वर्ष मा. दि. घ. प.
१३–३–२९–४१–६

(२) चंद्र गुणन फल

३६०) ५६९८–९–३५ (१५ वर्ष
३६० दिन
२०९८ ३०) २९८ (९ मास
१८०० २७०
२९८–९–३५ २८ दिन
दिन घ. प.
= वर्ष मा. दि. घ. प.
१५–९–२८–९–३५

(२) पिंडायु निकालने की दूसरी रीति और उदाहरण

(ग्रह–उच्च) = शेष। शेष यदि ६ राशि से अधिक हो तो १२ घटा कर षड़भाल्प कर लेना। क्योंकि यदि ६ राशि से शेष अल्प हो तब ही यह रीति उपयोगी है। इस कारण ६ से अधिक शेष होने पर षड़भाल्प करना पड़ता है।

$$\frac{\text{षड़भाल्प उच्चांतर} \times \text{ग्रह वर्ष}}{२१६००'} = \text{लब्धि वर्ष आदि गत आयु}$$

(१२ राशि × ३०° × ६०′) = २१६००′ (ग्रह पूर्ण आयु वर्ष–गतायु) = शेष आयु

जैसे सूर्य की पिंडायु निकालना है। सूर्य का पिंडायु वर्ष १९ है।

रा
सूर्य ३–२७°–२३′–६″
–सूर्य उच्च ०–१०
शेष = ३–१७–२३–६
रा
३–१७°–२३′–६″
× ३०
९० + १७ = १०७ × ६०
= ६४२० + २३
= ६४४३′–६″

६४४३′–६
ग्रह वर्ष × १९
१–५४
५७९८७
६४४३
१२२४१८–५४

२१६००) १२२४१८′–५४′ (५ वर्ष
१०८०००
१४४१८–५४
घड़ी–पल
६०) १४४१८ (२४० दिन
१२०
२४१ ३०) २४० (८ मास
२४० २४०
१८ ०
घड़ी दिन
वर्ष–मा. दि. घ. प.
= ५–८–०–१८–५४ गतायु

वर्ष मा. दि. घ. प.
पूर्णायु १९– ० –० –० –०
–गतायु ५– ८ –०–१८–५४
शेष १३–३–२९–४१–

=सूर्य की असंस्कृत आयु
वर्ष मा. दि. घ.–प.
१३–३–२९–४१–६

यहाँ ३६० अंश की कला बनाकर भाग दिया है इससे षड्भाल्प उच्चांतर की भी कला बनाकर २१६०० का भाग संक्षिप्त रीति से दिया है क्योंकि विशेष रीति से भाग देने में समय लगता है। २१६०० कला का भाग देने से लब्धि वर्ष आये। कला बराबर घड़ी के यहाँ होती है इससे शेष कला विकला को घड़ी पल मान लिया। घड़ी के दिन मास आदि बना लिये।

दूसरा उदाहरण
–चंद्र ८–२०–५५–३५
चंद्र उच्च १–३
शेष ७–१७–५५–३५
यह ६ से अधिक है तो षड़भाल्प किया
१२– ०– ०– ०
७–१७–५५–३५
शेष ४–१२– ४–२५
रा
= ४–१२°–४′–२५
× ३०
१२०+१२=१३२×६०
=७९२०+४
=७९२४′–२५″

७९२४′–२५″
चंद्र वर्ष × २५
१०–२५
३९६२०
१५८४८
१९८११०–२५

२१६००)१९८११०′–२५″(९ वर्ष
१९४४००
३७१०–२५
घड़ी-पल

६०)३७१०(६१ दिन
३६०
११०
६०
५०
घड़ी

३०)६१(२ मास
६०
१ दिन

=वर्ष मा. दि. घ. प.
९–२–१–५०–२५ गतायु
वर्ष मा. दि. घ. प.
पूर्णायु २५–०– ०– ०– ०
–गतायु ९–२– १–५०–२५
शेष १५–९–२८– ९–३५
चंद्र की असंस्कृत आयु
=वर्ष मा. दि. घ. प.
१५–९–२८–९–३५

(३) ऊपर बताई रीति को दूसरे प्रकार से करते हैं। तीसरी रीति

उच्च से ग्रह; घटाकर शेष ६ से अधिक लेकर ३६०° को कला या विकला बनाकर भाग देंगे।

रा	
सूर्य उच्च	०–१०–०′–०″
सूर्य स्पष्ट	३–२७–२३–६
अंतर	८–१२–३६–५४

यही शोधित उच्चांतर हुआ। क्योंकि अंतर ६ राशि से अधिक है शेष कम होता तो १२ से घटाना पड़ता।

रा

८–१२°–३६′–५४

× ३०

२४० + १२ = २५२ × ६०

= १५१२० + ३६

= १५१५६′ × ६०

= ९०९३६० + ५४

= ९०९४१४″

शोधित उच्चांतर सूर्य वर्ष

$$\frac{९०९४१४'' \times १९}{३६०^\circ \times ६०' \times ६०'' = १२९६००''}$$

= वर्ष मास आदि

९०९४१४″

सूर्य वर्ष × १९

८१८४७२६

९०९४१४

१७२७८८६६

१२९६०००) १७२७८८६६ (१३ वर्ष

१२९६०००

४३१८८६६

३८८८०००

४३०८६६ पल

६०) ४३०८६६ (७१८१ घड़ी

४२०

१०८

६०

४८६

४८०

६६

६०

६

६०) ७१८१ (११९ दिन

६०

११८

६०

५८१

पल ४०५

= वर्ष–मा. दि. घ. प. ४१ घड़ी

१३–३–२९–४१–६

सूर्य की असंस्कृत आयु

(४) पिंडायु साधन की चौथी रीति

उच्च और नीच में ६ राशि का अंतर है = १८०° = १०८००″ = ६४८०००″ उच्च से नीच में आने में ग्रह की आधी आयु रह जाती है।

६ राशि अंतर में $\frac{\text{पूर्णायु}}{२}$ आयु होती है तो इष्ट उच्चांतर में कितनी होगी ?

$$= \frac{\text{इष्ट उच्चांतर विकला}}{६४८०००''} \times \frac{\text{ग्रह वर्ष}}{२} = \text{आयु वर्ष}$$

पूर्णायु वर्ष के मास बना कर आधा कर लेना और उच्चान्तर विकला से गुणा कर ६ राशि की विकला ६४८०००″ से भाग देना तो आयु निकल आयगी।

रा

जैसे सूर्य का उच्चान्तर ८–१२°–३६′–५४″ = ९०९४१४″ है

$$\frac{९०९४१४}{६४८०००} \times \frac{१९ \text{ वर्ष} \times १२}{२} = \frac{९०९४१४}{६४८०००} \times \frac{११४}{१} \text{ मास}$$

$$= \frac{१०३६७३१९}{६४८०००} = \frac{\text{मास दिन घ. प.}}{१५९-२९-४१-६} = \frac{\text{वर्ष-मा. दि. घ. पल}}{१३-३-२९-४१-६} \text{ सूर्य असंस्कृत आयु}$$

```
  ९०९४१४        ६४८००० ) १०३६७३१९६ ( १९५ मास
   × ११४                 ६४८०००      ६४८०००)२६६३२८००(४१ घड़ी
 --------                -------               २५९२०००
 ३६३७६५६                ३८८७३१९               -------
 ९०९४१४                  ३२४००००                 ७१२८००
९०९४१४                   -------                 ६४८०००
---------                 ६४७३१९६                -------
१०३६७३१९६                 ५८३२०००                 ६४८०० × ६०
                          -------
                          ६४११९६ × ३०  ६४८००)३८८८०००(६ पल
        ६४८००० ) १९२३५८८० ( २९ दिन       ३८८८०००
                 १२९६०००                  -------
                 -------
                  ६२७५८८०
                  ५८३२०००
                  -------
                   ४४३८८० × ६०
                   -------
                  २६६३२-००
```

(५) पाँचवी रीति

देखो ग्रह उच्च के समीप है या नीच के समीप। जिसके समीप हो उससे ग्रह का अंतर निकालो।

(१) उच्च के समीप = (ग्रह ऽ उच्च) = अंतर } जिससे जो घटे घटाना।
नीच „ „ = (ग्रह ऽ निच्च) = „ } ऽ = अंतर

(२) अंतर की आयु निकालना = अंतर आयु

नीच अंतर में = (ग्रह अर्द्ध आयु + अंतर आयु) = योग असंस्कृत आयु

उच्च „ = (ग्रह पूर्णायु — अंतर आयु) = शेष „ „

अंतर पर से इस प्रकार आयु निकाल कर योग करने से अंतर आयु निकलती है।

राशि × वर्ष = मास; अंश × वर्ष = दिन; कला × वर्ष = घड़ी; विकला × वर्ष = पल।

उदाहरण

(१) सूर्य ३–२७°–२३′–६″ (रा) यह उच्च के समीप होने से सूर्य से उच्च घटाया सूर्य का पिंडायु वर्ष १९ है इससे अंतर × १९।

उच्च ०–१०

शेष ६–१७–२३–६ = अंतर

रा ° ′ ″

		वर्ष	मा.	दि.	घ.	पल
अंतर	३–१७–२३–६					
३ राशि = ३ × १९ = ५७ मास =		४	९	०	०	०
१७° = १७ × १९ = ३२३ दिन =		०	१०	२३	०	०
२३′ = २३ × १९ = ४३७ घड़ी =				७	१७	०
६″ = ६ × १९ = ११४ पल =					१	५४
योग =		५	८	०	१८	५४ = अंतर आयु

उच्च से अंतर निकाला था इससे

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
पूर्णायु–	१९	०	०	०	०
–अंतर आयु	५	८	०	१८	५४
शेष	१३	३	२९	४१	६ = सूर्य की असंस्कृत पिंडायु।

रा – ° – ′ – ″

(२) चंद्र ८–२०–५५–३५ यह नीच के समीप होने से नीच घटाया।

नीच ७–३ चंद्र पूर्ण वर्ष = आधे वर्ष नीचायु के वर्ष–मास

अंतर १–१७–५५–३५ २५ १२–६

		वर्ष मा. दिन घ. पल
१ राशि = १ × २५ = २५ मास		= २ – १
१७° = १७ × २५ = ४२५ दिन		= ०—१४ – ५
५५′ = ५५ × २५ = १३७५ घड़ी		= ०— ०– २२— ५५
३५″ = ३५ × २५ = ८७५ पल		= १४ –३५
	योग	३ – ३ – २८ – ९ – २५ = अंतर वर्ष

	व. मा. दि. घ. य	
नीचायु	१२ – ६ – ० – ० – ०	नींच से अंतर निकाला था
+ अंतर वर्ष	३ — ३–२८ – ९ –३५	इस से नीच वर्ष में अंतर वर्ष
योग =	१५ – ९–२८ –९ –३५	जोड़ने से आयु प्राप्त हुई।

चंद्र की असंस्कृत पिंडायु

(६) छठी—पिंडायु साधन की सबसे सरल रीति

(उच्च—ग्रह) = शेष उच्चांतर यह शेष ६ से कम रहे तो

(१२ राशि—उच्चांतर) = शोधित उच्चांतर

उच्च से ग्रह न घटे तो उच्च की राशि में १२ जोड़कर घटाना।

इस प्रकार सब ग्रहों का उच्चांतर निकाल लेना।

उपरांत नीचे बतायी रीति से शोधित उच्चांतर से आयु निकाल लेना।

राशि × ग्रह वर्ष = मास अंश × ,, = दिन कला × ,, = घड़ी विकला × ,, = फल	ग्रह की पिंडायु या निसर्ग आयु जो निकालनी हो उसी के अनुसार ग्रह के वर्ष लेना। जैसे निसर्ग आयु निकालनी है तो निसर्ग आयुके वर्ष लेना और पिंडायु निकालनी है तो पिंडायु के वर्ष लेना।

यहाँ इसी रीति से सब ग्रहों की पिंडायु निकालते हैं

(१) सूर्य पिंडायु साधन सूर्य पिंडायु वर्ष १९ है इससे १९ का गुणा किया।

सूर्य उच्च ० - १० - ० - ०	८रा.=८ × १९=१५२मास=	व. मा. दि. घ. प.
–सूर्य ३ - २७ -२३ - ६		१२– ८– ० – ०–०
उच्चांतर=८ -१२ -३६ -५४	१२°=१२ × १९=२२८दिन=	७– १८ – ०–०
यह ६ राशि से अधिक है	३६′=३६ × १९=६८४घड़ी=	११–२४–०
इससे १२ से नहीं घटाना	५४″=५४ × १९=१०२६पल =	१७–६
पड़ा।	योग =	१३– ३– २९–४१–६

व. मा. दि. घ. प.

∴ सूर्य की असंस्कृत आयु= १३ —३—२९-४१-६

(२) चंद्र पिंडायु साधन

रा °

उच्च १-३

चंद्र ८-२०-५५-३५

उच्चांतर=४-१२-४-२५

शेष ६ राशि से कम है इससे १२ से घटाया

१२-०-०-०

-४-१२-४-२५

शेष= ७-१७-५५-३५

शोधित उच्चांतर

चंद्र पिंडायु व र्ष २५ है वर्ष. रा. दि. घ. प.

७रा०=७ × २५=१७५मास =१४ - ७

१७०=१७ × २५=४२५दिन= १४-५

५५′=५५ × १६=१३७५घटी= २२-५५

३५″=३५ × २५=८७५पल= १४-३५

योग=१५-९- २८-९- ३५

चंद्र की असंस्कृत पिंडायु

व. मा. दि. घ. प.

१५—९—२८—९—३५

(३) मंगल की पिंडायु साधन

रा

मंगल उच्च ९-२८°

मंगल ग्रह १-१६-२७-५८

उच्चांतर = ८-११-३२-२

∴ मंगल की असंस्कृत पिंडायु

वर्ष-मा. दि. घ. प.

१०-५-२३-०-३०

मंगल पिंडायु वर्ष १५ व.मा.दि.घ.प.

८ रा०=८ × १५=१२० मास=१०-०-०-०-०

११°=११ × १५=१६५ दिन= ५-१५-०-०

३२′=३२ × १५=४८० घड़ी= ८-०-०

२″ = २ × १५ = ३० पल= ०-३०

योग १०-५-२३-०-३०

(४) बुध पिंडायु साधन

रा

बुध उच्च ५-१५°

-बुध ग्रह ३-१३-०-३५

उच्चांतर = २-१-५९-२५

६ से कम है इससे १२ से घटाया

१२- ० - ० - ०

२- १ - ५९-२५

शेष = ९- २८- ० -३५

शोधित उच्चांतर

बुध पिंडायु वर्ष १२ व.मा.दि.घ.

९ रा०=९ × १२=१०८ मास= ९-०-०-०-०

२८°=२८ × १२=३३६ दिन= ११-६-०-०

०′ = ० × १२= ० घड़ी= ०-०

३५″=३५ × १२=४२० पल= ७-०

योग = ९-११-६-७-०

व. मा. दि. घ. प.

बुध की असंस्कृत आयु= ९-११-६-७-०

(५) गुरु पिंडायु साधन

रा
गुरु उच्च ३–५°
गुरु ग्रह ८–१८–४४–५६
उच्चांत = ६–१६–१५–४
यह ६ राशि से अधिक है।
गुरु की असंस्कृत पिंडायु
व. मा. दि. घ. प.
८- २- ३- ४६-०

गुरु पिंडायु वर्ष १५ व.मा.दि.घ.प.
६रा०=६ × १५=९० म:स=७-६-०-०-०
१६°=१६ × १५=२४० दिन =८-०-०-०
१५′=१५ × १५=२२५ घड़ी = ३-४५-०
४″=४ × १५=६० पल = १-०
योग = ८-२-३-४६-०

(६) शुक्र पिंडायु साधन

रा
शुक्र उच्च ११–२७°
शुक्र ग्रह २–१७–१४–५९
उच्चांतर = ९–९–४५–१
यह ६ से अधिक है
∴ शुक्र को असंस्कृत आयु
व. मा. दि. घ. प.
१६-३-२४-४५-२१

शुक्र पिंडायु वर्ष २१ व.मा.दि.घ.प.
९ रा०=९ × २१=१८९ मास=१५-९-०-०-०
९°=९ × २१=१८९ दिन = ६-९-०-०
४५′=४५ × २१=९४५ घटी= १५-४५-०
१″ = १ × २१=५१ पल = -२१
योग = १६-३-३-२४-४५-२१

(७) शनि पिंडायु साधन

रा
शनि उच्च ६–२०°
शनि ग्रह १–२०–३०–१०
उच्चांतर = ४–२९–२९–५०
यह ६ से कम है इससे १२ से घटाया
१२– ०– ०– ०
४–२९–२९–५०
शेष ७– ०–३०–१०
शोधित उच्चांतर

शनि पिंडायु वर्ष २० व.मा.दि.घ.प
७ रा०=७ × २०=१४० मास=११-८-०-०-०
०° = ० × २० = ० दिन = ०-०-०
३०′ = ३० × २० = ६०० घड़ी= १०-०-०
१०″ = १० × २०=२०० पल= ३-२०
योग = ११-८-१०-३-२०
∴ शनि की असंस्कृत पिंडायुव.मा.दि.घ.प
११-८-१०-३-२०

(५) असंस्कृत पिंडायु चक्र ३

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल
सुर्य	१३-	३-	२६-	४१-	६
चंद्र	१५-	९-	२८-	९-	३५
मंगल	१०-	५-	२३-	०-	३०
बुध	९-	११-	६-	७-	०
गुरु	८-	२-	३-	४६-	०
शुक्र	१६-	३-	२४-	४५-	२१
शनि	११-	८-	१०-	३-	२०

यह असंस्कृत आयु निकली है। इसमें हानि होने से जो बच रहे वह संस्कृत आयु होती है। हानि करने के नियम आरंभ होने के पहिले बता चुके हैं और अंशायु अध्याय २६ में भी दिये हैं।

६—असंस्कृत आयु में हानि करने के लिए विचार करते हैं।

(१) चक्रार्द्ध हानि इस प्रकार होती है।

भाव	१२	११	१०	९	८	७
पाप ग्रह में हानि	१ पूरा	$\frac{1}{2}$	$\frac{1}{3}$	$\frac{1}{4}$	$\frac{1}{5}$	$\frac{1}{6}$
शुभ ग्रह में हानि	$\frac{1}{2}$	$\frac{1}{4}$	$\frac{1}{6}$	$\frac{1}{8}$	$\frac{1}{10}$	$\frac{1}{12}$

इस के अनुसार हानि का विचार करने से प्रगट हुआ कि गुरु और चंद्र दशम स्थान में हैं। इन दोनों में चंद्र बलवान है इस कारण केवल चंद्र की असंस्कृत आयु में $\frac{1}{6}$ हानि होगी।

(२) दूसरी हानि

शत्रु गृह में	अस्त में	शुक्र व शनि अस्त	बक्री शत्रु गृही
-$\frac{1}{2}$	-$\frac{1}{2}$	-$\frac{1}{2}$ हानि नहीं होगी	कोई हानि नहीं

यहाँ नैसर्गिक मैत्री से शत्रु आदि का विचार करना पड़ेगा।

नोचे चक्र मे प्रत्येक ग्रहों की मैत्री अस्त बक्री आदि का विचार दिया है

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि	४	९	२	४	९	३	२
मैत्री	मित्र	सम	सम	शत्रु	स्व	मित्र	मित्र
अस्त या बक्री	०	०	०	उदय	बक्री	०	०
हानि	०	०	०	शत्रु क्षेत्री का $\frac{1}{3}$	०	०	०

यहां केवल बुध शत्रु क्षेत्री है जिसके कारण उसकी $\frac{1}{3}$ हानि होगी।

(३) क्रूरोदय हरण—लग्न में कोई पाप ग्रह नहीं है। लग्न पर किसी पाप ग्रह की पूर्ण दृष्टि भी नहीं है। इस कारण किसो की यह हानि नहीं होगी।

सारांश में चंद्र की $\frac{1}{6}$ और बुध की केवल $\frac{1}{3}$ हानि होगी।

७—असंस्कृत आयु में हानि करने से संस्कृत आयु होती है।

हानि क्रिया

(१) चक्रार्द्ध हानि—चंद्र की दशम स्थान में होने से $\frac{१}{६}$ हानि होगी।

	व.	मा.	दि.	घ.	प.	
चंद्र असंस्कृत आयु =	१५	९	२८	९	३५	÷ ६
हानि = $\frac{१}{६}$ =	२	७	१९	४१	३५	५०
शेष =	१३	२	८	२७	५९	१०

∴ चंद्र की हानि कृत शेष आयु

वर्ष—मा. दि. घ. प.

१३ २ ८ २७ ५९ = चंद्र की संस्कृत आयु

(२) बुध शत्रु क्षेत्री होने से $\frac{१}{३}$ हानि होगी।

	व.	मा.	दि.	घ.	प.	
बुध असंस्कृत आयु =	९	११	६	७	०	÷ ३
हानि = $\frac{१}{३}$ =	३	३	२२	२	२०	
शेष =	६	७	१४	४	४०	

∴ बुध की संस्कृत आयु = वर्ष मा. दि. घ. प.

६-७-१४-४-४०

वृद्धि = पिंडायु, निसर्गायु और जीवायु में वृद्धि नहीं होती (केवल अंशायु में वृद्धि होती है) इस से यहाँ वृद्धि का बिचार नहीं किया।

८—शिक आयु में लग्नायु साधन

(अ) लग्न की राशि छोड़कर अंशादि की कला बनाकर २०० का भाग देने से लब्धि वर्ष मास आदि में लग्नायु निकल आती है।

अंश की कला ÷ २०० = वर्षादि आयु

या अंश की विकला ÷ २००′ × ६०″ (१२०००)″

रा

जैसे लग्न ११-०°-२८′-११″

राशि छोड़ कर = ०°-२८′-११″ = १६९१″

व. मा. दि. घ. प.

१६९१″ ÷ १२००० = ०-१-२०-४३-४८

व. मा. दि. घ. प.

या २८′-११″ ÷ २०० = ०-१-२०-४३-४८

१२०००″) १६९१″ (०
× १२ वर्ष
१२०००) २०२९२ (१ मास
१२०००
८२९२ × ३०
१२०००) २४८७६० (२० दिन
२४०००
८७६०

```
८७६० × ६०
१२०००) ५२५६०० (४३ घड़ी
        ४८०००
        ४५६००
        ३६०००
        ९६००० × ६०
१२०००)५७६०००(४८
        ४८०००  पल
        ९६०००
        ९६०००
            ०
```

```
२००)२८'–११"(० वर्ष
      × १२
      २–१२
      ३३६
२००)३३८–१२(१मास
      २००
      १३८–१२
       × ३०
      ६–०
      ४१४०
      ४१४६
```

```
२००)४१४६(२० दिन
     ४००
     १४६ × ६०
२००)८७६०(४३
     ८०० घड़ी
     ७६०
     ६००
     १६० × ६०
२००)९६००(४८ पल
     ८००
     १६००
     १६००
       ०
```

यहाँ २००' का भाग विशेष रीति से दिया है

यही लग्नायु पिंड, निसर्ग और जीवायु तीनों में काम देगी। अर्थात् तीनों में पृथक् २ यही आयु रहेगी।

८ (क) दूसरी रीति

जितने लग्न के नवांश भुक्त हुए हों उतने ही आयु के वर्ष लग्न के होंगे।

१ नवांश = ३°–२०' = २००' = १ वर्ष

२००' में एक वर्ष तो इष्ट कला में कितना ?

रा

= लग्न ११–०°–२८'–११" = ०°–२८'–११" = यह पहला ही नवांश है।

$\frac{०°–२८'–११' \times १}{२००'}$ = लग्नायु व. मा. दि. घ. पल ०–१–२८–४३–४८

दूसरा उदाहरण

रा

मान लो लग्न ९–२९°–५९'४०" है = मकर के २९°–५९'–४०" इसमें ८ नवांश गत होकर नवमा नवांश उदित (वर्तमान) है।

१ नवांश = ३–२०	८ गत–नवांश में	८ नवांश	२९°–५९'–४०"
× ८	२६°–४०' गत हुए	= ८ वर्ष	२६–४०
गत = २६–४०			शेष ३–१९–४० नवम– नवांश का

२००)१९९'-४०''(०

३°-१९'-४०''
= १९९'-४०'' ÷ २००
= वर्ष. मा. दि. घ.
०-११-२९-२४
+८
= ८-११-२९-२४
लग्नायु

```
   १२
  ८-०
  २३८८
२००) २३९६ (११ मास
     २००
     ३९६
     २००
     १९६ × ३०
     ५८८०
```

```
२०० ) ५८८० ( २९ दिन
      ४००
      १८८०
      १८००
        ८० × ६०
२०० ) ४८०० ( २४ घड़ी
      ४००
      ८००
      ८००
        ०
```

८ (ख) यह लग्नायु अंशायु सारिणी से बड़ी सरलता से निकल आती है। २०० का भाग देने की अड़चन इस में मिट जाती है। जिस प्रकार अंशायु सारिणी से अंशायु निकाली जाती है उसी प्रकार उसी सारिणी से लग्नायु निकाल लेना। अध्याय २६ में यह सारिणी दी है। यहां राशि के स्थान में सदा शून्य लेना।

जैसे लग्न ११रा-०°-२८'-११''	० रा = ०अं. = मास दिन घ. प.
= ०°-२८'-११''	०-० -०- ०
मा. दि. घ. प.	२८' = १-२०-२४-०
= लग्नायु १-२०-४३-४८	११'' = ०-१९-४८
	१-२०-४३-४८

दूसरा उदाहरण = लग्न ९रा-२९°-५९'-४०'' = ०रा-२९°-५९'-४०''

रा०--अंश = वर्ष मा. दि. घ. प.
०-२९ = ८-८-१२
५९' = ३-१६-१२
४०'' = १-१२-०
लग्नायु = ८-११-२९-२४-०

९ संस्कृत पिंडायु

जिन ग्रहों की कोई हानि नहीं हुई उनकी असंस्कृत आयु ही संस्कृत आयु बन जाती है। शेष ग्रहों की हानि होने के उपरांत जो बचे वही संस्कृत आयु होती है। सब ग्रहों की आयु का योग करने से पिंडायु के पूर्ण वर्ष प्राप्त होते हैं।

संस्कृत पिंडायु चक्र ४

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	
सूर्य	१३–	३–	२६–	४१–	६	कोई हानि नहीं हुई।
चंद्र	१३–	२–	८–	२७–	५६	दशम स्थान में होने से $\frac{१}{६}$ हानि हुई।
मंगल	१०–	५–	२३–	०–	३०	कोई हानि नही हुई।
बुध	६–	७–	१४–	४–	४०	शत्रु क्षेत्री होने से $\frac{१}{३}$ हानि हुई।
गुरु	८–	२–	३–	४६–	०	कोई हानि नहीं हुई।
शुक्र	१६–	३–	२४–	४५–	२१	कोई हानि नहीं हुई।
शनि	११–	८–	१०–	३–	२०	कोई हानि नहीं हुई।
लग्न	०–	१–	२०–	४३–	४८	कोई हानि नहीं हुई।
योग	७९–	११–	१४–	३२–	४४	

१० पिंड दायांश पर से हानि कृत दायांश बनाकर पिंडायु साधन हानि का विचार करने से प्रगट हुआ कि केवल इन ग्रहों की हानि हुई है।

(१) बुध शत्रु क्षेत्री होने से = बुध के दायांश में $\frac{१}{३}$ हानि होगी।

(२) चंद्र दशम स्थान में होने से = चंद्र का चक्रार्द्ध गुणक है। चंद्र के पिंड दायांश में चक्रार्द्ध हानि गुणक का गुणा करना पड़ेगा। जो गुणनफल आयगा वही चंद्र का हानिकृत पिंड दायांश होगा।

अन्यमत से चंद्र के दायांश में $\frac{१}{६}$ हानि होगी।

प्रत्येक ग्रहों के पिंड दायांश चक्र २ में दे चुके हैं।

(१) बुध पिंड दायांश २९८°-०′-३५″ ÷ ३

हानि = $\frac{१}{३}$ = ९९–२०– ४०– ११ = $\frac{१}{३}$ भाग घटाया

शेष = १९०–४०– २३– २० = हानि कृत पिंड दायांश बुध का

(२) चंद्र पिंड दायांश २२७°–५५′–३५″ ÷ ६

हानि $\frac{१}{६}$ = ३७– ५९–१५– ५० $\frac{१}{६}$ भाग घटाया

शेष १८९– ५६–१९– १० = हानिकृत पिंड दायांश चंद्र का

अन्य मत से = चक्रार्द्ध हानि गुणक का चंद्र के पिंड दायांश में गुणा कर चंद्र का हानि कृत दायांश निकालेंगे।

चंद्र का चक्रार्द्ध गुणक ०–४७–३–३०–२१ है जो अंशायु साधन में निकाल चुके हैं। देखो अध्याय २६।

चंद्र का पिंड दायांश २२७°–५५′–३५″ = ३–४७–५५–३५ गुणा करने के लिये सुलभता को २२७ में ६० का भाग देकर २ भाग कर दिये जिससे गुणनफल चक्र की सहायता से गुणा कर सकें।

चक्रार्द्ध हानि गुणक ०-४७-३-३०-२१

× चंद्र का पिंड दायांश ३-४७-५५-३५-०

```
          ०  ०  ०  ०  ०
                 १२ १५
              १७ ३०
           १ ४५
        २७ २५
     ०  ०
     ─────────────────
              १६ १५
           २७ ३०
         २ ४५
      ४३ ५
    ०  ०
    ─────────────────
             १६ २७
          २३ ३०
        २ २१
     २६ ४६
   ०  ०
   ─────────────────
           १  ३
         १ ३०
       ०  ६
   २ २१
   ०
─────────────────────────
   २ ५८ ४५ ५१ २६ १८ ५७ १५  ०
```

=२-५८-४५-५१-२६

=१७८°-४५′-५१″-२६‴

अन्य मत से

चंद्र हानि कृत दायांश

१७८°-४५′-५१″२६‴

११—हानि कृत दायांश से संस्कृत आयु साधन

(१) बुध की हानि कृत दायांश = १६८°-४०′-२३″-२०‴
(२) चंद्र का ,, ,, ,, = १८६ -५६ -१६ -१०
अन्यमत से चंद्र का ,, ,, = १७८ -४५ -५१ -२८

} अन्य ग्रहों की कोई हानि न होने से वे ही दायांश रहेंगे।

इनसे संस्कृत आयु निकालते हैं।

(१) बुध संस्कृत आयु साधन

बुध वर्ष १२

रा

बुध हानि कृत दायांश १९८°–४०′–२३″–२०‴=६–१८°–४०′–२३″–२०‴

	वर्ष मा. दि. घ. प.
६ राशि = ६ × १२ = ७२ मास =	६–०–०–०–०
१८° = १८ × १२ = २१६ दिन =	७–६–०–०
४०′ = ४० × १२ = ४८० घड़ी =	८–०–०
२३″ = २३ × ४० = २७६ पल =	४–३६
२०‴ = २० × ४० = २४० विपल =	४
योग =	६–७–१४–४–४०

व. मा. दि. घ. प.

∴ बुध संस्कृत आयु ६–७–१४–४–४० यह पूर्व साधित संस्कृतायु के अनुसार ही आया।

(२) चंद्र संस्कृत आयु साधन

चंद्र वर्ष २५ रा

हानि कृत दायांश १८९°–५६′–१९″–१०‴ = ६–९–°५६′–१९″–१०‴

	वर्ष मा. दि. घ. प.
६ रा० = ६ × २५ = १५० मास =	१२–६–०–०–०
९° = ९ × २५ = २२५ दिन =	७–१५–०–०
५६′ = ५६ × २५ = १४०० घड़ी =	२३–२०–०
१९″ = १९ × २५ = ४७५ पल =	७–५५
१०‴ = १० × २५ = २५० विपल =	४–१०
योग	१३–२–८–२७–५९–१०

वर्ष मा· दि. घ. प. वि.

∴ चंद्र की संस्कृत आयु १३–२–८–२७–५९–१० = पूर्ववत संस्कृत आयु

१२ अन्य मत से चंद्र की संस्कृत आयु साधन रा

चंद्र वर्ष २५, हानि कृत चंद्र दायांश १७८°-४५′-५१″-२९=५-२८°-४५′-५१″-२९

		वर्ष मा. दिन घ. प.
५ रा० = ५ × २५ = १२५	मास =	१०–५–०–०–०
२८° = २८ × २५ = ७००	दिन =	२३–१०–०–०
४५′ = ४५ × २५ = ११२५	घड़ी =	१८–४५–०
५१″ = ५१ × २५ = ११७५	पल =	२१–१५
२९‴ = २९ × २५ = ७२५	विपल =	१२–५
		योग १२–४–२९–६–२७–५

∴ चंद्र की संस्कृत आयु अन्य मत से
वर्ष मा. दि. घ. प. वि.
१२–४–२९–६–२७–५

चक्रार्द्ध हानि गुणक से पिंड दायांश में गुणा कर हानि कृत दायांश बनाने पर जो हानि कृत दायांश से आयु निकाली जाती है उस में कुछ अंतर पड़ जाता है।

अन्य मत से चक्रार्द्ध हानि गुणक द्वारा प्राप्त हानि कृत दायांश व संस्कृत आयु

हानि कृत दायांश चक्र ५

ग्रह	हानि कृत दायांश
सूर्य	२५२°–३६′–५४″–०‴
चंद्र	१७८–४५–५१–२९
मंगल	२५१–३२– २– ०
बुध	१९८–४०–२३–२०
गुरु	१९६–१५– ४– ०
शुक्र	२७९–४५– १– ०
शनि	२१०–३०–१०– ०

चक्र ५ में चंद्र, बुध को छोड़ कर शेष सब ग्रहों का दायांश चक्र २ के समान है।

संस्कृत आयु चक्र ६

ग्रह	वर्ष मास दिन घड़ी पल विपल
सूर्य	१३–३–२९–४१– ६–०
चंद्र	१२–४–२९– ६–२७–५
मंगल	१०–५–२३– ०–२०–०
बुध	६–७–१४– ४–४०–०
गुरु	८–२– ३–४६–० –०
शुक्र	१६–३–२४–४५–२१–०
शनि	११–८–१०– ३–२०–०
लग्न	०–१–२०–४३–४८–०
योग	७९–२– ५–११–१२–५

यहाँ चक्र ६ में केवल चंद्र को छोड़ कर शेष सब ग्रहों की संस्कृत आयु चक्र ४ के समान है।

निसर्ग आयु (नैसर्गिक आयु) साधन

इस में आयु साधन की सम्पूर्ण क्रिया पिंडायु साधन के समान है। केवल अंतर यही है कि पिंडायु साधन में पिंडायु वर्ष से गुणा करना पड़ता है यहां निसर्गायु वर्ष से गुणा करना पड़ता है।

पिंडायु साधन के पहिले जो पिंडदायांश बनाने को उच्चान्तर निकाला था उसी उच्चान्तर या पिंडदायांश में निसर्गायु का गुणा करने से निसर्गायु के असंस्कृत वर्ष निकलने हैं। निसर्गायु वर्ष नीचे दिये हैं।

पिंडायु साधन की जितनी रीतियां पहिले बता चुके हैं उन में से किसी भी एक रीति से नैसर्गिक आयु निकाली जा सकती है। परन्तु सुगमता के लिये अंत में बताई हुई रीति से हो आगे नैसर्गिक आयु साधन करेंगे।

उच्चांतर और पिंड दायांश चक्र १ से

और निसर्गायु वर्ष चक्र ९

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल
	रा.	रा.	रा.
उच्चांतर	८-१२°-३६'-५४"	७-१७°-५५'-३५"	८-११°-३२'-२"
पिंड दायांश	२५२°-३६'-५४"	२२७°-५५'-३५"	२५१°-३२'-२"
निसर्गायु गुणक वर्ष	२०	१	२

बुध	गुरु	शुक्र	शनि
रा.	रा.	रा.	रा.
९-२८°-०'-३५"	६-१६°-१५'-४"	९-९°-४५'-१"	७-०°-३०'-१०"
२९८°-०'-३५"	१९६°-१५'-४"	२७९°-४५'-१"	२१०°-३०'-१०"
९	१८	२०	५०

रीति—दायांश की राशि अंश आदि बनाकर लेना या उच्चान्तर लेना जहाँ उच्चांत ६ से अल्प हो वहाँ शोधित उच्चान्तर लेना। उपरांत उस में ग्रह वर्ष से नीचे बतायी रीति से गुणा करना।

राशि × ग्रह वर्ष = मास
अंश × ,, = दिन
कला × ,, = घड़ी
बिकला × ,, = पल
प्रति विकला × ,, = बिपल

इस प्रकार प्राप्त आयु का योग करने से असंस्कृत आयु प्राप्त होती है। असंस्कृत आयु में पिंडायु के समान हानि करने से संस्कृत आयु होती है। इस में लग्नायु वही रहेगी जो पिंडायु में दी है।

१ निसर्गायु साधन का उदाहरण

(१) सूर्य निसर्गायु साधन

रा.

सूर्य का उच्चांतर ८-१२°-३६'-५४" निसर्गायु वर्ष २०

∴ सूर्य की असंस्कृत आयु

	वर्ष मा. दि. घ. प.	वर्ष मा. दि. घ. प.
८ राशि=८ × २०=१६० मास=	= १३ -४ -० -० -०	१४- ० -१२ -१८ -०
१२°=१२ × २०=२४० दिन =	८ - ० -० -०	
३६′=३६ × २०=७२० घड़ी =	१२-० -०	
५४″=५४ × २०=१०८०पल=	१८ -०	
योग=	१४- ० -१२-१८-०	

(२) चंद्र निसर्गायु साधन

रा

चंद्र का शोधित उच्चांतर = ७–१७°–५५′–३५″ वर्ष १ ∴ सूर्य की असंस्कृत आयु

	वर्ष–मा.–दि.–घ.–प.	वर्ष–मा.–दि.–घ.–प.
७राशि = ७ × १ = ७ मास =	०– ७– ०– ०– ०	०–७– १७–५५–३५
१७° = १७ × १ = १७ दिन =	१७–०– ०	
५५′ = ५५ × १ = ५५घड़ी =	५५–०	
३५″ = ३५ × १ = ३५पल =	३५	
योग =	०–७–१७–५५–३५	

(३) मंगल निसर्गायु साधन

रा

मंगल का उच्चांतर = ८–११°–३२′–२″ = वर्ष २ ∴ मंगल की असंस्कृत आयु

	वर्ष. मा. दि. घ. प.	व. मा. दि. घ. प.
८ राशि = ८ × २ = १६ मास =	१– ४– ०– ०–०	
११° = ११ × २ = २२ दिन =	२२– ०–०	१–४–२३–४–४
३२′ = ३२ × २ = ६४ घड़ी =	१– ४–०	
२″ = २ × २ = ४ पल =	४	
योग =	१–४–२३–४–४	

(४) बुध निसर्गायु साधन

रा

बुध का शोधित उच्चांतर ९–२८°–०′–३५″ वर्ष ९ ∴ बुध की असंस्कृत आयु

	व. मा. दि. घ. प.	व. मा. दि. घ. प.
९ राशि = ९ × ९ = ८१ मास =	६–९– ०– ०–०	
२८° = २८ × ९ = २५२ दिन =	८–१२– ०–०	७–५–१२–५–१५
०′ = ० × ९ = ० घड़ी =	०–०	
३५″ = ३५ × ९ = ३१५ पल =	५–१५	
योग =	७–५–१२–५–१५	

(५) गुरु निसर्गायु साधन

रा

गुरु का उच्चांतर ६–१६°–१५′–४″ वर्ष १८

व. मा. दि. घ. प.

६ राशि = ६ × १८ = १०८ मास = ९–०–०– ०–०

१६° = १६ × १८ = २८८ दिन = ९–१८–०–०

१५′ = १५ × १८ = २७० घड़ी = ४–३०–०

४′ = ४ × १८ = ७२ पल = १–१२

योग = ९–९–२२–३१–१२

∴ गुरु को असंस्कृत आयु

व. मा. दि. घ. प.

९–९–२२–३१–१२

(६) शुक्र निसर्गायु साधन

रा

शुक्र का उच्चांतर ९–९°–४५′–१″ वर्ष २०

व. मा. दि. घ. प.

९ रा० = ९ × २० = १८० मास = १५–०–०–०

९° = ९ × २० = १८० दिन = ६–०–०–०

४५′ = ४५ × २० = ९०० घड़ी = १५–०–०

१″ = १ × २० = २० पल = २०

योग = १५–६–१५–०–२०

∴ शुक्र की असंस्कृत आयु

व. मा. दि. घ. प.

१५–६–१५–०–२०

(७) शनि असंस्कृत निसर्गायु साधन

रा

शनि का शोधित उच्चांतर = ७–०°–३०′–१०″ वर्ष ५०

व. मा. दि. घ. प.

७ रा० = ७ × ५० = ३५० मास = २९–२–०–०–०

०° = ० × ५० = ० दिन = ०–०–०

३०′ = ३० × ५० = १५०० घड़ी = २५–०–०

१०″ = १० × ५० = ५०० पल = ८-२०

योग = २९-२-२५-८-२०

∴ शनि की असंस्कृत आयु

व. मा. दि. घ. प.

२९–२–२५–८–२०

२ असंस्कृत निसर्गायु चक्र ८

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल
सूर्य	१४	०	१२	१८	०
चंद्र	०	७	१७	५५	३५
मंगल	१	४	२३	४	४
बुध	७	५	१२	५	१५
गुरु	६	६	२२	३१	१२
शुक्र	१५	६	१५	०	२०
शनि	२९	२	२५	८	२०

इसमें पिंडायु के अनुसार ही हानि होगी: अर्थात्

(१) दशम में चंद्र गुरु हैं इनमें चंद्र बली होने से चंद्र की केवल $\frac{1}{6}$ हानि होगी।

(२) बुध के शत्रु क्षेत्री होने से $\frac{1}{3}$ हानि होगी।

(३) नीच आदि या लग्न में कोई पाप ग्रह न होने से और कोई हानि नहीं होगी।

३ नैसर्गिक असंस्कृत आयु में हानि क्रिया

चंद्र दशम भाव में गुरु के साथ है। दोनों में चंद्र बली होने के कारण केवल चंद्र की चक्र पात हानि $\frac{1}{6}$ होगी।

व. मा. दि. घ. प.

चद्र आयु ०–७–१७–५५–३५ ÷ ६

हानि = $\frac{1}{6}$ = ०–१–७–५९–१५–५० घटाया

शेष ०–६–९–५६–१९–१०

∴ चंद्र की संस्कृत आयु

व. मा. दि. घ. प.

०– ५ –९–५६–२०

बुध शत्रु ग्रही होने से उसको आयु के $\frac{1}{3}$ भाग की हानि हुई।

व. मा. दि. घ. प.

बुध आयु ७–५–१२–५–१५ ÷ ३

हानि = $\frac{1}{3}$ = २–५–२४–१–४५ घटाया

शेष = ४– ११–१८–३–३०

∴ बुध की संस्कृत आयु

व. मा. दि. घ. प.

४–११–१८–३–३०

शेष ग्रहों को कोई हानि नहीं होगी

४ संस्कृत नैसर्गिक आयु चक्र ९

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घ.	प.	वि.
सूर्य	१४	०	१२	१८	०	०
चंद्र	०	६	९	५६	१९	१०
मंगल	१	४	२३	४	४	०
बुध	४	११	१८	३	३०	०
गुरु	९	९	२२	३१	१२	०
शुक्र	१५	६	१५	०	२०	०
शनि	२९	२	२५	८	२०	०
लग्न	०	१	२०	४३	४८	०
योग	७५	७	२६	४५	३३	१०

जिन ग्रहों की कोई हानि नहीं हुई उनकी असंस्कृत आयु ही संस्कृत आयु हो जाती है। जिनकी हानि हुई है उनकी हानि होने के उपरांत जो आयु बचे वह संस्कृत आयु होती है।

इसमें लग्न को आयु वही ली जायगो जो पिंडायु में ली गई थी क्योंकि तीनों प्रकार की आयु के लिये वही लग्नायु काम देती है।

अंत में सबका योग करने से निसर्ग आयु के वर्ष प्राप्त होंगे।

५ हानि कृत दायांश से संकृत आयु निकालना

यहां केवल चंद्र और बुध की हानि हुई है। इनका हानिकृत दायांश पिंडायु साघन १० में निकाल चुके हैं।

(१) बुध का $\frac{1}{3}$ हानिकृत पिंड दायांश = १९८°–४०′–२३″–२०′′′ है
= ६रा–१८°–४०′–२३″–२०‴

(२) चंद्र का $\frac{1}{2}$ हानि कृत पिंड दायांश = १८९°–५६′–१९″–१०‴ है
= ६रा–९°–५६′–१९″–१०‴

अन्यमत से चंद्र का चक्रार्द्ध हानि गुणक से प्राप्त हानि कृत दायांश } १७८°–४५′–५१″–२८‴ है
= ५रा–२८°–४५′–५१″–२९‴

(१) बुध हानि कृत दायांश १९८°-४०′-२३″-२०‴ = ६-१८°-४०′-२३″-२०‴
बुध वर्ष ९

		व. मा. दि. घ. प. वि.	
६ रा = ६ × ९ = ५४ मास	=	४–६–० –० –० –०	बुध की संस्कृत आयु
१८° = १८ × ९ = १६२ दिन	=	५–१२–०–०– ०	व. मा. दि. घ. प.
४०′ = ४० × ९ = ३६० घड़ी	=	६–०–०– ०	४–११–१८–३-३०
२३″ = २३ × ९ = २०७ पल	=	३–२७–०	यह पूर्ववत्
२०‴ = २० × ९ = १८० विपल	=	३–०	चक्र ९ के अनुसार
	योग =	४–११–१८-३-३०-०	ही प्राप्त हुई।

रा

(२) चंद्र हानि कृत दायांश १८६°-५६'-१६''-१०''' = ६-६°-५६'-१६''-१०''' वर्ष १

व. मा. दि. घ. प. वि. चंद्र की संस्कृत आयु

६ रा. = ६ × १ = ६ मास = ०-६- ० - ० -०-० व. मा. दि. घ. प. वि.

६° = ६ × १ = ६ दिन = ६- ० -०-० ०- ६- ६-५६-१६-१०

५६' = ५६ × १ = ५६ घड़ी = ५६-०-० यह भी पूर्ववत्

१६'' = १६ × १ = १६ पल = १६-० चक्र ६ के अनुसार

१०''' = १० × १=१० विपल = १० आई।

योग ०-६-६-५६-१६-१०

अन्यमत से चंद्र संस्कृत आयु साधन

चक्रार्द्ध गुणक से प्राप्त हानि कृत दायांश १७८°-४५'-५१''-२६'''

=रा

चंद्र गुणक वर्ष १ ५-२८°-४५'-५१''-२६'''

व. मा. दि. घ. प. वि.

५रा. = ५ × १ = ५मास = ०-५- ०-०-०-०

२८° = २८ × १ = २८दिन = २८-०-०-०

४५' = ४५ × १ = ४५घड़ी = ४५-०-०

५१'' = ५१ × १ = ५१पल = ५१-०

२६=''' = २६ × १ = २६विपल = २६

योग = ०-५-२८-४५-५१-२६

∴चंद्र की संस्कृत आयु जो चक्रार्द्ध गुणक के सहारे चक्रार्द्ध हानि कृत दायांश से प्राप्त हुई। व. मा. दि. घ. प. वि.

०- ५-२८-४५-५१-२६

अन्य मत से चक्रार्द्ध हानि गुणक द्वारा प्राप्त

हानि कृत दायांश व संस्कृत आयु

हानिकृत दायांश चक्र ५

ग्रह	हानि कृत दायांश
सूर्य	२५२°-३६'-५४''-०'''
चंद्र	१७८- ४५- ५१ -२६
मंगल	२५१-३२- २- ०
बुध	१६८-४०- २३- २०
गुरु	१६६-१५- ४- ०
शुक्र	२७६-४५- १- ०
शनि	२१०-३०-१०- ०

संस्कृत निसर्गायु चक्र १०

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल	वि०
सूर्य	१४	०	१२	१८	०	०
चंद्र	०	५	२८	४५	५१	२६
मंगल	१	४	२३	४	४	०
बुध	४	११	१८	३	३०	०
गुरु	६	६	२२	३१	१२	०
शुक्र	१५	६	१५	०	२०	०
शनि	२६	२	२५	८	२०	०
लग्न	०	१	२०	४३	४८	०
योग	७५	७	१५	३५	५	२६

इस में चंद्र को छोड़कर शेष ग्रहों की संस्कृत आयु चक्र ६ के ही समान है। चक्रार्द्ध गुणक के कारण चंद्र की आयु में कुछ अंतर पड़ गया है।

जीवायु साधन

जीव शर्मा ने जो आयुर्दाय साधन करना बताया है उसे जीवायु कहते हैं। जीवायु में मनुष्य की पूर्णायु १२० वर्ष ५दिन की मानकर ७ ग्रहों में यह आयु बराबर -बराबर बाँट दी गयी है। इस प्रकार प्रत्येक ग्रह की पूर्णायु $\frac{\text{१२०वर्ष ५दिन}}{\text{७}}$ =

व. मा. दि. घ. प.
१७–१–२२–८–३४$\frac{३}{७}$ निकलती है।

जीवायु साधन करने के लिये पहिले उच्चांतर या दायांश चाहिए। जैसा पिंडायु और निसर्गायु में उपयोग किया था वही उच्चांतर या पिंड दायांश यहाँ लेना। यदि यह उच्चांतर ६ राशि से कम हो तो १२ से घटाकर शोधित उच्चांतर पूर्ववत् लेना चाहिए।

उच्चांतर से दायांश बनता है। उच्चांतर और पिंड दायांश, पिंडायु साधन करने के पूर्व निकाल चुके हैं। देखो चक्र १। यहाँ उपयोग के लिये वहाँ उच्चांतर और पिंड दायांश नीचे उद्धृत करते हैं।

उच्चांतर और पिंड दायांश चक्र १

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल
	रा.	रा.	रा.
उच्चांतर	८–१२°–३६′–५४″	७–१७°–५५′–३५″	८–११°–३२′–२″
पिंड दायांश	२५२°–३६′–५४″	२२७°–५५′–३५″	२५१°–३२′–२″

बुध	गुरु	शुक्र	शनि
रा.	रा.	रा.	रा.
९–२८°–०′–३५″	६–१६°–१५′–४″	९–९°–४१′–१″	७–०°–३०′–१०″
२९८°–०′–३५″	१९६°–१५′–४″	२७९°–४५′–१″	२१०°–३०′–१०″

इसी उच्चांतर या पिंड दायांश पर से जीवायु साधन की जाती है।

(१) जीवायु साधन करने की पहिली रीति

३६० अंश एक भगण(१२ राशि) में होते हैं। ग्रह की पूर्णायु ३६०°में $\frac{\text{१२०वर्ष ५दिन}}{७}$ है तो इष्ट दायांश में कितनी होगी ? यह निकालने को

$$\frac{\text{१२०वर्ष-५दिन}}{७} \times \frac{\text{दायांश}}{३६०} = \frac{(\text{१२०वर्ष} \times \text{दायांश})}{७ \times ३६०}\text{वर्ष} + \frac{\text{५दिन} \times \text{६०घड़ी}}{७} \times \frac{\text{दायांश}}{३६०}\text{घड़ी}$$

$$= \left(\frac{१ \times \text{दायांश}}{७ \times ३}\text{वर्ष}\right) + \left(\frac{५ \times \text{दायांश}}{७ \times ६}\text{घड़ी}\right) = \frac{\text{दायांश}}{२१}\text{वर्ष} + \frac{\text{दायांश} \times ५}{४२}\text{घड़ी} = \text{ग्रहायु}$$

इस कारण दायांश में २१ का भाग देने से जो वर्ष मास आदि प्राप्त हों उस में दायांश में ५ का गुणा कर ४२ का भाग देने से जो घड़ी पल प्राप्त हो उसे और जोड़ देना। इस प्रकार जोड़ने से उस ग्रह की जीवायु निकल आयगी। ध्यान रहे यहाँ २१ का भाग विशेष रीति से देना चाहिए।

(२) जीवायु साधन की दूसरी रीति

$$\underset{१२०}{\text{वर्ष}} + \underset{५}{\text{दिन}} = \underset{१२०}{\text{वर्ष}} + \frac{५}{३० \text{ मास} \times \text{१२वर्ष}} = १२० + \frac{५}{३६०} = १२०\frac{१}{७२}\text{वर्ष}$$

$$= \frac{८६४१}{७२}\text{वर्ष} \text{। प्रत्येक ग्रह कीआयु} = \frac{८६४१}{७२ \times ७} = \frac{८६४१}{५०४} = \underset{\text{१७-१-२२-८-३४}\frac{२}{७}}{\text{व. मा. दि. घ. प.}}$$

$$\therefore \frac{\text{दायांश} \times ८६४१}{५०४} = \text{ग्रह की असंस्कृत आयु ।}$$

व. मा. दि. घ. प.

प्रत्येक ग्रह उच्च में १७-१-२२-८-३४$\frac{२}{७}$ आयु पाता है } बीच की आयु अनुपात से
,, निच्च में $\frac{१}{२}$= ८-६-२६-४-१७$\frac{१}{७}$ } निकलती है।

(३) जीवायु साधन करने की तीसरी रीति

उपरोक्त रीतियों में गुणा भाग करने में कुछ समय लगता है इस कारण सुविधा के लिये एक सारिणी बना ली है, जिसके द्वारा प्रत्येक ग्रह की जीवायु सरलता से निकल आती है। यह सारिणी आगे दी है।

सारिणी बनाने की युक्ति

वर्ष मा. दि. घ. प. वि.

उच्च वर्ष १२ राशि में १७-१-२२-८-३४-१७ १/७

∴ ६ राशि में १/२=८-६-२६-४-१७- ८ ४/७

∴ १ राशि में १/१२=१-५-४-२०-४२-५१ ३/७

व. मा. दि. घ. प. वि.

१ अंश में=०-०-१७-८-४१-२५ ५/७

१ कला में ०-१७-८-४१ ३/७

१ विकला में=०-०- ०- ०-१७-८-४१ ३/७

१ राशि की आयु के वर्ष में १-१ राशि के वर्ष जोड़ते जाने से १२ राशि के वर्ष बन गये। एक अंश के वर्ष में एक अंश के वर्ष जोड़कर ३० अंश तक के वर्ष बना लिये और एक कला की आयु में एक २ कला की आयु जोड़ कर ६० कला तक की आयु निकाल ली है। एक विकला की आयु में एक २ विकला की आयु जोड़ कर ६० विकला तक की आयु निकाल ली है। इस प्रकार जीवायु की पूरी सारिणी बन गई है। इस में कला और विकला की एक ही सारिणी बना लेने से काम चल जाता है। कला की आयु दिन में आयगी तो विकला की उतनी ही घड़ी में और प्रति विकला की पल में आयु समझना।

जीवायु साधन सारिणी

१ राशि के जीवायु वर्ष							राशि के जीवायु वर्ष						
राशि=अंश	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल	विपल	राशि=अंश	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल	विपल
१=३०	१	५	४	२०	४२	५१ ३/७	७=२१०	१०	०	०	२५	०	०
२ ६०	२	१०	८	४१	२५	४२ ६/७	८ २४०	११	५	४	४५	४२	५१ ३/७
३ ९०	४	३	१३	२	८	३४ २/७	९ २७०	१२	१०	९	६	२५	४२ ६/७
४ १२०	५	८	१७	२२	५१	२५ ५/७	१० ३००	१४	३	१३	२७	८	३४ २/७
५ १५०	७	१	२१	४३	३४	१७ १/७	११ ३३०	१५	८	१७	४७	५१	२५ ५/७
६ १८०	८	६	२६	४	१७	८ ४/७	१२ ३६०	१७	१	२२	८	३४	१७ १/७

२ अंश के जीवायु वर्ष

अंश	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल	विपल
१	०	०	१७	८	४१	२५ ५/७
२	०	१	४	१७	२२	५१ ३/७
३	०	१	२१	२६	४	१७ १/७
४	०	२	८	३४	४५	४२ ६/७
५	०	२	२५	४३	२७	८ ४/७
६	०	३	१२	५२	८	३४ २/७
७	०	४	०	०	५०	०
८	०	४	१७	९	३१	२५ ५/७
९	०	५	४	१८	१२	५१ ३/७
१०	०	५	२१	२६	५४	१७ १/७
११	०	६	८	३५	३५	४२ ६/७
१२	०	६	२५	४४	१७	८ ४/७
१३	०	७	१२	५२	५८	३४ २/७
१४	०	८	०	१	४०	०
१५	०	८	१७	१०	२१	२५ ५/७
१६	०	९	४	१९	२	५१ ३/७
१७	०	९	२१	२७	४४	१७ १/७
१८	०	१०	८	३६	२५	४२ ६/७
१९	०	१०	२५	४५	७	८ ४/७
२०	०	१०	१२	५३	४८	३४ २/७
२१	१	०	०	२	३०	०
२२	१	०	१७	११	११	२५ ५/७
२३	१	१	४	१९	५२	५१ ३/७
२४	१	१	२१	२८	३४	१७ १/७
२५	१	२	८	३७	१५	४२ ६/७
२६	१	२	२५	४५	५७	८ ४/७
२७	१	३	१२	५४	३८	३४ २/७
२८	१	४	०	३	२०	०
२९	१	४	१७	१२	१	२५ ५/७
३०	१	५	४	२०	४२	५१ ३/७

३ कला विकला आदि के जीवायु दिन आदि

कला विकला प्रति विकला	दिन घड़ी पल विपल घड़ी पल विपल अनु० पल वि० अनु०				कला विकला प्रतिविकला	दिन घड़ी पल विपल घड़ी पल वि० अनु० पल वि० अनु०			
१	०	१७	८	४१ ३/७	३१	८	१५	२९	२४ २/७
२	०	३४	१७	२२ ६/७	३२	९	८	८३	५ ५/७
३	०	५१	२६	४ २/७	३३	९	२५	४६	४७ १/७
४	१	८	३४	४५ ५/७	३४	९	४२	५५	२८ ४/७
५	१	२५	४३	२७ १/७	३५	१०	०	४	१०
६	१	४२	५२	८ ४/७	३६	१०	१७	१२	५१ ३/७
७	२	०	०	५०	३७	१०	३४	२१	३२ ६/७
८	२	१७	९	३१ ३/७	३८	१०	५१	३०	१४ २/७
९	२	३४	१८	१२ ६/७	३९	११	८	३८	५५ २/७
१०	२	५१	२६	५४ २/७	४०	११	२५	४७	३७ १/७
११	३	८	३५	३५ ५/७	४१	११	४२	५६	१८ ४/७
१२	३	२५	४४	१७ १/७	४२	१२	०	५	०
१३	३	४२	५२	५८ ४/७	४३	१२	१७	१३	४१ ३/७
१४	४	०	१	४०	४४	१२	३४	२२	२२ ६/७
१५	४	१७	१०	१२ ३/७	४५	१२	५१	३१	४ २/७
१६	४	३४	१९	२ ६/७	४६	१३	८	३९	४५ ५/७
१७	४	५१	२७	४४ २/७	४७	१३	२५	४८	२७ १/७
१८	५	८	३६	२५ ५/७	४८	१३	४२	५७	८ ४/७
१९	५	२५	४५	७ १/७	४९	१४	०	५	५०
२०	५	४२	५३	४८ ४/७	५०	१४	१७	१४	३१ ३/७
२१	६	०	२	३०	५१	१४	३४	२३	१२ ६/७
२२	६	१७	११	११ ३/७	५२	१४	५१	३१	५४ २/७
२३	६	३४	१९	५२ ६/७	५३	१५	८	४०	३५ ५/७
२४	६	५१	२८	३४ २/७	५४	१५	२५	४९	१७ १/७
२५	७	८	३७	१५ ५/७	५५	१५	४२	५७	५८ ४/७
२६	७	२५	४५	५७ १/७	५६	१६	०	६	४०
२७	७	४२	५४	३८ ४/७	५७	१६	१७	१५	२१ ३/७
२८	८	०	३	२०	५८	१६	३४	२४	२ ६/७
२९	८	१७	१२	१ ३/७	५९	१६	५१	३२	४४ २/७
३०	८	३४	२०	४२ ६/७	६०	१७	८	४१	२५ ५/७

विकला प्रति विकला की आयु

कला की जीवायु सारिणी से ही विकला और प्रति विकला की भी आयु निकती है। कला के लिये दिनादि दिया है विकला के लिये १ जाति कम अर्थात् दिनादि के स्थान में घड़ी आदि और प्रति विकला में पल आदि लेना। जैसे

कला में = दिन, घटी, पल, विपल

विकला में = घटी, पल, विपल, अनुपल

प्रति विकला में = पल, विपल, अनुपल आदि में आयु मिलेगी।

यदि सारिणी के और भी सूक्ष्म अंक लेने हैं अर्थात् विपल के आगे भी अंक लेने हैं तो सारिणी के अंक विपल के आगे जो अंक बटे में दिये हैं उनकी प्रति विकला आदि इस प्रकार बना लेना।

विपल =	१/७	२/७	३/७	४/७	५/७	६/७
अनुपल =	८ ४/७	१७ १/७	२५ ५/७	३४ २/७	४२ ६/७	५१ ३/७

जैसे १/७ विपल = ८ ४/७ अनुपल के है। ६/७ विपल = ५१ ३/७ अनुपल के है इत्यादि। यदि यह छोड़ भी दिया जाय तो केवल १–२ विपल का अंतर सब आयु योग में कमी पड़ जाता है इस कारण इसे छोड़ देने में कोई हानि नहीं है।

गणित से जीवायु साधन करने का उदाहरण

(१) जीवायु साधन की पहली रीति

$$\frac{\text{दायांश}}{२१}\text{वर्ष} + \frac{\text{दायांश} \times ५}{४२} = \text{जीवायु}$$

सूर्य की जीवायु साधन सूर्य दायांश २५२°–३६′–५४″ है

$$\frac{(\text{दायांश } २५२^\circ–३६'–५४'')}{२१}\text{वर्ष} + \frac{(\text{दायांश } २५२–३६–५४) \times ५}{४२}\text{ घड़ी}$$

$$= \frac{२५२^\circ–३६'–५४''}{२१}\text{वर्ष} + \frac{१२६३–४–३०}{४२}\text{ घड़ी}$$

व. मा. दि. घ. प.   घ. पल

= (१२–०–१०–३२–३४) + (३०–४)

व. मा. दि. घ. प.

= १२-०-११-२-३८

सूर्य की असंस्कृत जीवायु

```
      २५२-३६-५४
            × ५
४२)१२६३-४-३०(३० घड़ी
   १२६०
   ३ × ६०
   १८० + ४
४२)१८४(४ पल
   १६८
     १६
```

२१)२५२°–३६′–५४″ (१२ वर्ष
२१
४२
४२
०-३६-५४
×१२
१०-४८
७-१२
२१) ७-२२-४८ (० मास

०
७-२२-४८
×३०
२४-०
११-०
२१०
२१) २२१-२४-० (१० दिन
२१०
११-२४
×६०
२४-०
६६०
२१) ६८४ (३२ घड़ी
६३
५४
४२
१२×६०
२१) ७२० (३४ पल
६३
९०
८४
६

(२) जीवायु साधन की दूसरी रीति

दायांश × ८६४१ / ५०४ = जीवायु

सूर्य दायांश २५२°–३६′–५४″
× ८६४१

१७२८२	५१८४६	३४५६४
४३२०५	२५९२३	४३२०५
१७२८२		
२१७७५३२	३११०७६	४६६६१४ ÷ ६०
+ ५३१४	+ ७७७६	शेष ५४
२१८२८४६	३१८८५२	

= २१८२८४६°–१२′–५४″ ÷ ५०४

दिन घ. पल
= ४३३१–२–३८

मास दिन घ. प.
= १४४–११–२–३८

= वर्ष मा. दि. घ. प.
१२–०–११–२–३८

सूर्य की असंस्कृत आयु

५०४) २१८२८४६-१२-५४ (४३३१ दिन

२०१६
१६६८
१५१२
१५६४
१५१२
५२६
५०४
२२

२२ × ६०
१३२०+१२
५०४) १३३२ (२ घड़ी
१००८
३२४ × ६०
१६४४०
+५४
५०४)१६४६४ (३८ पल
१५२०
४२६४
४०३२
२६२

३०) ४३३१ (१४४ मास
३०
१३३
१२०
१३१
१२०
११ दिन

इन दोनों रीति से गणित करने में समय लगता है इस कारण सारिणी से ग्रह की आयु निकाल लेना चाहिए क्यों कि सारिणी से आयु निकालना सरल है। आगे सारिणी द्वारा जीवायु निकालने की रीति दी है।

सारिणी से आयु निकालने की रीति

उच्चांत की राशि अंक कला विकला-लेना फिर सारिणी में दिये हुए राशि के वर्ष आदि लेकर उसमें अंश कला विकला की पृथक् २ आयु सारिणी के अनुसार निकाल कर जोड़ डालना तो जीवायु के वर्ष मास आदि निकल आयेंगे।

(३) इसी सारिणी से सब ग्रहों की जीवायु निकालते हैं

(१) सूर्य का उच्चांतर ८-१२°-३६′-५४″ (रा)

व. मा. दि॰ घ. प. वि.

८ रा.=११-५- ४-४५-४२-५१

१२° = ०-६-२५-४४-१७- ८

३६′ = १०-१७-१२-५१

५४″ = १५-२५-४६-१७

योग=१२-०-११- २-३८-३६-१७

∴ सूर्य की असंस्कृत आयु

व मा. दि. घ. प. वि.

१२-०-११-२-३८-३६

(२) चंद्र का उच्चांतर ७-१७°-५५′-३५″ (रा)

७ राशि= वर्ष मा. दि. घ. प. वि.

१०-०-०-२५-०-०

१७°= ०-६-२१-२७-४४-१७

५५′= १५-४२-५७-५८

३५″= १०- ०- ४-१०

योग =१०-१०-७-४५-४२-१६-१०

∴ चंद्र की असंस्कृत आयु

व. मा. दि घ. प. वि.

१०-१०-७-४५-४२-१६

रा

(३) मंगल का उच्चांतर ८-११°-३२′-२″

८ रा.= व. मा. दि. घ. प. वि.

११–५–४–४५–४२–५१

११°= ०–६–८–३५–३५–४२

३२′= ६– ८–३८– ५

२″= ०–३४–१७–२२

योग=११–११–२२–३०–३०–५५–२२

∴ मंगल की असंस्कृत आयु

व. मा. दि. घ. प. वि.

११–११–२२–३०–३०–५५

रा

(४) बुध का उच्चांतर ६–२८°–०′–३५″

६ रा.= व. मा. दि. घ. प. वि.

= १२–१०–६–६–२५–४२

२८°= १– ४–०–३–२०– ०

०′= ०–०– ०– ०

३५′= १०– ०– ४

योग= १४–२–६–१६–४५–४६

∴ बुध की असंस्कृत आयु

व. मा. दि. घ. प. वि.

१४–२–६–१६–४५–४६

रा

(५) गुरु का उच्चांतर ६–१६°–१५′–४″

व. मा. दि. घ. प. वि.

६ रा.= ८–६–२६– ४–१७– ८

१६°= ०–६– ४–१६– २–५१

१५′= ४–१७–१०–२१

४″= १– ८–३४–४५

योग= ६–४– ४–४१–३८–५४–४५

= गुरु की असंस्कृत आयु

व. मा. दि. घ. प. वि.

६–४–४–४१–३८–५४

रा

(६) शुक्र का उच्चांतर ६–६°–४५′–१″

व. मा. दि. घ. प. वि.

६ रा.= २–१०– ६– ६–२५–४२

६°= ०– ५– ४–१८–१२–५१

४५′= १२–५१–३१– ४

१″= ०–१७– ८–४१

योग= १३–३–२६–१६–२६–४५–४१

∴ शुक्र की असंस्कृत आयु

व. मा. दि. घ. प. वि.

१३–३–२६–१६–२६–४५

रा.

(७) शनि का उच्चांतर ७-०°-३०′-१०″

व. मा. दि. घ. प. वि.

७ राशि = १०–० – ०–२५–०–०

०°= ० – ० – ०– ०–०–०

३०′= ८–३४-२०-४२

१०″= २-५१-२६-५४

योग = १०– ०– ६–२–१२–८–५४

∴ शनि की असंस्कृत आयु

व. मा. दि. घ. प. वि.

१०–० –६– २–१२–८

४ ग्रहों की असंस्कृत जीवायु चक्र ११

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल	बिपल
सूर्य	१२	०	११	२	३८	३६
चंद्र	१०	१०	७	४५	४२	१६
मंगल	११	११	२२	३०	३०	५५
बुध	१४	२	६	१६	४५	४६
गुरु	६	४	४	४१	३८	५४
शुक्र	१३	३	२६	१६	२६	४५
शनि	१०	०	६	२	१२	८

५ संस्कृत आयु बनाने को हानि क्रिया

इस में भी पिंडायु के अनुसार ही असंस्कृत आयु में हानि होगी। अर्थात् दशम स्थान में चंद्र गुरु में से चंद्र बली होने से चंद्र को आयु का ½ घटेगा। बुध शत्रु क्षेत्री होने से बुध की ⅓ आयु घटेगी। और किन्हीं ग्रहों की हानि नहीं होगी।

हानि

	व. मा. दि. घ. प. वि.
चंद्र =	१०-१० - ७-४५-५२-१९ ÷ ६
-हानि=½=	१- ९-२१-१७-३७- ३-१० घ.
शेष =	९- ०-१६-२८- ५-१५-२०

∴ चंद्र की संस्कृत आयु

व. मा. दि. घ. प. वि.

९- ०- १६-२८ -१-१५

	व. मा. दि. घ. प. वि.
बुध =	१४-२ - ९ -१९-४५-४६ ÷ ३
हानि⅓=	४- ८-२३- ६-३५-१५-३० घ०
शेष =	९- ५-१६-१३-१०-३०-३०

∴ बुध की संस्कृत आयु

व. मा. दि. घ. प. वि.

९- ५ -१६ -१३-१०-३०

जिन ग्रहों की हानि नहीं हुई उनकी असंस्कृत आयु ही संस्कृत जीवायु हो जायगी। इस में लग्नायु वही रहेगी जो पिंडायु में ली गयी थी इन सब आयु का योग जीवायु होगा।

६ संस्कृत जीवायु चक्र १२

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल	बि०
सूर्य	१२	०	११	२	३८	३९
चंद्र	९	०	१६	२८	५	१५
मंगल	११	११	२२	३०	३०	५५
बुध	९	५	१६	१३	१०	३०
गुरु	९	४	४	४१	३८	५४
शुक्र	१३	३	२६	१६	२६	४५
शनि	१०	०	९	२	१२	८
लग्न	०	१	२०	४३	४८	०
योग	७५	४	६	५८	३१	८

७ हानि कृत दायांश पर से संस्कृत आयु निकालना।

यहाँ केवल चंद्र और बुध की हानि हुई है। इस कारण इनका ही हानि कृत दायांश लेंगे जो पहिले निकाल चुके हैं।

(१) वुध का $\frac{१}{३}$ हानि कृत दायांश = १९८°–४०′–२३′–२०‴ है
रा
= ६–१८°–४०′–२३″–२०‴

(२) चंद्र का $\frac{१}{२}$ हानि कृत दायांश = १८९°–५६′–१९″–१०‴ है
रा
= ६–९°–५६′–१९″–१०‴

अन्य मत से चंद्र का चक्रार्ध हानि गुणक से प्राप्त हानि कृत दायांश } = १७८°–४५′–५१″–२९‴ है
रा
= ५–२८°–४५′–५१″–२९‴

इन हानि कृत दायांश पर से इन की संस्कृत आयु निकालेंगे।

(१) वुध का $\frac{१}{३}$ हानिकृत दायांश = १९८°–४०′–२३″–२०‴ या
रा
६–१८°–४″–२३″–२०‴ है

सारिणी द्वारा इनके वर्ष निकाले

	व.	मा.	दि.	घ.	प.	वि.		
६ रा. =	८	६	२४	४	१७	८		
१८° =	०	१०	८	३६	२५	४२		
४०′ =			११	२५	४७	३७		
२३″ =				६	३४	१९	५२	
२०‴ =					५	४२	५३	४८
योग =	९	५	१६	१३	१०	३०	४५	४८

= वुध की संस्कृत आयु

व. मा. दि. घ. प. वि.
९–५–१६–१३–१०–३० = यह चक्र १२ के अनुसार ही है।
रा

(२) चंद्र का $\frac{१}{२}$ हानि कृत दायांश = १८९°-५६′-१९″-१०‴ = ६-९°-५६′-१९″-१०‴

	व.	मा.	दि.	घ.	प.	वि.		
६ रा =	८	६	२६	४	१७	८		
९° =	०	५	४	१८	१२	५१		
५६′ =			१६	०	६	५०		
१९″ =				५	२५	४५	७	
१०‴ =					२	५१	२६	५४
योग =	९	०	१६	२८	५	१५	३३	५४

= चंद्र की संस्कृत आयु = यह चक्र १२ के अनुसार ही आई है।

व. मा. दि. घ. प. वि.

९–०–१६–१८–५–१५

८ अन्य मत से चंद्र की संस्कृत आयु साधन

चक्रार्द्ध हानि गुणक से प्राप्त चंद्र का हानि कृत दायांश = १७८°-४५'-५१"-२९"' है,

रा

= ५–२८°-४५'-५१"-२९"'

	व.	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
५ रा. =	५	१	२१	४३	३४	१७
२८° =	१	४	०	३	२०	०
४५' =			१२	५१	३१	४
५१" =				१४	३४	२३–१२
२८"' =					८	१७–१२–१

योग = ८–६–४–५३–८–१–२४–१

∴ चंद्र की संस्कृत आयु

वर्ष मा. दि. घ. प. वि.

८–६–४–५३–८– १

चक्रार्द्ध हानि कृत गुणक से प्राप्त संस्कृत जीवशर्मोक्त आयु चक्र १३

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल	वि०
सूर्य	१२	०	११	२	३८	३९
चंद्र	८	६	४	५३	८	१
मंगल	११	११	२२	३०	३०	५५
बुध	९	५	१६	१३	१०	३०
गुरु	९	४	४	४१	३८	५४
शुक्र	१३	३	२६	१६	२६	४५
शनि	१०	०	९	२	१२	८
लग्न	०	१	२०	४३	४८	०
योग	७४	९	२५	२३	३३	५२

चक्रार्ध गुणक केवल चंद्र का है। यहाँ सब ग्रहों की आयु चक्र १२ के अनुसार ही दी है। चक्रार्ध गुणक के कारण केवल चंद्र की आयु में अंतर आ गया है।

अध्याय २८

अष्टक वर्ग द्वारा आयु साधन

आयु निकालने के पहिले जन्म कुंडली लेकर उस पर से अष्टक वर्ग साधन अध्याय २० में बनाई हुई रीति द्वारा उस कुंडली से अष्टक वर्ग की शुभ रेखाओं का एक चक्र बना लेना चाहिए।

उस चक्र पर से त्रिकोण शोधन और एकाधिपत्य शोधन कर राशि पिंड ग्रह पिंड निकाल कर योग पिंड बना लेना चाहिए। उस योग पिंड पर से आयु निकालो जाती है।

अष्टक वर्ग द्वारा ३ प्रकार से आयु निकाली जाती है।

(१) भिन्न अष्टक वर्ग आयु
(२) समुदाय आयु
(३) मिश्रायु

१ भिन्न अष्टक वर्ग आयु साधन की रीति

(१) (ग्रह योग पिंड ४७) ÷ २७ = लब्धि वर्ष मास दिन घड़ी पल आदि
" = ग्रह की मध्यम आयु

(२) ग्रह की मध्यम आयु की, मंडल शुद्ध आयु इस प्रकार बनाई जाती है।

मध्यम आयु २७ से अधिक ५४ तक = (५४ वर्ष-मध्यम आयु) = मंडल शुद्ध आयु
" " ५४ " ८१ " = (मध्यम आयु-५४) = " "
" " ८१ " १०८ " = (१०८-मध्यम आयु) = " "

लग्न समेत सब ग्रहों की मध्यम आयु निकाल कर उसकी मंडल शुद्ध आयु उपरोक्त प्रकार से बना लेवे उपरान्त मंडल शुद्ध आयु में नीचे बताये प्रकार से हानि करे।

(३) मंडल शुद्ध आयु की २ प्रकार से हानि होती है:—

(अ) चक्रार्द्ध हानि (ब) नीच अस्तंगत आदि को हानि

(अ) चक्रार्द्ध हानि करने की रीति

भाव	१२	११	१०	९	८	७
पाप ग्रह में	पूर्ण	$\frac{१}{२}$	$\frac{१}{३}$	$\frac{१}{४}$	$\frac{१}{५}$	$\frac{१}{६}$
शुभ ग्रह में	$\frac{१}{२}$	$\frac{१}{४}$	$\frac{१}{६}$	$\frac{१}{८}$	$\frac{१}{१०}$	$\frac{१}{१२}$

उपरोक्त भाव में यदि पाप ग्रह हो तो ऊपर बताये अनुसार आयु घटेगी। यदि वहाँ शुभ ग्रह हो तो पाप का आधा ही अर्थात् जिस प्रकार शुभ के आगे बताया आयु का उतना भाग मंडल शुद्ध आयु में से घट जायगा।

(ब) अन्य हरण

ग्रह	नीच या अस्तंगत	शत्रु क्षेत्री	युद्ध से हारा	सूर्य चंद्र या राहुयुक्त
हानि	$\frac{१}{२}$	$\frac{१}{३}$	$\frac{१}{३}$	$\frac{१}{३}$

(४) उपरोक्त हानि करने के उपरांत जो आयु बचे = वह हानि संस्कृत आयु हुई। किसी ग्रह की जहाँ दो प्रकार की हानि हो वहाँ एक ही हानि (जो सब से बड़ी हो) करना।

(५) $\frac{\text{हानि संस्कृत आयु} \times ३२४}{३६५}$ = शुद्ध आयु वर्ष मास दिन आदि ग्रह को।

लग्न सहित सब ग्रहों की इस प्रकार शुद्ध आयु निकालना।

(६) लग्नायु में विशेष संस्कार होता है

लग्न स्पष्ट लेना। लग्न स्पष्ट की राशि तुल्य वर्ष = शुद्ध आयु में जोड़ना और शेष अंशादि की भी इस प्रकार गणित से आयु निकाल कर जोड़ना।

अंशादि की आयु निकालना

राशि × १ = वर्ष

अंश × $\frac{२}{५}$ = मास = अंश के शेष में × ६ = दिन

कला × $\frac{१}{५}$ = दिन = कला ,, × १२ = घड़ी

बिकला × $\frac{१}{५}$ = घड़ी = ,, ,, × १२ = पल

अर्थात् लग्न को जितनी राशि हो उस में १ का गुणा किये तो उतने हो वर्ष हुए। ३०° में १२ मास (१वर्ष) बढ़ता है तो १° में $\frac{१२}{३०} = \frac{२}{५}$ मास हुआ। $= \frac{२ \times ३०}{५}$ = १२ दिन हुए। १° में ६०′ में १२दिन तो १ कला में $\frac{१२}{६०} = \frac{१}{५}$ दिन हुआ और १ बिकला में $\frac{१}{५}$ घड़ी हुई।

इस प्रकार लग्न की राशि अंश आदि में जो संख्या ऊपर बतायी रीति से गुणा करने में प्राप्त हो सब का योगकर लग्नायु में जोड़ देना चाहिए।

(७) सब ग्रहों की शुद्ध आयु और वृद्धि युक्त लग्न की आयु इन सब का योग करने से भिन्न अष्टक वर्ग आयु होती है। इसे भिन्नायु भी कहते हैं।

२ समुदाय अष्टक वर्ग आयु निकालने की रीति

(१) लग्न कुंडली पर से जो शुभ रेखा का चक्र बनाया जाता है प्रत्येक राशि की शुभ रेखाओं का योग लग्न कुण्डली में स्थापित करना ।

(२) प्रत्येक राशि की शुभ रेखाओं का योग पृथक् २ बारह से भाग देना । जो संख्या भाग देने से बचे उस का पृथक् चक्र बनाकर रखना । जैसे मिथुन राशि की शुभ रेखाओं का योग ३७ है तो ३७÷१२=शेष १ बचा उसे पृथक् चक्र में रखा । यह मंडल शुद्ध अंक हुआ ।

(३) इस प्रकार शेष शुभ संख्या के मंडल शुद्ध अंक पर से प्रत्येक का त्रिकोण शोधन और एकाधिपत्य शोधन करना

(अ) त्रिकोण शोधन=त्रिकोण की राशियों को पहिले लेना, उन में सब से कम जो शुभ रेखा का बचा अंक हो उसे त्रिकोण की सब राशियों के अंकसे घटा देना । जो अंक इस प्रकार घटाने से बचे वही अंक त्रिकोण की तीनों राशियों में रखना ।

(ब) ऐकाधिपत्य शोधन—अध्याय २० में बतायी रीति के अनुसार करना ।

(४) फिर इस में राशि पिंड और ग्रह पिंड बनाकर योग पिंड बनाना ।

(५) (उपरोक्त योग पिंड ×७)÷२७=प्राप्त वर्षादि आयु । यह आयु १००वर्ष से अधिक हो तो मंडल शुद्ध इस प्रकार करना ।

(६) पूरे १०० वर्ष=दीर्घायु । यहाँ १००वर्ष को मंडल समझना !
मंडल शुद्ध आयु =(प्राप्त वर्ष आदि आयु—१००वर्ष)

(७) समुदाय आयु= (मंडल शुद्ध आयु × ३२४) ÷ ३६५=आयु वर्ष मास आदि

३ मिश्रायु

(भिन्नायु+समुदाय आयु)

यहाँ अष्टक वर्ग से ३ प्रकार की आयु निकालना बताया गया है परन्तु कौन आयु कब लेना इस का विचार नीचे दिया है ।

(१) भिन्न अष्टक वर्ग आयु=चंद्र छोड़ कर अन्य बली ग्रह केन्द्र में हों (चन्द्रमा न हो) या केन्द्र से अन्य स्थान में चन्द्रमा ग्रह युक्त हो ।
दशम स्थान में शुभा शुभ ग्रह हों तो भिन्नायु लेना अन्यथा हो तो समुदाय आयु लेना ।

(२) समुदाय आयु=ऊपर बताये से भिन्न हो अर्थात् लग्न कुंडली में चंद्र ग्रह सहित केन्द्र में बलवान हो । अन्य ग्रह केन्द्र छोड़कर अन्य स्थान में बली हो ।

(३) मिश्रायु = चंद्रमा केन्द्र में बलवान् हो । अन्य ग्रह केन्द्र छोड़ कर बली हों ।

उदाहरण

अध्याय २० के अंत में चक्र द्वारा जो अष्टक वर्ग की शुभ रेखाओं का योग निकाला था उसी को लेकर आयु साधन करते हैं ।

लग्न कुंडली

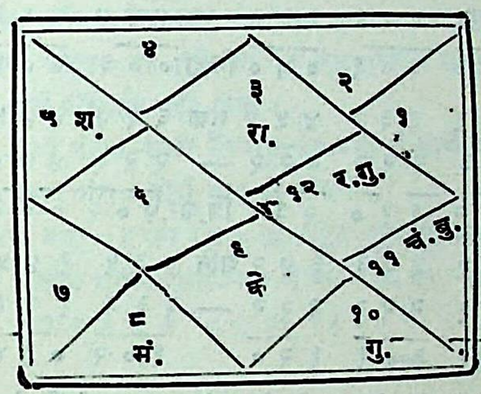

अष्टक वर्ग शुभ रेखा चक्र १ (अध्याय २० से)

राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२
									चं.	सू.		
ग्रह	लग्न	.	श.	.	.	मं.	.	गु.	बु.	शु.	.	.
लग्न रेखा	४	४	४	३	३	७	४	४	३	३	५	५
सूर्य ,,	५	३	४	६	२	७	४	२	३	३	५	४
चंद्र ,,	३	४	६	४	३	५	७	५	२	२	५	३
मंगल ,,	५	३	५	१	२	४	५	२	३	२	४	३
बुध ,,	६	६	४	४	२	८	४	४	४	४	४	४
गुरु ,,	५	५	४	३	६	६	७	४	४	५	४	३
शुक्र ,,	५	४	२	४	८	३	४	५	३	४	६	४
शनि ,,	४	२	३	४	४	३	५	५	१	३	४	१
योग	३७	३१	३२	२९	३०	४३	३०	३१	२३	२६	३७	२७

इसका त्रिकोण शोधन और ऐकाधिपत्य शोधन करेंगे। त्रिकोण शोधन के लिये त्रिकोण की राशियाँ एकत्र कर एक चक्र बना लिया है, जिससे त्रिकोण शोधन में सुगमता हो ।

त्रिकोण शोधन चक्र २

त्रिकोण	१	२	३	४
राशि	१ ५ ९	२ ६ १०	३ ७ ११	४ ८ १२
लग्न	५ ४ ४	५ ३ ४	४ ३ ३	४ ७ ३
—	४ ४ ४	३ ३ ३	३ ३ ३	३ ३ ३
त्रि.शो.	१ ० ०	२ ० १	१ ० ०	१ ४ ०
सूर्य	५ ४ ४	४ ६ २	५ २ ३	३ ७ ३
—	४ ४ ४	२ २ २	२ २ २	३ ३ ३
त्रि.शो.	१ ० ०	२ ४ ०	३ ० १	० ४ ०
चंद्र	५ ६ ७	३ ४ ५	३ ३ २	४ ५ २
—	५ ५ ५	३ ३ ३	२ २ २	२ २ २
त्रि.शो.	० १ २	० १ २	१ १ ०	२ ३ ०
मंगल	४ ५ ५	३ १ २	५ २ ३	३ ४ २
—	४ ४ ४	१ १ १	२ २ २	२ २ २
त्रि.शो.	० १ १	२ ० १	३ ० १	१ २ ०

त्रिकोण	१	२	३	४
राशि	१ ५ ९	२ ६ १०	३ ७ ११	४ ८ १२
बुध	४ ४ ४	४ ४ ४	६ २ ४	६ ८ ४
—	४ ४ ४	४ ४ ४	२ २ २	४ ४ ४
त्रि.शो.	० ० ०	० ० ०	४ ० २	२ ४ ०
गुरु	४ ४ ७	३ ३ ४	५ ६ ४	५ ६ ५
—	४ ४ ४	३ ३ ३	४ ४ ४	५ ५ ५
त्रि.शो.	० ० ३	० ० १	१ २ ०	० १ ०
शुक्र	६ २ ५	४ ४ ५	५ ८ ३	४ ३ ४
—	२ २ २	४ ४ ४	३ ३ ३	३ ३ ३
त्रि.शो.	४ ० २	० ० १	२ ५ ०	१ ० १
शनि	४ ३ ५	१ ४ ५	४ ४ १	२ ३ ३
—	३ ३ ३	१ १ १	१ १ १	२ २ २
	१ ० २	० ३ ४	३ ३ ०	० १ १

ऊपर के त्रिकोण में जो सब से छोटा अंक था उसको त्रिकोण की तीनों राशियों में से घटाने से त्रिकोण शोधन का अंक प्राप्त हुआ जैसा ऊपर बताया है। इसके उपरांत ऐकाधिपत्य शोधन करते हैं। ऊपर त्रिकोण शोधन का अंक दिया है उसी अंक पर से ऐकाधिपत्य शोधन कर नीचे चक्र में रखा है।

ऐकाधिपत्य शोधन चक्र ३

स्वामी	मंगल		शुक्र		बुध		गुरु		शनि	
राशि	१	८	२	७	३	६	९	१२	१०	११
								सू.		बु.
ग्रह	.	मं.	·	·	लग्न	·	·	शु.	गु.	चं.
लग्न	१	४	२	०	१	०	०	०	१	०
ऐका०	०	४	०	०	०	०	०	०	०	०
सूर्य	१	४	२	०	३	४	०	०	०	१
ऐका०	०	४	०	०	३	१	०	०	०	०
चंद्र	०	३	०	१	१	१	२	०	२	०
ऐका०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मंगल	०	२	२	०	३	०	१	०	१	१
ऐका०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१

स्वामी	मंगल		शुक्र		बुध		गुरु		शनि	
राशि	१	८	२	७	३	६	९	१२	१०	११
								सु.		बु.
ग्रह	.	मं.	.	.	ल.	·	·	शु.	गु.	चं.
बुध	०	४	०	०	४	०	०	०	०	२
ऐका०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
गुरु	०	१	०	२	१	०	३	०	१	०
ऐका०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
शुक्र	४	०	०	५	२	०	२	१	१	०
ऐका०	०	०	०	०	०	०	१	१	०	०
शनि	१	१	०	३	३	३	२	१	४	०
ऐका०	१	१	०	०	०	०	१	१	०	०

जिन ग्रहों की २ राशियां होती हैं उन्हीं के अंकों का त्रिकोण शोधन के उपरांत ऐकाधिपत्य शोधन करना पड़ता है। जिन ग्रहों की २-२ राशियाँ हैं ऊपर चक्र में बताया है और उस राशि में ग्रह है या नहीं यह भी बताया है।

ऊपर चक्र में ऐकाधिपत्य शोधन इन नियमों को ध्यान में रखते हुए किया है जो संक्षेप में नीचे बताये हैं।

(१) सग्रह या अग्रह राशि हो या दोनों प्रकार की हों और उसमें से किसी में शून्य हो तो दोनों में शून्य हो जाता है।

(२) अग्रह बड़ा-सग्रह छोटा = शेष अग्रह की संख्या होगी। सग्रह पूर्ववत् रहेगा।

(३) सग्रह बड़ा, अग्रह छोटा = ग्रह हानि का अंक लुप्त होगा। सग्रह पूर्ववत् रहेगा।

(४) दोनों सग्रह = कोई परिवर्तन नहीं होगा।

(५) दोनों अग्रह = (बड़ी संख्या—छोटी संख्या) = शेष बड़ी के नीचे रहेगा छोटी पूर्ववत्।

(६) दोनों अग्रह = समान अंक = दोनों शून्य हो जायंगे।

(७) एक सग्रह दूसरा अग्रह = समान अंक = ग्रह रहित शून्य हो जायगा सग्रह पूर्ववत्।

अष्टक वर्ग शुभरेखा त्रिकोण शोधन ऐकाविपत्य शोधन आदि का चक्र ४

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	योग	पिंड	पिंड योग	गुणक
ग्रह	—	—	लग्न	-	श.	.	.	मं.	.	गु.	चं. बु.	स. शु.				
लग्न शुभरेखा	५	५	४	४	४	३	३	७	४	४	३	३	४९			राशि गुणक
त्रि. शो.	१	२	१	१	०	०	०	४	०	१	०	०	१०			
ऐका०शो.	०	०	०	१	०	०	०	४	०	०	०	०	५			१ = ७
राशि गुणक				४				३२						३६ राशिपिंड	६८	२ = १०
ग्रह गुणक								३२						३२ ग्रह पिंड		
सूर्य शुभरेखा	५	४	५	३	४	६	२	७	४	२	३	३	४८			३ = ८
त्रि०शो०	१	२	३	०	०	४	०	४	०	०	१	०	१५			४ = ४
ऐका०शो०	०	०	३	०	०	१	०	४	०	०	०	०	८			५ = १०
राशि गुणक			२४			५		३२						६१ राशिपिं०	९३	६ = ५
ग्रह गुणक								३२						३२ ग्रह पिं०		७ = ७
चंद्र शुभ रेखा	५	३	३	४	६	४	३	५	७	५	२	२	४९			८ = ८
त्रि०शो०	०	०	१	२	१	१	१	३	२	२	०	०	१३			९ = ९
ऐका०शो०	०	०	०	२	१	०	०	०	०	०	०	०	३			१० = ५
राशि गुणक				८	१०									१८ राशि पिंड.	२३	११ = ११
ग्रह गुणक					५									ग्रह पिंड०		१२ = १२

मंगल शुभ रेखा ४ ३ ५ ३ ५ १ २ ४ ५ २ ३ २ ३९
त्रि० शो० ० २ ३ १ १ ० ० २ १ १ १ ० १२
ऐका० शो० ० ० ० १ १ ० ० ० ० १ १ ० ४
राशि गुणक ४ १० ५ ११ ३० राशि पिं० } ५०
ग्रह गुणक १० १० २० ग्रह पिं०

बुध शुभ रेखा ४ ४ ६ ६ ४ ४ २ ८ ४ ४ ४ ४ ५६
त्रि.शो. ० ० ४ २ ० ० ० ४ ० ० २ ० १२
ऐका.शो. ० ० ० २ ० ० ० ० ० ० ० ० २
राशि गुणक ८ ८ राशि पिं० } ८
ग्रह गुणक ० ग्रह पिं०

गुरु शुभ रेखा ४ ३ ५ ५ ४ ३ ६ ६ ७ ४ ४ ५ ५६
त्रि.शो. ० ० १ ० ० ० २ १ ३ १ ० ० ८
ऐका.शो. ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
राशि गुणक ० राशि पिं० } ०
ग्रह गुणक ० ग्रह पिंड

शुक्र शुभ रेखा ६ ४ ५ ४ २ ४ ८ ३ ४ ५ ३ ४ ५२
त्रि.शो. ४ ० २ १ ० ० ५ ० २ १ ० १ १६
ऐका. शो. ० ० ० १ ० ० ० ० १ ० ० १ ३
राशि गुणक ४ ९ १२ २५ राशि पिं० } ३७
ग्रह गुणक १२ १२ ग्रह पिं०

शनि शुभ रेखा ४ १ ४ २ ३ ४ ४ ३ ५ ५ १ ३ ३९
त्रि.शो. १ ० ३ ० ० ३ ३ १ २ ४ ० १ १८
ऐका.शो. ० ० ० ० ० ० ० १ १ ० ० १ ३
राशि गुणक ८ ९ १२ २९ राशि पिं० } ४९
ग्रह गुणक ८ १२ २० ग्रह पिं०

ग्रह गुणक
रवि ५
चंद्र ५
मंगल ८
बुध ५
गुरु १०
शुक्र ७
शनि ५

राशि गुणक और ग्रह गुणक अध्याय २० में दे चुके हैं सुविधा के लिये यहां भी लिख दिया है।

ऐकाधिपत्य के अंक से राशि गुणक संख्या को गुणा करने से राशि पिंड और ग्रह गुणक की संख्या को गुणा करने से ग्रह पिंड बनता है। राशि पिंड और ग्रह पिंड के योग करने से योग पिंड बनता है।

योग पिंड चक्र ५

ग्रह	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
योग पिंड	६८	९३	२३	५०	८	०	३७	४९

योग पिंड से मध्यम आयु निकालना

(योग पिंड × ७) ÷ २७ = लब्धि ग्रह की मध्यम आयु वर्ष मास दिन आदि

(१) लग्न

योग पिंड ६८ × ७ / २७ = ४७६ / २७

२७) ४७६ (१७ वर्ष
२७
२०६
१८९
१७ × १२
२७) २०४ (७ मास
१८९
१५ × ३०
२७) ४५० (१६ दिन
२७
१८०
१६२
१८ × ६०
२७) १०८० (४० घड़ी
१०८
०

व. मा. दि. घ. प.
= १७-७-१६-४०-०

(२) सूर्य

यो. पिं. ९३ × ७ / २७ = ६५१ / २७ = २१७ / ९

९) २१७ (२४ वर्ष
१८
३७
३६
१ × १२
९) १२ (१ मास
९
३ × ३०
९) ९० (१० दिन
९
०

व. मा. दि. घ. प.
= २४-१-१०- ०-०

(३) चंद्र

यो. पि २३ × ७ / २७ = १६१ / २७

२७) १६१ (५ वर्ष
१३५
२६ × १२
२७) ३१२ (११ मास
२७
४२
२७
१५ × ३०
२७) ४५० (१६ दिन
२७
१८०
१६२
१८ × ६०
२७) १०८० (४० घ.
१०८
०

व. मा. दि. घ. प.
= ५-११-१६-४०-०

(४) मंगल

यो. पिं. ५० × ७ / २७ = ३५० / २७

२७) ३५० (१२ वर्ष
२७
८०
५४
२६ × १२
२७) ३१२ (११ मास
२७
४२
२७
१५ × ३०
२७) ४५० (१६ दिन
२७
१८०
१६०
१८ × ६०
२७) १०८० (४०
१०८
०

व मा. दि. घ. प.
= १२-११-१६-४ -०

(५) बुध

यो. पिं. ८ × ७=५६ / २७   २७

२७) ५६ (२ वर्ष
५४
२ × १२
२७) २४ (० मा.
× ३०
२७) ७२० (२६ दिन
५४
१८०
१६२
१८ × ६०
२७) १०८० (४० घ.
१०८
०

व. मा. दि. घ. प.
२- ०-२६-४०-०

(६) गुरु

योग पिं. ० =० आयु

(७) शुक्र

यो. पिं. ३७ × ७=२५९ / २७   २७

२७) २५९ (९ वर्ष
२४३
१६ × १२
२७) १९२ (७ मा.
१८९
३ × ३०
२७) ९० (३
८१
९ × ६०
२७) ५४० (२०
५४
०

व. मा. दि. घ. प.
९ -७- ३-२०- ०

(८) शनि

यो. पिं. ४९ × ७=३४३ / २७   २७

२७) ३४३ (१२ वर्ष
२७
७३
५४
१९ × १२
२७) २२८ (८ मा.
२१६
१२ × ३०
२७) ३६० (१३
२७
९०
८१
९ × ६०
२७) ५४० (२०
५४
०

व. मा. दि. घ. प.
= १२-८-१३-२०-०

१ ग्रहमध्यम आयु चक्र ६

मंडल शुद्धि

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल	
सूर्य	२४	१	१०	०	०	२७ से कम है यही रहा
चंद्र	५	११	१६	४०	०	,, ,, ,,
मंगल	१२	११	१६	४०	०	,, ,, ,,
बुध	२	०	२६	४०	०	,, ,, ,,
गुरु	०	०	०	०	०	,, ,, ,,
शुक्र	९	७	३	२०	०	,, ,, ,,
शनि	१२	८	१३	२०	०	,, ,, ,,
लग्न	१७	७	१६	४०	०	,, ,, ,,

२ ग्रह की मध्यम आयु को मंडल शुद्ध करना

मध्यम आयु यदि इस प्रकार होतो—

२७ से अधिक ५४ तक = (५४ वर्ष—मध्यम आयु)

५४ से " ८१ " = (मध्यम आयु—५४)

८१ से " १०८ " = (१०८—मध्यम आयु)

इस प्रकार घटाना पड़ता है तब मंडल शुद्ध आयु होती है। यहाँ मध्यम आयु सब ग्रहों की २७ से कम है तो मंडल शुद्ध संस्कार नहीं करना पड़ा। मंडल शुद्ध आयु पूर्ववत् रही।

३— अब उपरोक्त आयु में २ प्रकार की हानि करनी है।

(अ) चक्रार्द्ध हानि

भाव	१२	११	१०	९	८	७
पाप ग्रह में	१	$\frac{१}{२}$	$\frac{१}{३}$	$\frac{१}{४}$	$\frac{१}{५}$	$\frac{१}{६}$
शुभ ग्रह में	$\frac{१}{२}$	$\frac{१}{४}$	$\frac{१}{६}$	$\frac{१}{८}$	$\frac{१}{१०}$	$\frac{१}{१२}$

लग्न कुंडली

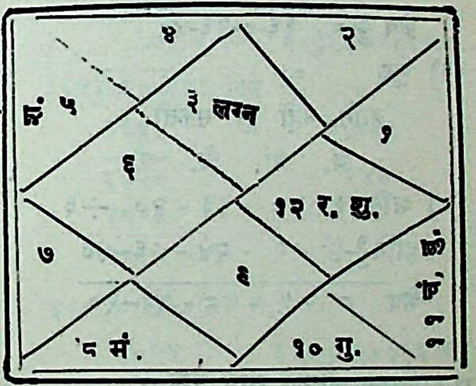

एक भाव में कई ग्रह हों तो केवल बली ग्रह की हानि होती है।

(ब) अन्य हानि

नीच अस्तंगत ग्रह	शत्रु क्षेत्री	युद्ध में हारा	सूर्य चंद्र या राहु युक्त
$\frac{१}{२}$	$\frac{१}{३}$	$\frac{१}{३}$	$\frac{१}{३}$

(अ) १० भाव में = सूर्य और शुक्र है = दोनों में सूर्य बली है = सूर्य पाप ग्रह होने से $\frac{१}{३}$ हानि होगी।

९ भाव में = चंद्र और बुध है = " बुध " = बुध शुभ ग्रह है $\frac{१}{८}$ हानि होगी

८ भाव में = गुरु है = शुभ ग्रह होने से $\frac{१}{१०}$ हानि होगी।

(ब) गुरु नीच का है = $\frac{१}{२}$ हानि
शुक्र अस्तंगत = $\frac{१}{२}$ हानि
शनि = शत्रु क्षेत्री = $\frac{१}{३}$ हानि
बुध = चंद्र युक्त = $\frac{१}{३}$ हानि

गुरु की २ बार हानि हुई $\frac{१}{१०}$ और $\frac{१}{२}$ अतः एक ही हानि जो बड़ी हो उसे ही करेंगे अर्थात गुरु की केवल $\frac{१}{२}$ हानि होगी।

बुध की $\frac{१}{८}$ और $\frac{१}{३}$ दो बार हानि हुई तो केवल १ ही वार $\frac{१}{३}$ बड़ी हानि करेंगे।

३ अब केवल इस प्रकार हानि होंगी।

हानियां	सूर्य	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	$\frac{१}{३}$	$\frac{१}{३}$	$\frac{१}{२}$	$\frac{१}{२}$	$\frac{१}{३}$

ये हानि मध्यम आयु में करेंगे अर्थात् उस ग्रह की आयु से इतना भाग निकाल देंगे (घटा देंगे)

तब हानिकृत संस्कृत आयु होगी।

व. मा. दि. घ.
(१) सूर्य २४ – १ – १० – ० ÷३
— हानि $\frac{१}{३}$ – ८-० – १३ - २०
शेष $\frac{२}{३}$ = १६-०-२६-४०

(३) गुरु ०
हानि नहीं हो सकती

व. मा. दि. घ.
(५) शनि १२ - ८ - १३ - २० ÷३
हानि $\frac{१}{३}$ - ४ - २ - २४ - २६-४०
शेष ८ - ५ - १८ - ५३-२०

व. मा. दि. घ.
(२) बुध - २ - ० - २६ - ४० ÷३
हानि $\frac{१}{३}$ - ० - ८ - ८ - ५३ - २०
शेष = १ - ३ - १७ - ४६ - ४०

व. मा. दि. घ.
(४) शुक्र = ९ - ७ - ३ - २० ÷२
हानि $\frac{१}{२}$ - ४ - ९ - १६ - ४०
शेष -४ - ९ - १६ - ४०

४ हानिकृत संस्कृत आयु चक्र ७

ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	घ.	प.
सूर्य	१६	०	२६	४०	०
चंद्र	५	११	१६	४०	०
मंगल	१२	११	१६	४०	०
बुध	१	३	१७	४६	४०
गुरु	०	०	०	०	०
शुक्र	४	९	१६	४०	०
शनि	८	५	१८	५३	२०
लग्न	१७	७	१६	४०	०

इसकी शुद्धि आयु बनाने के लियेः—

$$\frac{\text{हानि संस्कृत आयु} \times ३२४}{३६५} = \text{शुद्ध आयु वर्ष आदि}$$

(१) सूर्य व. मा. दि. घ.

१६–०–२६–४०

×३२४

५१८४	०	१९४४ ६४८	१२९६०
५१८४ +२४	० +२८८	८४२४ +२१६	१२९६० =०
५२०८	२८८	८६४०	

=५२०८ =०

३६:

३६५)५२०८(१४ वर्ष
३६५
१५५८
१४६०
९८×१२
३६५)११७६(३ मा.
१०९५
८१×३०
३६५)२४३०(६ दिन
२१९०
२४०×६०
३६५)१४४००(३९
१०९५
३४५०
३२८५
१६५×६०
३६६)९९००(२७
७३०
२६००
२५५५
४५

१२)२८८(२४
२४
४८
४८
०

३०)८६४०(२८८
६०
२६४
२४०
२४०
२४०
०

६०)१२९६०(२१६
१२०
९६
६०
३६०
३६०
०

सूर्य शुद्ध आयु व. मा. दि. घ. प.

१४–३–६–३९–२७

व. मा. दि. घ.

(२) चंद्र व. मा. दि. घ.

५–११–१६–४०

×३२४

१६२० +३१२	३५६४ +१८०	५१८४ +२१६	१२९६० =०
१९३२	३७४४ =०	५४०० =०	

=१९३२
३६५

३६५) १९३२ (५ वर्ष
१८२५
१०७×१२
३६५) १२८४ (३ मा.
१०९५
१८९×३०
३६५)५६७०(१५ दिन
३६५
२०२०
१८२५
१९५×६०
३६५)११७००(३२ घ.
१०९५
७५०
७५०
२०×६०
१२००

१२)३७४४(३१२
३६
१४
१२
२४
२४
०

३०)५४००(१८०
३०
२४०
२४०
०

३६५)१२००(३ प.
१०९५
१०५

चंद्र की शुद्ध व. मा. दि. घ. प.

५–३–१५–३२–३

(३) मंगल—१२-११-१६-४० (४) बुध
× ३२४

३८८८	३५६४	५१८४	१२९६०
+३१२	+१८०	+२१६	=०
४२००	३७४४	५४००	
	=०	=०	

३६५) ४२०० (११ वर्ष
३६५
५५०
३६५
१८५ × १२
३६५)२२२०(६ मास
२१९०
३० × ३०
३६५)९००(२ दिन
७३०
१७० × ६०
१०२००

=४२००
३६५
३६५) १०२००(२७ घ.
७३०
२९००
२५५५
२४५ × ६०
३६५)१४७००(४० प.
१४६०
१००

मंगल शुद्ध आयु व. मा. दि. घ. प.
११-६-२-२७-४०

व. मा. दि. घ. प.
१-३-१७-४६-४०
× ३२४

३२४	९७२	५५०८	१४९०४	१२९६०
+९७	+१९२	+२५२	+२१६	=०
४२१	११६४	५७६०	१४९०४	
		=०	+२१६	
			१५१२०	
			=०	

=४२१ ÷ ३६५
३६५)४२१(१ वर्ष
३६५
५६ × १२
३६५)६७२(१ मा.
३६५
३०७ × ३०
३६५)९२१०(२५ दिन
७३०
१९१०
१८२५
८५ × ६०
३६५)५१००(१३ घ.
३६५
१४५०
१०९५
३५५ × ६०
३६५)२१
१८२५
३०५०
२५५५
४९५

३०)५७६०(१९२
३०
२७६
२७०
६०
६०
०

१२)११६४(९७
१०८
८४
८४
०

६०)१५१२०(२५२
१२०
३००
१२०
१२०
०

बुध शुद्ध आयू व. मा. दि घ. प.
१-१-२५-१३-५७

व. मा. दि. घ.

(७) शुक्र ४–९–१६–५०

×३२४

१२९६ २९१६ ५१८४ १२९६०

+२५८ +१८० +२१६ =०

१५५४ ३०९६ ५४००

=० =०

=१५५४

३६५

३६५)१५५४(४ वर्ष
१४६०
९४×१२

३६५)११२८(३ मा.
१०९५
३३×३०

३६५)९९०(२ दि.
७३०
२६०×६०

३६५)१५६००(४२ घ.
१४६०
१०००
७३०
२७०

१२)३०९६(२५८
२४
६९
६०
९६
९६
०

२७०×६०

३६५)१६२००(४४ पल
१४६०
१६००
१४६०
१४०

=शुक्र शुद्ध आयु व. मा. दि घ .प.

४- ३- २-४२-४४

व. मा. दि. घ. प.

(७) शनि ८- ५-१७-५३-२०

×३२४

९७२ ६४८०

२५९२ १६२० ५८३२ १६२० =०

+१५१ +२०४ +२८८

२७४४ १८२४ ६१२० १७१७२

=० =० १०८

=२७४४ १७२८०

=०

१२)१८२४(१५२
१२
६२
६०
२४
२४
०

३०)६१२०(२०४
६०
१२०
१२०
०

६०)६४८०)१०८
६०
४८०
४८०
०

१५०×६०

३६५)९०००(२४ घ.
७३०
१७००
१४६०
२४०×६०

३६५)२७४४(७ वर्ष
२५५५
१८९×१२

३६५)२२६८(६ मा.
२१९०
७८×३०

३६५)२३४०(६ दिन
२१९०
१५०

३६५)१४४००(३० प.
१०९५
३४५०
३२८५
१६५

शनि शुद्ध आयु व. मा. दि. घ. पल

७–६–६–२४–३९

(७) लग्नायु

व. मा. दि. घ.
१७–७–१६–४०
× ३२४

५५०८ २२६८ ५१८४ १२६६०
+२०४ +१८० +२१६ =०
५७१२ २४४८ ५४००
=५७१२ =० =०

१२)२४४८(२०४
२४
४८
४८
०

३६५)५७१२(१५ वर्ष
३६५
२०६२
१८२५
२३७ × १२   २७५ × ६०

३६५)२८४४(७ मा.   ३६५)१६५००(४५ घ.
२५५५   १४६०
२८९ × ३०   १९००

३६५)८६७०(२३ दिन   १८२५
७३०   ७५ × ६०
१३७०   ३६६)४५००(१२ प.
१०९५   ३६५
२७५   ८५०
७३०
१२०

= लग्नायु शुद्ध आयु व. मा, दि. घ. प.
१५–७–२३–४५–१२

५ शुद्ध आयु चक्र ८

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल
सूर्य	१४	३	६	३९	२७
चंद्र	५	३	१५	३२	३
मंगल	११	६	२	२७	४०
बुध	१	१	२५	१३	५७
गुरु	०	०	०	०	०
शुक्र	४	३	२	४२	४४
शनि	७	६	६	२४	३९
लग्न	१५	७	२३	४५	१२

६ लग्नायु में शुद्धि का विशेष संस्कार

रा
लग्न स्पष्ट २-२०°-११′-५३″   ब. मा. दि. घ. प.
२ रा. = २ × १ = २ वर्ष = २–०–०–०–०
= २०° = २० × २/५ = ४०/५ = ८मास = ०–८–०–०–०
११′ = ११ × १/५ = ११/५ दिन = ०–०–२-१२-०
५३″ = ५३ × ५/५ = ५३/५ घड़ी = ०–०–०-१०-३६

व. मा. दि. घ. प.
लग्न शुद्धआयु १५-७-२३-४५-१२
+ आयु २-८-२-२२-३६
लग्न स्पष्ट आयु १८-३-२६-७-४८

लग्न बलवान होने से वृद्धि हुई

दशा स्पष्ट भिन्नायु चक्र ९

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल
सूर्य	१४	३	६	३९	२७
चंद्र	५	३	१५	३२	३
मंगल	११	६	२	२७	४०
बुध	१	१	२५	१३	५७
गुरु	०	०	०	०	०
शुक्र	४	३	२	४२	४४
शनि	७	६	६	२४	३९
लग्न	१८	३	२६	७	४८
योग	६२	३	२५	८	१८

२ समुदाय अष्टकवर्ग आयु निकालने का उदाहरण

(१) शुभरेखा योग चक्र १०

लग्न कुंडली

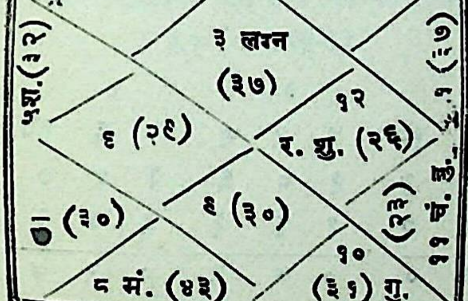

शुभ रेखा योग चक्र १ जो आरंभ में बनाया है उसी के उस के अंक का योग प्रत्येक राशियों का यहाँ प्रत्येक राशि में इस कुंडली में स्थापित किया है। इन्हीं अंकों का मंडल शुद्ध अंक बनाना पड़ता है। प्रत्येक अंकों में १२ का भाग देकर शेष संख्या लेना वह मंडल शुद्ध अंक हुआ।

इस मंडल शुद्ध अंक का त्रिकोण शोधन और ऐकाधिपत्य शोधन कर राशि गुणक ग्रह गुणक बनाकर राशिपिंड बनाना पड़ेगा।

(२) मंडल शुद्ध अष्टक वर्ग आयु

१ मिथुन में ३७÷१२=शेष१ रेखा मं. शु.
२ कर्क में ३७÷१२= ,,७ ,, ,,
३ सिंह ,, ३२÷१२= ,,८ ,, ,,
४ कर्क ,, २९ + १२ = ,,५ ,, ,,
५ तुला ,, ३०÷१२ = ,,६ ,, ,,
६ वृश्चिक ,, ४३÷१२= ,, ७ ,, ,,
७ धन में ३०÷१२ = ६शेष=मंडल शु०
८ मकर = ३१÷१२ = ७ ,, = ,,
९ कुंभ = २३÷१२ = ११ ,, = ,,
१० मीन = २६÷१२=२ ,, = ,,
११ मेष = ३७÷१२=१ ,, = ,,
१२ वृष = २७÷१२=३ ,, = ,,

इसी को नीचे चक्र में दिया है।

(३) मंडल शुद्ध अष्टक वर्ग चक्र ११

राशि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२		
ग्रह	लग्न	०	श.	०	०	मं.	०	गु.	चं. बु.	सू. शु.	०	०	योग पिंड	योग पिंड
मंडल शुद्ध रेखा	१	७	८	५	६	७	६	७	११	२	१	३		
त्रिकोण शो०	०	५	७	२	५	५	५	४	१०	०	०	०		
ऐकाधि० शो०	०	०	०	०	०	०	०	४	१०	०	०	०		
राशि गुणक								२०	११०				१३० राशि पिंड	योग पिंड
ग्रह गुणक								४०	१००				१४० ग्रह पिंड	२७०

१० राशि का गुणक ५ = ५ × ४ = २० राशि पिंड } दोनों का योग
११ „ „ ११=११ × १०=११० „ } १३० राशि पिंड

१० राशि में गुरु गुणक १०=१० × ४=४० ग्रह पिंड } योग
११ राशि „ बुध „ ५ = ५ × १०=५० „ } १४० ग्रह पिंड
„ „ चंद्र „ ५ = ५ × १०=५० „ } ——ब का योग

योग पिंड=२७०

३ (अ) त्रिकोण शोधन चक्र १२

त्रिकोण		१			२			३			४	
त्रिकोण राशि	३	७	११	४	८	१२	१	५	९	२	६	१०
मंडल शुद्ध रेखा	१	६	११	७	७	२	१	८	६	३	५	७
—	१	१	१	२	२	२	१	१	१	३	३	३
त्रिकोण शोधन	०	५	१०	५	५	०	०	७	५	०	२	४

(३ ब) ऐकाधिपत्य शोधन चक्र १३

स्वामी	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि	१ ८	३ ६	९ १२	२ ७	१० ११
ग्रह	० मं.	० ० शु.	० सू. बु.	० ०	गु. चं.
त्रिकोण शोधन के अंक	० ५	० २	५ ०	० ५	४ १०
ऐकाधिपत्य शो०	० ०	० ०	० ०	० ०	४ १०

एक में शून्य होने से दोनों में शून्य हुआ। १०–११ राशि दोनों सग्रह हैं इससे कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

यहाँ पृथक् चक्र बना कर मंडल शुद्ध शेष अंकों को ऊपर चक्र १२ में त्रिकोण शोधन किया है। उपरांत उन्हीं त्रिकोण शोधन के अंकों को लेकर पृथक् चक्र १३ में ऐकाधिपत्य शोधन किया है।

इन्हीं त्रिकोण शोधन और ऐकाधिपत्य शोधन के अंकों को ऊपर के चक्र १२ में क्रमशः रख कर बताया है जिस पर से राशि पिंड ग्रह पिंड और योग पिंड बनाया है।

(४) (योग पिंड × ७) ÷ २७ = प्राप्त आयु वर्षादि। योग पिंड २७० है।

$$\frac{\text{२७० योग पिंड} \times \text{७}}{\text{२७}} = \text{१०} \times \text{७} = \text{७०वर्ष आयु}$$

(५) उपरोक्त आयु १०० से अधिक हो :तो मंगल शुद्ध (१०० घटा कर) करना पड़ता है परन्तु उपरोक्त आयु १०० से कम (७० वर्ष) आये हैं इससे इसमें मंडल शुद्ध नहीं करना पड़ा। यही मंडल शुद्धि आयु हुई।

(६) समुदाय आयु $= \frac{\text{मंडल शुद्ध आयु} \times \text{३२४}}{\text{३६५}}$

$$= \frac{\text{७०} \times \text{३२४}}{\text{३६५}} = \frac{\text{२२६८०}}{\text{३६५}}$$

=समुदाय आयु=वर्ष वर्ष मास दिन घटी पल

६२-१-१६-३४-३१

३६५)२२६८०(६२ वर्ष
२१९०
७८०
७३०
५० × १२
३६५)६००(१ मास
३६५
२३५ × ३०
३६५)७०५०(१९ दिन
३६५
२४००
२१९०
२१०

२१० × ६०
३६५)१२६००(३४घ०
१०९५
१६५०
१४६०
१९० × ६०
३६५)११४००(३१ प.
१०९५
४५०
३६५
८५

भिन्न अष्टक वर्ग आयु की अन्तर्दशा निकालना

१ दशा का क्रम—(१) सूर्य चंद्र लग्न में जो बली हो उसकी दशा प्रथम होगी।

(२) उपरांत केन्द्र (३) पणफर (४) और आपोक्लिम वाले ग्रह की दशा क्रमशः होगी।

(१) एक स्थान में २-३ ग्रह हों तो अधिक बली ग्रह को प्रथम लेना

(२) जब बल में समान हो तो अधिक आयु वाले की प्रथम दशा होगी।

(३) जिसकी दशा प्रथम होगी उसी से केन्द्र पणफर आदि का विचार करना।

केन्द्र	पणफर	आपोक्लिम
१-४-७-१०	२-५-८-११	३-६-९-१२ स्थान

अंतर्दशा क्रम

१ दशापति की पहिले दशा होगी = $\frac{१}{१}$
२ दशा पति के साथ जो ग्रह हो उसकी = $\frac{१}{२}$
३ " " त्रिकोण में " " = $\frac{१}{३}$
४ „ „ सप्तम में „ „ = $\frac{१}{७}$
५ „ „ स्थान में „ „ = $\frac{१}{४}$

(१) एक राशि में कई ग्रह हों तो उन में से केवल बलवान ग्रह की ही अंतर्दशा होगी, उस के साथी दूसरे ग्रह की नहीं होगी।

(२) दशापति की अंतर्दशा पहिले होगी उस के उपरांत ऊपर बताये क्रम से ग्रहों की दशा होगी।

(३) जब त्रिकोण या ४—८ स्थान दोनों स्थानों में ग्रह हो तो बलवान ग्रह की दशा पहिले होगी।

(४) जिन ग्रहों की अंतर्दशा प्राप्त हो उन का योग इस प्रकार करना जैसे

$$\frac{१}{१}+\frac{१}{२}+\frac{१}{३}+\frac{१}{७}+\frac{१}{७}=\frac{१६८+८४+५६+२४+४२}{१६८}=\frac{३७४}{१६८}$$

यहाँ ३७४ हार (भाजक) हुआ। ऊपर जिस २ ग्रह का पाचक हो ऊपर का अंक उसका गुणक हुआ और सब का योग (जैसे यहाँ योग ३७४ है) भाजक हुआ। यह क्रिया मूल दशापति के वर्ष में करना तो प्रत्येक ग्रह की अंतर्दशा का समय प्राप्त हो जायगा।

उदाहरण

भिन्न अष्टकवर्ग आयु चक्र ९

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न
वर्ष	१४	५	११	१	०	४	७	१८
मास	३	३	६	१	०	३	६	३
दिन	६	१५	२	२५	०	२	६	२६
घड़ी	३९	३२	२७	१३	०	४२	२४	७
पल	२७	३	४०	५७	०	४४	३९	४८

लग्न कुंडली

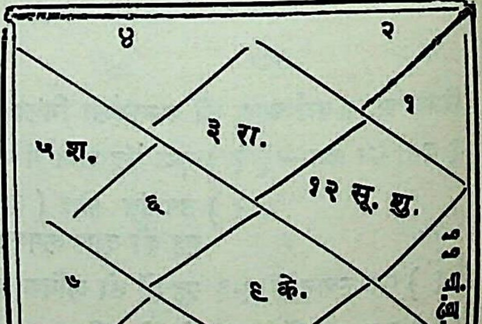

षड्बल
सूर्य १०°-१८'-४१"
चंद्र ३—११—५६
लग्न ७—२७— ६

यहाँ प्रथम दशा निकालने को देखेंगे कि सूर्य चंद्र और लग्न में से कौन बली है। इन का षड्बल देखा तो प्रगट हुआ कि सब में सूर्य बली है। इस कारण पहिले सूर्य की दशा होगी।

सूर्य कुंडली

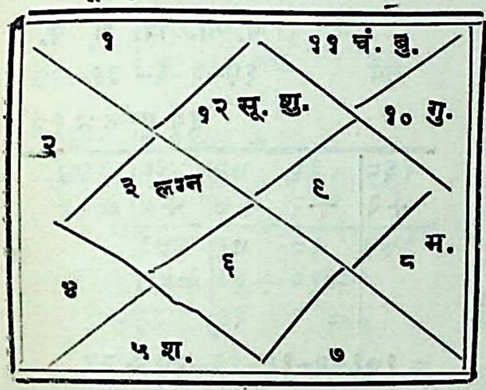

अब सूर्य से ही केंद्र आदि का विचार कर दशा क्रम का विचार किया तो प्रगट हुआ कि इस प्रकार दशा का क्रम होगा:- यदि चंद्र बलवान होता तो चंद्र से केंद्र आदि का बिचार करते।

(१) सूर्य की दशा पहिले होगी।

(२) सूर्य से केंद्र में शुक्र और लग्न है इन दोनों में लग्न बली है। लग्न बल ७°-२७' और शुक्र बल ७°-२४' है। इस कारण पहिले लग्न की फिर शुक्र को दशा होगी।

(३) सूर्य से पणफर ११ स्थान में गुरु है।

(४)सूर्य से आपोक्लिम स्थान ६ में शनि, ९ में मंगल, १२ में चंद्र बुध है। बल के अनुसार इन को दशा का क्रम होगा। बल शनि मंगल चंद्र बुध है। इस कारण बल के अनुसार इस:प्रकार दशा ७- ११ ६-१३ ३-११ ५-४१ क्रम होगा (१)शनि, (२)मंगल,(३)बुध, (४)चंद्र।

भिन्न अष्टक वर्ग आयु दशा का क्रम चक्र १४

ग्रह	सूर्य	लग्न	शुक्र	गुरु	शनि	मंगल	बुध	चंद्र	योग
वर्ष	१४	१८	४	०	७	११	१	५	६२
मास	३	३	३	०	६	६	१	३	३
दिन	६	२६	२	०	६	२	२५	१५	२५
घटो	३९	७	४२	०	२४	२७	१३	३२	८
पल	२७	४८	५४	०	३९	४०	५७	३	१८

इस क्रम से ग्रह की दशा होगी।

अब इन की अंतर्दशा निकालनी है। पहिले सूर्य को दशा है इस कारण पहिले सूर्य की अंतर्दशा निकालेंगे।

(१) सूर्य की दशा में

पहिले सूर्य की अंतर्दशा होगी = सूर्य $\frac{१}{१}$
सूर्य के साथ शुक्र है = शुक्र $\frac{१}{२}$
सूर्य के त्रिकोण में मंगल है = मंगल $\frac{१}{३}$
,, सप्तम में कोई ग्रह नहीं है = ०
,, ४–८ में से ४ में लग्न है = लग्न $\frac{१}{४}$

सूर्य शुक्र मंगल लग्न सू. शु. मंगल

$\frac{१}{१}+\frac{१}{२}+\frac{१}{३}+\frac{१}{४}=\frac{१२+६+४+३}{\ }=\frac{२}{१}\frac{५}{२}$

ऊपर की संख्या का योग=२५ यह हार २५ हुआ गुणक सूर्य शुक्र मंगल लग्न=सब
१२ ६ ४ ३
का हार (भाजक) २५ हुआ।

सूर्य की दशा में इन सबकी अंतर्दशा होगी। सूर्य दशा वर्ष में पृथक् पृथक् ग्रहों के गुणक का गुणा कर भाजक का भाग देना तो उनकी अंतर्दशा का समय निकलेगा।

	व.	मा.	दि.	घ.	प.
सूर्य	१४	३	६	३९	२७

सूर्य गुणक × १२

१६८	३६	७२	४६८	३२४
+३	+२	+७	+५	=२४
१७१	३८	७९	४७३	
	÷१२	÷३०	=५३	
	= २	= १९		

= १७१–२–१९–५३–२४ ÷ २५

२५) १७१–२–१९–५३–२४ (६ वर्ष
१५०
२१ × १२ + २
२५) २५४ (१० मास
२५०
४ × ३० + १९
२५) १३९ (५ दिन
१२५
१४ × ६०
८४० + ५३
२५) ८९३ (३५ घ.
७५
१४३
१२५
१८

१८ × ६०
१०८० + २४
२५) ११०४ (४४
१०० पल
१०४
१००
४

व. मा. दि. घ. प.
=सूर्य की अंतर्दशा ६–१०–५–३५–४४$\frac{४}{२५}$

व. मा. दि. घ. प.

(२) सूर्य १४–३– ६– ३९–२७

शुक्र का गुणक × ६

८४	१८	३६	२३४	१६२
+ १	+ १	+ ३	+ २	=४२
८५	१९	३९	२३६	
	÷ १२	+ ३०	=५६	
	= ७	=९		

=८५–७-९–५६ + २५

२५) ८५–७–९–५६–४२ (३ वर्ष

७५

१० × १२

१२० + ७

२५) १२७ (५ मा.

१२५

२ × ३० + ९

२५) ६९ (२ दिन

५०

१९ × ६०

११४० + ५६

११९६

२५) ११९६ (४७ घ.

१००

१९६

१७५

२१ × ६०

१२६० + ४२

२५) १३०२ (५२ पल

१२५

५२

५०

२

शुक्र की अंतर्दशा

व. मा. दि. घ. प.

३–५– २– ४७–५२$\frac{२}{२५}$

व. मा. दि. घ. प.

(३) सूर्य १४–३–६–३९–२७

मंगल गुणक × ४

५६	१२	२४	१५६	१०८
+ १		+ २	+ १	=४८
५७	१२	२६	१५७	
	÷ १२	÷ ३०	=३७	
	=०	=२६		

=५७–०–२६–३७–४८

२५) ५७–०–२६–३७–४८ (२ व.

५०

७ × १२

२५) ८४ (३ मा.

७५

९ × ३०

२७० + २६

२५) २९६ (११ दि.

२५

४६

२५

२१ × ६०

१२६० + ३७

१२९७

२५) १२९७ (५१

१२५

४७

२५

२२ × ६०

१३२० + ४८

२५) १३६८ (५४

१२५

११८

१००

१८

मंगल की अंतर्दशा

व. मा. दि. घ. प.

२–३–११–५१–५४$\frac{१८}{२५}$

व. मा. दि. घ. प.
(४) सूर्य १४–३–६–३९–२७
लग्न गुणक × ३

४२– ९ – १९ – ५८ – २१

२५) ४२–९–१९–५८–२१ (१ वर्ष
२५
१७ × १२
२०४ + ९
२५) २१३ (८ मा.
२००
१३ × ३०
३९०
+ १९
२५) ४०९ (१६ दिन
२५
१५९
१५०
९ × ६० + ५८

१ सूर्य की अंतर्दशा का चक्र १५

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल
१ सूर्य	६	१०	५	३५	४४
२ शुक्र	३	५	२	४७	५२
३ मंगल	२	३	११	५१	५५
४ लग्न	१	८	१६	२३	५६
योग	१४	३	६	३९	२७

२५) ५९८ (२३ घ.
५०
९८
७५
२३
२३ × ६०
१३८०
+ २१
२५) १४०१ (५६ प.
१२५
१५१
१५०
१

लग्न की अंतर्दशा
व. मा. दि. घ. प.
१–८–१६–२३–५६ १/२५

गुणक और भाजक को सरल करने के लिये विचार

(१) सूर्य का गुणक १२ है

(२) शुक्र का गुणक ६ है = सूर्य का आधा। सूर्य की आई अंतर आयु को आधा कर देने से शुक्र की आयु आ जाती है। जैसे सूर्य की आयु ६ वर्ष आई तो उससे आधा ३ वर्ष शुक्र की आयु आई।

(३) मंगल का गुणक ४ है = सूर्य का $\frac{१}{३}$। सूर्य का अंतर ÷ ३ = मंगल।
जैसे सूर्य ६ ÷ ३ = २वर्ष मंगल।

(४) लग्न का गुणक ३ है। सूर्य का $\frac{१}{४}$। सूर्य अंतर ÷ ४=लग्न की आयु। इसी प्रकार बड़ी आयु निकाल कर उसी प्रमाण से शेष ग्रहों का निकाल लेने में सुगमता होती है।

यही तो ऊपर के अंकों को देखने से प्रगट होगा। जैसे सूर्य शुक्र मंगल लग्न है। इसका अर्थ है कि जो सूर्य की अंतर आयु है $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{२}$. $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{४}$ $\frac{१}{२}$ अर्थात् आधा शुक्र की, $\frac{१}{३}$ भाग मंगल की और $\frac{१}{४}$ लग्न अर्थात् सूर्य की अंतर्दशा वर्ष का चौथाई भाग लग्न की आयु होगी।

२ लग्न की अंतर्दशा साधन

(१) लग्न = प्रथमदशा = लग्न $\frac{१}{१}$
(२) लग्न के साथ कोई ग्रह नहीं है = ०
(३) " त्रिकोण में चंद्र वुध है } इन में बलो बुध है } = वुध $\frac{१}{३}$
(४) लग्न से सप्तम में कोई ग्रह नहीं है=०
(५) " ४-८ में से ८ में गुरु है = गुरु $\frac{१}{४}$

लग्न वुध गुरु लग्न वु. गु. ऊपर का

$\frac{१}{१}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{४}$ = $\frac{१२+४+३}{१२}$ = योग १९ भाजक

गुणक	लग्न	वुध	गुरु
	१२	४	३

लग्न गुणक १२ है
वुध गुणक ४ है यह लग्न का $\frac{१}{३}$ है
गुरु " ३ है " " $\frac{१}{४}$ है

इस प्रकार लग्नायु का विभाग करने से इस की अंतर्दशा का समय निकल आयगा

लग्न अंतर्दशा ११-६-२५-५८-३७ ÷ ३ बुध
= ३-१०-८ -३९-३२=बुध अंतर
लग्न अंतर ११-६-२५-५८-३७ ÷ ४गुरु
= २–१०-२१ २९-३९ गुरुअंतर

लग्न की अंतर्दशा का चक्र १६

ग्रह	वर्ष	मा.	दिन	घड़ी	पल
१ लग्न	११	६	२५	५८	३७
२ बुध	३	१०	८	३९	३२
(३)गुरु	२	१०	२१	२९	३९
योग	१८	३	२६	७	४८

व. मा. दि. घ. प.
लग्नायु १८– ३–२६–७–४८
लग्न गुणक × १२

२१६	३६	३१२	८४	५७६
+३	+१०	+१	+९	= ३६
२१९	४६	३१३	९३	
	÷ १२	÷ ३०	= ३३	
	= १०	= १३		

= २१९–१०–१३–३३–३६

१९)२१९–१०–१३–३३–३६(११ वर्ष
१९
२९
१९
१० × १२ + १०
१९)१३०(६ मास
११४
१६ × ३० + १३
१९)४९३(२५
३८ दिन
११३
९५
१८ × ६०
१०८० + ३३
१११३

१९)१११३(५८
९५ घ.
१६३
१५२
११ × ६०
६६० + ३६
१९)६९६(३६ प०
५७
१२६ ३६ × १
११४ =३७
१२

=लग्न की अंतर्दशा व. मा. दि. घ. प.
११ -६–२५–५८–३७

३ शुक्र की अंतर्दशा

(१) शुक्र की दशा प्रथम = शुक्र $\frac{१}{१}$

(२) शुक्र का साथी सूर्य = सूर्य $\frac{१}{२}$

(३) शुक्र के त्रिकोण ९ में मंगल = मंगल $\frac{१}{३}$

(४) " सप्तम में — = ०

(५) " ४-८ में से ४ में लग्न = लग्न $\frac{१}{४}$—

व. मा. दि. घ. प.

शुक्र दशा ४-३-२-४२-४४

शुक्र गुणक × १२

४८	३६	२४	५०४	५२८
+३	+१	+८	+८	४८ =
५१	३७	३२	५१२	
	÷१२	÷३०	=३२	
	=१	=२		

= ५१-१-२-३२-४८

२५)५१-१-२-३२-४८(२ वर्ष
५०
१ × १२ + १
२५)१३(० मा०
× ३०
३९० + २
२५)३९२(१५ दि०
२५
१४२
१२५
१७ × ६०
१०२० + ३२
२५)१०५२(४२ घं०
१००
५२
५०
२

२ × ६०
१२०
+ ४८
२५)१६८(६
१५० = ७
१८

शेष आधे से अधिक है तो ६ लब्धि को ७ मान लिया

शुक्र की अंतर्दशा

व० मा० दि० घ० प०

२- ०- १५-४२-७

शुक्र	सूर्य	मंगल	लग्न
$\frac{१}{१}$ +	$\frac{१}{२}$ +	$\frac{१}{३}$ +	$\frac{१}{४}$

$$= \frac{१२ + ६ + ४ + ३}{१२} = \text{भाजक } २५$$

गुणक शुक्र सूर्य मंगल लग्न
१२ ६ ४ ३

व० मा० दि० घ० प०

शुक्र अंतर–२– ०–१५–४२–७ ÷ २ सूर्य
=१–०–७–५१–३ सूर्य अंतर

व० मा० दि० घ० प०

शुक्र अंतर=२–०–१५–४२–७ ÷ ३ मंगल
=०–८–५–१४–२ मंगल अंतर

व० मा० दि० घ० प०

शुक्र अंतर=२–०–१५–४२–७ ÷ ४ लग्न
=०–६–३–५५–३२ लग्न अंतर

३ शुक्र की अन्तर्दशा चक्र १७

ग्रह	वर्ष	मा०	दिन	घ०	पल
१ शुक्र	२	०	१५	४२	७
२ सूर्य	१	०	७	५१	३
३ मंगल	०	८	५	१४	२
४ लग्न	०	६	३	५५	३२
योग	४	३	२	४२	४४

४ गुरु—०-०-०-०

५ शनि की अंतर्दशा

(१) शनि को दशा प्रथम = शनि $\frac{१}{१}$
(२) शनि साथ कोई नहीं = ०
(३) शनि के त्रिकोण में,, =०
(४) ,, सप्तम में चंद्र बुध है
इसमें बुध बलवान है } =बुध $\frac{१}{७}$
(५) ,, ४-८ में से ४ में मंगल=मंगल $\frac{१}{४}$
,, ८ में शुक्र सूर्य है
इसमें सूर्य बली है } =सूर्य $\frac{१}{४}$

मंगल और सूर्य में सूर्य बली है उसकी दशा पहिले होगी बाद मंगल की होगी।

शनि बुध सूर्य मंगल

$\frac{१}{१}+\frac{१}{७}+\frac{१}{४}+\frac{१}{४}=\frac{२८+४+७+७}{२८}$

=४६ भाजक

गुणक शनि	बुध	सूर्य	मंगल	भाजक
२०	४	७	७	४६

व० मा० दि० घ० प०
शनि अंतर ४-६-२७-२२-४९ ÷ ७ बुध
=०-७-२५-२०-२४=बध अंतर

व० मा० दि० घ० प०
शनि अंतर-४-६-२७-२२-४९ + ४सूर्य
=१-१-२१-५०-४८ सूर्य अंतर

व० मा० दि० घ० प०
शनि अंतर=४-६-२७-२२-४९ + ४मंगल
=१-१-२१-५०-४८ मंगल अंतर

५ शनि की अन्तर्दशा चक्र १७

ग्रह	व०	मा०	दि०	घ०	प०
१ शनि	४	६	२७	२२	४९
२ बुध	०	७	२५	२०	२४
३ सूर्य	१	१	२१	५०	४८
४ मंगल	१	१	२१	५०	४८
योग	७	६	६	२४	४९

व० मा० दि० घ० प०
शदि दशा ७- ६- ६- २४-३९
शनि गुणक × २८

१९६	१६८	१६८	१९२	३१२
			४८	७८
१९६	१६८	१६८	६७२	१०८२
+१४	+५	+११	+१८	= २
२१०	१७३	१७९	६९०	
	÷१२	÷३०	=३०	
	= ५	=२९		

= २१०-५-२९-३०-२

४६)२१०-५-२९-३०-२(४ वर्ष
१८४
२६×१२
३१२+५
४६)३१७(६ मा०
२७६
४१×३०
१२३०+२९
४६)१२५९(२७ दिन
९२
३३९
३२२
१७×६०
१०२०+३०
१०५०

४६)१०५०(२२ घं०
९२
१३०
९२
३८×६०
२२८०+२
४६)२२८२(४९पल
१८४
४४२
४१४
२८

=शनि अंतर्दशा व० मा० दि० घ० प०
४- ६- २७-२२-४९

६ मंगल की अंतर्दशा साधन

(१) मंगल की दशा पहिले = मंगल १/१

(२) मंगल के साथ = ०

(३) मंगल के त्रिकोण में सूर्य शुक्र हैं इन में सूर्य बली है। } = सूर्य १/३

(४) मंगल के सप्तम में = ०

(५) ,, ४ में चंद्र बुध है इन में बुध बली है } = बुध १/४

,, ८ में लग्न है = लग्न १/४

बुध और लग्न में लग्न बली है तो लग्न की दशा पहिले होगी बुध की बाद होगी।

मंगल सूर्य लग्न बुध १२ + ४ + ३ + ३

१/१ + १/३ + १/४ + १/४ = १२

गुणक मंगल सूर्य लग्न बुध = २२ योग

१२ ४ ३ ३ भाजक

या मंगल का १/३ सूर्य, १/४ लग्न १/४ बुध है।

व. मा. दि. घ. प.

मंगल अंतर=६–३–९–३१–२७ ÷ ३ सूर्य

=२–१–३–१०–२९ सूर्य अंतर

व. मा. दि. घ. प.

मंगल अंतर=६–३–९–३१–२७ ÷ ४ लग्न

=१–६–२४-५२-५२ लग्न अंतर

=१–६–२४-५२-५२ बुध अंतर

व. मा. दि. घ. प

मंगल वर्ष ११–६–२–२७–४०

मंगल गुणक × १२

१३२	७२	२४	३२४	४८०
+ ६	+ १२	+ ५	+ ८	= ०
१३८	= ०	२९	३३२	
		÷ ३०	= ३२	
		= २९		

= १३८–०–२९–३२–०

२२)१३८–०–२९–३२–० (६ वर्ष

१३२

६ × १२ + ०

२२)७२(३ मा.

६६

६ × ३० + २९

२२)२०९(९ दिन

१९८

११ × ६० + ३२

२२)६९२(३१ घ.

६६

३२

२२

१०

१० × ६०

२२)६००(२७ प.

४४

१६०

१५४

६

= मंगल की अंतर्दशा व. मा. दि. घ. प.

६–३–९–३१–२७

६ मंगल अंतर्दशा चक्र १९

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घ.	पल
१ मंगल	६	३	९	३१	२७
२ सूर्य	२	१	३	१०	२९
३ लग्न	१	६	२४	५२	५२
४ बुध	१	६	२४	५२	५२
योग	११	६	२	२७	४०

७ बुध की अंतर्दशा साधन

(१) बुध की प्रथम दशा = बुध १/१
(२) बुध के साथ चंद्र = चंद्र १/२
(३) त्रिकोण ५ में लग्न = लग्न १/३
(४) बुध से सप्तम में शनि = शनि १/७
(५) ,, ४–८ में = ०

बुध चंद्र लग्न शनि
१/१ + १/२ + १/३ + १/७

४२–२१–१४–६ = योग ८३
४२ भाजक

गुणक बुध चंद्र लग्न शनि भाजक
४२ २१ १४ ६ = ८३

या बुध का १/२ चंद्र, १/३ लग्न, १/७ शनि

बुध अंतर व. मा. दि. घ. प.
०–७– ०–७–३॥ ÷ २ चंद्र
= ०–३–१५–३–३२ चंद्र अंतर

बुध अंतर ०–७– ०–७–३॥ ÷ ३ लग्न
= ०–२–१०–२–२१ लग्न अंतर

बुध अंतर = ०–७–०–७–३॥ ÷ ७ शनि
= ०–१–०–१–०॥ शनि अंतर

---

७ बुध अंतर्दशा चक्र २०

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
१ बुध	०	७	०	७	३॥
२ चंद्र	०	३	१५	३	३२
३ लग्न	०	२	१०	२	२१
४ शनि	०	१	०	१	०॥
योग	१	१	२५	१३	५७

व. मा. दि. घ. प.
बुध वर्ष १–१–२५–१३–५७
बुध गुणक × ४२

४२	४२	५०	२६	११४
		१००	५२	२२८
४२	४२	१०५०	५४६	२३९४
+ ६	+ ३५	+ ९	+ ३९	= ५४
४८	७७	१०५९	५८	
	÷ १२	÷ ३०	= ५४	
	= ५	= ९		

= ४८–५–९–४५–५४
व. मा. दि. घ. प.

८३)४८–५–९–४५–५४(० वर्ष
× १२
५७६ + ५
८३)५८१(७ मास
५८१
० × ३० + ९
८३) ९ (० दिन
× ६०
५४० + ४५
८३) ५८५ (७
५८१
४

४ × ६०
२४० + ५४
८३)२९४(३ प.
२४९
४५

= बुध अंतर्दशा व. मा. दि. घ. प.
०–७–०–७–३॥

८ चंद्र की अंतर्दशा साधन

(१) चंद्र की दशा प्रथम = चंद्र $\frac{१}{१}$

(२) चंद्र के साथ बुध = बुध $\frac{१}{२}$

(३) ,, त्रिकोण ५ में लग्न=लग्न $\frac{१}{३}$

(४) ,, सप्तम में शनि = शनि $\frac{१}{७}$

(५) ,, ४-८ में = ०

चंद्र बुध लग्न शनि

$\frac{१}{१}+\frac{१}{२}+\frac{१}{३}+\frac{१}{७}$

$=\frac{४२+२१+१४+६}{४२}$ =योग ८३ भाजक

गुणक चंद्र बुध लग्न शनि

४२, २१, १४, ६ = ८३ भाजक

या चंद्र का $\frac{१}{२}$ बुध, $\frac{१}{३}$ लग्न, $\frac{१}{७}$ शनि

व. मा. दि. घ. प.

चंद्र अंतर २-८- ४ - १४-४६ ÷ २ बुध

= १-४- २ - ७ -२३ बुध अंतर

चंद्र अंतर = २-८- ४ - १४-४६ ÷ ३ लग्न

= ०-१०-२१-२४-५५ लग्न अंतर

चंद्र अंतर =२-८४-१४-४६ ÷ ७ शनि

= ०-४-१७-४४-५८ शनि अंतर

चंद्र अंतर्दशा चक्र २१

ग्रह	वर्ष	मा.	दिन	घ.	पल
१ चंद्र	२	८	४	१४	४६
२ बुध	१	४	२	७	२३
३ लग्न	०	१०	२१	२४	५५
४ शनि	०	४	१७	४४	५८
योग	५	३	१५	३२	२

व. मा. दि. घ. प.

चंद्र वर्ष ५-३- १५-३२-३

चंद्र गुणक × ४२

२१०	१२६	६३०	६४	१२६
			१२८	
२१०	१२६	६३०	१३४४	१२६
+१२	+२१	+२२	+२	÷६०
२२२	१४७	६५२	१३४६	=६
	÷१२	÷३०	=२६	
	=३	=२२		

=२२२-३-२२-२६-६

८३) २२२-३-२२-२६-६ (२ वर्ष
१६६
५६ × १२
६७२ + ३
८३) ६७५ (८ मा.
६६४
११ × ३०
३३० + २२
८३) ३५२ (४ दिन
३३२
२० × ६० + २६
८३) १२२६ (१४ घड़ी
८३
३९६
३३२
६४

६४ × ६०
३८४०
+ ६
८३) ३८४६ (४६ प.
३३२
५२६
४९८
२८

व. मा. दि. घ. प.

=चंद्र की अंतर दशा २-८-४-१४-४६

भिन्नायु दशा की अंतर्दशा का चक्र २२

(चक्र १५ से २१ तक का संग्रह)

	सूर्य में अंतर					लग्न में अंतर				शुक्र में अंतर					गुरु में	शनि में अंतर				
	सूर्य	शुक्र	मंगल	लग्न	योग	लग्न	बुध	गुरु	योग	शुक्र	सूर्य	मंगल	लग्न	योग	अंतर	शनि	बुध	सूर्य	मंगल	योग
वर्ष	६	३	२	१	१४	११	३	२	१८	२	१	०	०	४	०	४	०	१	१	७
मास	१०	५	३	८	३	६	१०	१०	३	०	०	८	६	३	०	६	७	१	१	६
दिन	५	२	११	१६	६	२५	८	२१	२६	१५	७	५	३	२	०	२७	२५	२१	२१	६
घटी	३५	४७	५१	२३	३९	५८	३९	२९	७	४२	५१	१४	५५	४२	०	२२	२०	५०	५०	२४
पल	४४	५२	२५	५६	२७	३७	३२	३९	४८	७	३	२	३२	४४	०	४९	२४	४८	४८	४९

	मंगल में अंतर					बुध में अंतर					चंद्र में अंतर					सर्व आयु
	मंगल	सूर्य	लग्न	बुध	योग	बुध	चंद्र	लग्न	शनि	योग	चंद्र	बुध	लग्न	शनि	योग	योग
वर्ष	६	२	१	१	११	०	०	०	०	१	२	१	०	०	५	६२
मास	३	१	६	६	६	७	३	२	१	१	८	४	१०	४	३	३
दिन	९	३	२४	२४	२	०	१५	१०	०	२५	४	२	२१	१७	१५	२५
घटी	३१	१०	५२	५२	२७	७	३	२	१	१३	१४	७	२४	४४	३२	८
पल	२७	२९	५२	५२	४०	३॥	३२	२१	॥	५७	४६	२३	५४	५८	२	१८

समुदाय आयु दशाविभाग साधन

समुदाय आयु में एकत्र आयु निकलती हैं। भिन्नायु के विचार से समुदाय आयु दशाविभाग प्रत्येक ग्रह का निकालने के लिये इस प्रकार गणित करते हैं कि इतनी भिन्नायु योग में समुदाय आयु इतनी होती है तो ग्रह की यदि भिन्नायु इतनी है तो उस प्रमाणसे दशा विभाग आयु कितनी होगी ?

इस के लिये (ग्रह समुदाय आयु ग्रह भिन्नायु) + भिन्नायु योग = ग्रह की दशा विभाग आयु।

गणित की सुविधा के लिये सब के वर्ष आदि के पल बनाकर गुणा भाग करना चाहिए। उत्तर पल में आयगा, उसके वर्ष आदि बना लेना चाहिए।

प्रत्येक ग्रह की लग्न सहित इस प्रकार दशा विभाग आयु निकाल कर योग करने से समुदाय आयु के बराबर योग आता है। केवल कुछ घड़ी पल का अंतर योग में कभी २ आता है। क्यों कि गुणनफल में भिन्नायु योग का भाग देने पर नीचे शेष पल का कुछ भाग बच रहता है। उदाहरण आगे दिया है।

ग्रह भिन्नायु के पल चक्र २३

ग्रह	वर्ष	मा.	दिन	घ.	पल	सब के पल
सूर्य	१४	३	६	३९	२७	१८४६१९६७
चंद्र	५	३	१५	३२	३	६८५९९२३
मंगल	११	६	२	२७	४०	१४९१२८६०
बुध	१	१	२५	१३	५७	१४९४८३७
गुरु	०	०	०	०	०	०
शुक्र	४	३	२	४२	४४	५५१७७६४
शनि	७	६	६	२४	३९	९७४३०७९
लग्न	१८	३	२६	७	४८	२३७४६०६८
योग	६२	३	२५	८	१८	८०७६६४९८
समुदाय आयु	६२	१	१६	३४	३१	८०५१९६७१

समुदाय आयु में ग्रह भिन्नायु का गुणा कर भिन्नायु योग का भाग देना है इस के लिये सब के पल बना लेते हैं।

समुदाय आयु

व. मा. दि. घ. प.

६२-१-१६-३४-३१
×१२
———
७४४+१
=७४५×३०
=२२३५०+१६
=२२३६६
=२२३६६×६०
=१३४१९६०+३४
=१३४१९९४×६०
=८०५१९६४०+३१
=८०५१९६७१
पल

भिन्नायु योग

व. मा. दि. घ. प.

६२-३-२५-८-१८
×१२
———
७४४+३
=७४७×३०
=२२४१०+२५
=२२४३५×६०
=१३४६१००+८
=१३४६१०८+६०
=८०७६६४८०×१८
=८०७६६४९८
पल

सूर्य

व. मा. दि. घ. प.

१४-३-६-३९-२७
×१२
———
१६८+३
=१७१×३०
=५१३०+६
=५१३६×६०
=३०८१६०+३९
=३०८१९९×६०
=१८४९१९४०+२७
=१८४९१९६७
पल

२ चंद्र

व० मा० दि० घ० प०

५-३-१५-३२-३
×१२
———
६०+३
=६३×३०
=१८९०+१५
=१९०५×६०
=११४३००+३२
=११४३३२×६०
=६८५९९२०+३
=६८५९९२३
पल

३ मंगल

व०मा०दि०घ०प०

११-६-२-२७-४०
×१२
———
१३२+६
=१३८×३०
=४१४०+२
=४१४२×६०
=२४८५२०+२७
=२४८५४७×६०
=१४९१२८२०+४०
=१४९१२८६०
पल

४ बुध

व०मा०दि०घ०प०

१-१-२५-१३-५७
×१२
———
१२+१
=१३×३०
=३९०+२५
=४१५×६०
=२४९००+१३
=२४९१३×६०
=१४९४७८०+५७
=१४९४८३७
पल

५ शुक्र

व०मा०दि०घ०प०

४-३-२-४२-४४
×१२
———
४८+३
=५१×३०
=१५३०+२
=१५३२×६०
=९१९२०+४२
=९१९६२×६०
=५५१७७२०+४४
=५५१७७६४
पल

६ शनि

व०मा०दि०घ०प०

७-६-६-२४-३९
×१२
———
८४+६
=९०×३०
=२७००+६
२७०६
२७०६×६०
=१६२३६०+२४
=१६२३८४×६०
=९७४३०४०+३९
=९७४३०७९
पल

७ लग्न

व०मा०दि०घ०प०

१८–३–२६–७–४८ ६५९६ × ६०
× १२ =३९५७६० + ७
२१६ + ३ =३९५७६७ × ६०
=२१९ × ३० =२३७४६०२० + ४८
=६५७० + २६ =२३७४६०६८
=६५९६ पल

दशा विभाग आयु साधन

८०७६६४९८)१४८८९६७०९८९८२८५७(१८४३५४५४ पल

१ सूर्य समुदाय आयु ८०५११६६७१
× सूर्य भिन्नायु १८४९११९६७
५६३६६३७६६९७
४८३११८०२६
७२४६७७०३९
८०५११६६७१
७२४६७७०३९
३२२०७८६८४
६४४१५७३६८
८०५११६६७१
१४८८९६७०९८९८२८५७
÷ ८०७६६४९८ भिन्नायु योग
= व० मा० दि० घ० प०
१४–२–२०–५७–३४
सूर्य की दशा विभाग आयु

८०७६६४९८
६८१३०२११८
६४६१३१९८४
३५१७०१३४९
३२३०६५९९२
२८६३५३५७८
२४२२९९४९४
४४०५४०८४२
४०३८३२४९०
३६७०८३५२८
३२३०६५९९२
४४०१७५३६५
४०३८३२४९०
३६३४२८७५७
३२३०६५९९२
४०३६२७६५

३०)५१२०(१७०
३०
२१२
२१०
२० दिन

१२)१७०(१४ वर्ष
१२
५०
४८
२ मास

६०)१८४३५४५४(३०७२५७
१८०
४३५
४२०
१५४
१२०
३४५
३००
४५४
४२०
३४ पल

६०)३०७२५७(५१२०
३००
७२
६०
१२५
१२०
५७ घड़ी

२ चंद्र

समुदाय आयु ८०५११६७१

× चंद्र भिन्नायु ६८५९९२३

२४१५५९०१३
१६१०३९३४२
७२४६७७०३९
७२४६७७०३९
४०२५९८३५५
६४४१५७३६८
४८३११८०२६

५५२३५८७४३०४५३३३

÷८०७६६४९८ भिन्नायु योग

=वर्ष मा. दि. घ. प.

५– ३– ९–४२–३८

८०७६६४९८)५५२३५८७४३०४५३३३(६८३८९५८ पल

४८४५९८९८८
६७७५९७५५०
६४६१३१९८४
३१४६५५६६४
२४२२९९४९४
७२३५६१७०५
६४६१३१९८४
७७४२९७२१३
७२६८९८४८२
४७३९८७३१३
४०३८३२४९०
७०१५४८२३३
६४६१३१९८४
५५४१६२४९

चंद्र की दशा विभाग आयु

३०)१८९९(६३
१८०
९९
९०
९ दिन

१२)६३(५
६० वर्ष
३ मास

६०)६८३८९५८(११३९८२
६०
८३
६०
२३८
१८०
५८९
५४०
४९५
४८०
१५८
१२०
३८ पल

६०)११३९८२(१८९९
६०
५३९
४८०
५९८
५४०
५८२
५४०
४२ घड़ी

३ मंगल ८०७६६४९८)१२००७७८५८०८६९०६०(१४८६७२८५ पल

समुदाय आयु ८०५१९६७१
× मंगल भिन्नायु १४९१२८६०

०००१०००००
४८३११८०२६
६४४१५७३६८
१६१०३९३४२
८०५१९६७१
७२४६७७०३९
३२२०७८६८४
८०५१९६७१

१२००७७८५८०८६९०६०

÷८०७६६४९८ भिन्नायु योग

वर्ष मा. दिन घ. प.
११– ५–१९–४८–५

८०७६६४९८
३९३११३६००
३२३०६५९९२
७००४७६०८८
६४६१३१९८४
५४३४४१०४६
४८४५९८९८८
५८८४२०५८९
५६५३६५४८६
२३०५५१०३०
१६१५३२९९६
६९०१८०३४६
६४६१३१९८४
४४०४८३६२०
४०३८३२४९०
३६६५११३०

मंगल की दशा विभाग आयु

६०)१४८६७२८५(२४७७८८
१२०
२८६
२४०
४६७
४२०
४७२
४२०
५२८
४८०
४८५
४८०
५ पल

६०)२४७७८८(४१२९
२४०
७७
६०
१७८
१२०
५८८
५४०
४८ घड़ी

३०)४१२९(१३७
३०
११२
९०
२२९
२१०
१९ दिन

१२)१३७(११
१२ वर्ष
१७
१२
५ मास

४ बुध. ८०७६६४९८)१२०३६३७८३४३८६२७(१४९०२६८पल

समुदाय आयु ८०५११९६७१
× बुध भिन्नायु १४९४८३७
५६३६३७६१७
२४१५५९०१३
६४४१५७३६८
३२२०७८६८४
७२४६७७०३९
३२२०७८६८४
८०५११९६७१
१२०३६३७८३४३८६२७
÷ ८०७६६४९८ भिन्नायु योग

८०७६६४९८
३९५९७२८५४
३२३०६५९९२
७२९०६८६२३
७२६८९८४८२
२१७०१४१८६
१६१५३२९९६
५५४८११९०२
४८४५९८९८८
७०२१२९१४७
६४६१३१९८४
५५९९७१६३

= वर्ष मास दिन घ. प.
१-१-२३-५७-४८
बुध की दशा विभाग आयु

६०)१४९०२६८(२४८३७
१२०
२९०
२४०
५०२
४८०
२२६
१८०
४६८
४२०
४८पल

६०)२४८३७(४१३
२४०
८३
६०
२३७
१८०
५७घड़ी

३०)४१३(१३
३०
११३
९०
२३दिन

१२)१३(१वर्ष
१२
१मास

५ गुरु ०——०——०

६ शुक्र　　८०७६६५९८)५५५२८८५५१९३५६५५(५५००९०१पल
समुदाय आयु ८०५१९६७१　　५०३८३२५९०
× शुक्र भिन्नायु५५१७७६५　　४०५५६०५१९
३२२०७८६८५　　५०३८३२५९०
४८३११८०२६　　०७२८०२९३५६
५६३६३७६९७　　७२६८९८५८२
५६३६३७६९७　　११३०८७५५४
८०५१९६७१　　८०७६६५९८
५०२५९८३५५　　३२३२०९५६
४०२५९८३५५　　६०)५५००९०१(९१६८१
५५५२८८५५१९३५६५५　　५४०　　६०)९१६८१(१५२८
÷ ८०७६६५९८भिन्नायु योग　　१००　　६०
= वर्ष. मा. दि. घ. प.　　६०　　३१६　　३०)१५२८(५०
५-२-२८-१-४१　　४०९　　३००　　१५०
शुक्र की दशा विभाग आयु　　३६०　　१६८　　२८दिन
४९०　　१२०　　१२)५०(४वर्ष
४८०　　४८१　　४८
१०१　　४८०　　२मास
६०　　१घड़ी
४१पल

७ शनि　　८०७६६५९८)७८५५०९५१५६०७००९(९७१३३०३ पल
समुदाय आयु ८०५१९६७१　　७२६८९८५८२
× शनि भिन्नायु ९७५३०७९　　५७६११०३३६
७२५६७७०३९　　५६५३६५५८६
५६३६३७६९७　　१०७४५८५००
०००००००००　　८०७६६५९८
२५१५५९०१३　　२६६८२००२७
३२२०७८६८४　　२५२२९९५९५
५६३६३७६९७　　२४५२०५३३०
७२५६७७०३९　　२५२२९९४९४
७८५५०९५१५६०७००९　　२९०५८३६०९
+ ८०७६६५९८ भिन्नायु योग　　२५२२९९४९५
५८२८५११५

= वर्ष मा. दि. घ. प. ६०)९७१३३०३(१६१८८८
७–५–२८–८–२३ ६०
शनि कां दशा विभाग आयु ३७१ ३०)२६९८(८९
३६० ६०)१६१८८८(२६९८ २४०
११३ १२० २९८
६० ४१८ २७०
५३३ ३६० २८ दिन
४८० ५८८ १२)८९(७ वर्ष
५३० ५४० ८४
४८० ४८८ ५ मास
५०३ ४८०
४८० ८ घड़ी
२३ पल

- लग्न ८०७६६४९८)१९१२०२५५८२९०३६२८(२३६७३४९८
समुदाय आयु ८०५१९६७१ १६१५३२९९६
× लग्न भिन्नायु २३७४६०६८ २९६६९५६२२
६४४१५७३६८ २४२२९९४९४
४८३११८०२६ ५४३९६१२८९
००००००००० ४८४५९८९८८
४८३११८०२६ ५९३६२३०१०
३२२०७८६८४ ५६५३६५४८६
५६३६३७६९७ २८२५७५२४३
२४१५५९०१३ २४२२९९४९४
१६१०३९३४२ ४०२७५७४९६
१९१२०२५५८२९०३६२८ ३२३०६५९९२
÷८०७६६४९८ भिन्नायु योग ७९६९१५०४२
= वर्ष मा. दि. घ. प. ७२६८९८४८२
१८–३–५–५८–१८ ७००१६५६०८
लग्न की दशा विभाग आयु ६४६१३१९८४
५४०३३६२४

६०) २३६७२४९८ (३९४५५८
१८०
५६७
५४०
२७२
२४०
३३४
३००
३४९
३००
४९८
४८०
१८ पल

१२) २१९ (१८ वर्ष
१२
९९
९६
३ मास

६०) ३९४५५८ (६५७५
३६०
३४५
३००
४५५
४२०
३५८
३००
५८ घड़ी

३०) ६५७५ (२१९
६०
५७
३०
२७५
२७०
५ दिन

गणित की सुविधा के लिये समुदाय आयु गुणक और भिन्नायु योग भाजक के पलों में २ से लेकर ९ तक अंकों का गुणा कर पृथक् रख लेना चाहिए जिसके सहारे बड़ी संख्याओं का गुणा भाग करने में बड़ी सरलता होती है।

दशा विभाग आयु चक्र २४

ग्रह	वर्ष	मास	दि.	घ.	पल
सूर्य	१४	२	२०	५७	३४
चंद्र	५	२	९	४२	३८
मंगल	११	५	१९	४८	५
बुध	१	१	२३	५७	४८
गुरु	०	०	०	०	०
शुक्र	४	२	२८	१	४१
शनि	७	५	२८	८	२३
लग्न	१८	३	५	५८	१८
योग	६२	१	१६	३४	२७
समुदाय आयु	६२	१	१६	३४	३१

३ मिश्रायु

(ग्रह भिन्नायु × समुदाय आयु का दशा विभाग आयु) ÷ २ = मिश्रायु

ग्रह भिन्नायु और दशा विभाग आयु का योग कर आधा कर लेने से मिश्रायु बन जाती है।

अगले अध्याय में पिंडायु आदि त्रिक आयु की मिश्रायु निकालना बताया है।

अध्याय २६

मिश्रायु विचार

अध्याय २६ में अंशायु और अध्याय २७ में पिंडायु, निसर्गायु, और जीवायु बनाई गई है इन में से किस प्रकार की आयु कब ग्रहण करना और कब मिश्रायु निकालना इस का निर्णय आगे दिया है।

(१) पहिले यह विचार करना कि लग्न चंद्र और सूर्य इन तीनों मेंसे कौन बलवान है।

(अ) लग्न बली हो तो = अंशायु को ग्रहण करना

(ब) सूर्य " " = पिंडायु " "

(क) चंद्र " " = निसर्गायु " "

(२) इन तीनों में से दो का बल तुल्य हो तो=(दोनों आयु का योग) ÷ २

(अ) यदि लग्न रवि का तुल्य बल=(अंशायु × पिंडायु) ÷ २

(ब) " लग्न चंद्र " " =(अंशायु × निसर्गायु) ÷ २

(क) " रवि चंद्र " " =(पिंडायु × निसर्गायु) ÷ २

(३) यदि तीनों का बल (रवि, चंद्र, लग्न का) तुल्य हो तो तीनों की आयु को अपने २ बल से गुणा कर सब का योग करना और तीनों के बल के योग से भाग देना। या तीनों आयु के योग का तृतीयांश ग्रहण करना।

(४) यदि तीनों बल हीन हों तो=जीवशर्मोक्त आयु ग्रहण करना। तुल्य बल का अर्थ =यहाँ बल की तुलना में दोनों या तीनों अधिक बली हों तो तुल्य बल समझे जाते हैं।

बल विचार-पूर्ण बली = षड्बल में ६ रूप(अंश)से अधिक बल हो।

मध्यबली= " ३ अंश से ६ अंश तक बल हो।

हीन बली= " ३ अंश से अल्प बल हो।

आचार्यों ने आयु ४ प्रकार की कही है और भी अपने २ मत से भिन्न २ प्रकार को आयु कही गई है परन्तु सत्याचार्योक्त अंशायु को बहुत आचार्यों ने स्वीकार किया है और उसे प्रामाणिक माना है।

आयु घट-बढ़ होने का कारण

धर्मिष्ठ, सुशील, पथ्य भोजी योगी मनुष्य को पूर्ण आयु मिलती है। योग क्रिया आदि से धर्मिष्ठ की आयु बढ़ जाती है परन्तु पापी आदि मनुष्यों को पूर्ण आयु नहीं मिलती। पाप के कारण आयु घट जाती है।

मिश्रायु

उपरोक्त विचार कर दो या अधिक आयु के योग से जो आयु साधन की जाती है वह मिश्रायु कहलाती है।

आयु गणना—आयु के वर्षादि सौर वर्ष के हैं। वर्ष की गणना सौर मान से होती है। इस कारण नक्षत्र या सावन मान से आयु के वर्ष की गणना नहीं करना।

परम आयु-मनुष्य की १२० वर्ष ५ दिन। हाथी बाघ भेड़ १६ वर्ष, बैल भैंस २४ वर्ष। ऊंट गधा २५ वर्ष। कुत्ता १२वर्ष। घोड़ा ३२ वर्ष।

घोड़ा आदि की परम आयु मनुष्यवत् साधन की जाती है। फिर उसको अपनी २ परम आयु से गुणा कर मनुष्य की परम आयु से भाग देने से जो लब्धि वर्ष आदि प्राप्त हों वह स्फुट आयु घोड़ा आदि की होगी।

जैसे कुत्ते की आयु निकालनी है। मान लो पूर्व बताई हुई रीति से आयु ९० वर्ष आई। कुत्ते की परम आयु १२ वर्ष से ९० को गुणा कर मनुष्य की परम आयु १२० वर्ष ५ दिन से भाग दो। (९० × १२वष) ÷ १२०वर्ष ५दिन = लगभग ९ वर्ष की आयु निकली। इतनी आयु कुत्ते की होगी। इसी प्रकार किसी भी प्राणी की आयु निकाली जा सकती है।

मिश्रायु साधन

पहिले जो ४ प्रकार की आयु साधन की हैं उनमें से कौन२ आयु ग्रहण करना इसका विचार करने के लिये सूर्य, चंद्र और लग्न के बल का विचार करेंगे।

लग्न बल = ७-३२-४९ = पूर्णबली
सूर्य ,, = ५-५१- ३ = मध्यबली
चंद्र ,, = ७-२६-१० = पूर्णबली
} सूर्य चंद्र बल अध्याय २२ के अन्त में और लग्न बल अध्याय २३ के अन्त में दिया है।

यहाँ लग्न और चंद्र का बल ६ रूप से अधिक होने से दोनों पूर्ण बली हुए। इस कारण लग्न और चंद्र दोनों की आयु लेंगे।

लग्न = अंशायु
चंद्र = निसर्गायु
} इन दोनों की आयु का योग कर आधा कर देने से ग्रह की मिश्रायु निकल आयगी।

परन्तु केशवाचार्य ने भिन्न प्रकार से मिश्रायु साधन करना बताया है।

केशवाचार्य के मत से मिश्रायु साधन करने की रीति

इस में मिश्रायु निकालने के लिये दो चक्र बनाने पड़ते हैं।

(१) अंशायु × लग्न बल का चक्र

(२) निसर्गायु × चंद्र बल का चक्र

लग्न का अंशायु से सम्बंध है और चंद्र का निसर्गायु से सम्बंध है। इस कारण तत्सम्वंधी बल से गुणा करना पड़ता है।

गुणा करने के प्रथम अर्थात् अंशायु से लग्न बल का और नैसर्गिक आयु का चंद्र बल से गुणा करने के पहिले अंशायु और निसर्ग आयु के वर्ष मास आदि के दिन घटी पल बना लेना चाहिए। फिर तत्सम्वंधो बल से(अंशायु × लग्न बल और निसर्गायु × चंद्र बल) गुणाकर दोनों के गुणनफल को जोड़ देना। उपरांत इस योग फल दिन आदि के पल बना लेना और तत्सम्वंधी दोनों बल (लग्न बल + चंद्र बल) का पृथक् योग कर उन के विकला बनाकर इन विकलाओं का भाग गुणनफल के आयु योग के पलों में देने से उत्तर दिन घड़ी पल में निकलेगा वही मिश्रायु होगी। दिनों के वर्ष आदि बना लेना चाहिए वे मिश्रायु के वर्ष आदि होंगे। इस प्रकार लग्न सहित सब ग्रहों की मिश्रायु निकालना। प्रत्येक ग्रह और लग्न की आयु का योग करने से जातक की गणितागत आयु निकल आती है।

संक्षेप में रीति

प्रथम अंशायु और निसर्गायु के वर्ष आदि को दिन घटी पल में बना लेना।

उपरांत (१) ग्रह या लग्न अंशायु × लग्न बल अंशादि=लग्न बल गुणित अंशायु।
(दिन घड़ी पल)

(२) ग्रह या लग्न निसर्गायु × चंद्र बल= + चंद्र बल गुणित निसर्गायु
(दिन घड़ी पल) (अंशादि)

दोनों का योग=आयु योग (दिन घटी पल)

आयु योग दिन घटी पल ÷ बल योग अंशादि
,, के पल ÷ ,, विकला
=मिश्रायु दिन घटी पल=(दिन के वर्ष आदि बनालो)

टिप्पणी—इस उदाहरण में लग्न और चंद्र बली होने से अंशायु और निसर्गायु लिया है परन्तु भिन्न प्रकार से अन्य ग्रह बली हों तो उनके सम्बंध की आयु ग्रहण करना। जैसे सूर्य और चंद्र बली हों तो पिंडायु और निसर्ग आयु लेना या लग्न और सूर्य बली हो तो अंशायु और पिंडायु लेना जिसका विचार ऊपर दिया है।

मिश्रायु साधन

ग्रह	आयु वर्ष में चक्र १ अंशायु अध्याय २६ के चक्र २७ से	आयु दिन में	ग्रह	आयु वर्ष में चक्र २ निसर्गायु अध्याय २७ के चक्र १० से	आयु दिन में
	वर्ष मास दि. घ. प	दिन घ. प.		वर्ष मा. दिन घ. प.	दिन घ. प.
१ सूर्य	१५–७–२०–९–३६	=५६३०–९–३६	१ सूर्य	१४–०–१२–१८–०	=५०५२–१८–०

× १२
१८० + ७ = १८७ × ३०
= ५६१० + २०
= ५६३० दिन

× १२
१६८ + ० = १६८ × ३०
= ५०४० + १२
= ५०५२ दिन

२ चंद्र ४-७-१४-४२-०=१६६४-४२-०

×१२

४८+७=५५×३०

=१६५०+१४

=१६६४ दिन

२ चंद्र ०-५-२८-४५-५१=१७८-४५-५१

×३०

१५०+२८

=१७८ दिन

३ मंगल २-११-१३-४८-०=१०६३-४८-०

×१२

२४+११=३५×३०

=१०५०+१३

१०६३ दिन

३ मंगल १-४-२३-४-४=५०३-४-४

×१२

१२+४=१६×३०

=४८०+२३

=५०३ दिन

४ बुध ६-०-१३-१-१२=२१७३-१२

×१२

७२+०=७२×३०

=२१६०+१३

=२१७३ दिन

४ बुध ४-११-१८-३-२०=१७८८-३-२०

×१२

४८+१ =४९×३०

=१७७०+१८

=१७८८ दिन

५ गुरु ९-२-१२-२१-३६=३३१२-११-३६

×१२

१०८+२=११०×३०

=३३००+१२

=३३१२ दिन

५ गुरु ९-९-२२-३१-१२=३५३२-३१-१२

×१२

१०८+९=११७×३०

=३५१०+२२

=३५३२ दिन

६ शुक्र २३-४-२४-४५-०=८४२४-४५-०

×१२

२७६+४=२८०×३०

=८४००+२४

=८४२४ दिन

६ शुक्र १५-६-१५-०-२०=५५९५-०-२०

×१२

१८०+६=१८६×३०

=५५८०+१५

=५५९५ दिन

७ शनि ५-५-२८-२२-४८=१९७८-२२-४८

×१२

६०+५=६५×३०

=१९५०+२८

=१९७८ दिन

७ शनि २९-२-२५-८-२०=१०५२५-८-२०

×१२

३४८+२=३५०×३०

=१०५००+२५

=१०५२५ दिन

८ लग्न १४-१-२६-१६´-०=५०९६-१६-० ८ लग्न ०-१-२०-४३-४८=५०-४३-४८

×१२
१६८+१=१६९×३०
=५०७०+२६
=५०९६ दिन

×३०
३०+२०=५०
=५० दिन

चंद्र बल ७°-२६′-१०″
+लग्न बल ७-३२-४९
बल योग = १४-५८-५९
= ५३९३९ विकला भाजक

बल योग १४°-५८′-५९″
×६०
८४०+५८=८९८
८९८×६०=५३८८०+५९
=५३९३९″ बलयोग

यह बल योग सब ग्रहों के आयु योग का भाजक होगा।

मिश्रायु = आयु योग के पल भाज्य ÷ बल योग विकला भाजक
= मिश्रायु दिन घड़ी पल

अंशायु × लग्नबल दि. घ. प.

(१) सूर्य अंशायु दिन=५६३०-९-३६
×लग्न बल= ७-३२-४९

२९ २४
७ २१
५०६७०
२२५२०

= — — — —

१९ २
४ ४८
११२६०
१६८९०

— — — —

१ ४ १२
३९४१० ३

— — — —

३९४११ १८०१७१ २७५९५७ २ २४
+३०७९ +४५९९ =१७
४२४९० १८४७७०
=२०

दिन घ. प.
=४२४९०-२०-१७
सूर्य अंशायु गुणित लग्न बल

निसर्गायु × चंद्रबल		दि. घ. प.
सूर्य निसर्गायु		५०५२–१८–०
× चंद्र बल		७–२६–१०

० ०
०
३
५०५२०

——————————

० ०
७ ५८
३०३१२
१०१०४

——————————

२ ० ०
३५३६४ ६

——————————

३५३६६	१३१३६५	५०५७१	०	०
+२२०३	+८४२	=५१		
३७५६९	१३२२०७			
	=२७			

दिन घ. प.
= ३७५६९–२७–५१
रवि नैसर्गिक आयु गुणित चंद्र बल

दिन घ. प.	बल योग विकला ५३९३९
रवि अंशायु गुणित लग्न बल	दिन घ० प०
=४२४९०–२०–१७	=५२४३–२१–२२ मिश्रायु रवि की
+ रवि निसर्गायु × चंद्रबल=३७५६९-२७-५१	मास दिन घ० प०
आयु योग = ८००५९–४८–८	= १७८–३–२१–२२ ,, ,,
८००५९–४८–८	वर्ष मा० दि० घ०
× ६०	=१४–१०–३–२१–२२ ,, ,,
४८०३५४० + ४८=४८०३५८८ × ६०	रवि की मिश्रायु
=२८८२१५२८० + ८=२८८२१५२८८ पल	व० मा० दि० घ० प०
आयुयोग पल २८८२१५२८८	१४–१०–३–२१–२२

आयु योग

५३९३९)२८८२१५२८८(५३४३ दिन

बलयोग २६९६९५

१८५२०२

१६१८१७

२३३८५८

२१५७५६

१८१०२८

१६१८१७

१९२११ × ६०

५३९३९)११५२६६०(२१ घड़ी

१०७८७८

७३८८०

५३९३९

१९९४१ × ६०

५३९३९)११९६४६०(२२ पल

१०७८७८

११७६८०

१०७८७८

९८०२

दिन घ. प.

(२) चंद्र अंशायु १६६४–४२–०

× लग्न बल ७–३२–४९

० ०

३४ १८

१४९७६

६६५६

० ०

२२ २४

३३२८

४९९२

४ ० ०

११६४८ ५४

११६५२ ५३३२४ ८१५९४ १८ ०

+९११ + १३५९ = ५४

१२५६३ ५४६८३

= २३

दिन घ. प.

= १२५६३–२३–५४

चंद्र अंशायु × लग्नबल

	दि. घ. प.
चंद्र निसर्गायु	१७८-४५-५१
× चंद्र बल	७-२६-१०

८ ३०
७ ३०
१७८०

२२ ६
१९ ३०
१०६८
३५६

५ ५ ५७
१२४६ १५

१२५१ ४६६७ १८९६ ४४ ३०
+७८ +३१ =३६
१३२९ ४६९८
=१८

दिन घ. प.
१३२९-१८-३६
चंद्र निसर्गायु × चंद्र बल

दि० घ० प०
चंद्र अंशायु × लग्न बल १२५६३-२३-५४
+ चंद्र निसर्गायु × चंद्र बल १३२९-१८-३६
आयु योग = १३८९२-४२-३०

दिन घ० प०
१३८९२-४२-३०
× ६०
८३३५२० + ४२ = ८३३५६२ × ६०
= ५००१३७२० + ३०
= ५००१३७५०पल

आयु योग ५००१३७५० पल
बल योग ५३९३९बिकला
दिन घ० प०
=९२७-१३-४० चंद्र मिश्रायु
मास दिन घड़ी पल
=३०-२७-१३-४० ,, ,,
वर्ष मा० दि० घ० प० ,, ,,
२- ६-२७-१३-४०

५३९३९)७३८०२०(१३घड़ी
५३९४९
१९८४३०
१६१८१७
३६६१२ × ६०
५३९३९)२१९६७८०(४०पल
२१५७५६
३९२२०

५३९३९)५००१३७५०(९२७दिन
४८५४५१
१४६८६५
१०७८७८
३८९८७०
३७७५७३
१२२९७ × ६०

चंद्र मिश्रायु = वर्ष मा० दि० घ० प०
२—६—२७—१३—४०

(३) मंगल अंशायु दि० घ० प० १०६३—८—०
× लग्न बल ७—३२—४९

० ०
३९ १२
९५६७
४२५२

० ०
२५ ३६
२१२६
३१८१

० ०
५ ३६
७४४१

७४४६ | ३४०७७ | ५२३६१ | १२ | ०
+५८२ | +८६९ | = २२
८०२८ | ३४९४६
= २६

दिन—घ.—प.
= ८०१८—२६—२२ मंगल अंशायु × लग्न बल

मंगल निसर्गायु दि० घ० प० ५०३— ४—४
× चंद्र बल ७—२६—१०

४०
० ०
५०३० | ४०

१ | ४४
१ ४४
३०१८
१००६

३५२१ | २८ | २८

३५२१ | १३१०७ | ५१०४ | २४ | ४०
+२१९ | +८५ | = ४
३७४० | १३१९२
= ५२

दिन—घ. पल
= ३७४०—४२—४
मंगल निसर्गायु × चंद्र बल

दि० घ० प०
मंगल अंशायु × लग्न बल=८०२८-२६-२२
+ ,,निसर्गायु × लग्न बल२७३०-५२—४
आयु योग = ११७६९-१८-२६

५३९३९)४२३६९५०६(७८५दिन
३७७५७२
४६१२२०
४३१५१२
२९७०८६
२६९६९५
२७३९१

दि० घ० प०
११७६९-१८-२६
×६०
७०६१४०+१८=७०३१ ८×६०
=४२३६९४८०+२६
=४२३६९५०६=आयु योग पल

आयु योग ४२३६९५०६पल
बल योग ५३९३९विकला

दिन घ० प० मंगल मिश्रायु
=७८५-३०-२८
मास दिन घ० पल
=२६-५-३०-२८= „
वर्ष मा० दि० घ० प०
=२- २- ५-३०-२८= „

२७३९१×६०
५३९३९)१६४३४६०(३०घड़ी
१६१८१७
२५२९०×६०
५३९३९)१५१७४००(२८पल
१०७८७८
४३८६२०
४३१५१२
७१०८

=मंगल मिश्रायु व० मा० दि० घ० प०
२- २ -५ -३०-२८

	दिन	घ०	प०
(४) बुध अंशायु	२१७३-	१-	१२
×लग्न बल	७-	३२-	४९

			९	४८
		०	४६	
		१९५५७		
		८६९२		
		६	२४	
	०	३२		
	४३४६			
	६५१९			
	१	२४		
०	७			
१५२११				
१५२११	६९५४४	१०६५४०	२२	४८
+११८८	+१७७५	=४०		
१६३९९	७१३१९			

=३९
=१६३९९-३९-४०

	दि०	घ०	प०
बुध निसर्गायु	१७८८-	३ -	२०
×चंद्र बल	७-	२६ -	१०

			५	०
		०	३०	
		१७८८०		
		१३	०	
	१	१८		
	१०७२८			
	३५७६			
	३	३०		
०	२१			
१२५१६				
१२५१६	४६५१३	१७९४१	३५	०
+७८०	+२९९	=१		
१३२९६	४६८१२			

=१२
=१३२९६-१२-१

दि. घ. प.

=बुध अंशायु × लग्न बल=१६३९९-३९-४०

बुध अंशायु × लग्न बल १६३९९-३९-४०

+ बुध निसर्गायु × चंद्र बल १३२९६-१२-१

आयु योग=२९६९५-५१-४१

दिन घ. प.

२९६९५-५१-४१

× ६०

१७८१७०० + ५१ = १७८१७५१ × ६०

= १०६९०५०६० + ४१

= १०६९०५१०१पल

आयु योग = १०६९०५१०१पल

बल योग = ५३९३९बिकला

दिन घ. प.

= १९८१-५७-४६ = बुध मिश्रायु

मास दिन घ. प.

= ६६-१-५७-४६ " "

वर्ष मा. दि. घ. प.

= ५- ६-१-५७-४६ " "

= बुध मिश्रायु व. मा. दि. घ. प.

५-६- १-५७-४६

दि. घ. प

बुध निसर्गायु × लग्न बल=१३२९६-१२-१

५३९३९)१०६९०५१०१(१९८१दिन

५३९३९

५२९६६१

४८५४५१

४४२१००

४३१५१२

१०५८८१

५३९३९

५१९४२ × ६०

५४९३९)३११६५२०(५७घड़ी

२६९६९५

४१९५७०

३७७५७३

४१९९७ × ६०

५३९३९)२५१९८२०(४६पल

२१५७५६

३६२२६०

३२३६३४

३८६२६

```
                 दि. घ. प.
(५) गुरु अंशायु   ३३१२-२१-३६
× लग्न बल          ७-३२-४९
---------------------------------
                        २९ २४
                 १७   ६
              २९८०८
             १३२४८
---------------------------------
                 १९  १२
         ११      १२
       ६६२४
      ९९३६
---------------------------------
 २         ४     १२
२३१८४      ७
---------------------------------
२३१८६   १०६०२६   १६२३४८   ४७ २४
+१८१२   +२७०५    = ४८
------  -------
२४९९८   १०८७३१
         = ११

दिन घ. प.
= २४९९८-११-४८
गुरु अंशायु × लग्न बल
२४९९८-११-४८
```

```
                 दि. घ. प.
गुरु निसर्गायु   ३५३२-३१-१३
× चंद्र बल         ७-२६-१०
---------------------------------
                        २  ०
                     ५  १०
              ३५३२०
---------------------------------
                     ५  १२
          १३        २६
        २११९२
        ७०६४
---------------------------------
          १        २४
 ३        २७
२४७२४
---------------------------------
२४७२७   ९१८८३   ३५३८० २४  ०
+१५४१   +५८९    = ४०
------  ------
२६२६८   ९२४७२
         = १२

दिन   घ. पल
= २६२६८-१२-४०
गुरु निसर्गायु × चंद्र बल
= २६२६८-१२-४०
```

दिन घ. प.	
गुरु अंशायु × लग्न बल २४९९८-११-४८	५३९३९)१८४५५९०८८(३४२१पल
+ गुरु निसर्गायु × चंद्र बल २६२६८-१२-४०	१६१८१७
आयु योग ५१२६६-२४-२८	२२७४२०
दि. घ. प.	२१५७५६
५१२६६-२४-२८	११६६४८
× ६०	१०७८७८
३०७५९६० + २४ = ३०७५९८४ × ६०	८७७०८
= १८४५५९०४० + ४८	५३९३९
=१८४५५९०८८पल आयु योग	३३७६९ × ६०
आयु योग १८४५५९०८८पल	५३९३९)२०२६१४०(३७घड़ी
बल योग ५३९३९विकला	१६१८१७
दि. घ. प.	४०७९७०
=३४२१-३७-३४ मिश्रायु गुरु की	३७७५७३
मा. दिन घ. प.	३०३९७ × ६०
=११४-१-३७-३४ ,, ,,	५३९३९)१८२३८२०(३३पल=३४
वर्ष मा० दि० घ० प०	१६१८१७
= ९-६-१-३७-३४ ,, ,,	२०५६५०
	१६१८१७
	४३८३३

गुरु मिश्रायु व० मा० दि० घ० प०

९-६- १-३७-३४

दि. घ. प.
(६) शुक्र अंशायु ८४२४-४५-०
× लग्न बल ७-३२-४९

० ०
३६ ४५
७५८१६
३३६९६
....
० ०
२४ ०
१६८४८
२५२७२
....
० ०
५ १५
५८९६८
....
५८९७३ २६९६०७ ४१२८१२ ४५ ०
+४६०८ +६८८० =१२
६३५८१ २७६४८७
=७

दिन घ. प.
= ६३५८१-७-१२ शुक्र अंशायु × लग्न बल
शुक्र अंशायु × लग्न बल=६३५८१-७-१२
+ शुक्र निसर्गायु × चंद्रबल=४१६०५-४-५८
आयु योग = १०५१८६-१२-१०
दिन घ. प.
=१०५१८६-१२-१०
× ६०
६३१११६०+१२=६३१११७२×६०
=३७८६७०३२०+१०
=३७८६७०३३० आयु योग पल
आयु योग ३७८६७०३३० पल
बल योग ५३९३९ विकला
दिन घ. प.
=७०२०-२०-३८ मिश्रायु शुक्र की
मा. दि. घ. प.
=२३४-०-२०-३८ ,, ,,
व. मा. दि. घ. प.
=१९-६-०-२०-३८ ,, ,,

दि घ. पल
शुक्र निसर्ग आयु ५५९५-०-२०
× चंद्र बल ७-२६-१०

३ २०
० ०
५५९५०
....
८ ४०
० ०
३३५७०
१११९०
....
२ २०
० ०
३९१६५
....
३९१६५ १४५४७२ ५५९७८ ४३ २०
+२४४० +९३२ =५८
४१६०५ १४६४०४
=४

दिन-घ.-प.
४१६०५-४-५८ शुक्र निसर्गायु × चंद्र बल
५३९३९)३७८६७०३३०(७०२० दिन
३७७५७३
१०९७३३
१०७८७८
१८५५०×६०
५३९३९)१११३०००(२० घड़ी
१०७८७८
३४२२०×६०
५३९३९)२०५३२००(३८पल
१६१८१७
४३५०३०
४३१५१२
३५१८

शुक्र मिश्रायु वर्ष मा. दि. घ. प.
१९-६-०-२०-३८

दि० घ० पल
(७) शनि अंशायु १९७८– २२–४८
× लग्न अंशायु ७– ३२–४९

३९ १२
१७ ५८
१७८०२
७९१२
....
२५ ३६
११ ४४
३९५६
५९३४
....
५ ३६
२ ३४
१३८४६
....
१३८४८ ६३३४६ ९७०४६ १३ १२
+ १०८२ + १६१७ = २६
१४९३० ६४९६३

= ४३

दि० घ० प०
शनि निसर्गायु १०५२५–८ –२०
× चंद्र बल ७–२६–१०

३ २०
२०
१
१०५२५०
....
८ ४०
३ २८
६३१५०
२१०५०
....
२ २०
० ५६
७३६७५
....
७३६७५ २७३७११ १०५३०८ ३ २०
+ ४५९१ + १७९५ = ८
७८२६६ २७५४९६

= ६

दिन घ. प.
=१४९३०-४३-२६ शनि अंशायु × लग्न बल
शनि अंशायु × लग्न बल=१४९३०-४६-२६
+ शनि निसर्गायु × चंद्र बल=७८२६६-६-८
= आयु योग ९३१९६-५२-३४

दि. घ. प.
९३१९६-५२-३४
× ६०
५५९१७६० + ५२ = ५५९१८१२ × ६०
= ३३५५०८७२० + ३४
= आयु योग ३३५५०८७५४पल
बल योग ५३९३९ विकला

दिन घड़ी पल
७८२६६– ६–८ शनि निसर्गायु × चंद्रबल

५३९३९)३३५५०८७५४(६२२०दिन
३२३६३४
११८७४७
१०७८७८
१०८६९५
१०७८७८
८१७४ × ६०
५३९३९)४९०४४०(९घड़ी
४८५४५१
४९८९ × ६०

दिन घ. पल
=६२२०-९ -५ मिश्रायु शनि की
मा. दि. घ. पल
=२०७-१०-९-५ " "
व. मा. दि. घ. पल
=१७-३ १०-९ -५ " "

५३९३९)२९९३४०(५पल
२६९६९५
२९६४५
मिश्रायु शनि की व. मा. दि. घ. प.
१७-३-१०-९-५

....

दि. घ. प.
(८) लग्न अंशायु ५०९६-१६-०
× लग्न बल ७--३२-४९

० ०
१३ ४
४५८६४
२०३८४

० ०
८ ३२
१०१९२
१५२८८

० ०
१ ५२
३५६७२

३५६७३ १६३१३२ २४९७४९ ४ ०
×२७८८ ×४१६२ =२९
३८४६१ १६७२९४
=१४

दिन घ. प.
=३८४६१-१४-२९ लग्न अंशायु × लग्नबल

दि. घ. प.
लग्न अंशायु × लग्न बल ३८४६१-१४-२९
लग्न निसर्गायु × चंद्र बल × ३७७-१४- २
आयु योग = ३८८३८-२८-३१.

दि. घ. प.
लग्न निसर्गायु ५०-४३-४८
× चंद्र बल ७- २६-१०

८ ०
७ १०
५००

२० ४८
१८ ३८
१३००

५ ३६
५ १
३५०

३५५ १३२४ ६०२६ ०
×२२ ×१० =२
३७७ १३३४
=१४

दि. घ. प. लग्न निसर्गायु × चंद्र बल
= ३७७-१४-२

५३९३९)१३९८१८५११(२५९२ दिन
१०७८७८
३१९४०५
२६९६९५
४९७१०१
४८५४५१
११६५०१

दि. घ. प.
३८८३८-२८-३१
× ६०
२३३०२८० × २८ = २३३०३०८ × ६०
= १३९८१८४८० + ३१
= १३९८१८५११ आयु योग पल
आयु योग १३९८१८५११ पल
वल योग ५३९३१ विकला
= दिन घ. प.
२५९२– ९ –३५ = मिश्राय् लग्न की
= मा. दि. घ. प. = " "
८६–१२–९–३५
= व. मा. दि. घ. प. = " "
७–२—१२–९–३५

११६५०१
१०७८७८
८६२३ × ६०
५३९३१)५१७३८०(९ घड़ी
४८५४५१
३११२९ × ६०
५३९३१)१९१५७४०(३५ पल
१६१८१७
२९७५७०
२६९६९५
२७८७५
लग्न मिश्रायु व. मा. दि. घ. प.
७–२–१२–९–३५

मिश्रायु चक्र २

ग्रह आयु	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
रवि	१४	१०	३	२१	२२
चंद्र	२	६	२७	१३	४०
मंगल	२	२	५	३०	२८
बुध	५	६	१	५७	४६
गुरु	९	६	१	३७	३४
शुक्र	१९	६	०	२०	३८
शनि	१७	३	१०	९	५
लग्न	७	२	१२	९	३५
आयुयोग	७८	७	२	२०	८

अध्याय ३०

मिश्रायु दशा साधन

आयु की दशा निकाली जाती है। आयु की दशा को साधन करने के लिये बल का विचार होता है। इस में ग्रहों का बल दशा क्रम बल के अनुसार लिया जाता है। इस लिये दशा क्रम बल पहिले निकाल लेना चाहिए।

रूपात्मक भाव बल × ग्रह षड़ बल = दशा क्रम बल

ग्रहों का विंशोपक बल निकालने के लिये पहिले रूपात्मक भाव फल (चय क्षय फल) जो अध्याय १७ के अंत में निकाल चुके हैं उस में ग्रह षड़बल का (अध्याय २२ के अंत में जो दिया है) गुणा करने से ग्रह का दशा क्रम बल होता है।

लग्न का बल विचारने के लिये भाव बल साधन (अध्याय २३) में आया हुआ लग्न बल लेना।

दशा क्रम बल साधन करने के निमित्त ग्रहों का रूपात्मक भाव फल (अध्याय १७ से) और ग्रह षड़ बल (अध्याय २२ से) नीचे चक्र १ में दिया है।

दशा क्रम बल चक्र १

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
ग्रह षड़ बल	५-५०-५९	७-२६-१०	५-२-२०	८-३४-१९	६-१३-५८	८-२०-२४	४-२५-५६
रूपात्मक भाव फल	०-४३-४३	०-१३-४७	०-४-१९	०-१५-१९	०-४-४९	०-१-२०	०-११-२२
दशा क्रम बल	४-१३-४३	१-४२-१९	०-२१-४५	२-११-१७	०-३०-१	०-११-७	०-५०-२२

दशा क्रम बल निकालने का गणित नीचे दिया है।

(१) रवि ५°– ५०′–५९″

× ०– ४३ – ४३

			४२	१७
		३५	५०	
	३	३५		
		४२	१७	
	३५	५०		
३	३५			
०	०	०		
४	१३	४३	४९	१७

= ४–१३–४३

(२) चंद्र ७–२६–१०

× ०–१३–४७

			७	५०
		२०	२२	
	५	२९		
		२	१०	
	५	३८		
१	३१			
०	०	०		
१	४२	२९	३९	५०

= १–४२–२९

(३) मंगल ५ -२ -२०
× ० -४ -१६

			६	२०
		०	३८	
	१	३५		
....	....	....	....	....
		१	२०	
	०	८		
०	२०			
०	०	०		
०	२१	४५	४	२०

= ०-२१-४५

(४) बुध ८-३४-१६
× ०-१५-१६

			६	१
		१०	४६	
	२	२३		
....	....	....	....	....
		४	४५	
	८	३०		
२	०			
....	....	....	....	....
०	०	०		
२	११	१७	३७	१

= २-११-१७

(५) गुरु ६-१३-५८
× ०- ४-४१

			४७	२२
		१०	३७	
	४	५४		
...	...	...	...	...
		३	५२	
	०	५२		
०	२४			
...	...	...	...	...
०	०	०		
०	३०	१	१६	२२

= ०-३०-१

(६) शुक्र ८-२०-२४
× ०- १-२०

			८	०
		६	४०	
	२	४०		
...	...	...	...	...
	८	२०	२४	
...	...	...	...	...
०	०	"		
०	११	७	१२	०

= ०-११-७

(७) शनि ४–२५–५६
× ०–११–२२

			२०	३२
		९	१०	
	१	२८		
		१०	१६	
	४	३५		
०	४४			
०	०	०		
०	५०	२२	४६	३२

= ०–५०–२२

चक्र २ क्रमानुसार दशा क्रम बल

ग्रह	लग्न	रवि	बुध	चंद्र
दशा क्रम बल	७°-३२′-४९″	४°–१३′–४३″	२°–११′–१७″	१–४२–२९
	शनि	गुरु	मंगल	शुक्र
	०–५०–२२	०–३०–१	०–२१–४५	०-११–७

चक्र २ में ग्रहों का बल उपरोक्त गणित के अनुसार बल के क्रम से दिया है। लग्न का दशा क्रम बल नहीं निकाला जाता। लग्न का जो बल अध्याय २३ के अनुसार ७–३२–४९ है वही केवल यहाँ लिया है।

इन सब से अधिक बल वाले को प्रथम रखा है और सबसे कम बल वाले को अंत में रखा है। यहाँ लग्न का सबसे अधिक बल है इस कारण सब से ऊपर लग्न को रखा। उससे कम सूर्य का बल ४–१३–४३ है इस कारण लग्न के उपरांत सूर्य को रखा। इसी प्रकार शुक्र का बल ०–११–७ सबसे कम होने से अंत में इसे रखा। बल के क्रम से यही दशा क्रम बल चक्र २ में बताया है। दशा साधन में जहाँ बल के विचार करने की आवश्यकता होगी इसी के अनुसार बल का विचार होगा।

आयु की दशा साधन करने का नियम

जो मिश्रायु अध्याय २९ में साधन कर चुके हैं उसकी दशा आगे निकालेंगे।

आयु की दशा साधन करने की रीति यह है

(१) प्रत्येक ग्रह का दशा क्रम बल निकालना जैसा ऊपर निकालकर चक्र २ में रखा है। यहाँ दशा में इसी चक्र के अनुसार ग्रहों के बल का विचार होता है।

(२) उपरांत प्राप्त :मिश्रायु या और कोई आयु का जिसको दशा निकालनी हैं चक्र ३ बना लेना। उपरांत कुंडली में देखना कौन-कौन ग्रह केन्द्र, पणफर या आपोक्लिम में है।

(३) लग्न और ७ ग्रह में से पहिले किस की दशा होगी ? उपरांत शेष ग्रहों की दशा किस क्रम से होगी ? इसका विचार नीचे लिखे अनुसार होता है।

(अ) लग्न, चंद्र और सूर्य इन तीनों में से जो अधिक बली हो उस की दशा पहिले होती है। शेष की दशा क्रम का विचार आगे बताये हुए नियम के अनुसार होता है।

(ब) यदि इन तीनों का बल समान हो तो जिसकी दशा के वर्ष अधिक हों उसे पहिले लेना।

(क) यदि दशा वर्ष में भी समान हो तो

(१) लग्न और सूर्य के बल आदि में समानता हो तो प्रथम लग्न को लेना
(२) " " चंद्र " " " " " लग्न "
(३) सूर्य " चंद्र " " " " " सूर्य "
(४) यदि तीनों की सब बातों में समानता हो तो पहिले लग्न फिर सूर्य उपरान्त चंद्र की दशा रखना।

(४) पहिली दशा निश्चित हो जाने पर उपरांत जिस की पहिली दशा हुई उस से केन्द्र (१, ४, ७, १०) में जो ग्रह हो उनकी दशा पहिले होगी जिस के उपरांत पणफर (२,५,८,११,) उस के उपरान्त आपोक्लिम (३,६,९,१२) में जो २ ग्रह हों उन की दशा होगी। यहां प्रथम जिस ग्रह की दशा हुई उसी ग्रह से केन्द्र, पणफर और आपोक्लिम का विचार करना। लग्न की दशा पहिले हुई तो लग्न से बिचार करना।

(५) यदि केन्द्र पणफर आपोक्लिम के ग्रहों का विचार करते समय वहां एक से अधिक ग्रह हों तो उन में जो ग्रह अधिक बली हो उसे ऊपर रखना फिर बल के क्रम से शेष ग्रहों का क्रम रहेगा। यदि बल में उन में समानता हो तो:—

(अ) जिस ग्रह के दशा वर्ष अधिक हों उसे पहिले लेना।

(ब) यदि वर्ष में भी तुल्यता हो तो जो ग्रह सूर्य के पास होने से अस्त होकर उस जिसमें से ग्रह काउदय प्रथम हुआ हो उसे पहिले लेना।

(६) इस प्रकार ग्रह और लग्न की दशा का क्रम विचार कर चक्र ४ बनाकर उसमें उनकी आयु भी लिख देनी चाहिए ।

उपरोक्त रीति से मिश्रायु की दशा साधन करते हैं ।

चक्र ३ मिश्रायु ग्रह वर्ष

(अध्याय २९ के चक्र ३ से)

ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	घ.	प.	स्थान
सूर्य	१४	१०	२	३०	५९	पणफर ५ में
चंद्र	२	६	२७	१३	४०	केन्द्र १० में
मंगल	२	२	५	३०	२८	आपो० ३ में
बुध	५	६	१	५७	४६	पणफर ५ में
गुरु	९	६	१	३७	२४	केन्द्र १० में
शुक्र	१९	६	०	२०	३८	केन्द्र ४ में
शनि	१८	३	१०	९	५	आपो० ३ में
लग्न	७	२	१२	९	३५	लग्न

लग्न कुण्डली

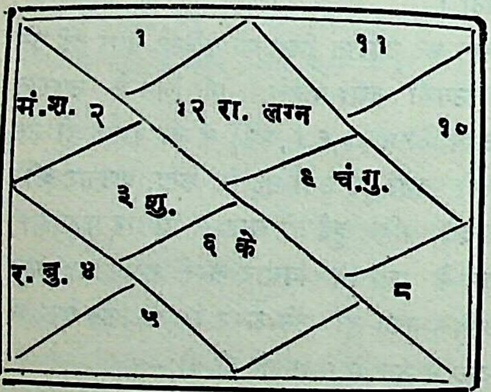

चक्र ४ मिश्रायु महादशा क्रम

ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	घ.	प.
लग्न	७	२	१२	९	३५
चंद्र	२	६	२७	१३	४०
गुरु	९	६	१	३७	३४
शुक्र	१९	६	०	२०	३८
सूर्य	१४	१०	२	३०	५९
बुध	५	६	१	५७	४६
शनि	१७	३	१०	९	५
मंगल	२	२	५	३०	२८

चक्र ३ में अध्याय २९ के अनुसार मिश्रायु दी है जिसकी दशा निकलनी है । चक्र ४ में बताये क्रम से ग्रह की दशा होगी ।

(१) लग्न बल ७–३२–४६, सूर्य ४–१३–४३ और चंद्र का बल १–४२–१६ चक्र २ के अनुसार है। इनमें लग्न का बल सबसे अधिक होने से पहिले लग्न की दशा होगी।

(२) इसके उपरांत लग्न से केन्द्र गत ग्रह देखा। लग्न से शुक्र (बल ०–११–७) चंद्र (बल १–४२–२६) और गुरु (बल ०–३१–१) है। इन सबमें चंद्र बली है। चंद्र की दशा पहिले होगी। उससे कम गुरु का बल है और सबसे कम शुक्र का बल है इस लिये चंद्र के बाद गुरु फिर शुक्र की दशा होगी। ग्रहों का बल दशा क्रम बल चक्र २ के अनुसार विचारना।

(३) इसके उपरांत पण फर (२–५–८–११) में देखा। सूर्य (बल ४–१३–४३) और बुध (बल २–११–१७) केवल पणफर में है। इन में सबसे बली सूर्य की दशा पहिले होगी बाद में बुध की दशा होगी।

(४) आपोक्लिम (३–६–६–१२) में केवल (बल ०–२१–४५) और शनि (बल ०–५०–२२) है। इन में शनि अधिक बली होने से पहिले शनि की दशा होगी उपरांत मंगल की दशा होगी। इसी क्रम से उपरोक्त चक्र ४ में ग्रह रखे हैं। इसी चक्र के अनुसार ग्रहों को मिश्रायु महादशा होगी। इस मिश्रायु महादशा के वर्ष वही होंगे जो मिश्रायु साधन से प्राप्त हुआ था।

दशा क्रम बल और रिष्टकर रिष्टहर बल साधन

रिष्ट = अरिष्ट(बुरा)। कर = करने वाला। हर = हरने वाला।

(१) पहिले दशा क्रम बल साधन करना बता चुके हैं। यदि लग्न को प्रथम दशा हो तो उक्त प्रकार से दशा क्रम बल साधन होता है। अर्थात् ग्रह का रूपात्मक भाव फल × ग्रह षड्बलैक्य = दशा क्रम बल। यह बल साधन कर चक्र २ में दे चुके हैं।

(२) यदि रवि या चंद्र की पृथक् दशा हो तो बल निकालने का दूसरा नियम है।

(लग्न या ग्रह षड़ बलैक्य / ४ × ग्रह वर्गेश षड्बल) = समवर्ग के गृह में ग्रह का बल

(लग्न या ग्रह षड़बलैक्य / ८ × ग्रह वर्गेश षड़ बल) = ;, होरा आदि में ,, ,,

अंत में सबका योग करना तो वह योग दशा क्रम में बल होगा। यही रिष्ट-कर रिष्टहर बल है।

इसी को आगे उदाहरण देकर समझाया हैं।

रिष्टकर रिष्टहर बल,

केशवा चार्य के मत से रीति

(ग्रह षड़ बलैक्य / ४ × ग्रह गृहेश षड्वलैक्य) = गृह (स्थान) में रिष्टकर रिष्टहर बल

(ग्रहषड़ बलैक्य × ग्रह होरेश आदि षड़बलैक्य) / ८ = होरादि में ,, ,,

यहाँ द्रेष्काण आदि शेष वर्ग में होरा के अनुसार ही गणित क्रिया होती है अंत में सब वर्गो के अंकों का योग ही उस ग्रह का रिष्टकर रिष्टहर बल होता है।

श्रीपति के मत से रीति

श्रीपति आचार्य ने इसे दूसरी रीति से किया है।

(इष्ट गुणित षड़ बलैक्य) ∽ (कष्ट गुणित षड़ बलैक्य) × (गृहेश षड़बलैक्य) / ४ = गृह में बल

= होरादि में बल

(इष्ट गुणित षड़ बलैक्य) ∽ (कष्ट गुणित षड़बलैक्य) × (होरेश आदि) / ८ = होरादि में बल

अंत में सबका योग करना तो रिष्टकर रिष्टहर बल होता है परन्तु यह श्रीपति की रीति कुछ आचार्यो को मान्य नहीं है।

केशवा चार्य की रीति से रिष्ट कर रिष्ट हर साधन

ग्रह षड़ बल चक्र ५ (अध्याय २२ से)

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
षड़्बल	५°–५०′–५९″	७°–२६′–१०″	५°–२′–२″	८°–३४′–१९″	६°–१३′–५८″	८°–२०′–२४″	४°–२५′–५६″
चतुर्थांश	१–२७–४४	१–५१–३२	१–१५–३५	२–८–३४	१–३३–२९	२–५–६	१–६–२९
अष्टमांश	०–४३–५२	०–५५–४६	०–३७–४७	१–४–१७	०–४६–४४	१–२–३३	०–३३–१४

सप्तवर्गी चक्र ६ (अध्याय २२ के सप्तबल साधन चक्र से)

ग्रह	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ गृह	चंद्र	गुरु	शुक्र	चंद्र	गुरु	बुध	शुक्र
२ होरा	रवि	चंद्र	रवि	चंद्र	चंद्र	चंद्र	रवि
३ द्रेष्काण	गुरु	रवि	बुध	मंगल	मंगल	शुक्र	शनि
४ सप्तमांश	चंद्र	मंगल	शनि	मंगल	मंगल	शुक्र	गुरु
५ नवमांश	गुरु	शुक्र	शुक्र	शुक्र	बुध	गुरु	चंद्र
६ द्वादशांश	शुक्र	रवि	मंगल	गुरु	चंद्र	गुरु	शनि
७ त्रिंशांश	मंगल	बुध	गुरु	गुरु	बुध	गुरु	शनि

रीति

ग्रह गृहेश षड़ बलैक्य × (ग्रह षड़ बलैक्य × $\frac{१}{४}$) = स्थान में

इतरवर्गेश ,, ,, × (,, ,, × $\frac{१}{८}$) = होरादि वर्ग में

अंत में सब का योग = रिष्टकर रिष्ट हर बल ।

१ (१) रवि

चंद्र गृह में

चंद्र बल ७°–२६′–१०″

× रवि $\frac{१}{४}$ बल १–२७–४४

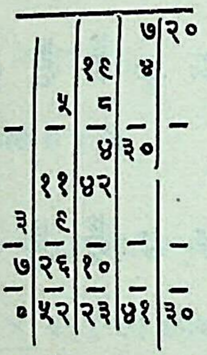

= १०–५२–२४

१ (२) रवि

स्वहोरा में

रवि बल ५–५०–५६

× रवि $\frac{१}{८}$ ०–४३–५२

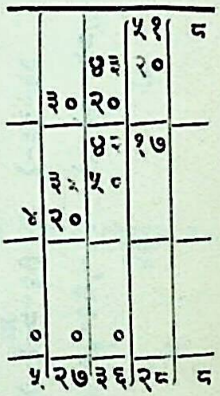

= ५ २७–३६

१ (३–५) रवि

गुरु द्रेष्काण नवांश

गुरु ६–१३–५८

× रवि $\frac{१}{८}$ ०–४३–५२

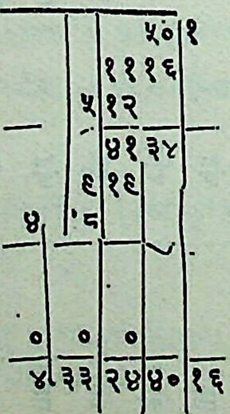

= ४–३३–२५

१ (४) रवि

चंद्र सप्तमांश

चंद्र ७–२६–१०

× रवि $\frac{१}{८}$ ०–४३–५१

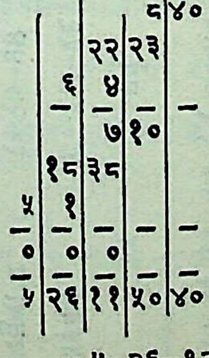

= ५–२६–१२

१ (६) रवि

शुक्र द्वादशांश

शुक्र ८–२०–२४

× रवि १/८ ०–४३–५२

			२०	४८
		१७	२०	
	६	५६		
...	...	...	...	...
		१७	१२	
	१४	२०		
५	४४			
...	...	...	...	...
०	०	०		
६	५	५०	५२	४८

= ६–५–५१

१ (७) रवि

मंगल त्रिशांश

मंगल ५–२–२०

× रवि १/८ ०–४३–५२

			१७	२०
		१	४४	
	४	२०		
—	—	—	—	—
		१४	२०	
	१	२६		
३	३५			
—	—	—	—	—
०	०	०		
३	४१	२	२१	२०

= ३–४१–२

२ (१) चंद्र

गुरु ग्रह

गुरु ६–१३–५८

× चंद्र १/४ १–५१–३२

			३०	५६
		६	५६	
	३	१२		
—	—	—	—	—
		४९	१८	
	११	३		
५	६			
—	—	—	—	—
६	१३	५८		
—	—	—	—	—
११	३५	९	४४	५६

= ११–३५–१०

२ (२) चंद्र

स्वहोरा

चंद्र ७–२६–१०

× चंद्र १/८ ०–५५–४६

			७	४०
		१९	५६	
	५	२२		
—	—	—	—	—
		९	१०	
	२३	५०		
६	२५			
—	—	—	—	—
०	०	०		
—	—	—	—	—
६	५४	४१	१३	४०

= ६–५४–४१

२ (३–६) चंद्र

रवि द्रेष्का० द्वादशांश

रवि ५–५०–५९

× चंद्र $\frac{१}{८}$ ०–५५–४६

			४५	१४
		३०	२०	
	३	५०		
		५४	५	
	४५	५०		
४	३५			
०	०	०		
५	२६	५	१०	१४

= ५–२६–५

२ (४) चद्र

सप्तमांश में मंगल

मंगल ५–२–२०

× चंद्र $\frac{१}{८}$ ०–५५–४६

			१५	२०
		१	३२	
	३	५०		
		८	२०	
	१	५०		
४	३५			
०	०	०		
४	४१	०	७	२०

= ४–४१–०

२ (५) चंद्र

नवांशेश शुक्र

शुक्र ८–२०–२४

× चंद्र $\frac{१}{८}$ ०–५५–४६

			१८	२४
		१५	२०	
	६	८		
		२२	०	
	१८	२०		
७	२०			
	०	०		
७	४५	५	३८	२४

= ७–४५–६

२ (७) चंद्र

त्रिंशांशेश बुध

बुध ८–३४–१९

× चंद्र $\frac{१}{८}$ ०–५५–४६

			१४	२४
		२६	४	
	६	८		
		१७	२५	
	३१	१०		
७	२०			
०	०	०		
७	५८	१	४३	३४

= ७–५८–२

३ (१) मंगल

गृहेश शुक्र

शुक्र ८–२०–२४

× मंगल $\frac{१}{४}$ १-१५–३५

			१४	०
		११	४०	
	४	४०		
…..	…..	…..	…..	…..
		६	०	
	५	०		
२	०			
८	२०	२४		
१०	३०	२१	५४	०

= १०–३०–२२

३ (२) मंगल

होरेश रवि

रवि ५–५०–५९

× मंगल $\frac{१}{८}$ ०–३७–४७

			४६	१३
		३९	१०	
	३	५५		
…..	…..	…..	…..	…..
		३६	२३	
	३०	५०		
३	५			
०	०	०		
३	४१	१	१९	१३

= ३–४१–१

३ (३)

द्रेष्काणेश बुध

बुध ८–३४–१९

× मंगल $\frac{१}{८}$ ०–३७–४७

			१४	५३
		२६	३८	
	६	१६		
		११	४३	
	२६	३८		
६	१६			
०	०	०		
६	४९	३२	३५	५३

= ६–४९–३३

३ (४) मंगल

सप्तमांशेश शनि

शनि ४–२५–५६

× मंगल $\frac{१}{८}$ ०–३७–४७

			४३	५२
		१९	३५	
	३	८		
		३४	३२	
	१९	३५		
३	८			
०	०	०		
३	३१	३७	५०	५२

= ३–३१–३८

३ (५) मंगल

नवांशेश शुक्र

शुक्र ८–२०–२४

× मंगल $\frac{१}{८}$ ०–३७–४७

```
            १८|४८
        १५|४०
     ६|१६
  ------------------
        १४|४८
    १२|२०
  ४|५६
  ------------------
  ० | ० | ० |  |
  ------------------
  ५|१५ ६|४६|४८
```

= ५–१५-७

३ (६) मंगल

स्वद्वादशांश

मंगल ५–२–२०

× मंगल $\frac{१}{८}$ ०–३७–४७

```
            १५|४०
          १|३४
        ३|५५
  ------------------
          १२|२०
        १|१४
      ३|५
  ------------------
  ० | ० | ० |  |
  ------------------
  ३|१०|२३  ६|४०
```

= ३–१०–२३

३ (७) मंगल

त्रिंशांशेश गुरु

गुरु ६–१३–५८

× मंगल $\frac{१}{८}$ ०–३७–४७

```
            ५५|२६
        १०|११
      ४|४२
  ........................
        ३५|४६
      ८|१
  ३|४२
  ------------------
  ० | ० | ० |  |
  ------------------
  ३|५५|२९|२२|२६
```

= २–५५–३०

४ (१) बुध

गृहेश चंद्र

चंद्र ७–२६–१०

× बुध $\frac{१}{४}$ २–८–३४

```
              ५|४०
          १४|४५
        ३|२८
  ........................
          १|२०
        ३|२८
  ०|५६
  ------------------
  १४|५२|२०
  ------------------
  १५|५६| २| ६|४०
```

= १५–५६–२

४ (२) बुध

होरेश चंद्र

चंद्र ७-२६-१०

× बुध $\frac{१}{८}$ १-४-१७

			२	५०
		७	१२	
	१	५९		
		०	४०	
	१	४४		
०	२८			
७	२६	१०		
७	५८	०	५४	५०

= ७-५८-१

४ (३-४) बुध

द्रेष्का० सप्त० मंगल

मंगल ५-२-२०

× बुध $\frac{१}{८}$ १-४-१७

			५	४०
		०	३४	
	१	२५		
		१	२०	
	०	८		
०	२०			
५	२	२०		
५	२३	५४	५९	४०

= ५-२३-५५

४ (५) बुध

नवांशेश शुक्र

शुक्र ८-२०-२४

× बुध $\frac{१}{८}$ १-४-१७

			६	४८
		५	४०	
	२	१६		
		१	२६	
	१	२०		
०	३२			
८	२०	२४		
८	५६	७	२२	४८

= ८-५६-७

४ (६-७) बुध

द्वाद० त्रिंशां० गुरु

गुरु ६-१३-५८

× बुध $\frac{१}{८}$ १-४-१७

			१६	२६
		३	४१	
	१	४२		
		३	५२	
	०	५२		
०	२४			
६	१३	५८		
६	४०	३९	४९	२६

= ६-४०-४०

५ (१) गुरु

स्वगृही

गुरु ६–१३–५८

× गुरु $\frac{१}{४}$ १–३३–२९

			२८	२
		६	१७	
		५४		
		३१	५४	
	७	९		
३	१८			
६	१३	५८		
९	४२	३९	३९	२

=९–४२–४०

५ (२–६) गुरु

होरा, द्वादशा० में चंद्र

चंद्र ७–२६–१०

× गुरु $\frac{१}{८}$ ०–४६–४४

			७	२०
		१९	४	
	५	८		
		७	५०	
	१९	५६		
५	२२			
०	०	०		
५	४७	३०	५१	२०

=५–४७–३१

५ (३–४) गुरु

द्रेष्का० सप्त० में मंगल

मंगल ५–२–२०

× गुरु $\frac{१}{८}$ ०–४६–४४

			१४	४०
		१	२८	
	३	४०		
		१५	२०	
	१	३२		
३	५०			
०	०	०		
३	५५	२९	२	४०

=३–५५–२९

५ (५–७) गुरु

नवां० त्रिंशां० में बुध

बुध ८–३४–१९

× गुरु $\frac{१}{८}$ ०–४६–४४

			१३	५६
		२४	५६	
	५	५२		
		१४	३४	
	२६	४		
६	८			
०	०	०		
६	४०	३५	४३	५६

=६–४०–३६

६ (१) शुक्र

गृहेश बुध

बुध ८-३४-१९

× शुक्र १/४ २-५-६

१|५४
३|२४
०|४८
......
१|३५
२|५०
०|४०
०|३८
१|८
१६
१७|५२|२१|०|५४

=१७-५२-२१

६ (२) शुक्र

होरेश चंद्र

चंद्र ७-२६-१०

× शुक्र १/२ १-२-३३

५|३०
१४|१८
=|५१
१४|५२|२०
७|२६|१०
७|४५|७४३|२०

=७-४५-८

६ (३- ४) शुक्र

द्रेष्का० सप्त० में शुक्र

शुक्र ८-२०-२४

× शुक्र १/२ १-२-३३

१३|२०
११|०
४|२४
......
१६|४०|४८
८|२०|२४
८|४१|४०|१|१२

=८-४१-४०

६ (५-६-७) शुक्र

नवां० द्वा० त्रिं० में गुरु

गुरु ६-१३-५८

× शुक्र १/२ १-२-३३

३१|५४
७|९
३|१८
......
१|५६
०|२६
०|१२
६|१३|५८
६|२९|५१|३६|५४

=६-२९-५२

७ (१) शनि

शुक्र गृही

शुक्र ८–२०–२४

× शनि $\frac{१}{४}$ १–६–२९

			११	३६
		९	४०	
	३	५२		
		२	२४	
	२	०		
०	४८			
८	२०	२४		
९	१४	२८	१५	३६

= ९–१४–२८

७ (२) शनि

होरेश रवि

रवि ५–५०–५९

× शनि $\frac{१}{२}$ ०–३३–१४

			१३	४६
		११	४०	
	१	१०		
		३२	२७	
	२७	३०		
२	४५			
०	०	०		
३	१४	२४	२०	४६

= ३–१४–२४

७ (३–६–७) शनि

स्वद्रेष्का० द्वा० त्रिशां०

शनि ४–२५–५६

× शनि $\frac{१}{२}$ ०–३३–१४

			१३	४
		५	५०	
	०	५६		
		३०	४८	
	१३	४५		
२	१६			
०	०	०		
२	३१	१७	५१	४

= २–३१–१८

७ (४) शनि

गुरु सप्तमांश

गुरु ६–१३–५८

× शनि $\frac{१}{२}$ ०–३३–१४

			१३	३२
		३	२	
	१	२४		
		३१	५४	
	७	९		
३	१८			
०	०	०		
३	२७	८	९	३२

= ३–२७–८

७ (५) शनि केशवाचार्य ने लग्न का भी रिष्ट कर रिष्ट हर बल निकाला है।

नवांशेश चंद्र रा

चंद्र ७–२६–१० लग्न ११–०°–२८′–११″ है (देखो अध्याय १४ की भाव कुण्डली)

× शनि $\frac{१}{८}$ ०–३३–१४

	१	६ ३८	२ ४	२०	
३	१४ ५१	५ १८	३०		
०	०	.			
६	७	५७	३६	२०	

= ४–७–५८

लग्न का सप्तवर्गी चक्र ७

वर्ग	गृह	होरा	द्रेष्का०	सप्त०	नव०	द्वाद०	त्रिशांश
	१	२	३	४	५	६	७
वर्गेश	गुरु	चंद्र	गुरु	बुध	चंद्र	गुरु	शुक्र
वर्गेश	६	७	६	८	७	६	८
बल	१३	२६	१३	३४	२६	१३	२०
	५८	१०	५८	१९	१०	५८	२४

ग्रह षड्बल चक्र ५ में दिया है और लग्न बल अध्याय २२ के अंत में दिया है।

लग्न बल	लग्न बल चतुर्थांश	लग्न बल अष्टमांश
७–३२–४९	१–५२–१२	०–५६–३६

८ (१) लग्न

गृहेश गुरु

गुरु ६-१३-५८

× लग्न ¼ = १-५२-१२

			११	३६
		२	३६	
	१	१२		
		५१	१४	
	११	२९		
५	१८			
६	१३	५८		
११	४५	३३	१	३६

= ११-४५-३३

८ (२-५) लग्न

होरेश, नवांश चंद्र

चंद्र ७-२९-१०

× लग्न ½ = ०-५६-३६

			६	०
		१५	३६	
	४	१२		
		९	२०	
	२४	१६		
६	३२			
०	०	०		
७	०	५३	२	०

= ७-०-५३

८ (३-६) लग्न

द्रेष्का० द्वा० गुरु

गुरु ६-१३-५८

× लग्न ½ × ०-५६-३६

			३६	४४
		७	४८	
	३	३६		
		५४	८	
	१२	८		
५	३६			
०	०	०		
५	५२	४६	३२	४४

= ५-५२-४६

८ (४) लग्न

सप्तमांशेश बुध

बुध ८-३४-१९

× लग्न ½ ०-५६-३६

			११	२४
		२०	२४	
	४	४८		
		१७	४४	
	३१	४४		
७	२८			
०	०	०		
८	५	१०	१९	२४

= ८-५-१०

৮ (৭) লগ্ন

ত্রিংশাংশে শুক্র

শুক্র ৮–২০–২৪

× লগ্ন $\frac{১}{৮}$ ০–৫৬–৩৬

			১৪	২৪
		১২	০	
	৪	৪৮		
…	…	…	…	…
		২২	২৪	
	১৮	৪০		
৭	২৮			
…	…	…	…	…
০	০	০		
৭	৫২	২	৩৮	২৪

= ৭–৫২–২

केशव पद्धति की रीति से रिष्ट कर रिष्ट हर बल चक्र ८

	ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	लग्न
१	ग्रह	१०-५२-२४	११-३५-१०	१०-३०-२२	१५-५६-२	९-४२-४०	१७-५२-२१	९-१४-२८	११-४५-३३
२	होरा	५-२७-३६	६-५४-४१	३-४१-१	७-५८-१	५-४७-३१	७-४५-८	३-१४-२४	७-०-५३
३	द्रेष्काण	४-३३-२५	५-२६-५	६-९-३३	५-२३-५५	३-५५-२९	८-४१-४०	२-३१-१८	५-५२-४६
४	सप्तमांश	५-२६=१२	४-४१-०	३-३१-३८	५-२३-५५	३-५५-२९	८-४१-४०	३-२७-८	८-५-१०
५	नवमांश	४-३३-२५	७-४५-६	५-१५-७	८-५६-७	६-४०-३६	६-२९-५२	४- ७-८	७-०-५३
६	द्वादशांश	६- ५-५१	५-२६-५	३-१०-२३	६-४०-४०	५-४७-३१	६-२९-५२	२-३१-१८	५-५२-४६
७	त्रिंशांश	३-४१- २	७-५८-२	३-५५-३०	६-४०-४०	६-४०-३६	६-२९-५२	२-३१-१८	७-५२- ३
	योग	४०-३९-५५	४९-४६-९	३६-५३-४४	५६-५९-२०	४२-२९-५२	६२-३०-२५	२७-३७-२	५३-३०-४

श्रीपति की रीति से रिष्टकर रिष्टहर बल साधन चक्र ९

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट × षड् वलैक्य	३-८-५८	३-२१-१६	२-९-२६	५-३६-५२	१-४०-३३	४-२०-२९	१-१०-१९
कष्ट × षड् वलैक्य	२-२३-३	२-५३-२३	२-५२-१६	२-५७-१६	२-३९-२१	२-५८-४७	३-१०-४८
दोनों का अंतर	०-४५-५५	०-२७-५३	०-४२-५०	२-३९-३६	०-५८-४८	१-२१-४२	२- ०-२९
अंतर का $\frac{1}{4}$	०-११-२८	०- ६-५८	०-१०-४२	०-३९-५४	०-१४-४२	०-२०-२५	०-३०- ७
अंतर का $\frac{1}{8}$	०- ५-४४	०- ३-२९	०- ५-२१	०-१९-५७	०- ७-२१	०-१०-१२	०-१५- ३

इष्ट × षड् वलैक्य और कष्ट × षड्वलैक्य अध्याय २५ के चक्र ११ में दिया है।
रीति—ग्रहेश षड्वलैक्य × अंतर $\frac{१}{४}$ = ग्रुव रिष्ट कर रिष्ट हर बल
होरेश आदि का ,, × अंतर $\frac{१}{२}$ = होरा आदि का रिष्ट कर रिष्ट हर बल

१ (१) रवि

ग्रहेश चंद्र

चंद्र ७–२६–१०

× रवि $\frac{१}{४}$ ०–११–२८

			४	०
		१२	८	
	३	१६		
		१	५०	
	४	४६		
१	१७			
०	०	०		
१	२५	१६	२	०

= १–२५–१६

१ (२) रवि

स्वहोरा

रवि ५–५०–५९

× रवि $\frac{१}{२}$ ०–५ –४४

			४३	१६
		३०	४०	
	३	४०		
		४	५५	
	४	१०		
१०	२५			
०	०	०		
०	३३	२६	१८	१६

= ०–३३–२६

१ (३–५) रवि

गुरु द्रेष्का० नवां०

गुरु ६–१३–५८

× रबि $\frac{१}{२}$ ०–५–४४

				४२	३२
			९	३२	
	४	२४			
			०	५०	
	१	५			
०	३०				
०	०	०			
०	३०	४०		४	३२

= ०–३०–४०

१ (४) रवि

चंद्र सप्तमांश में

चंद्र ७–२६–१०

× रवि $\frac{१}{८}$ ०–५–४४

			७	२०
		१९	४	
	५	८		
		०	५०	
	२	१०		
०	३५			
	०	०		
०				
०	४२	३८	१	२०

= ०–४२–३८

१ (६) रवि

द्वादशांशेश शुक्र

शुक्र ८-२०-२४

× रवि १/८ ०- ५-४४

			१७	३६
		१४	४०	
	५	५२		
		२	०	
	१	४०		
०	४८			
	६			
०	०	०		
०	४७	४८	५७	३७

= ०-४७-४९

१ (७) रवि

त्रिशांशेश मंगल

मंगल ५-२-२०

× रवि १/८ ०-५-४४

			१४	४०
		१	२८	
	३	४०		
		१	४०	
	०	१०		
१	२५			
०	०	०		
०	२८	५३	२२	४०

= ०-२८-५३

२ (१) चंद्र

गृहेश गुरु

गुरु ६-१३-५८

× चंद्र १/४ ०-६-५८

			५६	४
		१२	३४	
	५	४८		
		५	४८	
	१	१८		
०	३६			
०	०	०		
०	४३	२५	१८	४

= ०-४३-२५

२ (२) चंद्र

स्वहोरा में

चंद्र ७-२६-१०

× चंद्र १/४ ०-३-२९

			४	५०
		१२	३४	
	३	२३		
		०	३०	
	१	१८		
०	२१			
०	०	०		
०	२५	५४	८	५०

= ०-२५-५४

२ (३-६) चंद्र

द्रेष्का० द्वाद० में रवि

रवि ५–५०–५९

× चंद्र १/८ ०–३–२९

			२८	३१
		२४	१०	
	२	२५		
		२	५७	
	२	३०		
०	१५			
०	०	०		
०	२०	२२	३५	३१

= ०–२०–२२

२ (४) चंद्र

सप्तमांशेश मंगल

मंगल ५–२–२०

× चंद्र १/८ ०–३–२९

			९	४०
		०	५८	
	२	२५		
		१	०	
	०	६		
०	१५			
०	०	०		
०	१७	३३	७	४०

= ०–१७–३३

२ (५) चंद्र

नवांशेश शुक्र

शुक्र ८–२०–२४

× चंद्र १/८ ०–३–२९

			११	३
		९	४०	
	३	५२		
		१	१२	
	१	०		
०	२४			
०	०	०		
०	२९	३	३	३६

= ०–२९–३

२ (७) चंद्र

त्रिंशांशेश बुध

बुध ८–३४–१९

× चंद्र १/८ ०–३–२९

			९	११
		१६	२६	
	५	५२		
		१	२७	
	१	४२		
०	२४			
०	०	०		
०	२९	५२	२	११

= ०–२९–५२

३ (१) मंगल

गृहेश शुक्र

शुक्र ८–२०–२४

× मंगल १/३ ०–१०–४२

			१६	४८
		१४	०	
	५	३६		
		४	०	
	३	२०		
१	२०			
०	०	०		
१	२९	१४	१६	४८

= १–२९–१४

३ (२) मंगल

होरेश रवि

रवि ५–५०–५९

× मंगल १/६ ०–५–२१

			२०	३९
		१७	३०	
	१	४५		
		४	५५	
	४	१०		
०	२५			
०	०	०		
०	३१	१७	४५	३९

= ०–३१–१८

३ (३) मंगल

द्रेष्काणेश बुध

बुध ८–३४–१९

× मंगल १/६ ०–५–२१

			६	३९
		११	५४	
	२	४८		
			३५	
	२	५०		
०	४०			
०	०	०		
०	४५	२१	१५	३९

= ०–४५–५२

३ (४) मंगल

सप्तमांशेश शनि

शनि ४–२५–५६

× मंगल १/६ ०–५–२१

			१९	३६
		८	४२	
	१	२४		
		४	४०	
	२	५		
०	२०			
०	०	०		
०	२३	४२	४४	३६

= ०–२३–४३

३ (५) मंगल

शुक्र नवांश

शुक्र ८–२०–२४

मंगल $\frac{1}{8}$ × ०–५–२१

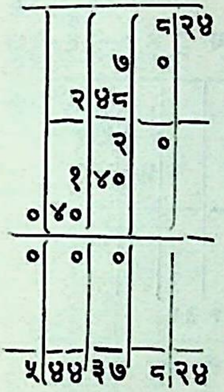

= ०–४४–३७

३ (६) मंगल

स्व द्वादशांश

मंगल ५–२–२०

मंगल $\frac{1}{8}$ × ०–५–२१

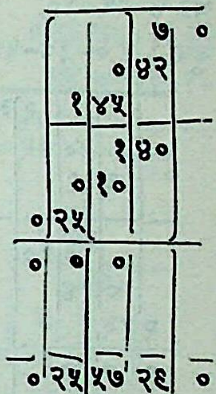

= ०–२५–५७

३ (७) मंगल

गुरु त्रिंशांश

गुरु ६–१३–५८

मंगल $\frac{1}{8}$ × ०–५–२१

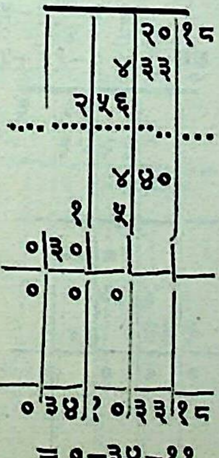

= ०–३४–११

४ (१) बुध

गृहेश चंद्र

चंद्र ७–२६–१०

बुध $\frac{1}{4}$ × ०–३९–५४

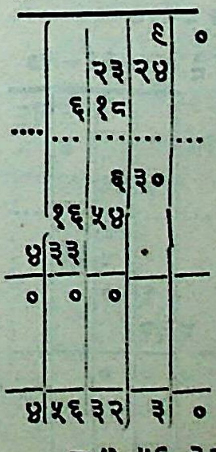

= ४–५६–३२

४ (२) बुध

होरा में चंद्र

चंद्र ७–२६–१०

बुध $\frac{१}{८}$ × ०–१८–५७

			९	३०
		२४	४२	
	६	३९		
		३	१०	
	८	१४		
२	१३			
०	०	०		
२	२८	२१	१	३०

= २–२८–२१

४ (३–४) बुध

द्रेष्का० सप्त० में मंगल

मंगल ५–२–२०

बुध $\frac{१}{८}$ × ०–१९–५७

			१९	०
		१	५४	
	४	४५		
		६	२०	
	०	३८		
१	३५			
०	०	०		
१	४०	३१	३३	०

= १–४०–३२

४ (५) बुध

शुक्र नवांश

शुक्र ८–२०–२४

बुध $\frac{१}{८}$ × ०–१९–५७

			२२	४८
		१९	०	
	७	३६		
...	...	...	...	....
		७	३६	
	६	२०		
२	३२			
०	०	०		
२	४६	२२	५८	४८

= २–४६–२३

४ (६–७) बुध

गुरु द्वाद० त्रिशांश

गुरु ६–१३–५८

बुध $\frac{१}{८}$ × ०–१९–५८

			५५	६
		१२	२१	
	५	४२		
		१८	२२	
	४	७		
१	५४			
०	०	०		
२	४	२०	३८	६

= २–४–२१

५ (१) गुरु
स्व गृही
गुरु ६–१३–५८
गुरु $\frac{१}{४}$ × ०–१४–४२

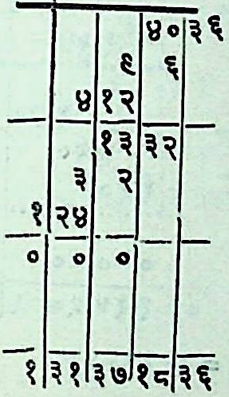

= १–३१–३७

५ (२–६) गुरु
होरा द्वाद० में चंद्र
चंद्र ७–२६–१०
गुरु $\frac{१}{८}$ × ०–७–२१

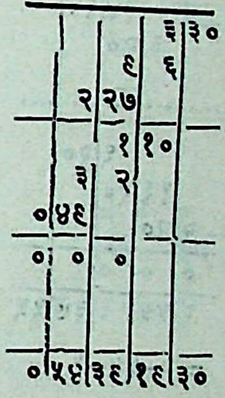

= ०–५४–३६

५ (३–४) गुरु
मंगल द्रेष्का० सप्त०
मंगल ५–२–२०
गुरु $\frac{१}{८}$ × ०–७–२१

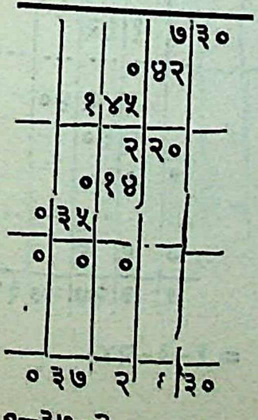

= ०–३७–२

५ (५–७) गुरु
बुध नवां० त्रि०
बुध ८–३४–१६
गुरु $\frac{१}{८}$ × ०–७–३१

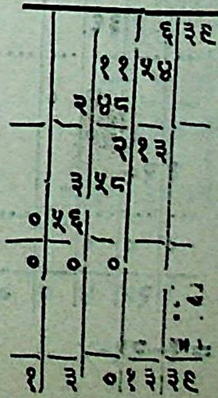

= १–३–०

६ (१) शुक्र

गृहेश बुध

बुध ८–२४–१९

शुक्र १/४ × ०–२०–२५

			७	५५
		१४	१०	
	३	२०		
....	....	....	....	....
		६	२०	
	११	२०		
२	४०			
०	०	०		
२	५५	०	३७	५५

= २–५५–१

६ (२) शुक्र

होरेश चंद्र

चंद्र ७–२६–१०

शुक्र १/२ × ०–१०–१२

			२	०
		५	१२	
	१	२४		
....	....	....	....	....
		१	४०	
	४	२०		
१	१०			
....	....	....	....	....
०	०	०		
१	१५	५०	५४	०

= १–१५–५१

६ (३–४) शुक्र

शुक्र द्रेष्का० सप्त०

शुक्र ८–२०–२४

शुक्र १/८ × ०–१०–१२

			४	४८
		४	०	
	१	३६		
...	...	...	...	...
		४	०	
	३	२०		
१	२०			
...	...	...	...	....
०	०	०		
१	२५	४	४	०

= १–२५–४

६ (५–६–७) शुक्र

गुरु नवां० द्वाद० त्रिं०

गुरु ६–१३–५८

शुक्र १/८ × ०–१०–१२

			११	३६
		२	३६	
	१	१२		
...	...	...	...	...
		६	४०	
	२	१०		
१	०			
...	...	...	...	...
०	०	८		
१	३	२४	२७	३६

= १–३–२४

७ (१) शनि
गृहेश शुक्र
शुक्र ८–२०–२४
शनि $\frac{1}{4}$ × ०–३०–७

				२	४८
			२	२०	
		०	५६		
—	—	—	—	—	—
			१२	०	
	१०	०			
४	०				
—	—	—	—	—	—
०	०	०			
४	११	१०	२२	४८	

= ४–११–१०

७ (२) शनि
होरेश रवि
रवि ५–५०–५६
शनि $\frac{1}{8}$ × ०–१५–३

				२	५७
			२	३०	
		०	१५		
			१४	४५	
		१२	३०		
	१	१५			
	०	०	०		
	१	२८	२	१७	५७

= १–२८–२

७ (३–६–७) शनि
स्व द्रे० द्वा० त्रिं०
शनि ४–२५–५६
शनि $\frac{1}{8}$ × ०–१५–३

				२	४८
			१	१५	
		०	१२		
			१४	०	
		६	१५		
	१				
	०	०	०		
	१	६	४२	१७	४८

= १–६–४२

७ (४) शनि
गुरु सप्तमांश
गुरु ६–१३–५८
शनि $\frac{1}{8}$ × ०–१५–३

				२	५४
			०	३९	
		०	१८		
			१४	३०	
		३	१५		
	१	३०			
	०	०	०		
	१	३३	४८	२१	५४

= १–३३–४८

७ (५) शनि
चंद्र नवांश
चंद्र ७–२६–१०
शनि $\frac{1}{8}$ × ०=१५–३

			०	३०
		१	१८	
	०	२१		
		२	३०	
	६	३०		
१	४५			
०	०	०		
१	५१	५४	४८	३२

= १–५१–५५

श्रीपति पद्धति से रिष्टकर रिष्टहर बल चक्र १०

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ ग्रह	१–२६–१६	०–४३–२५	१–२९–१४	४–५६–३२	१–३१–३७	२–५५–१	४–११–१०
२ होरा	०–३३–२६	०–२५–५४	०–३१–१८	२–२८–२१	०–५४–३९	१–१५–५१	१–२८– २
३ द्रेष्काण	३–३५–४०	०–२०–२३	०–४५–५२	१–४०–३२	०–३७– २	१–२५– ४	१– ६–४२
४ सप्तमांश	०–४२–३८	०–१७–३३	०–२३–३४	१–४०–३१	०–३७– २	१–२५– ४	१–३३–४८
५ नवमांश	३–३५–४०	०–२९– ३	०–४४–३७	२–४६–२३	१– ३– ०	१– ३–३४	१–५१–५५
६ द्वादशांश	०–४७–४९	०–२०–२३	०–२५–५७	२– ४–२१	०–५४–३९	१– ३–३४	१– ६–४२
७ त्रिंशांश	०–२८–५३	०–२९–५२	०–३४–११	२– ४–२१	१– ३– ०	१– ३–३४	१– ६–४२
योग	११–१९–२२	३– ६–३३	४–५४–५२	१७–४१– १	६–४०–५९	१२–२५– १	१२–५५– १

आयु की दशा साधन करने का उद्देश्य

जिस ग्रह की जितनी आयु निकलती है उतने ही समय तक उस ग्रह की दशा रहती है और उस दशा काल में शुभाशुभ फल का विचार होता है।

शुभ फल = जो ग्रह मित्र गृही मित्र नवांश में, स्व राशि स्व नवांश स्व उच्च या उच्च नवांश में हो तो दशा शुभ फल देने वाली होती है। यदि ग्रह अपनी नीच राशि को छोड़कर आगे बढ़ा हो तो वह उच्चाभिमुख कहलाता है। उच्च की ओर जाने के कारण उसकी आरोही दशा शुभ फल दायक होती है।

अशुभ फल = यदि नीच च्युत ग्रह (नीच की ओर जाने वाला ग्रह) हो अर्थात् उच्च राशि को छोड़कर नीचाभिमुख हो तो ग्रह की अवरोही दशा कहलाती है। वह अशुभ फल देती है। इसी प्रकार शत्रु गृही, नीच राशि या शत्रु नवांश या नीच नवांश में ग्रह हो तो अशुभ फल देता है।

मिश्र फल = त्यक्तोच्च ग्रह (जो उच्च को छोड़कर आगे बढ़ा हो) अर्थात् ग्रह की अवरोही दशा हो और मित्र राशि या मित्र नवांश में या अपनी राशि या अपने नवांश में हो तो ग्रह मिश्र फल देता है।

शुभ फल = परन्तु त्यक्तोच्च ग्रह शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त हो या बलवान किरण या इष्ट अधिक हो तो उपरोक्त अवरोहणी दशा में भी शुभ फल देता है।

रिष्टकर रिष्टहर बल साधन करने का उद्देश्य

रिष्ट भंग के विचार के लिये रिष्ट करने वाला और रिष्ट हरने वाला, इन दोनों ग्रहों के बल का विचार होता है।

ऊपर जो आयु कही है यदि कुंडली में हानि कारक ग्रह की दशा हो तो वह आयु संभव नहीं होती। यदि हानि कारक ग्रहों की दशा को शांत करने वाली स्थिति हो तब वह आयु संभव होती है।

इस कारण कुण्डली में अरिष्ट करने वाले और अरिष्ट हरने वाले ग्रहों का विचार कर उनका बल रिष्टकर रिष्टहर चक्र से देखना चाहिए।

इसी कारण रिष्ट करने वाले रिष्ट हरने वाले बुरे या अच्छे ग्रह के बल का अंतर करना यदि रिष्ट का बल अधिक हो तो रिष्ट होगा। यदि रिष्टहर का बल अधिक हो तो रिष्ट दूर हो जायगा।

रिष्टकर और रिष्टहर दोनों ग्रहों का इष्ट-कष्ट, शुभत्व-अशुभत्व और नीच-उच्च राशि, अस्त, मूल त्रिकोण व स्वक्षेत्री का और अधिमित्र, मित्र, सम, शत्रु, अधिशत्रु की राशि का विचार कर रिष्ट भंग होगा या नहीं, इसका विचार होता है।

इसी के निमित्त हित अहित चक्र भी बनाना चाहिए जिसमें ग्रहों के शुभत्व मित्र आदि का विचार कर हित अहित का विचार होता है।

हित अहित साधन करना आगे बताया है।

हित अहित साधन

रिष्टकर रिष्टहर बल के निमित्त प्रत्येक ग्रह का हित अहित साधन करना चाहिए। इस से प्रगट होता है कि किस ग्रह का कितना भाग अच्छा है कितना बुरा है।

यह हित अहित सप्तवर्गी चक्र पर से साधन होता है

नीचे चक्र से प्रगट होगा कि ग्रह कहां २ पर कितना हित कितना अहित होता है।

परिस्थिति के अनुसार ग्रह का हित अहित चक्र ११

ग्रह प्रकार	शुभ ग्रह	पाप ग्रह	मित्र या अधिमित्र	शत्रु या अधिशत्रु
हित	१	०	१	०
अहित	०	१	०	१

	मूल त्रिकोण या स्व क्षेत्री	उच्च या युद्ध जय	नीच या या युद्ध जित	अस्तंगत	सम
हित	२	४	०		०
अहित	०	०	४		०

जैसे कोई ग्रह शुभ है और मित्र गृही भी है तो शुभ का १ + मित्र गृही का १= २ हित हुआ। शुभ है और उच्च भी है तो १ + ४ = ५ हित हुआ। पाप है और उच्च भी है तो १ अहित और ४ हित हुआ। यदि अस्तंगत भी है तो (१ + ४) = ५ अहित हो जायगा। मूल त्रिकोण या स्वक्षेत्र का २ ही रहेगा। यदि शुभ ग्रह स्वक्षेत्री हो तो (१ + २) = ३ हित होगा। नीच भी हो और अस्तंगत भी हो तो ४ अहित ही रहेगा। अर्थात् ऊपर बताये में से कोई प्रकार का ग्रह हो तो उसके नीचे दिये अंक के अनुसार हित या अहित होता है।

इसी को सप्तवर्गी चक्र पर से मैत्री आदि जानकर आगे चक्र १२ में साधन कर बताया है।

सप्तवर्गी चक्र ६ (अध्याय २२ के सप्तवर्गी चक्र से)

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ गृह	चं० सम	गु० शत्रु	शु० मित्र	चं०अ.श.	गु० स्व.	बु० अ.मि.	शु० अ. मि.
२ होरा	र० स्व	चं० स्व	र०अ.मि.	चं०अ.श.	चं० स.	चं० अ. श.	र० स.
					उच्च		
३ द्रेष्काण	गु०सम	र० स.	बु० स.	मं. मित्र	मं० स.	शु० स्व	श० स्व
४ सप्तमांश	चं०स.	मं० शत्रु	श०शत्रु	मं० मि.	मं० सम	शु० स्व	गु० शत्रु
५ नवमांश	गु०स.	शु० शत्रु	शु०मित्र	शु.अ.मि.	बु०अ.श.	गु० श०	चं० अ. श.
६ द्वादशांश	शु.स.	र० स.	मं० स्व	गु० शत्रु	चं. स.	गु० श.	श० स्व
				नीच	उच		
७ त्रिशांश	मं०अ.मि.	बु० सम	गु० स.	गृ० श.	बु० अ.श.	गु० श.	श. स्व
				नीच			

इन में कोई ग्रह अस्तंगत नहीं है।

हित अहित साधन चक्र १२

ग्रह	रवि		चंद्र		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
हित अहित	हित	अहित	हि.	अ.	हि.	अ.	हि.	अ.	हि.	अ.	हि.	अ.	हि.	अ.
१ ग्रह	१	०	१	१	२	०	१	१	३	०	२	०	२	०
२ होरा	२	१	३	०	१	१	१	१	४+१	०	१	१	०	०
३ द्रेष्काण	१	०	०	१	१	०	१	१	०	१	२+१	०	२	१
४ सप्तमांश	१	०	०	२	०	२	१	१	०	१	२+१	०	१	१
५ नवमांश	१	०	१	१	२	०	२	०	१	१	१	१	१	१
६ द्वादशांश	१	०	०	१	२	१	१	४+१	४+१	१	१	१	२	१
७ त्रिशांश	१	१	१	०	१	०	१	४+१	१	१	१	१	२	१
योग	८	२	६	६	९	४	८	१४	१५	४	१२	४	१०	६

हित अहित दर्शक चक्र ११ देखो

रवि-=गृह में चंद्र है जो शुभ ग्रह है १ हित। सम=०। होरा में रवि स्वक्षेत्री है। स्व का २ हित। रवि पाप ग्रह का १ अहित। द्रेष्काण में गुरु शुभ १ हित। सम=०। सप्तमांश में चंद्र शुभ १ हित। सम =०। नवांश में शुक्र शुभ १ हित। सम=०। त्रिशांश में मंगल पाप १ अहित। अधिमित्र १ हित।

चंद्र–होरा में चंद्र। स्वक्षेत्री है। चंद्र शुभ १ हित+स्व का २ हित=३ हित हुआ। गुरु-होरा में चंद्र सम। चंद्र शुभ १ हित। सम=०। उच्चका ४ हित=५ हित। बुध=त्रिशांश में गुरु १ हित शुभका। शत्रु १ अहित+नीच होने से ४ अहित। इस प्रकार १ हित ५ अहित हुआ।

इसी प्रकार चक्र ११ से हित अहित विचार कर सप्तवर्गी चक्र ६ से मैत्री आदि का विचार कर हित अहित साधन चक्र १२ बनाया है।

हित अहित चक्र का विचार इस प्रकार होता है। मान लो किसी की कुंडली में मंगल रिष्टकर है। अब मंगल का हित अहित का योग देखा। मंगल का हित ९, अहित ४ है। शेष ५ हित बचा। गुरु रिष्टहर है। गुरु का हित १५ अहित ४ है। शेष ११ हित बचा। रिष्ट हरने वाले का हित यहां अधिक है तो रिष्ट नहीं होगा। इस प्रकार रिष्ट करने वाले ग्रह और रिष्ट हरने वाले ग्रह का हित अहित विचार कर देखना पड़ता है किस का हित या अहित प्रबल है।

आयु दशा की अंतर्दशा अर्थात् मूल दशा की पाचक दशा निकालना

ग्रहों की महादशा में अपने गुण, आरोही, अवरोही, उच्च नीच आदि के अनुसार जो फल होता है उस के फल का सूक्ष्म समय निकालने के लिये अंतर्दशा निकालनी पड़ती है।

अंतर्दशा में भी ग्रह अपने गुण आरोही अवरोही उच्च नीच आदि के अनुसार फल देता है। यदि एक राशि में अधिक ग्रह हों तो उन में जो सबसे बली ग्रह होता है वह अपने२ गुण के अनुसार अपनी अंतर्दशा में फल देता है।

अंतर्दशा निकालने का नियम

अंतर्दशा के समय के न्यास का चक्र १३

दशापति के साथ ग्रह का सम्बंध	दशापति के साथ ग्रह	दशापति के त्रिकोण में (५-९)	दशापति के सप्तम में ७	दशापति से चतुरस्र में (४-८)	जिस ग्रह की महादशा हो उस की अंतर्दशा पहिले होगी
समय भिन्न में नियम	$\frac{1}{2}$	$\frac{1}{3}$	$\frac{1}{7}$	$\frac{1}{4}$	$\frac{1}{1}$

(१) प्रत्येक ग्रह की अंतर्दशा करने के लिये पहिले उसी ग्रह की अंतर्दशा होती है। उस का १ रूप = $\frac{1}{1}$ लिखना।

(२) दशापति के साथ कोई ग्रह या लग्न हो तो $\frac{1}{2}$ रूप लिखना। अर्थात् ग्रह को पूर्ण आयु की आधी आयु इसे मिलेगी।

(३) दशापति के त्रिकोण (५-९ स्थान) में कोई ग्रह या लग्न हो तो $\frac{1}{3}$ रूप लिखना । इसे ग्रह की पूर्णायु की $\frac{1}{3}$ आयु मिलेगी ।

(४) दशापति के सप्तम में कोई ग्रह या लग्न हो तो $\frac{1}{7}$ रूप लिखना । इसे आयु का सप्तमांश मिलेगा ।

(५) दशापति के चतुरस्त्र (४-८ स्थान) में कोई ग्रह हो तो $\frac{1}{4}$ रूप लिखना । इसे आयु का चतुर्थांश मिलेगा ।

(६) यदि किसी स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो जो ग्रह सबसे बली हो केवल उसी को लेना । इस में बल षड्बल के अनुसार विचार करना ।

(७) उपरांत इन सब रूप का समच्छेद (भिन्न) कर के छेदों को (भाजक जो नीचे दिया रहता है) छोड़ देना और ऊपर की संख्या को जोड़कर ग्रहण करना । वह जोड़ी हुई संख्या भाजक होगी और जिन२ संख्याओं को मिलाकर वह जोड़ प्राप्त हुआ था वह संख्या मूलदशापति के वर्षों में क्रमानुसार गुणा कर प्रत्येक में उपरोक्त भाजक का भाग देना । भाग देने से जो लब्धि वर्ष मास आदि प्राप्त होंगे वह प्रत्येक ग्रह की अंतर्दशा का समय होगा ।

(८) यदि त्रिकोण चतुरस्त्र आदि के दोनों स्थानों में ग्रह हो तो उन में से दशा क्रम में जो बली हो उसे पहिले रखना उस से कम बल वाले को बाद में लेना । जैसे मान लो त्रिकोण के पंचम में मंगल और नवम में सूर्य है तो दशा क्रम बल में सूर्य बली होने से सूर्य की दशा पहिले मंगल की बाद में होगी । दशा क्रम बल चक्र २ में दिया है ।

(९) ग्रह में यहाँ लग्न भी सम्मिलित है । इसमें राहु केतु का विचार नहीं होता ।

अंतर्दशा साधन करने का उदाहरण

चक्र ४ में मिश्रायु दशा क्रम दिया है उसी की अंतर्दशा निकालनी है ।

लग्न कुंडली

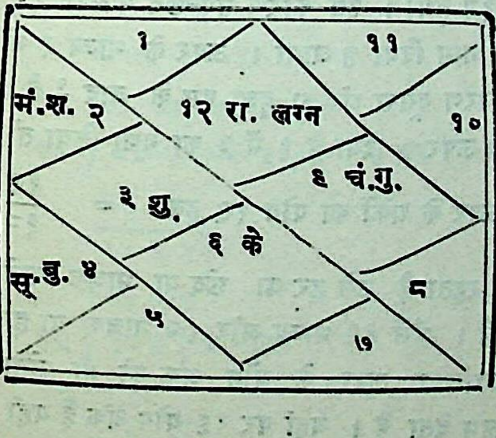

मिश्रायु चक्र ४ में प्रथम लग्न की दशा है इस कारण पहिले लग्न की अंतर्दशा निकालनी है । लग्न की दशा है इसलिये दशापति लग्न हुआ । इस से शेष ग्रहों की स्थिति का विचार करेंगे ।

(१) लग्न की महादशा है = लग्न $\frac{1}{1}$

(२) लग्न के साथ में कोई ग्रह नहीं है = ×

(३) लग्न से त्रिकोण (५-९)में सूर्य बुध ५ में है
दोनों में षड़बल में बुध बली है इस कारण } बुध $\frac{१}{३}$

केवल बुध को लिया

(४) सप्तम में कोई ग्रह नहीं है ... = ×

(५) चतुरस्र (४–८ स्थान) में से चतुर्थ में केवल शुक्र है। = शुक्र $\frac{१}{४}$

अब इन सब का समच्छेद किया तो इस प्रकार हुआः—

लग्न $\frac{१}{१}$ + बुध $\frac{१}{३}$ + शुक्र $\frac{१}{४}$ = $\frac{१२+४+३}{१२}$ = $\frac{१९}{१२}$ नीचे का हर (छेद) १२ छोड़ कर केवल ऊपर का योग अंक १९ लिया। इसे ही यहां भाजक या हर समझो। ऊपर के अंक लग्न १२ + बुध ४ + शुक्र ३ जिन के योग से १९ अंक आया था ये ही अंक क्रमानुसार लग्न, बुध और शुक्र के गुणक हुए। अर्थात् लग्न का गुणक १२, बुध का ४, और शुक्र का ३ हुआ। इन प्रत्येक के गुणन फल में उपरोक्त योग अंक १९ (भाजक) का भाग देने से लब्धि वर्ष आदि प्रत्येक ग्रह की अंतर्दशा का समय निकल आयगा।

समच्छेद क्रिया

समच्छेद या भिन्न करने केलिये नीचे के वटे में दिये हुए अंक अर्थात् भाजक के गुणन फल का सब से छोटा ऐसा एक अंक खोजो जिस में सब अंकों का भाग चला जावे। जैसे $\frac{१}{१}$ × $\frac{१}{३}$ × $\frac{१}{४}$ इन में नीचे १,३ और ४ अंक है। इन का सब से छोटा गुणन फल ४×३ = १२ हुआ। इस में १,३ और ४ का भी भाग जा सकता है।

पहिला अंक $\frac{१}{१}$ है। १२ में भाजक १ का भाग दिया तो १२ आया और ऊपर का अंक १ भाज्य में १२ का गुणा किया तो १२ हुआ। इस कारण समच्छेद में ऊपर १२ रखा। आगे $\frac{१}{३}$ दिया है। १२ में ३ का भाग दिया ४ आया। ऊपर के भाज्य १ में ४ का गुणा किया तो ४ आया। इस कारण दूसरा अंक ४ हुआ इस के बाद $\frac{१}{४}$ है। १२ में ४ का भाग दिया ३ लब्धि आया। ऊपर १ दिया है १ में ३ का गुणा किया तो ३ आया इस प्रकार $\frac{१२×४×३}{१२}$ हुआ। ऊपर के अंकों का योग १९ हुआ = $\frac{१९}{१२}$ यही भिन्न हुआ। नीचे जो अंक दिया रहता है उसे हर या छेद या भाजक कहते हैं। ऊपर के अंक को भाज्य कहते हैं। जैसे १९ भाज्य और १२ भाजक या हर है। परन्तु यहां पर नीचे का हर त्यागकर ऊपर के योग अंक को ही लेना पड़ता है और वह योग अंक भाजक का काम देता है। यहां पर १९ योग अंक हैं यही

भाजक हुआ। पूर्व भाजक १२ को त्याग दिया इस का कोई काम नहीं रहा। जिन अंकों का योग १९ हुआ था उन प्रत्येक अंकों को गुण्य कहेंगे। इस प्रकार गुण्य से गुणा कर नवीन भाजक (योग अंक) से भाग देने पर प्रत्येक ग्रह के अंतर्दशा का समय निकल आयगा।

इसी को आगे निकालेंगे।

लग्न अंतर्दशा का गुणक	लग्न	बुध	शुक्र	भाजक
	१२	४	३	१९

लग्न मिश्रायु वर्ष व. मा. दि. घ. प.
७—२—१२—९—३५

लग्नवर्ष चक्र ४ से

व. मा. दि. घ. प.
७-२-१२-९-३५
लग्न गुणक × १२

			७	०
		१	०८	
८४	२४	१४४		
८४	२४	१४५	५५	०
+२	+४	÷३०		
८६	२८	=२५		
	÷१२			
	=४			

=८६-४-२५-५५-०

व. मा. दि. घ. प.
१९) ८६-४-२२-५५-० (४ वर्ष
७६
१०×१२
१२०+४
१९) १२४ (६ मास
११४
१०×३०
३००+२५

१९) ३२५ (१७ दिन
१९
१३५
१३३
२×६०
१२०+५५
१९) १७५ (९ घड़ी
१७१
४×६०
१९) २४० (१२ पल
१९ =१३
५०
३८
१२

व. मा. दि. घ. प.
४-६-१७-९-१३
लग्न अंतर वर्ष

व. मा. दि. घ. प.
लग्न वर्ष ७-२-१२-९-३५
बुध गुणक × ४

			२	२०
		०	३६	
२८	८	४८		
२८	८	४८	३८	२०
	+१	÷३०		
	९	=१८		

२८- ९- १८-३८-२०
व० मा० दि० घ० प०
= २८-९-१८-३८-२०

१९) २८-९-१८-३८-२० (१ वर्ष
१९
९ × १२
१०८ + ९
१९) ११७ (६ मास
११४
३ + ३० + १८
१९) १०८ (५ दिन
९५
१३
१३ × ६०
७८० + ३८
१९) ८१८ (४३ घड़ी
७६
५८
५७
१ × ६० + २०
१९) ८० (४ पल
७६
४
= व. मा. दि. घ.
१-६-५-४३-४
बुध अंतर वष

लग्न वर्ष व. मा. दि. घ. प.
७-२-१२-९-३५
शुक्र गुणक × ३

			१	४५
		०	२७	
२१	६	३६		
२१	६	३६	२८	४५
	+१	÷३०		
	७	= ६		

= २१-७-६-२८-४५
व. मा. दि. घ. प.

१९) २१-७-६-२८-४५ (१ वर्ष
१९
२ × १२
२४ + ७
१९) ३१ (१ माथ
१९
१२ × ३०
३६० + ६
१९) ३६६ (१९ दिन
१९
१७६
१७१
५ × ६०
३०० + २८
१९) ३२८ (१७ घड़ी
१९
१३८
१३३
५ × ६०
३०० + ४५

१६) ३४५ (१७ पल
 १६   = १८
१५१
१३३
१८

= व. मा. दि. घ. प.
 १–१–१६–१७–१८
 शुक्र अंतर वर्ष

या इस को इस प्रकार भी गणित कर अंतर वर्ष निकाल सकते हैं। लग्न अंतर्दशा का समच्छेद इस प्रकार है।

लग्न $\frac{१}{१}$, बुध $\frac{१}{३}$, शुक्र $\frac{१}{४}$। अर्थात् लग्न अंतर आयु का $\frac{१}{३}$ करने से बुध वर्ष और $\frac{१}{४}$ करने से शुक्र वर्ष निकल आयंगे।

व. मा. दि. घ. प.

लग्न अंतर वर्ष ४—६—१७–६–१३ ÷ ३ बुध

$\frac{१}{३}$ = १—६—५—४३-४ = बुध अंतर्दशा वर्ष

लग्न अंतर वर्ष व. मा. दिं. घ. प.

४- ६- १७- ६-१३ ÷ ४ शुक्र

$\frac{१}{४}$ = १- १- १६-१७-१८ = शुक्र अंतर्दशा वर्ष

(१) लग्न की दशा में अंतर्दशा चक्र १४

अंतर्दशा	व.	मास	दिन	घ.	पल
१ लग्न की अंतर्दशा	४	६	१७	६	१३
२ बुध "	१	६	५	४३	४
३ शुक्र "	१	१	१६	१७	१८
योग	७	२	१२	६	३५

अंतर्दशा के समय का योग करने से महादशा के वर्ष तुल्य समय होता है। जोड़ने में यदि १-२ पल का अंतर आवे तो पल का शेष जो आधे से अधिक हो तो उसे १ मान लेने से पूरा समय निकल आता है।

(२) इसके उपरांत चंद्र की दशा आती है। इसकी अंतर्दशा निकालना है

(१) चंद्र की प्रथम अंतर्दशा = चंद्र १/१

(२) चंद्र के साथ गुरु हैं = गुरु १/२

(३) ,, त्रिकोण में ×

(४) ,, सप्तम में शुक्र = शुक्र १/७

(५) ,, चतुरस्र में बुध = बुध १/४

बुध के साथ रवि भी है परन्तु दोनों में बुध बली होने से बुध को केवल लिया रवि को त्याग दिया

चं वर्ष व. मा. दि. घ. प.

२–६–२७–१३–४०

चंद्र गुणक × २८

			१८	४०
		६	४	
५६	१६८	२१६		
		५४		
५६	१६८	७६२	२२	४०
+१६	+२५	÷३०	=३२	
७२	१९३	=१२		

÷ १२

= १

= ७२–१–१२–२२–४०

व. मा. दि. घ. प.

५३) ७२– १ –१२–२२–४० (१ वर्ष
५३
१९ × १२
२२८ + १

५३) २२९ (४ मास
२१२
१७ × ३०
५१० + १२
५२२

५३) ५२२ (९ दिन
४७७
४५ × ६०
२७०० + २२

५३) २७२२ (५१ घड़ी
२६५
७२
५३
१९ × ३०
११४० + ४०

५३) ११८० (२२ पल
१०६
१२०
१०६
१४

= व. मा. दि. घ. प.

१–४– ९–५१–२२

चंद्र की अंतर्दशा

इसका समच्छेद

चंद्र गुरु शुक्र बुध

१/१ + १/२ + १/७ + १/४

= (२८ + १४ + ४ + ७)/२८ = ५३/२८

गुणक चंद्र	गुरु	शुक्र	बुध	भाजक
२८	१४	४	७	५३

व. मा. दि. घ. प.

चंद्र महादशा वर्ष २–६–२७–१३–४०

(चक्र ४ से)

चंद्र की अंतर्दशा का १/२ गुरु, १/७ शुक्र १/४ बुध है इस कारण चंद्र की अंतर्दशा का इस

प्रकार विभाग करने से इन ग्रहों की अंतर्दशा का समय निकल आयगा।

चंद्र अंतर्दशा वर्ष मा.दि. घ. प.

१-४-९-५१-२२÷२ गुरु

$\frac{१}{२}$ = ०-८-४-५५-४१ = गुरु अंतर्दशा

चंद्र अंतर्दशा व. मा. दि. घ. प.

१-४-९-५१-२२ ÷ ७ शुक्र

$\frac{१}{७}$ = ०-२-९-५८-४६-शुक्र अंतर्दशा

चंद्र अंतर्दशा व. मा. दि. घ. प.

१- ४- ९-५१-२२ ÷ ४ बुध

$\frac{१}{४}$ = ०-४-२-२७-५०″=५१ बुध अंतर्दशा

(२) चंद्र की महादशा में अंतर्दशा चक्र १५

अंतर्दशा	वर्ष	मास	दिन	घ.	पल
१ चंद्र अंतर्दशा	१	४	९	५१	५२
२ गुरु ,,	०	८	४	५५	४१
३ शुक्र ,,	०	२	९	५८	४६
४ बुध ,,	०	४	२	२७	५१
योग	२	६	२७	१३	१४

(३) उपरांत गुरु की दशा आती है।

(१) गुरु की दशा प्रथम = गुरु $\frac{१}{१}$

(२) गुरु के साथ चंद्र है = चंद्र $\frac{१}{२}$

(३) ,, त्रिकोण में = ×

(४) ,, सप्तम में शुक्र = शुक्र $\frac{१}{७}$

(५) ,, चतुरस्र ४ में लग्न = लग्न $\frac{१}{४}$

,, ,, ८ में बुध = बुध $\frac{१}{४}$

दशा क्रम बल में लग्न बली है बुध अल्प बल है इससे लग्न को पहिले रखा

समच्छेद

गुरु चंद्र शुक्र लग्न बुध

$\frac{१}{१}+\frac{१}{२}+\frac{१}{७}+\frac{१}{४}+\frac{१}{४}$

$= \frac{२८+१४+४+७+७}{२८} = \frac{६०}{२८}$

गुणक गुरु चंद्र शुक्र लग्न बुध भाजक

२८ १४ ४ ७ ७ ६०

गुरु वर्ष व. मा. दि. घ. प.

९-६ - १ ३७-३४(चक्र४ से)

गुरु वर्ष व. मा. दि. घ. प.

९– ६– १–३७–३४

गुरु गुणक × २८

			१५	५२
		१७	१६	
२५२	१६८	२८		
२५२	१६८	४५	३१	५२
+१४	+१	÷३०		
२६६	१६९	=१५		

÷१२

=१

=२६६–१–१५–३१–५२

व. मा. दि. घ. प.

६०) २६६-१-१५-३१-५२ (४ वर्ष
२४०
२६ × १२ + १
६०) ३१३ (५ मास
३००
१३ × ३० + १५
६०) ४०५ (६ दिन
३६०
४५ × ६०
२७०० + ३१
२७३१

६०)२७३१(४५ घड़ी
२४०
३३१
३००
३१ × ६०
१८६० + ५२
६०)१९१२(३१ पल
१८०
११२
६०
५२

वर्ष मा. दि. घ. प.

=४–५–६–४५–३२

गुरु अंतर्दशा

गुरु की अंतर्दशा का $\frac{१}{२}$ चंद्र, $\frac{१}{७}$ शुक्र. $\frac{१}{४}$ लग्न; $\frac{१}{४}$ बुध है। इस कारण गुरु की अंतर्दशा का इस प्रकार विभाग करने से इन ग्रहों की अंतर्दशा निकल आयगी।

गुरु अतर्दशा व. मा. दि. घ. प.

४–५–६–४५–३२ ÷ २ चंद्र

$\frac{१}{२}$ = २–२–१८–२२–४६ = चंद्रअंतर्दशा

गुरु अंतर्दशा व. मा. दि. घ. प.

४–५–६–४५–३२ ÷ ७ शुक्र

$\frac{१}{७}$ = ०–७–१८–६–३० = शुक्र अंतर्दशा

गुरु अंतर्दशा व. मा. दि. घ. प.

४–५–६–४५–३२ ÷ ४ लग्न

$\frac{१}{४}$ = १–१–९–११–२३ = लग्न अंतर्दशा

यही बुध अंतर्दशा भी होगी

(३) गुरु की महादशा में अंतर्दशा चक्र १६

अंतर्दशा	वर्ष	मा.	दि.	घ.	प.
१ गुरु की अंतर्दशा	४	५	६	४५	३२
२ चंद्र ,,	,, २	२	१८	२२	४६
३ शुक्र ,,	,, ०	७	१८	६	३०
४ लग्न ,,	,, १	१	९	११	२३
५ बुध ,,	,, १	१	९	११	२३
योग	९	६	१	३७	३४

(४) इसके बाद शुक्र की दशा आरम्भ होगी

(१) शुक्र की अंतर्दशा = प्रथम = शुक्र $\frac{१}{१}$

(२) शुक्र के साथ = ×

(३) ,, त्रिकोण में = ×

(४) ,, सप्तम में चंद्र गुरु हैं चंद्र अधिक बली होने से चंद्र को लिया गुरु को छोड़ दिया } = चंद्र $\frac{१}{७}$

(५) ,, चतुरस्र में ......

व. मा. दि. घ. प.

शुक्र वर्ष १९–६–०–२०–३८

शुक्र गुणक × ७ शुक्र अंतर्दशा

			४	२६
		२	२०	
१३३	४२	०		
१३३	४२	२	२४	२६
+ ३	÷ १३			
१३६	= ६			

= १३६–६–२–२४–३६

व. मा. दि. घ. प.

८) १३६–६–२–२४–३६ (१७ वर्ष

८

५६

५६

० + ६

समच्छेद

$\frac{१}{१}+\frac{१}{७}=\frac{७+१}{७}=\frac{८}{७}$

शुक्र चंद्र

गुणक शुक्र	चंद्र	भाजक
७	१	८

शुक्र वर्ग व. मा. दि. घ. प.

१९–६–०–२०–३८ (चक्र ४ से)

शुक्र अंतर्दशा का $\frac{१}{७}$ चंद्र है

व. मा. दि. घ. प.

१७–०–२२–४८–४ ÷ ७ चंद्र

$\frac{१}{७}$ = २–५–७–३२–३४ चंद्र अंतर्दशा

शुक्र की दशा में अंतर्दशा चक्र १७

अंतर्दशा	वर्ष	मास	दिन	घ.	पल
शुक्र की अंतर्दशा	१७	०	२२	४८	४
चंद्र की ,,	२	५	७	३२	३४
योग	१९	६	०	२०	३८

```
८ ) ६ ( ० मा.
  ×३०
-----------
 १८०+२
८ ) १८२ ( २२ दि.
    १६
   ----
    २२
    १६
   ----
     ६×६०+२४
   ------------
    ३८४
```

व. मा. दि. घ. प.
= १७–०–२२-४८-४
शुक्र अंतर्दशा

```
८ ) ३८४ ( ४८ घ.
    ३२
   ----
    ६४
    ६४
   ------
     ०+३६
८ ) ३६ ( ४ पल
    ३२
   ----
     ४
```

(५) इसके उपरांत सूर्य की दशा आती है।

(१) सूर्य की दशा प्रथम = सूर्य $\frac{१}{१}$
(२) सूर्य के साथ बुध = बुध $\frac{१}{२}$
(३) ,, त्रिकोण में लग्न=लग्न $\frac{१}{३}$
(४) ,, सप्तम व चतुरस्र में = ×

सूर्य व. मा. दि. घ. प.
१४–१०–३–२१–२२

सूर्य गुणक × ६

			२	१२
		२	६	
८४	६०	१८		
८४	६०	२०	८	१२
+५	÷१२			
८९	=०			

= ८९–०–२०–८-१२

समच्छेद
सूर्य बुध लग्न

$$\frac{१}{१}+\frac{१}{२}+\frac{१}{३}=\frac{६+३+२}{६}=\frac{११}{६}$$

गुणक सूर्य	बुध	लग्न	भाजक
६	३	२	११

सूर्य वर्ष व. मा· दि घ. प. (चक्र ४ से)
१४-१०-३-२१-२२
सूर्य का बुध $\frac{१}{२}$, लग्न $\frac{१}{३}$ है।

सूर्य अंतर व· मा. दि, घ. प.
८–१–४–३३–२८ ÷ २ बुध
$\frac{१}{२}$ = ४०-१७-१६-४४ बुध अंतर्दशा

सूर्य अंतर व. मा. दि. घ. प.
८–१–४–३३–२८ ÷ ३ लग्न
$\frac{१}{३}$ = २‥८–११–३१–९$\frac{१}{३}$ लग्न अंतर्दशा

व. मा. दि. घ. प.

११) ८९–०–२०–८–१२ (८
८८
१ × १२
११) १२ (१
११
१ × ३० + २०
११) ५० (४ दिन
४४
६ × ६०
३६० + ८
११) ३६८ (३ घड़ी
३३
३८
३३
५

सूर्य की दशा में अंतर्दशा चक्र १८

अंतर्दशा		वर्ष	मा.	दि.	घ.	प.
सूर्य की अंतर्दशा		८	१	४	३३	२८
बुध की	,,	४	०	१७	१६	४४
लग्न की	,,	१	८	११	३१	९
योग		१४	१०	३	२१	२१

५ × ६०
३०० + १२
११) ३१२ (२८
२२
९२
८८
४
= वर्ष मा. दि. घ. प.
८–१–४–३३–२८
सूर्य अंतर्दशा

समच्छेद

बुध सूर्य लग्न

$$\frac{\frac{१}{१} + \frac{१}{२} + \frac{१}{३} = ६ + ३ + २}{६} = \frac{११}{६}$$

गुणक बुध	सूर्य	लग्न	भाजक
६	३	२	११

बुध वर्ष व. मा. दि. घ. प.
५–६–१–५७–४६ (चक्र ४ से)

बुध अंतर्दशा व. मा. दि. घ. प.
३–०–१– ४–१४ ÷ २ सूर्य
$\frac{१}{२}$ = १–६–०–३२–७ = सूर्य अंतर्दशा

बुध अंतर्दशा व. मा, दि. घ. प.
३–०–१–४–१४ ÷ ३ लग्न
$\frac{१}{३}$ = १-०-०-२१-२४ = २१$\frac{२}{३}$ = लग्न अंतर्दशा

(६) उपरांत बुध की दशा आती है

(१) बुध प्रथम दशा = बुध $\frac{१}{१}$
(२) बुध के साथ सूर्य = सूर्य $\frac{१}{२}$
(३) ,, त्रिकोण में लग्न = लग्न $\frac{१}{३}$
(४) सप्तम व चतुरस्र में = ×

बुध वर्ष व. मा. दि. घ. प.
५–६–१–५७–४६
बुध गुणक × ६

			४	३६
		५	४२	
३०	३६	६		
३०	३६	११	४६	३६

+३ ÷ १२
३३ = ०
= ३३ –०–११–४६–३६.

व. मा. दि. घ. प.

११)३३–०–११–४६–३६ (३ वर्ष
 ३३
 ०
११) ११ (१दिन
 ११
 ०
११) ४६ (४ घड़ी
 ४४
 २

व. मा. दि. घ. प.
३–०–१–४–१४
बुध अंतर्दशा

७ इसके उपरांत शनि की दशा आती है।

(१) शनि दशा प्रथम = शनि $\frac{१}{१}$
(२) ,, के साथ मंगल है = मंगल $\frac{१}{२}$
(३) ,, त्रिकोण सप्तम में = ×
(४) ,, चतुरस्र में चंद्र = चंद्र $\frac{१}{४}$

चंद्र गुरु साथ में है चंद्र बली होने से केवल चंद्र लिया गुरु को छोड़ दिया

बुध की दशा में अंतर्दशा चक्र १९

अंतर्दशा	वर्ष	मास	दिन	घ.	पल
बुध की अंतर्दशा	३	०	१	४	१४
सूर्य की ,,	१	६	०	३२	७
लग्न की ,,	१	०	०	२१	२५
योग	५	६	१	५७	४६

२×६०+३६
११) १५६ (१४ पल
 ११
 ४६
 ४४
 २

समच्छेद

शनि मंगल चंद्र

$\frac{१}{१}+\frac{१}{२}+\frac{१}{४}=\frac{४+२+१}{४}=\frac{७}{४}$

गुणक	शनि	मंगल	चंद्र	भाजक
	४	२	७	७

शनि वर्ष व. मा. दि. घ. प.
१७–३–१०–९–५ (चक्र ४ से)

शनि वर्ष व. मा. दि. घ. प.
१७–३–१०–९–५
शनि गुणक × ४

६८	१२	४०	३६	२०
+१	+१	+३०		
६९	१३	=१०		
	÷१२			
	=१			

=६९–१–१०–३६–२०

शनि अंतर्दशा का $\frac{१}{२}$ मंगल, $\frac{१}{४}$ चंद्र है।

शनि अंतर व. मा. दि. घ. प.
९–१०–१४–२२–२० ÷ २ मंगल
$\frac{१}{२}$ = ४–११–७–११–१० मंगल अंतर्दशा

शनि अंतर व. मा. दि. घ. प.
९–१०–१४–२२–२० ÷ ४ चंद्र
$\frac{१}{४}$ = २–५–१८–३५–३५ चंद्र अंतर्दशा

व. मा. दि. घ. प.
७) ६९–१–१०–३६–२०(९ वर्ष

६३
६ × १२ + १
७)७३(१० मास
७
३ × ३०
९० + १०
७)१००(१४ दिन
७
३०
२८
२

२ × ६० + ३६
७)१५६(२२ घड़ी
१४
१६
१४
२ × ६० + २०
७)१४०(२० पल
१४
०

शनि की महादशा में अन्तर्दशा चक्र २०

अंतर्दशा	वर्ष	मा.	दि.	घ.	प.
शनि अंतर्दशा	९	१०	१४	२२	२०
मंगल ,,	४	११	७	११	१०
चंद्र ,,	२	५	१८	३५	३५
योग	१७	३	१०	९	५

= व. मा. दि. घ. प.
९–१०–१४–२२–२०
शनि अंतर्दशा

(८) अंत में मंगल की दशा आती है।
(१) मंगल प्रथम = मंगल $\frac{१}{१}$
(२) मंगल के साथ शनि है = शनि $\frac{१}{२}$
(३) ,, त्रिकोण सप्तम में = ×
(४) ,, चतुरस्र में चंद्र है = चंद्र $\frac{१}{४}$

यहाँ चंद्र गुरु साथ हैं इसमें चंद्र बली है उसे लिया गुरु को छोड़ दिया

मंगल व. मा. दि. घ. पल
२– २–५–३०–२८
मंगल गुणक × ४

			१	५२
		२	०	
८	८	२०		
८	८	२२	१	५२

= ८–८–२२–१–५२

इसका न्यास
मंगल शनि चंद्र

$$\frac{१}{१} + \frac{१}{२} + \frac{१}{४} = \frac{४ + २ + १}{४} = \frac{७}{४}$$

गुणक मंगल	शनि	चंद्र	भाजक
४	२	१	७

मंगल वर्ष व. मा. दि. घ. प.
२– २–५–३०–२८
(चक्र ४ से)

मंगल की अंतर्दशा का $\frac{१}{२}$ शनि, $\frac{१}{४}$ चंद्र है।

मंगल अंतर व. मा. दि. घ. प.
१–२–२८–५१–४२ + २ शनि
$\frac{१}{२}$ = ०–७–१४–२५–५१ = शनि अंतर

मंगल अंतर व. मा. दि. घ. प.
१–२–२८–५१–४२ + ४ चंद्र
$\frac{१}{४}$ = ०–३–२२–१२–५५ = चंद्र अंतर

वा. मा. दि. घ. प.
७)८–८–२२–१–५२(१ वर्ष

७
१×१२+८
७)२०(२ मास
१४
६×३०+२२
७)२०२(२८ दिन
१४
६२
५६
६

६×६०+१
७)३६१(५१ घड़ी
३५
११
७
४×६०×५२
७)२९२(४१
२८
१२
७
५

मंगल की दशा में अन्तर्दशा चक्र २१

अंतर्दशा	व.	मा.	दि.	घ.	प.
मंगल की	१	२	२८	५१	४२
शनि की	०	७	१४	२५	५१
चंद्र की	०	३	२२	१२	५५
योग	२	२	५	३०	२८

=व. मा. दि. घ. प.
१– २–२८–५१–४२
मंगल की अंतर्दशा

मिश्रायु दशा की अन्तर्दशा चक्र २२ (चक्र १४ से २१ तक का संग्रह)

१ लग्न दशा की अंतर्दशा

अंतर्दशा	लग्न	बुध	शुक्र	योग
वर्ष	४	१	१	७
मास	६	६	१	२
दिन	१७	५	१९	१२
घ०	९	४३	१७	९
पल	१३	४	१८	३५

२ चंद्र दशा की

	चंद्र	गुरु	शुक्र	बुध	योग
वर्ष	१	०	०	०	२
मास	४	८	२	४	६
दिन	९	४	९	२	२७
घ०	५१	५५	५८	२७	१३
पल	२२	४१	४६	५१	४०

३ गुरु दशा की

	गुरु	चद्र	शुक्र	लग्न	बुध	योग
वर्ष	४	२	०	१	१	९
मास	५	२	७	१	१	६
दिन	६	१८	१८	९	९	१
घ०	४५	२२	६	११	११	३७
पल	३२	४६	३०	२३	२३	३४

४ शुक्र की

	शुक्र	चंद्र	योग
वर्ष	१७	२	१९
मास	०	५	६
दिन	२२	७	०
घ०	४८	३२	२०
पल	४	३४	३८

५ सूर्य दशा की

	सूर्य	बुध	लग्न	योग
वर्ष	८	४	२	१४
मास	१	०	८	१०
दिन	४	१७	११	३
घ०	३३	१६	३१	२१
पल	२८	४४	९	२१

६ बुध की				
अंतर्दशा	बुध	सूर्य	लग्न	योग
वर्ष	३	१	१	५
मास	०	६	०	६
दिन	१	०	०	१
घ०	४	३२	२१	५७
पल	१४	७	२५	४६

७ शनि की			
शनि	मंगल	चंद्र	योग
९	४	२	१७
१०	११	५	३
१४	७	१८	१०
२१	११	३५	९
२०	१०	३५	५

८ मंगल की			
मंगल	शनि	चंद्र	योग
१	०	०	२
२	७	३	२
२८	१४	२२	५
५१	२५	१२	३०
४२	५१	५५	२८

विदशा और उपदशा साधन

जिस प्रकार अभी महादशा की अंतर्दशा साधन करना बताया गया है उसो रीति से अंतर्दशा से विदशा भी निकाली जाती है।

अंतर्दशा के समय को महादशा कल्पना करना और अंतर्दशा के स्वामी को दशा पति कल्पना करना। पूर्व बताई रीति से यह देखना कि दशापति के साथ में कोई ग्रह है क्या या उसके त्रिकोण सप्तम चतुरस्र आदि में कोई ग्रह है क्या ? यदि कोई ग्रह हो तो उनके पूर्व बताए अनुसार अंशों को लेकर समच्छेद कर न्यास करना और न्यास से प्राप्त गुणक का उस दशापति के वर्ष में गुणा कर भाजक (अंक योग) का भाग देना तो प्रत्येक विदशा के ग्रह का समय निकल आयगा। व. मा. दि. घ. प. है।

जैसे लग्न आयु महादशा में शुक्र की अंतर्दशा का वर्ष १-१-१९-१७-१८ अब इसी समय के भीतर प्रत्येक आवश्यक ग्रह की विदशा भुक्त होगी।

लग्न दशा के अंतर्गत शुक्र की अंतर्दशा में पहिले शुक्र ही की विदशा होगी।

१ शुक्र की विदशा प्रथम = शुक्र $\frac{१}{१}$
२ ,, के साथ कोई ग्रह नहीं = ×
३ ,, ,, त्रिकोण में ,, = ×
४ ,, सप्तम में वली चंद्र है = चंद्र $\frac{१}{७}$
५ ,, चतुरस्र में = ×

समच्छेद

शुक्र चंद्र

$\frac{१}{१}+\frac{१}{७}=\frac{७+१}{७}=\frac{८}{७}=$ भाजक ८

गुणक शुक्र	चंद्र	भाजक
७	१	८

शुक्र अंतर्दशा वर्ष व. मा. दि. घ. प.
१-१-१९-१७-१८
(चक्र १४ से)

शुक्र अंतर वर्ष व. मा. दि. घ. प.
१-१-१९-१७-१८
× शुक्र गुणक ७

			२	६
		१	५९	
७	७	१३३		
७	७	१३५	१	६
	+४	+३०		
	११	=१५		

= ७-११-१५-१-६

शुक्र अंतर वर्ष व. मा. दि. घ. प.
१-१-१९-१७-१८
चंद्र गु० × १

व. मा. दि. घ. प.

८) ७-११-१५-१-६ (० वर्ष

×१२

८४+११

८) ९५ (११ मास

८

१५

८

७×३०+१५

८) २२५ (२८ दिन

१६

६५

६४

१×६०+१

८) ६१ (७ घड़ी

५६

५×६०+६

८) ३०६ (३८ पल

२४

६६

६४

२

=व. मा. दि. घ. प.

० ११-२८-७-३८

शुक्र विदशा

८) १-१-१९-१७-१८ (० वर्ष

×१२

१२+१

८) १३ (१ मा.

८

५×३०+१९

८) १६९ (२१

१६

०९

८

१×६०+१७

८) ७७ (९ घड़ी

७२

५×६०+१८

८) ३१८ (३९=४० पल

२४

७८

७२

६

व. मा. दि. घ. प.

०-१-२१-९-४०

चंद्र विदशा

लग्न महादशा में शुक्र की अंतर्दशा की विदशा

चक्र २३

विदशा	वर्ष	मा.	दि.	घ.	प.
शुक्र की	०	११	२८	७	३८
चंद्र की	०	१	२१	९	४०
योग	१	१	१९	१७	१८

दोनों का योग शुक्र की अंतर्दशा के बराबर हुआ।

या शुक्र की विदशा का $\frac{१}{७}$ करने से चंद्र दिन की विदशा निकल आयगी।

विदशा की उपदशा

जिस प्रकार अंतर्दशा से विदशा साधन की थी उसी प्रकार विदशा के अंतर्गत उपदशा (उससे सूक्ष्म दशा) निकाली जाती है।

जिस प्रकार लग्न दशा में शुक्र की अंतर्दशा की विदशा ऊपर निकाली थी, अब शुक्र विदशा के अंतर्गत उसकी उपदशा निकालनी है। यहाँ दशापति शुक्र हुआ।

इसका समच्छेद—शुक्र की उपदशा पहिले होगी = शुक्र $\frac{१}{१}$। शुक्र के सप्तम में चंद्र बली हैं = चंद्र $\frac{१}{७}$। और किसी ग्रह का सम्बन्ध नहीं है।

$\frac{१}{१} + \frac{१}{७} = \frac{७+१}{७} = \frac{८}{७}$ = यहाँ ७ हर त्याग दिया ८ भाजक हुआ। गुणक शुक्र का ७, चंद्र का १ हुआ। भाजक ८

शुक्र विदशा व. मा. दि. घ. प.
०–११–२८–७–३८
शुक्र गुणक × ७
४. २६
० ४९
० ७७ १९६
० ७७ १९६ ५३ २६
+ ६ + ६ ÷ ३०
६ ८३ = १६
÷ १२
= ११
= ६–११–१६–५३–२६
व. मा. दि. घ. प.
८)६–११–१६–५३–२६(० वर्ष
× १२
७२ + ११
८)८३(१० मास
८
३ × ३० + १६
१०६

८)१०६(१३ दिन
८
२६
२४
२ × ६० + ५३
८)१७३(२१ घड़ी
१६
१३
८
५ × ६० + २६
८)३२६(४०
३२
६ = ४१ पल
व. मा. दि. घ. प.
०–१०–१३–२१–४१
शुक्र की उपदशा

शुक्र विदशा व. मा. दि. घ. प.

०-११-२८-७-३८

चंद्र गुणक × १

८)०-११-२८-७-३८(० वर्ष

× १२

०+११

८)११(१ मास

८

३ × ३० + २८

८)११८(१४ दिन

८

३८

३२

६ × ६० + ७

८)३६७(४५ घड़ी

३२

४७

४०

७ × ६० + ३८

८)४५८(५७ पल

४०

५८

५६

२

व. मा. दि. घ. प.

१-१-१४-४५-५७

चंद्र की उपदशा

लग्नदशा की शुक्र अंतर्दशा में

शुक्र की विदशा की उपदशा चक्र २४

उपदशा	व.	मा.	दि.	घ.	प.
शुक्र की	०	१०	१३	२१	४१
चन्द्र की	०	१	१४	४५	५७
योग	०	११	२८	७	३८

दोनों का योग शुक्र की विदशा के बराबर हुआ।

यहाँ विदशा और उपदशा निकालने का केवल एक २ उदाहरण दिया है। प्रत्येक अंतर्दशा की सम्पूर्ण विदशा और उपदशा निकाली जाय तो ग्रन्थ का बड़ा विस्तार हो जायगा। इस कारण सब ग्रहों की विदशा और उपदशा नहीं निकाली गई।

यहाँ दशा अंतर्दशा विदशा और उपदशा जो निकाली गई है उन सबके आरम्भ होने का समय सम्वत आदि भी निकाला जाता है जिससे प्रगट हो जाता है कि वह दशा उपदशा आदि किस समय से किस समय तक रहेगी। यह विषय यहाँ नहीं दिया। क्योंकि आगे अध्याय में विंशोत्तरी आदि दशायें निकालना बताया गया है उस सम्बन्ध में दशा का समय निकालने की पूरी रीति उदाहरण देकर समझाई गई है।

अध्याय ३१

दशा साधन

ग्रहों का जो फल होता है वह उनकी दशा में होता है इस कारण ग्रहों के फल का समय निकालने के लिये दशायें निकालनी पड़ती हैं।

दशाएँ कई प्रकार की होती हैं। प्राप्त आयु की दशा निकालना पहिले बता चुके हैं। इसके अतिरिक्त मुख्य ३ प्रकार की दशाएँ (१) विंशोत्तरी दशा (२) अष्टोत्तरीदशा और (३) योगिनीदशा अधिक प्रचलित है इस कारण इनको साधन करना आगे बतायेंगे।

(१) विंशोत्तरी दशा साधन

विंशोत्तरी दशा में परमायु १२० वर्ष की मानी गई है। जिस नक्षत्र में जन्म हुआ हो उस नक्षत्र के विचार से इस में ग्रह की दशा का विचार होता है।

विंशोत्तरी दशा में ग्रहों की दशा का क्रम यह है (१) सूर्य (२) चंद्र (३) मंगल (४) राहु (५) गुरु (६) शनि (७) बुध (८) केतु (९) शुक्र। प्रत्येक ग्रह के वर्ष और नक्षत्र नीचे चक्र १ में दिये हैं।

कृतिका को आदि लेकर एक २ नक्षत्र में एक २ ग्रह भोगता है इस प्रकार ९ ग्रह २७ नक्षत्र में भोगने से प्रत्येक ग्रह के ३-३ नक्षत्र पड़ते हैं।

विंशोत्तरी दशा चक्र १

क्रम	१	२	३	४	५	६	७	८	९
ग्रह	आदित्य (सूर्य)	चंद्र	कुज (मंगल)	राहु	जीव (गुरु)	शनि	बुध	केतु	शुक्र
संकेताक्षर	आ.	चं.	कु.	रा.	जी.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
चंद्र	कृतिका	रोहिणी	मृग०	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	श्लेषा	मघा	पू.फा.
नक्षत्र	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनु०	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.
	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शत०	पू०भा०	उ०भा०	रेवती	अश्विनी	भरणी

ग्रह की दशा जानने के लिये कृतिका नक्षत्र से अपने जन्म नक्षत्र तक गिनो जितनी संख्या हों उसमें ९ का भाग दो जो शेष बचे आ. चं. कु. रा. जी. श. बु. के.

इस प्रकार गिनो गिनने से जो ग्रह आवे उसी ग्रह की महादशा में जन्म हुआ है ऐसा जानना। जैसे आर्द्रा नक्षत्र में जन्म हुआ हैं तो कृतिका से आर्द्रा तक गिना संख्या ४ हुई। इसमें यदि संख्या ९ से अधिक होती तो ९ का भाग देते। शेष ४ ही रहा। १ आ. २ चं. ३ कु. ४ रा. ग्रह को क्रमानुसार गिनने से चौथी राहु की महादशा आई। यही बात चक्र १ देखने से प्रगट होती है कि आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से राहु की महादशा होती है।

विंशोत्तरी दशा का समय निकालना

जन्म समय जो विंशोत्तरी महादशा आई उसके पूर्ण वर्ष में से कितने वर्ष जन्म से पूर्व भुक्त हो चुके हैं और कितने वर्ष अब भोग्य (भुगतने को शेष) हैं इसके जानने की रीति :—

जिस नक्षत्र में जन्म हुआ हो उस नक्षत्र का भभोग

(पूर्ण योग काल) और भयात (भुक्त घड़ी पल) निकालो और उन दोनों के घड़ी पल को एक वर्ण बना लो फिर भयात में महादशा वर्ष का गुणाकर भभोग से भाग दो तो लब्धि भुक्त वर्ष मास दिन आदि प्राप्त होंगे। उनको महादशा के पूर्ण वर्ष में घटा दो। जो शेष बचे वही वर्ष आदि महादशा के भोग्य वर्ष आदि होंगे। अर्थात् उतने वर्ष पूरे होने पर उस ग्रह की महादशा का अंत होगा।

$$\frac{\text{भयात} \times \text{महादशा वर्ष}}{\text{भभोग}} = \text{भुक्त वर्ष मास दिन आदि}$$

(महादशा पूर्ण वर्ष—भुक्त वर्ष) = शेष भोग्य वर्ष आदि।

जैसे आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से विंशोत्तरी में राहु की महादशा हुई। यह राहु की दशा कितनी भुक्त हो गई है कितनी भोग्य है निकालना है।

आर्द्रा का जन्म है। अध्याय ६ के चंद्र स्पष्ट करने में आर्द्रा का भयात भभोग

घ. प. वि. घ. प.

निकाल चुके हैं। भयात १—१४—१२ और भभोग ६६—३३ है।

भयात राहु दशा

घ. प. वि. वर्ष विपल

$$\frac{१–१४–१२ \times १८}{\text{भभोग}} = \frac{४४५२ \times १८}{२३९५८० \text{ विपल}} = \frac{८०१३६}{२३९५८०}$$

घ. प. वि.

६६—३३—०

घ. प. वि.
१–१४–१२
× ६०
६० + १४ = ७४ × ६०
= ४४४० + १२
= ४४५२ विपल

घ. प. वि.
६३–३३–०
× ६०
३९६० + ३३ = ३९९३ × ६०
= २३९५८० विपल

२३९५८०)८०१३६(० वर्ष
× १२
२३९५८०)९६१६३२(४ मास
९५८३२०
३३१२
× ३०
२३९५८०)९९३६०(० दिन
× ६०
२३९५८०)५९६१६००(२४ घड़ी
४७९१६०
११७००००
९५८३२०
२११६८० × ६०
२३९५८०)१२७००८००(५३ पल
११९७९००
७२१८००
७१८७४०
३०६०

= भुक्त वर्ष मा. दि. घ. प.
०–४–०–२४–५३

	व. मा. दि. घ. प.
राहु के पूर्ण वर्ष	१८–०– ०–०–०
,, भुक्त ,,	–०–४–०–२४–५३
शेष ,, भोग्य ,,	१७–७–२९–३५–७

व. मा. दि. घ. प.
= राहु १७–७–२९–३५–७ भोगने पर आगे का दूसरा ग्रह गुरु की महादशा आरम्भ होगी।

इसमें विशेष बात यह ध्यान रखने की है कि भभोग का भाग देते समय ६० का गुणा कर भयात और भभोग को एक ही वर्ण बना लेने से (जैसा ऊपर सबके विपल बना लिया है) भाग देने में कोई अड़चन नहीं होती। यदि इनमें २–२ संख्या हों तो वर्ष के मास बनाने में १२ का गुणा दोनों संख्याओं में कर फिर भभोग का भाग देना फिर शेष में २ संख्या हों तो दोनों में फिर मास के दिन बनाने को ३० का गुणा दोनों में कर फिर भभोग का भाग देना। ऐसा न करने से थोड़ा अन्तर पड़ जाता है। रीति आगे बताई है। जैसे

भयात वर्ष .पल० वि पल वि०

$$\frac{\text{१–१४–१२} \times \text{१८}}{\text{भभोग ६६–३३–}} = \frac{\text{७४–१२} \times \text{१८}}{\text{३९९३ पल}} = \frac{\text{१३३५–३६}}{\text{३९९३ पल}}$$

```
७४–१२          ३९९३)१३३५–३६(० वर्ष      ३९९३)१६५६(० दिन
 ×१८                      ×१२                    ×६०
१३३२|२१६        १६०२०|४३२          ३९९३)९९३६०(२४ घ०
  +३|=३६            +७|=१२                   ७९८६
१३३५           ३९९३)१६०२७–१२(४ मा०             १९५००
=१३३५–३६            १५९७२                     १५९७२
                        ५५–१२                   ३५२८×६०
                         ×३०               ३९९३)२११६८०(५३ पल
                         ९–०                    १९९६५
                     १६५०                        १२०३०
                     १६५६                        ११९७९
                                                    ५१
                                          =भुक्त वर्ष
                                           व० मा० दि० घ० प०
                                           ०–५–०–२४–५३
```

यह उत्तर पहिले किये हुए गणित के अनुसार ही आया ।

यहाँ यदि १३३५ में १२ का गुणा कर ३६ जोड़ते तो उत्तर में अंतर पड़ जाता। इसी कारण १३३५·३६ इन दोनों संख्याओं में १२ का गुणा किया है तब गुणा करने से १६०२७-१२ आया इसमें ३९९३ का भाग देने पर शेष ५५-१२ बचा तो इन दोनों संख्याओं में ३० का गुणा किया जिससे गुणनफल १६५६ आया है। आगे २ संख्या नहीं बचती इस से आगे कोई झंझट नहीं है। विशेष कर जहाँ वर्ष मास दिन निकालना हो तब इसी रीति का उपयोग करना। घड़ीपल के गणित में कोई अंतर नहीं पड़ता।

विंशोत्तरी महादशा चक्र २

ग्रह	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
वर्षतक	१७	१६	१९	१७	७	२०	६	१०	७
मास	७	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	२९	०	०	०	०	०	०	०	०
घड़ी	३७	०	०	०	०	०	०	०	०
पल	७	०	०	०	०	०	०	०	०

विंशोत्तरी महादशा की अंतर्दशा साधन

ग्रह की महादशा में अंतर्दशा निकालने को, अंतर्दशा में जो ग्रह पड़ते हैं उनके वर्ष महादशा के वर्ष से गुणा कर $\frac{१२०}{१२}$ = १० का भाग देना तो मास दिन आदि अंतर्दशा का समय प्राप्त हो जायगा। मास १२ से अधिक हो तो १२ का भाग देकर वर्ष बना लेना। १० का भाग देने से जो शेष बचे उसमें ३ का गुणा कर देने से दिन प्राप्त होगा।

जैसे सूर्य वर्ष ६, सूर्य महादशा वर्ष ६=६ × ६=३६ ÷ १०

मा. दिन

=सूर्य महादशा में सूर्य की अंतर्दशा ३–१८ शेष में ३० का गुणा कर १० का भाग देने के बदले केवल ३ का गुणा शेष में कर देने से दिन आ जाता है।

१०) ३६ (३ मास
 ३०
 ———
 ६ × ३=१८ दिन

सूर्य महादशा की अंतर्दशा चक्र ३				
ग्रह	अंतर ग्रह वर्ष × महा दशा वर्ष = गुणन फल ÷ भाग	अंतर्दशा मास	दिन
सूर्य	६ × ६=३६ ÷ १०=	३	१८
चंद्र	१० × ६=६० ÷ १०=	६	०
मंगल	७ × ६=४२ ÷ १०=	४	६
राहु	१८ × ६=१०८ ÷ १०=	१०	२४
गुरु	१६ × ६= ९६ ÷ १०=	९	१८
शनि	१९ × ६=११४ ÷ १०=	११	१२
बुध	१७ × ६=१०२ ÷ १०=	१०	६
केतु	७ × ६= ४२ ÷ १०=	४	६
शुक्र	२० × ६=१२० ÷ १०=	१२	०
	योग	७२	०
		=६ वर्ष	

चंद्र महादशा की अंतर्दशा चक्र ४			
ग्रह	अंतर ग्रह वर्ष × महा दशा वर्ष = गुणन फल ÷ भाग	अंतर्दशा मास	दिन
चंद्र	१० × १०=१०० ÷ १०=	१०	०
मंगल	७ × १०= ७० ÷ १०=	७	०
राहु	१८ × १०=१८० ÷ १०=	१८	०
गुरु	१६ × १०=१६० ÷ १०=	१६	०
शनि	१९ × १०=१९० ÷ १०=	१९	०
बुध	१७ × १०=१७० ÷ १०=	१७	०
केतु	७ × १०= ७० ÷ १०=	७	०
शुक्र	२० × १०=२०० ÷ १०=	२०	०
सूर्य	६ × १०= ६० ÷ १०=	६	०
	योग	१२०	०
		=१० वर्ष	

इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह की अंतर्दशा का समय निकाल लेना चाहिए। आगे प्रत्येक ग्रह की अंतर्दशा इसी प्रकार निकाल कर चक्र ११ में दी है। जिस ग्रह की महादशा होती है उसी ग्रह की अंतर्दशा प्रथम होती है। उपरांत उसके आगे के ग्रह की क्रमानुसार अंतर्दशा होती है जैसा ऊपर चक्र ३–४ में बताया है।

अन्तर्दशा की प्रत्यंतर दशा साधन

अंतर्दशा के भीतर फल का सूक्ष्म समय जानने के लिये प्रत्यंतर दशा साधन करनी पड़ती है। प्रत्येक अंतर्दशा के अंतर्गत पहिले उसी ग्रह की प्रत्यंतर दशा होती है उपरांत आगे के सब ग्रहों की क्रमानुसार प्रत्यंतर दशा होती है। अर्थात् उस ग्रह की अंतर्दशा के भीतर प्रत्येक ९ ग्रहों की प्रत्यंतर दशा भुक्त हो जाती है।

प्रत्यंतर दशा साधन करने की रीति

जिस ग्रह की अंतर्दशा में प्रत्यंतर दशा साधन करनी है उस अंतर्दशा समय मास दिन के दिन बना लेने चाहिए, उसमें जिस ग्रह की प्रत्यंतर दशा निकालनी है, उस ग्रह के वर्ष से गुणाकर १२० का भाग देना तो दिन घटी पल आदि में प्रत्यंतर दशा का समय प्राप्त होगा जैसा नीचे चक्र ५ में बताया है। गुणन फल में १२० का भाग देने पर जो आवे वह दिन होगा। शेष में ६० का गुणा कर १२० का भाग देना या शेष के आधे कर देना तो घड़ी पल आदि प्राप्त होगा।

मा० दिन दिन

जैसे सूर्य की दशा में सूर्य की अंतर्दशा के ३–१८ = १०८ हुए। सूर्य की प्रत्यंतर दशा साधन करनी है इससे सूर्य के वर्ष ६ से १०८ दिन में गुणा किया तो ६४८ हुए। १२० का भाग दिया तो ५ दिन २४ घड़ी सूर्य की प्रत्यंतर दशा का समय प्राप्त हुआ। नीचे चक्र ५ में स्पष्ट रीति दी है।

```
१२०)६४८(५ दिन
    ६००
    ----
     ४८
     = आधा २४ घड़ी
```

दूसरी रीति

जिस ग्रह की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा साधन करनी है उसके दिनों में १२० का भाग देना तो ध्रुवांक प्राप्त होगा। उस ध्रुवांक में प्रत्यंतर दशा के ग्रह का जो वर्ष हो गुणा करना तो प्रत्यंतर दशा का समय निकलेगा। जैसे सूर्य की अंतर्दशा के
मा० दिन   दिन घड़ी
३–१८ के १०८ दिन ÷ १२० = ०–५४ ध्रुवांक। ध्रुवांक × प्रत्यंतर दशा के ग्रह का वर्ष = प्रत्यंतर दशा का समय। उदाहरण नीचे चक्र ५ अ० में दिया है।

सूर्य महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा की प्रत्यंतर दशा चक्र ५ | दूसरी रीति चक्र ५ अ०

अंतर्दशा ग्रह	मा०	दिन	दिन	प्रत्यंतर वर्ष	गुणन फल	भाजक	प्रत्यंतर समय दिन	घटी
सूर्य	३	१८	= १०८	× ६	= ६४८	÷ १२०	= ५	२४
चंद्र	६	०	= १८०	× ६	= १०८०	,,	= ९	०
मंगल	४	६	= १२६	× ६	= ७५६	,,	= ६	१८
राहु	१०	२४	= ३२४	× ६	= १९४४	,,	= १६	१२
गुरु	९	१८	= २८८	× ६	= १७२८	,,	= १४	२४
शनि	११	१२	= ३४२	× ६	= २०५२	,,	= १७	६
बुध	१०	६	= ३०६	× ६	= १८३६	,,	= १५	१८
केतु	४	६	= १२६	× ६	= ७५६	,,	= ६	१८
शुक्र	१२	०	= ३६०	× ६	= २१६०	,,	= १८	०
						योग	१०८	०

ध्रुवांक दिन	घ०	ग्रह वर्ष	प्रत्यंतर समय दिन	घटी
०	५४	× ६	= ५	२४
०	५४	× १०	= ९	०
०	५४	× ७	= ६	१८
०	५४	× १८	= १६	१२
०	५४	× १६	= १४	२४
०	५४	× १९	= १७	६
०	५४	× १७	= १५	१८
०	५४	× ७	= ६	१८
०	५४	× २०	= १८	०
		योग	१०८	०

सूर्य महादशा में चंद्र को अंतर्दशा को प्रत्यंतर दशा चक्र ६

अंतर्दशा ग्रह	प्रत्यंतर दिन	गुणन वर्ष	फल	भाजक	प्रत्यंतर समय दिन	घटी
चंद्र	१८० ×	१० =	१८००	÷१२०	=१५	०
मंगल	१२६ ×	१० =	१२६०	,,	=१०	३०
राहु	३२४ ×	१० =	३२४०	,,	=२७	०
गुरु	२८८ ×	१० =	२८८०	,,	=२४	०
शनि	३४२ ×	१० =	३४२०	,,	=२८	३०
बुध	३०६ ×	१० =	३०६०	,,	=२५	३०
केतु	१२६ ×	१० =	१२६०	,,	=१०	३०
शुक्र	३६० ×	१० =	३६००	,,	=३०	०
सूर्य	१०८ ×	१० =	१०८०	,,	= ९	०
					योग १८०	०

सूर्य महादशा में मंगल की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा चक्र ७

अंतर ग्रह	प्रत्यंतर दिन	गुणन वर्ष	फल	भाजक	प्रत्यंतर समय दि.	घटी
मंगल	१२६ ×	७ =	८८२	÷ १२०	७	२१
राहु	३२४ ×	७ =	२२६८	,,	१८	५४
गुरु	२८८ ×	७ =	२०१६	,,	१६	४८
शनि	३४२ ×	७ =	२३९४	,,	१९	५७
बुध	३०६ ×	७ =	२१४२	,,	१७	५१
केतु	१२६ ×	७ =	८८२	,,	७	२१
शुक्र	३६० ×	७ =	२५२०	,,	२१	०
सूर्य	१०८ ×	७ =	७५६	,,	६	१८
चंद्र	१८० ×	७ =	१२६०	,,	१०	३०
					योग १२६	०

चंद्र महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा चक्र ८

अंतर्दशा ग्रह	प्रत्यंतर वर्ष मा. दिन	दिन		गुणन	फल		भाजक		प्रत्यंतर समय दि.	घड़ी
चंद्र	१० ०	= ३००	·	१०	= ३०००	÷	१२०	=	२५	०
मंगल	७ ०	= २१०	×	१०	= २१००		,,	=	१७	३
राहु	१८ ०	= ५४०	×	१०	= ५४००		,,	=	४५	०
गुरु	१६ ०	= ४८०	×	१०	= ४८००		,,	=	४०	०
शनि	१९ ०	= ५७०	×	१०	= ५७००		,,	=	४७	३०
बुध	१७ ०	= ५१०	×	१०	= ५१००		,,	=	४२	३०
केतु	७ ०	= २१०	×	१०	= २१००		,,	=	१७	३०
शुक्र	२० ०	= ६००	×	१०	= ६०००		,,	=	५०	०
सूर्य	६ ०	= १८०	×	१०	= १८००		,,	=	१५	०
								योग	३००	०

चंद्र महादशा में मंगल : के अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा चक्र ९

प्रत्यंतर	अंतर दशा दिन		वर्ष	गुणन फल	भाजक	प्रत्यंतर समय दि.	घ.
मंगल	२१०	×	७	= १४७०	÷ १२०	१२	१५
राहु	५४०	×	७	= ३७८०	,,	३१	३०
गुरु	४८०	×	७	= ३३६०	,,	२८	०
शनि	५७०	×	७	= ३९९०	,,	३३	१५
बुध	५१०	×	७	= ३५७०	,,	२९	४५
केतु	२१०	×	७	= १४७०	,,	१२	१५
शुक्र	६००	×	७	= ४२००	,,	३५	०
सूर्य	१८०	×	७	= १२६०	,,	१०	३०
चंद्र	३००	×	७	= २१००	,,	१७	३०
					योग	२१०	०

इसी प्रकार और भी ग्रहों की प्रत्यंतर दशा साधन कर आगे प्रत्यंतर दशा चक्र १२ में दिया है।

प्राण दशा साधन

प्रत्यंतर दशा से भी (फल मिलने का) सूक्ष्म समय निकालने के निमित्त प्राण दशा निकाली जाती है। जिस ग्रह का प्रत्यंतर है उसी ग्रह की प्राण दशा पहिले होती है और प्रत्यंतर दशा के समय के भीतर ९ ग्रहों की प्राण दशा क्रमानुसार युक्त हो जाती हैं।

जिस ग्रह की प्रत्यंतर दशा में प्राण दशा साधन करना हो उस प्रत्यंतर दशा की दिन घड़ी के घड़ी बना लेना और जिस ग्रह की प्राण दशा साधन करनी हो उस ग्रह के वर्ष में गुणा कर गुणन फल में १२० का भाग देने से प्राण दशा की घड़ी पल प्राप्त होगी जैसा आगे चक्र १० में बताया है।

दिन० घ०
दूसरी रीति—सूर्य प्रत्यंतर दशा ५–२४=३२४ घटी । ३२४÷१२०
घ० पल
=२–४२ ध्रुवांक। ध्रुवांक × प्राण दशा ग्रह वर्ष = प्राण दशा समय । इसी प्रकार प्रत्येक का ध्रुवांक निकाल कर प्राणदशा निकाल लेना जैसा चक्र १० अ० में बताया है ।

सूर्य महादशा की सूर्य की अंतदशा में सूर्य प्रत्यंतर दशा की प्राणदशा चक्र १०

प्रत्यंतर दशा ग्रह	दिन	घटी		प्राण घटी		दशा वर्ष		गुणन फल	भाजक	प्राण दशा समय घ०	पल
सूर्य	५	२४	=	३२४	×	६	=	१९४४	÷१२०	१६	१२
चंद्र	९	०	=	५४०	×	६	=	३२४०	,,	२७	०
मंगल	६	१८	=	३७८	×	६	=	२२६८	,,	१८	५४
राहु	१६	१२	=	९७२	×	६	=	५८३२	,,	४८	३६
गुरु	१४	२४	=	८६४	×	६	=	५१८४	,,	४३	१२
शनि	१७	६	=	१०२६	×	६	=	६१५६	,,	५१	१८
बुध	१५	१८	=	९१८	×	६	=	५५०८	,,	४५	५४
केतु	६	१८	=	३७८	×	६	=	२२६८	,,	१८	५४
शुक्र	१८	०	=	१०८०	×	६	=	६४८०	,,	५४	०
									योग	३२४–०	

सूर्य महादशा की सूर्य की अंतर्दशा में सूर्य प्रत्यंतर दशा की प्राण दशा चक्र (दूसरी रीति) १० अ

ग्रह	ध्रुवांक घ.	प.		ग्रह वर्ष		प्राण दशा समय घ०	पल
सूर्य	२	४२	×	६	=	१६	१२
चंद्र	२	४२	×	६	=	२७	०
मंगल	२	४२	×	६	=	१८	५४
राहु	२	४२	×	६	=	४८	३६
गुरु	२	४२	×	६	=	४३	१२
शनि	२	४२	×	६	=	५१	१८
बुध	२	४२	×	६	=	४५	५४
केतु	२	४२	×	६	=	१८	५४
शुक्र	२	४२	×	६	=	५४	०

सम्पूर्ण ग्रहों का विंशोत्तरी अन्तर्दशा का चक्र ११

सूर्य महादशा की अंतर्दशा

ग्रह	वर्ष	मा.	दिन
सूर्य	०	३	१८
चंद्र	०	६	०
मंगल	०	४	६
राहु	०	१०	२४
गुरु	०	९	१८
शनि	०	११	१२
बुध	०	१०	६
केतु	०	४	६
शुक्र	१	०	०
योग	६	०	०

चंद्र महादशा की अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दि.
चंद्र	०	१०	०
मंगल	०	७	०
राहु	१	६	०
गुरु	१	४	०
शनि	१	७	०
बुध	१	५	०
केतु	०	७	०
शुक्र	१	८	०
सूर्य	०	६	०
योग	१०	०	०

मंगल महादशा की अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दि.
मंगल	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
सूर्य	०	४	६
चंद्र	०	७	०
योग	७	०	०

राहु महादशा की अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दिन
राहु	२	८	१२
गुरु	२	४	२४
शनि	२	१०	६
बुध	२	६	१८
केतु	१	०	१८
शुक्र	३	०	०
सूर्य	०	१०	२४
चंद्र	१	६	०
मंगल	१	०	१८
योग	१८	०	०

गुरु महादशा की

अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दि.
गुरु	२	१	१८
शनि	२	६	१२
बुध	२	३	६
केतु	०	११	६
शुक्र	२	८	०
सूर्य	०	९	१८
चंद्र	१	४	०
मंगल	०	११	६
राहु	२	४	२४
योग	१६	०	०

शनि महादशा की

अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा	दि.
शनि	३	०	३
बुध	२	८	९
केतु	१	१	९
शुक्र	३	२	०
सूर्य	०	११	१२
चंद्र	१	७	०
मंगल	१	१	९
राहु	२	१०	६
गुरु	२	६	१२
योग	१९	०	०

बुध महादशा की

अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दि.
बुध	२	४	२७
केतु	०	११	२७
शुक्र	२	१०	०
सूर्य	०	१०	६
चंद्र	१	५	०
मंगल	०	११	२७
राहु	२	६	१८
गुरु	२	३	६
शनि	२	८	९
योग	१७	०	०

केतु महादशा की

अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दिन
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
सूर्य	०	४	६
चंद्र	०	७	०
मंगल	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७
योग	७	०	०

शुक्र महादशा की

अंतर्दशा

ग्रह	वर्ष	मास	दिन
शुक्र	३	४	०
सूर्य	१	०	०
चंद्र	१	८	०
मंगल	१	२	०
राहु	३	०	०
गुरु	२	८	०
शनि	३	२	०
बुध	२	१०	०
केतु	१	२	०
योग	२०	०	०

विंशोत्तरी दशा की अंतर्दशा में प्रत्यंतर दशा का चक्र १२

सूर्य की महादशा में सूर्य के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मास	दि.	घ.
सूर्य	०	५	२४
चंद्र	०	९	०
मंगल	०	६	१८
राहु	०	१६	१२
गुरु	०	१४	२४
शनि	०	१७	६
बुध	०	१५	१८
केतु	०	६	१८
शुक्र	०	१८	०
योग	३	१८	०

सूर्य महादशा में चंद्र अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
चंद्र	०	१५	०
मंगल	०	१०	३०
राहु	०	२७	०
गुरु	०	२४	०
शनि	०	२८	३०
बुध	०	२५	३०
केतु	०	१०	३०
शुक्र	१	०	०
सूर्य	०	९	०
योग	६	०	०

सूर्य महादशा में मंगल की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
मंगल	०	७	२१
राहु	०	१८	५४
गुरु	०	१६	४८
शनि	०	१९	५७
बुध	०	१७	५१
केतु	०	७	२१
शुक्र	०	२१	०
सूर्य	०	६	१८
चंद्र	०	१०	३०
योग	४	६	०

सूर्य महादशा में राहु की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घटी
राहु	१	१८	३६
गुरु	१	१३	१२
शनि	१	२१	१८
बुध	१	१५	५४
केतु	०	१८	५४
शुक्र	१	२४	०
सूर्य	०	१६	१२
चंद्र	०	२७	०
मंगल	०	१८	५४
योग	१०	२४	०

सूर्य की महादशा में गुरु की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
गुरु	१	८	२४
शनि	१	१५	३६
बुध	१	१०	४८
केतु	०	१६	४८
शुक्र	१	१८	०
सूर्य	०	१४	२४
चंद	०	२४	०
मंगल	०	१६	४८
राहु	१	१३	१२
योग	९	१८	०

सूर्य महादशा में शनि की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
शनि	१	२४	९
बुध	१	१८	२७
केतु	०	१९	५७
शुक्र	१	२७	०
सूर्य	०	१७	६
चंद्र	०	२८	३०
मंगल	०	१९	५७
राहु	१	२१	१८
गुरु	१	१५	३६
योग	११	१२	०

सूर्य महादशा में बुध की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
बुध	१	१३	२१
केतु	०	१७	५१
शुक्र	१	२१	०
सूर्य	०	१५	१८
चंद्र	०	२५	३०
मंगल	०	१७	५१
राहु	१	१५	५४
गुरु	१	१०	४८
शनि	१	१८	२७
योग	१०	६	०

सूर्य महादशा में केतु की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
केतु	०	७	२१
शुक्र	०	२१	०
सूर्य	०	६	१८
चंद्र	०	१०	३०
मंगल	०	७	२१
राहु	०	१८	५४
गुरु	०	१६	४८
शनि	०	१९	५७
बुध	०	१७	५१
योग	४	६	०

सूर्य महादशा में शुक्र की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
शुक्र	२	०	०
सूर्य	०	१८	०
चंद्र	१	०	०
मंगल	०	२१	०
राहु	१	२४	०
गुरु	१	१८	०
शनि	१	२७	०
बुध	१	२१	०
केतु	०	२१	०
योग	१२	०	०

चंद्र महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
चंद्र	०	२५	०
मंगल	०	१७	३०
राहु	१	१५	०
गुरु	१	१०	०
शनि	१	१७	३०
बुध	१	१२	३०
केतु	०	१७	३०
शुक्र	१	२०	०
सूर्य	०	१५	०
योग	१०	०	०

चंद्र महादशा में मंगल की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
मंगल	०	१२	१५
राहु	१	१	३०
गुरु	०	२८	०
शनि	१	३	१५
बुध	०	२९	४५
केतु	०	१२	१५
शुक्र	१	५	०
सूर्य	०	१०	३०
चंद्र	०	१७	३०
योग	७	०	०

चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
राहु	२	२१	०
गुरु	२	१२	०
शनि	२	२५	३०
बुध	२	१६	३०
केतु	१	१	३०
शुक्र	३	०	०
सूर्य	०	२७	०
चंद्र	१	१५	०
मंगल	१	१	३०
योग	१८	०	०

चंद्र महादशा में गुरु की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
गुरु	२	४	०
शनि	२	१६	०
बुध	२	८	०
केतु	०	२८	०
शुक्र	२	२०	०
सूर्य	०	२४	०
चंद्र	१	१०	०
मंगल	०	२८	०
राहु	२	१२	०
योग	१६	०	०

चंद्र महादशा में शनि की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
शनि	३	०	५
बुध	२	२०	४५
केतु	१	३	१५
शुक्र	३	५	०
सूर्य	०	२८	३०
चंद्र	१	१७	३०
मंगल	१	३	१५
राहु	२	२५	३०
गुरु	२	१६	०
योग	१९	०	०

चंद्र महादशा में बुध की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
बुध	२	१२	१५
केतु	०	२९	४५
शुक्र	२	२५	०
सूर्य	०	२५	३०
चंद्र	१	१२	३०
मंगल	०	२९	४५
राहु	२	१६	३०
गुरु	२	८	०
शनि	२	२०	४५
योग	१७	०	०

चंद्र महादशा में केतु की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
केतु	०	१२	१५
शुक्र	१	५	०
सूर्य	०	१०	३०
चंद्र	०	१७	३०
मंगल	०	१२	१५
राहु	१	१	३०
गुरु	०	२८	०
शनि	१	३	१५
बुध	०	२९	४५
योग	७	०	०

चंद्र में
शुक्र के अंतर की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
शुक्र	३	१०	०
सूर्य	१	०	०
चंद्र	१	२०	०
मंगल	१	५	०
राहु	३	०	०
गुरु	२	२०	०
शनि	३	५	०
बुध	२	२५	०
केतु	१	५	०
योग	२०	०	०

चंद्र में
सूर्य के अंतर की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.
सूर्य	०	९	०
चंद्र	०	१५	०
मंगल	०	१०	३०
राहु	०	२७	०
गुरु	०	२४	०
शनि	०	२८	३०
बुध	०	२५	३०
केतु	०	१०	३०
शुक्र	१	०	०
योग	६	०	०

मंगल में
मंगल के अंतर की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
मंगल	०	८	३४	३०
राहु	०	२२	३	०
गुरु	०	१९	३६	०
शनि	०	२३	१६	३०
बुध	०	२०	४९	३०
केतु	०	८	३४	३०
शुक्र	०	२४	३०	०
सूर्य	०	७	२१	०
चंद्र	०	१२	१५	०
योग	४	२७	०	०

मंगल में
राहु के अंतर की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
राहु	१	२६	४२	०
गुरु	१	२०	२४	०
शनि	१	२९	५१	०
बुध	१	२३	३३	०
केतु	०	२२	३	०
शुक्र	२	३	०	०
सूर्य	०	१८	५४	०
चंद्र	१	१	३०	०
मंगल	०	२२	३	०
योग	१२	१८	०	०

मंगल में गुरु के
अंतर की प्रत्यंतर
दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
गुरु	१	१४	१८	०
घनि	१	२३	१२	०
बुध	१	१७	३६	०
केतु	०	१९	३६	०
शुक्र	१	२६	०	०
सूर्य	०	१६	४८	०
चंद्र	०	२८	०	०
मंगल	०	१९	३६	०
राहु	१	२०	२४	०
योग	१५	६	०	०

मंगल में शनि कें
अंतर की प्रत्यंरत
दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
शनि	२	३	१०	३०
बुध	१	२६	३१	३०
केतु	०	२३	१६	३०
शुक्र	२	६	३०	०
सूर्य	०	१९	५७	०
चंद्र	१	३	१५	०
मंगल	०	२३	१६	३०
राहु	१	२९	५१	०
गुरु	१	२३	१२	०
योग	१३	९	०	०

मंगल में बुध के
अंतर की प्रत्यंतर
दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
बुध	१	२०	३४	३०
केतु	०	२०	४९	३०
शुक्र	१	२९	३०	६
सूर्य	०	१७	५१	०
चंद्र	०	२९	४५	०
मंगल	०	२०	४९	३०
राहु	१	२३	३३	०
गुरु	१	१७	३६	०
शनि	१	२६	३१	३०
योग	११	२७	०	०

मंगल में केतु के
अंतर की प्रत्यंतर
दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
केतु	०	८	३४	३०
शुक्र	०	२४	३०	०
सूर्य	०	७	२१	०
चंद्र	०	१२	१५	०
मंगल	०	८	३४	३०
राहु	०	२२	३	०
गुरु	०	१९	२६	०
शनि	०	२३	१६	३०
बुध	०	२०	४९	३०
योग	४	२७	०	०

मंगल में शुक्र के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
शुक्र	२	१०	०	०
सूर्य	०	२१	०	०
चंद्र	१	५	०	०
मंगल	०	२४	३०	०
राहु	२	३	०	०
गुरु	१	२६	०	०
शनि	२	६	३०	०
बुध	१	२९	३०	०
केतु	०	२४	३०	०
योग	१४	०	०	०

मंगल में सूर्य के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
सूर्य	०	६	१८	०
चंद्र	०	१०	३०	०
मंगल	०	७	२१	०
राहु	०	१८	५४	०
गुरु	०	१६	४८	०
शनि	०	१९	५७	०
बुध	०	१७	५१	०
केतु	०	७	२१	०
शुक्र	०	२१	०	०
योग	४	६	०	०

मंगल में चंद्र के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
चंद्र	०	१७	३०	०
मंगल	०	१२	१५	०
राहु	१	१	३०	०
गुरु	०	२८	०	०
शनि	१	३	१५	०
बुध	०	२९	४५	०
केतु	०	१२	१५	०
शुक्र	१	५	०	०
सूर्य	०	१०	३०	०
योग	७	०	०	०

राहु में राहु के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
राहु	४	२५	५८	०
गुरु	४	९	३६	०
शनि	५	३	५४	०
बुध	४	१७	४२	०
केतु	१	२६	४२	०
शुक्र	५	१२	०	०
सूर्य	१	१८	३६	०
चंद्र	२	२१	०	०
मंगल	१	२६	४२	०
योग	३२	१२	०	०

राहु में गुरु के अंतर को प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
गुरु	३	२५	१२	०
शनि	४	१६	४८	०
बुध	४	२	२४	०
केतु	१	२०	२४	०
शुक्र	४	२४	०	०
सूर्य	१	१३	१२	०
चंद्र	२	१२	०	०
मंगल	१	२०	२४	०
राहु	४	९	३६	०
योग	२८	२४	०	०

राहु में शनि के अंतर को प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
शनि	५	१२	२७	०
बुध	४	२५	२१	०
केतु	१	२९	५१	०
शुक्र	५	२१	०	०
सूर्य	१	२१	१८	०
चंद्र	२	२५	३०	०
मंगल	१	२९	५१	०
राहु	५	३	५४	०
गुरु	४	१६	४८	०
योग	३४	६	०	०

राहु में बुध के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
बुध	४	१०	३	०
केतु	१	२३	३३	०
शुक्र	५	३	०	०
सूर्य	१	१५	५४	०
चंद्र	२	१६	३०	०
मंगल	१	२३	३३	०
राहु	४	१७	४२	०
गुरु	४	२	२४	०
शनि	४	२५	२१	०
योग	३०	१८	०	०

राहु में केतु के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
केतु	०	२२	३	०
शुक्र	२	३	०	०
सूर्य	०	१८	५४	०
चंद्र	१	१	३०	०
मंगल	०	२२	३	०
राहु	१	२६	४२	०
गुरु	१	२०	२४	०
शनि	१	२९	५१	०
बुध	१	२३	३३	०
योग	१२	१८	०	०

राहु में शुक्र के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
शुक्र	६	०	०	०
सूर्य	१	२४	०	०
चंद्र	३	०	०	०
मंगल	२	३	०	०
राहु	५	१२	०	०
गुरु	४	२४	०	०
शनि	५	२१	०	०
बुध	५	३	०	०
केतु	२	३	०	०
योग	३६	०	०	०

राहु में सूर्य के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
सूर्य	०	१६	१२	०
चंद्र	०	२७	०	०
मंगल	०	१८	५४	०
राहु	१	१८	३६	०
गुरु	१	१३	१२	०
शनि	१	२१	१८	०
बुध	१	१५	५४	०
केतु	०	१८	५४	०
शुक्र	१	२४	०	०
योग	१०	२४	०	०

राहु में चंद्र के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
चंद्र	१	१५	०	०
मंगल	१	१	३०	०
राहु	२	२१	०	०
गुरु	२	१२	०	०
शनि	२	२५	३०	०
बुध	२	१६	३०	०
केतु	१	१	३०	०
शुक्र	३	०	०	०
सूर्य	०	२७	०	०
योग	१८	०	०	०

राहु में मंगल के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
मंगल	०	२२	३	०
राहु	१	१६	४२	०
गुरु	१	२०	२४	०
शनि	१	२६	५१	०
बुध	१	२३	३३	०
केतु	०	२२	३	०
शुक्र	२	३	०	०
सूर्य	०	१८	५४	०
चंद्र	१	१	३०	०
योग	१२	१८	०	०

गुरु में गुरु के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
गुरु	३	१२	२४	०
शनि	४	१	३६	०
बुध	३	१८	४८	०
केतु	१	१४	४८	०
शुक्र	४	८	०	०
सूर्य	१	८	२४	०
चंद्र	२	४	०	०
मंगल	१	१४	४८	०
राहु	३	२५	१२	०
योग	२५	१८	०	०

गुरु में शनि के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
शनि	४	२४	२४	०
बुध	४	९	१२	०
केतु	१	२३	१२	०
शुक्र	५	२	०	०
सूर्य	१	१५	३६	०
चंद्र	२	१६	०	०
मंगल	१	२३	१२	०
राहु	४	१६	४८	०
गुरु	४	१	३६	०
योग	३०	१२	०	०

गुरु में बुध के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
बुध	३	२५	३६	०
केतु	१	१७	३६	०
शुक्र	४	१६	०	०
सूर्य	१	१०	४८	०
चंद्र	२	८	०	०
मंगल	१	१७	३६	०
राहु	४	२	२४	०
गुरु	३	१८	४८	०
शनि	४	९	१२	०
योग	१७	६	०	०

गुरु में केतु के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
केतु	०	१९	३६	०
शुक्र	१	२६	०	०
सूर्य	०	१६	४८	०
चंद्र	०	२८	०	०
मंगल	०	१९	३६	०
राहु	१	२०	२४	०
गुरु	१	१४	४८	०
शनि	१	२३	१२	०
बुध	१	१७	३६	०
योग	११	६	०	०

गुरु में शुक्र के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि,	घ.	प.
शुक्र	५	१०	०	०
सूर्य	१	१८	०	०
चंद्र	२	२०	०	०
मंगल	१	२६	०	०
राहु	४	२४	०	०
गुरु	४	८	०	०
शनि	५	२	०	०
बुध	४	१६	०	०
केतु	१	२६	०	०
योग	३२	०	०	०

गुरु में सूर्य के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
सूर्य	०	१४	२४	०
चंद्र	०	२४	०	०
मंगल	०	१६	४८	०
राहु	१	१३	१२	०
गुरु	१	८	२४	०
शनि	१	१५	३६	०
बुध	१	१०	४८	०
केतु	०	१६	४८	०
शुक्र	१	१८	०	०
योग	९	१८	०	०

गुरु में चंद्र के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
चंद्र	१	१०	०	०
मंगल	०	२८	०	०
राहु	२	१२	०	०
गुरु	२	४	०	०
शनि	२	१६	०	०
बुध	२	८	०	०
केतु	०	२८	०	०
शुक्र	२	२०	०	०
सूर्य	०	२४	०	०
योग	१६	०	०	०

गुरु में मंगल के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
मंगल	०	१९	३६	०
राहु	१	२०	२४	०
गुरु	१	१४	४८	०
शनि	१	२३	१२	०
बुध	१	१७	३६	०
केतु	०	१९	३६	०
शुक्र	१	२६	०	०
सूर्य	०	१६	४८	०
चंद्र	०	२८	०	०
योय	११	६	०	०

गुरु में राहु के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
राहु	४	९	३६	०
गुरु	३	२५	१२	०
शनि	४	१६	४८	०
बुध	४	२	२४	०
केतु	१	२०	२४	०
शुक्र	४	२४	०	०
सूर्य	१	१३	१२	०
चंद्र	२	१२	०	०
मंगल	१	२०	२४	०
योग	२८	२४	०	०

शनि में शनि के अंतर की प्रत्यं० दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प
शनि	५	२१	२८	३०
बुध	५	३	३५	३०
केतु	२	३	१०	३०
शुक्र	६	०	३०	०
सूर्य	१	२४	९	०
चंद्र	३	०	१५	०
मंगल	२	३	१०	३०
राहु	५	१२	२७	०
गुरु	४	२४	२४	०
योग	३६	३	०	०

शनि में बुध के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
बुध	४	१७	१६	३०
केतु	१	२६	३१	३०
शुक्र	५	११	३०	०
सूर्य	१	१८	२७	०
चंद्र	२	२०	४५	०
मं०	१	२६	३१	३०
राहु	४	२५	२१	०
गुरु	४	९	१२	०
शनि	५	३	२५	३०
योग	३२	९	०	०

शनि में केतु के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
केतु	०	२३	१६	३०
शुक्र	२	६	३०	०
सूर्य	०	१९	५७	०
चंद्र	१	३	१५	०
मं०	०	२३	१६	३०
राहु	०	२९	५१	०
गुरु	१	२३	१२	०
शनि	२	३	१०	३०
बुध	२	२६	३१	३०
योग	१३	९	०	०

शनि में शुक्र के अंतर की प्रत्यंतर दशा				
ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
शुक्र	६	१०	०	०
सूर्य	१	२७	०	०
चंद्र	३	५	०	०
मंगल	२	६	३०	०
राहु	५	२१	०	०
गुरु	५	२	०	०
शनि	६	०	३०	०
बुध	५	११	३०	०
केतु	२	६	३०	०
योग	३८	०	०	०

शनि में सूर्य के अंतर की प्रत्यंतर दशा				
ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
सूर्य	०	१७	६	०
चंद्र	०	२८	३०	०
मंगल	०	१९	५७	०
राहु	१	२१	१८	०
गुरु	१	१५	३६	०
शनि	१	२४	९	०
बुध	१	१८	२७	०
केतु	०	१९	५७	०
शुक्र	१	२७	०	०
योग	११	१२	०	०

शनि में चंद्र के अंतर की प्रत्यंतर दशा				
ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
चंद्र	१	१७	३०	०
मंगल	१	३	१५	०
राहु	२	२५	३०	०
गुरु	२	१६	०	०
शनि	३	०	१५	०
बुध	२	२०	४५	०
केतु	१	३	१५	०
शुक्र	३	५	०	०
सूर्य	०	२८	३०	०
योग	१९	०	०	०

शनि में मंगल के अंतर की प्रत्यंतर दशा				
ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
मंगल	०	२३	१६	३०
राहु	१	२९	५१	०
गुरु	१	२३	१२	०
शनि	२	३	१०	३०
बुध	१	२६	३१	३०
केतु	०	२३	१६	३०
शुक्र	२	६	३०	०
सूर्य	०	१९	५७	०
चंद्र	१	३	१५	०
योग	१३	९	०	०

शनि में राहु के अंतर की प्रत्यंतर दशा				
ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
राहु	५	३	५४	०
गुरु	४	१६	४८	०
शनि	५	१२	२७	०
बुध	४	२५	२१	०
केतु	१	२९	५१	०
शुक्र	५	२१	०	०
सूर्य	१	२१	१८	०
चंद्र	२	२५	३०	०
मंगल	१	२९	५१	०
योग	३४	६	०	०

शनि में गुरु के अंतर की प्रत्यंतर दशा				
ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
गुरु	४	१	३६	०
शनि	४	२४	२४	०
बुध	४	९	१२	०
केतु	१	२३	१२	०
शुक्र	५	२	०	०
सूर्य	१	१५	३६	०
चंद्र	२	१६	०	०
मंगल	१	२३	१२	०
राहु	४	१६	४८	०
योग	३०	१२	०	०

बुध में बुध के अंतर की प्रत्यंतर दशा				
ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
बुध	४	२	४९	३०
केतु	१	२०	३४	३०
शुक्र	४	२४	३०	०
सूर्य	१	१३	२१	०
चंद्र	२	१२	१५	०
मंगल	१	२०	३४	३०
राहु	४	१०	३	०
गुरु	३	२५	३६	०
शनि	४	१७	१६	३०
योग	२८	२७	०	०

बुध में केतु के अंतर की प्रत्यंतर दशा				
ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
केतु	०	२०	४९	३०
शुक्र	१	२९	३०	०
सूर्य	०	१७	५१	०
चंद्र	०	२९	४५	०
मं०	०	२०	४९	३०
राहु	१	२३	३३	०
गुरु	१	१७	३६	०
शनि	१	२६	३१	३०
बु०	१	२०	३४	३०
योग	११	२७	०	०

बुध में शुक्र के अंतर का प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
शुक्र	५	२०	०	०
सूर्य	१	२१	०	०
चंद्र	२	२५	०	०
मंगल	१	२९	३०	०
राहु	५	३	०	०
गुरु	४	१६	०	०
शनि	५	११	३०	०
बुध	४	२४	३०	०
केतु	१	२९	३०	०
योग	३४	०	०	०

बुध में सूर्य के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
सूर्य	०	१५	१८	०
चंद्र	०	२५	३०	०
मंगल	०	१७	५१	०
राहु	१	१५	५४	०
गुरु	१	१०	४८	०
शनि	१	१८	२७	०
बुध	१	१३	२१	०
केतु	०	१७	५१	०
शुक्र	१	२१	०	०
योग	१०	६	०	०

बुध में चंद्र के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
चंद्र	१	१२	३०	०
मंगल	०	२९	४५	०
राहु	२	१६	३०	०
गुरु	२	८	०	०
शनि	२	२०	४५	०
बुध	२	१२	१५	०
केतु	०	२९	४५	०
शुक्र	२	२५	०	०
सूर्य	०	२५	३०	०
योग	१७	०	०	०

बुध में मंगल के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
मं०	०	२०	४९	३०
राहु	१	२३	३३	०
गुरु	१	१७	३६	०
शनि	१	२६	३१	३०
बुध	१	२०	३४	३०
केतु	०	२०	४९	३०
शुक्र	१	२९	३०	०
सूर्य	०	१७	५१	०
चंद्र	०	२९	४५	०
योग	११	२७	०	०

बुध में राहु के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
राहु	४	१७	४२	०
गुरु	४	२	२४	०
शनि	४	२५	२१	०
बुध	४	१०	३	०
केतु	१	२३	३३	०
शुक्र	५	३	०	०
सूर्य	१	१५	५४	०
चंद्र	२	१६	३०	०
मंगल	१	२३	३३	०
योग	३०	१८	०	०

बुध में गुरु के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
गुरु	३	१८	४८	०
शनि	४	९	१२	०
बुध	३	२५	३६	०
केतु	१	१७	३६	०
शुक्र	४	१६	०	०
सूर्य	१	१०	४८	०
चंद्र	२	८	०	०
मं०	१	१७	३६	०
राहु	४	२	२४	०
योग	२७	६	०	०

बुध में शनि के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
शनि	५	३	२५	३०
बुध	४	१७	१६	३०
केतु	१	२६	३१	३०
शुक्र	५	११	३०	०
सूर्य	१	१८	२७	०
चंद्र	२	२०	४५	०
मं०	१	२६	३१	३०
राहु	४	२५	२१	०
गुरु	४	९	१२	०
योग	३२	९	०	०

केतु में केतु के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
केतु	०	८	३४	३०
शुक्र	०	२४	३०	०
सूर्य	०	७	२१	०
चंद्र	०	१२	१५	०
मं०	०	८	३४	३०
राहु	०	२२	३	०
गुरु	०	१९	३६	०
शनि	०	२३	१६	३०
बुध	०	२०	४९	३०
योग	४	२७	०	०

केतु में शुक्र के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
शुक्र	२	१०	०	०
सूर्य	०	२१	०	०
चंद्र	१	५	०	०
मंगल	०	२४	३०	०
राहु	२	३	०	०
गुरु	१	२६	०	०
शनि	२	६	३०	०
बुध	१	२९	३०	०
केतु	०	२४	३०	०
योग	१४	०	०	०

केतु में सूर्य के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
सूर्य	०	६	१८	०
चंद्र	०	१०	३०	०
मंगल	०	७	२१	०
राहु	०	१८	५४	०
गुरु	०	१६	४८	०
शनि	०	१९	५७	०
बुध	०	१७	५१	०
केतु	०	७	२१	०
शुक्र	०	२१	०	०
योग	४	६	०	०

केतु में चंद्र के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
चंद्र	०	१७	३०	०
मंगल	०	१२	१५	०
राहु	१	१	३०	०
गुरु	०	२८	०	०
शनि	१	३	१५	०
बुध	०	२६	४५	०
केतु	०	१२	१५	०
शुक्र	१	५	०	०
सूर्य	०	१०	३०	०
योग	७	०	०	०

केतु में मंगल के अंतर की प्रत्यंतरदशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
मं०	०	८	३४	३०
राहु	०	२२	३	०
गुरु	०	१९	३६	०
शनि	०	२३	१६	३०
बुध	०	२०	४९	३०
केतु	०	८	३४	३०
शुक्र	०	२४	३०	०
सूर्य	०	७	२१	०
चंद्र	०	१२	१५	०
योग	४	२७	०	०

केतु में राहु के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
राहु	१	२६	४२	०
गुरु	१	२०	२४	०
शनि	१	२९	५१	०
बुध	१	२३	३३	०
केतु	०	२२	३	०
शुक्र	२	३	०	०
सूर्य	०	१८	५४	०
चंद्र	१	१	३०	०
मंगल	०	२२	३	०
योग	१२	१८	०	०

केतु में गुरु के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
गुरु	१	१४	४८	०
शनि	१	२३	१२	०
बुध	१	१७	३६	०
केतु	०	१९	३६	०
शुक्र	१	२६	०	०
सूर्य	०	१६	४८	०
चंद्र	०	२८	०	०
मंगल	०	१९	३६	०
राहु	१	२०	२४	०
योग	११	६	०	०

केतु मे शनि के अंतर को प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
शनि	२	३	१०	३०
बुध	१	२६	३१	३०
केतु	०	२३	१६	३०
शुक्र	३	६	३०	०
सूर्य	०	१९	५७	०
चंद्र	१	३	१५	०
मंगल	०	२३	१६	३०
राहु	१	२९	५१	०
गुरु	१	२३	१२	०
योग	१३	९	०	०

केतु में बुध के अंतर की ऽत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
बुध	१	२०	३४	३०
केतु	०	२०	४९	३०
शुक्र	१	२९	३०	०
सूर्य	०	१७	५१	०
चंद्र	०	२६	४५	०
मंगल	०	२०	४९	३०
राहु	१	२३	३३	०
गुरु	१	१७	३६	०
शनि	१	२६	३१	३०
योग	११	२७	०	०

शुक्र में शुक्र के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
शुक्र	६	२०	०	०
सूर्य	२	०	०	०
चंद्र	३	१०	०	०
मंगल	२	१०	०	०
राहु	६	०	०	०
गुरु	५	१०	०	०
शनि	६	१०	०	०
बुध	५	२०	०	०
केतु	२	१०	०	०
योग	४०	०	०	०

शुक्र में सूर्य के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
सूर्य	०	१८	०	०
चंद्र	१	०	०	०
मंगल	०	२१	०	०
राहु	१	२४	०	०
गुरु	१	१८	०	०
शनि	१	२७	०	०
बुध	१	२१	०	०
केतु	०	२१	०	०
शुक्र	२	०	०	०
योग	१२	०	०	०

शुक्र में चंद्र के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
चंद्र	१	२०	०	०
मंगल	१	५	०	०
राहु	३	०	०	०
गुरु	२	२०	०	०
शनि	३	५	०	०
बुध	२	२५	०	०
केतु	१	५	०	०
शुक्र	३	१०	०	०
सूर्य	१	०	०	०
योग	२०	०	०	०

शुक्र में मंगल के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
मंगल	०	२४	३०	०
राहु	२	३	०	०
गुरु	१	२६	०	०
शनि	२	६	३०	०
बुध	१	२९	३०	०
केतु	०	२४	३०	०
शुक्र	२	१०	०	०
सूर्य	०	२१	०	०
चंद्र	१	५	०	०
योग	१४	२	०	०

शुक्र में राहु के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
राहु	५	१२	०	०
गुरु	४	२४	०	०
शनि	५	२१	०	०
बुध	५	३	०	०
केतु	२	३	०	०
शुक्र	६	०	०	०
सूर्य	१	२४	०	०
चंद्र	३	०	०	०
मंगल	२	३	०	०
योग	३६	०	०	०

शुक्र में गुरु के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
गुरु	४	८	०	०
शनि	५	२	०	०
बुध	४	१६	०	०
केतु	१	२६	०	०
शुक्र	५	१०	०	०
सूर्य	१	१८	०	०
चंद्र	२	२०	०	०
मंगल	१	२६	०	०
राहु	४	२४	०	०
योग	३२	०	०	०

शुक्र में शनि के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
शनि	६	०	३०	०
बुध	५	११	३०	०
केतु	२	६	३०	०
शुक्र	६	१०	०	०
सूर्य	१	२७	०	०
चंद्र	३	५	०	०
मंगल	२	६	३०	०
राहु	५	२१	०	०
गुरु	५	२	०	०
योग	३८	०	०	०

शुक्र में बुध के अंतर की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
बुध	४	२४	३०	०
केतु	१	२९	३०	०
शुक्र	५	२०	०	०
सूर्य	१	२१	०	०
चंद्र	२	२५	०	०
मंगल	१	२९	३०	०
राहु	५	३	०	०
गुरु	४	१६	०	०
शनि	५	११	३०	०
योग	३४	०	०	०

शुक्र में केतु के अंतर की प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.
केतु	०	२४	३०	०
शुक्र	२	१०	०	०
सूर्य	०	२१	०	०
चंद्र	१	५	०	०
मंगल	०	२४	३०	०
राहु	२	३	०	०
गुरु	१	२६	०	०
शनि	२	६	३०	०
बुध	१	२९	३०	०
योग	१४	०	०	०

विंशोत्तरी महादशा साधन का दूसरा उदाहरण

जन्म श्रावण सुदी १२ बुधवार सम्वत् १९७० शाके १८३५ इष्ट काल

घ. प. वि.
३६–३४–३७॥ जन्म नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा ।

घ. प. वि. पल वि. विपल
पू.षाढ़ का भभोग ६२–५३–८ = ३७७३–८ = २२६३८८
" भयात ३५–४८–४५॥=२१४८–४५॥ = १२८९२५॥

जन्म नक्षत्र कृतिका से गिना । पू. षा. तक १८ वां है ।

१८÷९ = शेष ०=शुक्र महादशा ।

शुक्र महादशा में जन्म हुआ । शुक्र के वर्ष २० हैं । शुक्र के भोग्य भुक्त वर्ष निकालना है ।

भयात पल शुक्र वर्ष व. मा. दि. घ. प.

$$\frac{\text{१२८९२५॥} \times \text{२०}}{\text{भभोग २२६३८८ पल}} = \frac{\text{२५७८५१०}}{\text{२२६३८८}} = \text{११–४–२०–१–५५ भुक्त वर्ष}$$

प-विपल
१२८९२५-३०
×२०
१०-०
२५७८५००
२५७८५१०-०

२२६३८८) २५७८५१०(११ वर्ष
२२६३८८
३१४६३०
२२६३८८
८८२४२×१२
२२६३८८) १०५८९०४ (४ मास
९०५५५२
१५३३५२×३०
२२६३८८) ४६००५६० (२० दिन
४५२७७६
७२८००×६०
४३६८००

२२६३८८) ४३६८०० (१ घड़ी
२२६३८८
२१०४१२×६०
२२६३८८) १२६२४७२० (५५प.
११३१९४०
१३०५३२०
११३१९४०
१७३३८०
=भुक्त वर्ष
व. मा. दि. घ. प.
११-४-२०-१-५५

शुक्र पूर्ण वर्ष व. मा. दि. घ. प.
३०-०-० - ० -०
भुक्त वर्ष ११-४-२०-१-५५
शेष १८-७-९-५८-५ भोग्य वर्ष

विंशोत्तरी महादशा चक्र १३

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
शुक्र	८	७	९	५८	५
सूर्य	६	०	०	०	०
चंद्र	१०	०	०	०	०
मंगल	७	०	०	०	०
राहु	१८	०	०	०	०
गुरु	१६	०	०	०	०
शनि	१९	०	०	०	०
बुध	१७	०	०	०	०
केतु	७	०	०	०	०

विंशोत्तरी दशा का समय निकालना

जन्म काल के सम्वत् में और जन्म समय के निरयन रवि स्पष्ट में विंशोत्तरी दशा का समय जोड़ते जाने से उस दशा के अंत होने का समय या आगे की दशा आरंभ होने का समय निकल आता है ।

सम्वत् + वर्ष
राशि + मास
अंश + दिन
कला + घड़ी
विकला + पल

समय जोड़ने के लिये जन्म सम्वत् में वर्ष, जन्म के सूर्य स्पष्ट की राशि में मास, अंश में दिन, कला में घड़ी और विकला में पल जोड़ना चाहिए ।

उदाहरण—जन्म समय का स्पष्ट रवि

रा
३–२७°–२३′–६″ और सम्वत १९७० है ।

जन्म सम्वत–जन्म कालीन सूर्य

रा
१९७०–३–२७°–२३′–६″
शुक्र दशा = ८–७– ९ –५८ –५
योग = १९७८–११–७–२१–११ तक शुक्र दशा रहेगी ।

रा०
अर्थात् सम्वत् १९७८ में जब सूर्य ११–७°-२१′-११″ पर आयगा उस दिन जो तिथि या दिनांक होगा उस समय तक शुक्र की महादशा रहेगी । इस समय में सूर्य के

रा०
६ वर्ष और जोड़ने से १९८४ सम्वत् ११–७°–२१′–११″ आया । इस समय तक सूर्य की महादशा रहेगी। इसके उपरांत चंद्र की महादशा होगी । इसी प्रकार नीचे लिखे चक्र के अनुसार दशा का समय जोड़कर प्रत्येक ग्रह की महादशा का समय निकाल लेना ।

विंशोत्तरी महादशा समय चक्र १४

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	सम्वत्	राशि	अं.	क.	विकला	महादशा
						सूर्य स्पष्ट					
जन्मसमय						१९७०	३	२७	२३	६	से शुक्र आरंभ
शुक्र	८	७	९	५८	५	१९७८	११	७	२१	११	तक शुक्र
सूर्य	६	०	०	०	०	१९८४	११	७	२१	११	,, सूर्य
चंद्र	१०	०	०	०	०	१९९४	११	७	२१	११	,, चंद्र
मंगल	७	०	०	०	०	२००१	११	७	२१	११	,, मंगल
राहु	१८	०	०	०	०	२०१९	११	७	२१	११	,, राहु
गुरु	१६	०	०	०	०	२०३५	११	७	२१	११	,, गुरु
शनि	१९	०	०	०	०	२०५४	११	७	२१	११	,, शनि
बुध	१७	०	०	०	०	२०७१	११	७	२१	११	,, बुध
केतु	७	०	०	०	०	२०७८	११	७	२१	११	,, केतु

अंतर्दशा साधन

शुक्र महादशा ऊपर निकाली है इसमें देखना है कि किस २ ग्रह को अंतर्दशा भोगने को शेष रह गई है। इसके लिये अंतर्दशा चक्र ११ में दी हुई शुक्र की महादशा लो और उसे अंतर्दशा चक्र ५२ से विरुद्ध क्रम से (उल्टे) ग्रहों की अंतर्दशा का समय घटाना आरम्भ करो। जिस ग्रह को अंतर्दशा का समय न घटे उस ग्रह की अंतर्दशा तक अंतर ग्रह भुक्त होने को रह गये हैं, ऐसा जानना।

उदाहरण शुक्र की अंतर्दशा (चक्र ११ से)

ग्रह	वर्ष	मा.	दिन
१ शुक्र	३	४	०
२ सूर्य	१	०	०
३ चंद्र	१	८	०
४ मंगल	१	२	०
५ राहु	३	०	०
६ गुरु	२	८	०
७ शनि	३	२	०
८ बुध	२	१०	०
९ केतु	१	२	०
योग	२०	०	०

वर्ष० मा० दि० घ० प०

शुक्र भोग्य ८– ७–९–५८–५

अंत में (९) केतु है १– २– घटाया

शेष = ७– ५–९–५८–५

फिर (८) बुध है २–१०

शेष = ४– ७–९–५८–५

(७) शनि = ३– २

१– ५–९–५८–५

(६) गुरु = २– ८ नहीं घटा

गुरु नहीं घटा तो इस समय तक गुरु का भोग्य काल समझना। अर्थात् गुरु के

व. मा. दि. घ. प.

भोग्य वर्ष १–५–९–५८–५ हैं। इसके उपरांत शनि बुध और केतु की पूरी अंतर्दशा भुक्त होगी। नीचे दिये चक्र १५ से सब समझ में आ जायगा।

शुक्र की अंतर्दशा चक्र १५

ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	घ.	प.	सम्वत	राशि	अंश	क.	वि.	अंतर्दशा
जन्म						१९७०	३	२७	२३	६	से गुरु की अंतर्दशा आ०
गुरु	१	५	९	५८	५	१९७१	९	७	२१	११	तक गुरु की अंतर्दशा
शनि	३	२	०	०	०	१९७४	११	७	२१	११	,, शनि ,,
बुध	२	१०	०	०	०	१९७७	९	७	२१	११	,, बुध ,,
केतु	१	२	०	०	०	१९७८	११	७	२१	११	,, केतु ,,
योग	८	७	९	५८	५						

शुक्र की महादशा के आगे सूर्य की महादशा आरम्भ होती है। यदि आगे सूर्य की महादशा की अन्तर्दशा निकालनी है तो सूर्य की अन्तर्दशा जो चक्र ११ में पहिले दे चुके हैं उसके अनुसार समय जोड़ते जाने से सूर्य की अंतर्दशा का समय निकल आयगा, जैसे चक्र १६ में बताया है।

सूर्य की महादशा की अन्तर्दशा का समय चक्र १६

ग्रह	वर्ष मा. दि. घ. प.	सम्वत राशि अं. क. वि.	अंतर्दशा
		१९७८ ११ ७ २१ ११	शुक्र महादशा का अन्त
सूर्य	० ३ १८ ० ०	१९७९ २ २५ २१ ११	तक सूर्यदशा सूर्य की अंतर्दशा
चंद्र	० ६ ० ० ०	१९७९ ८ २५ २१ ११	" " चंद्र की "
मंगल	० ४ ६ ० ०	१९८० १ १ २१ ११	" " मंगल "
राहु	० १० २४ ० ०	१९८० ११ २५ ११ ११	" " राहु "
गुरु	० ९ १८ ० ०	१९८१ ९ १३ ११ ११	" " गुरु "
शनि	० ११ १२ ० ०	१९८२ ८ २५ २१ ११	" " शनि "
बुध	० १० ६ ० ०	१९८३ ७ १ २१ ११	" " बुध "
केतु	० ४ ६ ० ०	१९८३ ११ ७ २१ ११	" " केतु "
शुक्र	१ ० ० ० ०	१९८४ ११ ७ २१ ११	" " शुक्र "
योग	६ ० ० ० ०		

इसी प्रकार आगे की प्रत्येक महादशा की अंतर्दशा निकाल लेना।

प्रत्यन्तर दशा साधन

शुक्र में गुरु की अन्तर्दशा जन्म समय थी। उस गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर दशा साधन करनी है तो चक्र १२ में दिये हुए सूर्य में गुरु की अंतर्दशा की प्रत्यन्तर दशा के अनुसार समय लिख लो और गुरु की अन्तर्दशा के भोग्य समय में से अन्त के ग्रह की प्रत्यन्तर दशा का समय उल्टे क्रम से घटाना आरम्भ करो। जिस २ ग्रह की प्रत्यन्तर दशा घट जावे और जो घटने को शेष रहे उतनी प्रत्यन्तर दशा उन २ ग्रहों की भोगने को शेष है ऐसा समझना।

उदाहरण प्रत्यन्तर दशा चक्र १२ से शुक्र में गुरु की

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	योग
मास	४	५	४	१	५	१	१	१	४	३२
दिन	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	०

व. मा. दि. घ. प. यहां अंत में केतु नहीं घटा तो

गुरु की अंतर्दशा १. ५. ९. ५८. ५ केतु के वर्ष व. मा. दि. घ. प. हुए

राहु की प्रत्यंतर० ४.२४ ०-१- १- ५८- ५

शेष १. ०.१५.५८. ५ और इसके वाद सूर्य चंद्र मंगल और राहु

मंगल ,, १-२६ की प्रत्यंतर दशा गुरु के अंतर में भुक्त हुई है

शेष ०-१०-१९-५८-५ जैसा चक्र १६ में बताया है।

चंद्र ,, २-२०

शेष ०- ७-२९-५८-५

सूर्य ,, १-१८

शेष ०- ६-११-५८-५

शुक्र ,, ५-१०

शेष ०- १-१- ५८-५

केतु ,, १-२६ केतु नहीं घटा

शुक्र में गुरु की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा चक्र १७

ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	घ.	प.	सम्बत्	राशि	अं.	क.	वि.	प्रत्यंतर दशा
					जन्म	१९७०	३	२७	२३	६	से आरम्भ
केतु	०	१	१	५८	५	१९७०	४	२९	२१	११	तक केतु प्रत्यंतर दशा
शुक्र	०	५	१०	.	.	१९७०	१०	९	२१	११	,, शुक्र ,,
सूर्य	०	१	१८	.	.	१९७०	११	२७	२१	११	,, सूर्य ,,
चंद्र	०	२	२०	.	.	१९७१	२	१७	२१	११	,, चंद्र ,,
मंगल	०	१	२६	.	.	१९७१	४	१३	२१	११	,, मंगल ,,
राहु	०	४	२४	.	.	१९७१	९	७	२१	२१	,, राहु ,,
योग	१	५	९	५८	५						

शुक्र महादशा में गुरु की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा के उपरांत शनि की फिर बुध की फिर केतु की इत्यादि क्रमानुसार प्रत्येक की अंतर्दशा होगी। प्रत्येक ग्रह की प्रत्यंतर दशा का समय चक्र १२ में दिया है वही मास दिन आदि लेकर इसके आगे जोड़ते जाना तो सम्पूर्ण अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा का समय निकल आयगा।

महादशा के सूक्ष्म विभाग इस प्रकार होते हैं।

महादशा, अंतर्दशा, प्रत्यंतर दशा, प्राणदशा, सूक्ष्मदशा।

(१) महादशा का विभाग करने से अंतर्दशा होती है। अंतर्दशा को पाचक दशा भी कहते हैं।

(२) अंतर्दशा का विभाग करने से प्रत्यंतर दशा होती है। प्रत्यंतर दशा को कोई विदशा भी कहते हैं।

(३) प्रत्यंतर दशा का विभाग करने से प्राणदशा होनी है उसे उपदशा भी कहते हैं।

(४) प्राण दशा या उपदशा का विभाग करने से सूक्ष्म दशा होती है। इसे फलदशा भी कहते हैं।

केशवी जातक में दशा, अंतर्दशा, विदशा और उपदशा बताया है परन्तु मानसागरी में दशा अंतर्दशा के उपरांत उपदशा फिर फलदशा बताया है। इस प्रकार समय के सूक्ष्म विभाग को कोई भी नाम दे दिया जाय परन्तु पिछले बनाये हुए नियम के अनुसार दशा का सूक्ष्म से सूक्ष्म विभाग किया जा सकता है।

दशा, अंतर्दशा, प्रत्यंतर दशा आदि का ठीक समय का सम्बत और स्पष्ट सूर्य निकालना अभी बता चुके हैं। अब उस स्पष्ट सूर्य पर से उस दशा के आरम्भ होने या अंत होने की तिथि मास दिनांक सन् आदि कैसे निश्चित करना यह आगे बताया है।

दशा समय आरम्भ या अन्त होने की तिथि दिनांक आदि जानना

पहिले बता चुके हैं कि किस सम्वत् में निरयन सूर्य की किस राशि अंश कलादि होने तक वह दशा रहेगी। उस निरयन सूर्य की राशि से चन्द्र मास दिनांक सन् आदि निश्चित्त करना नीचे बताया हैं। सूर्य की राशि के अनुसार चन्द्र मास नीचे चक्र १८ में बताया गया है।

राशि के अनुसार चन्द्र मास चक्र १८

	१	२	३	४	५	६
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
चन्द्रमास	वैशाख	ज्येष्ठा	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
	७	८	९	१०	११	१२
राशि	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
चन्द्रमास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पूष	माघ	फाल्गुन	चैत्र

इससे जान सकते हो कि उक्त सम्बन्ध में कौन से चान्द्र मास तक वह दशा रहेगी।

यदि उस सम्वत् का पंचांग हो तो अच्छा है। पंचांग से देख लेना निरयन सूर्य की बताई हुई राशि अंश किस तिथि या दिनांक को पड़ती है। पंचांग को देखकर सबका समय तिथि मास आदि या दिनांक महीना ईसवी सन् नोट कर लेना।

यदि उस सम्वत् या सन् का पंचांग न हो तो अनुमान से उस समय का सन् दिनांक और महीना निकाल सकते हो।

सम्वत् में से ५७ घटा देने से सम्वत् के आरम्भ होने के समय का सन् ईसवो निकल आयेगा। पूष मास में जनवरी पड़ती है इसके लगभग पूष मास में उसी सम्वत् में सन् बदल जाता हैं। अर्थात् इष्ट संवत् में ५७ घटाने से जो सन् प्राप्त होता है उसमें १ जोड़ देने से पूष मास के आगे का सन् निकल आयगा।

प्राप्त निरयन सूर्य में अयनांश जोड़ देने से उसका सायन सूर्य बन जाता है। सायन सूर्य पर से अंग्रेजी दिनांक महीना जान लेना आगे चक्र १९ में बताया है।

सायन सूर्य की संक्रांति (स्थूल मान से) चक्र १९

संक्रांति	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर
	१°	१°	१°	१°	१°	१°	१°	१°	१°	१°	१°	१°
दिनांक	२०	१९	२१	२०	२१	२१	२३	२२	२३	२३	२३	२२
	मार्च	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
सूर्य गति	६१′	६०′	५९′	५९′	५८′	५७′	५७′	५८′	५८′	६०′	५९′	५९′

इसके बीच का सूर्य गति के हिसाब से गणित करने से स्थूल रूप से निकल आता है (यह सब विषय ज्योतिष शिक्षा ज्ञान खंड में समझा चुके हैं)

उदाहरण—शुक्र की महादशा का अंत सम्वत् १९७८ के निरयन सूर्य
रा. अं. क. वि.
११-७-२१-११ में होता है। इसका सन् दिनांक आदि स्थूल रूप से जानना है। क्योंकि पंचांग नहीं है।

सम्वत् १९७८-५७=१९२१ सन्। यह १९२१ सन् सम्वत् के आरम्भ का सन् हुआ। कुंभ का सूर्य फाल्गुन में होता है इसके बाद का इष्ट सूर्य है। इष्टकाल पूष के बाद का है इससे सन् बदल कर १९२२ हो गया।

अब दिनांक जानने के निमित्त निरयन सूर्य को सायन बनाने के लिये अयनांश बनाया।

सम्बत् १९७८ शाका १८४३ = २३°-१९° वर्ष आरम्भ का अयनांश

-१३५ -४४४

=१८४३ शाका ६०)१३९९(२३° फाल्गुन तक १′ लगभग

१२० और हुआ =१३′-२०″ अयनांश

१९९ रा

१८० सूर्य ११-७-२१′-११″

१९

+अयनांश २३-२०

सायन सूर्य = ०-०-५१-११

लगभग मेष के १° पर सायन सूर्य आया। इसके अनुसार दिनांक २१ मार्च (चक्र १९ से) आया।

शुक्र महादशा २१ मार्च सन् १९२२ के लगभग समाप्त होगी। इसी प्रकार अनुमान से दिनांक निकाल सकते हो। परन्तु यह स्थूल रीति है। निश्चित दिनांक पंचांग से ही प्रकट होता है।

अध्याय ३२

अष्टोत्तरी दशा साधन

अष्टोत्तरी दशा में १०८ वर्ष होते हैं और नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों का दशा होती है। इसमें अभिजित् मिलाकर २८ नक्षत्र लिए जाते हैं और केवल ८ ग्रह रहते हैं। इसमें केतु नहीं रहता। इसमें पाप ग्रह के ४ नक्षत्र और शुभ के ३ नक्षत्र हैं।

अष्टोत्तरी दशा के वर्ष और नक्षत्रों के नाम जिनमें उन ग्रहों की दशा होती है नीचे चक्र १ में बताया हैं। अपना जो जन्म नक्षत्र होगा उसके अनुसार ग्रह की दशा पड़ेगी। उसके उपरांत आगे के ग्रहों की दशा इसी क्रमानुसार भुक्त होती है।

अष्टोत्तरी दशा चक्र १

क्रम	१	२	३	४	५	६	७	८
ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र
वर्ष	६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२१
चंद्र नक्षत्र	आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य अश्लेषा	मघा पू. फा. उ. फा.	हस्त चित्रा स्वाती विशाखा	अनु० ज्येष्ठा मूल	पू. षा. उ. षा. अभिजित् श्रवण	धनिष्ठा शत० पू० भा०	उ० भा० रेवती अश्विनी भरणी	कृतिका रोहिणी मृग०
१ नक्षत्र का भोग्य मास	१८	६०	२४	६८	३०	७६	३६	८४

अष्टोत्तरी महादशा में अभिजित् नक्षत्र भी लिया जाता है। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का चतुर्थ चरण अर्थात् अंतिम चतुर्थ भाग और श्रवण नक्षत्र का आरंभ का पन्द्रहवां भाग (४घड़ी) अभिजित् नक्षत्र होता है पंचाग में अभिजित् नक्षत्र नही दिया रहता। उत्तराषाढ़ा और श्रवण के वीच का जन्म हो तो देख लेना चाहिये कि वह भाग अभिजित् नक्षत्र के अन्तर्गत तो नहीं आता।

इस दशा में ग्रहों का क्रम और वर्ष ऊपर बताये अनुसार होता है। सम्पूर्ण ग्रहों की दशा भुक्त हो जाने के उपरांत फिर उसी ग्रह की दशा आ जाती है जिसकी दशा आरम्भ में थी।

जैसे किसी का जन्म चित्रा में हुआ तो उसे मंगल की महादशा आरम्भ में होगी। उसके उपरांत बुध शनि गुरु राहु शुक्र की दशा होगी। फिर सूर्य चंद्र मंगल बुध इत्यादि ग्रहों की दशा ऊपर बताये क्रमानुसार होगी।

अष्टोत्तरी दशा का समय निकालना

इसकी रीति विंशोत्तरी दशा से कुछ भिन्न है। कारण यह है कि विंशोत्तरी दशा में प्रत्येक ग्रहों को क्रमानुसार नक्षत्र मिले हैं। जैसे सूर्य को कृतिका, चन्द्र को रोहिणी, मंगल को मृगशिर, राहु को आर्द्रा आदि जैसा पहिले बता चुके हैं। परन्तु अष्टोत्तरी दशा में सूर्य पाप ग्रह को एक साथ ४ नक्षत्र आर्द्रा, पुनर्वसू, पुष्य, आश्लेषा, चंद्र शुभ ग्रह को ३ नक्षत्र मघा, पू.फा.,उ. फा. आदि प्रकार से मिले हैं। जैसा चक्र एक में दिया है। इस कारण ग्रह के जितने दशा के वर्ष होते हैं वे प्रत्येक नक्षत्रों में बंट जाते हैं। जैसे सूर्य के ६ वर्ष हैं और ४ नक्षत्र हैं तो प्रत्येक नक्षत्र को ६ ÷ ४ = १½ वर्ष पड़ा। चन्द्र के वर्ष १५ और तीन नक्षत्र हैं तो प्रत्येक के १५ ÷ ३=५ वर्ष हुए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जानना जैसा चक्र २ में बताया है। इस वर्ष के मास बना कर चक्र १ के नीचे बताया है।

वर्तमान जन्म नक्षत्र जिस ग्रह की दशा में पड़ता हो उसके वर्ष ४ या ३ नक्षत्रों में बंट कर उस नक्षत्र को जितना वर्ष मिला हो वह लेना। फिर उस नक्षत्र के भयात (भुक्त काल) में उस नक्षत्र के प्राप्त वर्ष से गुणाकर उसी नक्षत्र के भभोग का ? से भाग देना तो लब्धि वर्ष मास दिन घड़ी पल उस नक्षत्र का भुक्त काल वर्ष आदि निकलेगा फिर उस ग्रह के यदि और भी नक्षत्र इस वर्तमान नक्षत्र के पहिले हों तो प्रत्येक नक्षत्र के वर्ष भी इसी में जोड़ देना तो महादशा का भुक्त काल प्राप्त होगा। उस महादशा के पूरे वर्ष से वह भुक्त काल घटाने से शेष जो बचे वह वर्ष आदि उस ग्रह की महादशा का भोग्य समय होगा। उतने समय तक वह महादशा रहेगी।

यदि वर्तमान नक्षत्र के भुक्त और भभोग काल न लेलो तो चंद्र स्पष्ट से ही वर्तमान नक्षत्र का भुक्त काल निकल आता है।

चंद्र स्पष्ट की कला बना कर ÷ ८०० ′ = लब्धि गत नक्षत्र

(शेष कला विकला × नक्षत्र का भोग्य वर्ष) ÷ ८०० = लब्धि वर्ष

(शेष × १२) ÷ ८०० = लब्धि मास

(शेष × ३०) ÷ ८०० = लब्धि दिन

(शेष × ६०) ÷ ८०० = लब्धि घटी पल आदि।

इस प्रकार वर्तमान नक्षत्र का भुक्त वर्ष निकल आयगा। उस ग्रह के और भी गत नक्षत्र हों तो उन के वर्ष भी प्राप्त भुक्त काल में जोड़ देना तब उस ग्रह का पूर्ण भुक्त काल निकल आयगा। उसे उस ग्रह के पूरे वर्ष से घटा देना तो शेष उस ग्रह का भोग्य काल प्राप्त होगा। अर्थात् उतना समय गत हो जाने पर उस ग्रह की महादशा का अंत होकर दूसरे ग्रह की दशा उपरांत में आरंभ होगी।

इसमें यह बात विशेष ध्यान रखने की है कि ईस अष्टोत्तरी दशा में २८ नक्षत्र होतें हैं जिनमें अभिजित् नक्षत्र भी सम्मिलित है। इस कारण अभिजित् नक्षत्र कहाँ से कहाँ तक रहता है इसे समझ लेना चाहिए। शनि की दशा में अभिजित् पड़ता है इस कारण शनि का समय निकालने में बहुत सावधानी की आवश्यकता है। १ नक्षत्र $= १३^{०}-२०' = ८००''$ का होता है।

उत्तराषाढ़ा का अंतिम चतुर्थ भाग = उत्तराषाढ़ा ८००′ का $\frac{१}{४}$ भाग = २००′ हुआ

+ श्रवण के आदि का $\frac{१}{१५}$ भाग = श्रवण ८००′ का $\frac{१}{१५}$ भाग = ५३′–२०″

सब मिलकर २५३′–२०″ का अभिजित् नक्षत्र होता है। = २५३–२०

अब शेष नक्षत्र जिसका भाग अभिजित् में चला गया कितना रह जाता है नीचे बताया है।

उत्तराषाढ़ा = ८००′–२००′ = ६००′

अभिजित् = २००′ + (५३′–२०″) = २५३′–२०″

श्रवण = ८००′ – (५३′–२०″) = ७४६′–४०″

इस प्रकार प्रत्येक ग्रह की महादशा के नक्षत्र और प्रत्येक नक्षत्र का वर्ष नीचे चक्र २ में समझाया है।

ग्रह के प्रत्येक नक्षत्र की कला और वर्ष का चक्र २

(१) सूर्य ६ वर्ष			(२) चंद्र १५ वर्ष			(३) मंगल ८ वर्ष			(४) बुध १७ वर्ष		
४ नक्षत्र	कला	वर्ष	३ नक्षत्र	कला	वर्ष	४ नक्षत्र	कला	वर्ष	३ नक्षत्र	कला	वर्षमास
आर्द्रा	८००	१॥	मघा	८००	५	हस्त	८००	२	अनु०	८००	५–८
पुनर्वसु	८००	१॥	पू.फा.	८००	५	चित्रा	८००	२	ज्येष्ठा	८००	५–८
पुष्य	८००	१॥	उ.फा.	८००	५	स्वाती	८००	२	मूल	८००	५–८
आश्लेषा	८००	१॥				विशाखा	८००	२			
योग		६	योग		१५	योग		८	योग		१७–०

(५) शनि १० वर्ष			(६) गुरु १९ वर्ष			(७) राहु १२ वर्ष			(८) शुक्र २१ वर्ष		
४ नक्षत्र	कला	वर्ष मा.	३ नक्षत्र	कला	व.मा.	४ नक्षत्र	कला	वर्ष	३ नक्षत्र	कला	वर्ष
पू. षा	८००′–०″	२॥	धनिष्ठा	८००	६–४	उ. भा	८००	३	कृतिका	८००	७
उ. भा.	६००–०	२॥	शत०	८००	६–४	रेवती	८००	३	रोहिणी	८००	७
अभि०	२५३–२०	२॥	पू.भा.	८००	६–४	अश्विनी	८००	३	मृग०	८००	७
श्रवण	७४६–४०	२॥				भरणी	८००	३			
योग		१०	योग		१९	योग		१२	योग		२१

इस में बुध अंतिम नक्षत्र तक तो सब नक्षत्रों का योग ८००' (१३°–२०') ही है। परन्तु इसके आगे शनि के भोग के नक्षत्रों के भोग में कम ज्यादा है। इस कारण १९ वां नक्षत्र मूल के उपरांत (बुध का अंतिम नक्षत्र) अर्थात् १५२००' कला

रा

(८-१३°-२०') से अधिक चन्द्र हो तो चन्द्र स्पष्ट की कला में १५२०० घटा देना जो शेष रहे उस में फिर देखना क्या २ घटता है अर्थात् पू. षा. के ८००' फिर उ. षा के ६००' फिर अभिजित् के २५३'–२०'' फिर श्रवण के ७४६'–४०'' घटा कर देखना कौन २ नक्षत्र गत हो गया और वर्तमान कौन नक्षत्र चन्द्र में है। जो नहीं घटता उसे अशुद्ध नक्षत्र जानना। शेष कला विकला में (१ नक्षत्र में शनि का भोग २॥ वर्ष = ३० माह है इस कारण) २॥ वर्ष या ३० माह का गुणाकर अशुद्ध नक्षत्र के पूर्ण भभोग काल का भाग दो जो लब्धि मास घटी पल आयगा वह अशुद्ध नक्षत्र का भुक्त काल हुआ। उस में उस ग्रह के भुक्त नक्षत्र के वर्ष (प्रत्येक के २॥ वर्ष) के हिसाब से जोड़ देना। सब भुक्त काल जो इस प्रकार से मिले उस ग्रह के पूर्ण वर्ष से घटा देना तो उस ग्रह का भोग्य काल होगा।

रा

यदि चन्द्र ९–२३°–२०' के आगे अर्थात् १७६००' से अधिक हो तो फिर शनि की दशा निकल जाती है आगे प्रत्येक नक्षत्र ८००' का ही होता है।

जब नक्षत्र का भुक्त और भभोग न निकाला हो और केवल स्पष्ट ही ज्ञात हो तब उक्त प्रकार से चन्द्र स्पष्ट से गत नक्षत्र जान लेना। यदि नक्षत्र का भुक्त भभोग ज्ञात हो तो उसी से भुक्त वर्ष निकाल लेना। शनि की दशा में उ.षा. अभिजित् और श्रवण नक्षत्र हो तो सावधानी रखना। पंचांग में अभिजित् नक्षत्र नहीं दिया रहता। इस कारण चन्द्र स्पष्ट से ही पता लगा लेना कि क्या नक्षत्र होगा। नीचे उसका चक्र दिया है जिस में अभिजित् भी बताया है।

चन्द्र के अनुसार नक्षत्र ज्ञान चक्र ३

चन्द्र				नक्षत्र	चन्द्र				नक्षत्र
रा.	अं.	क.	वि.		रा.	अं.	क.	वि.	
०	१३	२०	०	१ अश्विनी	३	१६	४०	०	८ पुष्य
०	२६	४०	०	२ भरिणी	४	०	०	०	९ आश्लेषा
१	१०	०	०	३ कृतिका	४	१३	२०	०	१० मघा
१	२३	२०	०	४ रोहिणी	४	२६	४०	०	११ पू. फा
२	६	४०	०	५ मृग०	५	१०	०	०	१२ उ. फा.
२	२०	०	०	६ आर्द्रा	५	२३	२०	०	१३ हस्त
३	३	२०	०	७ पुनर्वसु	६	६	४०	०	१४ चित्रा

चन्द्र				नक्षत्र
रा.	अं.	क.	वि.	
६	२०	०	०	१५ स्वाती
७	३	२०	०	१६ विशा.
७	१६	४०	०	१७ अनु.
८	०	०	०	१८ ज्ये.
८	१३	२०	०	१९ मूल
८	२६	४०	०	२० पूषा
९	६	४०	०	२१ उ.षा

चन्द्र				नक्षत्र
रा.	अं.	क.	वि.	
९	१०	५३	२०	२२ अभि.
९	२३	२३	२०	२३ श्रवण
१०	६	४०	०	२४ धनि.
१०	२०	०	०	२५ शत.
११	३	२०	०	२६ पू. भा.
११	१६	४०	०	२७ उ. भा.
१२	०	०	०	२८ रेवति

इस चक्र को देख कर जान सकते हो कि चन्द्र स्पष्ट के अनुसार वर्तमान नक्षत्र क्या आता है और कौन गत नक्षत्र है। जैसे—

चंद्र २-६-५४-५१ है। उपरोक्त चक्र से प्रगट हुआ इस में पाँचवाँ मृगशिर, गत हो गया है, वर्तमान आर्द्रा नक्षत्र है। चन्द्र की कला बनाये तो ४०-१४-५१ हुए। इसमें ८०० का भाग दिया तो गत नक्षत्र ५ मृगशिर आया शेष आर्द्रा के १४′-५१″ बचे।

रा
२-६°-५४′-५१″
×३०
६०+६=६६×६०
=३९६०+५४
=४०११४′-५१″

८००)४०१४-५१″(५
४००० गत
शेष १४-५१ नक्षत्र
या चन्द्र स्पष्ट २-६-५४′-५१″
चक्रानुसार-२-६-४० तक घंटा गत
मृगशिर
शेष=०-०-१४-५१=आर्द्रा के

आर्द्रा में पूर्वोक्त चक्र २ के अनुसार सूर्य की दशा आई। सूर्य की दशा के ६ वर्ष हैं इस शेष कलादि में गुणा कर ८०० का भाग देना तो वर्ष मास आदि जो प्राप्त होंगे उस में (सूर्य दशा में ४ नक्षत्र होने से) ४ का भाग देना पड़ेगा तब १ नक्षत्र के भोग वर्ष से गुणा करना और ८०० या जो नक्षत्र का पूर्ण भोग कला हो उससे भाग देने को उस नक्षत्र का भुक्त समय वर्ष पास आदि प्राप्त होगा।

जैसे सूर्य के पूरे वर्ष ६ हैं और ४ नक्षत्र हैं। प्रत्येक नक्षत्र १″ वर्ष का पड़ा। तो शेष में १″ वर्ष या १८ मास का गुणा कर ८०० का भाग देने से जो समय निकलेगा वह उसका मुक्त काल हुआ। मास का गुणा करने से उत्तर मास दिन आदि में आता उसके वर्ष बना लेने चाहिए। शेष १४′-५१″ में १॥ वर्ष का गुणा किया तो २६-१६॥ हुआ। इस में ८०० का भाग दिया तो ० वर्ष आया। मास बनने को सब में १२ का गुणाकर ८०० का भाग दिया तो ० मास आया। फिर जो कुछ बचा

शेष १४′-५१″ है
× १॥ वर्ष
१४-५१
+ ७-२५″
२२-१६″
८००)२२-१६(० वर्ष
× १२
२६४ । १९२
+३ । +६
८००)२६७-१८(० मास
× ३०
६-०
८०१०
८००)८०१६(१० दिन
८००
१६
× ६०
८००)११४०(१ घड़ी
८००
३४० × ६०
८००)२०४००(२४॥ पल
१६००
४४००
४०००
४००
व. मा. दि. घ. प.
= ०– ०–१०–१–२५॥
सूर्य के भुक्त वर्ष

	व. मा. दि. घ. प.
सूर्य	६– ० –० – ०–०
—भुक्त	०– ०–१०– १–२५
∴ भोग्य =	५–११–१६–५८–३५

सब में ३० का गुणाकर ८०० का भाग दिया १० दिन आये शेष में ६० का गुणाकर ८०० का भाग दिया तो १ घड़ी २५ पल आया। इस प्रकार व. मा. दि. घ. प.
०–० –१०– १–३५ यह आर्द्रा का भुक्त समय हुआ। यहाँ आर्द्रा ८००′ का है इससे ८०० का भाग दिया। यदि उत्तराषाढ़ा होता तो ६००′ का, अभिजित् होता तो २५३′-२०″ का और श्रवण होता तो ७४६′-४०″ का भाग देते क्योंकि उनकी भोग कला उतनी ही है।

उसके उपरांत देखना है कि उस ग्रह के कितने नक्षत्र भुक्त हो चुके हैं। जितने नक्षत्र भुक्त (गत) हुए हों प्रत्येक के वर्ष भी इसी में जोड़ना पड़ेगा। यहाँ सूर्य की महादशा में यह पहिला ही नक्षत्र है। इस कारण और किसी के वर्ष नही जोड़ना पड़ा यदि यह नक्षत्र आश्लेषा होता तो सूर्य के शेष नक्षत्र आर्द्रा पुनर्वसु और पुष्य ३ गत नक्षत्र हुए। इन तीनों के वर्ष १॥ × ३ = ४॥ वर्ष और जोड़ने से उस नक्षत्र का भुक्त काल पूरा होता।

अब यहाँ आर्द्रा के पहिले सूर्य का और कोई नक्षत्र नहीं है इससे और जोड़ना पड़ा। इसे ही सूर्य के पूरे वर्ष ६ से घटाया तो शेष व. मा. दि. घ. प.
५ –११– १६– ८–३५
व्यतीत होने के उपरांत सूर्य की दशा का अंत हो जायगा और क्रमानुसार आगे के दूसरे ग्रह चंद्र की महादशा आरंभ होगी।

यह ध्यान रहे कि चंद्र स्पष्ट के अनुसार जो दशा का भुक्त काल निकलता है उस में केवल कुछ घड़ी पल का अंतर पड़ता हैं। क्योंकि चंद्र की विकला के आगे और भी शेष छूट जाता है इससे नक्षत्र का भुक्त काल और भभोग काल पर से जो समय प्राप्त होता है वह ठीक निकलता है।

अब इसी को नक्षत्र का भयात और भभोग लेकर निकालते हैं।

घ. प. पल वि.

आर्द्रा का भभोग ६६–३३ = ३९९३–०

,, भयात १–१४–१२ = ७४–१२

भयात ७४–१२
×१॥ वर्ष

७४–१२
+३६–६

३९९३) १११–१८ (० वर्ष
×१२

१३३२–२१६
+३= ३६

३९९३) १३३५–३६ (० मास
×३०

१८–०
४००५०

३९९३) ४००६८ (१० दिन
३९९३

१३८
×६०

३९९३) ८२८० (२ घड़ी
७९८६

२९४
×६०

३९९३) १७६४० (४ पल
१५९७२

१६६८

व. मा. दि. घ. प.

सूर्य के पूरे वर्ष ६–० – ०–०–०

–भुक्त समय ०–०–१०–२–४

शेष भोग्य = ५–११–१९–५७–२६

सूर्य की दशा भोग्य

व. मा. दि. घ. प.

५–११–१९–५७–२६

आर्द्रा नक्षत्र का भयात (भुक्त काल)

घ. प. वि.

१–१४–१२ के पल ७४–१२ में (सूर्य में एक नक्षत्र का भोग्य वर्ष १॥ होने से) १॥ का गुणा किया तो १११–१८ हुए इसमे आर्द्रा का भभोग ६६–३३ के पल ३९९३ बनाकर भाग दिया तो ० वर्ष आया। शेष वही रहा। इस पूरे में १२ का गुणा किया क्योंकि ऊपर पल विपल हैं जो ६० का होता है और वर्ष में १२ मास होते हैं। साधारण प्रकार से १२ का गुणा कर १८ विपल जोड़ने पर अंतर पड़ जाता इस कारण पूरे १११–१८ में १२ का गुणा किया तो १३३५–३६ आये ३९९३ का भाग दिया तो ० मास आया

शेष १३३५–३६ में ३० का गुणा किया तो ४००६८-३६ आया ३९९३ का भाग दिया तो १० दिन आये फिर शेष में ६० का गुणा कर ३९९३ का भाग दिया तो २ घड़ी ४ पल आया। इस भुक्त काल के अतिरिक्त और भी गत नक्षत्र के वर्ष होते तो जोड़ देते। यहाँ केवल इतना ही है। इसे सूर्य के पूरे वर्ष ६ में घटाया तो शेष
व. मा. दि. घ. प.
५–११-१९-५७-५६ हुआ इतना व्यतीत होने पर सूर्य की दशा का अंत होकर आगे के ग्रह चंद्र की दशा लगेगी।

दूसरा उदाहरण

मान लो चंद्र रा ९–२०°–४०′-०″ है। ऊपर का चक्र ३ देखा रा ९-५०°-५३′-२० तक अभिजित् भुक्त हो गई। इसके उपरांत श्रवण लगा जिसका अंत रा ९-२३°-२३′–२०″ पर है। इस से प्रगट हुआ जन्म नक्षत्र श्रवण है। श्रवण की भोग कला ७४६′–४०″ चक्र २ में दी है। श्रवण नक्षत्र होने से शनि की महादशा आई जिसके वर्ष १० हैं इसके ४ नक्षत्र होने से प्रत्येक नक्षत्र में शनि के १०/४ = २॥ वर्ष आये।

चंद्र रा ९–२०°–४०′–०″
–अभिजित् ९–१०–५३–२० गत नक्षत्र
शेष=०–९–४६–४० वर्तमान श्रवण के

शेष ९°–४६′–४०″
× २॥ वर्ष
१९–३३–२०
+४–५३–२०
=२४–२६–४०
२४°–२६′–४०″
× ६०
१४४० + २६=१४६६ × ६०
=८७९६० + ४०
=४४८००″

७४६′–४०″
× ६०
४४७६० + ४०
=४४८००″

२४–२६–४० / ७४६–४० = ८८०००″ / ४४८००″

दोनों के विकला बना कर भाग दिये।

४४८००)८८०००(१ वर्ष
४४८००
―――――
४३२००
× १२
४४८००)५१८४००(११ मास
४४८००
―――――
७०४००
४४८००
―――――
२५६००
× ३०
४४८००)७६८०००(१७ दिन
४४८००
―――――
३२००००
३१३६००
―――――
६४००
× ६०
४४८००)३८४०००(८ घड़ी
३५८४००
―――――
२५६००
× ६०
―――――
१५३६००

४४८००)१५३६००(३४ पल
१३४४००
―――――
१९२०००
१७९२००
―――――
१२८००
=श्रवण भुक्त काल
व. मा. दि. घ. प.
१-११-१७-८-३४

व. मा. दि. घ. प.
श्रवण का भुक्त काल १-११-१७-८-३४ है। शनि के ३ और नक्षत्र गत हो चुके हैं। अर्थात् शनि के पू. षा., उ. षा., और अभिजित् गत होकर श्रवण में जन्म हुआ है। शनि के ४ नक्षत्रों में पूरे १० वर्ष हैं तो प्रत्येक नक्षत्र के २।। वर्ष पड़ा। गत ३ नक्षत्र के २।। × ३ = ७।। वर्ष हुए। उपरोक्त भुक्त काल में ७।। वर्ष और जोड़ा

	व. मा. दि. घ. प.
तो श्रवण भुक्त	१-११-१७-८-३४
गत ३ नक्षत्र के	× ७-६
पूर्ण भुक्त काल =	९-५-१७-८-३४ शनिका

	व. मा. दि. घ. प.
शनि के पूर्ण भुक्त वर्ष	१०-० -०- ०-०
पूर्ण भुक्त वर्ष	९-५-१७- ८- ३४
शेष	०-६-१२-५१-२६

भोग्य दशा शनि की

अष्टोत्तरी दशा के भुक्त वर्ष निकालने को कई ज्योतिषी लोग विंशोत्तरी दशा के समान ही इसके भुक्त भोग्य वर्ष निकालते हैं अर्थात् (भयात × दशा के पूर्ण वर्ष) ÷ भभोग = लब्धि वर्ष मास दिन आदि ग्रह की दशा के भुक्त वर्ष। (दशा के पूर्ण वर्ष− भुक्त वर्ष) = भोग्य वर्ष। इस प्रकार से भोग्य वर्ष निकालने में कुछ अंतर पड़ जाता है।

यह रीति बहुतों को मान्य नहीं है। इस कारण पूर्व बताई रीति से ही अष्टोत्तरी दशा के भुक्त भोग्य वर्ष निकाल लेना।

पहिले उदाहरण में जो भुक्त पल से सूर्य की अष्टोत्तरी दशा निकाली है वह और उसके आगे के ग्रह के वर्ष नीचे के चक्र में स्थापित करने से जन्म के समय की अष्टोत्तरी महादशा का चक्र ४ बन गया है।

अष्टोत्तरी महादशा के समय का चक्र ५

ग्रह	वर्ष	मा-	दिन	घ.	प.	सम्वत्	राशि	अं	क.	वि	सूर्य की महादशा
जन्म						१९७०	३	२७	२३	६	से सूर्य महादशा आरंभ
सूर्य	५	११	१९	५७	५६	१९७६	३	१७	२१	२	तक सूर्य महादशा
चन्द्र	१५					१९९१	३	१७	२१	२	" चन्द्र "
मंगल	८					१९९९	३	१७	२१	२	" मंगल "
बुध	१७					२०१६	३	१७	२१	२	" बुध "
शनि	१०					२०२६	३	१७	२१	२	" शनि "
गुरु	१९					२०४५	३	१७	२१	२	" गुरु "
राहु	१२					२०५७	३	१७	२१	२	" राहु "
शुक्र	२१					२०७८	३	१७	२१	२	" शुक्र "

महादशा चक्र बनाते समय ध्यान रहे कि जितनी गणित से जातक की आयु निकली है वहीं तक महादशा के वर्ष जोड़ते जाना अधिक नहीं लेना।

इससे प्रकट हुआ कि जन्म के उपरान्त सूर्य की महा दशा के वर्ष

व. मा. दि. घ. प.
५-११-१९-५७-५६ भोगने के उपरान्त चन्द्र की महा दशा १५ वर्ष रहेगी उपरांत मंगल ८ वर्ष, बुध १७ वर्ष, शनि १० वर्ष, गुरु १९ वर्ष, राहु १२ वर्ष, शुक्र २१ वर्ष दशा रहेगी। इसके आगे और भी आयु होगी तो फिर सूर्य की महादशा के ६ ६ वर्ष इत्यादि क्रमानुसार अष्टोत्तरी महादशा के वर्ष होंगे। पूर्णायु के अनुसार उस समय के भीतर जितने ग्रह की महा दशा भोगेगी उसका विचार होगा। अष्टोत्तरी दशा का समय सम्वत् आदि, विंशोत्तरी दशा का

जिस प्रकार समय निकला था उसी प्रकार जन्म सम्वत् और जन्म के सूर्य में दशा के वर्ष आदि जोड़कर निकाल लेने चाहिए जैसा चक्र ४ में बताया है।

अष्टोत्तरी महादशा के विभाग अन्तर्दशा प्रत्यन्तर दशा आदि जानना

जिस प्रकार विंशोत्तरी महा दशा में अन्तर्दशा निकाली जाती है उसी प्रकार इसमें भी महादशा की अन्तर्दशा निकाली जाती है। अन्तर्दशा के भीतर प्रत्यन्तर दशा और प्रत्यंतर के भीतर प्राण दशा निकालने की रीति आगे बताई है।

अन्तर्दशा साधन

जिस ग्रह की महादशा में अन्तर्दशा साधन करना हो तो =महादशा वर्ष × अन्तर्दशा के ग्रह का वर्ष ÷ ९ = शेष अन्तर्दशा समय। जैसे सूर्य की अन्तदर्शा निकालनी है तो सूर्य के ६ वर्ष हैं इसमें जो ग्रह अन्तर्दशा में पड़े उसकी वर्ष संख्या से गुणाकर ९ का भाग देना। जिस ग्रह की महादशा होगी उसी ग्रह को अन्तर्दशा प्रथम होगी उसके आगे क्रम से जो ग्रह पड़े उनकी अन्तर्दशा क्रमानुसार आगे आवेगी। जैसे सूर्य की अन्तर्दशा होगी। उसके उपरांत क्रमानुसार चन्द्र मंगल बुध शनि गुरु राहु और शुक्र की अन्तर्दशा होगी। मान लो शनि की महादशा में अन्तर्दशा निकालनी है तो पहिले शनि की अन्तर्दशा होगी फिर उसके आगे क्रमानुसार गुरु, राहु, शुक्र, सूर्य, चंद्र, मंगल और बुध की अन्तर्दशा होगी।

महादशा के भीतर प्रत्येक ग्रह की अन्तर्दशा निकालने का उदाहरण नीचे चक्र ५–६ में दिया है। महादशा के पूर्ण समय में सम्पूर्ण ग्रह क्रमानुसार (उस महादशा के समय के भीतर) भोगते हैं। उनके भोग काल को अन्तर्दशा कहते हैं। इसी अन्तर्दशा का समय प्रत्येक ग्रह के भोग काल का गणित से निकाला हुआ आगे चक्र १२ में दिया है।

अन्तर्दशा के समय को निकालने की यह रीति है

जिस ग्रह की महादशा में अन्तर्दशा साधन करना हो तो अन्तर्दशा के ग्रह के जितने वर्ष होते हैं उससे और महादशा के वर्ष से गुणा कर $\frac{१०८}{१२} = ९$ का भाग देना तो ग्रह की अन्तर्दशा का समय मास दिन में निकलता है। ९ का भाग देने से लब्धि मास प्राप्त होता है शेष में ३० का गुणा कर ९ का भाग देना तो दिन और आगे शेष में ६० का गुणा कर ९ का भाग देना तो घड़ी आदि प्राप्त होती है इस प्रकार अन्तर्दशा का समय मास दिन घड़ी आदि में निकल आता है, जैसा नीचे चक्र ५ और ६ के उदाहरण से प्रगट होगा।

(१) सूर्य की अंतर्दशा साधन चक्र ५

ग्रह	महादशा सूर्य के वर्ष	अंतर्दशा के ग्रह के वर्ष	गुणन फल ÷ ९	अंतर्दशा समय मास	दिन
सूर्य	६	× ६	३६ ÷ ९	=४	०
चन्द्र	६	× १५	९ ÷ ९	= १०	०
मंगल	६	× ८	४८ ÷ ९	= ५	१०
बुध	६	× १७	१०२ ÷ ९	=११	१०
शनि	६	× १०	६० ÷ ९	= ६	२०
गुरु	६	× १९	११४ ÷ ९	=१२	२०
राहु	६	× १२	७२ ÷ ९	= ८	०
शुक्र	६	× २१	१२६ ÷ ९	=१	०
			योग = ७२	—	

=६ वर्ष

(२) : चंद्र की अंतर्दशा चक्र ६

ग्रह	महादशा चन्द्र के वर्ष	अंतर्दशा वर्ष	गुणनफल ÷ ९	अंतर्दशा समय मास	दिन
चन्द्र	१५ ×	१५=	२२५ ÷ ९	=२५	०
मंगल	१५ ×	८=	१२० ÷ ९	=१३	१०
बुध	१५ ×	१७=	२२५ ÷ ९	=२८	१०
शुक्र	१५ ×	१०=	१५० ÷ ९	=१६	२०
गुरु	१५ ×	१९=	२८५ ÷ ९	=३१	२०
राहु	१५ ×	१२=	१८० ÷ ९	=२०	०
शुक्र	१५ ×	२१=	३१५ ÷ ९	=३५	००
सूर्य	१५ ×	६=	९० ÷ ९	=१०	
			योग १८०	—०	

= १५ वर्ष

इसी रीति से प्रत्येक ग्रह को अंतर्दशा निकाल कर आगे चक्र १२ में दिया है।

प्रत्यंतर दशा साधन

जिस ग्रह की महादशा में अंतर्दशा उपर बताये नियम के अनुसार निकाल चुके हो और उस अंतर्दशा के समय का और भी विभाग करना हो तो प्रत्येक अंतर्दशा के समय के भी उसी अनुपात से प्रत्येक ग्रहों की प्रत्यंतर दशा निकाल लेना। प्रत्यंतर दशा के समय का योग ग्रह की अंतर्दशा के बराबर होता है। जिस ग्रह की अंतर्दशा में प्रत्यंतर निकालना है उसे ही आदि में रखकर क्रमानुसार आठों ग्रह लिखकर उनके प्रत्यंतर का समय निकाल कर लिख देना चाहिए।

जैसे सूर्य में आठों ग्रह की अंतर्दशा ऊपर निकाल चुके हैं अब इस महादशा के भीतर अंतर्दशा के आठ ग्रह में से प्रत्येक ग्रह की क्रमानुसार प्रत्यंतर दशा निकालनी चाहिए। उसके लिए पहिले सूर्य की महादशा के भीतर सूर्य की अंतर्दशा को लिया। इस सूर्य को अंतर्दशा के ४ मास के भीतर आठों ग्रहों की प्रत्यंतर दशा होगी। उस में पहिले सूर्य की प्रत्यंतर दशा होगी उपरांत चन्द्र, मंगल, बुध, शनि, गुरु, राहु और शुक्र की प्रत्यंतर दशा होगी।

प्रत्यंतर दशा निकालने के लिए प्रत्येक ग्रह की अंतर्दशा का समय जो मास दिन में दिया है उसके दिन बना लेना और जिस ग्रह की अंतर्दशा में प्रत्यंतर निकालना है उस ग्रह की अंतर्दशा के वर्ष से प्रत्येक में प्रथम २ गुणा कर १०८ का भाग देना तो प्रत्यंतर दशा का समय मास दिन घटी पल में प्राप्त होगा

जैसे सूर्य महादशा की अंतर्दशा के प्रत्येक ग्रहों का प्रत्यंतर निकालना है तो

पहिले सूर्य को अंतर्दशा आती है। इस सूर्य की अंतर्दशा में प्रत्यंतर निकालना है। इसके लिये सूर्य को ही आदि लेकर ८ ग्रह क्रमानुसार लिख लेना। सूर्य की अंतर्दशा के ४ मास है। इसके १२० दिन हुए। मुख्य अंतर्दशा सूर्य को है जिसका प्रत्यंतर निकालना है तो सूर्य के वर्ष ६ से गुणा किया। यदि शनि की अंतर्दशा का प्रत्यंतर निकालना हो तो शनि को १० वर्ष से प्रत्येक अंतर्दशा के समय बने हुए दिन में गुणा करते और १०८ का भाग देते। यहां सूर्य की अंतर्दशा के दिन १२० हैं तो सूर्य के वर्ष ६ से गुणा किया १२० × ६ = ७२० हुए। इसमें १०८ का भाग दिया तो ६ दिन ६० घड़ी हुए। इस प्रकार उत्तर दिन घड़ी पल में आता है। ३० से अधिक दिन हों तो मास बना लेना। प्रत्यंतर दशा निकालने का उदाहरण चक्र ७,८ और ९ में दिया है।

प्रत्यंतर दशा निकालने का उदाहरण

सूर्य महादशा में सूर्य के अंतर की प्रत्यंतर दशा चक्र ७

ग्रह	अंतर्दशा मास	दिन	दिन	प्रत्यंतर सूर्य वर्ष	गुणन फल	भाजक	प्रत्यंतर समय दिन	घ॰	पल ०
सूर्य	४	०	= १२०	× ६	= ७२०	÷ १०८	= ६	४०	०
चंद्र	१०	०	= ३००	× ६	= १८००	÷ १०८	= १६	४०	०
मंगल	५	१०	= १६०	× ६	= ९६०	÷ १०८	= ८	५३	२०
बुध	११	१०	= ३४०	× ६	= २०४०	÷ १०८	= १८	५३	२
शनि	६	२०	= २००	× ६	= १२००	÷ १०८	= ११	६	४०
गुरु	१२	२०	= ३८०	× ६	= २२८०	÷ १०८	= २१	६	४०
राहु	८	०	= २४०	× ६	= १४४०	÷ १०८	= १३	२०	०
शुक्र	१४	०	= ४२०	× ६	= २५२०	÷ १०८	= २३	२०	०
						योग	= १२०	०	०
							= ४ मास		

सूर्य महादशा में चंद्र के अंतर्दशा की प्रत्यन्तर दशा चक्र ८

ग्रह	अंतर दिन	प्रत्यंतर चंद्र वर्ष	गुणनफल	भाजक	प्रत्यंतर समय मा॰	दि॰	घ॰	प॰
चंद्र	३००	× १५	= ४५००	÷ १०८	= १	११	४०	०
मंगल	१६०	× १५	= २४००	÷ १०८	= ०	२२	१३	२०
बुध	३४०	× १५	= ५१००	÷ १०८	= १	१७	१३	२०
शनि	२००	× १५	= ३०००	÷ १०८	= ०	२७	४६	४०
गुरु	३८०	× १५	= ५७००	÷ १०८	= १	२२	४६	४०
राहु	२४०	× १५	= ३६००	÷ १०८	= १	३	२०	०
शुक्र	४२०	× १५	= ६३००	÷ १०८	= १	२८	२०	०
सूर्य	१२०	× १५	= १८००	÷ १०८	= ०	१६	४०	०
				योग	१०	०	०	०

चंद्र महादशा में चंद्र के अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा चक्र ९

ग्रह	अंतर्दशा मास	अंतर्दशा दिन	दिन	प्रत्यंतर चंद्र वर्ष	गुणनगल	भाजक	प्रत्यंतर समय मा०	दि०	घ०	प०
चंद्र	२५	०	= ७५०	× १५	= ११२५०	÷ १०८ =	३	१४	१०	०
मंगल	१३	१०	= ४००	× १५	= ६०००	+ १०८ =	१	२५	३३	२०
बुध	२८	१०	= ८५०	× १५	= १२७५०	÷ १०८ =	३	२८	३	२०
शनि	१६	२०	= ५००	× १५	= ७५००	÷ १०८ =	२	९	२६	४०
गुरु	३१	२०	= ९५०	× १५	= १४२५०	+ १०८ =	४	११	५६	४०
राहु	२०	०	= ६००	× १५	= ९०००	÷ १०८ =	२	३०	२०	०
शुक्र	३५	०	= १०५०	× १५	= १५७५०	÷ १०८ =	४	२५	५०	०
सूर्य	१०	०	= ३००	× १५	= ४५००	÷ १०८ =	१	११	४०	०
						योग	२५	०	०	०

सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यंतर दशा साधन करने को यहाँ सूर्य की अन्तर्दशा समय के दिन बना लिया फिर सूर्य की प्रत्यन्तर दशा निकालने के सूर्य के वर्ष ६ से गुणा किया। सूर्य में चंद्र की प्रत्यंतर दशा निकालने को वे ही सूर्य की अन्तर दशा के दिन में प्रत्यंतर चंद्र के वर्ष १५ से गुणा कियाँ और १०८ का भाग दिया तो प्रत्यंतर दशा का समय निकल आया।

सूर्य की महादशा में मंगल के अन्तर की प्रत्यंतर दशा बनानी है तो वे ही सूर्य की अन्तरदशा के दिन लिये उनमें मंगल के वर्ष ८ से गुणा कर १०८ का भाग दिया तो सूर्य में मंगल के अन्तर्दशा की प्रत्यंतर दशा निकलेगी। इसी प्रकार चंद्र महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा बनाने को चंद्र की अन्तर्दशा के मास आदि के दिन बनालो फिर जिसकी प्रत्यंतर दशा साधन करना हो उसी के वर्ष से गुणा करना। जैसे चंद्र में चंद्र के अन्तर की प्रत्यंतर दशा साधन करना हो तो चंद्र के वर्ष १५ से गुणा करने से चंद्र की प्रयंतर दशा का समय प्राप्त होगा। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहों की अंतर्दशा के भीतर प्रत्येक ग्रह की प्रत्यंतर दशा साधन करना।

प्रत्येक महादशा में उस की सम्पूर्ण अन्तर्दशा की प्रत्यंतर दशा के ८-८ चक्र बनेंगे। गणित की अड़चन मिटानें के लिए आगे प्रत्येक अन्तर्दशा का प्रत्यंतर निकाल कर चक्र १३ में बताया है।

प्रत्येक महादशा के भीतर जो अन्तर्दशा निकाली जाती है उन सब ग्रहों के अंतर्दशा के समय योग महादशा के समय के बराबर होता है। इसी प्रकार प्रत्येक अन्तर्दशा के भीतर जो प्रत्यंतर दशा होती हैं उसका योग अन्तर्दशा के समय के बराबर होता है। प्रत्यंतर दशा के भीतर प्राण दशा होती है उसका योग प्रत्यन्तर के

बराबर होता है। जैसे महादशा के वर्ष ६ हैं। अब सूर्य अन्तर्दशा प्रत्येक ग्रह की लो और उनका समय का योग करो तो ६ वर्ष होगा। इसी प्रकार सूर्य की अंतर्दशा का समय ४ मास है तो सूर्य की प्रत्यंतर दशा का समय सब ग्रहों को जोड़ो तो ४ मास होगा। सूर्य की प्रत्यंतर दशा का समय ० मास ६ दिन ४० घड़ी है इसके भीतर जो सब ग्रहों की प्राण दशा निकाली जायगी तो सबके समय का योग ६ दिन ४० घड़ी ही होगा। यदि योग में अंतर पड़े तो समझना गणित में कहीं भूल हुई है।

प्राण दशा या उपदशा साधन करना

ग्रहों की अन्तर्दशा के भीतर जो प्रत्यंतर दशा साधन की गई है यदि फल के लिए उससे भी सूक्ष्म समय निकालना है तो प्राणदशा निकालने के लिए जिस ग्रह का प्रत्यन्तर दशा में प्राण दशा निकालनी है उस ग्रह के समय मास दिन आदि की घड़ी बना लेनी चाहिए और उसमें जिस ग्रह की प्राण दशा निकालनी है उसके वर्ष से गुणा कर १०८ का भाग देना तो उत्तर घड़ी पल विपल आदि में प्राप्त होगा वह समय प्राण दशा का होगा। ६० से अधिक घड़ी हो तो उसके दिन बना लेना। नीचे चक्र १० में प्राणदशा निकाल कर बताई है।

सूर्य की महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा में और सूर्य की प्रत्यंतर दशा में

प्राणदशा साधन चक्र १०

ग्रह	प्रत्यंतर दशा की			घड़ी		प्राण दशा सूर्य के वर्ष	गुणनफल	भाजक	प्राणदशा समय			
	दिन	घ.	प.	घड़ी	पल				घड़ी	प.	वि.	अनु.
सूर्य	६	४०	०	= ४००	०	× ६	= २४००	÷ १०८	= २२	१३	२०	०
चंद्र	१६	४०	०	= १०००	०	× ६	= ६०००	÷ १०८	= ५५	३३	२०	०
मंगल	८	५३	२०	= ५३३	२०	× ६	= ३२००	÷ १०८	= २९	३७	४६	४०
बुध	१८	५३	२०	= ११३३	२०	× ६	= ६८००	÷ १०८	= ६२	५७	४६	४०
शनि	११	६	४०	= ६६६	४०	× ६	= ४०००	÷ १०८	= ३७	२	१३	२०
गुरु	२१	६	४०	= १२६६	४०	× ६	= ७६००	÷ १०८	= ७०	२२	१३	२०
राहु	१३	२०	०	= ८००	०	× ६	= ४८००	÷ १०८	= ४४	२६	४०	०
शुक्र	२३	२०	०	= १४००	०	× ६	= ८४००	÷ १०८	= ७७	४६	४०	०
									४००	०	०	०

इसी प्रकार आवश्यक होने पर प्रत्येक प्रत्यंतर दशा के भीतर प्राण दशा निकाल लेना। प्राण दशा को उपदशा भी कहते हैं। अष्टोत्तरी में ग्रह की महादशा के भीतर ८ अंतर्दशा के चक्र बनते हैं। इस प्रकार ८ अंतर्दशा के ६४ चक्र प्रत्यंतर दशा के बनते हैं। प्रत्येक प्रत्यंतर दशा में ८ प्राण दशा के चक्र बनते हैं इस प्रकार ६४ प्रत्यंतर दशा के और ५१२ प्राण दशा के चक्र बनेंगे।

यहां केवल अंतर्दशा और प्रत्यंतर दशा का चक्र आगे दिया है। प्राण दशा का बहुत कम काम पड़ता हैं इस कारण उसका चक्र नहीं दिया। जहां आवश्यक हो ऊपर बताई रीति से प्राण दशा निकाल लेना।

अंतर्दशा आदि निकालने की दूसरी रीति

अंतर्दशा, प्रत्यंतर दशा, प्राणदशा आदि निकालने की दूसरी रीति भी है जो नीचे दी है।

अंतर्दशा या प्रत्यंतर दशा के समय में १०८ का भाग देने से ध्रुवांक प्राप्त होता है। उस ध्रुवांक में ग्रह के वर्ष से, (जिस ग्रह की प्रत्यंतर दशा आदि निकालनी है) गुणा करना तो प्रत्यंतर दशा आदि का समय निकल आयगा।

जैसे सूर्य में सूर्य की अंतर्दशा का समय ४ मास है। इसको प्रत्यंतर दशा निकालनी है तो इसके दिन बनाये। ४ मास = १२० दिन ÷ १०८ = १- ६- ४० (दिन. घ. प.) ध्रुवांक। इस में प्रत्येक ग्रह के वर्ष से गुणा करने से प्रत्यंतर दशा का समय निकल जायगा।

१०८) १२० (१ दिन
१०८
१२ × ६०
१०८) ७२० (६ घड़ी
६४८
७२ × ६०
१०८) ४३२० (४० पल
४३२
०

सूर्य	चंद्र	मंगल
१-६-४०	१-६-४०	१-६-४०
× ६ सूर्य	× १५ चंद्र	× ८ मंगल
४-०	१०-०	५-२०
६-३६	१-३०	८-४८
६-४०-०	१५	८-५३-२०
	१६-४०-०	

बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र
१-६-४०	१-६-४०	१-६-४०	१-६-४०	१-६-४०
× १७ बुध	× १० शनि	× १९ गुरु	× १२ राहु	× २१ शुक्र
११-२०	६-४०	१२-४०	८-०	१४-०
१-४२	१-०	१-५४	१-१२	२-६
१७	१०	१९	११	२१
१८-५३-२०	११-६-४०	२१-६-४०	१३-२०-०	२३-२०-०

इसी को चक्र ११ में बताया है

सूर्य में सूर्य की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा चक्र ११

ग्रह	ध्रुवांक दि. घ. प.	प्रत्यंतर दशावर्ष	प्रत्यंयर दशा समय दि. घ. प.
सूर्य	१ ६ ४० ×	६ =	६ ४० ०
चंद्र	१ ६ ४० ×	१५ =	१६ ४० ०
मंगल	१ ६ ४० ×	८ =	८ ५३ २०
बुध	१ ६ ४० ×	१७ =	१८ ५३ २०
शनि	१ ६ ४० ×	१० =	११ ६ ४०
गुरु	१ ६ ४० ×	१९ =	२१ ६ ४०
राहु	१ ६ ४० ×	१२ =	१३ २० ०
शुक्र	१ ६ ४० ×	२१ =	२३ २० ०
		योग	१२० ० ०
			= ४ मास

इसी प्रकार प्रत्येक अंतर्दशा के समय में १०८ का भाग देकर ध्रुवांक बनाकर प्रत्यंतर दशा के ग्रह वर्ष से गुणाकर प्रत्येक ग्रह की प्रत्यंतर दशा निकाल लेना।

इसी रीति से प्रत्यंतर दशा के अंतर्गत प्राणदशा निकालने को प्रत्यंतर दशा के समय में १०८ का भाग देकर ध्रुवांक निकाल कर प्राण दशा वाले ग्रह के वर्ष से गुणा करना तो प्रत्येक दशा का समय निकल आयगा।

अष्टोत्तरी महादशा की अंतर्दशा का चक्र १२

सूर्य वर्ष ६
में सूर्य की अंतर्दशा

ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	घ.
सूर्य	0	४	०	०
चंद्र	0	१0	०	०
मंगल	०	५	१०	०
बुध	0	११	१०	०
शनि	०	६	२०	०
गुरु	१	0	२०	०
राहु	0	८	०	०
शुक्र	१	२	०	०
योग	३४	०	०	०

चंद्र वर्ष १५
चंद्र की अंतरदशा

ग्रह	व.	मा.	दि.	घ.
चंद्र	२	१	०	०
मंगल	१	१	१०	०
बुध	२	४	१०	०
शनि	१	४	२०	०
गुरु	२	७	२०	०
राहु	१	८	०	०
शुक्र	२	११	०	०
सूर्य	०	१०	०	०
योग	१५	०	०	०

मंगल वर्ष ८
मंगल की अंतरदशा

ग्रह	व.	मा.	दि.	घ.
मं०	०	७	३	२०
बुध	१	३	३	२०
शनि	०	८	२६	४०
गुरु	१	४	२६	४०
राहु	०	१०	२०	०
शुक्र	१	६	२०	०
सूर्य	०	५	१०	०
चंद्र	११	१	१०	०
योग	८	०	०	०

बुध वर्ष १७

बुध की अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दि.	घ.
बुध	२	८	३	२०
शनि	१	६	२६	४०
गुरु	२	११	२६	४०
राहु	१	१०	२०	०
शुक्र	३	३	२०	०
सूर्य	०	११	१०	०
चंद्र	२	४	१०	०
मं०	१	३	३	२०
योग	१७	०	०	०

शनि वर्ष १०

शनि की अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दि.	घ.
शनि	०	११	३	२०
गुरु	१	९	३	२०
राहु	१	१	१०	०
शुक्र	१	११	१०	०
रवि	०	६	२०	०
चंद्र	१	४	२०	०
मंगल	०	८	२६	४०
बुध	१	६	२६	४०
याग	३०	१	०	०

गुरु वर्ष १९

गुरु की अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दि.	घ.
गुरु	३	४	३	२०
राहु	२	१	१०	०
शुक्र	३	८	१०	०
सूर्य	१	०	२०	०
चंद्र	२	७	२०	०
मं०	२	४	२६	४०
बुध	२	११	२६	४०
शनि	१	९	३	२०
योग	१९	०	०	०

राहु वर्ष १२

राहु की अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दि.	घ.
राहु	१	४	०	०
शुक्र	२	४	०	०
सूर्य	०	८	०	०
चंद्र	१	८	०	०
मं०	०	१०	२०	०
बुध	१	१०	२०	०
शनि	१	१	१०	०
गुरु	२	१	१०	०
योग	१२	०	०	०

शुक्र वर्ष २१

शुक्र की अंतर्दशा

ग्रह	व.	मा.	दि.	घ.
शुक्र	४	१	०	०
सूर्य	१	२	०	०
चंद्र	२	११	०	०
मं०	१	६	२०	०
बुध	३	३	२०	०
शनि	१	११	१०	०
गुरु	३	८	१०	०
राहु	२	४	०	०
योग	२१			

अष्टोत्तरी अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा का चक्र १३

सूर्य महादशा में सूर्य अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
सूर्य	०	६	४०	२०	०
चंद्र	०	१६	४०	०	०
मंगल	०	८	५३	२०	०
बुध	०	१८	५३	२०	०
शनि	०	११	६	४०	०
गुरु	०	२१	६	४०	०
राहु	०	१३	२०	०	०
शुक्र	०	२३	२०	०	०
योग	४	०	०	०	०

सूर्य महादशा में चंद्र अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
चंद्र	१	११	४०	०	०
मंगल	०	२२	१३	२०	०
बुध	१	१७	१३	२०	०
शनि	०	२७	४६	४०	०
गुरु	१	२२	४६	४०	०
राहु	१	३	२०	०	०
शुक्र	१	२८	२०	०	०
सूर्य	०	१६	४०	०	०
योग	१०	०	०	०	०

सूर्य महादशा में मंगल अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
मंगल	०	११	५१	६	४०
बुध	०	२५	११	६	४०
शनि	०	१४	४८	५३	२०
गुरु	०	२८	८	५३	२०
राहु	०	१७	४६	४०	०
शुक्र	१	१	६	४०	०
सूर्य	०	८	५३	२०	०
चंद्र	०	२२	१३	२०	०
योग	५	१०	०	०	०

सूर्य महादशा में बुध अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
बुध	१	२३	३१	६	४०
शनि	१	१	२८	५३	२०
गुरु	१	२९	४८	५३	२०
राहु	१	७	४६	४०	०
शुक्र	२	६	६	४०	०
सूर्य	०	१८	५३	२०	०
चंद्र	१	१७	१३	२०	०
मंगल	०	२५	११	६	४०
योग	११	१०	०	०	०

सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
शनि	०	१८	३१	५	४०
गुरु	१	५	११	६	४०
राहु	०	२२	१३	२०	०
शुक्र	१	८	५३	२०	०
रवि	०	११	६	४०	०
चंद्र	०	२७	४६	४०	०
मंगल	०	१४	४८	५३	२०
बुध	१	१	२८	५३	२०
योग	६	२०	०	०	०

सूर्य महादशा में गुरु अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
गुरु	२	६	५१	६	४०
राहु	१	१२	१३	२०	०
शुक्र	२	१३	५३	२०	०
रवि	०	२१	६	४०	०
चंद्र	१	२२	४६	४०	०
मंगल	०	२८	८	५३	२०
बुध	१	२९	४८	५३	२०
शनि	१	५	११	६	४०
योग	१२	२०	०	०	०

सूर्य महादशा में
राहु अंतर्दशा की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
राहु	०	२६	४०	०	०
शुक्र	१	१६	४०	०	०
रवि	०	१३	२०	०	०
चंद्र	१	३	२०	०	०
मंगल	०	१७	४६	४०	०
बुध	१	७	४६	४०	०
शनि	०	२२	१३	२०	०
गुरु	१	१२	१३	२०	०
योग	८	०	०	०	०

सूर्य में
शुक्र की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
शुक्र	२	२१	४०	०	०
रवि	०	२३	२०	०	०
चंद्र	१	२८	२०	०	०
मंगल	१	१	६	४०	०
बुध	२	६	६	४०	०
शनि	१	८	५३	२०	०
गुरु	२	१३	५३	२०	०
राहु	१	१६	४०	०	०
योग	१४	०	०	०	०

चंद्र में
चंद्र की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि
चंद्र	३	१४	१०	०	०
मंगल	१	२५	३३	२०	०
बुध	३	२८	३	२०	०
शनि	२	९	२६	४०	०
गुरु	४	११	५६	४०	०
राहु	२	२३	२०	०	०
शुक्र	४	२५	५०	०	०
सूर्य	१	११	४०	०	०
योग	२५	०	०	०	०

चंद्र में
मंगल की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
मंगल	०	२९	३७	४६	४०
बुध	२	२	५७	४६	४०
शनि	१	७	२	१३	२०
गुरु	२	१०	२२	१३	२०
राहु	१	१४	२६	४०	०
शुक्र	२	१७	४६	४०	०
रवि	०	२२	१३	२०	०
चंद्र	१	२५	३३	२०	०
योग	१३	१०	०	०	०

चंद्र में
बुध की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प	वि.
बुध	४	१३	४७	४६	४०
शनि	२	१८	४२	१३	२०
गुरु	४	२९	३२	१३	२०
राहु	३	४	२६	४०	०
शुक्र	५	१५	१६	४०	०
रवि	१	१७	१३	२०	०
चंद्र	३	२८	३	२०	०
मंगल	२	२	५७	४६	४०
योग	२८	१०	०	०	०

चद्र में
शनि को
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
शनि	१	१६	१७	४६	४०
गुरु	२	२७	५७	४६	४०
राहु	१	२५	३३	२०	०
शुक्र	३	७	१३	२०	०
रवि	०	२७	४६	४०	०
चंद्र	२	९	२६	४०	०
मंगल	१	७	२	१३	२०
बुध	२	१८	४२	१३	२०
योग	१६	२०	०	०	०

चंद्र में गुरु की प्रत्यंतरदशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
गुरु	५	१७	६	४६	४०
राहु	३	१५	३३	२०	०
शुक्र	६	४	४३	२०	०
रवि	१	२२	४६	४०	०
चंद्र	४	११	५६	४०	०
मं०	२	१०	२२	१३	२०
बुध	४	२९	३२	१०	२०
शनि	२	२७	५७	४६	४०
योग	३१	२०	०	०	०

चंद्र में राहु की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
राहु	२	६	४०	०	०
शुक्र	३	२६	४०	०	०
रवि	१	३	२०	०	०
चंद्र	२	२३	२०	०	०
मंगल	१	१४	२६	४०	०
बुध	३	४	२६	४०	०
शनि	१	२५	३३	२०	०
गुरु	३	१५	३३	२०	०
योग	०२	०	०	०	०

चंद्र में शुक्र की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
शुक्र	६	२४	१०	०	०
रवि	१	२८	२०	०	०
चंद्र	४	२५	५०	०	०
मंगल	२	१७	४६	४०	०
बुध	५	१५	१६	४०	०
शनि	३	७	१३	२०	०
गुरु	६	४	४३	२०	०
राहु	३	२६	४०	०	०
योग	३५	०	०	०	०

चंद्र में रवि की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
रवि	०	१६	४०	०	०
चंद्र	१	११	४०	०	०
मंगल	०	२२	१३	२०	०
बुध	१	१७	१३	२०	०
शनि	०	२७	४६	४०	०
गुरु	१	२२	४६	४०	०
राहु	१	३	२०	०	०
शुक्र	१	२८	२०	०	०
योग	१०	०	०	०	०

मंगल में मंगल की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
मं०	०	१४	४८	८	५३ १/३
बुध	१	३	३४	४८	५३ १/३
शनि	०	१९	४५	११	६ २/३
गुरु	१	७	३१	५१	६ २/३
राहु	०	२३	४२	१३	२०
शुक्र	१	११	२८	५३	२०
रवि	०	११	५१	६	४०
चंद्र	०	२९	३७	४६	४०
योग	७	३	२०	०	०

मंगल में बुध की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
बुध	२	११	२१	२८	५३ १/३
शनि	१	११	५८	३१	६ २/३
गुरु	२	१९	४५	११	६ २/३
राहु	१	२०	२२	१३	२०
शुक्र	२	२८	८	५३	२०
रवि	०	२५	११	६	४०
चंद्र	२	२	५७	४६	४०
मंगल	१	३	३४	४८	५३ १/३
योग	१५	३	२०	०	०

मंगल में शनि का प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
शनि	०	२४	४१	२८	५३$\frac{1}{3}$
गुरु	१	१६	४५	४८	५३$\frac{1}{3}$
राहु	०	२९	३७	४६	४०
शुक्र	१	२१	५१	६	४०
रवि	०	१४	४८	५३	२०
चंद्र	१	७	२	१३	२०
मंगल	०	१९	४५	११	६$\frac{2}{3}$
बुध	१	११	५८	३१	६$\frac{3}{2}$
योग	८	२६	४०	०	०

मंगल में गुरु की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
गुरु	२	२९	८	८	५२$\frac{1}{3}$
राहु	१	२६	१७	४६	४०
शुक्र	३	८	३१	६	४०
रवि	०	२८	८	५३	२०
चंद्र	२	१०	२२	१३	२०
मंगल	१	७	३१	५१	६$\frac{2}{3}$
बुध	२	१९	४५	११	६$\frac{2}{3}$
शनि	१	१६	५४	४८	५८$\frac{1}{3}$
योग	१६	२६	४०	०	०

मंगल में राहु की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि,
राहु	१	५	३३	२०	०
शुक्र	२	२	१३	२०	०
रवि	०	१७	४६	४०	०
चंद्र	१	१४	२६	४०	०
मंगल	०	२३	४२	१३	२०
बुध	१	२०	२२	१३	२०
शनि	०	२९	३७	४६	४०
गुरु	१	२६	१७	४६	४0
योग	१0	२०	0	०	0

मंगल में शुक्र की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि
शुक्र	३	१८	५३	२०	०
रवि	१	१	६	४०	०
चंद्र	२	१७	४६	४०	०
मंगल	१	११	२८	५३	२०
बुध	२	२८	८	५३	२०
शनि	१	२१	५१	६	४०
गुरु	३	८	३१	८	४०
राहु	२	२	१३	२०	०
योग	१८	२०	०	०	०

मंगल में रवि की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
रवि	७	८	५३	२०	०
चंद्र	०	२२	२३	२०	०
मंगल	०	११	५१	६	४०
बुध	०	२५	११	६	४०
शनि	०	१४	४८	५३	२०
गुरु	०	२८	८	५३	२०
राहु	०	१७	४६	४०	०
शुक्र	१	१	६	४०	०
योग	५	१०	०	०	०

मंगल में चंद्र की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
चंद्र	१	२५	३३	२०	०
मगल	०	२९	३७	४६	४०
बुध	२	२	५७	४६	४०
शनि	१	७	२	१३	२०
गुरु	२	१०	२२	१३	२०
राहु	१	१४	२६	४०	०
शुक्र	२	१७	४६	४०	०
रवि	०	२२	१३	००	०
योग	१३	१०	०	०	०

बुध में बुध की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
बुध	५	१	३८	८	५३⅓
शनि	२	२९	११	५१	६⅔
गुरु	५	१९	२८	३१	६⅔
राहु	३	१७	२	१२	२०
शुक्र	६	७	१८	५३	२०
रवि	१	२३	३१	६	४०
चंद्र	४	१३	४७	४६	४०
मं०	२	११	२१	२८	५३⅓
योग	३२	३	२०	०	०

बुध में शनि की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
शनि	१	२२	२८	८	५३⅓
गुरु	३	९	४१	२८	५३⅓
राहु	२	२	५७	४६	४०
शुक्र	३	२०	११	६	४०
रवि	१	१	२८	५३	२०
चंद्र	२	१८	४२	१३	२०
मं०	१	११	५८	३१	६⅔
बुध	२	२९	११	५१	६⅔
योग	१८	२६	४०	०	०

बुध में गुरु की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
गुरु	६	९	२४	४८	५३⅓
राहु	३	२९	२७	४६	४०
शुक्र	६	२९	२१	६	४०
रवि	१	२९	४८	५३	२०
चंद्र	४	२९	३२	१३	२०
मं०	२	१९	४५	११	६⅔
बुध	५	१९	२८	३१	६⅔
शनि	३	९	४१	२८	५३⅓
योग	३५	२६	४०	०	०

बुध में राहु की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
राहु	२	१५	३३	२०	०
शुक्र	४	१२	१३	२०	०
रवि	१	७	४६	४०	०
चंद्र	३	४	२६	४०	०
मं०	१	२०	२२	१३	२०
बुध	३	१७	२	१३	२०
शनि	२	२	५७	४६	४०
गुरु	३	२९	३७	४६	४०
योग	२२	२०	०	०	०

बुध में शुक्र की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
शुक्र	७	२१	२३	२०	०
रवि	२	६	६	५०	०
चंद	५	१५	१६	४०	०
मं०	२	२८	८	५३	२०
बुध	६	७	१८	५३	२०
शनि	३	२०	११	६	४०
गुरु	६	२९	२१	६	४०
राहु	४	१२	१३	२०	०
योग	३९	२०	०	०	०

बुध में रवि की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
रवि	०	१८	५३	२०	०
चंद्र	१	१७	३१	२०	०
मं०	०	२५	३१	६	४०
बुध	१	२३	१३	६	४०
शनि	१	१	२८	५३	२०
गुरु	१	२९	४८	५३	२०
राहु	१	७	५६	४०	०
शुक्र	२	६	६	४०	०
योग	११	१०	०	०	०

बुध में चंद्र की प्रत्यंतर शदा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
चंद्र	३	२८	३	२०	०
मं०	२	२	५७	४६	४०
बुध	४	१३	४७	४६	४०
शनि	२	१८	४२	१३	२०
गुरु	४	२९	३२	१३	२०
राहु	३	३	२६	४०	०
शुक्र	५	१५	१५	४०	०
रवि	१	१७	१३	२०	०
योग	२८	१०	०	०	०

बुध में मंगल की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	पि.
मं	१	३	३४	४८	५३ १/३
बुध	२	११	२१	२८	५३ १/३
शनि	१	११	५८	३१	६ २/३
गुरु	२	१९	४५	११	६ २/३
राहु	१	२०	२२	१३	२०
शुक्र	२	२८	८	५३	२०
रवि	०	२५	११	६	४०
चंद्र	२	२	५७	४६	४०
योग	१५	३	२०	०	०

शनि में शनि को प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
शनि	१	०	५२	४६	४०
गुरु	१	२८	३९	२६	४०
राहु	१	७	२	१३	२०
शुक्र	२	४	४८	५३	२०
रवि	०	१८	३१	६	४०
चंद्र	१	१६	१७	४६	४०
मं०	०	२४	४१	२८	५३ १/३
बुध	१	२२	२६	१७	४६ २/३
योग	११	३	२०	०	०

शनि में गुरु की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
गुरु	३	११	२५	११	६ २/३
राहु	२	१०	२२	१३	२०
शुक्र	४	३	८	५३	२०
रवि	१	५	११	६	४०
चंद्र	२	२७	५८	४६	४०
मं०	१	१६	५४	४८	५३ १/३
बुध	३	९	४१	२८	५३ १/३
शनि	१	२८	३८	३१	६ २/३
योग	२१	३	२०	०	०

शनि में राहु की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
राहु	१	१४	२६	४०	०
शुक्र	२	१७	४६	४०	०
रवि	०	२२	१३	२०	०
चंद्र	१	१५	३३	२०	०
मं०	०	२९	३७	४६	४०
बुध	२	२	५७	४६	४०
शनि	१	७	२	१३	२०
गुरु	२	१०	२२	१३	२०
योग	१३	१०	०	०	०

शनि में शुक्र की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
शुक्र	४	१६	६	४०	०
रवि	१	८	५६	२०	०
चंद्र	५	७	१३	२०	०
मं०	१	२१	५१	६	४०
बुध	२	२०	११	६	४०
शनि	२	४	४८	५३	२०
गुरु	४	३	८	५३	२०
राहु	२	१६	४६	४०	०
योग	२३	१०	०	०	०

शनि में रवि को प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
रवि	०	११	६	४०	०
चंद्र	०	२७	४६	४०	०
मंगल	०	१४	४८	५३	२०
बुध	१	१	२८	५३	२०
शनि	०	१८	३१	६	४०
गुरु	१	५	११	६	४०
राहु	०	२२	१३	२०	०
शुक्र	१	७	५३	२०	०
योग	६	२०	०	०	०

शनि में चंद्र को प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि
चंद्र	२	९	२६	४०	०
मंगल	१	७	२	१३	२०
बुध	२	१८	४२	१३	२०
शनि	१	१६	१७	४६	४०
गुरु	२	२७	५७	४६	४०
राहु	१	२५	३३	२०	०
शुक्र	३	७	१३	२०	०
रवि	०	२७	४६	४०	०
योग	१६	२०	०	०	०

शनि में मंगल की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
मं०	०	१९	४५	११	६ २/३
बुध	१	११	५८	३१	६ २/३
शनि	०	२४	४१	२८	५३ १/३
गुरु	१	१६	५४	४८	५३ १/३
राहु	०	२९	३७	४६	४०
शुक्र	१	२१	५१	६	४०
रवि	०	१४	४८	५३	२०
चंद्र	१	७	२	१३	२०
योग	८	२६	४०	०	०

शनि में बुध को प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
बुध	२	२९	११	५१	६ २/३
शनि	१	३२	२८	८	५३ १/३
गुरु	३	९	४१	२८	५३ ०/२
राहु	२	२	५७	४६	४०
शुक्र	३	२०	११	६	४०
रवि	१	१	२८	५३	२०
चंद्र	२	१८	४२	१३	२०
मं०	१	११	५८	३१	६ २/३
यो.	१८	२६	४०	०	०

गुरु में गुरु की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि
गुरु	७	१	४१	५१	६ २/३
राहु	४	१३	४२	१३	२०
शुक्र	७	२३	५८	५३	२०
रवि	२	६	५१	६	४०
चंद्र	५	१७	७	४६	४०
मं०	२	२९	८	८	५३ १/३
बुध	६	९	२४	४८	५३ १/३
शनि	३	२१	२५	११	६ २/३
यो.	४०	३	२०	०	०

गुरु में राहु की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
राहु	२	२४	२६	४०	०
शुक्र	४	२७	४६	४०	०
रवि	१	१२	१३	२०	०
चंद्र	३	१५	३३	२०	०
मं०	१	२६	१७	४६	४०
बुध	३	२९	३७	४६	४०
शनि	२	१०	२२	१३	२०
गुरु	४	१३	४२	१३	२०
योग	२५	१०	०	०	०

गुरु में शुक्र का
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
शुक्र	८	१८	३६	४०	०
रवि	२	१३	५३	२०	०
चंद्र	६	४	४३	२०	०
मं०	३	८	३१	६	४०
बुध	६	२९	२१	६	४०
शनि	४	३	८	५३	२०
गु०	७	२३	५८	५३	२०
राहु	४	२७	४६	४०	०
योग	४४	१०	०	०	०

गुरु में रवि की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि
रवि	०	२१	६	४०	०
चंद्र	१	२२	४६	४०	०
मं०	०	२८	८	५३	२०
बुध	१	२९	४८	५३	२०
शनि	२	५	११	६	४०
गुरु	२	६	५१	६	४०
रा.	१	१२	१३	२०	०
शु.	२	१३	५३	२०	०
यो.	१२	२०	०	०	०

गुरुमें चंद्र की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि
चंद्र	४	११	५६	४०	०
मंगल	२	१०	२२	१३	२०
बुध	४	२९	३२	१३	२०
शनि	२	२७	५७	४६	४०
गुरु	५	१७	७	४६	४०
राहु	३	१५	३३	२०	०
शुक्र	६	४	४३	२०	०
रवि	१	२२	४६	४०	०
योग	३१	२०	०	०	०

गुरु में मंगल की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
मं०	१	७	३१	५१	६ $\frac{२}{३}$
बुध	२	१९	४५	११	६ $\frac{२}{३}$
शनि	१	१६	५४	४८	५३ $\frac{१}{३}$
गुरु	२	२९	८	८	५३ $\frac{१}{३}$
राहु	१	२६	१७	४६	४०
शुक्र	३	८	३१	६	४०
रवि	०	२८	८	५३	२०
चंद्र	२	१०	२२	१३	२०
याग	१६	२६	४०	०	०

गुरु में बुध की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि
बुध	५	१९	२८	३१	६ $\frac{२}{३}$
शनि	३	९	४१	२८	५३ $\frac{१}{३}$
गुरु	६	९	२४	४८	५३ $\frac{१}{३}$
राहु	३	२९	३७	४६	४०
शुक्र	६	२९	२१	६	४०
रवि	१	२९	४८	५३	२०
चंद्र	४	२९	३२	१३	२०
मं०	२	१९	४५	११	६ $\frac{२}{३}$
यो०	३५	२६	४०	०	०

गुरु में शनि की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि
शनि	१	२८	३८	३१	६ $\frac{२}{३}$
गुरु	३	२१	२५	११	६ $\frac{२}{३}$
राहु	२	१०	२२	१३	२०
शुक्र	४	३	८	५३	२०
रवि	१	५	११	६	४०
चंद्र	२	२७	५७	४६	४०
मं०	१	१६	४५	४८	५३ $\frac{१}{३}$
बुध	३	९	४१	२८	५३ $\frac{१}{३}$
यो०	२१	३	२०	०	०

राहु में राहु की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि
राहु	१	२३	२०	०	०
शुक्र	३	३	२०	०	०
रवि	०	२६	४०	०	०
चंद्र	२	६	४०	०	०
मंगल	१	५	३३	२०	०
बुध	२	१५	३३	२०	०
शनि	१	१४	२६	४०	०
गुरु	२	२४	२६	४०	०
योग	१६	०	०	०	०

राहु में शुक्र की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
शुक्र	५	१३	२०	०	०
रवि	१	१६	४०	०	०
चंद्र	३	२६	४०	०	०
मंगल	२	२	१३	२०	०
बुध	४	१२	१३	२०	०
शनि	२	१७	४६	४०	०
गुरु	४	२७	४६	४०	०
राहु	३	३	२०	०	०
योग	२८	०	०	०	०

राहु में रवि की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	व.	प.	वि.
रवि	०	१३	२०	०	०
चंद्र	१	३	२०	०	०
मंगल	०	१७	४६	४०	०
बुध	१	७	४६	४०	०
शनि	०	२२	१३	२०	०
गुरु	१	१२	१३	२०	०
राहु	०	२६	४०	०	०
शुक्र	१	१६	४०	०	०
योग	८	०	०	०	०

राहु में चंद्र की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	बि
चंद्र	२	२३	२०	०	०
मं०	१	१४	२६	४०	०
बुध	३	४	२६	४०	०
शनि	१	२५	३३	२०	०
गुरु	३	१५	३३	२०	०
राहु	२	६	४०	०	०
शुक्र	३	२६	४०	०	०
रवि	१	३	२०	०	०
योग	२०	०	०	०	०

राहु में मंगल की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
मं०	०	२३	४२	१३	२०
बुध	१	२०	२२	१३	२०
शनि	०	२९	३७	४६	४०
गुरु	१	२६	१७	४६	४०
राहु	१	५	३३	२०	०
शुक्र	२	२	१३	२०	०
रवि	०	१७	४६	४०	०
चंद्र	१	१४	२६	४०	०
योग	१०	२०	०	०	०

राहु में बुध को प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि,	घ.	प.	वि.
बुध	३	१७	२	१३	२०
शनि	२	२	५७	४६	४०
गुरु	३	२९	३७	४६	४०
राहु	२	१५	३३	२०	०
शुक्र	४	१२	१३	२०	०
रवि	१	७	४६	४०	०
चंद्र	३	४	२६	४०	०
मं०	१	२०	२२	१३	२०
योग	२२	२०	०	०	०

राहु में शनि की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
शनि	१	७	२	१३	२०
गुरु	२	१०	२२	१३	२०
राहु	१	१४	२६	४०	०
शुक्र	२	१७	४६	४०	०
रवि	०	२२	१३	२०	०
चंद्र	१	२५	३३	२०	०
मं०	०	२९	३७	४६	४०
बुध	२	२	५७	४६	४०
योग	१३	१०	०	०	०

राहु में गुरु की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
गुरु	४	१३	४२	१३	२०
राहु	२	२४	२६	४०	०
शुक्र	४	२७	४६	४०	०
रवि	१	१२	१३	२०	०
चंद्र	३	१५	३३	२०	०
मं०	१	२६	१७	४६	४०
बुध	३	२९	३७	४६	४०
शनि	२	१०	२२	१३	२०
योग	२५	१०	०	०	०

शुक्र में शुक्र की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
शुक्र	९	१५	५०	०	०
रवि	२	२१	४०	०	०
चंद्र	६	२४	१०	०	०
मं०	३	१८	५३	२०	०
बुध	७	२१	२३	१०	०
शनि	४	१६	६	४०	०
गुरु	८	१८	३६	४०	०
राहु	५	१३	२०	०	०
योग	४९	०	०	०	०

शुक्र में रवि की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
रवि	०	२३	२०	०	०
चंद्र	१	२८	२०	०	०
मं०	१	१	६	४०	०
बुध	२	६	६	४०	०
शनि	१	८	५३	२०	०
गुरु	२	१३	५३	२०	०
राहु	१	१६	४०	०	०
शुक्र	२	२१	४०	०	०
योग	१४	०	०	०	०

शुक्र में चंद्र की प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
चंद्र	४	२५	५०	०	०
मं०	२	१७	४६	४०	०
बुध	५	१५	१६	४०	०
शनि	३	७	१३	२०	०
गुरु	६	४	४३	२०	०
राहु	३	२६	४०	०	०
शुक्र	६	२४	१०	०	०
रवि	१	२८	२०	०	०
योग	३५	०	०	०	०

शुक्र में मंगल की प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
मं०	१	११	२८	५३	२०
बुध	२	२८	८	५३	२०
शवि	१	२१	५१	६	४०
गुरु	३	८	३१	६	४०
राहु	२	२	१३	२०	०
शुक्र	३	१८	५३	२०	०
रवि	१	१	६	४०	०
चंद्र	०	१७	४६	४०	०
योग	१८	२०	०	०	०

शुक्र में बुध की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
बुध	६	७	१८	५३	२०
शनि	३	२०	११	६	४०
गुरु	६	२९	२१	६	४०
राहु	४	१२	१३	२०	०
शुक्र	७	२१	२३	२०	०
रवि	२	६	६	४०	०
चंन्द्र	५	१५	१६	४०	०
मंगल	२	२८	८	५३	२०
योग	३९	२०	०	०	०

शुक्र में गुरु की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
गुरु	७	२२	५८	५३	२०
राहु	४	२७	४६	४०	०
शुक्र	८	१८	३६	४०	०
रवि	२	१३	५३	२०	०
चंद्र	६	४	४३	२०	०
मंगल	३	८	३१	६	४०
बुध	६	२९	२१	६	४०
शनि	४	३	८	५३	२०
योग	४४	१०	०	०	०

शुक्र में शनि की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि	घ.	प.	वि.
शनि	२	४	४८	५३	२०
गुरु	४	३	८	५३	२०
राहु	२	१७	४६	४०	०
शुक्र	४	६६	६	४०	०
रवि	१	८	५३	२०	०
चंन्द्र	३	७	१३	२०	०
मंगल	१	२१	५१	६	०
बुध	३	२०	११	६	४०
योग	२३	१०	०	०	०

शुक्र में राहु की
प्रत्यंतर दशा

ग्रह	मा.	दि.	घ.	प.	वि.
राहु	३	३	२०	०	०
शुक्र	५	१३	२०	०	०
रवि	१	५६	४०	०	०
चंद्र	३	२६	४०	०	०
मं०	२	२	१३	२०	०
बुध	४	१२	१३	२०	०
शनि	२	१७	४६	४०	०
गुरु	४	२७	४६	४०	०
योग	२८	०	०	०	०

अष्टोत्तरी महादशा की अंतर्दशा साधन

व. मा. दि. घ. प.

देखो चक्र ४ सूर्य की महादशा ५ ११ १९ ५७ ५६ है। अब देखना है कि सूर्य की महादशा में कितने अंतर ग्रह भुक्त होने को हैं। अंतर्दशा चक्र १२ देखो। उस के अनुसार सूर्य की अंतर्दशा के ग्रह नीचे दिये हैं। इन में से कितने ग्रह अंतर्दशा के के अनुसार सूर्य की अंतर्दशा के ग्रह नीचे दिये हैं। इन में से कितने ग्रह अंतर्दशा के भुक्त हो गये हैं और कितने भोग्य इसका पता लगाने के लिए अंतर्दशा के ग्रह विरुद्ध क्रम से घटाने पर प्रगट होगा कि कितने ग्रह भुक्त होने को शेष हैं।

सूर्य की अंतर्दशा

ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
१सूर्य	०	४	०
२चंद्र	०	१०	०
३मंगल	०	५	१०
४बुध	०	११	१०
५शनि	०	६	२०
६गुरु	१	०	२०
७राहु	०	८	०
८शुक्र	१	२	०
योग	६	०	०

व. मा. दि. घ.

महादशा ५ ११ १९ ५७ ५६

–८ शुक्र १–२

४–९–१९–५७–५६

–७ राहु ०–८–०

४–१–१९–५७–५६

–६गुरु १–०–२०

३–०–२९–५७–५६

–५शनि ०–६–२०

२–५– ९–५७–५६

–४बुध ०–११–१०

१–६–२९–५७–५६

–३मंगल ०–५–१०

१–१–१९–५७–५६

–२चंद्र ०–१०–०

०–३–१९–५७–५६ सूर्य

–१सूर्य ०–४– ० नहीं घटा

सूर्य की अंतर्दशा का चक्र १४

ग्रह	वर्ष.	मा.	दि.	घ.	प.	सम्बत	राशि	अ·	क.	त्रि	अंतर्दशा
जन्म	.	.	.	.	.	१९७०	३	२७	२३	६	से आरंभ
सूर्य	०	३	१९	५७	५६	१९७०	७	७	२१	२	तक सूर्य अंतर्दशा
चंद्र	०	१०	०	.	.	१९७१	५	१७	२१	२	,, चंद्र ,,
मंगल	०	५	१०	.	.	१९७१	१०	२७	२१	२	,, मंगल ,,
बुध	०	११	१०	.	.	१९७२	१०	७	२१	२	,, बुध ,,
शनि	०	६	२०	.	.	१९७३	४	२७	२१	२	,, शनि ,,
गुरु	१	०	२	.	.	१९७४	५	१७	२१	२	,, गुरु ,,
राहु	०	०	०	.	.	१९७५	१	१७	२१	२	,, राहु ,,
शुक्र	१	२	८	.	.	१९७६	३	१७	२१	२	,, शुक्र ,,
योग	५	११	१९	५७	५६						

इसके उपरांत चंद्र की अंतर्दशा आरंभ होगी। चंद्र की अंतर्दशा का चक्र बनाने को चक्र १२ में दिये चंद्र की अंतर्दशा का समय लेकर उसमें सूर्य की राशि अंश आदि और सम्वत जोड़ते जाना तो चंद्र की अंतर्दशा के समय का चक्र बन जायगा। इसी प्रकार चक्र १२ के आधार पर इच्छित अंतर्दशा के चक्र बना लेना।

मा. दि. घ. प.

यहाँ सूर्य में सूर्य की अतर्दशा का समय ३–१६–५७–५६ है। यदि इसको प्रत्यन्तर दशा निकालनी है तो प्रत्यन्तर दशा का चक्र १३ में दिया है उससे सूर्य का प्रत्यन्तर दशा का समय खोज कर विरुद्ध क्रम से वह समय घटाना आरंभ करो तो इस में प्रत्यन्तर दशा के ग्रह (जो भोग्य है) प्रगट हो जायगे।

अष्टोत्तरी दशा में
सूर्य में सूर्य की
प्रत्यन्तर दशा (चक्र १३ से)

ग्रह	मा.	दि.	घ.	पल
सूर्य	०	६	४०	०
चंद्र	०	१६	४०	०
मंगल	०	८	५३	२०
बुध	०	१८	५३	२०
शनि	०	११	६	४०
गुरु	०	२१	६	४०
राहु	०	१३	२०	०
शुक्र	०	२३	२०	०
योग	४	०	०	०

	मा. दि. घ. प.
सूर्य अंतर्दशा	३–१६–५७–५६
–शुक्र	=०–२३–२०
	२–२६–३७–५६
–राहु	=०–१३–२०
	२–१३–१७–५६
–गुरु	=०–२१– ६–४०
	१–२२–११–१६
–शनि	=०–११– ६–४०
	१–११– ४–३६
–बुध	=०–१८–५३–२०
	०–२२–११–१६
–मंगल	=०– ८–५३–२०
	०–१३–१७–५६ चंद्र
–चंद्र	०–१६–४०

सूर्य की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा का चक्र १५

ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	घ.	प.	सम्बत	राशि	अ.	क.	वि.	प्रत्यंतरदशा
जन्म						१९७०	३	२७	२३	६	से आरंभ
चन्द्र	०	०	१३	१७	५६	१९७०	४	१०	४१	२	तक चन्द्र प्रत्यन्तर
मंगल	०	०	८	५३	२०	१९७०	४	१९	३४	२२	,, मंगल ,,
बुध	०	०	१८	५३	२०	२९७०	५	८	२७	४२	,, बुध ,,
शनि	०	०	११	६	४०	१९७०	५	१९	३४	२२	,, शनि ,,
गुरु	०	०	२१	६	४०	१९७०	६	१०	४१	२	,, गुरु ,,
राहु	०	०	१३	२०	०	१९७०	६	२४	१	२	,, राहु ,,
शुक्र	०	०	२३	२०	०	१९७०	७	१७	२१	२	,, शुक्र ,,
योग	०	३	१९	५७	५६						

इसके आगे सूर्य महादशा में चन्द्र की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा निकाली जायगी। इसमें सूर्य के अन्तर में चंद्र की प्रत्यंतर दशा में दिये ग्रह के समय को आगे जोड़ते जाने से चंद्र की प्रत्यंतर दशा का समय निकल आयगा। आगे और भी इसी प्रकार इच्छित प्रत्यंतर दशाओं का चक्र बना लेना।

अध्याय ३३

योगिनी दशा साधन

योगिनी दशा चक्र १

क्रम	१	२	३	४	५	६	७	८
दशा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८
चंद्र				अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृग०
नक्षत्र	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फा०	उ०फा०	हस्त
	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनु०	ज्येष्ठा	मूल	पू०षा०	उ०षा०
	श्रवण	धनिष्ठा	शत०	पू०भा०	उ०भा०	रेवती		

योगिनी दशा जानना

अश्विनी से जन्म नक्षत्र तक गिनकर ३ जोड़ना और योग में ८ का भाग देना जो शेष बचे उपरोक्त क्रम से गिनकर योगिनी को दशा जानना। शेष का क्रम ऊपर बताये चक्र १ के अनुसार लेना।

जैसे किसी का अनुराधा नक्षत्र का जन्म है। अश्विनी से अनुराधा तक गिना १७ हुए ३ जोड़ा २० हुए। ८ का भाग दिया २ बार भाग गया शेष ४ बचा। मंगला से ४ गिना तो चौथी भ्रामरी की दशा आई। चक्र १ देखने से स्पष्ट प्रगट हो जाता है कि किस २ नक्षत्र में किसो योगिनो की दशा पड़ती है और प्रत्येक योगिनो की दशा कितने वर्ष रहती है।

योगिनी की अंतर्दशा साधन

योगिनी महादशा वर्ष के दिन बनाकर ३६ का भाग देना (सब योगिनो के वर्षों का योग ३६ होता है) तो ध्रुवांक निकलेगा। अंतर्दशा में जो योगिनी पड़े और उस के जितने वर्ष हों उस वर्ष संख्या से उस ध्रुवांक में गुणा करना। जो गुणन फल प्राप्त होगा वह अंतर्दशा का समय दिन में निकलेगा। दिन के वर्ष मास आदि आवश्यक होने पर बना लेना।

जैसे पिंगला महादशा की अंतर्दशा निकालनी है।

पिंगला का समय २ वर्ष है = ७२० दिन ÷ ३६ = २० दिन ध्रुवांक हुआ।

पिंगला की अंतर्दशा साधना चक्र २

योगिनी नाम	ध्रुवांक दिन		अंतर्दशा वर्ष		गुणन दिन		अंतर्दशा समय मा०	दिन
पिंगला	२०	×	२	=	४०	=	१	२०
धान्या	२०	+	३	=	६०	=	२	०
भ्रामरी	२०	×	४	=	८०	=	२	२०
भद्रिका	२०	×	५	=	१००	=	३	१०
उल्का	२०	×	६	=	१२०	=	४	०
सिद्धा	२०	×	७	=	१४०	=	४	२०
संकटा	२०	×	८	=	१६०	=	५	१०
मंगला	२०	×	१	=	२०	=	०	२०
					योग		२४	०
							= २ वर्ष	

जिसकी अंतर्दशा निकालनी है उसी योगिनी की अंतर्दशा पहिले आयगी उसके आगे क्रमानुसार योगिनी की अंतर्दशा रहेगी।

जैसे यहाँ पिंगला की अंतर्दशा निकालनी है तो पहिले पिंगला की ही अंतर्दशा रहेगी धान्या भ्रामरी आदि की क्रमानुसार अंतर्दशा आयगी।

इसी प्रकार सम्पूर्ण योगिनियों की अंतर्दशा निकालकर आगें चक्र ५ में दिया है।

प्रत्यन्तर दशा साधन

इस अंतर्दशा की प्रत्यन्तर दशा निकालने को उसके अन्तर्दशा के समय को घड़ी में बनाकर उसमें ३६ का भाग देकर ध्रुवांक बना लेना। यदि दिन अधिक हो तो उसी दिन में ही ३६ का भाग देकर ध्रुवांक बना लेना। उपरांत प्रत्यन्तर दशा में जो योगिनी हो उसके वर्ष से उस ध्रुवांक में गुणा करना तो प्रत्यन्तर दशा का समय निकल आयगा।

जैसे पिंगला महादशा में पिंगला की अंतर्दशा ४० दिन है। इस की प्रत्यंतर दशा

घ.-पल दि. घ. प.

निकालनी है। ४० दिन × ६० = २४०० घड़ी—३६ = ६६-४०=१-६-४० ध्रुवांक। या

दि. घ. प.

४० दिन—३६=$\frac{४०}{३६}$=$\frac{१०}{९}$=१-६-४०ध्रुवांक।

पिंगलामें पिंगला की प्रत्यंतर दशा चक्र ३

योगिनी	ध्रुवांक				प्रत्यन्तर दशा समय			
	दि.	घ.	प.		वर्ष	दिन	घ.	पल
पिंगला	१	६	४०	×२	२	१३	२०	
धान्या	१	६	४०	×३=	३	२०	०	
भ्रामरी	१	६	४०	×४=	४	२६	४०	
भद्रिका	१	६	४०	×५=	५	३३	२०	
उल्का	१	६	४०	×६=	६	४०	०	
सिद्धा	१	६	४०	×७=	७	४६	४०	
संकटा	१	६	४०	×८=	८	५३	२०	
मंगला	१	६	४०	×१=	१	६	४०	
				योग	४०	०	०	

इसी प्रकार आवश्यक होने पर इसी रीति से सम्पूर्ण प्रत्यन्तर दशा निकाल लेना।

आगे चक्र ६ में सम्पूर्ण योगिनियों को प्रत्यन्तर दशा इसी प्रकार निकाल कर दी है।

प्रत्यन्तर दशा निकालने की दूसरी रीति

जिस अन्तर्दशा को प्रत्यन्तर दशा निकलनी हैं उस की वर्ष संख्या जो महादशा की है लेना और उसकी अन्तर्दशा की सब योगिनियों के समय को दिन में बना लेना। उपरांत प्रत्येक के दिन में उस अन्तर्दशा को उपरोक्त वर्ष संख्या से गुणा कर ३६ से भाग देना तो प्रत्येक प्रत्यन्तर दशा का समय निकल आयगा।

जैसे संकटा में मंगला की अन्तर्दशा की प्रत्यन्तर दशा निकालनी है तो संकटा की अन्तर्दशा के नीचे सब के समय के दिन बनाकर अन्तर ग्रह मंगला के वर्ष १ से गुणा कर ३६ का भाग देंगे। महादशा में योगिनी मंगला का वर्ष १ है इससे यहां १ वर्ष का गुणा किया है।

संकटा में मंगला की अन्तर्दशा की प्रत्यन्तर दशा साधन चक्र ४

संकटा

योगिनी की	अन्तर्दशा		सबके	मंगला	भाजक		प्रत्यन्तर समय		
	मा.	दिन	दिन	वर्ष			दिन	घ.	पल
१ मंगला	२	२०	=८०	×१	÷३६	८०/३६ = २०/९ =	२	१३	२०
२-पिंगला	५	१०	=१६०	×१	÷३६	१६०/३६ = ४०/९ =	४	२६	४०
३-धान्या	८	०	=२४०	×१	÷३६	२४०/३६ = २०/३ =	६	४०	०
४-भ्रामरी	१०	२०	=३२०	×१	÷३६	३२०/३६ ८०/९ =	८	५३	२०
५-भद्रिका	१३	१०	=४००	×१	÷३६	४००/३६ = १००/९ =	११	६	४०
६-उल्का	१६	०	=४८०	×१	÷३६	४८०/३६ = ४०/३ =	१३	२०	०
७-सिद्धा	१८	२०	=५६०	×१	÷३६	५६०/३६ = १४०/९ =	१५	३३	२०
८-संकटा	२१	१०	=६४०	×१	÷३६	६४०/३६ = १६०/९ =	१७	४०	४०
						योग	८०	०	०

सम्पूर्ण प्रत्यंतर दशा के समय का योग मंगला की अन्तर्दशा के समय के बराबर आना चाहिए। यदि योग नहीं मिला तो समझना कहीं भूल हो गई।

योगिनी दशा साधन में यह ध्यान देने योग्य बात है कि सबसे छोटी दशा मंगला की है। मंगला की दशा में जो मंगला का प्रत्यंतर निकाला है यदि उस समय को क्रम से जोड़ते जाओ तो आगे को दूसरी प्रत्यंतर दशा बन जायगी। इस प्रकार पूरी दशा निकालने के लिए गणित करने की आवश्यकता नहीं है केवल मंगला की दशा गणित से निकाल लेन। उपरांत उसे क्रम से जोड़ कर रख लेना और दशा में जिस क्रम से वह आयेगी उसी क्रम से दशा और उसका समय लिख देना।

जैसे संकटा में उल्का की अन्तर्दशा की प्रत्यंतर दशा निकालन है इसमें (संकटा में उल्का की अन्तर्दशा में) मंगला की अन्तर्दशा का समय २ मास २० दिन= ८० दिन है। उल्का का वर्ष ६ है तो ८० में ६ का गुणा कर ३६ का भाग देवेंगे।

मंगला दिन उल्का वर्ष

$\frac{८० \times ६}{३६} = \frac{८०}{६} = \frac{४०}{३}$ दिन= १३–२० इसी को जोड़ते जाने से संकटा में उल्का के अन्तर की पूरी प्रत्यंतर दशा का समय निकल आयगा फिर उसे दशा क्रम के अनुसार लिख लेना जैसा नीचे बताया है। संकटा में उल्का का अन्तर है तो पहिले उल्का की प्रत्यंतर दशा आयेगी।

दि. घ.

४ मंगला १३–२०
+१३–२०
५ पिंगला= २६–४०
+१३–२०
६ धान्या= ४०– ०
+१३–२०
७ भ्रामरी= ५३–२०
+१३–२०
८ भद्रिका= ६६–४०
+१३–२०
१ उल्का= ८०– ०
+१३–२०
२ सिद्धा= ९३–२०
+१३–२०
३ संकटा=१०६–४०

संकटा में उल्का के अन्तर की प्रत्यन्तर दशा

योगिनी	दिन	घड़ी	मा.	दिन	घड़ी
१ उल्का	८०	०=	२	२०	०
२ सिद्धा	९३	०=	३	३	२०
३ संकटा	१०६	४०=	३	१६	४०
४ मंगला	१३	२०=	०	१३	२०
५ पिंगला	२६	४०=	०	२६	४०
६ धान्या	४०	०=	१	१०	०
७ भ्रामरी	५३	२०=	१	२३	२०
८ भद्रा	६६	४०=	२	६	४०

योगिनी अन्तर्दशा चक्र ५

१ मंगला की अन्तर्दशा

योगिनी	वर्ष	मास	दिन
मंगला	०	०	१०
पिंगला	०	०	२०
धान्या	०	१	०
भ्रामरी	०	१	१०
भद्रिका	०	१	२०
उल्का	०	२	०
सिद्धा	०	२	१०
संकटा	०	२	२०
योग	१	०	०

२ पिंगला की अंतर्दशा

योगिनी	व.	मा.	दि.
पिंगला	०	१	१०
धान्या	०	२	०
भ्रामरी	०	२	२०
भद्रिका	०	३	१०
उल्का	०	४	०
सिद्धा	०	४	२०
संकटा	०	५	१०
मंगला	०	०	२०
योग	२	०	०

३ धान्या की अंतर्दशा

योगिनी	व.	मा.	दि.
धान्या	०	३	०
भ्रामरी	०	४	०
भद्रिका	०	५	०
उल्का	०	६	०
सिद्धा	०	७	०
संकटा	०	८	०
मंगला	०	१	०
पिंगला	०	२	०
योग	४	०	०

४ भ्रामरी की अन्तर्दशा

योगिनी	व.	मा.	दि.
भ्रामरी	०	५	१०
भद्रिका	०	६	२०
उल्का	०	८	०
सिद्धा	०	९	१०
संकटा	०	१०	२०
मंगला	०	१	१०
पिंगला	०	२	२०
धान्या	०	४	०
योग	४	०	०

५ भद्रिका की अंतर्दशा

योगिनी	वर्ष	मा.	दि.
भद्रिका	०	८	१०
उल्का	०	१०	०
सिद्धा	०	११	२०
संकटा	१	१	१०
मंगला	०	१	२०
पिंगला	०	३	१०
धान्या	०	५	०
भ्रामरी	०	६	२०
योग	५	०	०

६ उल्का की अंतर्दशा

योगिनी	वर्ष	मा.	दि.
उल्का	१	०	०
सिद्धा	१	२	०
संकटा	१	४	०
मंगला	०	२	०
पिंगला	०	४	०
धान्या	०	६	०
भ्रामरी	०	८	०
भद्रिका	०	१०	०
योग	६	०	०

७ सिद्धा की अंतर्दशा

योगिनी	व.	मा.	दि.
सिद्धा	१	४	१०
संकटा	१	६	२०
मंगला	०	२	१०
पिंगल	०	४	२०
धान्या	०	७	०
भ्रामरी	०	९	१०
भद्रिका	०	११	२०
उल्का	१	२	०
योग	७	०	०

८ संकटा की अंतर्दशा

योगिनी	व.	मा.	दि.
संकटा	१	९	१०
मंगला	०	२	२०
पिंगला	०	५	१०
धान्या	०	८	०
भ्रामरी	०	१०	२०
भद्रिका	१	१	१०
उल्का	१	४	०
सिद्धा	१	६	२०
योग	८	०	०

योगिनी दशा में अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा चक्र ६

(१) मंगला में मंगला की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	०	०	०	१	१	०	१	२	१०
घ.	१६	३३	५०	६	२३	४०	५६	१३	०
प.	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०

मंगला में पिंगला की अंतर्दशा को प्रत्यंतर दशा

योगिनी	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	१	१	२	२	३	३	४	०	२०
घ.	६	४०	१३	४६	२०	५३	२६	३३	०
प.	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	२०	०

मंगला में धान्या की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दि.	२	३	४	५	५	६	०	१	०
घ.	३०	२०	१०	०	५०	४०	५०	४०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मंगला में भ्रामरी की अंतर्दशा को प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दि.	४	५	६	७	८	१	२	३	१०
घ.	२६	३३	४०	४६	५३	६	१३	२०	०
प.	४०	२०	०	४०	२०	४०	२०	०	०

मंगला में भद्रिका की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दि.	६	८	९	११	१	२	४	५	२०
घ.	५६	२०	४३	६	२३	४६	१०	३३	०
प.	४०	०	२०	४०	२०	४०	०	२०	०

मंगला में उल्का की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
दि.	१०	११	१३	१	३	५	६	८	०
घ.	०	४०	२०	४०	२०	०	४०	२०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मंगला में सिद्धा की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
दि.	१३	१५	१	३	५	७	९	११	१०
घ.	३६	३३	५६	५३	५०	४६	४३	४०	८
पल	४०	२०	४०	२०	०	४०	२०	०	०

मंगला में संकटा की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
दि.	१७	२	४	६	८	११	१३	१५	१०
घ.	४६	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३	०
प.	४०	२०	४०	०	१०	४०	०	२०	०

(२) पिंगला में पिंगला की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दि.	२	३	४	५	६	७	८	१	१०
घ.	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	६	०
प.	०	०	४०	२०	०	४०	२०	४०	०

पिंगला में धान्या की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
दि.	५	६	८	१०	११	१३	१	३	०
घ.	०	४०	२०	०	४०	२०	४०	२०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

पिंगला में भ्रामरी की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
दि.	८	११	१३	१५	१७	२	४	६	२०
घ.	५३	६	२०	३३	४६	१३	२६	४०	०
प.	२०	४०	०	२०	४०	२०	४०	०	०

पिंगला में भद्रिका की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	३
दि.	१३	१६	१९	२२	२	५	८	११	१०
घ.	५३	४०	२६	१३	४६	३३	२०	६	०
प.	२०	०	४०	२०	४०	२०	०	४०	०

पिगला में उल्का की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	४
दि.	२०	२३	२६	३	६	१०	१३	१६	०
घ.	०	२०	४०	२०	४०	०	२०	४०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

पिंगला में सिद्धा की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	योग
मा.	०	१	०	०	०	०	०	,	४
दि.	२७	१	३	७	११	१५	१९	२३	२०
घ.	१३	६	५३	४६	४०	३३	२६	२०	०
प.	२०	४०	२०	४०	०	२०	४०	०	०

पिंगला में संकटा की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	योग
मा.	१	०	०	०	०	०	०	१	५
दि.	५	४	८	१३	१७	२२	२६	१	१०
घ.	३३	२६	५३	२०	४६	१३	४०	६	०
प.	२०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	०

पिंगला में मंगला की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	०	१	१	२	२	३	३	४	२०
घ.	३३	६	४०	१३	४६	२०	५३	२६	०
प.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

(३) धान्या में धान्या की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	३
दि.	७	१०	१२	१५	१७	२०	२	५	०
घ.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

धान्या में भ्रामरी की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	४
दि.	१३	१६	२०	२३	२६	३	६	१०	०
घ.	२०	४०	०	२०	४०	२०	४०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

धान्या में भद्रिका की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	योग
मा.	०	०	०	१	०	०	०	०	५
दि.	२०	२५	२९	३	४	८	१२	१६	०
घ.	५०	०	१०	२०	१०	२०	३०	४०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

धान्या में उल्का की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	योग
मा.	१	१	१	०	०	०	०	०	६
दि.	०	५	१०	५	१०	१५	२०	२५	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

धान्या में सिद्धा की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	योग
मा.	१	१	०	०	०	०	०	१	७
दि.	१०	१६	५	११	१७	२३	२९	५	०
घ.	५०	४०	५०	४०	३०	२०	१०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

धान्या में संकटा की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	योग
मा.	१	०	०	०	०	१	१	१	८
दि.	२३	६	१३	२०	२६	३	१०	१६	०
घ.	२०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

धान्या में मंगला की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	
दि.	०	१	२	३	४	५	५	६	
घ.	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	

धान्या में पिंगला की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
दि.	३	५	६	८	१०	११	१३	१	०
घ.	२०	०	४०	२०	०	४०	१०	४०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

(४) भ्रामरी में भ्रामरी की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	योग
मा.	०	०	०	१	१	०	०	०	५
दि.	१७	२२	२६	१	५	४	८	१३	१०
घ.	४६	१३	४०	६	३३	२६	५३	२०	०
प.	४०	२०	०	४०	२०	४०	२०	०	०

भ्रामरी में भद्रिका की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	योग
मा.	०	१	१	१	०	०	०	०	६
दि.	२७	३	८	१४	५	११	१६	२२	२०
ग्र.	४६	२०	५३	२६	३३	६	४०	१३	०
प.	४०	०	२०	४०	२०	४०	०	२०	०

भ्रामरी में उल्का की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	योग
मा.	१	१	१	१	०	०	०	१	८
दि.	१०	१६	२३	६	१३	२०	२६	३	०
घ.	०	४०	२०	४०	२०	०	४०	२०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

भ्रामरी में सिद्धा की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	योग
मा.	१	२	०	०	०	१	१	१	६
दि.	२४	२	७	१५	२३	१	८	१६	१०
घ.	२६	१३	४६	३३	२०	६	५३	४०	०
प.	४०	२०	४०	२०	०	४०	२०	०	०

भ्रामरी में संकटा की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	योग
मा.	२	०	०	०	१	१	१	२	१०
दि.	११	८	१७	२६	५	१४	२३	२	२०
घ.	६	५३	४६	४०	३३	२६	२०	१३	०
प.	४०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	०

भ्रामरी में मंगला की अंतर्दशा की प्रत्यंतरदशा

योगिनी	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दि.	१	२	३	४	५	६	७	८	१०
घ.	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०
प.	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०

भ्रामरो में पिंगला की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
दि.	४	६	८	११	१३	१५	१७	२	२०
घ.	२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	१३	०
प.	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	२०	०

भ्रामरी में धान्या की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	८
दि.	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३	६	०
घ.	०	२०	४०	०	२०	४०	२०	४०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

(५) भद्रिका में भद्रिका की अंतर्दशा की प्रत्यंतरदशा

योगिनी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	योग
मा.	१	१	१	१	०	०	०	०	८
दि.	४	११	१८	२५	६	१३	२०	२७	१०
घ.	४३	४०	३६	३३	५६	५३	५०	४६	०
प.	२०	०	४०	२०	४०	०	४०	०	०

भद्रिका में उल्का की अंतर्दशा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	योग
मा.	१	१	२	०	०	०	१	१	१०
दि.	२०	२८	६	८	१६	२५	३	११	०
घ.	०	२०	४०	२०	४०	०	२०	४०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

भद्रिका में सिद्धा की अंतर्दशा की प्रत्यंतरदशा

योगिनी	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	योग
मा.	२	२	०	०	०	१	१	१	११
दि.	८	१७	९	१९	२९	८	१८	२८	२०
घ.	३	४६	४३	२६	१०	५३	३६	२०	०
प.	२०	४०	२०	४०	०	२०	४०	०	०

भद्रिका में संकटा की अंतर्दशा की प्रत्यंतरदशा

योगिनी	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	योग
मा.	२	०	०	१	१	१	२	२	१३
दि.	२८	११	२२	३	१४	२५	६	१७	१०
घ.	५३	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	०
प.	२०	४०	२०	०	४०	२०	०	५०	०

भद्रिका में मंगला की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दि.	१	२	४	५	६	८	९	११	२
घ.	२३	४६	१०	३३	५६	२०	४३	६	०
प.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

भद्रिका में पिंगला की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	योग
मा.		०	०	०	०	०	०	०	३
दि.	५	८	११	१३	१६	१९	२२	२	१०
घ.	३३	२०	६	५३	४०	२६	१३	४६	०
प.	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	४०	०

भद्रिका में धान्या की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	योग
मा.	०	०	०	०	०	१	०	०	५
दि.	१२	१६	२०	२५	२९	३	४	८	०
घ.	३०	४०	५०	०	१०	२०	१०	२०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

भद्रिका में भ्रामरी की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	योग
मा.	०	०	१	१	१	०	०	०	६
दि.	२२	२७	३	८	१४	५	११	१६	२०
घ.	१३	४६	२०	५३	२६	३३	६	४०	०
प.	२०	४०	०	२०	४०	२०	४०	०	०

(६) उल्का में उल्का की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	योग
मा.	२	२	२	०	०	१	१	१	१२
दि.	०	१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

उल्का में सिद्धा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	योग
मा.	२	३	०	०	१	१	१	२	१४
दि.	२१	३	११	२३	५	१६	२८	१०	०
घ.	४०	२०	४०	२०	०	४०	२०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

उल्का में संकटा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	योग
मा.	३	०	०	०	१	२	२	३	१६
दि.	१६	१३	२६	४०	२३	६	२०	३	०
घ.	४०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

उल्का में मंगला की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
दि.	१	३	५	६	८	१०	११	१३	०
घ.	४०	०	०	४०	२०	०	४०	२०	०
प.	०	२०	०	०	०	०	०	०	०

उल्का में पिंगला की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	४
दि.	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३	०
घ.	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	२०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

उल्का में धान्या की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	योग
मा.	०	०	०	१	१	१	०	०	६
दि.	१५	२०	२५	०	५	१०	५	१०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

उल्का में भ्रामरी की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	योग
मा.	०	१	१	१	१	०	०	०	८
दि.	२६	३	१०	१६	२३	६	१३	२०	०
घ.	४०	२०	०	४०	२०	४०	२०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

उल्का में भद्रिका की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	योग
मा.	१	१	१	२	०	०	०	०	१०
दि.	११	२०	२८	६	८	१६	२५	३	०
घ.	४०	०	२०	४०	२०	४०	०	२०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

(७) सिद्धा में सिद्धा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	योग
मा.	३	३	०	०	१	१	२	२	१६
दि.	५	१८	१३	२७	१०	२४	८	२१	१०
घ.	१६	५३	३६	१३	५०	२६	३	४०	०
प.	४०	२०	४०	२०	०	४०	२०	०	०

सिद्धा में संकटा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	योग
मा.	४	०	१	१	२	२	३	३	१८
दि.	४	१५	१	१६	२	१७	३	१८	२०
घ.	२६	३३	६	४०	१३	४६	२०	५३	०
प.	४०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	०

सिद्धा में मंगला की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
दि.	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१०
घ.	५६	५३	५०	४६	४३	४०	३६	३३	०
प.	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०

सिद्धा में पिंगला की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	१	०	४
दि.	७	११	१५	१९	२३	२७	१	३	२०
घ.	४६	४०	३३	२६	२०	१३	६	५३	०
प.	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	२०	०

सिद्धा में धान्या की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	योग
मा.	०	०	०	१	१	१	०	०	७
दि.	१७	२३	२९	५	१०	१६	५	११	०
घ.	३०	२०	१०	०	५०	४०	५०	४०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

सिद्धा में भ्रामरी की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	योग
मा.	१	१	१	१	२	०	०	०	९
दि.	१	८	१६	२४	२	७	१५	२३	१०
घ.	६	५३	४०	२६	१३	४६	३३	२०	०
प.	४०	२०	०	४०	२०	४०	२०	०	०

सिद्धा में भद्रिका की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	योग
मा.	१	२	२	२	०	०	०	१	११
दि.	१८	२८	८	१७	६	१६	२६	८	२०
घ.	३६	२०	३	४६	४३	२६	१०	५३	०
प.	४०	०	२०	४०	२०	४०	०	२०	०

सिद्धा में उल्का की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	योग
मा.	२	२	३	१	०	१	१	१	१४
दि.	१०	२१	३	११	२३	५	१६	२८	०
घ.	०	४०	२०	४०	२०	०	४०	२०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

(८) संकटा में संकटा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	योग
मा.	४	०	१	१	२	२	३	४	२१
दि.	२२	१७	५	२३	११	२८	१६	४	१०
घ.	१३	४६	३३	२०	६	५३	४०	२६	०
प.	२०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	०

संकटा में मंगला की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	योग
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	२
दि.	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	२०
घ.	१३	२६	४०	५३	६	२०	३३	४६	०
प.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

संकटा में पिंगला की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	योग
मा.	०	०	०	०	०	१	१	०	५
दि.	८	१३	१७	२२	२६	१	५	४	१०
घ.	५३	२०	४६	१३	४०	६	३३	२६	०
प.	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	४०	०

संकटा में धान्या की प्रत्यंतरदशा

योगिनी	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	योग
मा.	०	०	१	१	१	१	०	०	८
दि.	२०	२६	३	१०	१६	२३	६	१३	०
घ.	०	४०	२०	०	४०	२०	४०	२०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

संकटा में भ्रामरी की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	योग
मा.	१	१	१	२	२	०	०	०	१०
दि.	५	१४	२३	२	११	८	१७	२६	२०
घ.	३३	२६	२०	१३	६	५३	४६	४०	०
प.	२०	४०	०	२०	४०	२०	४०	०	०

संकटा में भद्रिका की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	योग
मा.	१	२	२	२	०	०	१	१	१३
दि.	२५	६	१७	२८	११	२२	३	१४	१०
घ.	३३	४०	४६	५३	६	१३	२०	२६	०
प.	२०	०	४०	२०	४०	२०	०	४०	०

संकटा में उल्का की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	योग
मा.	२	३	३	०	०	१	१	२	१९
दि.	२०	३	१६	१३	२६	१०	२३	६	०
घ.	०	२०	४०	२०	४०	०	२०	४०	०
प.									०

संकटा में सिद्धा की प्रत्यंतर दशा

योगिनी	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	योग
मा.	३	४	०	१	१	२	२	३	१८
दि.	१८	४	१५	१	१६	२	१७	३	२०
घ.	५३	२६	३३	६	४०	१३	४६	२०	०
प.	२०	४०	२०	४०	०	२०	४०	०	०

योगिनी दशा का भुक्त भोग्य काल निकालना

जिस प्रकार विंशोत्तरी दशा का भुक्त भोग्य काल निकालते हैं उसी प्रकार इसका नक्षत्र के भयात भभोग पर से निकाल लेना।

घ. प. वि.

उदाहरण—जन्म श्रावण शुदो १२ बुधवार सम्वत् १९७० इष्ट ३६–३४–३७॥

घ. प. वि. घ. प. वि.

जन्म नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा। भभोग ६३–५३–८=२२६३८८ विपल। भयात ३५–४८–४५॥ =१२८९२५॥ विपल। जन्म नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा = सिद्धा योगनी को दशा वर्ष ७।

भयात .. सिद्धा वर्ष

१२८९२५॥ × ७

२२६३८८ भभाग

१२८९२५–३०

×७

३–३०

९०२४७५

९०२४७८–३०

२२६३८८)९०२४७८-३०(३ वर्ष

६७९१६४

२२३३१४-३०

×१२

६-०

२६७९७६८

२२६३८८)२६७९७७५(११ मास

२२६३-८

४१५८९४

२२६३८८

१८९५०६ × ३०

२२६३८८)५६८५१८०(२५दिन

४५२७७६

११५७४२०

११३१९४०

२५४८० × ६०

२२६३८८)१५२८८००(६घड़ी

१३५८३२८

१७०४७२ × ६०

२२६३८८)१०२२८३२०(४५पल

९०५५५२

१२७२८००

११३१९४०

१४०६८०

व. मा. दि. घ. प.

$$\frac{=९०२४७८\text{-}३०}{२२६३८८} = ३\text{-}११\text{-}२५\text{-}६\text{-}४५$$

भुक्त सिद्धा

सिद्धा पूर्ण वर्ष–व मा दि घ प

७–०– ०–०–०

„ भुक्ता ३-११-२५-६-४५

=सिद्धा भोग्य=३–०–४-५३-१५

इसके उपरांत संकटा की दशा लगेगी।

योगिनी दशा चक्र ७

योगिनी	वर्ष	मा०	दि०	घ०	प०	सम्वत्	सूर्य राशि	अं०	क०	वि०	महादशा
						१९७०	२	२७	२३	६	से आरम्भ
सिद्धा	३	०	४	५३	१५	१९७३	४	२	१६	२१	तक सिद्धा
संकटा	८	०	०	०	०	१९८१	४	२	१६	२१	,, संकटा
मंगला	१	०	०	०	०	१९८२	४	२	१६	२१	,, मंगला
पिंगला	२	०	०	०	०	१९८४	४	२	१६	२१	,, पिंगला
धान्या	३	०	०	०	०	१९८७	४	२	१६	२१	,, धान्या
भ्रामरी	४	०	०	०	०	१९९१	४	२	१६	२१	,, भ्रामरी
भद्रिका	५	०	०	०	०	१९९६	४	२	१६	२१	,, भद्रिका
उल्का	६	०	०	०	०	२००२	४	२	१६	२१	,, उल्का

इसी प्रकार और भी आगे की योगिनियों का समय जोड़ २. कर निकाल लेना। योगिनी दशा ३६ वर्ष में पूरी होती है इसके आगे फिर वही दशा आरम्भ होती है। यहाँ उल्का के उपरांत फिर सिद्धा दशा आयेगी। उसके उपरांत संकटा आदि क्रमानुसार आयेंगी।

अंतर्दशा साधन करने का उदाहरण

चक्र ७ से प्रगट हुआ है कि जन्म समय सिद्धा योगनी की महादशा थी। इसकी अंतर्दशा निकालने को चक्र ५ से सिद्धा की अंतर्दशा का चक्र देखा इस प्रकार है:—

सिद्धा की अन्तर्दशा

योगिनी	वर्ष	मा.	दि.
१ सिद्धा	१	४	१०
२ संकटा	१	६	२०
३ मंगला	०	२	१०
४ पिंगला	०	४	२०
५ धान्या	०	७	०
६ भ्रामरी	०	९	१०
७ भद्रिका	०	११	२०
८ उल्का	१	२	०
योग	७	०	०

सिद्धायोगिनी ३-०-४-१५
—उल्का =१-२
१-१०-४-५३-१५
—भद्रिका ०-१०-२०
०-१०-१४-५३-१५
—भ्रामरी =०-९-१०
०-१-४-५३-१५ धान्या
धान्या =०-७ नहीं घटा

योगिनी की अन्तर्दशा का चक्र ८

योगिनी	व.	मा.	दि.	घ.	प.	सम्वत	सूर्य राशि	अंश.	क.	वि.	अंतर्दशा
जन्म	०	०	०	०	०	१९७०	३	२७	२३	६	से आरंभ
धन्या	०	१	४	५३	१५	१९७०	५	२	१६	२१	तक धान्या
भ्रामरी	०	९	१०			१९७१	२	१२	१६	२१	,,भ्रामरी
भद्रिका	०	११	२०			१९७२	२	२	१६	२१	,,भद्रिका
उल्का	१	२	०			१९७३	४	२	१६	२१	,,उल्का
योग	३	०	४	५३	१५						

इस के आगे संकटा की अंतर्दशा आयेगी। चक्र ५ से संकटा की अंतर्दशा के वर्ष मास इसमें आगे जोड़ते जाने से संकटा की अन्तर्दशा निकल आयगी। इसी प्रकार सम्पूर्ण अन्तर्दशा निकालकर चक्र बना लेना।

विंशोत्तरी दशा के प्रत्यन्तर दशा साधन के अनुसार आवश्यक होने पर योगिनी दशा की प्रत्यंतर दशा के समय का चक्र बना लेना।

MOTILAL BANARSIDASS PUBLISHERS
DELHI